पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण -१



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण -१

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा - २८१००३

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



मूल्य १२५)

मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ॥

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगलं वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ॥

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ॥

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्‌बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्‌भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि "प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो त्रिशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।"

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अत: पुन: सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमश: उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंत: स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी। उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ। गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी। धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है। १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है। १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया। कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं। संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था। तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं। हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया। परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ। तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था। तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए। स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये। एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी। ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे। इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक। इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेघ यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेघ यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

प्रस्तुत वाङ्मय का खण्ड एक दस्तावेज है, बदलते युग की ऐसी परिस्थितियों का, जो कभी लगता था कि मानवी पुरुषार्थ से सहस्त्रों वर्षों में भी परिवर्तित नहीं होंगी । परन्तु उज्ज्वल भविष्य के स्वप्नदर्शी परमपूज्य गुरुदेव ने युग प्रत्यावर्त्तन की इस प्रक्रिया का, कलियुग के समापन व सतयुग के आगमन के पूर्व दृष्टिगोचर होने वाली विश्व व्यापी उथल-पुथल का जो विवरण इसमें लिखा है, वह बताता है कि ऋषि-प्रज्ञा भविष्य के झरोखे में झाँककर सब कुछ बता जाती है । समझने वाले न समझ पायँ तो यह उनकी नादानी है ।

महाकाल और युग प्रत्यावर्त्तन प्रक्रिया के माध्यम से, आज से तीस वर्ष पूर्व युग ऋषि ने लिख दिया था कि आज जो भी कुछ प्रतिकूल अनीति-दुराचरण भरा दिखाई दे रहा है, वह महाकाल की सत्ता द्वारा सुव्यवस्थित किया जाएगा । महाकाल का अर्थ है- समय की सीमा से परे एक ऐसी अदृश्य प्रचण्ड सत्ता जो सृष्टि का सुसंचालन करती है, दण्ड-व्यवस्था का निर्धारण करती है एवं जहाँ कहीं भी अराजकता, अनुशासन हीनता दिखाई देती है, वहाँ सुव्यवस्था-स्थापना हेतु अपना सुदर्शन चक्र चलाती है । इसे अवतार का प्रवाह भी कह सकते हैं जो समय-समय पर प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने व सामान्य सतयुगी स्थिति लाने हेतु अवतरित होता रहा है । अपने विनाश की स्वयं खाई खोद रहे मानव के विनाशकारी चिन्तन की व्यवस्था, कर्मफल व्यवस्था का विधान कैसे करता है ? यह इस खण्ड में पढ़कर देखा-समझा जा सकता है ।

परम पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि जब लोकमानस संतुलित नहीं रह पाता-नर पिशाच की तरह आचरण करने लगता है, तब मंगलमय शिव रौद्ररूप धारण कर डमरु-नाद करते हैं । उनके ताण्डव की थिरकन से ज्वालाएं उठने लगती हैं एवं इस अग्नि में वह सब कुछ जल कर नष्ट हो जाता है, जो अवांछनीय है, अनुपयुक्त है, अनर्गल है, अशुभ है । यह दण्ड विधान ही मनुष्य को दुर्जनता का पथ छोड़कर सज्जनता अपनाने के लिए प्रेरित करता है । प्रस्तुत समय को अभी की व भावी विभीषिकाओं की प्रसव-पीड़ा मान कर, नवयुग के आगमन की पूर्व वेला मानकर हमें मंगलमय सतयुग की अगवानी करनी चाहिए, यह संदेश भी हमें मिलता है ।

शंभू-शंकर-महादेव त्रिदेवों में संहार के व्यवस्थापक माने गये हैं । प्रलय की आवश्यकता होने पर वे ताण्डव नृत्य, करने लगते हैं, पाप पुरुष (असुरत्व) जो अनेकानेक छद्म रूपों में मानव में प्रवेश करता रहता है, उनके चरणों में आ गिरता है । उसी की पीठ पर नटराज अपने चरणों की थिरकन को गतिशील बनाते हैं । यह सारा अलंकारिक विवेचन वास्तविकता में क्या है एवं नूतन सृष्टि के सृजन की भूमिका-सम्पादन में महाकाली की, सज्जनों-देव-पुरुषों की संगठित शक्ति की क्या भूमिका है ? यह समझ में आने पर सतयुग की वापसी का कर्म भी हृदयंगम होने लगता है । लोभ, मोह, अहं रूपी नगरियों में बैठे त्रिपुरासुर का मर्दन हमारी उन तीन वृत्तियों पर प्रहार है, जो आज के आस्था-संकट का, धर्म की ग्लानि का मूल कारण है । वह कैसे मिटे ? पहले जब-जब ऐसी परिस्थितियाँ आयीं तो सभी अवतारों के समय में धर्म की संस्थापना का कार्य कैसे संभव बन पड़ा ? अवतारों के लीला-संदोह के विवेचन द्वारा समझा व स्वयं को आशावादी बनाया जा सकता है । प्रज्ञावतार का कैसे प्रकटीकरण होने जा रहा है एवं इक्कीसवीं सदी का अवतरण उज्ज्वल भविष्य के रूप में कैसे होगा, किस रूप में होगा, सद्बुद्धि का विस्तार कैसे महाकाल के व्यवस्थाक्रम में देखते-देखते होता चला जाएगा, यह पढ़कर पाठक रोमांचित हो उठता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परम पूज्य गुरुदेव ने भागीरथों, शुनि शेपों के रूप में, प्रतिभाओं से व्यामोह से ऊब कर आगे आने, उदात्त दृष्टि व यज्ञीय जीवन-पद्धति अपनाने के लिए अपने स्वार्थों की बलि देकर समाज-देवता के लिए स्वयं को समर्पित करने का आह्वान देकर प्रेरणाएँ एवं उमंगें इस खण्ड में कूट-कूट कर भर दी हैं । युग-परिवर्तन जैसा बड़ा प्रयोजन प्रतिभा के रूप में, संवेदना के जन-जन के मन-मन में अवतरण के रूप में होगा तो हर व्यक्ति स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ की सोचेगा एवं देखते देखते व्यक्ति से परिवार व समाज-निर्माण होते होते युग निर्माण होगा। इस कार्य के लिए पूज्यवर ने विषम समय में युग-धर्म को देखते हुए विशिष्टों से, विभूतियों से जो भावना-जगत्, शिक्षा-साहित्य-जगत, कला-जगत्, सत्ता-नेतृत्व-तंत्र, सम्पदा-तंत्र, भौतिकी व विज्ञान-जगत से जुड़ी है अथवा जन्मजात विशिष्ट प्रतिभाओं के रूप में समाज में विद्यमान है, आह्वान किया है कि उन्हीं को महाकाल के युग परिवर्तन जैसे कार्य को अपने परिष्कृत समर्थ कंधों पर सँभालना है ।

सतयुग की वापसी सुनिश्चित है । चेतना के रूप में निष्कलंक प्रज्ञावतार का, ऋतम्भरा प्रज्ञा का, सद्बुद्धि का अवतरण हो चुका है । समझदारी इसी में है कि हम वास्तविकता को समझें । आने वाले दस वर्ष युगान्तरकारी हैं । इनमें हमारी भूमिका क्या हो, यह परम पूज्य गुरुदेव ने १९८९, ९० के अंतिम दो वर्षों में लिखे गए जाति-धर्मी साहित्य के रूप में स्पष्ट कर दिया है । परिवर्तन के महान क्षण, स्रष्टा का परम प्रसाद प्रखर प्रज्ञा, सतयुग की वापसी, महाकाल का प्रतिभाओं का आमंत्रण, शिक्षा ही नहीं विद्या भी, भाव संवेदना की गंगोत्री तथा मनः स्थिति बदले तो परिस्थिति बदले जैसी पुस्तकों की एक-एक पंक्ति, एक शब्द कोष का निर्माण करने में सक्षम है, यह पाठक इस खण्ड को पढ़कर जानेंगे ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

१. हमारी सूक्ष्मीकरण साधना

तपने और तपाने की आवश्यकता क्यों पड़ी १.१
सूक्ष्मीकरण साधना से अद्भुत शक्ति और प्रवाह-परिवर्तन १.३
स्थूल का सूक्ष्म में परिवर्तन: सूक्ष्मीकरण १.६
सूक्ष्मीकरण से सम्भावित परिणतियाँ १.९
प्राण ऊर्जा का, वाष्पीकरण-सूक्ष्मीकरण १.१०
गलत कदम नहीं उठा, उसके पीछे तथ्य और औचित्य है १.१३
प्रत्यक्ष घाटे के पीछे, परोक्ष लाभ ही लाभ है १.१६
इन दिनों हम यह करने में जुट रहे हैं १.२०
मनीषी एवं ऋषि के रूप में हमारी परोक्ष भूमिका १.२२
मनीषा को झकझोरने की चेष्टा १.२४
मात्र सुधार ही आवश्यक नहीं है १.२६
"विनाश नहीं सृजन" हमारा भविष्य कथन १.२८
इस नक्शे में आमूल-चूल परिवर्तन होगा १.३१
तीन महत्त्वपूर्ण मोर्चे, जिन पर हमें कार्य करना है १.३४
आत्मसत्ता में निहित विभूतियों का रहस्योद्घाटन १.३६
आत्मीय जनों से अनुरोध एवं उन्हें आश्वासन १.३९

२. प्रतिभाओं का उद्भव और विकास

वस्तुक्रम २.१
इस विश्व की सबसे बड़ी शक्ति २.१
संकल्पबल में निहित सामर्थ्य २.२
हम आत्म विस्मृति से उबरें २.३
चौथी शक्ति का अभिनव उद्भव २.३
प्रखर प्रतिभा-समय की महती माँग २.४
नये प्रवाह का अभ्युदय २.५
सर्वोपरि उपलब्धि-प्रतिभा २.६
सृजन बनाम परिष्कृत प्रतिभा २.७
प्रतिभा पुरुषार्थ द्वारा विकसित की जाती है २.८
प्रतिभा बनाम तेजस्विता बनाम तपश्चर्या २.९
प्रतिभा-भक्त की उपलब्धि २.११
प्रतिभा से बढ़कर और कोई समर्थता है नहीं २.१२
प्रतिभा के बीजांकुर हर किसी में विद्यमान हैं २.१५
आत्मबोध की आवश्यकता और अनिवार्यता २.१६
उत्कृष्टता के साथ जुड़ें, प्रतिभा के अनुदान पाये २.१८
परिष्कृत प्रतिभा एक देवी अनुदान २.२०
प्रचण्ड मनोबल की प्रतिभा में परिणति २.२१
प्रतिभा की सहचरी सफलता और समर्थता २.२३
आगे बढ़ें और लक्ष्य तक पहुँचे २.२४
प्रतिभा का प्रकटीकरण स्वयं के बूते की सम्भव है २.२५
प्रतिभा परिष्कार बनाम् युग परिवर्तन २.२६
कसौटी के लिए तैयार रहें २.२९
निर्माण के लिए समर्थ सेनानायकों की आवश्यकता २.३०
युग सृजन के निमित्त प्रतिभाओं को चुनौती २.३२
आत्मबल की अनुभूति आदर्शवादी प्रतिभा में हो २.३३
योग विज्ञान और प्रतिभा सम्पादन २.३४
बड़े कामों के लिए वरिष्ठ प्रतिभाएँ २.३७
एकमात्र उपाय यही है २.३८
समर्थों की भूमिका २.३९
प्रखर प्रतिभा आज की आवश्यकता २.४०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगीरथों और शुनिशेपों की खोज २.४२
भावनात्मक दुर्भिक्ष का अन्त हो २.४४
मनुष्यों के चार स्तर-चार वर्ग २.४५
यह समय सामान्य नहीं है २.४६
विशिष्टता का नये सिरे से उभार २.४७
दो अति महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम २.४८
प्रतिभा परिवर्तन के तथ्य और सिद्धान्त २.४९
पात्रता की तात्कालिक आवश्यकता २.५२
भावनात्मक परिवर्तन का एकमात्र प्रयोग साधन २.५३
देवत्व के जागरण की सौम्य साधन पद्धति २.५६
स्थूल शरीर का परिष्कार कर्मयोग से २.५७
सूक्ष्म शरीर का उत्कर्ष-ज्ञान योग से २.६०
ज्ञान योग से जनमानस का परिष्कार २.६३
स्वाध्याय ईश्वर उपासना है २.६४
हम मनस्वी और आत्म-बल सम्पन्न बनें २.६६
आत्मबल की दिव्य प्रेरणा २.६८
प्रतिभा संवर्धन के दो आधार साहसिकता एवं सुव्यवस्था २.६९
सद्गुण एक दैवी विभूति २.७१
प्रतिभा संवर्धन हेतु निर्धारित विज्ञान सम्मत प्रयोग-उपचार २.७२
प्राणवान प्रशिक्षण से ही प्रतिभा परिष्कार संभव २.७५
कच्चे लोहे को गलाकर फौलाद बनाने वाले संस्थान २.७७
प्रतिभा संवर्धन का मूल्य भी चुकाया जाय २.८०
प्रतिभा का सुनियोजन २.८१
अपना परिवार-उच्च आत्माओं का भण्डागार २.८४
विशेष प्रयोजन के लिए विशिष्ट आत्माओं का विशेष अवतरण २.८६
विभूतियों का आह्वान २.८८

३. सृष्टा का सर्वोपरि उपहार-प्रखर प्रज्ञा

चेतना की सत्ता एवं उसका विस्तार ३.१
आनास्था की जननी-दुर्बुद्धि ३.२
ईश्वर सम्बन्धी भ्रान्तियाँ ३.३
दैवी सत्ता की सुनियोजित विधि-व्यवस्था ३.४
आत्म-बल से उभरी परिष्कृत प्रतिभा ३.५
मानवी पुरुषार्थ एवं दैवी शक्ति का युग्म ३.६
पात्रता में दैवी अनुग्रह की प्राप्ति ३.७
उदारता जन्मदात्री है प्रमाणिकता की ३.७
जीवन साधना एवं ईश-उपासना ३.८
प्रखर प्रतिभा का उद्गम स्रोत ३.९
युग परिवर्तन प्रतिभा ही करेगी ३.१२
अनगढ़ता मिटे, सुगढ़ता विकसित हो ३.१३
प्रतिभाओं का अभिनव अभ्युदय ३.१३
सद्बुद्धि का उभार कैसे हो ३.१५
इन दिनों सर्वोपरि आवश्यकता ३.१६

४. अनुष्ठानों की आवश्यकता क्यों ?

सामूहिकता की प्रतिक्रिया ४.२
वातावरण का परिशोधन प्रज्ञा पुरश्चरण से ४.३
प्रज्ञा पुरश्चरण का स्वरूप और सामर्थ्य ४.५
युगसंधि महापुरश्चरण: प्रयोजन और प्रयास ४.६
युग संधि महापुरश्चरण सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य ४.७
सूर्य की ध्यान धारणा ४.९
शान्ति कुंज और उसका प्रज्ञा परिवार ४.१०
प्राण संचार साधना क्रम ४.१२
एक करोड़ की पूर्णाहुति दो चरणों में ४.१३
अन्तिम दायित्व जो निभाना चाहिये ४.१५
युगसंधि की शक्ति-संचार साधना ४.१७
आत्मिक प्रगति के तीन आधार ४.१७
अनुदानों का ग्रहण अभ्यास ४.२२
तीन प्रकार के प्रवाह ४.२४
प्राण संचरण (कुण्डलिनी स्फुरण) ४.२५
ज्योति अवतरण-दिव्य दृष्टि जागरण ४.२५
रस वर्षण (प्रभु मिलन) ४.२५

५. शान्ति कुंज और उसका प्रज्ञा-अभियान

नव सृजन का एक विनम्र, किन्तु समर्थ प्रयास प्रज्ञा अभियान ५.१
प्रज्ञा-अभियान और धर्मतन्त्र से लोक-शिक्षण ५.५
प्रज्ञा-अभियान का अदृश्य सूत्र संचालन ५.७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सशक्त-शक्ति उद्गम से सम्बन्ध साधें उद्गम के प्रति सार्वभौम श्रद्धा ५.१०
२१वीं सदी की गंगोत्री ५.११
एक महत्त्वपूर्ण संकल्प ५.१२
सुयोग का लाभ उठायें ५.१२
समर्थ सत्ता से साझेदारी ५.१३

६. युग-सन्धि वेला में सृजन शिल्पियों के दायित्त्व

अग्नि परीक्षा काल में वरिष्टों का कर्त्तव्य ६.१
प्रामाणिकता का परिचय दें-जीवन्त जागृत बनें ६.१
तमिस्रा के भव-बन्धन से बाहर निकलें ६.२
आत्मा की पुकार को कुचलें नहीं ६.३
क्षुद्र नहीं, महान बनें ६.३
शेष जीवन का सदुपयोग युग धर्म के निर्वाह में हो ६.४
वरिष्ठ आगे बढ़ें, अपने दायित्त्व सँभालें ६.४
वरिष्ठ कौन ? ६.५
वरिष्ठजन दिग्भ्रन्त न हों ६.६
साधारण और असाधारण समय के अन्तर को समझा जाय ६.६
असमंजस त्यागें और युग-आमंत्रण स्वीकार करें ६.७
काया और आत्मा को समान रूप से न्याय मिले ६.८
परिवार को सीमित और स्वर्गोपम बनायें ६.८
आत्मिक प्रगति का मर्म ६.९
काया के साथ-साथ आत्मा का भी हित साधन हो ६.१०
परिवर्तन की महाबेला में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें ६.११
भटकाव न आने दें, अवरोधों से विचलित न हों ६.१२
आज की सबसे बड़ी कमी ६.१३
उच्च स्तरीय अन्तरंग और बहिरंग की अनिवार्यता ६.१४
अभ्यास की कमी ही जुझारूपन के अभाव का निमित्त है ६.१५
असफलता असन्तोष का कारण न बने ६.१५
महत्वाकांक्षा और सेवा एक—दूसरे के विरोधी ६.१६
सेवा-क्षेत्र में योग्यता आड़े न आये ६.१६
सेवा-कार्य में सम्मान की आकांक्षा न पालें ६.१७
दृष्टिकोण रचनात्मक रखा जाय ६.१७
फसल उगानी है तो बीज भी बोयें ६.१८
बोयें और काटें ६.१९
उदारता सत्प्रयोजनों के निमित्त हो ६.२०
यह बेला असमंजस ग्रस्त रहने की है नहीं ६.२१
क्षुद्रता के रहते दैवी अनुदान की उपलब्धि असम्भव है ६.२१
पास की नहीं दूर की सोचें ६.२२
पाञ्चजन्य की प्रतिध्वनि सुनें और अनुसरण करें ६.२३
आड़े समय की विषमता और जिम्मेदारी अनुभव करें ६.२४
मानवी पुरुषार्थ एवं दैवी अनुदान ६.२४
बड़े कार्यों के लिए सशक्त प्रयास ६.२५
कसौटी पर खरे उतरें ६.२६
सुअवसर हाथ से जाने न पाये ६.२७
समय की गुहार ६.२७
चुनौती जो सामने हैं ६.२२
प्रज्ञा परिवार के दायित्व ६.२९
साथियों की प्रतिक्षा में रुकें नहीं "एकला चलो रे" मंत्र को अपनायें ! ६.३०
सृजन प्रयोजनों में आने वाली अड़चनें ६.३०
एकाकी चल पड़ने का साहस उभरे ६.३१
ब्राह्मण एक समग्र संस्था ६.३२
युगान्तरीय चेतना घर-घर पहुँचे ६.३२
वस्तुस्थिति परखें, गुरुमन्त्र अपनायें ६.३३
सृजन प्रयासों को विश्वव्यापी बनाने का आरम्भिक उपक्रम ६.३३
प्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक चेतना प्रखर बनायी जाय ६.३४
अपना लक्ष्य वसुधैव कुटुम्बकम् ६.३४
विश्व-व्यवस्था ऐसी बने ६.३५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म सम्प्रदायों की संयुक्त शक्ति का नव सृजन में नियोजन ६.३६
धर्म सम्प्रदाय युग धर्म समझें ६.३६
शुद्ध धर्म-तन्त्र का अस्त्र संधान ६.३७
भावनात्मक परिवर्तन धर्म-तन्त्र द्वारा ही सम्भव है ६.३८
समस्याएँ धर्म तन्त्र द्वारा सुलझेंगी ६.३८
धर्म-तन्त्र का वास्तविक रूप ६.४०
धर्म-तन्त्र को परिष्कृत और सशक्त बनाया जाय ६.४०
समय की विषमता और जीवान्तों का उत्तरदायित्त्व ६.४०
युग परिवर्तन के अनुरूप हम अपने को ढालें ६.४४
इतना तो करना ही होगा ६.५०
अशान्ति और विनाश का कारण ६.५०
युग और कर्त्तव्य की पुकार ६.५०
जन जागरण के लिए ६.५१
नियमित समय दान ६.५१
विचार-विस्तार के माध्यम ६.५२
हमारा योगदान स्वल्प न रहे ६.५२
युग परिवर्तन की तैयारी के तीन चरण ६.५२
अनौचित्य के विरुद्ध समर्थ नैतिक क्रान्ति की आवश्यकता ६.५५
सृजन की रूपरेखा एवं विस्तारक्रम ६.६१
उदात्त अनुदानों के लिये युग चेतना का आव्हान ६.६४
सतयुग की वापसी इस प्रकार सम्भव होगी ६.६६
अवरोधों से जूझने की सूझ-बूझ जगे ६.६९
उलटे प्रवाह को उलटकर सीधा करने की प्रक्रिया ६.७१
प्रतीक्षा में न बैठें, स्वयं ही बढ़ चले ६.८०
युग परिवर्तन के अनुरूप हम भी ढल चलें ६.८१

७. लोकसेवा आज का सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ

सेवा का अर्थ है—युग धर्म का निर्वाह ७.१
कुछ भी करने में उपयोगिता को ध्यान में रखा जाय ७.१
समयानुरूप निर्धारणों को समझें और तदनुरूप क्रिया-कलाप अपनायें ७.२
महान परिवर्तनों का समय ७.२
अपनी गरिमा समझें और भूमिका निभायें ७.३
जागृत आत्माओं को युग धर्म की चुनौती ७.४
व्यस्त जन भी समय दान करें ७.४
जागृत आत्माओं का अग्रगमन ७.५
प्रज्ञा पुत्रों को इतना तो करना ही है ७.६
समयदान किस लिए ? ७.७
अध्यात्म उपचार ही अनिवार्य है ७.८
सुगम किन्तु प्रभावशाली सामयिक उपचार ७.८
प्रथम कार्यक्रम ७.९
द्वितीय कार्यक्रम ७.९
तृतीय कार्यक्रम् ७.१०
अवांछनीयता का उन्मूलन भी ७.१०
चतुर्थ कार्यक्रम ७.११
पंचम कार्यक्रम ७.१२
महान लक्ष्य-तीव्रतर गति ७.१४
पुरातन गरिमा का नवीन संस्करण ७.१५
नव निर्माण के लिए क्या करें ? कैसे करें ७.१६
समयदान का सुनियोजन आलोक वितरण के लिए भावभरा जन सम्पर्क ७.१८
संकोचजन्य हीनता से बाहर निकलें ७.१९
युग साहित्य जन-जन तक पहुँचे ७.१९
परिव्रज्या परम्परा की उपेक्षा न की जाय ७.२०
लोक सम्मान का आकार सेवा-साधना और पुण्य परमार्थ ७.२१
इतना तो व्यस्त परिजन भी कर सकते हैं ७.२२
सृजन शिल्पियों की नव-निर्माण में भाव-भरी भूमिका ७.२४
सृजन शिल्पी के अनिवार्य कर्त्तव्य ७.२४
प्रज्ञा परिवार की तीन श्रेणियाँ ७.२५
अगले दिनों हर एक प्रज्ञा अभियान का भागीदार बनेगा ७.२६
धर्मतंत्र की गरिमा समझें और उस परिष्कृत करें ७.२६
सेवाभावी चयन के चौराहे पर दिग्भ्रान्त न बने रहें ७.२६
सर्वोपरि सेवा-लोकमानस का परिष्कार ७.२७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मधारणा का वास्तविक स्वरूप ७.२८
दुर्गति के कारण ७.२८
इक्कीसवीं सदी की पुकार और गुहार ७.२९
युग परिवर्तन प्रक्रिया का उत्तरार्द्ध जो अभी भी क्रियान्वित होना है ७.३१
युग सृजन की भागीदारी में किसी को घाटा नहीं ७.३४
हर लोकसेवी के लिये उपासना एक अनिवार्य उपक्रम ७.३६
जीवन को सार्थक बनाने का सही सुयोग ७.३९
स्वरूप समझें-लक्ष्य पहचानें ७.३९
प्राप्त का दुरुपयोग न होने दें ७.४०
विवेक का संबल लें ७.४१
जो हाथ में है, उसे सँभालें ७.४२
वर्तमान सुयोग समझें ७.४२
या तो अभी-या फिर कभी नहीं ७.४३

८. सृजन शिल्पी की आचार संहिता

पहला मोर्चा-अपना आया ८.१
दूसरा मोर्चा-स्वजनों का ८.२
तीसरा मोर्चा-जनमानस का शोधन ८.२
कार्यों के अनुरूप व्यक्तित्त्व ८.३
स्वभाव की शालीनता ८.३
प्रामाणिकता अनिवार्य ८.४
आध्यात्म क्षेत्र की वरिष्ठता विनम्रता पर निर्भर ८.५
ऐसे बनें, जैसा दूसरों को बनाना है ८.७
अलभ्य अवसर का लाभ लें ८.८
प्रवचन नहीं-आचरण बनायें ८.८
उपदेशक की पात्रता ८.९
व्रतशील बनें और बनायें ८.१०
स्वयं बदलें-प्रवाह को उलटें ८.११
''हम बदलेंगे युग बदलेगा'' सूत्र का शुभारम्भ ८.१३
युगशिल्पियों के सप्त महाव्रत ८.१७
जन-सम्पर्क के अनुशासन ८.१९
युग शिल्पी अहमन्यता के विषपान से बचे रहें ८.१९
लोकसेवी की प्रामाणिकता व्यक्तित्त्व के स्तर पर अवलम्बित ८.२२
व्यक्तित्त्व सम्पन्न युग-शिल्पी ही नव-निर्माण करेंगे ८.२५
प्रज्ञा परिजन इन विविध बेड़ियों से बाहर निकलें ८.२८
अपने अंग अवयवों से ! ८.२९



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारी सूक्ष्मीकरण साधना

तपने और तपाने की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

शान्तिकुञ्ज के सूत्र संचालक के जीवन में घटित-घटनाओं की जानकारी और प्रयत्नों की प्रतिक्रिया का तारतम्य समझ लेने के उपरान्त अनेकानेक आगन्तुकों ने अपनी जानकारी के आधार पर कई बातें पूछी—कि 'अगले दिनों आप एकान्तवास की साधना करेंगे और कठोर तपश्चर्या में निरत रहने का संकल्प साधेंगे, ऐसा क्यों ? जब धर्मधारणा और सेवा-साधना से ही ईश्वर भक्ति का प्रयोजन बहुत अंशों में पूरा हो जाता है, तो एकान्त तपश्चर्या की अतिकष्टसाध्य प्रक्रिया अपनाने का क्या प्रयोजन? इससे तो आपकी, जन सम्पर्क, कार्यक्रमों का नियोजन, मार्गदर्शन एवं सेवा-सहयोग की अन्यान्य क्रिया-प्रक्रियाएँ, जो इन दिनों चलती हैं, वे भी न बन पड़ेंगी ? आपको कष्टसाध्य उपक्रम अपनाकर अनेक असुविधाओं से भरी जीवनचर्या बितानी पड़ेगी और सम्पर्क में आने वाले जो निरन्तर लाभ उठाते रहते हैं, उनसे उन्हें वंचित रहना पड़ेगा ।

प्रश्न समझदारी पूर्ण, गम्भीर और उलझन भरा था। सो उस सम्बन्ध में चर्चा के अवसर पर मात्र उन्हें ही सम्मिलित रखा गया, जिन्हें अध्यात्म-विधा को, पृष्ठभूमि के साथ पहले से भी गहराई स्तर तक समझने का अवसर मिलता रहा है ।

कहा गया है कि अब तक जो सेवा और साधना चलती रही है, उसका प्रभाव स्थूल जगत तक, पदार्थ जगत तक—मार्गदर्शन और सीमित अनुदान दे सकने जितनी क्षमता अर्जित कर सकता है । पर अगले समय आसाधारण रूप से विकट हैं । उसके लिए इतनी सीमित क्षमता पर्याप्त न होगी । विशिष्ट स्तर की प्रचंडता उत्पन्न करने के लिए उच्चस्तरीय तपश्चर्या से कम में काम नहीं चलता । भगीरथ, दधीचि, ध्रुव, सप्तऋषि स्तर की उस तपश्चर्या की आवश्यकता पड़ती है, जो प्रत्यक्ष शरीर में अधिक बढ़ी-चढ़ी क्षमता उत्पन्न करने तक सीमित न रहे; वरन् सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर की गहराई में प्रवेश करके उच्चस्तरीय प्राण-चेतना का ऐसा भंडार संचय कर सके, जो विषम परिस्थितियों से लोहा ले सके और असाधारण दिव्य-उत्पादन में अपनी सामर्थ्य का परिचय दे सके । सूक्ष्म जगत में संव्याप्त विकृतियों को भी बुहार सके ।

इन दिनों विकृतियों और विपन्नताओं के घटाटोप छाये हुए हैं । आकाश प्रदूषण से भर गया है । जलवायु में विषाक्तता की मात्रा इतनी बढ़ गई है कि इससे प्रकृति ने विद्रोह खड़ा कर दिया है । विविध प्रकार के प्रदूषण अपने-अपने क्षेत्र में ऐसे संकट खड़े कर रहे हैं, जो विदित व्यावहारिक उपाय-उपचारों से नियंत्रण में नहीं आ रहे हैं । दुर्भिक्ष, युद्धोन्माद, राजनैतिक विग्रह, अपराधों की बाढ़, विचार विकृति का तूफानी प्रवाह मिल-जुलकर ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रहे हैं, जिससे अपनी धरती पर जीवधारियों का निर्वाह कठिन हो जाय । शारीरिक-मानसिक रोगों की अभिवृद्धि नियंत्रण से बाहर हो जाय । शालीनता का व्यवहार और प्रचलन ढूँढ़ पाना दुर्लभ हो जाय । अनाचारजन्य उपद्रवों की रोकथाम का उपाय-उपचार असफल रहने लगे । व्यक्ति और समाज को पग-पग पर विपत्तियों का सामना करना पड़े ।

प्रस्तुत अवांछनीयता को हटाने-घटाने के लिए असाधारण प्रवाह विनिर्मित करना आवश्यक होगा । देवत्व को पराजित होने से बचाने के लिए उसी दिव्य शक्ति का अवतरण होना चाहिए, जो महाकाली की तरह दैत्य-सत्ता से लोहा ले सके, उसे परास्त कर सके। मनुष्य को ऐसा वरदान मिले, इसके लिए प्रचण्ड तप के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं । तप शक्ति से ही देव सत्ता का अवतरण सम्भव होता रह सकता है । ऋषि—तपस्वियों द्वारा अनेक बार का परिचित उपचार इन दिनों भी अपनाये जाने की आवश्यकता पड़ गयी है । सो उसे करने के लिए ऐसे दुस्साहसपूर्ण कदम उठाये जा रहे हैं ।

सत्प्रयोजनों में आसुरी शक्तियाँ सदा आक्रमण करती और विघ्न उपस्थित करती हैं । विश्वामित्र के यज्ञ को असफल करने में निरत सुबाहु, मारीच,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ताड़का आदि के उपद्रवों का सामना करने के लिए राम-लक्ष्मण की सहायता आमंत्रित की गयी थी । कालनेमि, अहिरावण और सुरसा—हनुमान को असफल करने जा रहे थे । इस सबका सामना दिव्य शक्ति के माध्यम से ही सम्भव हो सका । अगले दिनों भी ऐसी ही प्रचण्ड सामर्थ्य उपार्जित की जानी है ।

भस्मासुर, वृत्तासुर, महिषासुर, अघासुर आदि ने दैवी प्रयोजनों में कितने विघ्न उत्पन्न किये थे, यह सर्वविदित है । इस बार सतयुग की वापसी वाली प्रस्तुत दैवी योजना पर भी ऐसे ही आसुरी संकट आते और अपनी भरपूर सामर्थ्य लगाते रहेंगे । उनका सामना भी समान स्तर की दैवी शक्ति से ही किया जा सकता है ।

परिजनों में से अनेकों अवगत हैं कि शान्तिकुञ्ज की युग-निर्माण योजना का कितने दुरात्माओं ने समय-समय पर अपनी छोटी सामर्थ्य के अनुरूप चिकोटी काटने और हक मारने में कमी नहीं रहने दी । वे आक्रमण तो आसानी से रद्द और निरस्त कर दिये गये, पर भारत के भीतर, पड़ोस में तथा विश्व के हर कोने में जो आतंकवादी आक्रामकता छाई हुई है, वह न जाने कब, क्या अड़ंगा खड़ा कर दे, इसे कोई नहीं जानता । ऐसी दशा में विश्वशांति की सुरक्षा करने के लिए ऐसी सतर्कता और शक्ति चाहिए, जैसी कि वन्य-पशुओं की भरमार वाले एक छोटे से खेत की सुरक्षा के लिए रखवाले के सारे परिवार को जुटा रहना पड़ता है । भले ही हम आक्रमणकारी न हों, पर आक्रान्ताओं से आत्मरक्षा करने के लिए कुछ तो करना ही होगा । आतंक का आवेश तो ठण्डा करने की आवश्यकता तो रहेगी ही । यह एक बड़ी व्यापक और भयंकर समस्या है, जिससे निपटने के लिए उस स्तर की तैयारी हर हालत में अपेक्षित है, जैसी कि शान्तिकुञ्ज के सूत्रधार ऐकान्तिक प्रचण्ड तपश्चर्या द्वारा समर्थ आत्म-शक्ति का संग्रह कर रहे हैं ।

संकटों की कोई कमी नहीं है । उनसे कोई क्षेत्र बचा नहीं है । तोप-बंदूक के धमाके हुए बिना भी ऐसी परिस्थिति बनी रह सकती है, जो आतंक, आशंका, विपत्ति और अराजकता जैसी अवांछनीयता बनाये रहे । युद्ध आग्नेय ही नहीं होते, शीत युद्धों की अनेक किस्में भी ऐसी हैं, जो विप्लवी परिस्थितियाँ बनाये रख सकती हैं और अपनी परिधि में उन्मादी अशान्ति खड़ी किए रह सकती हैं । शान्ति की परिस्थितियाँ बनाये रहने के लिए इससे भी बड़ी क्षमता हाथ में रहनी चाहिए । प्रस्तुत तपश्चर्या को ऐसी ही शक्ति साधना समझा जा सकता है । अवांछनीयताओं, अनाचारों, आपदाओं, मूढ़ मान्यताओं, कुरीतियों और विडम्बनाओं से जूझने के लिए भी कारगर हथियार चाहिए । सीधे-साधे तरीके से तो दहेज वाली बर्बादी भरी शादियों तक से छुटकारा नहीं पाया जा सका तो और भी अनौचित्य की जो विषम विडम्बनाएँ घटाटोप की तरह गहरा रही हैं, उनको लेख, लेक्चर जैसे दुर्बल साधनों से कैसे निरस्त किया जा सकेगा । विषैले प्रदूषण की तरह अनाचार भरा वातावरण भी कम घातक नहीं । विपन्नताएँ वे ही नहीं होतीं जो घटाओं के रूप में प्रत्यक्ष दीखती हैं, उनकी गहरी जड़ें अदृश्य वातावरण में, सूक्ष्म जगत में भी विद्यमान रहती हैं । उन्हें निर्मूल करने के लिए आत्मशक्ति की प्रचण्डता भी कम आवश्यक नहीं है ।

बुद्ध और गाँधी ने मात्र उपदेश ही नहीं दिये थे, ऐसे संघर्ष भी खड़े किए थे, जो व्यापक अनाचार को निरस्त कर सके । दयानन्द, विवेकानन्द, गुरुगोविन्द सिंह जैसों को भी इसी वर्ग में गिन सकते हैं । उनकी सफलता के अन्य कारण भी जुड़े हुए रहे होंगे, पर आत्मशक्ति की बहुलता का विद्यमान आधार भी उस संदर्भ में नकारा नहीं जा सकता । आज की अवांछनीयताओं को भी अपने निराकरण के लिए ऐसी ही आत्मशक्ति अपेक्षित है । समुद्र सोखने वाले अगस्त्य मुनि को, और विचार तंत्र को उलटने वाले परशुराम के कुल्हाड़े को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता ।

अगले दिनों अनेक खाई-खंदकों को पाटना आवश्यक होगा । साथ ही टीलों को भी झुकने के लिए विवश करना होगा । समतल भूमि तभी बन सकेगी और उसी पर कोई भव्य निर्माण सम्भव हो सकेगा । खेत उगाने के लिए भी तो समतल भूमि चाहिए । ऐसे प्रसंगों में प्रायः बुलडोजर प्रयुक्त करने पड़ते हैं । रेगिस्तानों को हरे-भरे बनाने के लिए समतल करके नहरों का, जल-स्रोतों का प्रबन्ध करना पड़ता है । ऐसी ही एक व्यवस्था आत्मशक्ति की उपलब्धि भी है । गंगा लाने का श्रेय भगीरथ को जाता है और मन्दाकिनी को अवतरित करने में महातपस्विनी अनुसूया का पुरुषार्थ काम आया था । पाताल-गंगा अर्जुन के धनुष-बाण से प्रादुर्भूत हुई थी और उसी से भीष्म की प्यास बुझी थी ।

तपते सूर्य की किरणों से, समुद्रों से भाप के अम्बार उठते हैं । बादलों का जन्म उसी से होता है । वर्षा ऋतु ही हरीतिमा और खाद्य-सम्पदा का उत्पादन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करती है । यह तप की गरिमा है । उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु प्रचुर साधन-सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी । उसका उत्पादन मात्र मन्त्र से नहीं होगा । अपेक्षित तप शक्ति ही है, जो हिमालय पिघला सके, तो हाहाकारी प्यास को अपने बलबूते पर शान्त कर सके। ऐसे ही अनेक कारण हैं, जो उस तपश्चर्या के साथ जुड़े हैं, जो शान्तिकुञ्ज के सूत्र-संचालक द्वारा कठोर अनुबंधों के साथ आरम्भ की गयी है ।

सूक्ष्मीकरण साधना से उद्भूत शक्ति और प्रवाह-परिवर्तन

अरविन्द ने विलायत से लौटते ही अंग्रेजों को भगाने के लिए जो उपाय सम्भव थे, वे सभी किये, पर बात बनती न दिखाई पड़ी । राजाओं को संगठित करके, विद्यार्थियों की सेना बनाकर, वनपार्टी गठित करके उन्होंने देख लिया कि इतनी सशक्त सरकार के सामने यह छुटपुट प्रयत्न सफल न हो सकेंगे । इसके लिए समान स्तर की सामर्थ्य, टक्कर लेने के लिए चाहिए । गान्धीजी के सत्याग्रह जैसा समय उन दिनों सम्भव नहीं था । ऐसी दशा में उन्होंने आत्म-शक्ति उत्पन्न करने और उसके द्वारा वातावरण गरम करने का काम हाथ में लिया । अंग्रेजों की पकड़ से अलग हटकर वे पाण्डिचेरी चले गये और एकान्त वास, मौन साधना सहित विशिष्ट तप करने लगे ।

लोगों की दृष्टि में वह पलायनवाद भी हो सकता था पर वस्तुतः वैसा था नहीं । सूक्ष्मदर्शियों के अनुसार उसके द्वारा अदृश्य स्तर की प्रचण्ड ऊर्जा उत्पन्न हुई । वातावरण गरम हुआ और एक ही समय में देश के अन्दर इतने महापुरुष उत्पन्न हुए, जिसकी इतिहास में अन्यत्र कहीं भी तुलना नहीं मिलती । राजनैतिक नेता कहीं भी उत्पन्न हो सकते हैं और कोई भी हो सकते हैं किन्तु महापुरुष हर दृष्टि से उच्चस्तरीय होते हैं । जिनका व्यक्तित्व कहीं अधिक ऊँचा होता है इसलिए जनमानस को उल्लसित, आन्दोलित करने की क्षमता भी उन्हीं में होती है । दो हजार वर्ष की गुलामी में बहुत कुछ गँवा बैठने वाले देश को ऐसे ही कर्णधारों की आवश्यकता थी । वे एक नहीं अनेकों एक ही समय में उत्पन्न हुए, प्रचण्ड ग्रीष्म में उठते चक्रवातों की तरह । फलतः अरविन्द का वह संकल्प कालान्तर में ठीक प्रकार सम्पन्न हुआ जिसे वे अन्य उपायों से पूरा कर सकने में समर्थ नहीं हो पा रहे थे ।

अध्यात्म विज्ञान के इतिहास में उच्चस्तरीय उपलब्धियों के लिए तप-साधना एक मात्र विधान उपचार है । वह सुविधा भरी-विलासी रीति-नीति अपनाकर सम्पादित नहीं की जा सकती । एकाग्रता और एकात्मता सम्पादित करने के लिए बहुमुखी बाह्याचारों में, प्रचार प्रयोजनों में भी निरत नहीं रहा जा सकता । उससे शक्तियाँ बिखरती हैं । फलतः केन्द्रीकरण का वह प्रयोजन पूरा नहीं होता जो सूर्य किरणों को आतिशी शीशे पर केन्द्रित करने की तरह अग्नि उत्पादन जैसी प्रचण्डता उत्पन्न कर सके । अठारह पुराण लिखते समय व्यास उत्तराखण्ड की गुफाओं में वसोधरा शिखर के पास चले गये । साथ में लेखन कार्य की सहायता करने के लिए गणेश जी इस शर्त पर रहे कि एक शब्द भी बोले बिना सर्वथा मौन रहेंगे । इतना महत्वपूर्ण कार्य इससे कम में सम्भव भी नहीं हो सकता था ।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दिनों महर्षि रमण का मौन तप चलता रहा । इसके अतिरिक्त भी हिमालय में अनेकों उच्चस्तरीय आत्माओं की विशिष्ट तपश्चर्याएँ इसी निमित्त चलीं । राजनेताओं द्वारा संचालित आन्दोलनों को सफल बनाने में इस अदृश्य सूत्र संचालन का कितना बड़ा योगदान रहा इसका स्थूल दृष्टि से अनुमान न लग सकेगा किन्तु सूक्ष्मदर्शी तथ्यान्वेषी उन रहस्यों पर पूरी तरह विश्वास करते हैं।

जितना बड़ा कार्य उतना बड़ा उपचार के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए इस बार की विशिष्ट तपश्चर्या वातावरण के प्रवाह को बदलने सुधारने के लिए की गई है । इसलिए उसका स्तर और स्वरूप कठिन है । आरम्भिक दिनों में जो काम कन्धे पर आया था वह भी लोकमानस को परिष्कृत करने, जागृत आत्माओं को एक संगठन सूत्र में पिरोने और रचनात्मक गतिविधियों का उत्साह उभारने का था । इतने भर से काम चल जाया करे तो इसकी व्यवस्था सम्पन्न लोग अपनी जेब से अथवा दूसरों से माँग-जाँचकर आसानी से पूर्ण कर लिया करते और अब तक स्थिति को बदलकर कुछ से कुछ बना लिया गया होता । कईयों ने पूरे जोर-शोर से यह प्रयत्न किये भी हैं । प्रचारात्मक साधनों के अम्बार भी जुटाये हैं पर उनके बलबूते कुछ ऐसा न बन पड़ा जिसका कारगर प्रभाव हो सके । वस्तु स्थिति को समझाने वाले निर्देशक ने सर्वप्रथम एक ही काम सौंपा । चौबीस साल की गायत्री महापुरश्चरण साधना शृंखला का पिछले तीस वर्षों में जो कुछ बन पड़ा उसमें श्रेय है । कमाई की वह हुण्डी ही अब तक काम देती रही । अपना, व्यक्ति विशेष का, समाज का, संस्कृति का यदि कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भला अपने द्वारा बन पड़ा तो इस चौबीस वर्ष के संचित भण्डार को खर्च किये जाने की बात ही समझी जा सकती है । उस समय भी मात्र जप संख्या ही पूरी नहीं की गई थी वरन् साथ ही कितने ही अनुबन्ध, अनुशासन एवं व्रत पालन भी जुड़े हुए थे ।

जप संख्या तो ज्यों—त्यों करके कोई भी खाली समय वाला पूरी कर सकता है पर विलासी एवं अस्त-व्यस्त जीवनचर्या अपनाने वाला कोई व्यक्ति उतनी भर चिन्ह पूजा से कोई बड़ा काम नहीं कर सकता । साथ में तपश्चर्या के कठोर विधान भी जुड़े रहने चाहिए जो स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों ही शरीरों को तपाते और हर दृष्टि से समर्थ बनाते हैं । संचित कषाय-कल्मष भी आत्मिक प्रगति के मार्ग में बहुत बड़े व्यवधान होते हैं । उनका निवारण एवं निराकंण भी इसी भट्टी में प्रवेश करने से बन पड़ता है । जमीन में से निकालते समय लोहा मिट्टी मिला कच्चा होता है । अन्य धातुएँ भी ऐसी ही अनगढ़ स्थिति में होती हैं । उन्हें भट्टी में डालकर तपाया और प्रयोग के उपयुक्त बनाया जाता है । रस शास्त्री, बहुमूल्य रस-भस्में बनाने के लिए कई-कई अग्नि संस्कार करते हैं । कुम्हार के पास बर्तन पकाने के लिए उन्हें आंव में तपाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं । मनुष्यों पर भी यही नियम लागू होते हैं । ऋषि मुनियों की सेवा-साधना, धर्म-धारणा तो प्रकट है ही साथ ही वे अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आवश्यक शक्ति अर्जित करने के लिए तपश्चर्या भी समय-समय पर अपनाते रहते थे । यह प्रक्रिया अपने-अपने ढंग से हर महत्वपूर्ण व्यक्ति को सम्पन्न करनी पड़ी हैं, करनी पड़ेंगी क्योंकि ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का उन्नयन, परिपोषण इसके बिना हो नहीं सकता । व्यक्तित्व में पवित्रता, प्रखरता और परिपक्वता न हो तो कहने योग्य, सराहने योग्य सफलताएँ प्राप्त कर सकने का सुयोग ही नहीं बनता । कुचक्र, छद्म और आतंक के बलबूते उपार्जित की गई सफलताएँ जादू के तमाशे में हथेली पर सरसों जमाने जैसे चमत्कार दिखाकर तिरोहित हो जाती हैं । बिना जड़ का पेड़ कब तक टिकेगा और किस प्रकार फलेगा-फूलेगा ।

तपश्चर्या के मौलिक सिद्धान्त हैं—संयम और सदुपयोग । इन्द्रिय संयम से पेट ठीक रहने से स्वास्थ्य नहीं बिगड़ता । ब्रह्मचर्य पालन से मनोबल का भण्डार चुकने नहीं पाता । अर्थ संयम से, नीति की कमाई से औसत भारतीय स्तर का निर्वाह करना पड़ता है, फलतः न दरिद्रता फटकती है और न बेईमानी की आवश्यकता पड़ती है । समय संयम से व्यस्त दिनचर्या बनाकर चलना पड़ता है, श्रम तथा मनोयोग को निर्धारित सत्प्रयोजनों में लगाये रहना पड़ता है । फलतः कुकर्मों के लिए समय ही नहीं बचता । जो बन पड़ता है, श्रेष्ठ और सार्थक ही होता है । विचार संयम से एकात्मता सधती है । आस्तिकता, आध्यात्मिकता और धार्मिकता का दृष्टिकोण विकसित होता है । भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग की साधना सहज सधती रहती है । संयम का अर्थ है—बचत । चारों प्रकार का संयम बरतने पर मनुष्य के पास इतनी अधिक सामर्थ्य बच रहती है, जिसे परिवार निर्वाह के अतिरिक्त महान प्रयोजनों में प्रचुर मात्रा में भली प्रकार लगाया जाता रहे । संयमशीलों को वासना, तृष्णा और अहंता की खाई पाटने में मरना-खपना नहीं पड़ता इसलिए सदुद्देश्यों की दिशा में कदम बढ़ाने की आवश्यकता पड़ने पर व्यस्तता, अभावग्रस्तता, चिन्ता, समस्या आदि के बहाने नहीं गढ़ने पड़ते । स्वार्थ—परमार्थ साथ-साथ सधते रहते हैं और हँसती-हँसाती, हलकी-फुलकी जिन्दगी जीने का अवसर मिल जाता है । इसी मार्ग पर अब से ६० वर्ष पूर्व मार्गदर्शक ने चलना सिखाया था । वह क्रम अनवरत रूप से चलता रहा । जब तब वातावरण में बैटरी चार्ज करने के लिए बुलाया जाता रहा । विगत तीस वर्षों में एक-एक वर्ष के लिए एकान्तवास और विशेष साधना उपक्रम के लिए जाना पड़ा है । इसका उद्देश्य एक ही था । तपश्चर्या के उत्साह और पुरुषार्थ में श्रद्धा और विश्वास में कहीं कोई कमी न पड़ने पाये। जहाँ कमी पड़ रही हो उसकी भरपाई होती रहे । भागीरथ शिला-गंगोत्री में की गई साधना से धरती पर ज्ञान गंगा की, प्रज्ञा अभियान की, अवतरण की क्षमता एवं दिशा मिली । इस बार उत्तर काशी के परशुराम आश्रम में वह कुल्हाड़ा उपलब्ध हुआ जिसके सहारे व्यापक अवांछनीयता के प्रति लोकमानस में विक्षोभ एवं आक्रोश उत्पन्न किया जा सके । पौराणिक परशुराम ने धरती पर से अनेक आतताइयों के अनेकों बार सिर काटे थे । सिर काटना "ब्रेन वाशिंग" है । विचार क्रान्ति एवं प्रज्ञा, अभियान में सृजनात्मक ही नहीं सुधारात्मक प्रयोजन भी सम्मिलित हैं । यह दोनों ही उद्देश्य जिस प्रकार जितने व्यापक क्षेत्र में जितनी सफलता के साथ सम्पन्न होते रहे हैं, उनमें न शक्ति कौशल है, न साधनों का चमत्कार, परिस्थितियों का संयोग यह मात्र तपश्चर्या की सामर्थ्य से ही सम्पन्न हो सका ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह जीवनचर्या के अद्यावधि भूतकाल का विवरण हुआ । वर्तमान में इसी दिशा में एक बड़ी छलांग लगाने के लिए उस शक्ति ने निर्देश किया है, जिस सूत्रधार के इशारों पर कठपुतली की तरह नाचते हुए समूचा जीवन गुजर गया । अब हमें तपश्चर्या की एक नवीन उच्चस्तरीय कक्षा में प्रवेश करना पड़ा है । सर्वसाधारण को इतना ही पता है कि हम एकान्तवास में हैं किसी से मिल-जुल नहीं रहे हैं । यह जानकारी सर्वथा अधूरी है । क्योंकि जिस व्यक्ति के रोम-रोम में कर्मठता, पुरुषार्थ-परायणता, नियमितता और व्यवस्था भरी पड़ी हो वह इस प्रकार का निरर्थक और निष्क्रिय जीवन जी ही नहीं सकता जैसा कि समझा जा रहा है। एकान्त वास में हमें पहले की अपेक्षा अधिक श्रम करना पड़ा है । अधिक व्यस्त रहना पड़ा है तथा लोगों से न मिलने की विधा अपनाने पर भी इतनों से ऐसों से सम्पर्क सूत्र जोड़ना पड़ा है जिनके साथ बैठने में ढेरों का ढेरों समय चला जाता है पर मन नहीं भरता । फिर एकान्त कहाँ हुआ ? न मिलने की बात कहाँ बन पड़ी ? मात्र कार्य-शैली में ही राई रत्ती परिवर्तन हुआ । मिलने-जुलने वालों का वर्ग एवं विषय भर बदला । ऐसी दशा में अकर्मण्य और पलायनवाद का दोष ऊपर कहाँ लदा ? तपस्वी सदा ऐसी ही रीति-नीति अपनाते हैं । वे निष्क्रिय दीखते भर हैं, वस्तुतः अत्यधिक व्यस्त रहते हैं । लट्टू जब पूरे वेग से घूमता है तब स्थिर खड़ा भर दीखता है । उसके घूमने का पता तो जब चलता है जब चाल धीमी पड़ती है और बैलेंस लड़खड़ाने पर औंधा गिरने लगता है ।

आइन्स्टीन जिन दिनों अत्यधिक महत्वपूर्ण अणु अनुसन्धान में लगे थे उन दिनों उनकी जीवनचर्या में विशेष प्रकार का परिवर्तन किया गया था । वे भव्य भवन में एकाकी रहते थे । सभी साधन सुविधाएँ उसमें उपलब्ध थीं साहित्य, प्रयोग उपकरण एवं सेवक सहायक भी । वे सभी दूर रखे जाते थे ताकि एकान्त में एकाग्रतापूर्वक बन पड़ने वाले चिन्तन में कोई व्यवधान उत्पन्न न हो । वे जब तक चाहते नितान्त एकान्त में सर्वथा एकाकी रहते । कोई उनके कार्य में तनिक भी विक्षेप नहीं कर सकता था । जब वे चाहते घण्टी बजाकर नौकर बुलाते और इच्छित वस्तु या व्यक्ति प्राप्त कर लेते । मिलने वाले मात्र कार्ड जमा कर जाते और जब कभी उन्हें बुलाया जाता तब की महीनों प्रतीक्षा करते । घनिष्ठता बताकर कोई भी उनके कार्य में विक्षेप नहीं कर सकता था । इतना प्रबन्ध बन पड़ने पर ही उनके लिए यह सम्भव हुआ कि संसार को आश्चर्य चकित कर देने वाली—मनुष्य जाति को महान अनुदान देने वाली उपलब्धियाँ प्रस्तुत कर सके । यदि मित्र-मंडली से घिरे रहते, उथले कार्यों में रस लेकर समय गुजारते तो अन्यान्यों की तरह वे भी बहुमूल्य जीवन का कोई कहने लायक लाभ न उठा पाते । प्राचीनकाल में ऋषि-तपस्वियों की जीवनचर्या ठीक इसी प्रकार की थी । उनके सामने आत्म-विज्ञान से सम्बन्धित अगणित अनुसन्धान कार्य थे । उसमें तन्मयतापूर्वक अपना कार्य कर सकने के लिए वे कोलाहल रहित स्थान निर्धारित करते थे और पूरी तरह तन्मयता के साथ निर्धारित प्रयोजनों में लगे रहते थे ।

अपने सामने भी प्रायः इसी स्तर के नये कार्य करने के लिए रख दिये गये । वे बहुत वजनदार हैं, साथ ही बहुत महत्त्वपूर्ण भी । इनमें से एक है—विश्वव्यापी सर्वनाशी विभीषिकाओं को निरस्त कर सकने योग्य आत्मशक्ति उत्पन्न करना । दूसरा है—सृजन शिल्पियों को जिस प्रेरणा और क्षमता के बिना कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ रहा है उसकी पूर्ति करना। तीसरा है—नवयुग के लिए जिन सत्प्रवृत्तियों का सूत्र संचालन होना है, उनका ताना बुनना और ढाँचा खड़ा करना । यह तीनों ही कार्य ऐसे हैं जो अकेले स्थूल शरीर से नहीं बन सकते । उसकी सीमा और सामर्थ्य अति न्यून है । इन्द्रिय सामर्थ्य थोड़े दायरे में काम कर सकती है और सीमित वजन उठा सकती है, हाड़-माँस के पिण्ड में बोलने, सोचने, चलने, करने, कमाने, पचाने की बहुत थोड़ी सामर्थ्य है । उतने भर से सीमित काम हो सकता है । सीमित कार्य से शरीर यात्रा चल सकती है और समीपवर्ती सम्बद्ध लोगों का यत्किंचित भला हो सकता है । अधिक व्यापक और अधिक बड़े कामों के लिए सूक्ष्म और कारण शरीरों के विकसित किये जाने की आवश्यकता पड़ती है । तीनों जब समान रूप में सामर्थ्यवान और गतिशील होते हैं तब कहीं इतने बड़े काम बन सकते हैं जिनके करने की इन दिनों आवश्यकता पड़ गई है ।

रामकृष्ण परमहंस के सामने यही स्थिति आई थी। उन्हें व्यापक काम करने के लिए बुलाया गया । योजना के अनुसार उन्होंने अपनी क्षमता विवेकानन्द को सौंप दी थी तथा उन्होंने कार्यक्षेत्र को सरल और सफल बनाने के लिए आवश्यक ताना-बाना बुन देने का कार्य सम्भाला। इतना बड़ा काम वे मात्र स्थूल शरीर के सहारे कर नहीं पा रहे थे । सो उन्होंने उसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नि:संकोच छोड़ भी दिया । बैलेंस से अधिक वरदान देते रहने के कारण उन पर ऋण भी चढ़ गया था । उनकी पूर्ति के बिना गाड़ी रुकती । इसलिए स्वेच्छापूर्वक कैन्सर का रोग भी ओढ़ लिया । इस प्रकार ऋण मुक्त होकर विवेकानन्द के माध्यम से उस कार्य में जुट गये जिसे करने के लिए उनकी निर्देशक सत्ता ने उन्हें संकेत किया था । प्रत्यक्षत: रामकृष्ण तिरोहित हो गये। उनका अभाव खटका, शोक भी बना । पर हुआ वह जो श्रेयस्कर था । दिवंगत होने के उपरान्त उनकी सामर्थ्य हजार गुनी अधिक बढ़ गई। इसके सहारे उन्होंने देश एवं विश्व में अनेकानेक सत्प्रवृत्तियों का सम्वर्धन किया । जीवन काल में वे भक्तजनों को थोड़ा बहुत आशीर्वाद देते रहे और एक विवेकानन्द को अपना संग्रह सौंपने में समर्थ हुए । पर जब उन्हें सूक्ष्म और कारण शरीर से काम करने का अवसर मिल गया तो उनसे पूरे विश्व में इतना काम किया जा सका जिसका लेखा-जोखा ले सकना सामान्य स्तर की जाँच-पड़ताल से सम्भव नहीं ।

ईसा की जीवनचर्या भी ऐसी ही है । वे जीवन भर में बहुत दौड़-धूप के उपरान्त मात्र १३ शिष्य बना सके । देखा कि स्थूल शरीर की क्षमता से उतना बड़ा काम न हो सकेगा । जितना कि वे चाहते हैं, ऐसी दशा में यही उपयुक्त समझा कि सूक्ष्म शरीर का अवलम्बन कर संसार भर में ईसाई मिशन फैला दिया जाये । ऐसे परिवर्तनों के समय महापुरुष पिछला हिसाब-किताब साफ करने के लिए कष्टसाध्य मृत्यु का वरण करते हैं । ईसा का क्रूस पर चढ़ना, सुकरात का विष पीना, कृष्ण को तीर लगना, पाण्डवों का हिमालय में गलना, गाँधी का गोली खाना, आद्य शंकराचार्य को भगन्दर होना यह बताता है कि अगले महान प्रयोजनों के लिए जिन्हें स्थूल से सूक्ष्म में प्रवेश करना होता है, वे उपलब्ध शरीर का इस प्रकार अन्त करते हैं, जिसे बलिदान स्तर का, प्रेरणा प्रदान करने वाला और अपने चलते समय की पवित्रता, प्रखरता प्रदान करने वाला कहा जा सके । हमारे साथ भी यही हुआ है व आगे होना है ।

स्थूल का सूक्ष्म में परिवर्तन : सूक्ष्मीकरण

युग परिवर्तन की यह एक ऐतिहासिक बेला है । इन बीस वर्षों में हमें जमकर काम करने की ड्यूटी सौंपी गई थी । सन् १९८० से लेकर अब तक के पन्द्रह वर्षों में जो काम हुआ है पिछले तीस वर्षों की तुलना में कहीं अधिक है । समय की आवश्यकता के अनुरूप तत्परता बरती गई और खपत को ध्यान में रखते हुए तद्नुरूप शक्ति उपार्जित की गई । यह वर्ष कितनी जागरुकता, तन्मयता, एकाग्रता और पुरुषार्थ की चरम सीमा तक पहुँच कर व्यतीत करने पड़े हैं, उनका उल्लेख उचित न होगा, क्योंकि इस तत्परता का प्रतिफल २४०० प्रज्ञा पीठों और १५००० प्रज्ञा संस्थानों के निर्माण के अतिरिक्त और कुछ प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होता । एक कड़ी हर दिन एक फोल्डर लिखने की इसमें और जोड़ी जा सकती है शेष सब कुछ परोक्ष है । परोक्ष का प्रत्यक्ष लेखा-जोखा किस प्रकार सम्भव हो ?

युग सन्धि की बेला में अभी पन्द्रह वर्ष और रह जाते हैं । इस अवधि में गतिचक्र और भी तेजी से भ्रमण करेगा । एक ओर उसकी गति बढ़ानी होगी, दूसरी ओर रोकनी होगी । विनाश को रोकने और विकास को बढ़ाने की आवश्यकता पड़ेगी । दोनों ही गतियाँ इन दिनों मन्थर हैं । इस हिसाब से सन् २००० तक उस लक्ष्य की उपलब्धि न हो सकेगी, जो अभीष्ट है । इसलिए सृष्टि के प्रयास चक्र निश्चित रूप से तीव्र होंगे। उसमें हमारी भी गीध-गिलहरी जैसी भूमिका है। काम कौन, कब, क्या, किस प्रकार करे—यह बात आगे की है । प्रश्न जिम्मेदारी का है । युद्ध-काल में जो जिम्मेदारी सेनापति की होती है, वही खाना पकाने वाले की भी । आपत्ति काल में उपेक्षा कोई भी नहीं बरत सकता ।

इस अवधि में एक साथ कई मोर्चों पर एक साथ लड़ाई लड़नी होगी । समय ऐसे भी आते हैं जब खेत की फसल काटना, जानवरों को चारा लाना, बीमार लड़के का इलाज कराना, मुकदमे की तारीख पर हाजिर होना, घर आये मेहमान का स्वागत करना जैसे कई काम एक ही आदमी को एक ही समय पर करने होते हैं । युद्ध काल में तो बहुमुखी चिन्तन और उत्तरदायित्व और भी अधिक सघन तथा विरल हो जाता है । किस मोर्चे पर कितने सैनिक भेजना है, जो लड़ रहे हैं, उनके लिए गोला बारूद कम न पड़ने देना, रसद का प्रबन्ध रखना, अस्पताल का दुरस्त होना, मरे हुए सैनिकों को ठिकाने लगाना, अगले मोर्चे के लिए खाइयाँ खोदना जैसे काम बहुमुखी होते हैं । सभी पर समान ध्यान देना होता है । एक में भी चूक होने से बात बिगड़ जाती है । करा-धरा चौपट हो जाता है।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमें अपनी प्रवृत्तियाँ बहुमुखी बढ़ा लेने के लिए कहा गया है । इसमें सबसे बड़ी कठिनाई स्थूल शरीर का सीमा-बन्धन है । यह सीमित है, सीमित क्षेत्र में ही काम कर सकता है । सीमित ही वजन उठा सकता है । काम असीम क्षेत्र से सम्बन्धित हैं और ऐसे हैं जिनमें एक साथ कितनों से ही वास्ता पड़ना चाहिए! यह कैसे बने ? इसके लिए एक तरीका यह है कि स्थूल शरीर को बिल्कुल ही छोड़ दिया जाय और जो करना है उसे पूरी तरह एक या अनेक सूक्ष्म शरीरों से सम्पन्न करते रहा जाय । निर्देशक को यदि यही उचित लगेगा तो उसे निपटाने में पल भर की भी देर न लगेगी। स्थूल शरीरों का एक झंझट है कि उनके साथ कर्मफल के भोग विधान जुड़ जाते हैं । यदि लेन-देन बाकी रहे तो अगले जन्म तक वह भार लदा चला जाता है और फिर खींचतान करता है । ऐसी दशा में उसके भोग भुगतते हुए जाने में निश्चिन्तता रहती है ।

रामकृष्ण परमहंस ने आशीर्वाद वरदान बहुत दिए थे । उपार्जित पुण्य भण्डार कम था । हिसाब चुकाने के लिए गले का कैन्सर बुलाया गया । बेबाकी तब हुई। आद्य शंकराचार्य की भी भगन्दर का फोड़ा ही जान लेकर गया था । महात्मा नारायण स्वामी को भी ऐसा ही रोग सहना पड़ा । गुरु गोलवलकर कैन्सर से पीड़ित होकर स्वर्गवासी हुए । ऐसे ही अन्य उदाहरण भी हैं जिनमें पुण्यात्माओं को अन्तिम समय व्यथा पूर्वक बिताना पड़ा । इसमें उनके पापों का दण्ड कारण नहीं होता, वह पुण्य व्यतिरेक की भरपाई करना होता है । वे कइयों का कष्ट अपने ऊपर लेते रहते हैं । बीच से चुका सके तो ठीक अन्यथा अन्तिम समय हिसाब-किताब बराबर करते हैं, ताकि आगे के लिए कोई झंझट न शेष रहे और जीवन—मुक्त स्थिति बने रहने में पीछे का कोई कर्मफल व्यवधान न करे ।

मूल प्रश्न जीव सत्ता के सूक्ष्मीकरण का है । सूक्ष्म व्यापक होता है, बहुमुखी भी । एक ही समय में कई जगह काम कर सकता है । कई उत्तरदायित्व एक साथ ओढ़ सकता है । जबकि स्थूल के लिए एक स्थान, एक सीमा के बन्धन हैं । स्थूल शरीरधारी अपने भाग-दौड़ के क्षेत्र में ही काम करेगा । साथ-ही भाषा ज्ञान के अनुरूप विचारों का आदान-प्रदान कर सकेगा किन्तु सूक्ष्म में प्रवेश करने पर भाषा सम्बन्धी झंझट दूर हो जाते हैं, विचारों का आदान-प्रदान चल पड़ता है । विचार सीधे मस्तिष्क या अन्तराल तक पहुँचाए जा सकते हैं । उनके लिए भाषा माध्यम आवश्यक नहीं । व्यापकता की दृष्टि से यह एक बहुत बड़ी सुविधा है, यातायात की व्यवस्था भी स्थूल-शरीरधारी को चाहिए । पैरों के सहारे तो यह एक घण्टे में प्रायः तीन मील ही चल पाता है । वाहन जिस गति का होगा, उसकी दौड़ भी उतनी ही रह जायेगी । एक व्यक्ति की एक जीभ होती है । उसका उच्चारण उसी से होगा किन्तु सूक्ष्म शरीर की इन्द्रियों पर इस प्रकार का बन्धन नहीं है । उनकी देखने की, सुनने की, बोलने की सामर्थ्य स्थूल शरीर की तुलना में अनेक गुनी हो जाती है । एक शरीर समयानुसार अनेक शरीर में भी प्रतिभाषित हो सकता है । रास के समय श्रीकृष्ण के अनेकों शरीर गोपियों को अपने साथ सहनृत्य करते दीखते थे । कंस वध के समय तथा सिया-स्वयंवर के समय उपस्थित समुदाय को राम और कृष्ण की विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ दृष्टिगोचर हुईं थीं । विराट् रूप के दर्शन में भगवान ने अर्जुन को, यशोदा को जो दर्शन कराया था, वह उनके सूक्ष्म एवं कारण शरीर का ही आभास था । अलंकार काव्य के रूप में उसकी व्याख्या की जाती है, सो भी किसी सीमा तक ठीक ही है ।

यह स्थिति शरीर त्यागते ही हर किसी को उपलब्ध हो जाय यह सम्भव नहीं । भूत-प्रेत चले तो सूक्ष्म शरीर में जाते हैं, पर वे बहुत ही अनगढ़ स्थिति में रहते हैं । मात्र सम्बन्धित लोगों को ही अपनी आवश्यकताएँ बताने भर के कुछ दृश्य कठिनाई से दिखा सकते हैं । पितर स्तर की आत्माएँ उनसे कहीं अधिक सक्षम होती हैं । उनका विवेक एवं व्यवहार कहीं अधिक उदात्त होता है । इसके लिए उनका सूक्ष्म शरीर पहले से ही परिष्कृत हो चुका होता है । सूक्ष्म शरीर को उच्चस्तरीय क्षमता—सम्पन्न बनाने के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं । वे तपस्वी स्तर के होते हैं । सामान्य काया को सिद्ध पुरुष स्तर की बनाने के लिए अगला कदम सूक्ष्मीकरण का है । सिद्ध पुरुष, अपनी काया की सीमा में रहकर जो दिव्य क्षमता अर्जित कर सकते हैं, कर लेते हैं उसी से दूसरों की सेवा सहायता करते हैं, किन्तु शरीर विकसित कर लेने वाले उन सिद्धियों के भी धनी देखे गए हैं, जिन्हें योगशास्त्र में अणिमा, महिमा, लघिमा आदि कहा गया है । शरीर का हल्का, भारी, दृश्य, अदृश्य हो जाना, यहाँ से वहाँ जा पहुँचना, प्रत्यक्ष शरीर के रहते हुए सम्भव नहीं क्योंकि शरीरगत परमाणुओं की संरचना ऐसी नहीं है जो पदार्थ विज्ञान की सीमा मर्यादा से बाहर जा सके । कोई मनुष्य हवा में नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उड़ सकता और न पानी पर चल सकता है । यदि ऐसा कर सका होता तो उसने वैज्ञानिकों की चुनौती अवश्य स्वीकार की होती और प्रयोगशाला जाकर विज्ञान के प्रतिपादनों में एक नया अध्याय अवश्य ही जोड़ा होता । किम्बदन्तियों के आधार पर कोई किसी से इस स्तर की सिद्धियों का बखान करने भी लगे, तो उसे अत्युक्ति ही माना जायेगा । अब—प्रत्यक्ष को प्रमाणित किए बिना किसी की गति नहीं ।

प्रश्न सूक्ष्मीकरण साधना का है, जो हम इन दिनों कर रहे हैं । यह एक विशेष साधना है, जो स्थूल शरीर के रहते हुए भी की जा सकती है और उसे त्यागने के उपरान्त भी करनी पड़ती है । दोनों ही परिस्थितियों में यह स्थिति बिना अतिरिक्त प्रयोग-पुरुषार्थ के-तप साधना के-सम्भव नहीं हो सकती । इसे योगाभ्यास तपश्चर्या का अगला चरण कहना चाहिएं ।

इसके लिए किसे क्या करना होता है, यह उसके वर्तमान स्तर एवं उच्चस्तरीय मार्गदर्शन पर निर्भर होता है । सबके लिए एक पाठ्यक्रम नहीं हो सकता किन्तु इतना अवश्य है कि अपनी शक्तियों का बहिरंग अपव्यय रोकना पड़ता है । अण्डा जब तक पक नहीं जाता तब तक एक खोखले में बन्द रहता है इसके बाद वह इस छिलके को तोड़कर चलने-फिरने और दौड़ने-उड़ने लगता है । लगभग यही अभ्यास सूक्ष्मीकरण के हैं, जो हमने पिछले दिनों किए हैं । प्राचीन काल में गुफा सेवन, समाधि आदि का प्रयोग प्रायः इसी निमित्त होता था ।

सूक्ष्म शरीरधारियों का वर्णन और विवरण पुरातन ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक मिलता है । यक्ष और युधिष्ठिर के मध्य विग्रह तथा विवाद का महाभारत में विस्तार पूर्वक वर्णन है । यक्ष, गन्धर्व, ब्रह्मराक्षस जैसे कई वर्ग सूक्ष्म शरीरधारियों के थे । विक्रमादित्य के साथ पाँच 'वीर' रहते थे । शिवजी के गण 'वीरभद्र' कहलाते थे। भूत-प्रेत, जिन्द, मसानों की अलग ही बिरादरी थी। 'अलाद्दीन का चिराग" जिनने पढ़ा है, उन्हें इस समुदाय की गतिविधियों की जानकारी होगी । छाया पुरुष साधना में अपने निज के शरीर से ही एक अतिरिक्त सत्ता गढ़ ली जाती है और वह एक समर्थ अदृश्य साथी-सहयोगी जैसा काम करती है ।

इन सूक्ष्म शरीरधारियों में अधिकांश का उल्लेख हानिकारक या नैतिक दृष्टि से हेय स्तर पर हुआ है । सम्भव है उन दिनों अतृप्त विक्षुब्ध स्तर के योद्धा रणभूमि में मरने के उपरान्त ऐसे ही कुछ हो जाते रहे हों । उन दिनों युद्धों की मार-काट ही सर्वत्र संव्याप्त थी, साथ ही सूक्ष्म शरीरधारी देवर्षियों का भी कम उल्लेख नहीं है । राजर्षि और ब्रह्मर्षि तो स्थूल शरीरधारी ही होते थे पर जिनकी गति सूक्ष्म शरीर में भी काम करती थी वे देवर्षि कहलाते थे । वे वायुभूत होकर विचरण करते थे, लोक-लोकान्तरों में जा सकते थे । जहाँ आवश्यकता अनुभव करते थे, वहाँ भक्तजनों का मार्गदर्शन करने के लिए अनायास ही जा पहुँचते थे ।

ऋषियों में से अन्य कईयों के भी ऐसे उल्लेख मिलते हैं । वे समय-समय पर धैर्य देने, मार्गदर्शन करने या जहाँ आवश्यकता समझी है, वहाँ पहुँचे, प्रकट हुए हैं । पैरों से चलकर जाना नहीं पड़ा है । अभी भी हिमालय के कई यात्री ऐसा विवरण सुनाते हैं कि राह भटक जाने पर कोई उन्हें उपयुक्त स्थल तक छोड़कर चला गया । कईयों ने किन्हीं गुफाओं में, शिखरों पर अदृश्य योगियों को दृश्य तथा दृश्य को अदृश्य होते देखा है । तिब्बत के लामाओं की ऐसी कितनी ही कथा गाथायें सुनी गयी हैं । थियोसोफिकल सोसायटी की मान्यता है कि अभी हिमालय के ध्रुव केन्द्र पर एक ऐसी मण्डली है जो विश्व-शान्ति में योगदान करती है इसे उन्होंने 'अदृश्य सहायक' नाम दिया है ।

यहाँ स्मरण रखने योग्य बात यह है, कि यह देवर्षि समुदाय भी मनुष्यों का ही एक विकसित वर्ग है। योगियों, सिद्ध पुरुषों और महामानवों की तरह वह सेवा-सहायता में दूसरों की अपेक्षा अधिक समर्थ पाया जाता है । पर यह मान बैठना गलती होगी कि वे सर्व समर्थ हैं और किसी की भी मनोकामना को तत्काल पूरी कर सकते हैं, या अमोघ वरदान दे सकते हैं । कर्मफल की वरिष्ठता सर्वोपरि है, उसे भगवान ही घटा या मिटा सकते हैं । मनुष्य की सामर्थ्य से वह बाहर है। जिस प्रकार बीमार की चिकित्सक, विपत्तिग्रस्त की धनी सहायता कर सकता है, ठीक उसी प्रकार सूक्ष्म शरीरधारी देवर्षि भी समय-समय पर सत्कर्मों के निमित्त बुलाने पर अथवा बिना बुलाये भी सहायता के लिए दौड़ते हैं । इससे बहुत लाभ भी मिलता है । इतने पर भी किसी को नहीं मान बैठना चाहिए कि पुरुषार्थ की आवश्यकता ही नहीं रही, या उनके आड़े आते ही निश्चित सफलता मिल गयी । ऐसा रहा होता तो लोग उन्हीं का आसरा लेकर निश्चिन्त हो जाते और फिर निजी पुरुषार्थ की आवश्यकता न समझते । निजी कर्मफल आड़े आने,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिस्थितियों के बाधक होने की बात को ध्यान में ही न रखते ।

यहाँ एक अच्छा उदाहरण हमारे हिमालयवासी गुरुदेव का है । सूक्ष्म शरीरधारी होने के कारण ही वे उस प्रकार के वातावरण में रह पाते हैं, जहाँ जीवन निर्वाह के कोई साधन नहीं हैं । समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन और सहायता करते रहते हैं । इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें कुछ करना नहीं पड़ा, कोई कठिनाई मार्ग में आयी ही नहीं, कभी असफलता मिली ही नहीं । यह भी होता रहा है पर निश्चित है कि हम एकाकी जो कर सकते थे उसकी अपेक्षा उस दिव्य सहयोग से मनोबल बहुत बढ़ा—चढ़ा रहा है । उचित मार्गदर्शन मिला है । कठिनाई के दिनों में धैर्य और साहस यथावत स्थिर रहा है । यह कम नहीं है। इतनी ही आशा दूसरों से करनी भी चाहिए । सब काम करके कोई रख जायेगा ऐसी आशा भगवान से भी नहीं करनी चाहिए । भूल यही होती रही कि दैवी सहायता का नाम लेते ही लोग समझते हैं कि वह जादू की छड़ी घुमाई और मनचाहा काम बन गया । ऐसे ही अतिवादी लोग क्षण भर में आस्था खो बैठते देखे गये हैं । दैवी शक्तियों से, सूक्ष्म शरीरों से हमें सामयिक सहायता की आशा करनी चाहिए । साथ ही अपनी जिम्मेदारियाँ वहन करने के लिए कटिबद्ध भी रहना चाहिए । असफलताओं तथा कठिनाइयों को अच्छा शिक्षक मानकर अगले कदम अधिक सावधानी के, अधिक बहादुरी के उठाने की तैयारी करनी चाहिए ।

सूक्ष्म शरीरों की शक्ति सामान्यतः भी अधिक होती है । दूरदर्शन, दूर श्रवण, पूर्वाभास, विचार-सम्प्रेषण आदि में प्रायः सूक्ष्म शरीर की ही भूमिका रहती है । उनकी सहायता से कितनों को ही विपत्तियों से उबरने का अवसर मिला है । कईयों को ऐसी सहायताएँ मिली हैं जिनके बिना उनका कार्य रुका ही पड़ा रहता । दो सच्चे मित्र मिलने से लोगों की हिम्मत कई गुना बढ़ जाती है । वैसा ही अनुभव अदृश्य सहायकों के साथ सम्बन्ध जुड़ने से भी करना चाहिए।

जिस प्रकार अपना दृश्य संसार है और उसमें दृश्य शरीर वाले जीवधारी रहते हैं, ठीक उसी प्रकार उससे जुड़ा हुआ एक अदृश्य लोक भी है । उसमें सूक्ष्म शरीरधारी निवास करते हैं । इनमें कुछ बिल्कुल साधारण, कुछ दुरात्मा और कुछ अत्यन्त उच्चस्तर के होते हैं । वे मनुष्य लोक में समुचित दिलचस्पी लेते हैं। बिगड़ों को सुधारना और सुधरों को अधिक सफल बनाने में अयाचित सहायता माँगने का प्रयोजन, और माँगने वाले का स्तर, उपयुक्त होने पर तो वह सहायता और भी अच्छी तरह और भी बड़ी मात्रा में मिलती है ।

यह सूक्ष्म शरीरों की, सूक्ष्म लोक की सामान्य चर्चा हुई । प्रसंग अपने आप को विकसित करने का है । यह विषम बेला है । इसमें प्रत्यक्ष शरीर वाले, प्रत्यक्ष उपाय—उपचारों से जो कर सकते हैं सो तो कर ही रहे हैं । करना भी चाहिए पर दीखता है कि उतने भर से काम चलेगा नहीं । सशक्त सूक्ष्म शरीरों को, बिगड़ों को अधिक न बिगड़ने देने के लिए अपना जोर लगाना पड़ेगा । सँभालने के लिए जो प्रक्रिया चल रही है वह पर्याप्त न होगी । उसे और भी अधिक सरल-सफल बनाने के लिए अदृश्य सहायता की आवश्यकता पड़ेगी । यह सामूहिक समस्याओं के लिए भी आवश्यक होगा और व्यक्तिगत रूप से सत्प्रयोजनों में संलग्न व्यक्तित्वों को अग्रगामी-यशस्वी बनाने की दृष्टि से भी ।

जब हमें यह काम सौंपा गया तो उसे करने में आना-कानी कैसी ? दिव्य सत्ता के संकेतों पर चिरकाल से चलते चले आ रहे हैं और जब तक आत्मबोध जाग्रत रहेगा तब तक यही स्थिति बनी रहेगी । यही गतिविधि चलेगी । यह विषम बेला है, इन दिनों दृश्य और अदृश्य क्षेत्र में जो विषाक्तता भरी हुई है उसके परिशोधन का प्रयास करना अविलम्ब आवश्यक हो गया है तो संजीवनी बूटी लाने के लिए पर्वत उखाड़ लाने और सुषैन वैद्य की खोज में जाने के लिए जो भी करना पड़े करना चाहिए । यह कार्य स्थूल शरीर को प्रसुप्त से जाग्रत स्थिति में लाने के लिए हमें अविलम्ब जुटना पड़ा एवं विगत दो वर्षों में कठोर तपश्चर्या का, एकान्त साधना का, अवलम्बन लेना पड़ा ।

सूक्ष्मीकरण से सम्भावित परिणतियाँ

मई १९८४ से हमने अपने स्थूल शरीर से सम्भव हो सकने वाला स्थूल स्तर का क्रिया-कलाप बन्द कर दिया । इसका अर्थ हुआ—भेंट, मिलन, वार्त्तालाप, विचार-विनिमय, परामर्श का अब तक चलने वाला सिलसिला एक प्रकार से समाप्त ही हो जाना । कोई विशेष अपवाद हो, तब ही इस प्रक्रिया का व्यतिक्रम करेंगे । जड़ नियम-जड़ पदार्थों पर लागू होते हैं । चेतना की अपनी विशेष स्थिति है वह जीवित रहते हुए भी मृतक और मृत होते हुए भी जीवितों जैसे आचरण करती पायी जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हमारी सूक्ष्मीकरण प्रक्रिया का प्रयोजन पाँच कोशों पर आधारित सामर्थों को अनेक गुनी कर देना है । दो शरीर मिलकर तो गणना में दो ही होते हैं । पर सूक्ष्म जगत में स्थूल अंकगणित , रेखागणित, बीजगणित काम नहीं आती । उस लोक का गणना-चक्र अलग ही गुणनक्रम से चलता है । स्कूली गणित में २ + २ + २ + २ = ८ होंगे । लेकिन सूक्ष्म जगत में २ × २ × २ × २ = १६ हो जायेंगे । सूक्ष्मीकृत शक्तियाँ कई बार तो इससे भी बड़े कदम उठाते देखी गई हैं । मनुष्य में पाँच कोश हैं । अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय । मोटे तौर से सभी कोशों के जाग्रत होने पर एक मनुष्य पाँच गुनी सामर्थ्य सम्पन्न माना जाता है । पर दिव्य गणित के हिसाब से ५ × ५ × ५ × ५ × ५ = ३१२५ गुणा हो जाता है । शरीर. गत पाँच भौतिक शरीर प्रत्यक्ष गणित के हिसाब से ही कुछ काम कर सकते हैं । चेतना के पाँच प्राण भी शरीर की परिधि में बंधे रहने तक पाँच विज्ञजनों जितना ही होते हैं, पर सूक्ष्मीकृत होने पर गणित की परिपाटी बदल जाती है और एक सूक्ष्म शरीर की प्रखर सत्ता ३१२५ गुनी हो जाती है ।

हनुमान द्वारा रामायण--काल में जो अनेकों अद्‌भुत काम सम्भव बन पड़े, वे उनके सूक्ष्म शरीर के ही कर्तव्य थे । जब तक वे स्थूल रहे, तब तक उन्हें सुग्रीव का नौकर रहना पड़ा और बातों द्वारा बालि द्वारा सुग्रीव की तरह उन्हें भी अपमानित होना पड़ा । पर सूक्ष्मता का अवलम्बन तो चेतना की सामर्थ्य को कुछ से कुछ बना देता है ।

यह कार्य युग परिवर्तन, प्रयोजन में भगवान की सहायता करने के लिए मिला है । युग संधि का समय सन् २००० तक चलेगा । इस अवधि में हमारी स्थूल न सही, सूक्ष्म और कारण सत्ताएँ बनी रहेंगी और अपना दायित्व अनिवार्य रूप से यथावत निभाती रहेंगी । अपनी ३१२५ गुनी शक्ति के अनुसार काम करना है । कालक्षेप के नियमों का भी सीमा बंधन नहीं रहेगा । इसलिए जो काम अभी हाथ में है, वे अन्य शरीरों के माध्यम से चलते रहेंगे । लेखन हमारा बड़ा काम है, वह अनवरत रूप से सन् २००० तक चलेगा । यह दूसरी बात है कि कलम जो हाथ में जिन अंगुलियों द्वारा पकड़ी हुई है वे ही कागज काला करेंगी या दूसरी । वाणी हमारी रुकेगी नहीं । यह प्रश्न अलग है जो जीभ इन दिनों बोलती-चालती है, वही बोलेगी या किन्हीं अन्यों को माध्यम बनाकर काम करने लगेगी । अभी हमारा कार्य क्षेत्र मथुरा, हरिद्वार रहा है और हिन्दू धर्म के क्षेत्र में कार्य चलता रहा है । आगे वैसा देश, जाति, लिंग, धर्म, भाषा आदि का कोई बन्धन न रहेगा । जहाँ जब जैसी उपयोगिता आवश्यकता प्रतीत होगी वहाँ इन इन्द्रियों की क्षमताओं से समयानुकूल कार्य लिया जाता रहेगा ।

विज्ञजनों को स्मरण रख लेना चाहिए कि इस दृश्यमान शरीर से भेंट दर्शन, परामर्श, हो या नहीं, हमारे अपने कार्य क्षेत्र में उत्तर-दायित्वों की पूर्ति में अनेक गुनी तत्परता से काम होते रहेंगे । सहकार और अनुदार क्रम भी चलता रहेगा । हमारे मार्गदर्शक की आयु ६०० वर्ष से ऊपर है । उनका सूक्ष्म शरीर ही हमारी रूह में है । हर घड़ी पीछे और सिर पर उनकी छाया विद्यमान है । कोई कारण नहीं कि ठीक इसी प्रकार हम अपनी उपलब्ध सामर्थ्य का सत्पात्रों के लिए सत्प्रयोजनों में लगाने हेतु वैसा ही उत्साह भरा उपयोग न करते रहें । पाठकों, आत्मीय परिजनों को सन् २००० तक सतत् हमारे विचार, ब्रह्मवर्चस, नाम से पत्रिकाओं, पुस्तिकाओं, फोल्डरों के माध्यम से मिलते रहेंगे ।

प्राण ऊर्जा का वाष्पीकरण-सूक्ष्मीकरण

भगवान को सृष्टि के आरम्भ में एक से अनेक बनना पड़ा था, तब इतना सृष्टि विस्तार सम्भव हो सका । विश्व में महान परिवर्तन करने वालों को भी अपने सहयोगियों की संख्या बढ़ाकर यही करना पड़ा है ।

ऋषि कल्प व्यक्तियों को अपनी निज की क्षमता को ही कई खण्डों में विभाजित करके कई गुना करना पड़ता है । सभी जानते हैं कि चीरने, कूटने, तोड़ने, पीसने की प्रक्रिया द्वारा एक वस्तु के कई टुकड़े हो जाते हैं । आमतौर से इस कूटपीस द्वारा प्रत्येक टुकड़ा कमजोर पड़ता जाता है, किन्तु अपवाद के रूप में कई बार अधिक सशक्त भी होता है । मिट्‌टी का ढेला एक होता है, पर यदि उसके अणु-परमाणुओं को विखंडित करते चला जाय तो अन्ततः भयंकर ऊर्जा का विस्फोट होता है । छोटा कण बड़े टुकड़ों की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली होता है ।

सभी जानते हैं कि पदार्थ की सूक्ष्म इकाई अणु है जो स्वतन्त्र अस्तित्व रखती है एवं उसमें पदार्थ के सभी गुण विद्यमान होते हैं । सभी अणुओं की सूक्ष्मता का स्पष्ट अनुमान अभी तक हो नहीं पाया है । अलग-अलग पदार्थों के अणु अलग-अलग आकार के होते हैं । किसी पदार्थ का अणु एक इंच के अरबवें भाग का हो सकता है तो किसी का इन्च के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दसलाखवें भाग के बराबर । यह तो पदार्थ की बात हुई । द्रव्य रूप में पोटेन्सी बढ़ने से इन सूक्ष्म अणुओं की संख्या व सामर्थ्य और बढ़ जाती है, इसका प्रतिपादन होम्योपैथी के विद्वानों ने किया है एवं प्रयोग परीक्षणों द्वारा उसे सिद्ध भी कर दिया है । द्रव्य से विरल एवं विराट रूप वाला स्वरूप गैस का है । हमारे चारों ओर स्थित अदृश्य का, हवा का जो जखीरा है, उसके एक घन इन्च में लगभग पाँच हज़ार शंख अणु विद्यमान हैं ।

पदार्थ जितना सूक्ष्म होता चला जाता है, इन अणुओं की संख्या भी बढ़ जाती है एवं उष्मा-ऊर्जा के कारण उसकी गति में अभिवृद्धि हो जाती है, गैस रूप में अणुओं की गति और तेज हो जाती है ।

चूँकि अणुओं में परस्पर आकर्षक बल उन्हें बाँधे रहकर अपने स्थान पर रोके रहता है, इसीलिये पदार्थ ठोस रूप में बना रहता है । ज्यों-ज्यों ऊष्मा से इन्हें विखण्डित करने का प्रयास किया जाता है, गति तीव्र हो जाती है एवं आकर्षण बल कम । ठोस-द्रव्य-गैस-प्लाज्मा क्रमशः ये अवस्थाएँ इस प्रक्रिया के कारण जन्म लेती हैं एवं पदार्थ को अति सूक्ष्म बना देती हैं ।

चेतना का स्वरूप इससे भिन्न है । लेकिन सूक्ष्मीकरण के प्रकरण में सूक्ष्मता के अनुपात में प्रखरता में अभिवृद्धि एवं सर्वव्यापकता का सिद्धान्त उस पर और भी समग्र रूप में लागू होता है । मानवी काया की सूक्ष्म संरचना भी कुछ ऐसी है कि अन्तराल में प्राप्त उस बीज भण्डार को विकसित किया जा सकने पर वह उसे अत्यन्त सामर्थ्यवान बना देती है । मानव के अन्तराल में तीन शरीर, पाँच कोश एवं षट्चक्र इसी स्तर के हैं । इन्हें विकसित कर अन्तः सत्ता को विराट् बनाया जा सकता है । ये सभी एक ही शरीर के अंग, अवयव होते हुए भी अपना अलग विशिष्ट अस्तित्व प्रदर्शित करने लगते हैं ।

मानव की चार अवस्थाओं का वर्णन शास्त्रों में मिलता है । जाग्रतावस्था में सामान्य जीवन के क्रिया कलाप-इन्द्रिय व्यापार ही प्रमुख होते हैं । अधिकांश व्यक्तियों के जीवन का बहुसंख्य भाग इसी में खप जाता है । दूसरी है—स्वप्नावस्था, जिसमें व्यक्ति का मन देखे हुए, स्मरण में संग्रही, सुने हुए अथवा पंच तन्मात्राओं सम्बन्धी सूक्ष्म क्रिया-कलापों में रमण करता है । कभी-कभी इन्द्रियातीत घटनाक्रम भी पूर्वाभास के रूप में इस अवस्था में विचरण करने लगते हैं । स्वप्नावस्था की कुछ बातें स्मरण रहती हैं, शेष विस्मृत हो जाती हैं ।

सुषुप्ति वह तीसरी स्थिति है जिसमें बहिरंग जगत व अन्तःजगत दोनों ही से उसका सम्पर्क कट जाता है। बाह्य व अन्तःकरण दोनों ही सो जाते हैं । इन तीन से इतर एवं सर्वोच्च है—तुरीयावस्था, जिसे आत्म-जागरण की स्थिति, आध्यात्मिक चेतना के उत्कर्ष की चरमावस्था माना जाता है । जीवात्मा के मानव से महामानव, ऋषि-देवमानव बनने के क्रम में जीवित अवस्था में जिस स्थिति की विकास पथ में अनुभूति होती है, इसमें यह स्थिति आती है । जितने भी महापुरुष इस पृथ्वी पर हुए हैं उन्होंने योग साधना के उपक्रम से इस तुरीयावस्था को प्राप्त किया है एवं इस सूक्ष्मीकृत स्थिति में वे और भी विराट् सर्वव्यापी होते चले गए हैं । विधाता की यह विधि-व्यवस्था सृष्टि विकास के क्रम में सहज ही सबको उपलब्ध नहीं हो पाती, लेकिन जो इस स्थिति तक पहुँच पाते हैं, मानव कल्याण का एक महत्त्वपूर्ण पुरुषार्थ उनसे सम्पन्न होता है ।

शास्त्रों में एक अमैथुनी सृष्टि का वर्णन आता है जो विकास की प्रारम्भावस्था में दृष्टिगोचर होती है । ऐसा वर्णन है कि जिन व्यक्तियों ने पूर्व कल्पों में संयम-साधना और योग-उपासना द्वारा अध्यात्म चेतना की सर्वोच्च स्थिति को प्राप्त कर लिया होता है, वे जन्मते हैं । ये दिव्यात्माएँ ऋषि आत्माएँ कहलाती हैं एवं आत्म सत्ता को ऊँचा उठाने वाले धर्म के मर्म का परिचय जन-साधारण को देती हैं । समय-समय पर परिस्थिति विशेषानुसार उनका प्राकट्य होता रहता है एवं उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान—सत्पथ के माध्यम से उस काल के सामान्य पुरुष, जिनका वर्णन प्रारम्भ में जाग्रतावस्था में समय व्यतीत करने वालों के नाम से किया गया, आत्मिक प्रगति के पथ पर बढ़ते एवं जीवन्मुक्त होते जाते हैं । सृष्टि की कल्प-मन्वन्तर व्यवस्था कुछ ऐसी है कि हर समय ऐसी दिव्यात्माएँ सूक्ष्म जगत में अपने क्रिया—कलापों में संलग्न रहती हैं। इसी कारण धर्म का, श्रेष्ठता का, आदर्श निष्ठा का सर्वथा लोप नहीं हो पाता ।

उपनिषद्कारों ने कारण शरीर को, जिसे जाग्रत कर ऋषि कल्प आत्माएँ कार्य करती हैं, परिभाषित करते हुए कहा है—

''अनिर्वाच्याऽनाद्यविद्यारूपा स्थूल सूक्ष्म शरीर कारण मात्रं स्वस्वरूपाज्ञानं यदस्ति तत् कारणशरीरम्।''

अर्थात—''अवर्णनीय, अनादि, अविद्या स्वरूप, स्थूल एवं सूक्ष्म दोनों शरीरों का कारण मात्र अपने ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

स्वरूप की अज्ञानमयी जो सत्ता है, उसे ही कारण शरीर कहते हैं । वस्तुतः यह जड़ कलेवर की काया में विद्यमान होते हुए भी सुषुप्ति की स्थिति में ही रहता है। इसकी जागृति का माध्यम है—सूक्ष्मीकरण ।

आध्यात्मिक शरीर संरचना विज्ञान में सूक्ष्म शरीर सत्रह सूक्ष्म उपादानों से बना बताया गया है । पंचदशी में इसका वर्णन निम्नानुसार है—

''बुद्धि कर्मेन्द्रिय प्राण पंचकैर्मनसाधिया ।
शरीरं सप्तदशभिः सूक्ष्मं तल्लिगमुच्यते ।।

अर्थात—''पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, पंच प्राण, मन व बुद्धि इन सत्रह अवयवों से सूक्ष्म शरीर का निर्माण होता है ।''

मानव शरीर में ऋषियों, देवताओं, अवतारों का निवास बताया गया है । विभिन्न स्थानों पर उनकी स्थापना है । दिव्य समुद्रों, दिव्य नदियों, दिव्य पर्वतों, का निवास भी इस शरीर में है । यह साधारणतया मल-मूत्र की गठरी होते हुए भी उसकी सूक्ष्म सत्ता का पर्यवेक्षण करने पर लोक-लोकान्तरों की झलक झांकी उसमें मिलती है । शरीर एक सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला है। इसमें वे सभी यन्त्र उपकरण फिट हैं, जो मनुष्य द्वारा अब तक बनाये जा चुके या भविष्य में जिनके बनने की सम्भावना है । ब्रह्माण्ड के एक पिण्ड में समग्र ब्रह्माण्ड सन्निहित है । इसका अर्थ यही हुआ कि विराट् में जो विशेषताएँ विद्यमान हैं, वे सभी छोटी आकृति बनाकर पिण्ड में भी निवास करती पायी जाती हैं । जो कुछ है प्रसुप्त स्थिति में है । इसे जाग्रत किया जा सके तो पिण्ड में से ही ब्रह्माण्ड प्रकट हो सकता है ।

क्षुद्र को महान बनाने के लिए एक ही उपचार है वाष्पीकरण । वायुभूत होकर कोई भी वस्तु बहुत फैल जाती है और दूर-दूर तक अपने प्रभाव अस्तित्व का परिचय देती है । जैसे एक मिर्च थोड़ी सी जगह में ही रखी रहती है । पर यदि उसे आग में जलाया जाय तो वह वायुभूत होकर दूर-दूर तक फैलेगी और उस गंध से दूर-दूर तक के लोगों को खाँसी उठेगी । यही सूक्ष्मीकरण हुआ । थोड़ा-सा तेल लेकर पानी की सतह पर डाल दिया जाय तो वह लहरों के साथ-साथ दूर-दूर तक फैल जाएगा ।

आयुर्वेद में अधिक समय तक एक औषधि को लगातार घोंटते रहने पर उसमें विशेष सामर्थ्य के उत्पन्न होने का वर्णन है । होम्योपैथी में भी पोटेन्सी सिद्धान्त इसी आधार पर चलता है कि उस मूल द्रव्य को अधिकाधिक बारीक करके अधिक शक्तिशाली बनाया जाता है ।

साधना में तपश्चर्या के अनेकानेक प्रयोग हैं । इससे शरीर की स्थिति तथा आदत परम्परा का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है । एक ही साधना हर किसी के लिए एक जैसा परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकती । इससे उसकी वंश परम्परा-गुरु परम्परा तथा जन्म—जन्मान्तरों तक के संस्कारों का ध्यान रखते हुए निर्धारण करना होता है । ऐसे निर्धारणों में साधक की अपनी निजी बुद्धि ही सब कुछ नहीं होती । इसके लिए अधिक अनुभव और निष्णात मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है । वह जिन्हें उपलब्ध हो सके वे सफल भी होते हैं ।

हमारी सूक्ष्मीकरण साधना में क्या उपक्रम चल रहा है ? क्या विधि व्यवस्था अपनाई जा रही है ? यह पूछने की इसलिए आवश्यकता नहीं कि वह एक विशेष प्रयोग है और उसमें मार्गदर्शक का क्रमिक अनुशासन ही सब कुछ है । दूसरों का पूछना इसलिए व्यर्थ है कि इस विधि का अनुकरण किसी अन्य के लिए उपयोगी न पड़ेगा । उन्हें क्या करना है, किसलिए करना है, इन प्रश्नों के विस्तृत विवरण बताते हुए हमें अपने अनुभवी मार्गदर्शक के परामर्श पर चलना होगा।

मोटे तौर से सूक्ष्मीकरण साधना का एक ही स्वरूप है—वाष्पीकरण । इसमें अपनी ही प्राण ऊर्जा को इतना प्रचण्ड किया जाता है कि उससे अपने ही अन्तराल में सन्निहित पाँच कोश इतने गरम हो सकें कि एक स्वतंत्र इकाई के रूप में उनकी सत्ता विनिर्मित हो सके । पानी खौलता है तो उसमें अलग-अलग बबूले उठने लगते हैं । हर बबूला अपनी एक स्वतंत्र इकाई बनाता है और जब तक आवश्यकता रहती है अपना अस्तित्व बनाये रखकर दूसरों के साथ विलीन हो जाता है । कितना बड़ा बबूला किस कार्य के लिए, किस विधि से, कितना शक्तिशाली बनाया या उठाया जाय यह निर्णय करना ऐसे प्रसंगों में साधक और उसके मार्गदर्शक का काम होता है । उसका सिद्धान्त जान लेना ही पर्याप्त है । विवरण की गहराई में जाना समीचीन न होगा ।

सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया वस्तुतः जीवित अवस्था में साधक के सूक्ष्म एवं कारण शरीर की परिष्कृति एवं प्रगति का एक ऐसा राजमार्ग है, जिसे समय-समय पर उच्चस्तरीय आत्माओं ने अपनाया व अपनी मुक्ति हेतु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं, अन्यान्यों के हित साधन हेतु स्वयं को खपाया है।

यह प्रक्रिया ऋषि परम्परा की एक शाश्वत व्यवस्था है । मानव को मिली तीन शरीर रूपी विभूतियाँ ईश्वर प्रदत्त सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियाँ हैं जो विकृति—अनगढ़पन की स्थिति में जीव को दुर्गति की ओर ले जाती हैं । साधना समर में व्यष्टि और समष्टि के समन्वय एकात्म होने में दैनन्दिन जीवन के कषाय—कल्मष ही बाधक होते हैं । संस्कारों की संचित सम्पदा लेकर जन्मे देवपुरुषों को उनसे मुक्ति पाने हेतु अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ता । वे स्वेच्छा से उस पथ पर चल पड़ते हैं । अदृश्य जगत उच्चस्तरीय आत्माएँ धरित्री पर अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के लिये उन्हें वाँछित आत्मबल देती हैं, सामयिक मार्गदर्शन देते हुए उनके प्रत्यक्ष क्रिया-कलापों में परिवर्तन करती रहती हैं । सामान्य बुद्धि सहज ही उन्हें समझ नहीं पाता, जबकि होता वह सब कुछ नियन्ता की विधि—व्यवस्था का एक अंग ही है ।

सूक्ष्मीकरण-वाष्पीकरण की हमारी युग साधना से जन समुदाय को क्या कुछ मिलने वाला है, वर्तमान परिस्थितियों में कैसे परिवर्तन आने वाला है यह असमंजस सहज ही किसी के मन में उठ सकता है । जो हमारे सहयोगी-सहभागी बने हैं, जिन्होंने हमसे साझेदारी की है एवं वह सब कुछ कर दिखाने को निष्ठापूर्वक संकल्पबद्ध हैं जो हमारे मार्गदर्शक ने हमारे माध्यम से कहलवाया, उन्हें यह बताना भी हमारा ही कर्त्तव्य है । हम उनके लिये क्या कुछ कर पाएँगे, उनका सहयोग भावी समय में कैसे वांछित है, यह बताना भी अनिवार्य समझते हुए ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं ।

गलत कदम नहीं उठा, उसके पीछे तथ्य और औचित्य है

निर्दोष और निभ्रान्त तो केवल परमेश्वर है, पर सौभाग्य से अभी इस जीवन में ऐसे अवसर नहीं आये जिसमें प्रतिपादित आदर्शों के विपरीत आचरण करने पड़े हों । आमतौर से लोग लोभ और मोहवश ही कुमार्ग अपनाते और कुकृत्य करते हैं । इन दोनों में निरन्तर कुश्ती होती रहती है । ऐसा दुर्दिन अभी नहीं आया जिससे उसने हमें पछाड़ पाया हो । फिर जो एकान्तवास जैसे कदम उठे हैं । उनमें कष्ट ही कष्ट और कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं । बुढ़ापे की काया अब आराम चाहती है और सहारा तकती है । इसके स्थान पर सपरिश्रम आजीवन कारावास जैसी कठोर यातनाएँ सहनी पड़ें और ऊपर से पलायनवादी निष्ठुर होने का लांछन सहना हो तो उसे अंगीकार करने में कोई वज्र मूर्ख ही तैयार हो सकता है । हमारी विवेक बुद्धि और औचित्य दृष्टि से अभी राई रत्ती भी अन्तर नहीं आया है, इसलिए यह सोचना उचित न होगा कि अकारण कोई सनक उठ खड़ी हुई है और वह किया जा रहा है जिसे प्रियजन नहीं चाहते । इस गुत्थी को सुलझाने के लिए उन कारणों को समझना पड़ेगा, जिससे प्रस्तुत कटु प्रयोग को अपनाने की मजबूरी लद गई।

सूक्ष्मीकरण का अपना नया कदम यों लोक-मंगल और उच्च उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपेक्षाकृत और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है फिर भी उसके सम्बन्ध में गहराई तक उतर कर सोच न पाने के कारण ऐसा प्रतीत हो सकता है कि निर्णय गलत हुआ । इससे हर किसी के लिए असुविधा उत्पन्न होगी और युग सन्धि की इस ऐतिहासिक बेला में जो होना चाहिए था वैसा बन नहीं पड़ेगा, उल्टे अवरोध उत्पन्न होगा । आवश्यक समझा गया कि इसका समय रहते निराकरण करने का प्रयत्न किया जाय ।

समय की विपन्नता दिन-दिन बढ़ती जा रही है, इसमें सन्देह नहीं । दृश्यमान और अदृश्य क्षेत्रों में सर्वनाशी विभीषिकाएँ जिस क्रम से गहरा रही हैं उसे देखते हुए कभी भी ऐसा अनिष्ट हो सकता है जिसके कारण पृथ्वी को ऐसे ही चूरे में बदलना पड़ा जैसा कि मंगल और बृहस्पति के बीच निरन्तर एक अन्धड़ की तरह घूमता रहता है । अणु आयुधों की—रासायनिक अस्त्रों की घातक किरणों की संख्या एवं विचित्रता इतनी बढ़ गई है कि उनके द्वारा बिना आमने-सामने का युद्ध छिड़े भी ऐसा हो सकता है कि रात को अच्छे खासे—सोये हुए आदमी मृतक या अर्ध-मृतक जैसी स्थिति में मिलें । समर्थ राष्ट्र विनाश की क्षमता बढ़ाने में इस कदर लगे हैं और उस स्तर के पराक्रम को इस प्रकार प्रतिष्ठा का प्रश्न बना रहे हैं कि कदाचित पीछे कदम हटाने का हेटी कराने को कोई भी तैयार नहीं । मृत्यु के साधन जब चरम सीमा पर पहुँचेंगे तो कोई भी पगला इस बारूद के ढेर में एक तीली फेंक कर उस प्रलय को क्षण भर में प्रत्यक्ष कर सकता है जिसके आने में पौराणिक प्रतिपादनों के अनुसार अभी लाखों वर्ष की देर है । महायुद्ध न भी हो तो भी वायु प्रदूषण, विकिरण, जनसंख्या विस्फोट, खनिज सम्पदा का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

समापन, पृथ्वी की उर्वरता का घटना, वृक्ष कटना, पशुओं का मिटना जैसे अनेकों ऐसे कारण विद्यमान हैं जो शीतयुद्ध बनकर वही काम करें जो शहतीर में लगने वाला घुन धीरे-धीरे किन्तु निश्चित रूप से करता है । विषाणु कितने छोटे होते हैं किन्तु वह अच्छे-खासे पहलवान को क्षय, कैन्सर जैसे रोगों से ग्रसित करके देखते-देखते मौत के मुँह में धकेल देते हैं ।

कुविचारों और कुकर्मों से चरम सीमा तक पहुँच जाने पर अब मर्यादा और वर्जनाएँ लगभग समाप्त होती जा रही हैं । उच्छृंखलता, उद्दण्डता, अपराध, अनाचार अति की सीमा लाँघ रहे हैं । छल-प्रपंच कौशल के रूप में मान्यता प्राप्त कर चला है । परिवार बुरी तरह टूट और बिखर रहे हैं । चरित्र कहने सुनने भर की वस्तु रह गई है । आदर्शों का अस्तित्व इसलिए है कि वे कथन प्रवचन को लच्छेदार बनाने के काम आते हैं । लिखते समय भी उनका पुट लगाने की आवश्यकता पड़ती है । मूर्धन्यों ने इस विग्रह को अपने लिए तो अपनाया ही है, छुटभइयों को भी अनुगमन की प्रेरणा देकर वैसा ही अभ्यस्त कर दिया है । प्रचलन और आन्दोलन उस दिशा में चल रहे हैं जिनका अन्त सर्वनाशी परिणतियों के अतिरिक्त और कहीं कुछ हो ही नहीं सकता । न व्यक्ति को चैन है, न समाज में शान्ति । पीढ़ियाँ अपने जन्मकाल से ही ऐसे दुर्गुण साथ लेकर जन्मती हैं कि अपना, परिवार का, और समाज का सर्वनाश करके ही रहें ।

गरम युद्ध से मरना पड़े या शीत युद्ध से, अन्तर कुछ नहीं पड़ता । "सरदार जी का झटका" ठीक कि "कसाई का हलाल" । अन्तर क्या पड़े ! बकरे की परिणति तो एक ही हुई । अपने इस जन-समुदाय का—इस विश्व-उद्यान का विनाश तो होना ही ठहरा। लू में झुलसने पर या पाला मारने पर फसल का तो बंटाधार ही होना है । अविश्वास, आशंका, अनिश्चितता, असुरक्षा और आतंक के घुटन भरे वातावरण में मानवी गरिमा देर तक सुरक्षित नहीं रह सकती । भेड़िये और कुत्ते जब पागल होते हैं तो आपस में ही एक-दूसरे को नोंच खाते हैं । मनुष्य जब पागल होते हैं, तो मरघट भूत-पिशाचों जैसे आचरण करते हैं । जलने और जलाने-डरने और डराने के अतिरिक्त और कुछ उन्हें सूझता ही नहीं । ऐसी दशा में व्यक्ति और समाज को पतन पराभव के किस गर्त में गिरना पड़ेगा इसकी सहज कल्पना की जा सकती है । जो तथ्य सामने हैं वे किसी भी विचारशील का दिल दहलाने के लिये काफी हैं ।

यह कल्पनाएँ नहीं, मान्यताएँ या आकांक्षाएँ नहीं, ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो दर्पण की तरह सामने हैं । उन्हें ज्योतिषियों, भविष्य-वक्ताओं की अटकलें भी नहीं कहा जा सकता । प्रस्तुत तथ्यों पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर सकने में समर्थ राजनेता, अर्थशास्त्री, समाज विज्ञानी, विज्ञानवेत्ता, अपनी-अपनी कसौटी पर कसकर एक स्तर से यही कहते पाये जाते हैं कि मनुष्य सामूहिक आत्महत्या की राह पर बदहवास होकर सरपट दौड़ता चला जा रहा है । कुछ समय बाद ही स्थिति ऐसी उत्पन्न हो जायगी जिसमें पीछे लौट सकना भी सम्भव न रहेगा । वापसी की भी एक सीमा होती है । सुधार की गुंजायश भी एक समय तक ही रहती है । वह निकल चले तो फिर पछताने के अतिरिक्त और कुछ हाथ रहता नहीं ।

हम निश्चित रूप से इन दिनों ऐसी ही विषम परिस्थितियों के बीच रह रहे हैं । पौराणिक विवेचन के अनुसार इसे असुरता के हाथों देवत्व का पराभव होना कहा जा सकता है । कभी हिरणाक्ष्य, हिरण्यकश्यपु, वृत्तासुर, भस्मासुर आदि ने आतंक उत्पन्न किये थे और देवताओं को खदेड़ दिया था । अलंकारिक रूप से किया गया वह वर्णन आज की परिस्थितियों के साथ पूरी तरह तालमेल खाता है । रावण और कंस कल की परिस्थितियों के साथ आज के वातावरण की तुलना करते हैं तो पुनरावृत्ति स्पष्ट परिलक्षित होती है । उन दिनों शासक वर्ग का ही आतंक था, पर आज तो राजा-रंक, धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, वक्ता-श्रोता, सभी एक राह पर चल रहे हैं । छद्म और अनाचार ही सबका इष्टदेव बन चला है । नीति और मर्यादा का पक्ष दिनोंदिन दुर्बल होता जाता है ।

उपाय दो ही हैं । एक यह कि शुतुरमुर्ग की तरह आँखें बन्द करके भवितव्यता के सामने सिर झुका दिया जाय । जो होना है उसे होने दिया जाय । दूसरा यह कि जो सामर्थ्य के अन्तर्गत है, उसे करने में कुछ उठा न रखा जाय । टिटिहरी समुद्र से लड़कर अण्डे वापस ले सकती है तो अपने से कुछ न बन पड़े, ऐसा नहीं होना चाहिए ।

अनिष्ट का प्रतिकार करने के लिए हर कोई अपनी-अपनी सूझबूझ और सामर्थ्य के अनुरूप काम करता है पर स्थिर समाधान के लिए ताला खोलने वाली ताली ही तलाश करनी पड़ती है । लोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्नशील न हों सो बात नहीं है । सरकारें धन खर्चने, वैज्ञानिक दिन-रात प्रयोगशालाओं में तत्पर रहने, अर्थशास्त्री सम्पन्नता बढ़ाने और विज्ञान सोचने, खोजने में संलग्न है । संकट को निरस्त करने के लिए बरते जा रहे उपाय कुछ भी कारगर सिद्ध नहीं हो रहे हैं । रस्सी दो गज जुड़ पाती नहीं कि चार गज टूट जाती है। "अन्धी पीसे कुत्ता खाय" वाली उक्ति लागू हो रही है । राजनैतिक मोर्चे पर न धमकी काम दे रही है न काना-फूसी । विग्रह के बादल सघन ही होते चले जा रहे हैं । क्षेत्रीय समस्याओं में भाषावाद, सम्प्रदायवाद, उग्रवाद, यूनियनवाद, हड़ताल, तोड़-फोड़ के उपद्रव आये दिन खड़े रहते हैं । अस्पतालों और डाक्टरों की संख्या वृद्धि के साथ बीमारों और बीमारियों की संख्या और भी बड़े अनुपात के साथ बढ़ रही है । पुलिस बढ़ रही है पर अपराधों की वृद्धि पर तनिक भी अंकुश नहीं लग रहा है । महँगाई के साथ—साथ मिलावट, भ्रष्टाचार का भी पूरा जोर और दौर है । नशेबाजी जैसे दुर्व्यसन, दहेज जैसे कुप्रचलन, दिन-दूने रात-चौगुने वेग से उभर रहे हैं । प्रचार प्रस्तावों का उन पर कोई असर नहीं । व्यक्ति खोखला हुआ जा रहा है और समाज जर्जर । विपत्तियों और समस्याओं का ओर-छोर नहीं ।

कुछ कुचक्री और स्वेच्छाचारी दोनों हाथों से दौलत भी बटोर रहे हैं किन्तु वे भी ईर्षालुओं, अपराधियों और रिश्वत माँगने वालों से हैरान ही बने रहते हैं । खोटी कमाई इस हाथ आकर दुर्व्यसनों में उस हाथ फुलझड़ी की तरह जल जाती है ।

यह अत्युक्तिवादी कल्पना चित्र नहीं है । आँख उठाकर इर्द-गिर्द देखने पर ही दृष्टिगोचर होने वाला वातावरण है । इसके प्रमाण परिचय कहीं भी, कभी भी मिल सकते हैं । चिन्ता की बात अनर्थों का—संकटों का बढ़ना तो है ही, पर उससे भी अधिक हैरानी की बात यह है कि किसी क्षेत्र में कोई समाधान निकल नहीं रहे हैं । सुधारवादी प्रयास जलते तवे पर कुछ बूँदें पानी पड़ने की तरह अपने अस्तित्व का परिचय देकर समाप्त हो जाते हैं । सर्वोदय जैसे उत्साहवर्धक आन्दोलन दम तोड़ गये । कुरीति निवारण में आर्य समाज को कितनी सफलता मिली ? नशा निवारण और भ्रष्टाचार उन्मूलन के काम करने वाले संगठन कितने सफल हो रहे हैं, यह उन्हीं से, उन्हीं के मुँह से कच्चा चिट्ठा पूछकर भली-भाँति जाना जा सकता है। धर्मोपदशेक और कथा-कीर्तनकारों के बूते भी एक प्रकार का विनोद मनोरंजन ही बन पड़ता है । अनाथालयों, नारी-गृहों, भिक्षुक-गृहों, अपंग आश्रमों, गौशालाओं में कितनों की कितनों को, किनकी कितनी राहत मिली, इसका पर्यवेक्षण बनाता है कि सारा अवां ही बिगड़ गया । पूरे कुँए में भाँग पड़ गई । जो सुधार का जिम्मा उठाते हैं वे अधिकारी भी दूध के धुले कहाँ हैं ? पक्षपात और भ्रष्टाचार को कहाँ प्रश्रय नहीं मिल रहा है ? ऐसी दशा में हर विचारशील की आँखों के आगे अन्धेरा छाता है और लगता है बुरे दिन तेजी से बढ़ते आ रहे हैं । रोकथाम करने वाले प्रयत्न दूसरों को उत्साह दिलाते हैं पर स्वयं निराशा से ही ग्रसित रहते हैं ।

इस अन्धकार भरी निविड़ निशा में प्रभात की आशा किरण यदि जीवित है तो एक ही है कि अदृश्य जगत से कोई सृजन प्रवाह उमंगें और वर्षा के बादलों की तरह तपते धरातल को शीतलता और हरीतिमा से भर दें । ऐसे अवसरों पर दैवी चमत्कार ही काम आते हैं । हेमन्त में जब शीताधिक्य से जंगलों के जंगल पत्ते रहित होकर ठूँठ बन जाते हैं । पाले के दबाव से पौधे सिसकते और मृतक जैसे दीखते हैं तब बसन्त का मौसम ही उत्साहवर्धक परिवर्तन का माहौल बनाता है। यह कार्य कोई व्यक्ति या संगठन करना चाहे तो कठिन है । पतझड़ ग्रस्त पेड़-पौधों के पुष्प पल्लवों से लादने में मानवी प्रयत्नों की पहुँच कहाँ तक हो सकती है ? सूखी जमीन को हरा-भरा बनाने में सिंचाई के प्रयत्न कितने क्षेत्र में सफल हो सकते हैं, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है । वर्षा और बसन्त ही हैं, जो हरीतिमा उगाने और उसे फलने-फूलने की स्थिति तक पहुँचाने की जिम्मेदारी उठा सकते हैं ।

मानवी पुरुषार्थ को यहाँ न तो नगण्य ठहराया जा रहा है और न उसका उपहास उड़ाया जा रहा है । कहा इतना ही जा रहा है कि बड़ी समस्याओं का समाधान, बड़े संकटों का निराकरण और बड़े अभावों की पूर्ति के लिए प्रायः दैवी अनुकूलता ही काम देती है । पहाड़ों पर बर्फ जमाना और उसे पिघलाकर नदियों को जलधारा से भरी-पूरी रखना मानवी पुरुषार्थ से बाहर की बात है । उसके द्वारा समुद्र के जल को बादल के रूप में परिणत करना और दूर तक बरसने के लिए खदेड़ देना भी सम्भव नहीं । सूर्य जैसा ताप और चन्द्रमा जैसा शीत बरसाने में मनुष्य कहीं सफल हो सकेगा ? उपग्रहों का निर्माण करने पर भी अभी नया ग्रह बना देना या पुरानों को हटा देना किसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए कब तक सम्भव हो सकेगा कुछ कहा नहीं जा सकता ।

इतिहास साक्षी है कि मनुष्य वातावरण को बिगाड़ने में तो अनेकों बार सफल हुआ है, पर जब-जब परिस्थितियाँ बेकाबू हुई हैं, तब तब नियन्ता ने ही उल्टे को उलटकर सीधा किया है । पर यह दैवी अनुग्रह भी अनायास ही उपलब्ध नहीं होता उसके पीछे भी ऋषि-कल्प देवताओं का दबाव काम करता है ।

जल के लिए सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची थी । आर्यावर्त ब्रह्मवर्त से लेकर मगध, बंगाल तक का इलाका प्यास से मर रहा था । उपयोगी उपाय गंगावतरण समझा गया । इसके लिए तपस्वी की प्रार्थना ही सुनी जा सकती थी । यह कार्य भागीरथ ने अपने जिम्मे लिया । उद्देश्य की पवित्रता को देखकर शिवजी सहायक बने और जाह्नवी स्वर्गलोक से धरती पर उतरी । अभाव दूर हो गया ।

ऐसे-ऐसे असंख्यों उदाहरण का इतिहास के पुराणों में वर्णन है । दैवी अनुकम्पा अन्ध-विश्वास नहीं है । दैवी प्रकोपों का कुचक्र जब मानवी प्रगति प्रयत्नों को मटियामेट कर सकता है तो दैवी अनुग्रह से अनुकूलता क्यों उत्पन्न न होगी ? बाढ़, भूकम्प, दुर्भिक्ष, महामारी, अतिवृष्टि, इतिभीति आदि विनाशकारी घटनाक्रम दैवी प्रकोप से ही उत्पन्न होते हैं । उसी क्षेत्र की अनुकम्पा से समृद्धि, प्रगति और शान्ति के अप्रत्याशित द्वार भी खुल सकते हैं ।

दैवी प्रकोप या अनुग्रह अकारण नहीं बरसता । सृष्टि की सुव्यवस्था में व्यतिरेक उत्पन्न करने पर सुयोग संजोने में मनुष्य की बहुत बड़ी भूमिका होती है। कुकृत्य ही अदृश्य वातावरण को दूषित करते और प्रकृति प्रकोपों को टूट पड़ने के लिए आमन्त्रित करते हैं । इसके साथ ही यह भी एक सुनिश्चित तथ्य है कि ऋषि स्तर के व्यक्ति जब उच्च प्रयोजनों के निमित्त तपश्चर्या करते और वातावरण में उपयोगी ऊर्जा उत्पन्न करते हैं तो दैवी अनुकम्पा का भी सुयोग बनता है । देवता न किसी पर कुपित होते हैं न दयालु। स्थिति का पर्यवेक्षण करते हुए वे तद्नुरूप दण्ड पुरस्कार का तालमेल बिठाते रहते हैं । जिस प्रकार दुरात्माओं का बाहुल्य संसार में विपत्ति बरसाने का सरजाम जुटाता है उसी प्रकार देव मानवों की तपश्चर्या प्रत्यक्ष और परोक्ष क्षेत्र के सुयोग जुटाती है । सन्त अपनी सेवा साधना में जहाँ धर्मधारणा और पुण्य प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं वहाँ उनकी विशिष्ट साधनाओं से अदृश्य जगत का परिशोधन भी होता चलता है । यही कारण है कि अध्यात्म वेत्ता लोक साधना और अध्यात्म साधना को समान महत्व देते हैं। दोनों के लिए समान प्रयत्न करते हैं ।

इन दिनों अदृश्य वातावरण की विषाक्तता ही अनेकानेक संकटों को जन्म दे रही है । विज्ञान-वेत्ताओं के अनुसार बढ़ते प्रदूषण और तापमान ने ध्रुव पिघलने, समुद्र उफनने और हिम युग लौट आने जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दी हैं । अदृश्यवेत्ताओं के अनुसार दुर्भावनाओं, उद्दण्डताओं और कुकर्मों ने देव जगत को नष्ट कर दिया है और वे सामूहिक दण्ड व्यवस्था करके मनुष्य समुदाय को कड़ुआ पाठ पढ़ाने-करारी चपत लगाने के लिए आमादा हो गये हैं। वस्तुतः समस्याओं का कारण चाहे वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय चाहे अध्यात्म दृष्टि से, उसमें अदृश्य जगत में संव्याप्त वातावरण की विषाक्तता प्रमुख कारण है । इसका समाधान भी उतने ही वजनदार पुरुषार्थ चाहता है जिससे खोदी हुई खाई पट सके और लगी हुई कलंक कालिमा धुल सके ।

समस्या भावनात्मक है । मनुष्य ने दुर्गति अपनाई और दुर्गति स्वयं बुलाई है । इसके लिए परिमार्जन प्रयत्न ऐसे चाहिए जो प्रत्यक्ष रूप से लोकमानस का परिष्कार कर सकने वाले सद्प्रवृत्ति सम्वधर्न प्रयासों को अग्रगामी बना सके । साथ ही अदृश्य जगत से देवत्व की शक्तियों की अनुकम्पाएँ भी अर्जित कर सकें । द्रौपदी की पुकार पर भगवान दौड़े आये थे । प्रह्लाद का रुदन भगवान तक पहुँचा था । सशक्त आत्माओं का दबाव भगवान को भी बाधित कर सकता है । शबरी को दर्शन देने और यश बढ़ाने वे स्वयं ही पहुँचे थे । उदाहरणों में भक्त की पात्रता ही सब कुछ थी । उसी में दैव अनुकम्पा उत्पन्न करने की क्षमता होती है। प्रस्तुत एकान्तवास के नाम से समझा गया कदम वस्तुतः ऐसी विशिष्ट तपश्चर्या का एक स्वरूप है, जो ऋद्धि-सिद्धियों की प्राप्ति के लिए उल्टे प्रवाह को उलटकर सीधा करने के लिए उठाया गया है ।

प्रत्यक्ष घाटे के पीछे, परोक्ष लाभ ही लाभ है

आद्य शंकराचार्य, सन्त ज्ञानेश्वर, विवेकानन्द, रामतीर्थ, चारों स्वस्थ, मनोबल-सम्पन्न और तपस्वी होते हुए भी तीस वर्ष से कुछ ही अधिक समय जिये और शरीर त्याग गये । यह सामान्य घटनाएँ नहीं हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इनके पीछे कुछ विशेष रहस्य और कारण हैं । उन्होंने देखा कि समय की माँग जितना करने की है, उतना स्थूल शरीर की परिधि में बंधे रहने पर ठीक तरह बन नहीं पड़ रहा है । इसलिए सूक्ष्म शरीर को सक्रिय बनाया जाय । इस आधार पर कहीं अधिक व्यापक क्षेत्र में—कहीं अधिक काम हो सकता है । हाथ, पैर, आँख, जीभ वाला शरीर दिन भर में एक छोटी नियत मात्रा में ही काम कर सकता है । उसके भोजन, विश्राम, स्वच्छता, नित्यकर्म परिजन-परिकर जैसे सम्बद्ध प्रयोजन में ही ढेरों श्रम, समय खर्च हो जाता है । जो बचता है, वह अन्यान्यों की तुलना में भले ही अधिक हो पर आत्मा की शक्ति तथा समय की आवश्यकता को देखते हुए प्रायः कम ही पड़ता है । इस असन्तोष-असमञ्जस को दूर करने के लिए उन्होंने उच्चस्तरीय शरीरों को वरीयता देने के लिए स्थूल शरीर का परित्याग करना ही उचित समझा । यह आपत्तिकालीन निर्णय थे । सामान्य तथा स्थूल शरीर के रहते हुए सीमित मात्रा में सूक्ष्म और कारण शरीर को भी जाग्रत और सक्रिय रखा जा सकता है । कौन क्या करे ? उसका निर्णय उसके स्वयं के विवेक और परिस्थितियों के तकाजे पर निर्भर है ।

पंचकोष, षटचक्र, उपत्यिकाएँ, ग्रन्थियाँ, इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना जैसी सूक्ष्म नाड़ियाँ, कुण्डलिनी, सहस्रार, ब्रह्मरन्ध्र आदि दिव्य केन्द्रों को देवताओं का निवास और प्रसुप्त विभूतियों का भण्डार माना गया है। जिन अतीन्द्रय क्षमताओं के आश्चर्यजनक क्रिया-कलापों का ऊहापोह अब जोरों से हो रहा है और परामनोविज्ञान के—'मैटाफिजिक्स' के अन्तर्गत जिनका सारगर्भित अनुसंधान चल रहा है, उन सबका धरातल सूक्ष्म शरीर में है। भूत-प्रेतों से लेकर देवी-देवताओं तक वायुभूत काया में निवास करते और अपने-अपने ढंग से वे कार्य करते हैं जो शरीरधारी मनुष्य के लिए सम्भव नहीं । अष्ट-सिद्धियों में अणिमा, महिमा, लघिमा आदि का वर्णन है । हल्का, भारी, अदृश्य आदि हो जाना, परकाया प्रवेश द्वारा अपनी सामर्थ्य से अन्य शरीरधारी को प्रभावित करना जैसे अनेकों कार्य इसी क्षेत्र में आते हैं । अदृश्य सहायकों की चर्चा अनेक प्रामाणिक सन्दर्भों में होती रहती है । यह सूक्ष्म शरीरधारी आत्माएँ ही हैं । उच्चस्तरीय होने पर वे ही देवता जैसी भूमिकाएँ सम्पन्न करती हैं ।

सुकरात के साथ एक आत्मा रहती थी जिसे वे 'डैमन' कहते थे और हर महत्त्वपूर्ण कार्य वे उसकी सलाह से ही करते थे । सुषुप्ति और तुरीयावस्था में सूक्ष्म शरीर अधिक सक्रिय रहता है और ऐसे पूर्वाभासों का—दूर दृश्यों का, पता लगाकर लाता है जो सामान्य बुद्धि और शक्ति से सर्वथा बाहर होती है। नारद का सूक्ष्म शरीर ही लोक-लोकान्तर में भ्रमण करता था । बात की बात में विष्णुलोक, शिवलोक, स्वर्ग और नरक कहीं भी जा पहुँचता था । छाया पुरुष सिद्धि में अपने ही सूक्ष्म शरीर को साधना बल से जाग्रत करके एक नया समर्थ सहयोगी सृजा जाता है । भैरव आदि की सिद्धि किन्हीं समर्थ आत्माओं के साथ सहयोग भरी घनिष्ठता प्राप्त कर लेना ही है । यह अदृश्य सहायकों का क्षेत्र है । ऐसी आत्माएँ आवश्यकतानुसार व्यक्ति विशेष की भी उद्देश्यपूर्ण सहायता कराती हैं । विशेषतया उनमें से जो उच्चस्तरीय हैं, वे वातावरण की प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलने, दिव्य प्रेरणाएँ देने, सत्प्रयोजनों की सफलता में हाथ बँटाने जैसे कार्यों में लगी रहती हैं । दिव्य आत्माएँ ही जन-सम्पर्क में आने वाले देवता हैं। अन्य तात्विक दृष्टि से अग्नि, सूर्य, इन्द्र, वरुण, अन्तरिक्ष आदि को ही देवता कहा गया है । कहीं-कहीं, भगवान को भी अग्नि इन्द्र आदि के नाम से सम्बोधित किया गया है ।

चर्चा सूक्ष्मीकरण प्रसंग की, की जा रही थी । अपने कदम इसी दिशा में बढ़ने हैं । इसके लिए आवश्यक है कि स्थूल काया को शिथिल किया जाय । आद्य शंकराचार्य ने जब शास्त्रार्थ में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए राजा के शरीर में परकाया प्रवेश किया था तब उन्होंने अपने पुराने शरीर को उतने समय के लिए सुरक्षित रखने की व्यवस्था कर दी थी । दोनों शरीरों में समान सक्रियता सम्भव नहीं । जागृति बढ़ेगी तो सुषुप्ति न रहेगी । सुषुप्ति बढ़ेगी तो जागृति को शिथिल होना पड़ेगा ।

सूक्ष्म शरीर यों माना तो एक ही गया है, पर उसके भेद-उपभेद कितने ही हैं । पाँच कोश, इसी वर्ग विभाजन में आते हैं । अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश यह पाँच सूक्ष्म शरीर एक ही काया में अवस्थित पाँच देवता माने गये हैं और वे पाँचों एक ही समय में, पाँच अलग-अलग स्थानों से पाँच प्रकार के काम कर सकते हैं । अर्थात् एक स्थूल शरीरधारी विशेष स्थिति में पाँच सूक्ष्म शरीरों द्वारा पाँच गुने काम हाथ में ले सकता है । साथ ही उनका स्तर भी कहीं अधिक ऊँचा रख सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमें सूक्ष्म शरीर को अभीष्ट स्तर तक जगा सकने में सफलता मिली तो अनेकानेक विशिष्ट व्यक्तियों की सहायता सम्भव हो सकती है । साथ ही एक ही समय में अनेकों सत्प्रयोजनों को उभारने और सफल बनाने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना भी सम्भव हो सकता है । स्थूल शरीर का एक नियत कलेवर होता है और नियत स्थान । किन्तु सूक्ष्म शरीर पर इस प्रकार के बन्धन नहीं हैं । प्रेतात्माएँ सूक्ष्म शरीरधारी होती हैं। दृश्य-अदृश्य रूप में कहीं भी रह सकती हैं। हमें भी जितनी सूक्ष्मीकरण में सफलता मिलेगी, हिमालय, शान्तिकुंज अथवा अन्यत्र कहीं भी रहने न रहने की क्षमता हस्तगत हो जायेगी ।

यदि ऐसा बन पड़ता है तो जो स्नेही, सहयोगी हमारे द्वारा लोकहित का अधिक कार्य सम्पन्न होते देखना चाहते हैं उन्हें निराशा नहीं, अधिक उपलब्धि पर अधिक प्रसन्नता ही होगी । जो लोग व्यक्ति सान्निध्य की भावनात्मक अपेक्षा करते हैं, उनको भी तब कोई कठिनाई न होगी । हमारे हिमालय वासी गुरुदेव सूक्ष्म शरीर से हमारा निरन्तर मार्गदर्शन करते हैं । उनका प्रत्यक्ष साक्षात्कार तो जीवन भर में तीन बार ही हुआ है, पर परोक्ष सान्निध्य का अभाव कभी नहीं खटका । यदि वैसी विशेषता न हो तो घर-पड़ोस में रहने वाले भी निरर्थक और भारभूत सिद्ध हो सकते हैं । गाँधी और बुद्ध की आत्माओं ने लाखों करोड़ों को झकझोर कर कहीं से कहीं उछाल दिया था जबकि असमर्थ मनोबल वाले अपने बीवी बच्चों तक को कुमार्ग से रोकने में सफल नहीं हो पाते। पास या सामने रहना तनिक भी महत्त्व की बात नहीं । सिर में रहने वाले जुएँ, खाट के खटमल, घर के चूहे क्या कुछ काम आते हैं । मक्खी-मच्छर साथ ही रहते हैं, पर उनसे सिवाय हैरानी के और किसी को क्या मिलता है । चोर, लफंगे मुहल्ले पड़ोस में बसते और दिन में कई बार आँखों के सामने गुजरते हैं तो भी कुछ प्रसन्नता नहीं होती, उल्टे चिन्ता ही बनी रहती है। इसके विपरीत दूरवर्ती चन्दन वृक्ष अपने घर तक शीतल, सुगन्धित पवन पहुँचाते हैं । परदेश में नौकरी करने वाले, शरीर से दूर रहने पर भी परिवार को प्यार करते और पैसा भेजते हैं । इस दूरी में भी निकटता देखी जा सकती है । भगवान अदृश्य है तो भी हम सब का पूरा-पूरा ध्यान रखता है । हवा दीखती नहीं तो भी नाक मार्ग से शरीर के कण-कण में पहुँचती और जीवन सम्पदा प्रदान करती है । दूरवर्ती सूर्य-चन्द्र अपने-अपने ढंग के अनुदान घर बैठे ही पहुँचाते रहते हैं ।

यह सब उनसे कहा जा रहा है, जो हमारे आँख से ओझल होने पर स्नेह—सहयोग न मिल सकने की बात सोचते हैं । उन्हें सूक्ष्म का—परोक्ष का भी महत्त्व समझना चाहिए । शरीर प्रत्यक्ष और प्राण परोक्ष है । तो भी हम प्राण का सान्निध्य अनुभव करते और उसी के सहारे जीवित तक रहते हैं । एकान्तवासी होने या वार्ता न करने पर भी सम्बन्ध टूटते कहाँ हैं । हम सब जिस सुदृढ़ शृंखला में मजबूती के साथ बंधे या बाँधे गये हैं, वह ऐसी नहीं है कि कच्चे धागे की तरह जरा सा आघात लगते ही बिखर जाय । ऐसी तो स्वार्थियों की मित्रता होती है । जो मतलब निकलने तक ही टिकती है । प्रज्ञा परिजनों की आत्मीयता किसी भी ओर से इतनी कमजोर नहीं है, जो दीखने पर जिये और ओझल होते ही सिमट कर कहीं से कहीं चली जाय । ऐसी तोताचश्मी तो दलाल और बटमार ही दिखाते हैं ।

अपना और परिजनों का मध्यवर्ती रिश्ता आदर्शों और उद्देश्यों पर अवलम्बित है । वे जब तक यथास्थान बने रहेंगे तब तक किसी को भी निकटता या दूरी के कारण किसी प्रकार की गड़बड़ी होने की आशंका नहीं करनी चाहिए । वरन् स्तर उठने और क्षमता बढ़ने की हालत में पहले की अपेक्षा आदान-प्रदान में और भी अधिक भाव सम्वेदनाओं का समावेश होगा । न समाज को हानि पहुँचेगी, न निकटस्थ व्यक्तियों में से किसी को, वरन् सबको सब प्रकार का लाभ ही होगा । हमें असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा, अब की अपेक्षा अधिक कष्ट साध्य जीवन जीना पड़ेगा, तो भी बदले में जो मिलना है, उसे देखते हुए इतनी कीमत चुकाने में आनाकानी नहीं की जा सकती ।

प्रज्ञा अभियान के कार्यकर्ताओं और कार्यक्रमों को निश्चय ही उसके उपरान्त बल मिलेगा। सुस्ती और लापरवाही का माहौल इसलिए भी रहता है कि बड़ों के रहते उन पर निर्भरता रहती है। पर जब वे सामने नहीं होते तो समझदारी में जिम्मेदारी बढ़ती है। नासमझों की बात दूसरी है। उनके सामने रहकर लाठी दिखाकर भी कोई कुछ नहीं करा लेता फिर पीछे तो करने वाले ही क्या हैं ? किन्तु जहाँ सदाशयता जीवित है, वहाँ ऐसी कोई बात नहीं है। मथुरा से हरिद्वार चले आने के उपरान्त वहाँ का कार्य घटा नहीं वरन् बढ़ ही गया है। जब-जब हम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हिमालय गये हैं, तब-तब लौटकर आने पर कुछ बिगाड़ नहीं हुआ वरन् बनाव ही पाया। मिशन के पीछे दैवी शक्तियाँ काम करती हैं और परिजनों में श्रद्धा-सद्भावना, ये दोनों जब तक जीवित हैं तब तक किसी को भी यह भ्रम तथा अहङ्कार नहीं करना चाहिए कि अमुक अमुक के न रहने पर काम को क्षति पहुँचेगी। वृक्षों से फल टूटते रहते हैं, उनकी स्थान पूर्ति के लिए दूसरे फिर न जाने कहाँ से आकर उस गई शोभा सम्पदा को फिर से बना देते हैं। मरने की तरह जन्मने का भी क्रम ईस संसार में विद्यमान है। फिर हम तो अभी मर भी नहीं रहे हैं। स्थूल या सूक्ष्म शरीर में युग सन्धि की अवधि में सन् २००० तक हम अपनी स्थिति बनाये रहेंगे ताकि नव सृजन पर विश्वास रखने वाला हर व्यक्ति यह अनुभव करता रहे कि वह अकेला नहीं है। उसके पीछे-पीछे कोई बलिष्ठ सत्ता चल रही है। प्रेरणा प्रकाश ही नहीं आवश्यक आच्छादन भी प्रस्तुत कर रही है। हमें कभी शिकायत नहीं हुई कि इतनी ज़िम्मेदारियों को हम अकेले वहन कर रहे हैं। आत्मविश्वास और आत्मसन्तोष से लोक समर्थन और जन सहयोग मिलता ही रहा है। इसके साथ ही दैवी अनुग्रह की भी अजस्र वर्षा होती रही है। उसके लिए पल्ला पसारके नाक रगड़ने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है । ममता का अनुग्रह अयाचित ही बरसता रहा है। जिनकी भावनाएँ उच्चस्तरीय होंगी, उनमें से प्रत्येक को वह सब कुछ मिलेगा, जिसके सहारे सफलता के उच्च स्तर तक पहुँच सके।

यह पंक्तियाँ समर्थ सहचरों के लिए लिखी गई हैं और उकसाया गया है कि उचित मूल्य पर विभूतियाँ खरीदने की बात सोचें। हीरा और सोने के आभूषण मुफ्त नहीं बँटते। पंचामृत तुलसी पत्र ही प्रसाद में मिलता है। माला घुमाने और अगरबत्ती जलाने की कीमत पर किसी की मनोकामनाएँ पूरी करने वाले देवी-देवता अभी जन्मे नहीं हैं। अभी महँगाई का समय है। सम्भव है कभी सस्ता जमाना आये और रामनाम जपने भर से पराया माल अपना हो चले ऐसा कुछ जुगाड़ बैठे। बैंक कर्ज देते समय हैसियत पूछती और यह जाँचती है कि पैसा किस लिये माँगा जा रहा है। किस काम में खर्च होगा । देवताओं के यहाँ ऐसा बैंक नहीं है, जिसमें पत्र पुष्पों की कीमत पर दर्शन झाँकी करने भर से कोई निहाल हो सके। संसार क्षेत्र की भाँति ही अध्यात्म क्षेत्र में भी खरीद फरोख्त का सिलसिला चलता है । इस यथार्थ ५ वादिता को जितनी जल्दी समझा जा सके उतना ही अच्छा है। अब तक जिन्होंने भी देवताओं या सिद्ध पुरुषों से कुछ कहने लायक पाया है उसे आत्म परिशोधन की तपश्चर्या और लोकमंगल के लिए भाव भरे अनुदान प्रस्तुत करने की योग साधन द्वारा ही उपलब्ध किया है। हमें भी इसी राह पर चलते हुए कुछ मिला। अन्य सभी के लिए यही खुला राजमार्ग है। ''शार्टकट'' खोजने की जल्दी किसी को भी नहीं करनी चाहिए। सिर पर हाथ रखकर कुण्डलिनी जगाने वाले, आँखें बन्द करके भगवान का दर्शन कराने वाले, मन्त्र-तन्त्र के बदले ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त कराने वाले, रिश्वत, खुशामद से देवताओं को बरगलाने, फुसलाने की तिकड़में जितनी जल्दी समाप्त हो सकें, उतना ही उत्तम है। इनमें जालसाजी के अतिरिक्त वास्तविकता का नामोनिशान भी नहीं है। हाथ बँटाने और पारितोषिक पाने की नीति ही सही है।

इस समर्थ समुदाय के अतिरिक्त एक वर्ग छोटे बालकों और असमर्थों का है। इन्हें सहज करुणा से प्रेरित हो उनकी सहायता करनी पड़ती है। बच्चे गोदी में चढ़ते, मिठाई पाने, खिलौने लेने के लिए मचलते हैं। बदले में वे कुछ दे सकने की स्थिति में नहीं होते। बड़े इस बाल वर्ग का भी ध्यान रखते हैं और कुछ प्रकार कुछ दे दिला कर हँसाते-चुपाते हैं। अपंग असमर्थों के सम्बन्ध में भी यही बात है। इच्छा होते हुए वे कुछ अनुदान पाकर प्रतिदान दे सकने की स्थिति में नहीं होते। इन वर्गों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। मुँह मोड़ लेने में निष्ठुरता का पातक चढ़ता है। हमारी जीवनचर्या में इन वर्गों को भी समुचित प्रश्रय मिलता रहा है। करुणा का परित्याग करके हम जीवित नहीं रह सकते। मात्र बेचना ही नहीं बाँटना भी हमारा काम रहा है। प्रयत्न यह किया है कि अपनी प्याऊ पर से कोई प्यासा न जाने पाये। भोजन के समय आ पहुँचे अतिथि को जो रूखा-सूखा है, उसमें भागीदार बनाया जाय। घायलों को पट्टी बाँधे बिना अस्पताल से कैसे वापस लौटाया जाय । निराश को आशा बँधाते और रोता आने वाले को हँसता लौटाने की अपनी आदत रही । लम्बा जीवन इन कृत्यों में रस लेते बीत गया। इसमें किसका कितना भला हुआ यह ईश्वर जाने पर हमने ईमानदारी के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाई और करुणा मिलाई है। बदले में जो आत्म-सन्तोष मिलता रहा है उसकी पुण्य पूँजी भी धीरे-धीरे करके जमा होती और पर्वत जितनी ऊँची उठती रही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

एकान्तवास में न मिलने के कार्यक्रम से इस वर्ग को अपनी व्यथाएँ हल्की करने से वंचित रहना पड़े ऐसा न होगा। शरीर कहीं किसी भी स्थिति में क्यों न हो, हमारी आत्मा अब की अपेक्षा और भी अधिक सक्षम और सक्रिय रहेगी। सुनने वाले कान और देखने वाले नेत्र अधिक सूक्ष्म और अधिक व्यापक होते जा रहे हैं, तब कोई बिना हरिद्वार आये, बिना भेंट दर्शन किये, बिना पत्र लिखे भी अपना हृदय खोलकर रखने और समुचित उत्तर पाने में घर बैठे भी सफल होगा। सूक्ष्म शरीरों के जागरण की शृंखला में एक को विशेष रूप से इसी के लिए सुरक्षित रखा और नियुक्त किया गया कि आँसू पोंछता, सिर दबाता, मरहम लगाता और दुलार-पुचकार सहित गोदी में बिठाता रहे। देने को भी कुछ तो पास रहेगा। सर्वथा कंगाल कभी भी रहना नहीं पड़ा है। अतिथि सत्कार का लांछन अभी तक नहीं लगा है। फिर होश-हवास दुरुस्त रहते भविष्य में उस पर पटाक्षेप कर दे ऐसा नहीं होगा। जो कमाने का अवसर मिलेगा, उसका एक भाग पिछड़ों को बढ़ाने और गिरतों को उठाने में भी निश्चित रूप से लगता रहेगा।

इन दिनों हम यह करने में जुट रहे हैं

हमारी जिज्ञासाओं एवं उत्सुकताओं का समाधान गुरुदेव प्रायः हमारे अन्तराल में बैठकर ही किया करते हैं । उनकी आत्मा हमें अपने समीप ही दृष्टिगोचर होती रहती है। आर्ष ग्रन्थों के अनुवाद से लेकर प्रज्ञा पुराण की संरचना तक जिस प्रकार लेखन प्रयोजन में उनका मार्गदर्शन अध्यापक और विद्यार्थी जैसा रहा है, हमारी वाणी भी उन्हीं की सिखावन को दुहराती रही है। घोड़ा जिस प्रकार सवार के संकेतों पर दिशा और चाल बदलता रहता है, वही प्रक्रिया हमारे साथ भी कार्यान्वित होती रही है।

बैटरी चार्ज करने के लिए जब हिमालय बुलाते हैं, तब भी वे कुछ विशेष कहते नहीं । सेनीटोरियम में जिस प्रकार किसी दुर्बल का स्वास्थ्य सुधर जाता है, वही उपलब्धियाँ हमें हिमालय जाने पर हस्तगत होती हैं । वार्तालाप का प्रयोग अनेक प्रसंगों में होता रहता है ।

इस बार सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया और साधना विधि तो ठीक तरह समझ में आ गई और जिस प्रकार कुन्ती ने अपने शरीर में से देव सन्तानें जन्मी थीं ठीक उसी प्रकार अपनी काया में विद्यमान पाँच कोषों, अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोषों को पाँच वीरभद्रों के रूप में विकसित करना पड़ेगा, इसकी साधना विधि भी समझ में आ गई । जब तक वे पाँचों पूर्ण समर्थ न हो जायँ तब तक वर्तमान स्थूल शरीर को उनके घोंसले की तरह बनाये रहने का भी आदेश है और अपनी दृश्य स्थूल जिम्मेदारियाँ दूसरों को हस्तान्तरित करने की दृष्टि से अभी शान्तिकुञ्ज ही रहने का निर्देश है ।

यह सब स्पष्ट हो गया । सावित्री साधना का विधान भी उनका निर्देश मिलते ही इस निमित्त आरम्भ कर दिया. ।

अब प्रश्न यह रहा है कि पाँच वीरभद्रों को काम क्या सौंपना पड़ेगा और किस प्रकार वे क्या करेंगे ? उसका उत्तर भी अधिक जिज्ञासा रहने के कारण अब मिल गया । इससे निश्चिन्तता भी हुई और प्रसन्नता भी।

संसार में आज भी ऐसी कितनी ही प्रतिभाएँ हैं जो दिशा पलट जाने पर अभी जो कर रही हैं, उसकी तुलना में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य करने लगेंगी । उल्टे को उलट कर सीधा करने के लिए जिस प्रचण्ड शक्ति की आवश्यकता होती है उसी को हमारे अंग-अंग वीरभद्र करने लगेंगे । प्रतिभाओं की सोचने की यदि दिशा बदली जा सके तो उनका परिवर्तन चमत्कारी जैसा हो सकता है ।

नारद ने पार्वती, ध्रुव, प्रहलाद, वाल्मीकि, सावित्री आदि की जीवन दिशा बदली, तो वे ज़िन परिस्थितियों में रह रहे थे उसे लात मारकर दूसरी दिशा में चल पड़े और संसार के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन गये । भगवान बुद्ध ने आनन्द, कुमार जीव, अंगुलिमाल, अम्बपाली, अशोक, हर्षवर्धन, संघमित्रा आदि का मन बदल दिया तो वे जो कुछ कर रहे थे, उसके ठीक उल्टा करने लगे और विश्वविख्यात हो गये । विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र को एक मामूली राजा नहीं रहने दिया वरन् इतना वरेण्य बना दिया कि उनकी लीला अभिनय देखने मात्र से गाँधी जी विश्व वंद्य हो गए । महाकृपण भामाशाह को सन्त विठोबा ने अन्तःप्रेरणा दी और उनका सारा धन महाराणा प्रताप के लिए उगलवा दिया । आद्य शंकराचार्य की प्रेरणा से मान्धाता ने चारों धामों के मठ बना दिये । अहिल्याबाई को एक सन्त ने प्रेरणा देकर कितने ही मन्दिरों, घाटों का जीर्णोद्धार करा लिया और दुर्गम स्थानों पर नये देवालय बनाने के संकल्प को पूर्ण कर दिखाने के लिए सहमत कर लिया । समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को वह काम करने की अन्तः प्रेरणा दी जिसे वे अपनी इच्छा से कदाचित ही कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाते । रामकृष्ण परमहंस ही थे, जिन्होंने नरेन्द्र के पीछे पड़कर उसे विवेकानन्द बना दिया । राजा गोपीचन्द्र का मन वैराग्य में लगा देने का श्रेय सन्त भर्तृहरि को था ।

ऐसे उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है, जिसमें कितनी ही प्रतिभाओं को किन्हीं मनस्वी आत्म वेत्ताओं ने बदलकर कुछ से कुछ बना दिया । उनकी अनुकम्पा न हुई होती तो वे जीवन भर अपने उसी पुराने ढर्रे पर लुढ़कते रहते, जिस पर कि उनका परिवार चल रहा था ।

हमारी अपनी बात भी ठीक ऐसी ही है । यदि गुरुदेव ने उलट न दिया होता तो हम अपने पारिवारिक जनों की तरह पौरोहित्य का धन्धा कर रहे होते या किसी और काम में लगे रहते । उस स्थान पर पहुँच ही न पाते, जिस पर कि हम अब पहुँच गये हैं।

इन दिनों युग परिवर्तन के लिए कई प्रकार की प्रतिभाएँ चाहिए । विद्वानों की आवश्यकता है, जो लोगों को अपने तर्क प्रमाणों से सोचने की नई पद्धति प्रदान कर सकें । कलाकारों की आवश्यकता है, जो चैतन्य महाप्रभु, मीरा, सूर, कबीर की भावनाओं को इस प्रकार लहरा सकें, जैसे सपेरा साँप को लहराता रहता है । धनवानों की जरूरत है, जो अपने पैसे को विलास में खर्च करने की अपेक्षा सम्राट अशोक की तरह अपना सर्वस्व समय की आवश्यकता पूरी करने के लिए लुटा सकें । राजनीतिज्ञों की जरूरत है जो गाँधी, रूसो और कार्लमार्क्स तथा लेनिन की तरह अपने सम्पर्क के प्रजाजनों को ऐसे मार्ग पर चला सकें, जिसकी पहले कभी भी आशा नहीं की गई थी ।

भावनाशीलों का क्या कहना ? सन्त सज्जनों ने न जाने कितनों को अपने सम्पर्क से लोहे जैसे लोगों को पारस की भूमिका निभाते हुए कुछ से कुछ बना दिया।

हमारे वीरभद्र अब यही करेंगे । हमने भी यही किया है । लाखों लोगों की विचारणा और क्रिया पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन किया है और उन्हें गाँधी के सत्याग्रहियों की तरह, विनोबा के भूदानियों की तरह, बुद्ध के परिव्राजकों की तरह अपना सर्वस्व लुटा देने के लिए तैयार कर दिया । प्रज्ञा पुत्रों की इतनी बड़ी सेना हनुमान के अनुयायी वानरों की भूमिका निभाती है । इस छोटे से जीवन में अपनी प्रत्यक्ष क्रियाओं के द्वारा जहाँ भी रहे वहीं चमत्कार खड़े कर दिये तो कोई कारण नहीं कि हमारी ही आत्मा के टुकड़े जिसके पीछे लगें, उसे भूतपलीत की तरह तोड़-मरोड़ कर न रख दें ।

अगले दिनों अनेकों दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन की आवश्यकता पड़ेगी । उसके लिए ऐसे गाण्डीव धारियों की, जो अर्जुन की तरह कौरवों की अक्षौहिणी सेनाओं को धराशायी कर दे, आवश्यकता पड़ेगी । ऐसे हनुमानों की जरूरत होगी, एक लाख पूत—सवा लाख नाती वाली लंका को पूँछ से जलाकर खाक कर दे । ऐसे परिवर्तन अन्तराल बदलने भर से हो सकते हैं। अमेरिका के अब्राह्म लिंकन और जार्ज वाशिंगटन बहुत गई-गुजरी हैसियत के परिवारों में जन्मे थे पर वे अपने जीवन-प्रवाह को पलटकर अमेरिका के राष्ट्रपति बन गये ।

प्रतिभाहीनों की बात जाने दीजिए, वे तो अपनी क्षमता और बुद्धिमत्ता को चोरी, डकैती, ठगी जैसे नीच कर्मों में भी लगा सकते हैं, पर जिनमें भावना भरी हो वे अपने साधारण पराक्रम से समय को उलटकर कहीं से कहीं ले जा सकते हैं । स्वामी दयानन्द, श्रद्धानन्द, रामतीर्थ जैसों के कितने ही उदाहरण सामने हैं, जिनकी दिशाधारा बदली तो वे असंख्यों को बदलने में समर्थ हो गये ।

इन दिनों प्रतिभायें विलासिता में, संग्रह में, अहंकार की पूर्ति में निरत हैं । इसी निमित्त वे अपनी क्षमता और सम्पन्नता को नष्ट करती रहती हैं । यदि इनमें से थोड़ा-सा भी ढर्रा बदल दें तो गीता प्रेस वाले जय दयाल गोयन्दका की तरह ऐसे साधन खड़े कर सकता हैं, जिन्हें अद्‌भुत और अनुपम कहा जा सके ।

कौन प्रतिभा किस प्रकार बदली जानी है और उससे क्या काम लिया जाना है, यही निर्धारण उच्च भूमिका से होता रहेगा । अभी जो लोग विश्व-युद्ध छेड़ने और संसार को तहस-नहस कर देने की बात सोचते हैं, उनके दिमाग बदलेंगे तो विनाश प्रयोजनों में लगने वाली बुद्धि, शक्ति और सम्पदा को विकास प्रयोजनों की दिशा में मोड़ देंगे । इतने भर से परिस्थितियाँ बदल कर कहीं से कहीं चली जायेंगी । प्रवृत्तियाँ एवं दिशाएँ बदल जाने से मनुष्य के कर्तृव्य कुछ से कुछ हो जाते हैं और जो श्रेय मार्ग पर कदम बढ़ाते हैं उनके पीछे भगवान की शक्ति सहायता के लिए निश्चित रूप से विद्यमान रहती है । बाबा साहब आमटे की तरह वे अपंगों का विश्वविद्यालय, कुष्ठ औषधालय बना सकते हैं । हीरालाल शास्त्री की तरह वनस्थली बालिका विद्यालय खड़े कर सकते हैं । लक्ष्मीबाई की तरह कन्या गुरुकुल खड़े कर सकते हैं।

मानवी बुद्धि की भ्रष्टता ने उसकी गतिविधियों को भ्रष्ट, पापी, अपराधी स्तर का बना दिया है । जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कमाते हैं, वह हाथों हाथ अवाँछनीय कार्यों में नष्ट हो जाता है । सिर पर बदनामी और पाप का टोकरा ही फूटता है । इस समुदाय के विचारों को कोई पलट सके, रीति-नीति और दिशाधारा को बदल सके, तो यही लोग इतने महान बन सकते हैं, ऐसे महान कार्य कर सकते हैं कि उनका अनुकरण करते हुए लाखों लोग धन्य हो सकें और जमाना बदलता हुआ देख सकें ।

इन दिनों हमारी जो सूक्ष्मीकरण की सावित्री साधना चल रही है, उसके माध्यम से जो अदृश्य महाबली उत्पन्न किये जा रहे हैं, वे चुपके-चुपके असंख्य अन्तःकरणों में घुसेंगे, उनकी अनीति को छुड़ा कर मानेंगे और ऐसे मणि-माणिक्य छोड़ कर आवेंगे जिससे वे स्वयं धन्य बन सकें और ''युग परिवर्तन'' जो अभी कठिन दीखता है, कल सरल बना सकें ।

मनीषी एवं ऋषि के रूप में हमारी परोक्ष भूमिका

मनुष्य अपनी अन्तःशक्ति के सहारे, प्रसुप्त के प्रकटीकरण द्वारा ऊँचा उठता है, यह जितना सही है, उतना ही यह भी मिथ्या नहीं कि तप-तितीक्षा से प्रखर बनाया गया वातावरण, शिक्षा, सान्निध्य-सत्संग, परामर्श-अनुकरण भी अपनी उतनी सशक्त भूमिका निभाता है। देखा जाता है कि किसी समुदाय में नितान्त साधारण श्रेणी के सीमित सामर्थ्य सम्पन्न व्यक्ति एक प्रचण्ड प्रवाह के सहारे असम्भव पुरुषार्थ भी सम्भव कर दिखाते हैं। प्राचीन काल में मनीषी-मुनिगण यही भूमिका निभाते थे। वे युग साधना में निरत रहे लेखनी-वाणी के सशक्त तन्त्र के माध्यम से जन-मानस के चिन्तन को उभारते थे। ऐसी साधना अनेकों उच्चस्तरीय व्यक्तित्वों को जन्म देती थी, उनकी प्रसुप्त सामर्थ्य को उजागर कर उन्हें सही दिशा देकर समाज में वांछित परिवर्तन लाती थी। शरीर की दृष्टि से सामान्य दृष्टिगोचर होने वाले व्यक्ति भी प्रतिभा, कुशलता, चिन्तन की श्रेष्ठता से अभिपूरित देखे जाते थे।

सर्वविदित है कि मुनि एवं ऋषि ये दो श्रेणियाँ अध्यात्म क्षेत्र की प्रतिभाओं में गिनी जाती रही हैं। ऋषि वह जो तपश्चर्या द्वारा काया का चेतनात्मक अनुसन्धान कर उन निष्कर्षों से जन-समुदाय को लाभ पहुँचाए तथा मुनिगण वे कहलाते हैं जो चिन्तन, मनन, स्वाध्याय द्वारा जन-मानस के परिष्कार की अहम् भूमिका निभाते हैं। एक पवित्रता का प्रतीक है, तो दूसरा प्रखरता का। दोनों को ही तप साधना में निरत हो सूक्ष्मतम बनना पड़ता है ताकि अपना स्वरूप और विराट् व्यापक बनाकर स्वयं को आत्मबल सम्पन्न कर वे युग चिन्तन के प्रवाह को मरोड़, बदल सकें। मुनि जहाँ प्रत्यक्ष साधनों का प्रयोग करने की स्वतन्त्रता रखते हैं, वहाँ ऋषियों को लिए यह अनिवार्य नहीं। वे अपने सूक्ष्म रूप में भी वातावरण को आन्दोलित करते, सुसंस्कारित बनाये रख सकते हैं।

लोक व्यवहार में मनीषी शब्द का प्रायः अर्थ उस महाप्राज्ञ से लिया जाता है जिसका मन उसके वश में हो। जो मन से नहीं संचालित होता अपितु अपने विचारों द्वारा मन को चलाता है, उसे मनीषी एवं ऐसी प्रज्ञा को मनीषा कहा जाता है। शास्त्रकार का कथन है—''मनीषा अस्ति येषां ते मनीषानः'' लेकिन साथ ही यह भी कहा है-''मनीषि नास्तु भवन्ति पावनानि न भवन्ति''-अर्थात्—''मनीषी तो कई होते हैं बड़े-बड़े बुद्धिमान होते हैं परन्तु वे पावन हों, पवित्र हों'' यह अनिवार्य नहीं प्रतिभाशाली, बुद्धिमान होना अलग बात है एवं पवित्र शुद्ध अन्तःकरण रखते हुए बुद्धिमान होना दूसरी। यह कथन आज की परिस्थितियों में नितान्त सही है।

आज सम्पादक, बुद्धिजीवी, लेखक, अन्वेषक, प्रतिभाशाली वैज्ञानिक तो अनेकानेक हैं, देश-देशान्तरों में फैले पड़े हैं लेकिन वे मनीषी नहीं हैं । क्यों ? क्योंकि तपः शक्ति द्वारा, अन्तःशोधन द्वारा उन्होंने पवित्रता नहीं अर्जित की।

साहित्य की आज कहीं कमी है? जितनी पत्र-पत्रिकाएं आज प्रकाशित होती हैं, जितना साहित्य नित्य विश्व भर में छपता है, उस पहाड़ के समान सामग्री को देखते हुए लगता है, वास्तव में मनीषी बढ़े हैं, पढ़ने वाले भी बढ़े हैं। लेकिन इस सबका प्रभाव क्यों नहीं पड़ता? क्यों एक लेखक की कलम कुत्सा भड़काने में ही निरत रहती है एवं उस साहित्य को पढ़कर तुष्टि पाने वालों की संख्या बढ़ती है, इसके कारण ढूंढ़े जायें तो वहीं आना होगा, जहाँ कहा गया था 'पावनानि न भवन्ति'। यदि इतनी मात्रा में उच्चस्तरीय चिन्तन को उत्कृष्ट बनाने वाला साहित्य रचा गया होता एवं उसकी भूख बढ़ाने का माद्दा जन-समुदाय के मन में पैदा किया गया होता तो क्या ये विकृतियाँ नजर आतीं जो आज समाज में विद्यमान हैं। दैनन्दिन जीवन की समस्याओं का समाधान यदि सम्भव है तो वह युग-मनीषी के हाथों ही होगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसा कि हम पूर्व में भी कह चुके हैं कि नवयुग यदि आएगा तो विचार शोधन द्वारा ही, क्रान्ति होगी तो वह लहू और लोहे से नहीं, विचारों की विचारों से काट द्वारा होगी, समाज का नव-निर्माण होगा तो वह सद्विचारों की प्रतिष्ठापना द्वारा ही सम्भव होगा। अभी तक जितनी मलिनता समाज में प्रविष्ट हुई है, वह बुद्धिमानों के माध्यम से ही हुई है। द्वेष-कलह, नस्लवाद, व्यापक नर-संहार जैसे कार्यों में बुद्धिमानों ने ही अग्रणी भूमिका निभाई है। यदि वे सन्मार्गगामी होते, उनके अन्तःकरण पवित्र होते. तप ऊर्जा का सम्बल उन्हें मिला होता तो उन्होंने विधेयात्मक विज्ञान प्रवाह को जन्म दिया होता, सत्साहित्य रचा होता, ऐसे आन्दोलन चलाए होते। हिटलर ने जब नीत्से के सुपर मेन रूपी अधिनायक को अपने में साकार करने की इच्छा की तो सर्वप्रथम सारे राष्ट्र के विचार प्रवाह को उस दिशा में मोड़ा। अध्यापक, वैज्ञानिक वर्ग नाजीवाद का कट्टर समर्थक बना तो उसकी उस निषेधात्मक विचार साधना द्वारा जो उसने 'मीन केम्फ' के रूप में आरोपित की। बाद में सारे राष्ट्र के पाठ्यक्रम, अखबारों की धारा का रुख उसने उस दिशा में मोड़ दिया जैसा कि वह चाहता था। जर्मन राष्ट्र नस्लवाद के अहं में सर्वश्रेष्ठ जाति का प्रतीक होने के गर्वोन्माद में उन्मत्त हो व्यापक नर-संहार कर स्वयं ध्वस्त हो गया। यह भी मनीषा के एक मोड़ की परिणति है, ऐसे मोड़ की जो सही दिशा में होता तो ऐसे समर्थ सम्पन्न राष्ट्र को कहाँ से कहाँ ले जाता।

कार्लमार्क्स ने सारे अभावों में जीवन जीते हुए अर्थशास्त्र रूपी ऐसे दर्शन को जन्म दिया जिसने समाज में क्रान्ति ला दी। पूँजीवादी किले ढहते चले गये एवं साम्राज्यवाद दो तिहाई धरती से समाप्त हो गया। 'दास कैपीटल' रूपी इस रचना ने एक नवयुग का शुभारम्भ किया जिसमें श्रमिकों को अपने अधिकार मिले एवं पूँजी के समान वितरण का यह अध्याय खुला जिससे करोड़ों व्यक्तियों को सुख चैन की, स्वावलम्बन प्रधान जिन्दगी जी सकने की स्वतन्त्रता मिली। रूसो ने जिस प्रजातन्त्र की नींव डाली थी, उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के पक्षधर शोषकों की रीति-नीति ही उसकी प्रेरणा स्रोत होगी। मताधिकार की स्वतन्त्रता, बहुमत के आधार पर प्रतिनिधित्व का दर्शन विकसित न हुआ होता, यदि रूसो की विचारधारा ने व्यापक प्रभाव जन समुदाय पर न डाला होता तो 'जिसकी लाठी-उसकी भैंस' की नीति ही सब जगह चलती, कोई विरोध तक न कर पाता। जागीरदारों एवं उत्तराधिकार के आधार पर राजा बनने वाले अनगढ़ों का ही वर्चस्व होता। इसे एक प्रकार की मनीषा प्रेरित क्रान्ति कहना चाहिए कि देखते-देखते उपनिवेश समाप्त हो गए, शोषक वर्ग का सफाया हो गया। इसी सन्दर्भ में हम कितनी ही बार लिंकन एवं लूथर किंग के साथ-साथ उस महिला हैरिएट स्टो का उल्लेख करते रहे हैं जिसकी कलम ने कालों को गुलामी के चंगुल से मुक्त कराया। प्रत्यक्षतः यह युग मनीषा की भूमिका है।

बुद्ध की विवेक एवं नीति-सत्ता पर आधारित विचार क्रान्ति एवं गाँधी, पटेल, नेहरू द्वारा पैदा की गयी स्वातन्त्र्य आन्दोलन की आँधी उस परोक्ष मनीषा की प्रतीक है जिसने अपने समय में ऐसा प्रचण्ड प्रवाह उत्पन्न किया कि युग बदलता चला गया। उन्होंने कोई विचारोत्तेजक साहित्य रचा हो, यह भी नहीं। फिर यह सब कैसे सम्भव हुआ। यह तभी हो पाया जब उन्होंने मुनि स्तर की भूमिका निभायी, स्वयं को तपाया विचारों में शक्ति पैदा की एवं उससे वातावरण को प्रभावित किया।

परिस्थितियाँ आज भी विषम हैं। वैभव और विनाश के झूले में झूल रही मानव जाति को उबारने के लिये आस्थाओं के मर्मस्थल तक पहुँचना होगा और मानवी गरिमा को उभारने, दूरदर्शी विवेकशीलता को जगाने वाला प्रचण्ड पुरुषार्थ करना होगा। साधन इस कार्य में कोई योगदान दे सकते हैं, यह सोचना भ्रान्तिपूर्ण है। दुर्बल आस्था अन्तराल को तत्वदर्शन और साधना प्रयोग के उर्वरक की आवश्यकता है अध्यात्म वेत्ता इस मरुस्थल की देखभाल करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते व समय-समय पर संव्याप्त भ्रान्तियों से मानवता को उबारते हैं। अध्यात्म की शक्ति विज्ञान से भी बड़ी है। अध्यात्म ही व्यक्ति के अन्तराल में विकृतियों के माहौल से लड़ सकने-निरस्त कर पाने में सक्षम तत्वों की प्रतिष्ठापना कर पाता है। हमने व्यक्तित्वों में पवित्रता व प्रखरता का समावेश करने के लिए मनीषा को ही अपना माध्यम बनाया एवं उज्ज्वल भविष्य का सपना देखा है।

हमने अपने भावी जीवनक्रम के लिये जो महत्वपूर्ण निर्धारण किये हैं, उनमें सर्वोपरि है लोक चिन्तन को सही दिशा देने हेतु एक ऐसा विचार प्रवाह खड़ा करना जो किसी भी स्थिति में अवांछनीयताओं को टिकने ही न दे। आज जन समुदाय के मन-मस्तिष्क में जो दुर्गति घुस पड़ी है, उसी की परिणति ऐसी परिस्थितियों के रूप में नजर आती है जिन्हें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जटिल और भयावह समझा जा रहा है। ऐसे वातावरण को बदलने के लिए व्यास की तरह बुद्ध, गाँधी, कार्लमार्क्स की तरह, मार्टिन लूथर, अरविन्द, महर्षि रमण की तरह भूमिका निभाने वाले मुनि व ऋषि के युग्म की आवश्यकता है, जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रयासों द्वारा विचार क्रान्ति का प्रयोजन पूरा कर सकें । यह पुरुषार्थ अन्तःक्षेत्र की प्रचण्ड तप साधना द्वारा ही सम्भव हो सकता है। इसका प्रत्यक्ष रूप युग मनीषा का हो सकता है जो अपनी शक्ति द्वारा उत्कृष्ट स्तर का साहित्य रच सके । जिसे युगान्तरकारी कहा जा सकता है । अखण्ड-ज्योति के माध्यम से जो संकल्प हमने आज से सैंतालीस वर्ष पूर्व लिया था उसे अनवरत निभाते रहने का हमारा नैतिक दायित्व है ।

युग ऋषि की भूमिका अपने परोक्ष रूप में निभाते हुए उन अनुसन्धानों की पृष्ठभूमि बनाने का हमारा मन था जो वैज्ञानिक अध्यात्म का प्रत्यक्ष रूप इस तर्क तथ्य प्रमाणों को आधार मानने वाले समुदाय के समक्ष रख सकें । आज चल रहे वैज्ञानिक अनुसन्धान यदि उनसे कुछ दिशा लेकर सही मार्ग पर चल सके तो हमारा प्रयास सफल माना जाएगा । आत्मानुसन्धान के लिये अन्वेषण कार्य किस प्रकार चलना चाहिए, साधना-उपासना का वैज्ञानिक आधार क्या है ? मनः शक्तियों के विकास में साधना उपचार किस प्रकार सहायक सिद्ध होते हैं ? ऋषिकालीन आयुर्विज्ञान का पुनर्जीवन कर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को कैसे अक्षुण्ण बनाया जा सकता है, गायत्री की शब्द-शक्ति एवं यज्ञाग्नि की ऊर्जा कैसे व्यक्तित्व को सामर्थ्यवान एवं पवित्र तथा काया को जीवनी-शक्ति सम्पन्न बनाकर प्रतिकूलताओं से जूझने में समर्थ बना सकती है, ज्योतिर्विज्ञान के चिर-पुरातन प्रयोगों के माध्यम से आज के परिप्रेक्ष्य में मानव समुदाय को कैसे लाभान्वित किया जा सकता है, ऐसे अनेकानेक पक्षों को हमने अथर्ववेदीय ऋषि परम्परा के अन्तर्गत अपने शोध प्रयासों में अभिनव रूप में प्रस्तुत कर दिया है । हमने उनका शुभारम्भ कर बुद्धिजीवी समुदाय को एक दिशा दी है, आधार खड़ा किया है । परोक्ष रूप में हम उसे सतत् पोषण देते रहेंगे । सारे वैज्ञानिक समुदाय का चिन्तन इस दिशा में चल पड़े, आत्मिकी के अनुसन्धान में अपनी प्रज्ञा नियोजित कर वे स्वयं को धन्य बना सकें, ऐसा हमारा प्रयास रहेगा । सारी मानव जाति को अपनी मनीषा के द्वारा एवं शोध अनुसन्धान के निष्कर्षों के माध्यम से लाभान्वित करने का हमारा संकल्प सूक्ष्मीकरण तपश्चर्या की स्थिति में और भी प्रखर रूप ले रहा है । इसकी परिणतियाँ आने वाला समय बताएगा ।

मनीषा को झकझोरने की चेष्टा

किसी समय, मुनि, मनीषी और दार्शनिक समाज के सर्वोच्च वर्ग में गिने जाते थे क्योंकि उन्हीं के प्रतिपादन शासनाध्यक्षों, धनाध्यक्षों तथा अन्यान्य विशिष्ट वर्गों को मान्य होते थे । उनकी अवज्ञा करने का दुस्साहस कोई करता नहीं था क्योंकि समय के अनुरूप राह बताने और निर्धारण करने की उनकी क्षमता असाधारण भी होती थी और उनका वर्चस्व भी था ।

दार्शनिक इसी श्रेणी में आते थे । वे शास्त्र रचते थे और सामयिक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करते थे । प्रवचन के लिए व्यास पीठों पर उन्हीं का अधिकार था । राजा से लेकर रंक तक उनकी असामान्य मान्यता थी । आज भी यह वर्ग लेखकों, कवियों, कलाकारों के रूप में है तो सही पर अपनी गरिमा गँवा बैठा है । उसका अपना न तो स्तर है, न लक्ष्य । इनमें से अधिकांश को धनाध्यक्षों की सेवा में चारणों की तरह निरत रहना पड़ता है । जो उनसे सोचने के लिए कहते हैं सो ही वे सोचते हैं, जो लिखने का निर्देश मिलता है सो ही लिखते हैं । चूँकि प्रेस.प्रकाशन एक व्यवसाय बन गया है और व्यवसाय सदा धनिक चलाते हैं । जो संचालक है उसी की नीति भी चलेगी । इन दिनों अनेकों पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं । पुस्तकें भी छपती हैं । पर उनमें लेखक की अपनी कोई स्वतंत्र आवाज नहीं । प्रकाशक को जिसमें अपना लाभ दीखता है, लेखक वही लिखता है, क्योंकि पैसा उसे अपने मालिक की मर्जी के अनुरूप लिखने को मिलता है । अब स्वतन्त्र लेखक नहीं रह गये हैं, जो अपनी मर्जी से लिखें । यदि मर्जी हो भी तो वह मालिक की मर्जी से भिन्न नहीं होनी चाहिए । अन्यथा मालिक ऐसे धन्धे में पैसा क्यों लगायेगा जिसमें उसे लाभ नहीं दीखता । लेखक का अपना निज का कोई प्रेस नहीं । जो कहीं, जहाँ, तहाँ हैं, वे प्रतिस्पर्धा में ठहर न पाने के कारण लँगड़े-लूले-ज्यों-त्यों करके चलते हैं । उन्हें न ग्राहक मिलते हैं और न खपत का जुगाड़ बनता है । ऐसी दशा में स्वतन्त्र प्रेस का अस्तित्व प्रायः नहीं के बराबर है । लेखक, चिन्तक या दार्शनिक अब घटते या मिटते जा रहे हैं ।

मनीषियों का दूसरा वर्ग वैज्ञानिकों का है । पुरातन काल में वैज्ञानिकों और दार्शनिकों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिम्मेदारी एक ही वर्ग उठाता था । जिनकी रुचि भौतिक क्षेत्र में होती वे चरक, कणाद, नागार्जुन, याज्ञवल्क्य, द्रोणाचार्य आदि की तरह भौतिक अनुसन्धानों को हाथ में लेते थे । अन्यथा व्यास, कपिल, वशिष्ठ, गौतम की तरह युग दर्शन में नये अध्याय जोड़ते रहते थे ।

इन दिनों दोनों की ही दुर्गति हुई है । वैज्ञानिक आविष्कारकों की एक पीढ़ी बहुत ही प्रसिद्ध और कृत-कृत्य हुई थी । उसने सामान्य योग्यता रहते हुए भी ऐसे आविष्कार किये थे जिससे जन-साधारण को असीम और असाधारण लाभ पहुँचा । बिजली का आविष्कार उसमें सर्वाधिक महत्त्व का है । अब वह मनुष्य-जीवन की अविच्छिन्न अंग बनकर रह रही है। इसके बाद वाहनों का नम्बर आता है । साइकिल से लेकर रेल, मोटर,जलयान, वायुयान, इसी स्तर के हैं जिन्होंने लम्बी यात्राएँ सरल बना दीं । भार वाहन का खर्च भी बहुत कम कर दिया । फलतः व्यापार तेजी से पनपने लगे । टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन की उपयोगिता ऐसी ही है । एक युग था जब मनुष्य जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में वैज्ञानिकों ने, उनके आविष्कारों ने असाधारण सेवा-सहायता की । उत्पादन में काम आने वाले अनेकों छोटे-बड़े यन्त्र ऐसे भी हैं, जिनके लिए मनुष्य जाति उनकी सदा कृतज्ञ रहेगी । कोल्हू, चक्की, पम्प आदि की गणना ऐसे ही संयन्त्रों में होती है ।

किन्तु वह वर्ग भी अपनी गरिमा दार्शनिकों की तरह अक्षुण्ण बनाये न रह सका । आविष्कारकों का अपना कोई उत्पादन क्षेत्र न था । उन्हें उत्पादक धनाध्यक्षों के लिए काम करने के लिए बाधित होना पड़ा । बात यहीं से गड़बड़ी की आरम्भ होती है । फिल्म उद्योग लोक शिक्षण का एक उपयोगी माध्यम हो सकता था पर उसके उत्पादनों को देखकर दुःख होता है । प्रेस भी एक अनूठी शक्ति है पर उस क्षेत्र में भी काम का कम और बेकाम का अधिक छपता है। फिल्म दर्शक और साहित्य पाठक अन्ततः इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि यदि इनसे दूर रहते तो भ्रम जंजाल से बचकर कहीं अधिक नफे में रहते ।

इन दिनों प्रायः पचास हजार ऊँची श्रेणी के वैज्ञानिक मात्र युद्ध आयुध बनाने की नई-नई विधियाँ खोजने में निरत हैं । उन्हें इसके लिए पूरा सम्मान और पूरा पैसा दिया जा रहा है । इतना वे अन्यत्र कहीं नहीं पा सकते । इसलिए मौलिक चिन्तन के सुनियोजन का रास्ता ही बन्द है । सरलता और सुख-सुविधा हर किसी को प्रिय लगती है । चाहे दार्शनिक हो या वैज्ञानिक । स्थिति को देखते हुए यह भी कहा जा सकता है कि दोनों ही क्षेत्रों में मौलिक विचारकता समाप्त प्रायः हो गई । दोनों को ही अपने मालिकों के लिए धनाध्यक्षों के लिए काम करना पड़ रहा है ।

यह दुर्भाग्यपूर्ण दुर्गति है । इससे उबरा कैसे जाय ? उबारे कौन ? वैज्ञानिक के लिए कुटीर उद्योग से सम्बन्धित अगणित यन्त्र ऐसे बनाने के लिए पड़े हैं जिन्हें बनाया जा सके तो असंख्यों को बेकारी से त्राण पाने का अवसर मिले और अभावजन्य कठिनाइयों से पीछा छूटे । घरेलू आटा चक्की, घरेलू तेल कोल्हू, घरेलू चरखा, करघा, लुहारी, बढ़ईगीरी की मशीनें, कुम्हार के चाक जैसे यन्त्र ऐसे निकल सकते हैं, जिनके सहारे सामान्य जीवन की सुविधा भी बढ़े और आमदनी भी । सस्ते पम्प सेटों की हर जगह आवश्यकता है । कागज बनाने का उद्योग हर देहात में चल सकता है । सूर्य की गर्मी से चालित भट्टी एवं चूल्हे से मुफ्त में गरम पानी मिलने और वस्तुएँ पकाने-सुखाने का काम हो सकता है ।

ऊपर कुछ उदाहरण काम के बताये गये हैं । बैलगाड़ियों में सुधार की भारी गुंजाइश है । मोटरें और साइकिल भाप से चल सकती हैं और महँगे पेट्रोल का स्थान ले सकती हैं । इन सब कार्यों में अपने वैज्ञानिक पूरी तरह समर्थ हो सकते हैं और उन यन्त्रों के उत्पादन का एक नया बड़ा उद्योग चल सकता है । पर ऐसा कुछ हो नहीं रहा है । जो कुटीर उद्योग के नाम पर बना हुआ है वह इतना लंगड़ा लूला है कि लगाने वालों की कमर तोड़ कर उसे मजा चखा देता है । इन सभी उपकरणों को अभी आधे-अधूरे मन से बनाया गया है । इन यन्त्रों के निर्माताओं का-आविष्कारकों का पारस्परिक सहयोग यदि सच्चे मन से हुआ होता और उसके लिए आवश्यक पूँजी जुट सकी होती । प्रयोक्ताओं की व्यावहारिक शिक्षा मिल सकी होती । सहकारी माध्यमों से कच्चा माल देने और बनी वस्तुएँ लेने का उपयुक्त मण्डियों में बेचने का यदि प्रबन्ध हुआ होता तो परिस्थितियाँ कुछ और हुई होतीं । तब हम मात्र कृषि पर निर्भर न रहते। गोबर के अतिरिक्त दूसरे सस्ते वनस्पतिक खाद भी आविष्कृत कर रहे होते । पशुओं के लिए खेतों में सस्ती और अधिक फसल वर्ष भर देने वाली घास उगाते और पशुपालन घाटे का सौदा न रहा होता ।

शिकायतें कौन किसकी करे ? पर गुंजायश इस बात की पूरी-पूरी है कि देश को कुटीर उद्योग स्तर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पर योजनाबद्ध ढंग से खड़ा किया जाय । यों चलने को तो यह सब कुछ अभी भी चल रहा है पर उसे अपर्याप्त और असंतोषजनक ही कहा जा सकता है । जापान जैसी लगन हमारे वैज्ञानिकों, निर्माताओं, उपभोक्ताओं को लगी होती तो अपने देश के मनीषी ही इस क्षेत्र में चमत्कार करके दिखा सकते थे । पर बने कैसे ? जबकि सबको अधिक कमाने की—हाथों—हाथ सुविधा समेटने की पड़ी है । प्रतिभाएँ विदेशों को पूँजीवादी राष्ट्रों की ओर भागती चली जा रही हैं । कुटीर उद्योग जहाँ भी चल रहे हैं, घाटा दे रहें हैं । जिन्होंने पैर बढ़ाया उनका जोश ठण्डा कर रहे हैं ।

यही बात दार्शनिकों—मनीषियों के सम्बन्ध में भी है । समय जिस तेजी से बढ़ा है, उसी तेजी से समस्याएँ भी उपजी तथा उलझी हैं । वे सभी अपने समाधान चाहती हैं—बुद्धिसंगत, व्यावहारिक और तथ्यों पर निर्धारित । ऐसे मार्गदर्शन का साहित्य लिखा गया होता, छपता, और पाठकों तक उचित मूल्य में पहुँचता तो कैसा अच्छा होता । पर दीखता इस क्षेत्र में भी अन्धेरा ही है ।

पुस्तकों के नाम पर पहाड़ के बराबर हर दिन कागज काला होता है । पत्र-पत्रिकाएँ भी आये दिन एक गोदाम खाली कर देती हैं । वह छपता भी है और बिकता भी है । इसे कोई न कोई लिखता भी है पर आदि से अन्त तक इस मुद्रण प्रकाशन की समीक्षा की जाय तो निराशा ही हाथ लगती है ।

जिन व्यावहारिक जानकारियों की जन-साधारण को आवश्यकता है, क्या वे गम्भीरतापूर्वक सोची-समझी गई हैं और इन पर अपने पिछड़े देश की परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाते हुए कुछ ऐसा प्रस्तुतीकरण हुआ है, जिसे 'काम का' कहा जा सके? अंग्रेजी किताबों के पन्ने उलट-पुलट कर उनका भाषान्तर होता रहता है और लोग अपने नामों से छापते रहते हैं । कम समय में अधिक पारिश्रमिक प्राप्त करने की दृष्टि से यही तरीका सरल भी पड़ता है। अब उन मनीषियों की पीढ़ी मिटती चली जा रही है जो जन समस्याओं पर सामयिक, व्यावहारिक एवं तथ्यपूर्ण प्रस्तुतीकरण अपना कर्तव्य समझते हैं । अब वे कार्ल मार्क्स कहाँ हैं, जो सत्रह वर्ष की निरन्तर परिश्रम साधना कर एक ग्रन्थ लिखें । अब वे परिवार, पत्नी, बच्चे कहाँ हैं, जो पुराने कपड़ों को काटकर नये कपड़े बनायें और अपना पेट पालते हुए लेखक को अपनी तपस्या में लगा रहने दें ।

दार्शनिकों और वैज्ञानिकों का क्षेत्र सूना हो जाना अथवा उनका अपने स्तर से नीचे उतर आना, भटक जाना बहुत ही बुरी बात है । इस स्तर के ब्रह्मचेता लोग जब लटकते हैं और दिशा भ्रमा देने वाला—हैरानी में धकेलने वाला कर्तृत्व रचते हैं तो उसकी प्रतिक्रिया अत्यन्त भयंकर होती है । पुराने जमाने में उन्हें 'ब्रह्म राक्षस' कहा जाता था । अब वैसा कोई नया नामकरण हुआ है या नहीं, इसका पता नहीं पर पीढ़ी निस्सन्देह उन्हीं की बढ़ रही है ।

यह वस्तुस्थिति का पर्यवेक्षण हुआ । इतने भर से बात क्या बनती हैं । समीक्षाएँ, भर्त्सनाएँ आये दिन होती रहती हैं । उन्हें इस कान सुनकर उस कान से निकाल देते हैं । होना तो कुछ ऐसा चाहिए जिससे काम बने । हम अब वही करने जा रहे हैं । हमारी भावी क्षमता इसी समुदाय के लिए कार्यरत रहेगी । सूक्ष्मीकरण के उपरान्त जो भी कुछ कार्यक्षमता हस्तगत होगी उसका उपयोग इस जाग्रत समुदाय के निमित्त ही होगा । इन जाग्रतों में वे बालक भी सम्मिलित हैं जो आयु या शरीर की दृष्टि से छोटे होते हुए भी भविष्य में कुछ करने की क्षमता पूर्वजन्मों से ही संजोये हुए हैं । एक शब्द में हमारे कार्यक्षेत्र को जाग्रत आत्माओं का समुदाय कह सकते हैं । हम इस वर्ग के पीछे लगेंगे और प्रयत्न करेंगे कि उनकी सहायता से सृष्टा का वह प्रयोजन पूरा हो जिसमें मनुष्य को अशुभ से बचाकर उज्जवल भविष्य तक घसीट ले जाया जाना है ।

वैज्ञानिक और दार्शनिक हमारी एक मुहिम है । वैज्ञानिकों को भड़कायेंगे कि युद्ध के घातक शस्त्र बनाने में उनकी बुद्धि सहयोग देना बन्द कर दे । गाड़ी अधर में लटक जाय । दोनों पक्ष इसी फिराक में हैं कि उनके वैज्ञानिक ऐसे अमोघ उपाय निकाल लेंगे जिससे अपनी जीत निश्चित रहे और सामने वाला अपंग होकर बैठा रहे । सूक्ष्मीकरण के उपरान्त अब हम वैसा न होने देंगे । उच्चस्तरीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा और सूझ-बूझ उन्हें वैसा न करने देगी जैसा कि अपेक्षा की जा रही है । अब उनका मस्तिष्क ऐसे छोटे उपकरण बनाने की ओर लौटेगा जिससे कुटीर उद्योगों को सहायता देने वाला नया माहौल उफन पड़े। इसका उदाहरण देने के लिए एक नमूना हम अपने सामने बनाकर जायेंगे ।

हमारा प्रयत्न होगा कि सादगी आन्दोलन चले । विकेन्द्रीकरण की बात सूझे । लोग हाथ की बनी वस्तुओं से काम चलाने की आदत डालें । फैशन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छोड़ें, अपव्यय, ठाट-बाट के विरुद्ध जनता में घृणा-भाव उत्पन्न हो । लोग शहरों से विमुख हों । कस्बे पनपें । गांधीजी ने स्वराज्य आन्दोलन के साथ-साथ खादी को जोड़ा था । तब यह विचित्र लगता था । पर अब अर्थशास्त्र का दूरदर्शी विद्यार्थी यह स्वीकार करता है कि यदि शान्ति से रहना है तो सादगी को जीवनचर्या में अविच्छिन्न स्थान देना पड़ेगा। बड़े कारखाने मात्र मशीन बनाने जैसे अनिवार्य प्रयोजन के लिए रहें, पर उन्हें जन-जीवन की आवश्यकताओं के क्षेत्र में प्रवेश न करने दिया जाय । वस्त्र-उद्योग विशेषतया हाथ करघों के लिए सुरक्षित रहे । दैनिक आवश्यकता की अन्यान्य वस्तुएँ गाँव में बनें । इस कार्य में शायद पूँजीपति और सरकारें सहमत न हों । तो भी यह सादगी की, हाथ उद्योग की, देहातों में लौटने की हवा जनसामान्य में प्रारम्भ करनी होगी । इसके बिना बेकारी का और कोई विकल्प नहीं । प्रदूषण से निपटने के लिए छोटे उद्योग, छोटे कारखाने देहातों में चलाने से काम बन सकता है । खाली स्थानों पर पेड़ लगाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किए जाएँ क्योंकि बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए वही एक कारगर उपचार है । वाहनों की द्रुतगामिता कम की जा सकती है । बैलगाड़ियाँ काम में लाई जा सकती हैं। बिजली से चलने वाले वाहन भी विनिर्मित हो सकते हैं । साइकिल युग तो लौटने ही वाला है ।

शिक्षा क्रान्ति इन्हीं सिद्धान्तों पर अवलम्बित है । नौकरी के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने की वर्तमान भेड़चाल ने युवा वर्ग को दिग्भ्रान्त, निराश एवं क्षुब्ध किया है । शिक्षा ऐसी हो जो दैनिक जीवन की सभी आवश्यकताओं की जानकारी दे । जो विशेषज्ञ बनने के इच्छुक हैं, उन विषयों को पढ़ें । सर्वसाधारण पर निरर्थक भार न लदे ।

लेखकों, दार्शनिकों का अब एक नया वर्ग उठेगा। वह अपनी प्रतिभा के बलबूते एकाकी सोचने और एकाकी लिखने का प्रयत्न करेगा । उन्हें उद्देश्य में सहायता मिलेगी । मस्तिष्क के कपाट खुलते जायेंगे और उन्हें सूझ पड़ेगा कि इन्हीं दिनों क्या लिखने योग्य है और मात्र वही लिखा जाना है ।

क्या बिना सम्पन्न लोगों की सहायता लिए, बिना वर्त्तमान पुस्तक विक्रेताओं की मोटे मुनाफे की माँग पूरी किये, ऐसा हो सकता है कि जन-साधारण का उपयोगी लोक साहित्य लागत मूल्य पर छपने लगे और घर-घर तक पहुँचने लगे । हमारा विश्वास है कि यह असम्भव नहीं है । समय अपनी आवश्यकता पूरी कराने के लिए रास्ता निकालेगा और छाये हुए अन्धेरे में किसी चमकने वाले सितारे का प्रकाश दृष्टिगोचर होगा ।

दार्शनिक और वैज्ञानिक दोनों ही मुड़ेंगे । इन दोनों खदानों में से ऐसे नर रत्न निकलेंगे जो उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने में आश्चर्यजनक योगदान दे सकें ऐसी परिस्थितियाँ विनिर्मित करने में हमारा योगदान होगा, भले ही परोक्ष होने के कारण लोग उसे अभी देख या समझ न सकें ।

मात्र सुधार ही आवश्यक नहीं है

रामचरित मानस में राम जन्म से लेकर उनके लंका दमन और राज्यारोहण तक का वृत्तान्त है । पर इतने में सम्पूर्ण रामायण नहीं बनती । भगवान दो उद्देश्यों को लेकर अवतरित हुए थे । एक अधर्म का नाश, दूसरा धर्म का परित्राण । तुलसीकृत रामचरित मानस में असुरता से परित्राण का विवरण ही लिखा गया है । धर्म की स्थापना कैसे हुई ? यह एक स्वतन्त्र विषय है। उसमें परिश्रम कम न लगा होगा । योजना छोटी न बनी होगी, साधन कम न लगे होंगे और थोड़े नल-नीलों से काम न चला होगा । पर उस सबका वर्णन उस ग्रन्थ में नहीं है । रामराज्य की स्थापना को धर्मराज्य की स्थापना या सतयुग की वापसी कहा जाता है । यह कार्य ऐसे ही जादू की छड़ी घुमाते न हो गया होगा । असुरता उन्मूलन में जितना पुरुषार्थ अपेक्षित है उतना ही देवत्व की स्थापना हेतु भी अभीष्ट है ।

सभी जानते हैं कि ध्वंस सरल है और निर्माण कठिन एक तीली से समूचा गाँव जल सकता है किन्तु उसे फिर से उसी रूप में या उससे भी अच्छे ढंग से बनाना हो तो इसके लिए कितने बड़े कितने समर्थ प्रयत्नों की आवश्यकता पड़ेगी । इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है । रामराज्य की स्थापना को कम महत्व नहीं दिया जा सकता है क्योंकि वस्तुतः वही लक्ष्य था । मात्र असुरों को मार डालना भर लक्ष्य रहा होता तो उतने भर से क्षणिक राहत की ठंडी साँस लेने का अवसर न मिलता । वह सब कहाँ दृष्टिगोचर होता जिसकी याद अभी भी आती रहती है । लंका दहन के उपरान्त वहाँ मात्र मरघट जैसे दृश्य दिखाई पड़ते । जले भवन, छितराई लाशें, दुर्घटित कवाड़ देखकर कौन यह अनुमान लगा पाता कि रामचन्द्र जी ने कोई कहने योग्य पुरुषार्थ किया ।

बात लंका की हो—अयोध्या की हो—या सम्बन्धित इलाके की । प्रशंसा की बात तभी कही जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकती है, जब वहाँ कुछ ऐसा बन पड़ा हो जो पुराने की तुलना में और अधिक शानदार रहा हो । यह किस प्रकार सम्पन्न हुआ । इसका उल्लेख रामायण में नहीं है । इसका अर्थ यह हुआ कि रामचरित मानस के प्रमुख सूत्र संचालक का उसमें बहत बड़ा भाग न रहा होगा । वह सम्भवत: दूसरों ने किया होगा ।

सूक्ष्मीरकरण के उद्देश्यों में एक पक्ष वह है जिसे आक्रमणात्मक कहा जा सकता है । उल्टे को उलट कर सीधा करना । यह गिरी हुई रेलगाड़ी को क्रेन द्वारा पटरी पर उठाकर खड़ी कर देना हुआ । इतने भर से रेलगाड़ी चलने थोड़े ही लगेगी । उसकी मरम्मत भी लोको वर्कशाप में ले जाकर करनी होगी। भयंकर अग्निकाण्ड को दमकलें अथक परिश्रम से बुझाती हैं। लपटें ठंडी होने पर सन्तोष की साँस ली जाती है । फिर भी जो घर जले हैं उनके निवासियों को यथास्थिति पहुँचाने का कार्य फिर भी बाकी रह जाता है । लड़ाई के दिनों शत्रु का आक्रमण रोकने के लिए नदी के पुल तोड़ दिये जाते हैं । पर वे सदा टूटे ही थोड़े पड़े रहते हैं । उन्हें फिर से बनाना पड़ता है अन्यथा आवागमन रुक जाने से उस क्षेत्र की जनता त्राहि-त्राहि कर उठेगी । शत्रु का मार्ग रोकने के लिए पुल किसने तोड़ा इसकी चर्चा प्रमुख रूप से होती है । पर पीछे उसे नये सिरे से बनाने में कितने इन्जीनियर, ठेकेदार, श्रमिक आदि लगे । उसका उल्लेख प्राय: कम ही होता है ।

इन दिनों ध्वंस, विनाश, विग्रह और पतन की शक्तियों का तूफानी उभार है । इन्हें रोकना आज का प्रमुख काम है । इसके लिए जो कुछ किया जाता है उसे रोकथाम करना कहना चाहिए । यह आवश्यक है। तात्कालिक उपाय भी है । इसके बिना गाड़ी आगे बढ़ती ही नहीं । इसलिए प्राथमिकता या प्रमुखता भी इसी को देना अनिवार्य समझ हमें यह अवलम्बन अपनाना पड़ा है ।

''विनाश नहीं सृजन'' हमारा भविष्य कथन

अगला समय और भी संकटों से भरा-पूरा है, इस बात को विभिन्न मूर्धन्यों ने अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार विभिन्न प्रकार से जोरदार शब्दों में कहा । ईसाई धर्मग्रन्थ बाइबिल में जिस ''सैविन टाइम्स'' में प्रलयकाल जैसी विपत्ति आने का उल्लेख किया है, उसका ठीक समय यही है । इस्लाम धर्म में चौदहवीं सदी के महान संकट का उल्लेख है । भविष्य पुराण में इन्हीं दिनों महती विपत्ति टूट पड़ने का संकेत है । सिखों के गुरु ग्रन्थसाहिब में भी ऐसी ही अनेकों भविष्यवाणियाँ हैं । कवि सूरदास ने इन्हीं दिनों विपत्ति आने का इशारा किया था । मिस्र के पिरामिडों में भी ऐसे ही शिलालेख पाये गए हैं । अनेकों भारतीय भविष्यवक्ताओं ने इन दिनों भयंकर उथल-पुथल के कारण अध्यात्म आधार पर और दृश्य गणित ज्योतिष के सहारे ऐसी ही सम्भावनायें व्यक्त की हैं ।

पाश्चात्य देशों में जिन भविष्यवक्ताओं की धाक है और जिनकी भविष्यवाणियाँ ९९ प्रतिशत सही निकलती रही हैं, उनमें जीन डिक्सन, प्रो. हरार, एण्डरसन, जॉनबावेरी, कीरो, आर्थर क्लार्क, नोस्ट्राडेमस, मदर शिम्पटन, आनन्दाचार्य आदि ने इस समय के सम्बन्ध में जो सम्भावनायें व्यक्त की हैं, वे भयावह हैं । कोरिया में पिछले दिनों समस्त संसार के दैवज्ञों का एक सम्मेलन हुआ था, उसमें भी डरावनी सम्भावनाओं की ही आगाही व्यक्त की गयी थी । टोरोन्टो कनाडा में—संसार भर के भविष्य विज्ञान विशेषज्ञों (फ्यूचराण्टालाजिस्टा) का एक सम्मेलन हुआ था, जिसमें वर्तमान परिस्थितियों का पर्यवेक्षण करते हुए कहा था कि बुरे दिन अति समीप आ गए । ग्रह-नक्षत्रों के पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने वालों ने इन दिनों सूर्य पर बढ़ते धब्बों और लगातार पड़ने वाले सूर्य ग्रहणों को धरती निवासियों के लिए हानिकारक बताया है । इन दिनों सन् ८५ के प्रारम्भ में उदय हुए ''हैली'' धूमकेतु की विषैली गैसों का परिणाम पृथ्वीवासियों के लिए हानिकारक बताया गया।

सामान्य बुद्धि के लोग भी जानते हैं कि अन्धा-धुन्ध बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए अगले दिनों अन्न-जल तो क्या सड़कों पर चलने का रास्ता तक न मिलेगा । औद्योगीकरण, मशीनीकरण की भरमार से हवा और पानी भी कम पड़ रहा है और विषाक्त हो चला है । खनिज तेल और धातुएँ, कोयला, पचास वर्ष तक के लिए नहीं है । अणु परीक्षणों से उत्पन्न विकिरण से अगली पीढ़ी और वर्तमान जन-समुदाय को कैंसर जैसे भयानक रोगों की भरमार होने का भय है । कहीं अणु युद्ध हो गया तो इससे न केवल मनुष्य वरन् अन्य प्राणियों और वनस्पतियों का भी सफाया हो जायेगा । असन्तुलित हुए तापमान से ध्रुवों की बर्फ पिघल पड़ने, समुद्र में तूफान आने और हिमयुग के लौट पड़ने की सम्भावना बताई जा रही है और भी अनेक प्रकार के संकटों के अनेकानेक कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्यमान हैं । इस सन्दर्भ में साहित्य इकट्ठा करना हो तो उनसे ऐसी सम्भावनाएँ सुनिश्चित दिखाई पड़ती हैं, जिनके कारण इन वर्षों में भयानक उथल—पुथल हो । सन् २००० में युग परिवर्तन की घोषणा है, ऐसे समय में भी विकास से पूर्व विनाश की—ढलाई से पूर्व गलाई की सम्भावना का अनुमान लगाया जा सकता है । किसी भी पहलू से विचार किया जाय, प्रत्यक्षदर्शी और भावनाशील मनीषी—भविष्य वक्ता इन दिनों विश्व-संकट को अधिकाधिक गहरा होता देखते हैं ।

पत्रकारों और राजनीतिज्ञों के क्षेत्रों में इस बार एक अंत्यधिक चिन्ता यह संव्याप्त है कि इन दिनों जैसा संकट मनुष्य जाति के सामने है, वैसा मानवी उत्पत्ति के समय में कभी भी नहीं आया । शान्ति परिषद आदि अनेक संस्थायें इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि महाविनाश का जो संकट सिर पर छाया हुआ है, वह किसी प्रकार टले । छुट-पुट लड़ाइयाँ तो विभिन्न क्षेत्रों में होती ही रहती हैं । शीत युद्ध किसी भी दिन महाविनाश के रूप में विकसित हो सकता है, यह अनुमान हर कोई लगा सकता है ।

भूतकाल में भी देवासुर संग्राम होते रहें हैं, पर जन-जीवन के सर्वनाश की प्रत्यक्ष सम्भावना का सर्व सम्मत ऐसा अवसर इससे पूर्व कभी भी नहीं आया ।

इन संकटों को ऋषि-कल्प सूक्ष्मधारी आत्मायें भली प्रकार देख और समझ रहीं है । ऐसे अवसर में वे मौन नहीं रह सकतीं । ऋषियों के तप स्वर्ग, मुक्ति एवं सिद्धि प्राप्त करने के लिए नहीं होते । यह उपलब्धियाँ तो आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करने वाले स्थूल शरीरधारी भी प्राप्त कर लेते हैं । यह महामानवों को प्राप्त होने वाली विभूतियाँ हैं । ऋषियों को भगवान का कार्य सम्भालना पड़ता है और वे उसी प्रयास को लक्ष्य मानकर संलग्न रहते हैं ।

हमारे ऊपर जिन ऋषि का—दैवी सत्ता का अनुग्रह है, उन्होंने सभी कार्य लोकमंगल के निमित्त कराये हैं । आरम्भिक २४ महापुरश्चरण भी इसी निमित्त कराये हैं कि आत्मिक समर्थता इस स्तर की प्राप्त हो सके, जिसके सहारे लोककल्याण के अति महत्त्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में कठिनाई न पड़े ।

विश्व के ऊपर छाये हुए संकटों को टालने के लिए उन्हें चिन्ता है । चिन्ता ही नहीं प्रयास भी किए हैं। इन्हीं प्रयासों में एक हमारे व्यक्तित्व को पवित्रता और प्रखरता से भर देना भी है । आध्यात्मिक सामर्थ्य इसी आधार पर विकसित होती है ।

उपासना का वर्तमान चरण सूक्ष्मीकरण की सावित्री साधना के रूप में चल रहा है । इस प्रक्रिया के पीछे किसी व्यक्ति विशेष की ख्याति, सम्पदा, वरिष्ठता या विभूति नहीं है । एक मात्र प्रयोजन यही है कि मानवी सत्ता और गरिमा के लड़खड़ाते हुए पैर स्थिर हो सकें । पाँच वीरभद्रों के कन्धों पर वे अपना उद्देश्य लादकर उसे सम्पन्न भी कर सकते हैं । हनुमान के कन्धों पर राम-लक्ष्मण दोनों बैठे फिरते थे । यह श्रेष्ठता प्रदान करना भर है । इसे माध्यम का चयन कह सकते हैं । एक गाण्डीव धनुष के आधार पर किस प्रकार इतना विशालकाय महाभारत लड़ा जा सकता था । इसे सामान्य बुद्धि से असम्भव ही कहा जा सकता है । पर भगवान की जो इच्छा होती है, वह तो किसी न किसी प्रकार पूरी होकर रहती है । महाबली हिरण्याक्ष को शूकर भगवान ने फाड़-चीरकर रख दिया था, उसमें भी भगवान की ही इच्छा थी ।

इस बार भी हमारी निज की अनुभूति है कि असुरता द्वारा उत्पन्न हुई विभीषिकाओं को सफल नहीं होने दिया जायेगा । परिवर्तन इस प्रकार होगा कि जो लोग इस महाविनाश में संलग्न हैं, इसकी संरचना कर रहे हैं वे उलट जायेंगे या उनके उलट देने वाले नए पैदा हो जायेंगे । विश्व-शान्ति में भारत की निश्चित ही कोई बड़ी भूमिका हो सकती है ।

समस्त संसार के मूर्धन्यों, शक्तिवानों और विचारवानों की आशंका एक ही है कि विनाश होने जा रहा है । हमारा अकेले का कथन यह है कि उल्टे को उलटकर ही सीधा किया जायेगा । हमारे भविष्य कथन को अभी ही बड़ी गम्भीरतापूर्वक समझ लिया जाय । विनाश की घटाओं को प्रचण्ड तूफानी प्रवाह अगले दिनों उड़ाकर कहीं ले जायेगा और अन्धेरा चीरते हुए प्रकाश से भरा वातावरण दृष्टिगोचर होगा। यह ऋषियों के पराक्रम से ही सम्भावित है, इसमें कुछ दृश्यमान व कुछ परोक्ष भूमिका हमारी भी हो सकती है ।

हिमालय हमें मार्गदर्शक सत्ता के पास चार बार जाना पड़ा । एक ही प्रश्न मनोक्षेत्र पर छाया रहा कि प्रस्तुत विभीषिकाओं को हर कीमत पर निरस्त किया जाना चाहिए । एक घटना स्मरण आई । दो दुर्दान्त सांड़ एक बार आपस में पूरे आवेश में लड़ रहे थे । लगता था कि वे एक-दूसरे का पेट फाड़कर रहेंगे । जिस खेत में लड़ रहे थे, उसका सर्वनाश करके रहेंगे। इतने में स्वामी दयानन्द उधर से निकले। उन्होंने दोनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को ललकारा । न हटे तो दोनों के सींग पकड़ कर मरोड़े और पूरा बल लगाकर दोनों को दोनों दिशाओं में फेंक दिया । वे उल्टे गिरे और भयभीत होकर जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए । इस घटना की पुनरावृत्ति आज के जमाने में भी सम्भव है । मनुष्य की दुर्बुद्धि और प्रकृति की विकृति यह दोनों ही ऐसे सांड़ हैं जिन्हे सींग पकड़ कर उमेठा और विपरीत दिशाओं में धकेल दिया जाना चाहिए ।

इन दिनों वही प्रयास चल रहा है । सन् २००० तक दोनों ही काबू में आ जायेंगे । इस बीच वे घायल तो जहाँ-तहाँ हो चुके होंगे । पर सर्वनाश की जो सम्भावना दृष्टिगोचर हो रही है वह रुक जायगी ।

विश्व राजनीति में रूस और अमेरिका का विग्रह अणु युद्ध की प्रलय उपस्थित करते दीख रहा है। पर दैवी प्रयास दोनों को ही समझ देंगे और बढ़े हुए कदम पीछे हट जायेंगे । भारत में साम्प्रदायिक और प्रान्तीयतावाद अपना विकराल रूप प्रस्तुत कर रहे हैं । इनकी जलती ज्वालाएँ भी ठन्डी हो जायेंगी । प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने के जो उद्धत प्रयत्न चल रहे हैं । वे समझदारी अपनाकर वह करेंगे जिससे संकट टल सके । लंकादमन के साथ-साथ रामराज्य स्थापना के सतयुगी प्रयास भी चल पड़े थे । विनाश के प्रस्तुत अनेकानेक उपक्रमों पर पानी बरसाने वाले फायर ब्रिगेड चालू कर दिये गये हैं और दुर्भिक्ष की सम्भावना मिटाने वाली ये घटाएँ बरसाई जा रही हैं जो कुछ ही दिन में मनुष्यों, पशुओं का पेट भरने वाली हरीतिमा उगाकर ग्रीष्म की दुर्भिक्ष विभीषिका का पूरी तरह समापन कर दें ।

हमें पूरा विश्वास है कि मनुष्य की समझ लौटैगी। परमसत्ता का सहयोग मिलेगा, प्रकृति अनुग्रह करेगी । बुरे समय की सम्भावना अब समाप्त ही होने जा रही है, यह हमारी आने वाले कल के सम्बन्ध में भविष्यवाणी है ।

इस परम पुरुषार्थ के निमित्त ही इन दिनों हम अपने पाँच प्रतिनिधि विनिर्मित करने में लगे हुए हैं । मौन और एकान्त साधना के उपक्रम के साथ-साथ प्रजनन जैसी अतीव कठोर तपश्चर्या चल रही है । यह प्रतिनिधि अथवा वंशज हमसे किसी प्रकार दुर्बल न होंगे । वरन् सूक्ष्म शरीरधारी होने के कारण संसार में फैले हुए प्रतिभावानों को झकझोर कर नवसृजन योजना में उसी प्रकार बलपूर्वक संलग्न करेंगे जैसा कि हमारे मार्गदर्शक ने हमें किया है ।

(१) बुद्धिजीवी, (२) शासक, (३) कलाकार, (४) सम्पन्न तथा (५) भावनाशील वर्ग के लोग कम नहीं हैं । इनमें से कितने ही निकट भविष्य में अपनी क्षमताओं को स्वार्थ से हटाकर परमार्थ में नियोजित करेंगे और वातावरण आश्चर्यजनक रूप से बदला हुआ प्रतीत होगा ।

सन् २००० तक हमारा अस्तित्व बना रहेगा और हम अपनी भूमिका अबसे भी अधिक अच्छी तरह निभाते रहेंगे । यह हो सकता है कि इस बीच हम वर्तमान शरीर को त्याग दें । हिमालय के ऋषि क्षेत्र में रहकर उनके साथ मिल-जुलकर सूक्ष्म शरीर से काम करें । जो भी करना होगा उसमें हमारा मार्गदर्शक साथ रहेगा । उसके मार्गदर्शन में हमने और हमारे सम्पर्क क्षेत्र में कल्याण मार्ग का ही नियोजन हुआ है । आगे जो होने वाला है उस भविष्य को विगत भूतकाल की तुलना में अधिक श्रेष्ठ और शानदार ही माना जाना चाहिए । इस सम्बन्ध में किसी को किसी प्रकार का कोई सन्देह न रहेगा, जब पाठकगण हमारी जीवनचर्या एवं भावी भूमिका का निरीक्षण-पर्यवेक्षण करेंगे ।

यह मानकर चलना चाहिए कि सामान्य स्तर के लोगों की इच्छा-शक्ति भी काम करती है । जनमत का भी दबाव पड़ता है । जिन लोगों के हाथ में इन दिनों विश्व की परिस्थितियाँ बिगाड़ने की क्षमता है उन्हें जाग्रत लोकमत के सामने झुकना ही पड़ेगा । लोकमत को जाग्रत करने का अभियान "प्रज्ञा-आन्दोलन" द्वारा चल रहा है । यह क्रमशः बढ़ता और सशक्त होता जायेगा । इसका दबाव हर प्रभावशाली क्षेत्र के समर्थ व्यक्तियों पर पड़ेगा और उनका मन बदलेगा कि अपने कौशल चातुर्य को विनाश की योजनायें बनाने की अपेक्षा विकास के निमित्त लगाना चाहिए । प्रतिभा एक महान शक्ति है। वह जिधर भी अग्रसर होती है उधर ही चमत्कार प्रस्तुत करती जाती है । वर्तमान समस्यायें एक-दूसरे से गुँथी हुई हैं । एक से दूसरी का घनिष्ठ सम्बन्ध है, चाहे वह पर्यावरण हो अथवा युद्ध सामग्री का जमाव, बढ़ती अनीति-दुराचार हो अथवा अकाल-महामारी जैसी दैवी आपदायें । एक को सुलझा लिया जाय और बाकी सब उलझी पड़ी रहें, ऐसा नहीं हो सकता । समाधान एक मुश्त खोजने पड़ेंगे और यदि इच्छा सच्ची है तो उनके हल निकल कर ही रहेंगे ।

शक्तियों में दो ही प्रमुख हैं । इन्हीं के माध्यम से कुछ बनता या बिगड़ता है । एक शस्त्र-बल—धन-

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बल। दूसरा बुद्धि-बल—संगठन-बल । पिछले बहुत समय से शस्त्र-बल और धन-बल के आधार पर मनुष्य को गिराया और अनुचित रीति से दबाया और जो मन में आया सो कराया जाता रहा है, यही दानवी शक्ति है । अगले दिनों दैवी शक्ति को आगे आना है और बुद्धिबल तथा संगठन बल का प्रभाव अनुभव कराना है । सही दिशा में चलने पर यह दैवी सामर्थ्य क्या कुछ कर दिखा सकती है इसकी अनुभूति सबको करानी है।

न्याय की प्रतिष्ठा हो, नीति को सब ओर से मान्यता मिले, सब लोग हिल-मिल कर रहें और मिल बाँटकर खायें, इस सिद्धान्त को जन-भावना द्वारा सच्चे मन से स्वीकारा जायेगा, तो दिशा मिलेगी, उपाय सूझेंगे, नयी योजनायें बनेंगी, प्रयास चलेंगे और अन्ततः लक्ष्य तक पहुँचने का उपाय बन ही जायेगा ।

'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** यह दो ही सिद्धान्त ऐसे हैं, जिन्हें अपना लिए जाने के उपरान्त तत्काल यह सूझ पड़ेगा कि इन दिनों किन अवांछनीयताओं को अपनाया गया है और उन्हें छोड़ने के लिये क्या साहस अपनाना पड़ेगा, किस स्तर का संघर्ष करना पड़ेगा । मनुष्य की सामर्थ्य अपार है। वह जिसे करने की यदि ठान ले और औचित्य के आधार पर अपना ले तो कोई कठिन कार्य ऐसा नहीं है, जिसे पूरा न किया जा सके ।

इस नक्शे में आमूल-चूल परिवर्तन होगा

तृतीय विश्व युद्ध की तैयारी जिस कारण चल पड़ी थी और कटारें एक दूसरे की छाती पर रखकर जिस कारण भिड़ गये थे उसका कारण था—गुटों का—वर्गों का शासन । यह कब से चला, इसकी चर्चा निरर्थक है । पर होता यह रहा है कि समर्थ गुटों ने अपने कब्जे में जमीन का और वहाँ रहने वाले दुर्बल लोगों का शोषण आरम्भ कर दिया । संक्षेप में यही शासन तन्त्र है । आदिम काल से लेकर अद्यावधि उसका स्वरूप थोड़े हेर-फेर के साथ ऐसा ही चलता रहा है ।

जापान पर दो बम गिरने और उससे आत्म-समर्पण करा लेने में जिन शासकों को उत्साह मिला, वे सभी उपर्युक्त प्रकार के वर्ग शासन के आधार पर चल रहे थे । यह पद्धति ही विष-बेल है जब से यह चली है, तभी से तात्कालीन साधनों के अनुरूप युद्ध होते रहे हैं और जब तक यह रहेगी युद्धों का कभी अन्त न होगा । आज चिन्ता अधिक इसलिए है कि अणु आयुधों से व्यापक विनाश की सम्भावना है । यदि वह टल भी जाय तो भी दूसरे साधनों से अगले दिनों युद्ध होते रहेंगे । कारण कि उसके मूल में समर्थ वर्गों द्वारा दुर्बल वर्गों का शोषण उसकी आधारभूत विधि व्यवस्था है । इसी आधार पर देशों की विभाजन रेखाएँ बनी हैं । यदि ऐसा न होता तो देशों का विभाजन भौगोलिक सुविधा के आधार पर हुआ होता। उसमें एक और विशेषता होती, पिछड़े समुदाय का वर्चस्व रहता । प्रगतिवान वर्ग उन्हें ऊँचा उठाने और आगे बढ़ाने की अपनी जिम्मेदारी अनुभव करता। समर्थ लोग थोड़े होते हैं, असमर्थ अधिक । इसलिए बहुमत के मार्गदर्शन एवं सुधार परिष्कार की जिम्मेदारी प्रगतिवान अल्पमत को उठानी पड़ती है । पर आज वैसा कहाँ है ? मुट्ठी भर समर्थ लोग अपने बुद्धि-बल, शासन-बल, ज्ञान-बल और साधन-बल के सहारे जितने क्षेत्र पर चाहें कब्जा कर लेते हैं और उसे अपना कहने लगते हैं । यह जंगल का कानून हुआ । "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत चरितार्थ हुई । देशों का वर्तमान सीमा विभाजन और उन पर गुटों का आधिपत्य, यह है—संघर्षों का मूलभूत कारण । यह तो छीना-झपटी हुई। जो जितना बलिष्ठ होगा वह उसी अनुपात में अपने से छोटों को डराने-धमकाने में, शिकंजे में कसे रहने में सफल होगा । इस स्थिति में महत्वाकाँक्षाएँ कुसमुसाती रहेंगी और जब भी अवसर देखेंगी फूट पड़ेंगी ।

सामन्त युग से यही होता रहा है । जिसके पास डकैतों का जमघट जितना अधिक हुआ वह उसी उत्साह से पड़ोसियों पर चढ़ दौड़ता था और उसके राज्य को लूट-खसोट के उपरान्त अपने मे मिला लेता था । अब तरीके बदल गये हैं । अब लड़ाइयाँ इतनी खुली नहीं होतीं । उन पर सिद्धान्तवाद के आवरण उढ़ाये गये होते हैं । फिर भी तथ्य एक ही है कि समर्थ वर्ग, पड़ोसी अथवा दूरवर्ती देशों को किसी न किसी बहाने अपने चंगुल में फँसाये रखना चाहते हैं ताकि उन्हें अधिक शोषण करने, अपने वर्ग को अधिक समर्थ बनाये रहने का अवसर मिलता रहे ।

मुद्दतों से देशों की सीमाएँ कुछ ऐसी बन गई हैं जो हमें स्वाभाविक प्रतीत होती हैं । जो जहाँ कब्जा किये बैठा है वही उसका न्यायोचित अधिकार प्रतीत होता है । पर यदि वस्तुतः न्याय एवं औचित्य को ध्यान में रखते हुये समीक्षा की जाय तो बात कुछ दूसरी ही प्रतीत होती है । धरती पर उत्पन्न होने वाले सभी धरती पुत्रों के लिए उसके उत्पादन में समान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भागीदारी कहाँ है ? वरिष्ठ लोग अपनी सुख-सुविधाओं को स्वेच्छा से कम करके कनिष्ठों को अधिक सुखी समुन्नत बनाने के लिए प्रयत्नशील कहाँ रहते हैं ? यदि ऐसा रहा होता तो गुट बनाने और क्षेत्रों पर कब्जा करने की आवश्यकता ही क्यों पड़ती ? सभी भूमि गोपाल की समझी जाती और उसके हर क्षेत्र से हर किसी को समान लाभ लेने का अवसर मिलता । देशों के नाम पर विभाजन रेखायें न होतीं यदि होतीं तो उसका कारण वर्गवाद न होकर भौगोलिक यातायात आदि की सुविधाओं को ध्यान में रखा गया होता ।

खनिज तेल मध्य पूर्व के कुछेक अरब देशों में बड़ी मात्रा में निकलते हैं । अधिपत्य उन्हीं मुट्ठी भर लोगों का है जबकि भूमि सबकी होने के कारण उस सम्पदा पर स्वामित्व सभी का होना चाहिए । अफ्रीका और अमेरिका की ढेरों जमीन खाली पड़ी है । जबकि चीन और भारत जैसे घनी आबादी वाले देशों को उसकी कोताही के कारण अनेकों असुविधायें सहनी पड़ती हैं । यह संसार एक परिवार होना चाहिए और उसकी भूमि सभी की भूमि । सभी उसके उत्पादन में समान लाभ उठायें । अनीति यहाँ से शुरू होती है कि किसी क्षेत्र के निवासी उस पर अपना आधिपत्य जमाते हैं और वहाँ के उत्पादनों को अपनी ही मुट्ठी में रखना चाहते हैं ।

अनीति में सबसे बड़ी बुराई यह है कि बड़ा ताकतवर छोटे को सहन नहीं करता । फलतः किसी बड़े से कोई बड़ा बनता ही रहता है और छोटे को उदरस्थ करने के लिए मचलता रहता है । छोटे या बड़े युद्ध अब तक इसी कारण होते रहे हैं और यदि यह सिलसिला चलता रहा तो उनका अन्त कभी भी नहीं होगा ।

पिछले लेखों में यह बताने का प्रयत्न किया गया था कि दैवी शक्तियाँ सीने पर गोली रखकर "पीछे हट"—"पीछे हट" कहने वालों से भी किसी पर सामयिक राजीनामा करा देंगी । "आगे बढ़े तो खैर नहीं"—"आगे बढ़े तो खैर नहीं" के उद्घोष दोनों ओर से हो रहे हैं । ऐसी दशा में जिन्हें अपनी हस्ती 'नेस्तनाबूद' नहीं करानी है, समझदारी से काम ले सकते हैं और बहादुरी के साथ पीछे हट सकते हैं । फिलहाल का युद्ध टल सकता है । हमारी दावेदारी और भविष्यवाणी सही सिद्ध हो सकती है कि युद्ध सुनिश्चित रूप से टल जायेगा । निशाना सधी लगी हुई अन्तर्महाद्वीपीय मिसाइलें फिलहाल रुक जायेंगी । पर इससे होगा क्या ? युद्ध अकेला बारूद से ही थोड़ा लड़ा जाता है । असली युद्ध तो आर्थिक लड़ाई है । यह खाई वर्तमान देश विभाजन की सीमा के रहते यथावत् बनी रहेगी और कल न सही, परसों कोई नया स्वरूप लेकर इस प्रकार के न सही, उस प्रकार के युद्ध का मोर्चा खड़ा करेगी । बर्बादी एक तरह की न सही दूसरे तरह की होगी । फिर समाधान क्या हुआ ?

अबकी बार समस्याओं का समाधान किश्तों में नहीं एक मुश्त ही होना है । अणु युद्ध ही नहीं रुकेगा, देशों की वह विभाजन रेखा भी हटेगी, जो वर्गों ने, गुटों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार कब्जा जमाकर बना ली है । वर्तमान नक्शे में जो देश जहाँ दिखाई देता है यहाँ उनमें से एक भी न रहेगा । एक 'विश्व राष्ट्र' का निर्धारण होगा और यदि उसकी प्रशासनिक, औद्योगिक या यातायात सुविधा के कारण वर्गीकरण की आवश्यकता पड़ेगी तो वह कट या बँट भी जाएगा।

यह सुनने और सोचने वालों को असम्भव जैसा लगता होगा ? अमेरिका क्यों इतनी भूमि पर से कब्जा समेटेगा और रूस क्यों अपनी मित्र मंडली के इतने सदस्यों को ढील देगा । चीन क्यों अपने कब्जे के इतने क्षेत्र को वर्गीकृत करेगा ? तेल वाले देश क्यों अपने उत्पादन में से दूसरों को हिस्सा देंगे ? कदाचित कोई भी स्वेच्छा से इसके लिए तैयार न होगा । खासतौर से समृद्ध और समर्थ देश । गरीबों की वहाँ आवाज ही कौन सुनता है ? उनके पास सामर्थ्य ही कहाँ है ? जो विश्व के पुनर्विभाजन के लिए दबाव डाल सके । वर्तमान परिस्थितियाँ यही बताती हैं कि ऐसा परिवर्तन—जैसा इन पंक्तियों में लिखा जा रहा है, असम्भव है । पर इससे आदमी अपने समय में जो सोचता है, वही भविष्य में होता रहे, यह आवश्यक नहीं । देशों की भौगोलिक, आर्थिक और बौद्धिक स्थिति में पिछले दिनों कितना परिवर्तन हुआ है । इसे देखकर चकित रह जाना पड़ता है । प्रथम महायुद्ध के बाद दूसरे में और दूसरे के बाद वर्तमान में क्या अन्तर हुआ है, उसे यदि आर्थिक और राजनैतिक विभाजन की दृष्टि से देखा जाय तो प्रतीत होगा कि इस दुनिया में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुये हैं । इतने आश्चर्यजनक जो कदाचित उस समय के लोगों के गले बिल्कुल भी न उतर सकते होंगे । हिटलर के उत्थान और पतन के दिनों वाली बात पर ही दृष्टि डाली जाय तो प्रतीत होगा कि उन थोड़े से दिनों में ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना कुछ योरोप में बदला जिसकी इससे पूर्व किसी ने कल्पना तक न की होगी ।

युद्धों का निराकरण अबकी बार अन्तिम रूप से किया जाने वाला है । अणु बम रुकें और रासायनिक बम न चलें, ऐसी छोटी हेरा-फेरी के लिए दैवी शक्तियों को बीच में क्यों पड़ना था । इतना तो आदमी की मोटी अक्ल भी कर सकती है । यदि भगवान भी हस्तक्षेप करता है कि युद्ध टल जाय तो उसे इतना और भी करना पड़ेगा कि देशों का वर्तमान सीमा विभाजन और उसका आधारभूत कारण भी हटे। अगले दिनों धरती का नक्शा तो यही रहेगा पर उसमें जो अनेकों छोटे-बड़े देश दिखाई पड़ते हैं वे न रहेंगे । एक विश्व की—एक राष्ट्र की कल्पना तो मुद्दतों से की जाती रही है । ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का प्रतिपादन तो मुद्दतों से होता रहा है, पर अबकी बार सचमुच ही कार्यान्वित होकर रहेगा ।

समर्थ गुटों में एक ही सबसे बड़ा गुट है—पिछड़ा वर्ग जो ज्ञान की दृष्टि से, साधनों की दृष्टि से, अनुभव और अभ्यास की दृष्टि से पीछे पड़ता है । बहुमत इसी का है । अस्तु वर्चस्व भी इसी का होना चाहिए । सम्पत्तिवान—बुद्धिमान संख्या की दृष्टि से अल्पमत हैं पर वे वर्चस्व की दृष्टि से भारी पड़ते हैं । बड़ों को छोटे बच्चे सम्भालने पड़ते हैं । इस दृष्टि से अब तथाकथित बड़ों को नये ढंग से सोचना पड़ेगा । उन्हें संख्या की दृष्टि से अधिक किन्तु क्षमता की दृष्टि से स्वल्प वाले जनसमुदाय को वैसे ही सम्भालना होगा जैसे कि अभिभावक अपने कई छोटे बच्चों को सम्भालते और समर्थ बनाते हैं । अब उन्हें कमजोरी की—विवशता का लाभ उठाने की अभ्यस्त नीति का एक प्रकार से परित्याग ही करना पड़ेगा ।

दैवी कृतियों को चमत्कार कहा जाता है । वह घोर अन्धेरे के बीच न जाने कहाँ से सूर्य का गरमागरम गोला निकाल देते हैं । चिर अभ्यास में आ जाने के कारण वे अजनबी प्रतीत नहीं होते । पर वस्तुतः है तो सही । आकाश में न जाने कहाँ से बादल आ जाते हैं और न जाने किस प्रकार बरस कर सारा जल जंगल एक कर देते हैं । यह अचम्भा ही अचम्भा है । सर्वनाशी युद्ध की खिंची हुई तलवारें यदि म्यान में वापस लौट सकती हों तो समझदारी को अपनी जानकारी में एक बात और भी सम्मिलित करनी चाहिए कि देशों का वर्तमान विभाजन कारणों की दृष्टि से भी और परिणामों की दृष्टि से भी जितना अस्वाभाविक और अहितकर है, उसे बदलना पड़ेगा। यह बदलाव इस दृष्टि से नहीं होगा कि कौन-सा गुट कितना समर्थ है और माँस का कितना बड़ा टुकड़ा उखाड़ ले जाता है । वरन् इस दृष्टि से होगा कि आदमी को आखिर इसी धरती पर रहना है, चैन से रहना है । देर तक रहना है । यदि सचमुच ऐसा ही है तो रोज-रोज की खिच-खिच करने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि एक बार बैठकर शान्त चित्त से विचार कर लिया जाय और जो कुछ भी भला बुरा निश्चित करना हो कर लिया जाय । यहाँ पर यह ध्यान रखने की बात है कि किश्तों में नहीं एक मुश्त फैसला होना है ।

आदमी खण्डित नहीं रहेगा । एक जाति, वर्ग, लिंग की दीवारों में उसे खण्डित नहीं रखा जा सकता। इस प्रकार भूमि के टुकड़े इस दृष्टि से मान्यता प्राप्त नहीं कर सकते कि किस समुदाय ने कितने क्षेत्र पर किस प्रकार कब्जा किया हुआ है । पुरातन की दुहाई देने में अब कोई लाभ नहीं । चिर पुरातन चिर नवीन में परिवर्तित किया जाना है । जब धरती बनी और आदमी उगा था तब देश, जाति की कोई क्षेत्रीय विभाजन रेखा नहीं थी । आदमी अपनी सुविधानुसार कहीं भी आ जा सकता था । जहाँ जीवनोपयोगी साधन मिलते थे वहीं पर रम सकता था। आदमी की आदत समेटने की है, खदेड़ने की नहीं । इसलिए उसने परिवार, मुहल्ले, गाँव बसाना आरम्भ किया । अब क्या ऐसी आफत आ गयी जो आपस में मिल-जुलकर नहीं रहा जा सकता, मिल-बाँटकर नहीं खाया जा सकता । जो अधिक समेटने की कोशिश करेगा वह ईर्ष्या का भाजन बनेगा और अधिक घाटे में रहेगा । जिसके पास अधिक है वह ईश्वर का अधिक प्यारा है, अधिक पुण्यात्मा या अधिक भाग्यवान है, यह कथन, प्रतिपादन अब अमान्य ठहरा दिये गये हैं ।

बात कठिन है । संघर्ष का रुकना भी कठिन है । जिसे इस कठिनाई के सरल हो जाने पर विश्वास हो, उसे उसी मान्यता में एक कड़ी और भी जोड़नी होगी कि संसार का नया नक्शा और नया विधि-विधान बनेगा । यह पुरातन कलेवर तो बहुत पुराना हो गया है। उसकी चिन्दियाँ और धज्जियाँ उड़ गयी हैं । उसे सीं सिवाकर काम नहीं चल सकता । यह बहुत छोटी दुनिया का है । अब वह तीन वर्ष की नहीं रही, तेईस वर्ष की हो गयी है । इसलिये समूचे आच्छादन को नये सिरे से बदलना पड़ेगा । **शासनाध्यक्षों को नये ढंग से सोचने के लिए हम विवश करेंगे कि वे लड़ाई की बात न सोचें** । बढ़े हुये कदम वापस लौटायें । खुली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तलवारें वापस म्यान में करें । इसके साथ ही मनीषियों को यह मानने के लिए विवश करेंगे कि दुनिया के वर्तमान गठन को अनुपयुक्त घोषित करें और हर किसी को बतायें कि चिर पुरातन ने दम तोड़ दिया और उसके स्थान पर नित नवीन को अब परिस्थितियों के अनुरूप नूतन कलेवर धारण करना पड़ रहा है । एक दुनिया—एक राष्ट्र की मान्यता अब सिद्धान्त क्षेत्र तक सीमित न रहेगी । उसके अनुरूप तानाबाना बुना जाएगा और वह बनेगा जिसे एक विश्व, एक भाषा, एक धर्म, एक संस्कृति कहा जा सके । जाति, लिंग वर्ण और धन के आधार पर बरती जाने वाली विषमता का अन्त समय अब निकट आ गया । इसके लिए जो कुछ करना आवश्यक है, वह सूझेगा भी और विचारशील लोगों के द्वारा पराक्रमपूर्वक किया भी जायगा । इस हेतु विश्व चिन्तन में ऐसी उथल-पुथल होगी, जिसे उल्टे को उलट कर सीधा करना कहा जा सके ।

तीन महत्त्वपूर्ण मोर्चे, जिन पर हमें कार्य करना है

राम-रावण युद्ध प्रायः दो महीने चला था । इसके बाद उन रीछ, वानरों का क्या हुआ, जो दल-बल समेत ऋष्यमूक क्षेत्र से समेट बटोर कर लाये गये थे । नल-नील ने एक पुल बनाने के बाद पेन्शन ले ली थी क्या ? भरत लक्ष्मण चँवर ही डुलाते रहते थे क्या ? नहीं । वे सब सृजनात्मक कार्यों में व्यस्त हुए थे और सतयुग की वापसी की योजनाबद्ध सरंजाम जुटाते रहे थे । कृष्ण कालीन गोप गोवर्धन उठाने के उपरान्त छुट्टी पर नहीं चले गये थे । महाभारत भी प्रायः दो महीने में ही समाप्त हो गया था। इसके बाद उन सब लोगों ने क्या किया ? इसका उत्तर भी यही है कि परीक्षत के तत्वावधान में सुव्यवस्थाओं की स्थापना के विशालकाय प्रयत्न हुए थे। यही रीछ—वानर करते रहते थे ।

बुद्ध की परिव्राजक दीक्षा और संघारामों के निर्माण का जो वर्णन मिलता है, वह सब मिलाकर बीस-तीस वर्षों का है । इसके उपरान्त वह लाखों की बौद्ध मण्डली विसर्जित तो नहीं हो गई थी । जेल से छूटने के उपरान्त भी सत्याग्रही सर्वोदय आदि के रचानात्मक कामों में लगे रहे हैं । इतिहासकारों की कुछ शैली ही ऐसी है कि विवाह की धूमधाम अगवानी भर का उल्लेख करते हैं । उसके उपरान्त दोनों परिवारों में क्या हलचल रही, इसका वर्णन करने में उन्हें रुचि नहीं होती । इतने पर भी यह नहीं समझा जाना चाहिए कि आरम्भिक मारधाड़ प्रधान घटनाक्रम ही सब कुछ होता है । महत्त्वपूर्ण तो वह रहता है जो सृजन की दृष्टि से किया जाता और लम्बे समय तक चलता है ।

बीज एक दिन में बो दिया जाता है । मुहूर्त उसी का निकालते हैं पर फसल आने तक जो लम्बी व्यवस्था बनानी पड़ती है, उसकी चर्चा तो लोग भूल ही जाते हैं । पर इससे क्या ? वर्णन उल्लेख वाले अपनी बात आप जानें, तथ्य तो जहाँ के तहाँ रहेंगे । आपरेशन एक मिनट का होता है पर मरहम पट्टी तो घाव भरने के लिए महीनों करनी पड़ती है।

बात सूक्ष्मीकरण के सन्दर्भ में चल रही थी । उसका एक पक्ष ही हमारे जिम्मे हैं । गाड़ी जहाँ दल-दल में फँस गई है उसे निकाल देने और सड़क पर खड़ी कर देने जितनी ही क्षमता और अवधि अपने पास है । पर यह नहीं समझना चाहिए कि इसके बाद कुछ करने को शेष ही नहीं रहेगा । जो करना होगा, वह इतना ही बड़ा होगा जो पन्द्रह मिनट के आपरेशन के उपरान्त रोगी को अच्छा करने के लिए महीनों करना पड़ता है। बहुमुखी सृजन उससे कठिन है जितना कि इस बिगाड़ को उत्पन्न करने में करना पड़ा है । लोगों ने व्यक्ति को भटकाने और समाज को गिराने वाले अनेकानेक खर्चीले और श्रमसाध्य प्रयत्न किये हैं और मुद्दतों में दुर्व्यसन पनपाने वाले लोगों के स्वभाव के अंग बनाये हैं । अब उन्हें छुड़ाना ही नहीं उनके स्थान पर नई व्यवस्था बनानी और नई सभ्यता खड़ी भी करनी जो है ?

हमारी दो प्रकार की कार्य पद्धति हैं । एक को ढाल, दूसरी को तलवार कहना चाहिए । एक से बचाव करना है और दूसरों को खदेड़ना है । इन दिनों खदेड़ने वाला काम प्रत्यक्षतः बड़ा दीखता है क्योंकि उसने जीवन—मरण जैसी समस्या उत्पन्न कर दी है । विनाश अपनी चरम सीमा पर है । उसे अभी और कुछ समय खेल खेलने दिया जाय तो फिर लाखों वर्षों की संचित सभ्यता और प्रकृति का कहीं अता-पता भी न चलेगा । धरातल की दुर्गति श्मशान जैसी होगी और यहाँ कंकाल बिखरे तथा भूत नाचते दृष्टिगोचर होंगे । इस विनाश विभीषिका के उत्पादन केन्द्रों पर समय रहते गोलाबारी करनी है ताकि महाप्रलय का अवसर प्राप्त करने से पूर्व ही वे अपने हाथ पैर तुड़ा बैठें और वह न कर सकें जो करने की डींग हाँकने और आतंक मचाते हैं । यह एक काम हुआ । यह हमारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने जिम्मे है । सूक्ष्मीकरण के उपरान्त हमें विश्वास है कि दधीचि वाला इन्द्रवज्र बन सकेगा जो वृत्तासुर का अहम् चूर्ण कर सके । हमें विश्वास है कि जिस शान्ति और प्रगति की प्यास से धरातल जल रहा है उसे शीतलता प्रदान करने योग्य गंगावतरण हो सकेगा। इसमें किसी भगीरथ का तप काम आ सकेगा।

दूसरा पक्ष नर्सरी उगाने जैसा है । अगले दिनों इसी धरती को स्वर्गोपम बनाना है । मानवी गरिमा की टूटी हुई कड़ियों को फिर से जोड़ना है । जो गँवा चुके उसे फिर से प्राप्त करना है । इसलिए अपनी इसी भूमि पर नन्दन वन कल्पवृक्ष उद्यान उगाने की आवश्यकता पड़ेगी । इसकी तैयारी भी साथ-साथ चालू रहनी चाहिए । गोला बारूद की फैक्टरी भी पूरी तत्परता से आवश्यक सामान उत्पादन करने में निरत रहे किन्तु दूसरी ओर विशालकाय कृषि फार्म में ऐसी नर्सरी भी बोई-उगाई जाती रहे, ताकि समय पर खोया हुआ ऊँट घड़े में न ढूँढ़ना पड़े ।

परशुराम परम्परा में ऐसा ही हुआ था । उन्होंने एक बार आततायियों के सिर काटकर समस्त धरती को दुश्चिन्तकों से मुक्ति दिलाई थी । ब्रेन वाशिंग का, विचार क्रान्ति का उद्देश्य पूरा किया था । इसके तुरन्त बाद उन्होंने फरसा गंगा सागर के समुद्र में फेंक दिया और नये सिरे से नया अस्त्र, नया फावड़ा उठाया । इस आधार पर वे फलदार उद्यान बोते लगाते चले गये और जो स्तब्धता आई थी उसे नव सृजन के नये उल्लास से भर दिया । उन्होंने सभी दिशाएँ हरियाली से भर दीं । उनका दुहरा—परस्पर विरोधी अभियान देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गये । युद्ध में शौर्य, पराक्रम और साधनों की आवश्यकता पड़ती है । पर सृजन में तो इससे हजारों गुनी सूझ-बूझ, तत्परता और साधन सामग्री चाहिए । इसलिए नाम भले ही सेनापतियों का मोटी पंक्तियों में छपता रहा हो, पर वस्तुतः श्रेयाधिकारी वे इन्जीनियर ही बनते हैं जिन्होंने निर्माण की विशालकाय योजनाएँ बनाईं और प्राण-पण से संलग्न होकर पूरी कर दिखाईं ।

अस्पताल में भी मेज पर छुरी कैंची भी सजाई जाती हैं पर ठीक उसकी बगल में टाँके लगाने की सुई, मरहम, गॉज, रुई आदि भी तैयार रखी जाती हैं । अन्यथा केवल फाड़-चीर न केवल अधूरी रहेगी वरन् बिना क्षति पूर्ति के नये किस्म के संकट भी उत्पन्न करेगी ।

हमें दोनों ही प्रबन्ध करने पड़ रहे हैं। देवशक्तियों के साथ सम्बन्ध साध कर वह सरंजाम जुटाना पड़ रहा है जिससे कि आतंक की छाती पर ऐसा घूँसा जमाया जा सके कि उसे पीछे ही हटते बने। इसके लिए हमसे बड़ों की, समर्थों की सहायता अपेक्षित हो रही है सो वह जुटाई जा रही है। जुट रही है और विश्वास है कि जितनी कम है, वह पूरी होकर रहेगी। अगले दिनों महाविनाश की घोषणा हर क्षेत्र से हो रही है। परिस्थितियों को देखने वाले एक ही बात कहते हैं कि महाविनाश अब आया—तब आया।

इतने पर भी हम अकेले का यह कथन अन्य सभी के प्रतिकूल है कि यह दुनिया न केवल जियेगी वरन् और भी अच्छी बनेगी। जिन्हें रुचि हो वे इस भविष्य वाणी को नोट कर लें। युद्ध जहाँ-तहाँ क्षेत्रीय स्तर के ही होते रहेंगे। कोई ऐसी विपत्ति खड़ी न होगी जिससे समूचे संसार भर के मनुष्य समुदाय का भविष्य. ही संकट में घिर जाय।

इसके अतिरिक्त दूसरा पक्ष है—सृजन का । उसके लिए ट्यूबवैल खोदना, जेनरेटर बिठाना—नर्सरी उगाना है। बीज गोदाम जमा करना है । ट्रेक्टर खरीदने हैं और वह सरंजाम जुटाने हैं जो लहलहाती फसल उगाने में आवश्यक होते हैं। यह साधन क्या हो सकते हैं ? कहाँ हो सकते हैं ? इसका उत्तर एक ही है कि अन्त तक की हमारी संचित सम्पदा इस प्रयोजन की पूर्ति में अच्छी खासी सहायता देगी। संचित सम्पदा से तात्पर्य है—संजोया हुआ गायत्री परिवार। इसमें से अधिकांश छोटे, हल्के दीखते हैं। उनकी योग्यता एवं समर्थता हल्की लगती है, तो भी यह विश्वास किया जाना चाहिए कि यह कलियाँ अगले ही दिनों खिलकर फूल बनेंगी। यह अंकुर हरे-भरे पौधे बनकर समूचे कृषि क्षेत्र को लह-लहायेंगे। यह अभी के छोटे बछड़े कल परसों हल चलायेंगे और रथ खींच दिखायेंगे। बच्चे सभी के अनगढ़ होते हैं । उन्हें शऊर कहाँ होता है। फिर भी वे देखने में कितने सुन्दर लगते हैं। उनकी अनगढ़ हरकतें भी सुहाती हैं। उनके अधरों पर भविष्य चमकता है। ऐसा ही कुछ प्रज्ञा परिवार के सम्बन्ध में कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। उसमें हनुमान, अंगद निश्चय ही उँगलियों पर गिनने जितने हैं, पर कुरेदकर देखा जाय तो जटायु और केवट, शबरी और गिलहरी की भक्ति भावना में यह समूचा समुदाय भरा पड़ा है। छोटे होने पर भी वे कहते हैं कि हमसे आशा रखी जा सकती है।

हमारा ध्यान इन दिनों तीन ओर है। एक अपनी ओर जिसे इन्हीं दिनों अधिक दबोचा और अधिक ऊंचे स्तर का सूक्ष्मीकरण किया जाना है। इसके लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो कठिन प्रयास करने हैं, उनमें उत्तीर्ण होना है, अन्यथा चूकी गोली निशाना न बेध सकेगी और व्यर्थ ही उपहास होगा।

दूसरा ध्यान विश्व समस्याओं को समझना—विश्व की मूर्धन्य दिव्य सत्ताओं का सहकार एकत्रित करना और उन केन्द्रों पर गोलाबारी करना है जहाँ महाप्रलय के सरंजाम जमा हो रहे हैं। यह समूची प्रक्रिया सूक्ष्म जगत की है। हम अपना ध्वज लेकर कहीं तोप बन्दूक चलाने नहीं जा रहे हैं।

तीसरा प्रयास है उन प्रज्ञा परिजनों के प्रति जो प्राणवान हैं। उन्हें अपने हट जाने के कारण निराश न होने देना, बिखर जाने की स्थिति न आने देना और नर्सरी के पौधों को अपने क्रम से इतना बढ़ने देना कि उन्हें समय आने पर आरोपित किया जा सके और अभीष्ट उद्यान का सुरम्य दृश्य बिना समय गँवाये देखा जा सके।

उपर्युक्त तीनों मोर्चों में से एक भी कम महत्व का नहीं है। इनमें से किसी एक के सहारे अभीष्ट लक्ष्य तक नहीं पहुँचा जा सकता। साथ ही यह भी निश्चित है कि किसी एक को भी कम महत्त्व का समझकर छोड़ा नहीं जा सकता। तीनों ही प्रयोजनों के लिए जो बन पड़ रहा है उसे समग्र तत्परता के साथ सम्पन्न कर रहे हैं। ऐसी दशा में भेंट मिलन का पुराना लोकाचार न निभ पा रहा हो, दर्शन स्पर्श की गतिविधियों को रोककर एकाकी रहा जा रहा हो, तो अप्रिय लगने या अहंकारी स्वार्थी जैसा प्रतीत होने पर भी उसे क्षम्य समझने का अनुरोध करना पड़ रहा है। हमें अपने परिजनों की प्रज्ञा पर पूरा विश्वास है कि वे इस प्रयोजन की उच्चस्तरीय फल श्रुतियों को दृष्टिगत रख हमारी साधना प्रक्रिया में सहभागी ही बनेंगे।

एकाकी तप साधना व लेखनी के योगाभ्यास के इन क्षणों में हमें योगीराज अरविन्द के कुछ कथन सहसा स्मरण हो आते हैं जो उन्होंने परतन्त्र भारत की उन विषम परिस्थितियों में अपने एकान्तवास में व्यक्त किये थे। उन्हें शब्दशः यहाँ उद्धरित कर रहे हैं।

''इतना महान और विराट् भारत जिसे शक्तिशाली होना चाहिए था, युगान्तरकारी भूमिका निभानी चाहिए थी, आज दुःखी है। क्या है दुःख इसका ? निश्चय ही कोई भारी त्रुटि है, जीवन्त चीज का अभाव है । हमारे पास सब कुछ है, पर हम शक्तिहीन हैं, ऊर्जा रहित हैं। हमने शक्ति की उपासना छोड़ दी, शक्ति ने हमें छोड़ दिया। माँ न अब हमारे दिल में है, न मस्तिष्क में हैं, न भुजाओं में है। इस विशाल राष्ट्र के पुनर्जीवन के कितने प्रयत्न किए गए, जाने कितने आन्दोलन हुए—धर्म, समाज, राजनीति सभी क्षेत्रों में, लेकिन सदैव दुर्भाग्य साथ रहा। हमारी शुरुआतें महान होती हैं। पर न तो उनसे नतीजे निकलते हैं, न कोई तात्कालिक फल ही हाथ लगता है। हमारे अन्दर ज्ञान की कमी नहीं । ज्ञान के उच्चतम व्यक्तित्व हमारे बीच से ही पैदा हुए हैं। लेकिन यह ज्ञान मुरदा है, एक विष है जो हमें धीरे-धीरे मार रहा है । शक्ति के अभाव में, आत्मबल के बिना यह ज्ञान अधूरा है । भक्ति भावना—उत्साह प्रशंसनीय हैं । लेकिन भक्ति रूपी लपट को भी शक्ति का ईंधन चाहिए । जब स्वस्थ स्वभाव ज्ञान से प्रदीप्त, कर्म से अनुशासित और विराट् शक्ति से जुड़ता है तभी वह ईश्वरीय कृपा का अधिकारी बनता है । यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो पायेंगे कि हमें सबसे पहले शक्ति चाहिए—वह है आत्मबल, आत्मिकी सर्वोच्च शक्ति । इसके बिना हम पंगु हैं, भारतवासी पंगु हैं; सारा विश्व पंगु है । भारत को उस शक्ति को पुनः पाना ही होगा, पुनर्जन्म लेना ही होगा क्योंकि सारे विश्व के उज्ज्वल भविष्य के लिये इसकी माँग है। मानवता के समस्त समूहों में यह केवल भारत के लिये निर्दिष्ट है कि वह सर्वोच्च नियति को प्राप्त करे जो सारी मानव जाति के भविष्य के लिए अत्यावश्यक है। उस शक्ति की उपासना के लिए सदैव महामानव अवतरित हुए हैं । उसी कड़ी में यदि मुझे एकाकी पुरुषार्थ हेतु नियोजित होना पड़े तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा ।''

वस्तुतः योगीराज अरविन्द द्वारा सन् १९०५ के आस-पास लिखे इस वक्तव्य से स्पष्ट हो जाता है कि उनके मन में भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति कितनी उत्कट उमंग थी । उसी अन्तःप्रेरणा ने, परोक्ष जगत से आए निर्देशों ने उन्हें क्रान्तिकारी का पथ छोड़ तप साधना में निरत हो वातावरण को गरम करने हेतु विवश किया । यदि हमारी प्रस्तुत सूक्ष्मीकरण दिनचर्या को इसी साधना उपक्रम के समकक्ष समझा जाए तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी । परिजन इसे उतनी ही गम्भीरता से लेंगे भी ।

आत्म सत्ता में निहित विभूतियों का रहस्योद्घाटन

अध्यात्म शास्त्र के प्रवक्ता समय-समय पर यही उद्बोधन देते रहे हैं—अपने को जानो, उसे पहचानो,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऊँचा उठाओ—''आत्मानं विद्धि'', ''आत्मावारे ज्ञातव्य'' । इन संकेतों से तात्पर्य यही है कि मनुष्य को अपने काय-कलेवर के उस अविज्ञात पक्ष की बहुत ही कम जानकारी है जिसके माध्यम से वह आत्मिक प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकता था । जब भी यह बोध होता है, उसे सूक्ष्म की परतों का पता चलता है वह जीवन्मुक्त स्थिति को प्राप्त हो जाता है । सिद्धार्थ का उदाहरण सामने है जो मनन साधना द्वारा बोध होते ही बुद्ध बन गए । लेकिन समझ में यह नहीं आता कि अपने बारे में ऐसा क्या है, जो मनुष्य नहीं जानता पूछने पर तुरन्त नाम, गोत्र, वंश व्यक्ति बता देता है । काया अलग है, व उसका प्राण आत्मा अलग, जो उसकी नियामक सत्ता है, यह भी अधिसंख्य व्यक्ति जानते हैं । इस प्रसंग का ऊहापोह करने के लिए लोग जाने कितने शास्त्र पढ़ते, पुराण कथाओं का श्रवण करते देखे जाते हैं, लेकिन इससे क्या आत्मबोध हो पाता है ?

वस्तुतः मनुष्य जन्म से ही अज्ञानी पैदा होता है । क्रमिक प्रगति के माध्यम से वह उतना ही सीख पाता है, जितना कि जिन्दगी की गाड़ी चलाने, परिवार का पेट भरने एवं समाज सम्पर्क में काम आता है । इस व्यावहारिक ज्ञान को वातावरण से अर्जित हुआ समझा जा सकता है । सुसंस्कारों, पूर्व जन्म के कर्मों के फलस्वरूप कुछ व्यक्ति मात्र इतने तक ही सीमित नहीं रहते, इससे ऊँचा उठते व चेतना के क्षेत्र में ऊहापोह करते देखे जाते हैं । उपयुक्त मार्गदर्शन मिलने पर वे आत्म वैभव की सम्पदा सम्बन्धी अपने अज्ञान के अन्धकार को दूर कर ज्ञान की शलाका से नयी ज्योति जलाते हैं । ऐसे ही व्यक्ति नर-पशु की योनि से निकलकर, भव-बन्धनों से छूटकर ब्राह्मीचेतना के आनन्द का रसास्वादन करते हैं । जीवन्मुक्त इन्हीं को कहा जाता है ।

अपने आप के बारे में न जान सकने की यह विडम्बना बहुसंख्य व्यक्तियों के साथ घटती देखी जा सकती है । प्रत्यक्ष को ही सब कुछ मान बैठने वाले ये जड़मति जीव अन्य प्राणियों से भिन्न नहीं होते । चार अन्धों की वह कथा प्रख्यात है—जिसमें अपने दायरे की जानकारी को ही सब कुछ मानकर हरेक ने हाथी को अपने-अपने चिन्तन के अनुरूप वैसा ही माना था। हर मनुष्य के अन्दर फेंफड़ों का विस्तृत क्षेत्र होता है। गहरी साँस ले सकने के अभाव में वे उसके थोड़े से ही अंश से गुजारा कर तो लेते हैं लेकिन उथली साँस के परिणामस्वरूप क्षय रोग, दमा आदि के शिकार भी होते देखे जाते हैं । मस्तिष्क की अपरिमित सामर्थ्य सम्पदा का मात्र तेरह प्रतिशत ही सामान्य से कुछ अधिक असामान्य तक स्तर वाले व्यक्ति सदुपयोग कर पाते हैं । लेकिन इसका यह अर्थ तो नहीं कि शेष का अस्तित्व नहीं ।

यहाँ प्रसंग मनुष्य की आत्म विस्मृति सम्बन्धी उस विडम्बना का चल रहा है जिसके चलते वह स्वयं की सूक्ष्म परतों से, उस वैभव साम्राज्य से अनभिज्ञ बना रहता है जो जगाये एवं विकसित किए जाने पर उसे असामान्य बना सकती है । यह इस कारण है कि स्थूल को महत्व देने वाले नजरिये को बदलने का कभी प्रयास ही नहीं किया गया । यही मानकर चला गया कि जो प्रत्यक्ष है सो सामने है । जो नहीं दिखाई पड़ता, उसका अस्तित्व ही नहीं है । जब तक आत्म-चेतना निष्क्रिय पड़ी है—उच्चस्तरीय सक्रियता में विकसित नहीं हो पा रही, आत्मसत्ता रूपी अन्धेरी कोठरी में विषाक्त तत्व पलते रहेंगे एवं व्यक्तित्व पतन पराभव के गर्त में गिरता चला जाएगा ।

एनाटामी के छात्रों को शरीर की चीड़फाड़ द्वारा अन्दर अवस्थित अंगों की जानकारी भर करायी जाती है । चेतना की एनाटामी भला वे कैसे समझ पाएँ। काया के अन्तराल में विराजी पँचकोशों, षट्चक्रों उपत्यिकाओं की वैभव सम्पदा को ढूँढ़ पाने के अभाव में वे कैसे मानें कि अमुक स्थान पर अमुक का अस्तित्व है । जहाँ इनकी सीमा मर्यादा है, वहीं फिजियालॉजी के जानकारों की भी अपनी एक परिधि है । रक्त स्राव जो प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं, शारीरिक अवयवों का संचालन जिस प्रकार होता रहता है, उसे ही वे समग्र मान बैठते हैं । शरीर में बहती विद्युतधारा, जैवचुम्बकत्व इत्यादि को मापने वाले उपकरण भी एक स्थूल सीमा रेखा तक जानकारी दे पाते हैं । इससे परे उनके यन्त्र भी असफल हैं एवं जानकारी भी अपूर्ण है ।

अध्यात्मवेत्ता स्वयं को काया के सीमा बन्धन में बँधा नहीं मानते । वे परोक्ष जगत के अस्तित्व को स्वीकारते हैं एवं व्यष्टि तथा समष्टि में संव्याप्त इस ब्राह्मी चेतना को 'इकालॉजी' के रूप में—परम सत्ता के साम्राज्य के रूप में पहचानते हैं । वे आत्म सत्ता रूपी प्रयोगशाला में योग साधनाओं का ध्यान धारणा आदि के माध्यम से खोजबीन कर अन्तः की परतों तथा प्रकृति के सूक्ष्म अन्तराल के मध्य आदान-प्रदान का मार्ग खोज निकालते हैं । शास्त्र निष्कर्षों और आप्त वचनों में इसी रहस्य रोमांच का उद्घाटन किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गया है जो उतना ही सत्य है जितना कि प्रत्यक्ष दृश्यमान हमारा ब्रह्माण्ड व उसका सौर मण्डल ।

स्थूल शरीर निर्वाह प्रयोजन में लगने के कारण जल्दी थकता है लेकिन सूक्ष्म शरीर भार रहित है । वह प्रकाश की गति से भी तीव्र वेग से क्वाण्य-तरंगों के समुच्चय सूक्ष्म जगत में परिभ्रमण करता रह सकता है एवं अनेकों ऐसे प्रयोजन सिद्ध करता है जो प्रत्यक्ष रूप से स्थूल शरीर से सम्भव नहीं हो पाते । यही कारण है कि सभी आयामों का परिधि से परे विभिन्न लोक-लोकान्तरों में भ्रमण करती सूक्ष्म शरीरधारी जीवात्माएँ ऐसे कई प्रयोजन पूरी करती दिखाई देती हैं जिनका कारण ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता । बहुधा उसे संयोग अथवा दैवी घटनाक्रम मानकर आत्म-सन्तोष कर लिया जाता है । आत्म सत्ता के सूक्ष्मीकरण की यह विधि स्वयं में अद्‌भुत है एवं ऋषि, देव मानव, महामानव स्तर के प्रज्ञावानों द्वारा कई बार जीवित रहते हुए भी ऐसे असम्भव पुरुषार्थ करते देखा जाता है। जीवन्मुक्त स्थिति में सशरीर इस धरित्री पर रहने वाले इन महापुरुषों की कोई आयु मर्यादा नहीं होती, तथापि अपवाद रूप में कुछ देवपुरुष देह त्यागकर भी सूक्ष्म रूप में वही कार्य करते रहते हैं, जो मानवता के कल्याण हेतु वे जीवित स्थिति में करते थे ।

यह चर्चा हमारे सूक्ष्मीकरण के सन्दर्भ में प्रासंगिक होने के नाते की जा रही है । प्रत्यक्ष रूप में—इस स्थूल काया से जो कार्य हमसे हो सका, उसका मूल्यांकन अभी तो नहीं बाद में हो सकेगा । लेकिन सूक्ष्मीकृत रूप में क्या कुछ होने जा रहा है, क्या किया जाना है, इसकी चर्चा हमने प्रारम्भिक पृष्ठों पर की है । यह एक अकाट्य तथ्य है कि आत्मिकी के माध्यम से ही वे सारे प्रयोजन पूरे हो सकेंगे जिनका आज की युग सन्धि की विषम वेला में आस्था संकट के निरस्त्रीकरण हेतु आवश्यकता है । हमने अपने चौबीस वर्ष की उच्चस्तरीय गायत्री साधना एवं दैनन्दिन उपासना—आराधना के क्रम से जो प्रत्यक्ष भूमिका बनायी है, उसके कई अध्याय पूरे हो चुके हैं। अब उपसंहार भर शेष है । यही सबसे बड़ा पुरुषार्थ होगा जो वर्तमान को आमूल-चूल बदल डालेगा । आत्मसत्ता के सूक्ष्मीकृत रूप में प्रकटीकरण की क्या चमत्कारी परिणतियाँ हो सकती हैं, इसे अगले दिनों स्पष्टतः देखा जा सकेगा ।

प्रश्न उठ सकता है कि प्रत्यक्ष स्थिति में ही इतने असम्भव कार्यों को जब किया जा सका तो परोक्ष भूमिका में उतरने की आवश्यकता क्यों आ पड़ी । इसका एक ही उत्तर है कि समस्याओं की विषमता और विराट् रूप को देखते हुए उसे दैवी चेतना, सूक्ष्म शरीर में विद्यमान अनेकों देवात्माओं के माध्यम से सम्पन्न कराना चाहती है । जैसी व्यवस्था स्थूल रूप में समाज तन्त्र की है वैसी ही कुछ परोक्ष जगत की भी है जहाँ सतत् अदृश्य सहायक पितरगण सूक्ष्म रूपधारी आत्माएँ दिक्काल के परे परिभ्रमण करती रहती हैं । वे अपने क्रिया-कलापों से समष्टि जगत को प्रभावित करती हैं, भले ही दृश्य रूप में उन्हें न देखा जा सके । सूक्ष्मीकरण साधना के उपरान्त साधक उसी श्रेणी में आ जुड़ता है और पृथ्वी पर शरीर रूप में रहते हुए भी उनसे प्रत्यक्ष सम्बन्ध बनाये रखता है ।

सूक्ष्म शरीर की जागृति वस्तुतः प्रत्यक्ष व परोक्ष जगत के बीच आदान-प्रदान की प्रक्रिया सम्पन्न कर दिखाती है एवं आत्मसत्ता के उन रहस्यों पर से पर्दा हटाती है जिनकी जानकारी मनुष्य को नहीं है ।

सूक्ष्म शरीर के जागरण हेतु साधक को योगाभ्यास में कई प्रकार की ध्यान धारणाओं का समावेश करना होता है । षट्चक्र, पंचकोश, तीन ग्रन्थियों, इड़ा-पिंगला-सुषुम्ना रूपी नाड़ियाँ किस स्तर की हैं व इस सारे अविज्ञात वैभव के जागृत होने पर साधक किस प्रकार अगणित विभूतियों का स्वामी बन जाता है, इसे विस्तार से कुण्डलिनी महाशक्ति एवं उसकी संसिद्धि विषय के अन्तर्गत विस्तार से हम समझाते रहे हैं । अतीन्द्रिय सामर्थ्य जिनका आज सारे विश्व में खूब प्रचार किया जा रहा है, उस जागृति की प्रक्रिया की एक छोटी-सी झाँकी भर है । इससे इतर, उच्चस्तरीय भी कई ऐसी श्रेणियाँ हैं जिनमें सिद्धियों की नहीं आत्मिक विभूतियों की प्रधानता होती है । मनश्चेतना का सुनियोजन कर ऐसे सिद्ध साधक कितने ही ऐसे कार्य कर डालते हैं जो प्रत्यक्ष रूप में शरीर द्वारा सम्भव नहीं जान पड़ते । यह सारी चमत्कृतियाँ सूक्ष्मीकरण—जन्य हैं ।

कारण शरीर चेतना का वह सूक्ष्म आयाम है जहाँ देवस्तरीय आत्माएँ कार्यरत देखी जा सकती हैं । सूक्ष्मीकरण प्रक्रिया की चरम स्थिति में जब मानव की व्यष्टि चेतना एवं समष्टिगत देव चेतना में समन्वय स्थापित होता है तब कारण शरीर की जागृति मानी जाती है । इस श्रेणी तक पहुँचे महापुरुष की अपनी कोई वैयक्तिक इच्छा नहीं रह जाती । अन्तःकरण की सूक्ष्म परतों से बना कारण शरीर आध्यात्मिक फिजियालॉजी की दृष्टि से धरातल से उठी चेतना की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समष्टि चेतना से तादात्म्य स्थापित कर लेने की प्रक्रिया का ही विशिष्ट नामकरण है । इसके जागने से देव शक्तियाँ भीतर से जागती व कार्यरत होती बतायी जाती हैं । जिन पंचदेवों को शरीर में उपस्थित पाँच देवताओं का प्रतिनिधि बताया जाता है, वे पंचकोशों के रूप में इसी काया में विद्यमान हैं । वस्तुतः वे मानवी चेतना के पाँच स्तर हैं जिनमें अन्तिम स्थिति के आने तक उसका देवचेतना से मिलन होता बताया गया है । अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश एवं आनंदमय के नाम से सम्बोधित चेतना के इन पाँच आयामों को अपने नियन्त्रण में कर लेने वाला व्यक्ति देव पुरुषों की श्रेणी में जा बैठता है। पदार्थ विज्ञानी तो तीन आयामों से ही परिचित हैं। आइन्स्टीन ने दिक्काल के रूप में चेतना के चतुर्थ आयाम की कल्पना की थी जिसमें प्रतिपदार्थ, प्रतिकणों का अस्तित्व माना गया है । इस चौथे आयाम से ऊपर भी कोई पांचवाँ आयाम है जिसमें कोई चेतन सत्ता विद्यमान है अथवा भौतिकी की दृष्टि से जिसमें कुछ कणों को पहचाना, पकड़ा जा सकता है, इसकी कोई जानकारी वैज्ञानिक जगत को नहीं । अध्यात्मवेत्ता बताते हैं कि यह अन्तिम आयाम ही चेतन सत्ता का अस्तित्व बताने वाला आयाम है, जहाँ सूक्ष्मीकृत व्यष्टि चेतना संव्याप्त देखी जा सकती है ।

मानवी काया में परोक्ष जगत का सूक्ष्म ढाँचा विधाता ने बड़ी कुशलतापूर्वक पिरो रखा है । यह स्वतन्त्रता भी दे रखी है कि उस सूक्ष्म शरीर को जागृत जीवन्त बनाकर वह बहुमुखी कार्य भी सम्पन्न कर सके । सिद्ध पुरुष यही करते हैं एवं स्थूल से सूक्ष्म तथा सूक्ष्म से कारण शरीर की जागृति हेतु साधना पुरुषार्थ कर आप्त वचनों की प्रामाणिकता भी सिद्ध करते हैं । जो काम नीरोग, सुघड़, स्फूर्तिवान, स्थूल काया कर सकती है, उससे अधिक अनुपात में विचारणा एवं भावना के आयामों द्वारा सूक्ष्म एवं कारण शरीर कर दिखाते हैं ।

सूक्ष्मीकरण की साधना वस्तुतः आत्म जागृति की ही योग साधना है । इससे जहाँ व्यक्ति स्वयं में विभूतियों का स्वामी बनता है, वहाँ परोक्ष से आदान-प्रदान का—अन्यान्य व्यक्तियों, वातावरण एवं समस्त समुदाय को लाभान्वित करने का हित साधन भी सम्भव होता है । हमारी साधना उन्हीं उच्चस्तरीय उद्देश्यों के निमित चल रही है । +

आत्मीय जनों से अनुरोध एवं उन्हें आश्वासन

साधना से उपलब्ध अतिरिक्त सामर्थ्य को विश्व के मूर्धन्य वर्गों को हिलाने, उलटने में लगाने का हमारा मन है । अच्छा होता सुई और धागे को आपस में पिरो देने वाला कोई सूत्र मिल जाता, अन्यथा सर्वथा अपरिचित रहने की स्थिति में तारतम्य बैठने में कठिनाई होगी । मूर्धन्यों में सत्ताधीश, धनाध्यक्ष, वैज्ञानिक और मनीषी वर्ग का उल्लेख है । यह सर्वोच्च स्तर के भी होंगे और सामन्य स्तर के भी । सर्वोच्च स्तर वालों की सूक्ष्मता जहाँ पैनी होती है । वहाँ वे अहंकारी और आग्रही भी कम नहीं होते । इसलिए मात्र उच्च वर्ग तक ही अपने को सीमित न रखकर हम मध्यम वृत्ति के इन चारों को भी अपनी पकड़ में ले रहे हैं ताकि बात नीचे से उठते-उठते ऊपर तक पहुँचने का भी कोई सिलसिला बने ।

दूसरा वर्ग जाग्रत आत्माओं का है इसका उत्पादन सदा से भारत भूमि में अधिक होता रहा है । महामानव, ऋषि, मनीषी, देवता यहाँ जितने जन्मे हैं उतने अन्यत्र कहीं नहीं । यही हमारे लिए समीप भी पड़ता है । अस्तु प्रयत्न करेंगे कि जहाँ कहीं भी पूर्व संचित संस्कारों वाली आत्माएँ दृष्टिगोचर हों उन्हें समय का सन्देश सुनायें, युग-धर्म बताएँ और समझाएँ कि यह समय व्यामोह में कटौती करके किसी प्रकार निर्वाह भर में सन्तोष करने का है । जो हस्तगत है उसे बोया, उगाया और हजार गुना बढ़ाया जाना चाहिए । हम अकेले ही उगे, बढ़े और गलकर समाप्त हो गये तो यह एक दुर्घटना होगी । एक से हजार वाली बात सोची और कही जा रही है तो उसकी प्रत्यक्ष परिणति भी वैसी ही होनी चाहिए । प्रज्ञा परिवार बड़ा है । फिर भारत भूमि की उर्वरता कम नहीं है । इसके अतिरिक्त अपनी योजना विश्वव्यापी है। उसकी परिधि में अकेला भारत ही नहीं समूचा संसार भी आता है । अस्तु, प्रयत्न यह चला है कि विचार-क्रान्ति की प्रक्रिया को परिस्थितियों के अनुरूप व्यापक बनाने के लिए जाग्रत आत्माओं का समुदाय हर क्षेत्र में हर देश में मिले । कार्य पद्धतियाँ क्षेत्रीय वातावरण के अनुरूप बनती रहेंगी पर लक्ष्य एक ही रहेगा- ''ब्रेन वाशिंग'', विचार परिवर्तन, प्रज्ञा अभियान । हम सब तीर की तरह सनसनाते हुए ही लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयत्न करेंगे । जिनमें इस प्रकार की जीवट होगी वे अनुभव करेंगे कि उन्हें कोई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोंचता, कुरेदता झकझोरता, घसीटता और बाधित करता है । यों ऐसे लोग समय की पुकार पर अन्तरात्मा की प्रेरणा से भी जग पड़ते हैं । ब्रह्म मुहूर्त में मुर्गा तक बाँग लगाने के लिए उठ खड़ा होता है तो कोई कारण नहीं कि जिनमें प्राण-चेतना विद्यमान है, वे महाकाल का आमन्त्रण न सुनें और पेट-प्रजनन की आड़ में व्यस्तता और अभावग्रस्तता की ही बहाने-बाजी करते रहें । समय की पुकार और हमारी मनुहार का संयुक्त प्रभाव कुछ भी न पड़े ऐसा हो ही नहीं सकता । विश्वास किया गया है कि इस स्तर का एक शानदार वर्ग उभर कर ऊपर आयेगा और सामने ही कटिबद्ध खड़ा दृष्टिगोचर होगा ।

तीसरा वर्ग प्रज्ञा परिवार का है । इसमें हमारा व्यक्तिगत लगाव है । लम्बे समय से जिस-तिस बहाने, साथ-साथ रहने के कारण घनिष्ठता ऐसी और इतनी बढ़ गई है कि उसका समापन किसी भी प्रकार हो सकना सम्भव नहीं । इसके कई कारण हैं । प्रथम यह कि हमें अनेक जन्मों का स्मरण है । लोगों को नहीं । जिनके साथ पूर्व जन्मों में सघन सम्बन्ध रहे हैं उन्हें संयोगवश या प्रयत्नपूर्वक हमने परिजनों के रूप में एकत्रित कर लिया है और वे जिस-तिस कारण हमारे इर्द-गिर्द जमा हो गये हैं । इन्हें अखण्ड ज्योति अपने आंचल में समेटे बटोर रही है । संगठन के नाम पर चलने वाले रचनात्मक कार्यक्रम भी इस सन्दर्भ में आकर्षण उत्पन्न करते रहे हैं । इसके अतिरिक्त बच्चों और अभिभावकों के बीच जो सहज वात्सल्य भरा आदान-प्रदान रहता है वह भी चलता रहा है । बच्चे सहज स्वभाव अभिभावकों से कुछ चाहते रहते हैं । भले ही उसे मुँह खोलकर माँगें अथवा भावभंगिमा से प्रकट करते रहें । बच्चों की आकांक्षा बढ़ी-चढ़ी होती है । भले ही वह उपयोगी हो या अनुपयोगी, आवश्यक हो या अनावश्यक । दे दिलाकर ही उन्हें चुपाया जाता है । इतनी समझ होती नहीं कि पैसा व्यर्थ जाने और वस्तु किसी काम न आने का तर्क उसके गले उतारा जा सके । बच्चों और अभिभावकों के बीच यह दुलार भरी खींचतान तब तक चलती रहती है जब तक वे परिपक्व बुद्धि के नहीं हो जाते और उपयोगिता-अनुपयोगिता का अन्तर नहीं समझने लगते । हमारे साथ एक रिश्ता परिजनों का यह भी चलता रहा है ।

मान्यता सो मान्यता । आदत सो आदत । प्रत्यक्ष रिश्तेदारी न सही पूर्व संचित सघनता का दबाव सही। एक ऐसा सघन सूत्र हम लोगों के बीच विद्यमान है जो विचार-विनिमय, सम्पर्क-सान्निध्य तक ही सीमित नहीं रहता, कुछ ऐसा भी चाहता है कि अधिक प्रसन्नता का कोई साधन कोई अवसर हाथ लगे । कइयों के सामने कठिनाइयाँ होती हैं । कई भ्रमवश जंजाल में फँसे होते हैं । कइयों को अधिक अच्छी स्थिति चाहिए । कारण कई हो सकते हैं पर देखा यह जाता रहा है कि अधिकांश लोग इच्छा आकाँक्षा लेकर आते हैं । वाणी से या बिना वाणी के व्यक्त करते हैं । साथ ही सोचते हैं कि हमारी बात यथा स्थान पहुँच गई । उसका विश्वास उन्हें तब होता है जब पूरा न सही आधा-अधूरा उपलब्ध भी हो जाता है ।

याचक और दानी का रिश्ता दूसरा है । पर बच्चों और अभिभावकों के बीच यह बात लागू नहीं होती । बछड़ा दूध न पिये तो गाय का बुरा हाल होता है । मात्र गाय ही बछड़े को नहीं देती । बछड़ा भी गाय को कुछ देता है । यदि ऐसा न होता तो कोई अभिभावक बच्चे जनने और उनके लालन-पालन में समय लगाने, पैसा खर्च करने का झंझट मोल न लेते ।

कहने को गायत्री परिवार, प्रज्ञा परिवार आदि नाम रखे गये हैं और उनकी सदस्यता का रजिस्टर तथा समयदान, अंशदान का अनुबन्ध भी है । पर वास्तविकता दूसरी ही है, जिसे हम सब भली-भाँति अनुभव करते हैं । वह है जन्म-जन्मान्तरों से संग्रहीत आत्मीयता । जिसके पीछे जुड़ी हुई अनेकानेक गुदगुदी उत्पन्न करने वाली घटनाएँ हमें स्मरण हैं । परिजन उन्हें स्मरण न रख सके होंगे । फिर वे विश्वास करते हैं कि परस्पर आत्मीयता की कोई ऐसी मजबूत डोरी बँधी है जो कई बार तो हिलाकर रख देती है । एक दूसरे के अधिक निकट आने, परस्पर कुछ अधिक कर गुजरने के लिए आतुर होते हैं । यह कल्पना नहीं वास्तविकता है जिसकी दोनों पक्षों को निरन्तर अथवा समय-समय पर अनुभूति होती रहती है।

यही तीसरा वर्ग है-बालकों का । इनकी सहायता से मिशन का कुछ काम भी चला है पर वह बात गौण है । प्रमुख प्रश्न एक ही है कि इन्हें हँसता-हँसाता खिलता-खिलाता देखने का आनन्द कैसे मिले ? अब तक भेंट, परामर्श, सत्संग, सान्निध्य से भी इस भाव सम्वेदना की तुष्टि होती थी । पर अब तो नियति ने वह सुविधा भी हाथ से छीन ली । अब परस्पर भेंट मिलन का अध्याय समाप्त होता है । इसमें समय की कमी या कोई व्यवस्था सम्बन्धी कठिनाई कारण नहीं है । बात इतनी भर है कि इससे सूक्ष्मीकरण में बाधा पड़ती है । चित्त भटकता है और जिस स्तर का दबाव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तराल पर पड़ना चाहिए वह बिखर जाता है। फलतः उस लक्ष्य की पूर्ति में बाधा पड़ती है जिसके साथ समस्त मनुष्य समुदाय का भाग्य-भविष्य जुड़ा हुआ है । अपनी निज की मुक्ति, सिद्धि या स्वर्ग उत्कर्ष जैसा कारण रहा होता तो उसे आगे कभी के लिए टहलाया जा सकता था । पर समय तो ऐसा विकट है जो एक क्षण की भी छूट नहीं देता । ईमानदार सिपाही की तरह मोर्चा सम्भालने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं । इसलिए सूक्ष्मीकरण के सन्दर्भ में परिजनों को हमें अपनी साधना हेतु एकाकी छोड़ देना चाहिए ।

बच्चों के, प्रज्ञा परिजनों के सम्बन्ध में चलते-चलाते हमारा इतना ही आश्वासन है कि वे यदि अपने भाव सम्वेदना क्षेत्र को थोड़ा और परिष्कृत कर लें तो निकटता अब की अपेक्षा भी अधिक गहरी अनुभव करने लगेंगे । कारण कि हमारा सूक्ष्म शरीर सन् २००० तक और भी अधिक प्रखर होकर जियेगा। जहाँ उसकी आवश्यकता होगी, बिना विलम्ब लगाये पहुँचेगा । इतना ही नहीं, स्नेह-सहयोग, परामर्श-मार्गदर्शन जैसे प्रयोजनों की पूर्ति भी करता रहेगा । कठिनाइयों में सहायता करने और बालकों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने की हमारी प्रकृति में राई-रत्ती भी अन्तर नहीं होने जा रहा है । वह लाभ पहले की अपेक्षा और भी अधिक मिलता रह सकता है ।

हमारे गुरुदेव सूक्ष्म शरीर से हिमालय में रहते हैं। विगत ६१ वर्षों में हमने निरन्तर उनका सान्निध्य अनुभव किया है । यों आँखों से देखने की बात मात्र जीवन भर में तीन बार ही, तीन-तीन दिन के लिए सम्भव हुई है। भाव सान्निध्य में श्रद्धा की उत्कृष्टता रहने से उसकी परिणति एकलव्य के द्रोणाचार्य, मीरा के कृष्ण, रामकृष्ण परमहंस के कालीदर्शन जैसी होती है । हमें भी वे भविष्य में हमारी निकटता अपेक्षाकृत और भी अच्छी तरह अनुभव करते रहेंगे ।

बच्चे बड़ों से कुछ चाहते हैं, सो ठीक है पर बड़े बदले में कुछ न चाहते हों ऐसी बात भी नहीं । नियत स्थान पर मल-मूत्र त्यागने, शिष्टाचार समझने, हँसने-हँसाने, वस्तुएँ न बिखरने, पढ़ने जाने जैसी अपेक्षाएँ वे भी करते हैं । जितना सम्भव है उतना तो उन्हें भी करना चाहिए । हमारी अपेक्षाएँ भी ऐसी ही हैं । गोवर्धन उठाने वाले ने अपने अनगढ़ ग्वाल-बालों के सहारे ही गोवर्धन उठाकर दिखाया था । हनुमान की बात किसी ने नहीं सुनी तो अपने सहचर रीछ-वानरों को ही समेट लाये । नव-निर्माण के कन्धे पर लदे उत्तरदायित्व को वहन करने में हम अकेले समर्थ नहीं हो सकते थे । यह मिल-जुलकर सम्पन्न हो सकने वाला कार्य था । सो समझदारों में से कोई हाथ न लगा तो अपने इसी बाल-परिवार को लेकर जुट पड़े और जो कुछ, जितना कुछ सम्भव हो सका करते रहे। अब तक की प्रगति का यही सार संक्षेप है।

बात अगले दिनों की आती है । हमें अपने बच्चों के लिए क्या करना चाहिए इस कर्त्तव्य का उत्तरदायित्व का सदा ध्यान रहा है और जब तक चेतना का अस्तित्व है उसका स्मरण बना भी रहेगा । इस सम्बन्ध में स्मरण दिलाने योग्य बात एक ही है कि हमारी आकांक्षा और आवश्यकता को भुला न दिया जाय । समय विकट है । इसमें प्रत्येक परिजन का समयदान और अंशदान हमें चाहिए । जितना मिलता रहा है उससे भी अधिक मात्रा में; क्योंकि जो करना है उसके लिए तत्काल कदम उठाने हैं । सो भी बड़े कार्मों के लिए बड़े-बड़े लोग चाहिए, बड़े साधन भी । हमारे परिवार का हर व्यक्ति बड़ा है । छोटेपन का तो उसने मुखौटा भर पहन रखा है । उतारने भर की देर है कि उसका असली चेहरा दृष्टिगोचर होगा । भेड़ों के समूह में पले सिंह-शावक की कथा अपने प्रज्ञा परिजनों में से प्रत्येक के ऊपर लागू होती है या हो सकती है ।

हमें हमारे मार्गदर्शक ने एक पल में क्षुद्रता का लबादा झटक कर महानता का परिधान पहना दिया था । इस काया कल्प में मात्र इतना ही हुआ था कि लोभ, मोह की कीचड़ से उबरना पड़ा । जिस-तिस के परामर्शों आग्रहों की उपेक्षा करनी पड़ी और आत्मा-परमात्मा के संयुक्त निर्णय को शिरोधार्य करने का साहस जुटाना पड़ा । एकाकी चलने का आत्मविश्वास जागा और आदर्शों को भगवान मानकर कदम बढ़े । इसके बाद एकाकी नहीं रहना पड़ा और न साधनहीन उपेक्षित स्थिति का कभी आभास हुआ । सत्य का अवलम्बन अपनाने भर की देर थी कि असत्य का कुहासा अनायास ही हटता चला गया ।

हमारा परिजनों से यही अनुरोध है कि हमारी जीवनचर्या को घटना-क्रम की दृष्टि से नहीं वरन् इस पर्यवेक्षण की दृष्टि से पढ़ा जाना चाहिए कि उसमें दैवी अनुग्रह के अवतरण होने से ''साधना से सिद्धि'' वाला प्रसंग जुड़ा या नहीं । इसी प्रकार यह भी दृष्टव्य है कि दूसरों के अवलम्बन योग्य आध्यात्मिकता का प्रस्तुतीकरण करते हुए हमारे कदम ऋषि परम्परा अपनाने के लिए बढ़े या नहीं ? जिसे जितनी यथार्थता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मिले वह उतनी ही मात्रा में यह अनुमान लगाये कि अध्यात्म विज्ञान का वास्तविक स्वरूप यही है । आन्तरिक पवित्रता और बहिरंग की प्रखरता में जो जितना आदर्शवादी समन्वय कर सकेगा वह उन विभूतियों से लाभान्वित होगा जो अध्यात्म तत्व ज्ञान एवं क्रिया-विज्ञान के साथ जोड़ी और बताई गई हैं ।

अपने अनन्य आत्मीय प्रज्ञा परिजनों में से प्रत्येक के नाम हमारी यही वसीयत और विरासत है कि हमारे जीवन से कुछ सीखें । कदमों की यथार्थता खोजें। सफलता जाँचे और जिससे जितना बन पड़े अनुकरण का, अनुगमन का प्रयास करें । यह नफे का सौदा है घाटे का नहीं । ● ●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभाओं का उद्भव और विकास

वस्तुक्रम

१. इस विश्व की सबसे बड़ी शक्ति
२. चौथी शक्ति का अभिनव उद्भव
३. (अ) सर्वोपरि उपलब्धि प्रतिभा
(ब) प्रतिभा पुरुषार्थ द्वारा विकसित की जाती है
४. प्रतिभा से बढ़कर और कोई समर्थता नहीं
५. प्रतिभा के बीजांकुर हर किसी में विद्यमान हैं
६. उत्कृष्टता के साथ जुड़ें-प्रतिभा के अनुदान पायें
७. प्रचण्ड मनोबल की प्रतिभा में परिणति
८. आगे बढ़ें और लक्ष्य तक पहुँचें
९. प्रतिभा परिष्कार बनाम युग परिवर्तन
१०. कसौटी के लिए तैयार रहें
११. युग सृजन के निमित्त प्रतिभाओं को चुनौती
१२. बड़े कामों के लिए वरिष्ठ प्रतिभाएँ
१३. भगीरथों और शुनिशेपों की खोज
१४. विशिष्टता का नये सिरे से उभार
१५. प्रतिभा परिवर्धन के तथ्य और सिद्धान्त
१६. पात्रता की तात्कालिक आवश्यकता
१७. भावनात्मक परिवर्तन का एकमात्र प्रयोग साधन
१८. देवत्व जागरण की सौम्य साधना पद्धति
१९. स्थूल शरीर का परिष्कार कर्मयोग से
२०. सूक्ष्म शरीर का उत्कर्ष ज्ञानयोग से
२१. ज्ञानयोग से जनमानस का परिष्कार
२२. हम मनस्वी और आत्मबल सम्पन्न बनें
२३. प्रतिभा संवर्धन के दो आधार-साहसिकता एवं सुव्यवस्था
२४. प्रतिभा संवर्धन हेतु निर्धारित विज्ञान सम्मत प्रयोग उपचार
२५. प्रतिभाओं के अवतरण की नई पृष्ठभूमि
२६. प्रतिभा संवर्धन का मूल्य भी चुकाया जाय
२७. प्रतिभा का सुनियोजन
२८. अपना परिवार उच्च आत्माओं का भाण्डागार
२९. विशेष प्रयोजन के लिए विशिष्ट आत्माओं का विशेष अवतरण
३०. विभूतियों का आह्वान

इस विश्व की सबसे बड़ी शक्ति

संसार के सुविस्तृत इतिहास का भूतकालीन पर्यवेक्षण करने पर इसी एक निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि लालसा, वासना और आकांक्षाओं से पीड़ित तो अनेकानेक रहते चले आये, पर उनमें से सफल थोड़े से ही हुए। कारण यह, कि मूल्य चुकाने के लिए जेब में कुछ न होने से उन्हें सजी-धजी दुकान देखते हुए भी निराश होकर वापस लौटना पड़ा। इस हाट में बिकता तो एक से एक बड़ा आकर्षण है, पर सभी तो बदले की कीमत चाहते हैं। यदि वह अपने पास न हो तो फिर भटकने-थकने और निराशा भरे निःश्वास छोड़ते रहने के अतिरिक्त और क्या कुछ हाथ लगने वाला है। दूसरी ओर वे हैं जो लाखों का माल कुछ ही देर में खरीद-बेचकर मुनाफे से थैली भर लेते हैं।

भाग्योदय, वरदान और अनुग्रह उदारता-अनुकम्पा के नाम पर बहुत कुछ पाने की इच्छा आशा की जाती है, पर यह सब मिल कर भी ओस कणों से अधिक और कुछ नहीं बनता। मोती तो पसीने से टपकते हैं, दौलत तो हाथ खोदते हैं। प्रगति के लिए हिम्मत से कम में गुजारा नहीं। सरंजाम कोई कितना ही इकट्ठा क्यों न कर ले, पर उसे सुव्यवस्थित और सुनियोजित किये बिना उसको, रूठने और पलायन करने से रोका नहीं जा सकता। शक्ति की महिमा महत्ता तो बहुत है पर वह उसी के पास ठहरती है, जो उसके सुसंचालन की विद्या से परिचित है।

संसार में निर्माण एक से एक बढ़ कर हुए। पनामा और स्वेज की नहरें, पीसा की झुकी मीनार, चीन की दीवार, अंकोरवाट (कम्बोडिया) के खण्डहर, मिस्र के पिरामिड, आगरा का ताजमहल, हावड़ा का पुल जैसे महान निर्माणों को देखकर लोग आश्चर्य तो बहुत करते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि इन्हें साधनों का ढेर भर बताकर पीछा नहीं छूटता। देखना यह भी होगा कि इनके पीछे कितनों की कल्पना ने, योजना बनाकर, प्रत्यक्ष ढांचा खड़ा करने में कितनी कुशलता और एकाग्रता खपाई है। यही सार संक्षेप में मनुष्य का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वर्चस्व है, जो जहाँ भी चमकता है, वहाँ आकाश की बिजली की तरह कड़कता और अपनी क्षमता से अवगत भी कराता है।

डार्विन के कथनानुसार औसत आदमी को बन्दर की औलाद और वनमानुष मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। प्राणी विकास के विज्ञानी एक ही बात कहते हैं कि सृष्टि के आदि में मात्र अमीबा स्तर के एक कोशीय प्राणी उत्पन्न हुए, पर उनमें प्रचंड इच्छा शक्ति विद्यमान थी। वही हलचल बनी और मनोबल युक्त क्रियाशीलता के बल पर उचित स्तर के काय कलेवर बनते चले गये। अंग-प्रत्यंग उगे, स्वभाव, अभ्यास बने और उन्हें अपने-अपने निर्वाह साधन जुटाने के अवसर मिलते चले गये। वे यह भी कहते हैं कि जड़ माने जाने वाले पदार्थों पर भी प्राणी की प्रचंड इच्छा शक्ति काम करती है और प्रतिकूलताओं के बीच भी अनुकूलता उत्पन्न कर लेती है।

संकल्प बल में निहित सामर्थ्य

लोगों को पैसे का, रूप-सौन्दर्य का, शिक्षा का, पद का, सम्मान सहयोग का मूल्य तो मालूम है और उनके लिए ललचाते हुए, सिर पर पैर रखकर दौड़ने जैसी भगदड़ भी मचाते हैं, पर कहने लायक कुछ उपलब्धि उन्हीं के हाथ आती है जो अपने को अर्ध-मूर्च्छित, अर्धमृतक, आलसी, प्रमादी, निराश, हताश स्तर की कीचड़ में फँसे रहने से इन्कार कर देते हैं। भीतर से उभरी शक्ति बाहर के हर क्षेत्र में वर्चस्व का प्रभाव-परिचय पग-पग पर प्रस्तुत करती है। सभी प्रजातियाँ, सभी संरचनाएँ यह प्रमाण परिचय देती हैं कि वे अपने संकल्प बल से उभरी और अनुकूल रूप धारण करने में समर्थ हुई हैं। उन्होंने अपने निर्वाह साधन इसी आधार पर जुटाये हैं और प्रकृति की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी अज्ञात प्रेरणा से बाधित होकर अपने आपको ढाला है। यह संकल्प शक्ति ही है जो प्राणियों और पदार्थों में विद्यमान रहकर अपनी अद्भुत शक्ति का परिचय देती है। प्राणियों में मनुष्य सचमुच महान है। सृष्टि को ईश्वर की संरचना माना जाता है, पर ईश्वर के वर्तमान स्वरूप को किसने जाना ? इसका उत्तर खोजते समय इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि उसे मनुष्य ने बनाया ।

इतिहास साक्षी है कि जब-जब, जिन वर्गों ने उस क्षेत्र में पराक्रम संजोया है, उसने उसी क्षेत्र में आशातीत सफलताएँ पाई हैं। अग्नि प्रज्वलन से लेकर पहिये के आविष्कार तक उसकी प्रथम कृति थी, जिसने अनेकानेक साधनों-वाहनों का उद्भव आसान कर दिया। कभी उसने कृषि, पशुपालन, वस्त्र निर्माण, भवन निर्माण, व्यवसाय आदि के सहारे प्रगति के नये आयाम खोजे होंगे । भाषा और लिपि का आविष्कार अपने समय में अति क्रान्तिकारी माध्यम माना गया होगा। धर्म, समाज और शासन का गठन उन लोगों की भारी सफलता थी जो वानरों की तरह यायावर जीवन बिताते आदिम काल की उपहासास्पद स्थिति में रहते थे। वैज्ञानिक आविष्कारों से सुसज्जित दुनिया जब गढ़ी जाने लगी तब तो मानों प्रकृति पर विजय पाने का नगाड़ा ही बजने लगा। अब तो ऐसे अणु आयुधों के जखीरे जमा हो गये हैं, जिनसे सृष्टा की इस सुंदर संरचना धरित्री को देखते-देखते धूलि बनाकर अंतरिक्ष में उड़ा दिया जाय; यहाँ प्राणी या वनस्पति वर्ग के सभी सदस्य सर्वथा लुप्त प्राय: हो जायें। इस प्रकार मनुष्य ईश्वर का समर्थ सहायक भी सिद्ध होता है और दुर्धर्ष प्रतिद्वन्दी भी। उसकी यह शक्ति चेतना से जानी जाने वाली किसी प्रचण्ड संकल्प बल की वशवर्ती है और उसी के सहारे कठपुतली की तरह नाचती रहती है। इसी की न्यूनाधिकता से मनुष्य क्षुद्र और महान बनता है। उसके उच्चस्तरीय होने पर देव और निकृष्टता अपनाने पर दैत्य का उद्भव होता है। दैवी शक्तियों से सम्पन्न व्यक्ति ही सिद्ध पुरुष या देव मानव कहलाता है।

बुद्धिमत्ता, प्रतिभा, व्यवस्था, संरचना, परिवर्तन आदि के अनेक प्रयोग जहाँ-तहाँ होते रहते हैं और उनके प्रयोक्ता बली, महाबली कहलाते हैं। पर यह भुला नहीं दिया जाना चाहिए कि समस्त कला-कौशलों, निर्माणों और सफलताओं की जन्मदात्री वह संकल्प शक्ति रूप प्राणाग्नि ही है, जो चिनगारी से बढ़ते-बढ़ते दावानल का रूप धारण करती देखी जाती है। उत्थान और पतन उसी के दो चित्र-विचित्र खिलौने हैं।

जिन दिनों इंग्लैण्ड पर जर्मनी द्वारा दिन रात भयंकर बमवर्षा अनवरत रूप से हो रही थी, तब सर्वसाधारण को यही सोचते कहते देखा जाता था कि इंग्लैण्ड का पतन अब हुआ, तब हुआ। इन घोर निराशा के दिनों में भी, उस देश के प्रधान मंत्री विन्स्टन चर्चिल का आत्मविश्वासपूर्वक यही कहना था कि रूस व अमेरिका का जो भी होना हो, इंग्लैण्ड जीत कर रहेगा। इतने प्रगाढ़ आत्मविश्वास को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखकर स्टालिन और रूजवेल्ट दंग रह गये । तीनों ने मिलकर वे कदम उठाये कि देखते-देखते पासा पलट गया, मित्र राष्ट्र विजयी होकर रहे।

हम आत्म विस्मृति से उबरें

स्मृति की तरह विस्मृति भी मनुष्य के स्वभाव में सम्मिलित है। पर उस दुर्गुण के इस सीमा तक पहुँच जाने का क्या कहा जाय, जिसमें अपने-आप के आत्म-गौरव को, ओजस्, तेजस् और वर्चस को ही भुला दिया जाय ? आज कुछ ऐसा ही सम्मोहन-व्यामोह किसी शैतान द्वारा बिखेरा गया दीखता है, जिससे हतप्रभ होकर व्यक्ति अपने को दीन, दुर्बल, अशक्त, असहाय, अभागा आदि समझने लगा है। यदि उसे अपनी जीवट पर विश्वास हुआ होता, तो कठिन से कठिन विघ्न बाधाओं को चुनौती देते हुए अब तक न जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गया होता।

कुछ समय पहले की ही एक खबर है। साइबेरिया के हिम प्रदेश में बन्दी बनाये गये कुछ कैदी उस दुर्गम क्षेत्र से भाग निकले। प्राय: चार हजार मील के अति दुर्गम, आहार सामग्री से रहित क्षेत्र को पार करते हुए किसी प्रकार भारत आ पहुँचने का दुस्साहस उन्होंने कर ही दिखाया, इसके बाद उन्हें उनके देश-पोलैण्ड, सम्मान सहित पहुँचा दिया गया।

अनगिनत आन्दोलनों के योजनाकार अपनी लगन को साकार बनाकर रहे हैं। इसके पीछे, सुयोग या सहयोग का भी एक भाग हो सकता है, पर प्रधानता प्रचंड आत्म-विश्वास की ही रही है। प्रगति का ढाँचा उसी पर खड़ा होता है। साधन अनायास ही नहीं जुट जाते, उनके लिए अपने आपको इतना प्रामाणिक और प्रखर सिद्ध करना होता है कि स्वेच्छा सहयोग बरसने में कहीं कोई कमी न रहे।

आत्म-विस्मृति के दल-दल में से उबार कर मनुष्य समुदाय के एक वर्ग को इन्हीं दिनों प्रबल प्रतिभा का धनी बनाना है। इस प्रयास को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी है। कारण कि इन्हीं दिनों कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य किये जाने के लिए, दैवी चेतना किन्हीं समर्थों की प्रतीक्षा कर रही है। मनुष्य स्वभाव में, प्रचलन में, नरक जैसे दुर्गन्धित कचरे को हटाने के लिए ऐसी जुझारू प्रवृत्ति चाहिए, जो तूफान बनकर बरसे और जो ढहाया-गिराया जाना ही है उसे स्थानान्तरित करके ही रहे।

सृजन इतना, इस स्तर का होना है, मानों खण्डहरों को बटोर कर उस स्थान पर नये सिरे से भव्य भवन खड़े किये जा रहे हों। इसके लिए बादलों जैसे सशक्त समुदाय की आवश्यकता है, जो तपते धरातल को अपनी वर्षा से जलमग्न कर दे। धरित्री पर हरी घास उगा कर उसे मखमली हरीतिमा से महिमा मण्डित कर दे। इन योद्धाओं के अग्रगामी बने बिना न तो दरिद्रता से लोहा लिया जा सकता है और न अस्वस्थता एवं अशिक्षा से ही पिण्ड छूटेगा।

सैन्य शिक्षण, व्यवसाय, विद्यालय, व्यायाम शालाओं, विद्यालयों, कला केन्द्रों की कमी नहीं, पर दुर्भाग्य इसी एक बात का है कि प्रतिभा परिष्कार की सांगोपांग व्यवस्था कहीं पर नहीं है। कठिनाई इस मार्ग में यही एक है कि प्राण चेतना अन्त:करण के अन्तराल में से उभरती नहीं, किन्तु उस गहन गह्वर तक पहुँचने, कुरेदने उभारने वाले उपकरणों का एक प्रकार से सर्वथा अभाव ही हो गया। इस कमी के रहते अन्य किसी क्षेत्र का विकास भले ही हो जाय, पर प्रचंड प्रतिभा सम्पन्न ऐसे व्यक्तियों का दर्शन हो नहीं सकेगा, जो नवयुग की महती आवश्यकताओं को देखते हुए, अनय से जूझने और सृजन को साकार बनाने में अपने अतिरिक्त पौरुष का परिचय दे सके। इन दिनों इन्हीं महामानवों को, सुगढ़ व्यक्तित्वों-प्रतिभावानों को ढूँढ निकालने की प्रक्रिया संपन्न होनी है ।

चौथी शक्ति का अभिनव उद्भव

तीन शक्तियों की प्रभुता और महत्ता सर्वविदित है (१) बुद्धि बल—जिसमें विज्ञान, साहित्य और कला भी सम्मिलित हैं, (२) शासन सत्ता—इसके अन्तर्गत हैं-व्यवस्था, सुरक्षा, और तत्सम्बन्धी साधन एवं अधिकारी। (३) धन शक्ति-जिसमें उद्योग व्यवसाय, निजी संग्रह एवं बैंक आदि को सम्मिलित किया जाता है। देखा जाता है कि इन्हीं तीनों के सहारे छोटे-बड़े, भले-बुरे सभी काम सम्पन्न होते हैं। प्रगति एवं अवगति का श्रेय इन्हीं तीन शक्तियों को मिलता है। सरस्वती, लक्ष्मी, काली के रूप में इन्हीं की पूजा भी होती है। जन साधारण की इच्छा-अभिलाषा इन्हीं को प्राप्त करने में आतुर एवं संलग्न रहती है। इनमें से जिनके पास जितना अंश हस्तगत हो जाता है, वह उतना ही गौरवान्वित-यशस्वी अनुभव करते हैं। बड़प्पन की यही तीन कसौटियाँ इन दिनों बनी हुई हैं। इनके सहारे वह सब कुछ खरीदा जाता है, जो इच्छानुकूल सुविधा साधन अर्जित करने के लिए आवश्यक प्रतीत होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नवयुग के अवतरण में अब चौथी उस शक्ति का उदय होगा, जो अभी भी किसी प्रकार कहीं-कहीं जीवित तो है; पर उसका वर्चस्व कहीं-कहीं, कभी-कभी ही दीख पड़ता है। इसी की दुर्बलता अथवा न्यूनता के कारण अनेकानेक विकृतियाँ उग पड़ी हैं और उन्होंने जलकुम्भी की तरह जलाशयों को अपने प्रभाव से आच्छादित करके वातावरण को अवांछनीयताओं से घेर लिया है।

इस चौथी शक्ति का नाम है, ''प्रखर प्रतिभा''। सामान्य प्रतिभा तो बुद्धिमानों, क्रियाकुशलों, व्यवस्थापकों और पराक्रम परायणों में भी देखी जाती है। इनके सहारे वे प्रचुर सम्पदा कमाते, यशस्वी बनते और अनुचरों से घिरे रहते हैं। आतंक उत्पन्न करना भी इन्हीं के सहारे सम्भव होता है। छद्म अपराधों की एक बड़ी शृंखला भी चलती है। इस सामान्य प्रतिभा से सम्पन्न अनेक व्यक्ति देखे जाते हैं और उसके बल पर बड़प्पन का सरंजाम जुटाते हैं। तत्काल उसे हुण्डी की तरह भुना लिया जाता है। अच्छे वेतन पर अधिकारी स्तर का लाभदायक काम उन्हें मिल जाता है, किन्तु प्रखर प्रतिभा की बात इससे सर्वथा भिन्न है। प्रखरता से यहाँ तात्पर्य आदर्शवादी उत्कृष्टता से लिया जाना चाहिए। सज्जन और समर्पित सन्त इसी स्तर के होते हैं। कर्तव्य क्षेत्र में वे सैनिकों जैसा अनुशासन पालन करते हैं। देव मानव इन्हीं को कहते हैं। ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी, वर्चस्वी, महामानव, युग पुरुष आदि नामों से भी इस स्तर के लोगों का स्मरण किया जाता है।

इनमें विशेषता उच्चस्तरीय भाव संवेदनाओं की होती है। श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा जैसे तत्त्व उन्हीं में देखे पाये जाते हैं। सामान्य प्रतिभावान् मात्र धन, यश या बड़प्पन का अपने निज के हेतु अर्जन करते रहते हैं। जिसे जितनी सफलता मिल जाती है, वह अपने को उतना ही बड़ा मानता है। लोग भी उसी से प्रभावित होते हैं। कुछ प्राप्ति की इच्छा से अनेक चाटुकार उनके पीछे फिरते हैं। अप्रसन्न होने पर वे अहित भी कर सकते हैं, इसलिए भी कितने ही उनका दबाव मानते हैं और इच्छा न होने पर भी सहयोग करते हैं। यह सामान्य प्रतिभा का विवेचन है।

प्रखर प्रतिभा-समय की महती माँग

''प्रखर प्रतिभा'' संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँची उठी होती है। उसे मानवी गरिमा का ध्यान रहता है। उसमें आदर्शों के प्रति अनन्य निष्ठा का समावेश रहता है। लोक मंगल और सत्प्रवृत्ति संवर्धन में उसे गहरी रुचि रहती है।

प्रखर प्रतिभा का दिव्य अनुदान एक प्रकार से दैवी अनुग्रह गिना जाता है। जबकि सामान्य लोगों को लोभ-मोह के बंधनों से क्षण भर के लिये भी छुटकारा नहीं मिलता, तब प्रखर प्रतिभा सम्पन्न लोग जनसमस्याओं पर ही विचार करते और उनके समाधान की योजना बनाते रहते हैं। भावनायें उभरने पर ऐसे मनुष्य बड़े से बड़ा त्याग और पुरुषार्थ कर दिखाने में तत्पर हो जाते हैं। ऐसे लोग असफल रहने पर शहीदों में गिने और देवताओं की तरह पूजे जाते है। यदि वे सफल होते हैं तो इतिहास बदल देते हैं प्रवाहों को उलटना इन्हीं का काम होता है।

आकाश बहत बड़ा है, पर उसमें सीमित संख्या में ही तेजस्वी तारे चमकते दिखाई पड़ते हैं। उसी प्रकार जन समुदाय को पेट प्रजनन के अतिरिक्त और कुछ सोचते-करते नहीं बन पड़ता, किन्तु जिन पर दैवी अनुकम्पा की तरह प्रखर प्रतिभा अवतरित होती है, उसका क्रिया-कलाप ऐसा बन पड़ता है, जिसका चिरकाल तक असंख्यों द्वारा अनुकरण-अभिनन्दन होता रहे।

स्वाध्याय, सत्संग, प्रेरणा परामर्श आदि द्वारा भी सन्मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन मिलता है, पर वह सब गले उन्हीं के उतरता है, जिनके अन्दर भाव-सम्वेदनायें पहले से ही जीवित हैं। उनके लिए थोड़ी सी प्रेरणा भी क्रान्तिकारी परिवर्तन कर देती है। सीप में जल की एक बूँद ही मोती उत्पन्न कर देती है। पर रेत में गिरने पर वह अपना अस्तित्व ही गँवा बैठती है। यही बात आदर्शवादी परमार्थों के सम्बन्ध में भी है। कई बार तो उपदेशकों तक की करनी-कथनी में जमीन-आसमान जैसा अन्तर देखा-पाया जाता है। भावनाओं की प्रखरता रहने पर व्यक्ति व्यस्त-कार्यों में से भी समय निकाल लेता है। मनोबल बनाये रखता है और उसमें अपनी सदाशयता का खाद-पानी देकर बढ़ाता रहता है। इस प्रकार अपने संपर्क में आने वाले को भी अपने परामर्शों के साथ गहन भाव-संवेदनाओं का समन्वय करके इतना प्रभावित कर लेता है कि वे इस दिशा में कुछ भी कर गुजरने में झिझकें नहीं।

मध्यकाल में राजपूतों के हर परिवार में से एक व्यक्ति सेना में भर्ती हुआ करता था। ब्राह्मण परिवारों में से एक ब्रह्मचारी-परिव्राजक, समाज को दान दे दिया जाया करता था। सिख धर्म में भी घर के एक व्यक्ति को समाजसेवी बनाने की परम्परा रही है। इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिए उन्हें अमृत चखाया जाता था, अर्थात् दीक्षा दी जाती थी। बौद्ध धर्म विस्तार के दिनों में उसी आधार पर लाखों भिक्षु-भिक्षुणियाँ कार्य क्षेत्र में उतरे थे । आज भी समय की माँग ऐसी है, जिसमें चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में असाधारण परिवर्तन की आवश्यकता है। इसके लिए भावनाशील लोकसेवियों की , प्रखर प्रतिभाओं की जितनी बड़ी संख्या उपलब्ध हो सकेगी, उतनी ही लक्ष्य पूर्ति में सरलता और गतिशीलता रहेगी। पूरा—आधा या चौथाई जितना ही जिनसे समयदान-अंशदान बन पड़े, समझना चाहिए कि नव सृजन की पुण्य प्रक्रिया में संलग्न होने का उसे उतना ही अधिक श्रेय उपलब्ध हुआ।

सूक्ष्म जगत् में भी कई बार समय-समय पर ज्वार-भाटे जैसे उतार-चढ़ाव आया करते हैं। कभी स्वार्थी, लालची, अपराधी, कुकर्मी समाज में बढ़ जाते हैं। वे स्वयं तो कुछ लाभ भी उठा लेते हैं, पर प्रभाव क्षेत्र के अन्य अनेक का सर्वनाश करते रहते हैं। इसे आसुरी प्रवाह प्रचलन कहा जा सकता है, पर जब प्रवाह बदलता है, तो उच्च आत्माओं की भी कमी नहीं रहती । एक जैसे विचार ही असंख्यों के मन में उठते हैं और उन सब की मिली-जुली शक्ति से सृजन स्तर के कार्य इतने अधिक और इतने सफल होने लगते हैं जिन्हें देखकर लोगों को आश्चर्यचकित रह जाना पड़ जाता है। उसे दैवी प्रेरणा कहने में भी कुछ अत्युक्ति नहीं है।

इक्कीसवीं सदी में नई दुनियाँ बनाने जैसा कठिन कार्य किया जाना है। इसके लिए प्रचुर परिमाण में प्रखर प्रतिभा का उफान-तूफान आना है। अनेक व्यक्ति उस संदर्भ में कार्य करेंगे। आंधी-तूफान आने पर पत्ते, तिनके और धूलिकण भी आकाश तक जा पहुँचते हैं। दैवी प्रेरणा का अदृश्य प्रवाह इन्हीं दिनों ऐसा आयेगा जिसमें सृजन सैनिकों की विशालकाय सेना खड़ी दिखाई देगी और उस प्रकार के चमत्कार करेगी जैसे कि अणुबम गिराने के बाद खण्डहर बने जापान को वहाँ के निवासियों ने अन्य देशों की तुलना में पहले से भी कहीं बेहतर बना कर किया है। रूस, जर्मनी आदि ने भी कुछ ही दशाब्दियों में क्या से क्या चमत्कार कर दिखाये । उन्हें अद्भुत ही कहा जा सकता है और इतिहास में अनुपम भी।

दुर्बुद्धि ने पिछली एक शताब्दी में कितना कहर ढाया है, यह किसी से छिपा नहीं है। दो विश्व युद्ध इसी शताब्दी में हुए। प्रदूषण इतना बढ़ा है, ज़ितना कि विगत लाखों वर्षों में बढ़ नहीं पाया था। वन विस्मार हुए। रेगिस्तान बढ़े। अपराधों की बढ़ोत्तरी ने कीर्तिमान स्थापित किया। मद्य, मांस और व्यभिचार ने पिछले रिकार्ड तोड़ दिये। जनसंख्या की बढ़ोत्तरी भी अद्भुत क्रम से हुई। जन साधारण का व्यक्तिगत आचरण लगभग भ्रष्टाचार स्तर पर जा पहुँचा और भी न जाने ऐसा क्या-क्या हुआ, जिसकी चर्चा सुनकर यही कहना पड़ता है कि मनुष्य की तथाकथित वैज्ञानिक, बौद्धिक और आर्थिक प्रगति ने समस्याएँ, विपत्तियाँ और विभीषिकाएँ ही खड़ी कीं। आश्चर्य होता है कि प्राय: एक शताब्दी में ही इतना अनर्थ किस प्रकार लुटाना और द्रुतगति से क्रियाशील किया जाना सम्भव हुआ।

नये प्रवाह का अभ्युदय

अब रात्रि के बाद दिनमान का उदय होने जा रहा है। दूसरे स्तर का प्रवाह चलेगा। मनुष्यों में से असंख्यों में भाव संवेदनाओं का उभार आयेगा और वे सभी सृजन की सेवा की, उत्थान की, आदर्श की बात सोचेंगे। इसमें लोगों का एक बड़ा समुदाय उगता उभरता दृष्टिगोचर होगा। गर्मी के दिनों में घास का एक तिनका भी कहीं नहीं दीखता, पर वर्षा के आते ही सर्वत्र हरियाली छा जाती है। नये युग का दैवी प्रवाह अदृश्य वातावरण में अपनी ऊर्जा का विस्तार करेगा। फलस्वरूप जिनमें भाव संवेदनाओं के तत्त्व जीवित बचे होंगे, वे सभी अपनी सामर्थ्य का एक महत्वपूर्ण भाग नव-सृजन के लिए नियोजित किये हुए दृष्टिगोचर होंगे। व्यस्तता और अभावग्रस्तता की आड़ लेकर कोई भी न आत्म-प्रवंचना कर सकेगा और न सुनने वालों में से किसी को इस बात का विश्वास दिला सकेगा कि बात वस्तुत: ऐसी भी हो सकती है, जैसी कि बहकावे के रूप में समझी या कही जा रही है।

इक्कीसवीं सदी निकट है। तब तक इस अवधि में प्रखर प्रज्ञा के अनेक छोटे-बड़े उद्यान रोपे, उगाये, बढ़ाये और इस स्तर तक पहुँचाये जा सकेंगे, जिन्हें नन्दन वनों के समतुल्य कहा जा सके, जिन्हें कल्पवृक्ष उद्यानों की उपमा दी जा सके।

श्रेष्ठ मनुष्यों का बाहुल्य ही सतयुग है। उसी को "स्वर्ग" कहते हैं। नरक और कुछ नहीं दुर्बुद्धि का बाहुल्य और उसी का व्यापक प्रचलन है, नरक जैसी परिस्थितियाँ उसी में दृष्टिगोचर होती हैं। पतन और पराभव के अनेक अनाचार उसी के कारण उत्पन्न होते रहे हैं। समय परिवर्तन के साथ सदाशयता बढ़ेगी नव सृजन की उमंग जन-जन के मन में उठेगी और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रखर प्रतिभा का दिव्य आलोक सर्वत्र अपना चमत्कार उत्पन्न करता दिखाई देगा। यह चौथी-प्रतिभा की शक्ति नवयुग की अधिष्ठात्री कही जायेगी।

सर्वोपरि उपलब्धि-प्रतिभा

मनुष्य ने सृष्टि के समस्त प्राणियों की तुलना में वरिष्ठता पायी है। शरीर-संरचना और मानसिक-मस्तिष्कीय विलक्षणता के कारण उसने सृष्टि के समस्त प्राणियों की तुलना में न केवल स्वयं को सशक्त, समुन्नत, सिद्ध किया है; वरन् वह ऐसी संभावनाएँ भी साथ लेकर आया है , कि जिनके सहारे अपने समुदाय को , अपने समग्र वातावरण एवं भविष्य को भी शानदार बना सके। यह विशेषता प्रयत्नपूर्वक उभारी जाती है। रास्ता चलते किसी गली-कूंचे में पड़ी नहीं मिल जाती। इस दिव्य विभूति को प्रतिभा कहते हैं। जो इसे अर्जित करते हैं, वे सच्चे अर्थों में वरिष्ठ-विशिष्ट कहलाने के अधिकारी बनते हैं, अन्यथा अन्यान्य प्राणी तो समुदाय में एक उथली स्थिति बनाये रहकर किसी प्रकार जीवन-यापन करते हैं।

मनुष्य गिलहरी की तरह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता। बन्दर की तरह कुलाचें नहीं भर सकता। बैल जितनी भार वहन की क्षमता भी उसमें नहीं है। दौड़ने में वह चीते की तुलना तो क्या करेगा, खरगोश के पटतर भी अपने को सिद्ध नहीं कर सकता। पक्षियों की तरह आकाश में उड़ना उसके लिए संभव नहीं, न मछलियों की तरह पानी में डुबकी ही लगा सकता है। अनेक बातों में वह अन्य प्राणियों की तुलना में बहुत पीछे है, किन्तु विशिष्ट मात्रा में मिली चतुरता, कुशलता के सहारे वह सभी को मात देता है और अपने को वरिष्ठ सिद्ध करता है।

व्यावहारिक जीवन में मनुष्य अन्य प्राणि-समुदाय की तुलना में अनेक दृष्टियों से कहीं आगे है, वह उसी की नियति है। अधिकांश मनुष्यों को अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक सुविधा-सम्पन्न जीवन-यापन करते हुए देखा जाता है। इतने पर भी संभावना यह भी है कि वह इन उपलब्धियों की तुलना में और भी अधिक समर्थता और महत्ता प्राप्त कर सके। पर शर्त एक ही है कि उस अभिवर्धन के लिए वह स्वयं अतिरिक्त प्रयास करे। कमियों को पूरा करे और जिसकी नितान्त आवश्यकता है, उसे पाने-कमाने के लिए अधिक जागरूकतापूर्वक, अधिक तत्परता एवं तन्मयता बरते। अपने पुरुषार्थ को इस स्तर का सिद्ध करे कि वह मात्र दैवी अनुदानों के आधार पर ही समुन्नत बनकर नहीं रह रहा है, वरन् उसका निज का पुरुषार्थ भी समुचित मात्रा में सम्मिलित रहा है। यह प्रतिभा ही है जिसके बल पर वह अन्यान्यों की तुलना में अधिक सुसंस्कृत और समुन्नत बनता है। गोताखोर गहरी डुबकी लगाकर मोती बीनते हैं। हीरे खोजने वाले खदान का चप्पा-चप्पा ढूँढ़ डालते हैं। प्रतिभा को उपलब्ध करने के लिए भी इससे कम प्रयास से काम नहीं चलता।

प्रतिभा एक दैवी स्तर की विद्युत् चेतना है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व और कर्तृत्व में असाधारण स्तर की उत्कृष्टता भर देती है। उसी के आधार पर अतिरिक्त सफलताएँ आश्चर्यजनक मात्रा में उपलब्ध की जाती हैं। साथ ही इतना और जुड़ता है कि अपने लिए असाधारण श्रेय, सम्मान और दूसरों के लिए अभ्युदय के मार्ग पर घसीट ले चलने वाला मार्ग-दर्शन वह कर सके। माँझी की तरह अपनी नाव को खेकर स्वयं पार उतरे और उस पर बिठाकर अन्यान्यों को भी पार उतारने का श्रेय प्राप्त कर सके। गिरों को उठाने, डूबतों को उबारने और किसी तरह समय गुजारने वालों को उत्कर्ष की ऊँचाई तक उछालने में समर्थ हो सके।

प्रतिभाशाली लोगों को असाधारण कहते हैं। विशिष्ट और वरिष्ठ भी कहा जाता है। साधारण जनों को तो जिन्दगी के दिन पूरे करने में ही जो दौड़-धूप करनी पड़ती है, झंझटों से निपटना और जीवन-यापन के साधन जुटाना आवश्यक होता है, उसे ही किसी प्रकार पूरा कर पाते हैं। पशु-पक्षियों और पतंगों से भी इतना ही पुरुषार्थ हो पाता है और इतना ही सुयोग जुट पाता है; किन्तु प्रतिभावानों की बात ही दूसरी है, वे तारागणों के बीच चन्द्रमा की तरह चमकते हैं। उनकी चाँदनी सर्वत्र शान्ति और शीतलता बिखेरती है। वह स्वयं सुन्दर लगते और अपनी छत्र-छाया के सम्पर्क में आने वालों को शोभा-सुन्दरता से जगमगा देते हैं। प्रतिभावानों को उदीयमान सूर्य भी कह सकते हैं, जिसके दर्शन होते ही सर्वत्र चेतना का एक नया माहौल उमड़ पड़ता है । वे ऊर्जा और आभा के स्वयं तो उद्गम होते ही हैं, अपनी किरणों का प्रभाव जहाँ तक पहुँचा पाते हैं, वहाँ भी बहुत कुछ उभारते-बिखेरते रहते हैं। सच तो यह है कि नर-वानर को शक्ति-पुंज बनाने का श्रेय प्रतिभा को ही है। प्रतिभा ही शरीर में ओजस्विता, मानस में तेजस्विता और अन्तःकरण में विभूति भरी वर्चस्विता के रूप में दृष्टिगोचर होती है। मनुष्य की अपनी निजी विशेषता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का परम पुरुषार्थ यही है। जो इससे वंचित रह गया, उसे मार्ग ढूँढने का अवसर नहीं मिलता। मात्र अन्धी भेड़ों की तरह जिस-तिस के पीछे चल कर, जहाँ भाग्य ले पहुँचता है, वहाँ जाकर, ऐसा व्यक्ति अशक्त एवं परावलम्बियों जैसा जीवन जीता है। कठिनाइयों के समय यह मात्र घुटन अनुभव करता और आँसू भर बहाकर रह जाता है।

संसार असंख्य पिछड़े लोगों से भरा पड़ा है। वे गयी-गुजरी जिन्दगी जीते और भूखे-नंगे, तिरस्कृत-उपेक्षित रहकर किसी प्रकार मौत के दिन पूरे करते हैं। निजी समर्थता का अभाव देखकर उन पर विपन्नता और प्रतिगामिता के अनेक उद्‌ज्भिज चढ़ दौड़ते हैं। दुर्व्यसन, दुर्बल मनोभूमि वालों पर ही सवार होते हैं और उन्हें जिधर-तिधर खींचते-घसीटते फिरते हैं। ऐसे भारभूत लोग अपने लिए, साथी-सहयोगियों के लिए और समूचे समाज के लिए एक समस्या ही बने रहते हैं। इन्हीं का बाहुल्य देखकर अनाचारी अपने पंजे फैलाते, दाँत गड़ाते और शिकंजे कसते हैं। प्रतिभारहित समुदाय का धरती पर लदे भार जैसा आंकलन ही होता है। वे किसी की कुछ सहायता तो क्या कर सकेंगे, अपने को ही अर्धमृतक की तरह किन्हीं के कंधों पर लदकर चलने का आश्रय ताकते हैं।

सृजन बनाम परिष्कृत प्रतिभा

संसार सदा से ऐसा नहीं था, जैसा कि अब सुन्दर सुसज्जित, सुसंस्कृत और समुन्नत दीखता है। आदिकाल का मनुष्य भी वनमानुषों की तरह भूखा-नंगा फिरता था। ऋतु-प्रभावों से मुश्किल से ही जूझ पाता था। जीवित रहना और पेट भरना ही उसके लिए प्रधान समस्या थी और इतना बन पड़ने पर वह चैन की साँस भी ले लेता था। संसार तब इतना सुन्दर कहाँ था? यहाँ खाई खन्दक, टीले, ऊसर, बंजर, निविड़ वन और अनगढ़ जीव-जन्तु ही जहाँ-तहाँ दीख पड़ते थे। आहार, जल और निवास तक की सुविधा न थी; फिर अन्य साधनों का उत्पादन और उपयोग बन पड़ने की बात ही कहाँ बन पाती होगी?

आज का हाट-बाजारों, उद्योग-व्यवसायों, विज्ञान-आविष्कारों, सुविधा-साधनों, अस्त्र-शस्त्र, सज्जा-शोभा, शिक्षा और सम्पदा से भरा-पूरा संसार अपने आप ही नहीं बन गया है। उसने मनुष्य की प्रतिभा विकसित होने के साथ-साथ ही अपने कलेवर का विस्तार भी किया है। श्रेय मनुष्य को दिया जाता है, पर वस्तुतः दुनियाँ जानती है कि वहाँ सब कुछ सम्पदा और बुद्धिमत्ता का ही खेल है। इससे दो कदम आगे और बढ़ाया जा सके, तो सर्वतोमुखी प्रगति का आधार एक ही दीख पड़ता है प्रतिभा-परिष्कृत प्रतिभा। इसके अभाव में अस्तित्व जीवित लाश से बढ़कर और कुछ नहीं रह जाता।

सम्पदा का इन दिनों बहुत महत्त्व आँका जाता है; इसके बाद समर्थता, बुद्धिमत्ता आदि की गणना होती है। पर और भी ऊँचाई की ओर नजर दौड़ाई जाय, तो दार्शनिक, शासक, कलाकार, वैज्ञानिक, निर्माता एवं जागरूक लोगों में मात्र परिष्कृत प्रतिभा का ही चमत्कार दीखता है। साहसिकता उसी का नाम है। दूरदर्शिता, विवेकशीलता के रूप में उसे जाना जा सकता है। यदि किसी को वरिष्ठता या विशिष्टता का श्रेय मिल रहा हो, तो समझना चाहिए कि यह उसकी विकसित प्रतिभा का ही चमत्कार है। इसी का अर्जन सच्चे अर्थों में वह वैभव समझा जाता है, जिसे पाकर गर्व और गौरव का अनुभव किया जाता है। व्यक्ति याचक न रहकर दानवीर बन जाता है। यही है वह क्षमता, जो अस्त्र-शस्त्रों की रणनीति का निर्माण करती है और बड़े से बड़े बलिष्ठों को भी धराशायी कर देती है। शक्ति की सर्वत्र अभ्यर्थना होती है, पर यदि उसका बहुमूल्य अंश खोजा जाय, तो उसे प्रतिभा के अतिरिक्त और कोई नाम नहीं दिया जा सकता। विज्ञान उसी का अनुयायी है। सम्पदा उसी की चेरी है। श्रेय और सम्मान वही जहाँ-तहाँ से अपने साथ रहने के लिए घसीट लाती है। गौरव-गाथा उन्हीं की गायी जाती है। अनुकरणीय और अभिनंदनीय इसी विभूति के धनी लोगों में से कुछ होते हैं।

दूरदर्शिता, साहसिकता और नीति-निष्ठा का समन्वय प्रतिभा के रूप में परिलक्षित होता है। ओजस्, तेजस् और वर्चस्, उसी के नाम हैं। दूध गर्म करने पर मलाई ऊपर तैर कर आ जाती है । जीवन के साथ जुड़े हुए महत्त्वपूर्ण प्रसंगों से निपटने का जब कभी अवसर आता है, तो प्रतिभा ही प्रधान सहयोगी की भूमिका निभाती देखी जाती है।

सफलताओं में, उपलब्धियों में अनेक विशेषताओं के योगदान की गणना होती है, पर यदि उन्हें एकत्रित करके एक ही शब्द में केन्द्रित किया जाय, तो उसे प्रतिभा कहने भर से काम चल जायेगा और भी खुलासा करना हो, तो उसे अपने को, दूसरों को, संसार को और वातावरण को प्रभावित करने वाली सजीव शक्ति वर्षा भी कह सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्यान्य उपलब्धियों का अपना-अपना महत्त्व है। उन्हें पाने वाले गौरवान्वित भी होते हैं और दूसरों को चमत्कृत भी क्ररते हैं, पर स्मरण रखने की बात यह है कि यदि परिष्कृत प्रतिभा का अभाव हो, तो प्राय: उनका दुरुपयोग ही बन पड़ता है। दुरुपयोग से अमृत भी विष बन जाने की उक्ति अप्रासंगिक नहीं है। शरीर बल से सम्पन्नों को आततायी, आतंकवादी, अनाचारी, आक्रमणकारी, अपराधी के रूप में उस उपलब्धि का दुरुपयोग करते और अपने समेत अन्यान्यों को संकट में धकेलते देखा जाता है। सम्पदा अर्जित करने वाले उसका सही उपयोग न बन पड़ने पर विलास, दुर्व्यसन, उद्धत अपव्यय, विग्रह खड़े करने वाले अहंकार-प्रदर्शन आदि में खर्च करते देखे गये हैं। अवांछनीय व्यक्तियों और कार्यों का उसको सहयोग मिल जाने पर अनर्थ ही अनर्थ खड़े होते देखे जाते हैं। बढ़ी हुई शिक्षा या चतुरता एक से एक बड़े प्रपंच रचती है। ऐसे जाल-जंजाल बुनती है, जिनमें फँसने वालों को मछुआरों और चिड़ीमारों से पाला पड़ने जैसा भाग्य कोसना पड़ता है। बढ़ा हुआ सौन्दर्य व्यभिचार का ही रास्ता पकड़ता है। बड़े साहब, अफसर, रिश्वतखोरी से, खोटी कमाई से जिस प्रकार बड़े आदमी बनते हैं, उसे देखकर यही सोचना पड़ता है कि यदि यह लोग शरीर-श्रम भर से पेट भरने वाले श्रमिक रहे होते, तो हजार गुना अच्छा था। प्रतिभा ही है, जो वैभव को उपार्जित ही नहीं करती, वरन् उसके सदुपयोग भर के लिए उच्चस्तरीय सुझाव, संकल्प और साहस भी प्रदान करती है। बड़प्पन भी तो इसी पर आश्रित है।

प्रतिभा पुरुषार्थ द्वारा विकसित की जाती है

मानवी क्षमताओं की सुनियोजित क्रियाशीलता का दूसरा नाम प्रतिभा है। जिस अनुपात में ये क्षमताएँ किसी में क्रियाशील होती हैं, उसी अनुपात में उसे प्रतिभाशाली कहा जाता है। यद्यपि मूल रूप से ये शक्तियाँ मनुष्य मात्र में समान रूप से पायी जाती हैं। पर इस समानता के बाद भी इनमें से अधिकांश प्राय: सुप्त अथवा अक्रिय अवस्था में होती हैं। निष्क्रिय को सक्रिय बनाना, सुप्त को जाग्रत करना ही वह प्रक्रिया है, जिसे प्रतिभा जागरण का नाम दिया जाता है।

प्रत्येक को जन्मजात रूप से तीन तरह की ताकतें मिली हैं। उन्हें शारीरिक शक्ति, विचार शक्ति एवं कल्पना शक्ति तथा भावनाओं की शक्ति नाम दिया जा सकता है। बाकी अन्य छोटी-बड़ी सामर्थ्य इन्हीं के इर्द-गिर्द घूमती रहती हैं । शारीरिक शक्ति की बलिष्ठता शरीर व प्राण की स्थिति पर निर्भर है। विचारों व कल्पनाओं की प्रखरता का आधार बुद्धि है। इसी तरह संवेदनाओं की उदात्तता अन्तराल की गहराइयों में स्थित पवित्रता पर टिकी है। यों इन शक्तियों की झलक थोड़े बहुत रूपों में हम सभी के जीवन में दिखाई पड़ती है। हममें से सभी कुछ न कुछ काम करते, सोचते, विचारते, कल्पना करते रहते हैं। पर गहराई से देखने पर इसके विकास का स्तर एक-दूसरे से अलग दिखाई पड़ता है।

इसका एक छोर मूढ़ता है — इसमें समूची सामर्थ्य सोई रहती है, दीन की स्थिति औसत मनुष्य की है। इसे अर्द्ध जाग्रत स्थिति कहा जा सकता है। दूसरा छोर प्रतिभाशाली होना है। इस दशा में मानवी क्षमताएँ अपनी भरपूर क्रियाशीलता प्रकट करती हैं। अपनी वर्तमान स्थिति से इस पूर्ण क्रियाशील स्थिति को पाना प्रतिभा का विकास है।

सामान्यतया यह विकास जीवन के किसी एक पहलू में दिखाई देता है। शारीरिक क्षमता को विकसित करने वाले अच्छे खिलाड़ी, पहलवान के रूप में नजर आते हैं। जिन्होंने विचार शक्ति को विकसित किया है उन्हें दार्शनिक, मनीषी, वैज्ञानिक के रूप में जाना जाता है। इसी तरह कल्पना और भाव शक्ति को विकसित करनें वाले को कवि, कलाकार, साहित्यकार, युग सृजेता के रूप में पहचाना जाता है। इनमें से प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्र में प्रतिभाशाली है ।

यद्यपि एक पक्ष के उत्कर्ष के साथ ऐसा नहीं है कि दूसरा पक्ष समाप्त हो गया हो। पहलवान अथवा खिलाड़ी में प्रधानता तो शारीरिक शक्ति की रहती है, पर सोचने विचारने व कल्पना करने की क्षमताएँ भी होती हैं, भले कम हों, अन्यथा दावँ-पेच सीखना कैसे बन पड़ेगा। दार्शनिक, वैज्ञानिक बुद्धिप्रधान जीवन जीते हैं पर उनका शरीर भी सक्रिय रहता है। यही बात कलाकार, कवि के साथ लागू होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि विकसित स्थिति में एक पक्ष प्रधान होता है, दूसरा पक्ष गौण।

प्रतिभा शरीर, बुद्धि एवम् मन तीनों की होती है। पर इसे न समझ पाने के कारण साधारणतया हम उसी को प्रतिभाशाली मानते हैं जिसमें बौद्धिक विकास काफी मात्रा में हुआ हो। यह मान्यता गलत तो नहीं पर आंशिक रूप से सत्य है। बुद्धि का स्थान शरीर की अपेक्षा कहीं ऊँचा है, अतएव शरीर इसका अनुसरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करे तो कोई गैर नहीं। किन्तु इसके बाद भी शरीर के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। सही माने में प्रतिभाशाली बनने का मतलब है अपनी सारी क्षमताओं को जाग्रत करना। अपने यहाँ इसी समग्रता को आदर्श माना गया है। इसी कारण हनुमान प्रतिभा के प्रतीक के रूप में स्वीकारे गए। उनमें प्रबल शारीरिक क्षमता के साथ, बुद्धि की प्रखरता भी है जिसके कारण उन्हें ''बुद्धिमतां वरिष्ठं'' कहा गया। इसके अलावा कवित्व की प्रतिभा जो हनुमान्नाष्टक में देखने को मिलती है वह समग्रता वर्तमान युग में दयानन्द, विवेकानन्द आदि के जीवन में देखी जा सकती है।

आज की स्थिति में मानव समुदाय का अवलोकन करने पर दो स्थितियाँ सामने आती हैं। एक स्थिति जड़ता अथवा मूढ़ता की है। बहुसंख्यक समुदाय इस दशा में पड़ा हुआ है। उसकी सारी क्षमताएँ सुप्त हैं। जीवन में तमोगुण का इतना घना अँधेरा छाया रहता है कि कुछ करने, सोचने, विचारने की बात सुझाई नहीं देती है। इस समुदाय के लोगों की दशा उस अफीमची अथाव शराबी की तरह है, जो अपनी गरिमा व सामर्थ्य को भुला कर किसी नाली अथवा कूड़े के ढेर में पड़ा रहता है। जिन्दगी के दिन ज्यों-त्यों कटके गुजरते हैं।

प्रतिभा सिर्फ क्षमताओं का जागरण ही नहीं अपितु उनका सुनियोजन भी है। हममें से प्रत्येक के भीतर चन्द्रशेखर आजाद जैसी बलिष्ठता व कर्मठता, अरविन्द, विवेकान्द सी दार्शनिकता, कालिदास, होमर दाँते जैसा कवित्व समाया हुआ है। इन अद्भुत क्षमताओं को न पहचानने के कारण ही हम गई-गुजरी स्थिति में रह रहे हैं। मनुष्य होकर भी मरी-गिरी स्थिति में कीड़े-मकोड़ों सी जिन्दगी गुजार रहे हैं। इसका कारण है—हमारी जड़ता और उन्माद। दोनों ही दशाओं में हम अपने को भूले रहते हैं।

गर्भ से प्रतिभाशाली विरले होते हैं। इन्हें नियम न कह कर अपवाद कहना ठीक होगा। नियमानुसार तो प्रायः सभी यहीं पर अपने को विकसित करते हैं। जर्मन के विख्यात कवि गेटे ने एक स्थान पर कहा है कि प्रकृति ने हमें वे सारी चीजें दी हैं जिनकी समय और परिस्थितियों के अनुसार आवश्यकता है। हमारा अपना कर्तव्य है इनका सुनियोजित विकास।

श्री अरविन्द आश्रम की माताजी ने पृथ्वी को प्रतिभा जागरण की प्रयोगशाला माना है। उनके अनुसार हमारे जीवन और परिवेश की अन्तःक्रिया सिर्फ इसीलिए है कि हमारी सुप्त क्षमताएँ जागें और उपयोगी बनें।

विभिन्न प्रतिभाशाली लोगों के जीवन में यह तथ्य देखा जा सकता है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने अपनी किताब—''*वर्ल्ड एज आई सॉ*'' में अपने जीवन की एक घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि बचपन में उनकी गणना मूर्खों में होती थी। स्कूल में वे सबसे बुद्धू थे। उनकी बुद्धिहीनता से तंग आकर उनके एक शिक्षक ने यहाँ तक कह दिया ''तुम कभी कुछ नहीं बन पाओगे—अल्बर्ट।'' किन्तु बचपन के बुद्धू अल्बर्ट ने जब विचार शक्ति का जागरण किया तो उनकी गणना दुनिया के महानतम वैज्ञानिकों में हुई। कवियों में श्रेष्ठ माने जाने वाले कालिदास के बारे में भी यही बात है। मूर्ख कालिदास में कल्पनाशीलता के जागरण ने उन्हें कवि कुल-शिरोमणि बना दिया।

आइन्स्टीन और कालिदास के जीवन में घटे तथ्य हमारे अपने जीवन में भी घट सकते हैं। प्रतिभा का जागरण कोई संयोग नहीं है। इसका सम्बन्ध भाग्य, देवता, ग्रह, नक्षत्र से भी नहीं है। किसी भी क्षेत्र में नियोजित की गई सतत् अभ्यास की कर्मठता उस क्षेत्र विशेष की सोई शक्तियों को जगाने वाली होती है। हम जिस स्थिति में है उसी में रहकर इन्हें क्रियाशील बना सकते है।

इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है अपने में निहित शक्तियों में दृढ़ विश्वास। इस विश्वास के बलबूते ही सही कर्मठता बन पड़ती है। विश्वास के अभाव में पहले ही हाथ-पैर ढीले पड़ जाते हैं। इसके साथ ही जरूरी है धैर्यपूर्वक कर्मठता को लगातार उच्चतर उद्देश्यों के लिए नियोजित किए रहना। इन्हें प्रतिभावान बनने के दो चरणों के रूप में समझा जा सकता है। जैसे-जैसे ये चरण गतिमान होंगे, अन्तर्निहित शक्तियाँ अभिव्यक्त होंगी। समूचा जीवन इनके प्रकाश से कान्तिमान हो सकेगा। जरूरत इस ओर बढ़ चलने की है। ऐसा करके हम अपने को प्रतिभाशालियों की कतार में खड़ा कर सकते हैं जिनकी कि आज प्रबल आवश्यकता है।

प्रतिभा बनाम तेजस्विता बनाम तपश्चर्या

मनुष्य अन्य जीवधारियों से भिन्न है। उसकी शारीरिक संरचना इतनी अद्भुत है कि वह कला-कौशल के क्षेत्र में न जाने क्या-क्या चमत्कार दिखा सकता है। उसका बुद्धि संस्थान इतना अद्भुत है कि सुविधा साधनों की बात ही क्या, वह उसके बलबूते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक के रूप में प्रकृति का रहस्योद्घाटन और प्राणि-जगत् का भाग्य निर्माता होने तक का दावा कर रहा है। विद्या-बुद्धि से सम्बन्धित अनेकानेक तत्वदर्शन उसने विनिर्मित किये हैं। शासन और समाज की संरचना उसी की सूझ-बूझ का प्रतिफल है। साहित्य का अक्षय भंडार उसी का सृजा हआ है। उसी ने देवी-देवताओं की सृष्टि की है। कहने को तो यह भी कहा जाता है कि ईश्वर ने भले ही सृष्टि को बनाया हो, पर ईश्वर जिस भी रूप में आज लोक मानस में स्थान पा सकता है, वह मनुष्य की ही प्रतिष्ठापना है। इस दृष्टि से तो वह सृष्टा का भी सृष्टा हुआ न ? कैसा अद्भुत है यह गले न उतरने वाला सत्य और तथ्य। मनुष्य सचमुच महान् है। दार्शनिकों ने उसे "भटका हुआ देवता" कहा है। शास्त्रकार कहते हैं कि मनुष्य से श्रेष्ठ इस संसार में और कुछ नहीं है।

बात बहुत हद तक सही भी मालूम पड़ती है। क्योंकि अवतारों से लेकर महामानवों तक का इतिहास एक ही बात बताता है, कि मनुष्य अपने आप को समझ और विकसित कर सके तो वह उस स्तर तक पहुँच सकता है, जिसका प्रतिपादन, वेदान्त दर्शन की 'शिवोऽहं', 'सच्चिदानंदोऽहम्'- 'अयमात्मा ब्रह्म', 'तत्वमसि' आदि उक्तियों के माध्यम से, उसे ईश्वर सिद्ध करता है। ईश्वर का राजकुमार या प्रतिनिधि होने का दावा तो अनेक मूर्धन्यों ने अनेक बार किया है। ईसा को ईश्वर पुत्र होने की मान्यता मिली है।

यह पृथ्वी अनादिकाल से ऊबड़-खाबड़, खाई-खड्डों से भरी हुई अनगढ़ जीव-जन्तुओं की क्रीड़ास्थली रही होगी। उसे आज की स्थिति में लाने और स्वर्गादपि गरीयसी बनाने में मनुष्य की कलाकारिता की ही प्रधान भूमिका रही है। वनमानुष या नर वानर की आदिम स्थिति से ऊपर उठकर उसने अपने को क्या से क्या बना लिया, इसे देखकर हैरत में रह जाना पड़ता है। प्रकृति की रहस्यमयी शक्तियाँ कभी अविज्ञात रही होंगी, पर आज तो उसने परमाणु में विद्यमान शक्ति स्रोतों को हस्तगत कर लेने से लेकर अन्तरिक्ष पर साम्राज्य स्थापित करने तक की ठानी है। मनुष्य सचमुच वह है, जो कुछ इस ब्रह्माण्ड में महान् से महान्तम् हो सकता है ।

आश्चर्य इस बात का है कि उसे भटकाव ने इस बुरी तरह से जकड़ा कि अपने अस्तित्त्व, महत्त्व एवं स्तर के संबंध में इतना अधिक दिग्भ्रान्त हो गया है कि उसे भटकाव की चरम सीमा कहा जा सकता है ।

भटकाव का पहला सोपान वहाँ से आरंभ होता है, जहाँ मनुष्य अपनी सत्ता, महिमा, गरिमा और क्षमता के संबंध में लगभग पूरी तरह विस्मृति की खुमारी में चला जाता है । अपनी आकृति-प्रकृति की भिन्नता को तो देखता है, पर यह नहीं सोच पाता कि वह पशु स्तर के प्राणियों से चेतना के क्षेत्र में कुछ विशिष्ट है । प्राणी पेट भरने और प्रजनन के कौतुक का रसास्वादन करने के लिए जीवित रहते हैं । उन्हें न मर्यादाओं के प्रति श्रद्धा होती है और न वर्जनाओं से बचने की आस्था । बंधनों, उत्तेजनाओं और अवरोधों से बाधित होकर ही वे अनुचित को अपनाने से रुक पाते हैं । स्वच्छन्दता और क्षमता रहने की स्थिति में उन्हें मर्यादा पालन में कोई उत्साह नहीं रहता । आवश्यकता और मनमर्जी ही उनकी प्रेरणा के स्रोत होते हैं । मनुष्य की भावना और धारणा भी ऐसी हो, तो उसे नर पशु से अधिक और कुछ नहीं कहा जा सकता है । जिन्होंने लोभ, मोह और अहंकार की लिप्सा लालसा को ही अपना लक्ष्य मान लिया है, वे उचित-अनुचित का अन्तर किस प्रकार कर सकेंगे ? संकीर्ण स्वार्थपरता के भव-बन्धनों से छुटकारा पा सकना उनसे कैसे बन पड़ेगा ? जिन्हें सम्पन्नता की तृष्णा और बड़े कहलाने की महत्वाकांक्षाएँ जकड़े रहती हैं, उनके लिए विचारशीलता के स्वच्छन्द आकाश में पंख फड़फड़ाना कैसे संभव है ? आम आदमी साधनों और क्षमताओं की दृष्टि से कैसा ही क्यों न दीख पड़े, पर उसे आदर्शों की उमंगें प्रभावित ही नहीं करतीं । उत्कृष्टता की गरिमा अपनाने के लिए उमंगें ही नहीं उठतीं, पुण्य और परमार्थ का प्रसंग तो एक प्रकार से छूट ही जाता है, जिसके लिए सृष्टा ने मानवी उत्कृष्टता का, लगभग देवोपम स्तर का सृजन विशेष रूप से किया है । उसके पूरी तरह छूट जाने के उपरान्त व्यक्ति क्षुद्र कृमि-कीटकों की गई-गुजरी श्रेणी में ही गिने जाने योग्य रह जाता है, भले ही वह पदाधिकारी, पदवीधारी, सम्पन्न, कुशल एवं विभूतिवान ही क्यों न समझा जाता हो । यह सुविधाएँ मात्र शारीरिक विलासिता, सज्जा अथवा इठलाने भर के काम आती हैं। अन्तःचेतना को इनकी बहुलता से न तो सन्तोष होता है और न उल्लास मिलता है, जिसके आधार पर वह अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यही है वह अभाव जिसके बिना हर घड़ी उद्विग्नता एवं खीझ छाई रहती है ।

धर्म चर्चा तो कई लोग करते और सुनते रहते हैं । पर होता वह सब कुछ खोखला ही है । लोग पूजा-पाठ के कर्मकाण्डों, तीर्थ-पर्यटनों, भजन-प्रदर्शन की विडम्बनाओं से मन बहलाते और अपने को धर्मध्वजी मानते देखे गये हैं । पर बात वस्तुतः वैसी है नहीं । कर्मकाण्डों का एक मात्र मन्तव्य यह है कि चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में अधिकाधिक शालीनता का समावेश करें । जिन्हें धर्म में वस्तुतः कुछ रुचि है, उन्हें देवोपम स्तर का जीवन यापन करते देखा जाना चाहिए । उनका अंतरंग और बहिरंग दोनों ही प्रामाणिकता एवं प्रखरता से भरे होने चाहिए । अनौचित्य को अपनाकर भी लोग सुविधा-साधनों का संग्रह और चारण-चाटुकारों के माध्यम से मिल सकने वाली प्रशंसा बटोर लेते हैं, पर उनमें न तो यह गहराई होती है और न स्थिरता । धुएँ से बने बादल कितने ही घने क्यों न हों, हवा के एक झोंके में जिधर-तिधर बिखर जाते हैं। छलावा पानी के बबूले की तरह कुछ ही क्षणों में अपना अस्तित्त्व गँवा बैठता है ।

प्रतिभा-अन्तः की उपलब्धि

प्रतिभा के विपुल भण्डार मनुष्य की अन्तः सत्ता में भरे पड़े हैं; उन्हें उभरने-प्रकट होने का अवसर उन दबावों के कारण आने ही नहीं पाता, जो कषाय-कल्मषों के रूप में आत्म सत्ता के ऊपर स्वेच्छापूर्वक लाद लिये गये हैं । लकड़ी को पानी पर तैरते रहना चाहिए, पर यदि उस पर भारी चट्टानें बांध दी जायें तो अपना स्वाभाविक गुण तैरना दब कर रह जाता है । विभूतिवान होते हुए भी मनुष्य निकृष्टता की चट्टान सिर पर लाद लेने के उपरान्त तैरने और अपना वास्तविक स्वरूप दिखा पाने की स्थिति में रह ही नहीं जाता ।

प्रसुप्त प्रतिभा को जागरण का अवसर मिले, इसके लिए आवश्यक है कि भ्रष्ट चिन्तन से अन्तराल को और दुष्ट आचरण से काय कलेवर को बचाये रहने का प्रयत्न किया जाय । यह तभी बने पड़ेगा जब अवांछनीय महत्वाकांक्षाओं की हथकड़ी-बेड़ी से हाथ पैर खुले रहें । लोगों की उत्कंठा धनाढ्य बनने में रहती है, ताकि विलासिता के विपुल साधन जुटाये जा सकें; साथ ही अभावग्रस्तों की बिरादरी में अपने को बढ़ा-चढ़ा सिद्ध करने की मूँछें मरोड़ी जा सकें। इतनी छोटी सीमा में जिनका अन्तराल केन्द्रीभूत होकर रह गया है, वे उन महान् कार्यों के प्रति उन्मुख ही नहीं हो सकते, जो मानवी गरिमा में चार चाँद लगाते हैं । खूँटे से बँधी हुई नाव चप्पू चलाते रहने पर भी आगे कहाँ बढ़ पाती है । संकीर्ण स्वार्थपरता से ग्रसित व्यक्ति न तो आदर्शवादिता अपना सकता है और न ऐसा कुछ कर सकता है, जिसे उत्कृष्ट कहा जा सके । सज्जा की विडम्बना रच कर तो कुरूप वेश्याएँ भी अपने को परी जैसी सुन्दर दिखाने का भ्रम रचती रहती हैं ।

प्रतिभा कहीं बाहर से बटोरनी नहीं पड़ती । उसे सदा भीतर से ही उभारा जाता है । इसके लिए उन अवरोधों को हटाना अनिवार्य है, जो भारी चट्टान की तरह उत्कृष्टता के मार्ग में भयानक अवरोध बन कर अड़े होते हैं । इस संदर्भ में स्मरण रखने योग्य तथ्य है कि औसत नागरिक स्तर का निर्वाह अंगीकार किया जाय, अन्यथा तृष्णा और वासना की लिप्सा इतनी सघनता के साथ छाई रहेगी कि अपनी सामर्थ्य की तुलना में अकिंचन जितना परमार्थ भी करते न बन पड़ेगा । यह खाइयाँ इतनी चौड़ी और इतनी गहरी हैं कि छोटे से जीवन का समूचा साधन, श्रम, कौशल खपा देने पर भी उन्हें भरा नहीं जा सकता । फिर वह बन ही कैसे पड़े जो उत्कृष्टता के साथ अति सघनता पूर्वक जुड़े हुए प्रतिभा परिष्कार का पुण्य प्रयोजन संतोषजनक मात्रा में उपलब्ध करा सके ।

लालसाजन्य भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं में कटौती किये बिना किसी के पास भी इतना समय, श्रम, साधन बच नहीं सकता, जिसके सहारे आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण की दिशा में कुछ कहने लायक कदम उठ सके । साधु और ब्राह्मणों को भूसुर की, पृथ्वी के देवता की उपमा दी जाती रही है । वह इसलिए कि उन्होंने संयम, अपरिग्रह, संतोष की राह अपनायी । अपने निजी बड़प्पन में जिसकी जितनी अभिरुचि होगी, वह उतना ही अपने को व्यस्त और अभावग्रस्त अनुभव करेगा । सदा यही कहता रहेगा कि अपनी समस्याओं से ही घिरा हुआ हूँ । जब कि वस्तुतः वास्तविक समस्याएँ मनुष्यों के सामने होती ही कितनी हैं ? फिर यदि उन्हें व्यावहारिक बुद्धि द्वारा समझदारी के साथ सुलझाया जाय, तो इतनी सरलतापूर्वक सुलझ जाती हैं, मानों वे वस्तुतः थीं ही नहीं । भ्रान्तियों के कारण वे बढ़ी या लाद दी गयी हैं ।

संयम नियम के कितने ही अनुबंध हैं, जिनमें आहार-विहार की शुद्धि, सज्जनता, सद्भावना, श्रमशीलता, मितव्ययता, स्वच्छता, सहकारिता,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुशासनप्रियता आदि प्रमुख हैं । इनके विपरीत अनेक दोष हैं : असंयम, चटोरापन, आलस्य, प्रमाद, निष्ठुरता, स्वच्छंदता, अपव्यय, व्यसन आदि जो प्रगति में बाधक बनते हैं । यह सब देखने-सुनने में बहुत ही दुष्कर प्रतीत होते हैं; पर वस्तुतः हैं संकीर्ण स्वार्थपरता और स्वेच्छाचार की पैदा की हुई औलाद ही । इनमें से एक-एक को गिनना और रोकथाम करना मेंढक तोलने के समान है । बिस्तर को धूप में डाल देने के उपरान्त खटमल और उनके अंडे बच्चे सभी मर जाते हैं । इसी प्रकार दृष्टिकोण को उदात्त बना लेने के उपरान्त अपना स्वरूप, लक्ष्य और कर्त्तव्य तीनों ही सूझ पड़ते हैं । उस प्रकाश के जलते ही उन भूत पलीतों से छुटकारा मिल जाता है, जो अंधेरे के कारण सामान्य होते हुए भी, डरावने बनकर भयभीत करते और त्रास देते थे ।

दृष्टिकोण में जब विशालता का समावेश होता है तो लगता है कि परमार्थ ही परम स्वार्थ है । इसके बराबर लाभ और किसी व्यवसाय में नहीं । इस तथ्य को इतिहास प्रसिद्ध सभी महामानवों से लेकर सामयिक श्रद्धाभाजन व्यक्तियों के ऊपर बरसती हुई सद्भावना को देखकर सहज समझा जा सकता है, कि व्यक्तिगत लाभ की बात सोचने वाले भी यदि दूरदर्शी हों, तो उन्हें परमार्थ प्रयोजनों में अपनी क्षमता लगाने के उपरान्त बदले में कई गुना अधिक मिलता है । एक बीज बोया जाता है, पर हजार गुना होकर लौटता है । यही नीति महामानवों की रहती है । वे समाज के खेत में पुण्य परमार्थ के बीज बिखेर देते हैं और उस फसल को अपने लिए ही नहीं, समाज के लिए भी काटते व विश्व वसुधा को लाभान्वित करते हैं । यही प्रतिभा का चिह्न है ।

प्रतिभा, तेजस्विता को कहते हैं । यह चेहरे की चमक या चतुरता नहीं, वरन् मनोबल पर आधारित ऊर्जा है । गाँधी जी ९६ पौण्ड वजन और ५ फुट दो इंच के थे । रंग के काले और कुरूप भी; पर उनका तेजस् ऐसा था कि जन-साधारण से लेकर देश के वरिष्ठ मूर्धन्यों तक को उनका आदेश शिरोधार्य करते देखा जा संकता था । यहाँ तक कि विशाल साम्राज्य के अधिपति अँग्रेज भी उनसे प्रभावित होकर बिस्तर गोल करके चले ही गये । यह तेजस् निजी और सामूहिक जीवन के हर पक्ष को जगमगाता है । उसे प्रखरता भरी ऊर्जा से जाज्वल्यमान बना देता है ।

तेजस्विता तपश्चर्या की उपलब्धि है, जो निजी जीवन में संयम साधना और सामाजिक जीवन में परमार्थ परायणता के फलस्वरुप उद्भूत होती है । संयम अर्थात् अनुशासन का, आत्म-नियंत्रण का कठोरतापूर्वक परिपालन । इसके लिए मनुष्य को तृष्णा-वासना और अहंता के त्रिविध नागपाशों से छूटना पड़ता है । सादा जीवन उच्च विचार का ब्राह्मणोचित औसत नागरिक स्तर का जीवन-यापन करना पड़ता है । जो इतना कर सके, उन्हीं से परमार्थ सधता है और योगियों में पाई जाने वाली सिद्धियों, शक्तियों और विभूतियों का अन्तराल में उद्भव और अखिल अन्तरिक्ष से अभिवर्षण होता है । दैवी अनुग्रह या वरदान भी इसी को कहते हैं ।

कर्मकाण्ड परक इसके साधना विधान अनेक हैं, पर सर्वसुलभ प्रक्रिया यही है कि निजी जीवन इतना हलका-फुलका रखा जाय कि उसका निर्वाह न्यूनतम श्रम और समय में ही संभव होता रहे । इसके उपरान्त ही श्रम, समय और साधन इतनी मात्रा में बच पाते हैं कि उनके आधार पर परमार्थ में निरत रहकर परब्रह्म के साथ एकात्म, होने का रसास्वादन किया जा सके, देवोपम जीवन जीने का आनन्द लाभ उठाया जा सके।

किस प्रयोजन के लिए, किस अवसर पर, किस प्रकार, क्या संयम बरता जाय, यह निर्णय-निर्धारण व्यक्ति विशेष की परिस्थिति और मनःस्थिति को देखते हुए करना पड़ता है । जिसके जीवन का जो पक्ष उद्धत हो चला हो, उसे सर्कस के जानवरों की तरह बल चातुर्य प्रयोग करते हुए कला-कौशल दिखा सकने के लिए प्रशिक्षित करना पड़ता है । शरीर और मन दोनों को ही शालीनता अपनाये रहने के लिए अभ्यस्त करना पड़ता है । संयम योग यही है । जो इतना कर सका, वही पुण्य परमार्थ अर्जित करने का भी अधिकारी है । उद्धत आचरण वाला व्यक्ति कीचड़ से कीचड़ धोने के प्रयत्न में क्या कुछ सफलता प्राप्त कर सकेगा ? शालीनता और परमार्थ परायणता मिल कर ही तपश्चर्या बनती है और उन्हीं के आधार पर प्रतिभा की ऊर्जा अपनी प्रचंडता का परिचय देती है।

प्रतिभा से बढ़कर और कोई समर्थता है नहीं

आदर्शवादी प्रयोजन, सुनियोजन, व्यवस्था और साहस भरी पुरुषार्थ-परायणता को यदि मिला दिया जाय, तो उस गुलदस्ते का नाम प्रतिभा दिए जाने में कोई अत्युक्ति न होगी।

कहते हैं कि सत्य में हजार हाथी के बराबर बल होता है। सच्चाई तो इस कथन में भी हो सकती है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर यदि उसके साथ प्रतिभा भरी जागरूकता-साहसिकता को भी जोड़ दिया जाय, तो सोना और सुगंध के सम्मिश्रण जैसी बात बन सकती है। तब उसे हजार हाथियों की अपेक्षा लाख ऐरावतों जैसी शक्ति सम्पन्नता भी कहा जा सकता है। उसे मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी शक्ति सम्पन्नता एवं सौभाग्यशाली भी कही जा सकती है।

आतंक का प्रदर्शन, किसी भी भले-बुरे काम के लिए, दूसरों पर हावी होकर उनसे कुछ भी भला-बुरा करा लेने के, डाकुओं जैसे दुस्साहस का नाम प्रतिभा नहीं है। यदि ऐसा होता, तो सभी आतंकवादी, अपराधियों को प्रतिभावान कहा जाता; जबकि उनका सीधा नाम दैत्य या दानव है। दादागीरी, आक्रमण की व्यावसायिकता अपनी जगह काम करती तो देखी जाती है; पर उसके द्वारा उत्पीड़ित किये गये लोग शाप ही देते रहते हैं। हर मन में उनके लिए अश्रद्धा ही नहीं, घृणा और शत्रुता भी बनती है। भले ही प्रतिशोध के रूप में उसे कार्यान्वित करते न बन पड़े। सेर को सवासेर भी मिलता है। ईंट का जवाब पत्थर से मिलता है, भले ही उस क्रिया को किन्हीं मनुष्यों द्वारा सम्पन्न कर लिया जाय अथवा प्रकृति अपनी परम्परा के हिसाब से उठने वाले बबूले की हवा स्वयं निकाल दे।

यदि प्रतिगामी, प्रतिभावान समझे जाते, तो अब तक यह दुनिया उन्हीं के पेट में समा गयी होती और भलमनसाहत को चरितार्थ होने के लिए कहीं स्थान ही न मिलता। काया और छाया दोनों देखने में एक जैसी लग सकती हैं; पर उनमें अन्तर जमीन-आसमान जैसा होता है। मूँछें मरोड़ने, आँखें तरेरने और दर्प का प्रदर्शन करने वालों की कमी नहीं । ठगों और जालसाजों की करतूतें भी देखते ही बनती हैं। इतने पर भी उनका अन्त कुकुरमुत्तों जैसी विडम्बना के साथ ही होता है। यों इन दिनों तथाकथित प्रगतिशील ऐसे ही अवांछनीय हथकंडे अपनाते देखे गये हैं, पर उनका कार्य-क्षेत्र विनाश ही बन कर रह जाता है। कोई महत्वपूर्ण सृजनात्मक उत्कृष्टता का पक्षधर प्रगतिशील कार्य उनसे नहीं बन पड़ता।

यह विवेचना इसलिए की जा रही है कि जिनको बोलचाल की भाषा में प्रगतिशील कहा जाने लगा है, उनकी वास्तविकता समझने में किसी को भ्रम न रह जाय, कोई आतंक को प्रतिभा न समझ बैठे। वह तो उत्कृष्टता के साथ साहसिकता का नाम है। वह जहाँ भी होती है, वहाँ कस्तूरी की तरह महकती है और चंदन की तरह समीपवर्ती वातावरण को प्रभावित करती है।

गाँधी जी के परामर्श एवं सान्निध्य से ऐसी प्रतिभाएँ निखरीं, एकत्रित हुईं एवं कार्य क्षेत्र में उतरीं कि उस समुच्चय ने देश के वातावरण में शौर्य-साहस के प्राण फूँक दिये। उनके द्वारा जो किया गया, सँजोया गया, उसकी चर्चा चिरकाल तक होती रहेगी। देश की स्वतन्त्रता जैसी उपलब्धि का श्रेय, उसी परिकर को जाता है, जिसे गाँधी जी के व्यक्तित्व से उभरने का अवसर मिला, उनमें सचमुच जादुई शक्ति थी।

इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री चर्चिल भारत के वायसराय को परामर्श दिया करते थे कि वे गाँधीजी से प्रत्यक्ष मिलने का अवसर न आने दें। उनके समीप पहुँचने, वह उनके जादुई प्रभाव में फँसकर, उन्हीं का हो जाता है।

बुद्ध को मार डालने का षड्यंत्र अंगुलिमाल महादस्यु ने बनाया। वह तलवार निकाले बुद्ध के पास पहुँचा और आक्रमण करने पर उतारू ही था कि सामने पहुँचते-पहुँचते पानी-पानी हो गया। तलवार फेंक दी और प्रायश्चित के रूप में न केवल उसने दस्यु-व्यवसाय छोड़ा, वरन् बुद्ध का शिष्य बनकर शेष जीवन को धर्मधारणा के लिए समर्पित कर दिया।

ऐसा ही एक कुचक्र अम्बपाली नामक वेश्या रच कर लायी थी। पर सामने पहुँचते-पहुँचते उसका सारा बना-बनाया जाल टूट गया, वह चरणों पर गिरकर बोली-पिताजी मुझ नरक के कीड़े को किसी प्रकार पाप-पंक से उबार दें। बुद्ध ने उसके सिर पर हाथ फिराया और कहा कि 'तू आज से सच्चे अर्थों में मेरी बेटी है। अपना ही नहीं, मनुष्य जाति के उद्धार का कार्यक्रम मेरे वरदान के रूप में लेकर जा।' सभी जानते हैं कि अम्बपाली के जीवन का उत्तरार्ध किस प्रकार लोकमंगल के लिए समर्पित हुआ।

नारद कहीं अधिक देर नहीं ठहरते थे; पर उनके थोड़े से सम्पर्क एवं परामर्श से ध्रुव, प्रह्लाद, रत्नाकर आदि कितनों को ही, कितनी ऊँचाई तक चढ़-दौड़ने का अवसर मिला।

वेदव्यास का साहित्य-सृजन प्रख्यात है। उनकी सहायता करने गणेशजी लिपिक के रूप में दौड़े थे। भगीरथ का पारमार्थिक साहस धरती पर गंगा उतारने का था। कुछ अड़चन पड़ी, तो शिवजी जटा बिखेर कर उनका सहयोग करने के लिए आ खड़े हुए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विश्वामित्र की आवश्यकता समझते हुए हरिश्चन्द्र जैसों ने अपने को निछावर कर दिया। माता गायत्री का सहयोग उस महा-ऋषि को जीवन भर मिलता रहा। प्रसिद्ध है कि तपस्विनी अनुसूया की आज्ञा पालते हुए तीनों देवता उनके आँगन में बालक बनकर खेलते रहने का सौभाग्य-लाभ लेते रहे।

जापान के गाँधी 'कागावा' ने उस देश के पिछड़े समुदाय को सभ्य एवं समर्थों की श्रेणी में ला खड़ा किया था।

महामना मालवीय, स्वामी श्रद्धानन्द, योगी अरविंद, राजा-महेन्द्र प्रताप, रवीन्द्रनाथ टैगोर की स्थापित शिक्षा संस्थाओं ने कितनी उच्चस्तरीय प्रतिभाएँ विनिर्मित करके राष्ट्र को समर्पित कीं। इन घटनाक्रमों को भुलाया नहीं जा सकता। विवेकानन्द, दयानन्द आदि के द्वारा जो जन-कल्याण बन पड़ा, उसे असाधारण ही कहा जायेगा। प्रतिभाएँ सदा ऐसे ही कार्यक्रम हाथ में लेतीं और उसे पूरा करती हैं।

रियासतों को भारत-गणतंत्र में मिलाया जाना था। कुछ राजा सहमत नहीं हो रहे थे और अपनी शक्ति का परिचय देते हुए तलवार हिला रहे थे। सरदार पटेल ने कड़क कर कहा—'इस तलवार से तो मेहतरों की झाड़ू अधिक सशक्त है, जो कुछ कर तो दिखाती है।' राजाओं को पटेल के आगे समर्पण करना पड़ा।

नेपोलियन भयंकर युद्ध में फँसा था। साथ में एक साथी था। सामने से गोली चल रही थी। साथी घबराने लगा तो नेपोलियन ने कहा-डरो मत, वह गोली अभी किसी फैक्ट्री में ढली नहीं है, जो मेरा सीना चीरे। वह उसी संकट में घिरा होने पर भी दनदनाता चला गया और एक ही हुंकार में समूची शत्रुसेना को अपना सहायक एवं अनुयायी बना लिया। प्रतिभा ऐसी ही होती है।

अमेरिका का अब्राहम लिंकन, जार्ज वाशिंगटन, इटली के गैरीबाल्डी आदि की गाथाएँ भी ऐसी हैं कि वे गयी-गुजरी परिस्थितियों का सामना करते हुए जन मानस पर छाए और राष्ट्रपति पद तक पहुँचने में सफल हुए। लेनिन के बारे में जो जानते हैं, उन्हें विदित है कि साम्यवाद के सूत्रधार के रूप में उसने क्या से क्या करके दिखा दिया।

विनोबा का भूदान आन्दोलन, जयप्रकाश नारायण की समग्र क्रान्ति सहज ही भुलाई नहीं जा सकती। भामाशाह की उदारता देश के कितने काम आयी। बाबा साहब आमटे द्वारा की गयी पिछड़ों की सेवा एक जीवन्त आदर्श के रूप में अभी भी विद्यमान है। विश्वव्यापी स्काउट आन्दोलन को खड़ा करने वाले वेडेन पावेल की सृजनात्मक प्रतिभा को किस प्रकार कोई विस्मृत कर सकता है। सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द सेना अविस्मरणीय है।

भारतीय साहित्यकारों के उत्थान की गाथाओं में कुछ के संस्मरण बड़े प्रेरणाप्रद हैं। पुस्तकों का बक्सा सिर पर रखकर फेरी लगाने वाले भगवती प्रसाद वाजपेयी, भिक्षान्न से पले बालकृष्ण शर्मा "नवीन", भैंस चराने वाले रामवृक्ष बेनीपुरी आदि घोर विपन्नताओं से ऊँचे उठकर मूर्धन्य साहित्यकार बने थे। शहर के कूड़ों में से चिथड़े बटोरकर गुजारा करने वाले गोर्की विश्वविख्यात साहित्यकार हो चुके हैं। यह सब प्रतिभा का ही चमत्कार है।

उन्नति के अनेक क्षेत्र हैं, पर उनमें से अधिकांश में उठना प्रतिभा के सहारे ही होता है। धनाध्यक्षों में हेनरी फोर्ड, रॉक फेलर, अल्फ्रेड नोबुल, टाटा, बिड़ला आदि के नाम प्रख्यात हैं। इनमें से अधिकांश आरम्भिक दिनों में साधनरहित स्थिति में ही रहे हैं। पीछे उनके उठने में सूझ-बूझ ही प्रधान रूप से सहायक रही है। कठोर श्रमशीलता, एकाग्रता एवं लक्ष्य के प्रति सघन तत्परता ही सच्चे अर्थों में सहायक सिद्ध हुई है, अन्यथा किसी को यदि अनायास ही भाग्यवश या पैतृक सम्पत्ति के रूप में कुछ मिल जाय, तो यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि उसे सुरक्षित, रखा जा सकेगा या बढ़ने की दिशा में अग्रसर होने का अवसर मिल ही जायेगा। व्यक्ति की अपनी निजी विशिष्टताएँ हैं जो कठिनाइयों से उबरने, साधनों को जुटाने, मैत्री स्तर का सहयोगी बनाने में सहायता करती हैं। इन्हीं सब सद्गुणों का समुच्चय मिलकर ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्त्व विनिर्मित करता है, जिसे प्रतिभा कहा जा सके, जिसे जहाँ भी प्रयुक्त किया जाय, वहाँ अभ्युदय का, श्रेय-सुयोग का अवसर मिल सके।

प्रतिभा के सम्पादन में, अभिवर्धन में जिसकी भी अभिरुचि बढ़ती रही है, जिसने अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुविकसित बनाने के लिए प्रयत्नरत रहने में अपनी विशिष्टता की सार्थकता समझी है, समझना चाहिए उसी को अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने का अवसर मिला है। उसी को जन साधारण का स्नेह-सहयोग मिला है। संसार भर में जहाँ भी खरे स्तर की प्रगति दृष्टिगोचर हो, समझना चाहिए कि उसमें समुचित प्रतिभा का ही प्रमुख योगदान रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभा के बीजांकुर हर किसी में विद्यमान हैं

सड़क पर मोटर के पहिए दौड़ते दीखते हैं, पर इन्जन का पर्दा उठाकर देखने पर प्रतीत होगा कि उसके भीतर तेल जल कर ऊर्जा उत्पन्न कर रहा है। उस उत्पादन में भी बैटरी और डायनैमो की अपनी-अपनी भूमिका है। उसी शक्ति से अनेक कलपुर्जे अपने-अपने ढंग से घूमते और मोटर को सड़क पर दौड़ाते रहते हैं। मानवी सत्ता के सम्बन्ध में भी यही बात है। उसकी प्रत्यक्ष हलचलें हाथ, पैर, सिर, धड़, आँख, मुँह, आदि के माध्यम से कार्य करती दीख पड़ती हैं; पर त्वचा का ढक्कन उठाकर देखने से कुछ और ही प्रतीत होता है। हृदय का रक्त संचार, माँस-पेशियों का आकुन्चन-प्रकुंचन श्वाँस-प्रश्वाँस आदि हरकतें भीतरी अवयव करते हैं और उनके घर्षण से ऊर्जा का वह उत्पादन होता है, जिसके माध्यम से शरीर के सभी अंग अपनी-अपनी निर्धारित क्रिया-प्रक्रिया सम्पन्न करते रहने में समर्थ होते हैं। इन सबके भीतर भी एक गहरी परत है, जो मस्तिष्क के मध्य भाग-ब्रह्मरन्ध्र में, विद्युत् प्रवाह के उद्गम स्रोत का काम करती है। इस उद्गम का भी स्वतंत्र कर्त्तव्य नहीं है। वह अखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त महाऊर्जा से सम्बन्ध जोड़कर जितना आवश्यक है, उतना ग्रहण करती रहती है।

अंग अवयवों की बनावट तो रक्त, माँस, अस्थि, मज्जा, वसा आदि से विनिर्मित प्रतीत होती है, किन्तु वस्तुतः इनके बीच अरबों-खरबों जीवकोषों-ऊतकों की ऐसी क्रियाशीलता विद्यमान दिखाई देती है, मानो किसी स्वतंत्र विश्व का उद्भव, अभिवर्धन, परिवर्तन उनकी बीच हो रहा हो। यों जीवकोष अपने स्थान पर व्यवस्थित रूप से विद्यमान दीखते हैं; पर वे तेजी से अपना काम करते हुए अपनी सीमित सत्ता को समाप्त कर लेते हैं। वे साथ ही एक और आश्चर्य प्रस्तुत करते हैं कि अपना समानान्तर उत्तराधिकारी कोष बनाकर, अपने मरण से पूर्व स्थानापन्न कर देते हैं, ताकि रिक्तता उत्पन्न न होने पाये। मृतक कोष कचरे के रूप में बहिर्गमन छिद्रों द्वारा बाहर निकलते रहते हैं। जीवित कोष अन्न, जल, वायु जैसे पोषक माध्यमों को ग्रहण करने से लेकर पचाने तक में लगे रहते हैं।

कण-कण में निरन्तर गतिशील यह प्रक्रिया इतनी द्रुतगामी होती है, कि उसकी अनवरत क्रियाशीलता को देख कर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। इतना बड़ा कायतंत्र इतने छोटे घटकों से मिलकर बना है, यह कम आश्चर्य की बात नहीं है। उससे भी अधिक आश्चर्य इस बात का है, कि प्रत्येक जीवकोष छोटे रूप में लगभग उसी क्रिया-कलाप का अनुसरण करता रहता है, जो अपने सौर मण्डल में गतिशील रहता है। यह सब कैसे होता है? शक्ति कहाँ से आती है? साधन कहाँ से जुटते हैं? इन सबका उत्तर काय कलेवर के कण-कण में संव्याप्त और गतिशील विद्युत् प्रवाह की ओर संकेत करके ही दिया जा सकता है। चूँकि घटक अत्यंत छोटे हैं और उनमें काम करने वाली सचेतन स्तर की विद्युत् अत्यल्प मात्रा में आँकी जाती है, इसलिए वैसा कुछ अनुभव नहीं होता जैसा कि बिजली की अँगीठी या तारों को छूते समय होता है। फिर भी उनमें उपस्थित शक्ति की प्रचण्डता सुनिश्चित है। यदि ऐसा न होता, तो असंख्य लघु घटकों से विनिर्मित काया का प्रत्येक घटक, अपने-अपने कामों को इतनी मुस्तैदी से, इतनी नपी-तुली सही रीति से कर न पाता।

आंकलन कर्त्ताओं ने हिसाब लगाया है कि यदि शरीर के छोटे बड़े अनेकानेक अंग-प्रत्यंगों की बिजली को एकत्रित किया जा सके, तो उसकी शक्ति किसी विशालकाय बिजलीघर से कम न होगी। इतनी आपूर्ति किए बिना, जन्म से लेकर मरण पर्यन्त, जो असंख्य क्षेत्रों की अनेकानेक स्तर की गतिविधियाँ, बिना रुके अनवरत रूप से काम करती रहती हैं, उनका इस प्रकार क्रियाशील रह सकना संभव न हुआ होता। औसत पाँच फुट छः इन्च का यह कलेवर अपने भीतर इतनी शक्ति-सामर्थ्य छिपाये हुए है, जिसे यदि वैज्ञानिकों द्वारा स्थूल उपकरणों के माध्यम से उत्पन्न किया जाय तो, उसके लिए मीलों लम्बे विशालकाय बिजलीघर की आवश्यकता पड़ेगी। इतना विराट एवं असीम संभावनाओं से भरा है यह काया का विद्युत् भंडार।

साधारणतया इस विद्युत् प्रवाह का एक बहुत छोटा अंश ही काम आता है। उतना, जिससे हलकी-फुलकी दिनचर्या चलती रहे। आजीविका उपार्जन, उसके परिपालन, निद्रा जागृति तथा छिटपुट काम ही इसके द्वारा सम्पन्न हो पाते हैं। क्रियाशील उतना ही अंश रहता है जो काम में आता रहता है। उथली साँस लेने वालों के फेफड़ों का थोड़ा ही अंश काम में आता है, फलतः शेष अंश निर्बल-दुबल बना, किसी प्रकार अपना अस्तित्त्व भर बनाये रहता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरामतलब लोगों के शरीर का अधिकांश भाग निष्क्रिय पड़ा रहता है और उस दुर्बलता का लाभ उठाकर वहाँ कई प्रकार के रोग विषाणु जड़ जमा लेते हैं। वे काया को जीर्ण बनाकर, गिरगिट की तरह रंग बदलते रहते हैं। यही बात मस्तिष्क के बारे में भी होती है। मनुष्य की इच्छा-आकांक्षाएँ सीमित होती हैं। वह उन्हीं को पूरी करने के लिए कल्पना-जल्पना करता रहता है। मन और बुद्धि का एक छोटा अंश ही इस प्रयोजन के लिए खपता है। जिन क्षमताओं का उपयोग नहीं हो पाता, वे प्रसुप्त स्थिति में चली जाती हैं और लगभग मूर्च्छित स्थिति में किसी कोने में छिपी पड़ी रहती हैं।

मानवी विद्युत् भण्डार की असीमता, उपयोगिता और उसकी महती क्षमता का यदि विज्ञान सम्मत आंकलन किया जा सके, तो प्रतीत होगा कि वह इतनी अधिक है, कि जिसके सहारे अपना और दूसरों का इतना हित-साधन हो सकता है, जितना कि कभी-कभी मनुष्यकृत ऐतिहासिक चमत्कारों के विवरणों में पढ़कर हतप्रभ हो जाना पड़ता है। प्रचलित भाषा में इन्हें दैवी वरदानों के नाम से पुकारा जाता है, ऋद्धि-सिद्धियों का भण्डार कहा जाता है अथवा दिव्य विभूतियों के नाम से उनकी चर्चा होती रहती है। ऐसे संदर्भ भी प्रायः सही ही होते हैं, अतः मानना पड़ता है कि मनुष्य वस्तुतः असीम शक्तियों का भण्डार है। इसी बात को इस प्रकार भी कहा जा सकता है, कि वह तप के बल पर देवताओं से उच्चस्तरीय विभूति-वरदान उपलब्ध कर सकता है; किन्तु वास्तविकता इतनी-ही है कि जो कुछ उभरता है, भीतर से ही उफन कर ऊपर आया हुआ होता है।

जिन्हें पेट प्रजनन की ही गरज है, जो लोभ, मोह और अहंकार से ऊँचे उठ सकने की आवश्यकता ही नहीं समझते, उनके सम्बध में तो कहा ही क्या जाय? किन्तु जिन्हें कोई महत्त्वपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करना है, उनके लिए एक ही उपाय है कि प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत करके, उन्हें उस स्तर का अभ्यास कराये, जिसके बलबूते बड़े काम किए जाते हैं—बड़े लाभ अर्जित किये जाते हैं। दूसरों की सहायता पाने की बात को अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए। अपना पुरुषार्थ जगे, तो यह स्वाभाविक है कि खिले हुए फूल को देख कर उस पर तितलियाँ मंडरायें और भौंरे यश गीत गाने की झड़ी लगायें।

आत्मबोध की आवश्यकता और अनिवार्यता

अध्यात्म दर्शन का सार निष्कर्ष इतना भर है कि अपने को जानो 'आत्मानं विद्धि'। अपने को विकसित करो और ऐसी राह पर चलो जो कहीं ऊँचे लक्ष्य तक पहुँचाती हो। यह शिक्षा अपने आप के लिए है। इसे स्वीकार-अंगीकार करने के उपरान्त ही वह प्रयोजन सधता है जिसमें दूसरों से कुछ समर्थन, सहायता, अनुदान पाने की आशा की जाय। देवता भी तपस्वियों को ही वरदान देते हैं, बाकी तो फूल प्रसाद के दोने लिए, देव स्थानों के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं रहते हैं। भिखारी कितना कुछ कमा पाते हैं, इसे सभी जानते हैं। उन्हें जीवन भर अभावों की , उपेक्षा की शिकायत ही बनी रहती है।

वस्तुस्थिति समझने के उपरान्त उसी निमित्त उन्मुख होना चाहिए, कि अपने को अधिक प्रामाणिक और अधिक प्रखर बनाने में जुट पड़ा जाय। मनौती मानते रहने की अपेक्षा यही अवलम्बन सही और सच्चा है। इस हेतु कुछ कदम बढ़ाने से पूर्व यह अनुमान लगा लेना चाहिए कि अपने भीतर सामर्थ्य का अजस्र भण्डार भरा पड़ा है। स्रष्टा ने मनुष्य को असाधारण सफलताएं उपलब्ध कर सकने की सम्भावनाओं से भरा-पूरा बनाया है। आवश्यकता मात्र इतनी है कि अवरोध की झीनी दीवार को गिराने के लिए साहस जुटाया जाय। अण्डों में जब चूजा समर्थ हो जाता है, तो वह भीतर से जोर लगाता है और छिलके को तोड़ कर बाहर आता है। इसके बाद तो उसकी माता ही सहायता करने लगती है। प्रसव वेदना का कारण एक ही है कि गर्भस्थ बालक बाहर निकलने के लिए अपनी शक्ति प्रयोग करता है। यदि भ्रूण अति दुर्बल और मृत-मूर्छित हो, तो प्रसव की संभावना अतीव दुष्कर हो जाती है।

गर्मी संघर्ष से उत्पन्न होती है। हलचल और प्रगति भी उसी के सहारे बन पड़ती है। प्रतिभा परिष्कार के लिए भी वही करना पड़ता है। अखाड़े में कड़ी मेहनत किए बिना कोई पहलवान कैसे बने ? सैनिकों को अनेक प्रकार के कठिन अभ्यास आये दिन करने पड़ते हैं। नदियों का प्रवाह अनेक चट्टानों को उलटता हुआ आगे बढ़ता है। मोर्चा जीतने के लिए रणक्षेत्र में अपने कौशल का परिचय देना होता है। भँवरों वाली तेज धार को चीरते हुए नाव को पार ले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने वाले साहस का परिचय ही किसी नाविक को विशिष्टता का गौरव प्रदान करता है।

प्रतिभा परिष्कार की आरम्भिक शर्त है—अपने आप से जूझना, इस हेतु आलस्य और प्रमाद से सर्वप्रथम लड़ना पड़ता है। उसके स्थान पर चुस्त दुरुस्त रहने की जागरूकता को धारण करना पड़ता है। निराशा, अनुत्साह, चिन्ता, खिन्नता जैसे मानसिक दुर्गुणों के साथ तब तक संघर्ष करना पड़ता है, जब तक कि उनके स्थान पर आशा, प्रसन्नता, उमंग निश्चिन्तता, निर्भयता और शिष्टता जैसी सत्प्रवृत्तियाँ अपने आप को प्रतिष्ठित न कर लें। यह नित्य ध्यान रखने और निरन्तर अभ्यास करने का विषय है, जिसे बिना रुके, बिना हारे, अनवरत रूप से क्रियान्वित ही किए रखना चाहिए।

प्रतिभा त्रिवेणी की तरह है। जिसमें शारीरिक ओजस, मानसिक तेजस् और अन्तराल में सन्निहित वर्चस को जगाना, उभारना और प्रखरता सम्पन्न बनाने के स्तर तक उठाना पड़ता है। संयम सध सके तो स्वस्थ रहने की गारंटी मिल जाती है। उपयुक्त काम का चुनाव करके, उसमें अभिरुचि, एकाग्रता और तत्परता का नियोजन किये रखा जाय, तो साधारण काम-काज भी इस अभ्यास के सहारे अधिकाधिक बुद्धिमत्ता और कुशलता प्रदान करते चलते हैं। इसी आधार पर शारीरिक ओजस् और मानसिक तेजस् की उतनी मात्रा उपलब्ध हो सकती है, जिस पर संतोष और गर्व अनुभव किया जा सके। सदाशयता पर सघन श्रद्धा के होने का नाम ही वर्चस् है। आदर्शवादिता इसी अवलम्बन को अपनाती है और उत्कृष्टता को इससे कम में चैन नहीं पड़ता। वर्चस् जिसके भी अन्तराल में उभरता है उसमें शालीनता की, सदाशयता की, सज्जनता की कमी नहीं रहती। इस दिव्यता का जितना अंश जिसके हाथ लग जाता है वह उतने ही अंशों में धन्य हो जाता है।

उच्चस्तरीय प्रतिभा ही ब्रह्म तेजस् है। उसी को ब्रह्मवर्चस् भी कहते हैं। उसे जिसने भी पर्याप्त मात्रा में अर्जित कर लिया है, वह शरीर से सामान्य होते हुए भी अपनी चेतनात्मक प्रखरता के सहारे ऐसे पुण्य प्रयोजन सम्पन्न कराने में समर्थ रहा है, कि उसे अनुकरणीय भी माना जाय और अभिनन्दनीय भी। भगवान बुद्ध का उदाहरण प्रत्यक्ष है। उनने अपने जीवनकाल में एक लाख भिक्षु-भिक्षुणी परिव्राजक बनाकर विश्व के कोने-कोने में धर्म चक्र प्रवर्तन के लिए भेजे थे और वे सभी एक से एक बढ़ी-चढ़ी उपलब्धियाँ पाने में सफल हुए थे। अशोक और हर्षवर्धन ने उनके प्रतिपादन से प्रभावित होकर अपना विपुल वैभव उनके आदेशों पर निछावर कर दिया था। अम्बपाली और अंगुलिमाल जैसों ने निकृष्टता का परित्याग कर, उत्कृष्ट स्तर का अपना कायाकल्प कर लिया था।

चाणक्य की एकाकी योजना ने भारत पर आक्रमण करते रहने वाले आक्रान्ताओं, आतंकवादियों को उनके बिलों में वापस लौटने के लिए बाधित कर दिया था। अनेक अनुभवी उनके सहायक बने थे। नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना करने से लेकर उसके संचालन तक की जिम्मेदारी का निर्वाह उनकी प्रतिभा ही करती रही थी। चुम्बक अपने समकक्षों को खींचता-जुटाता तो अनायास ही रहता है।

महामना मालवीय जी आरम्भ में सामान्य वकील और सम्पादक थे; पर जब उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण का संकल्प लिया तो प्रायः पचास करोड़ की सम्पत्ति उन लोगों से जुटाई, जिनके साथ उनकी कोई पूर्व की जान-पहचान तक न थी।

अर्जुन ने पाताल से गंगा उभार कर भीष्म को ताजा जल पिलाया था । भीष्म भी कुछ कम न थे, शर-शैया पर पड़े हुए असह्य वेदना सहते हुए भी उनने मौत से कह दिया था कि अभी मरने की फुरसत नहीं है। वह लौट गयी और तब आयी जब उत्तरायण सूर्य में उनने चलने का मुहूर्त निश्चित किया था। मनस्वी के आगे नियति भी पानी भरती है। सावित्री ने यमराज के हाथों से अपने मृत पति को जीवित करा, वापस लौटा लिया था। दमयन्ती के नेत्र तेज से व्याध का जल जाना प्रसिद्ध है। गौतम ऋषि के शाप से सगर पुत्रों की क्या दुर्गति हुई थी, यह भी इतिहास प्रसिद्ध है।

राणा सांगा अस्सी गहरे घावों से आहत होते हुए भी मृत्यु पर्यन्त शत्रु से लड़ते रहे थे। वाल्टेयर ने अस्पताल की चारपाई पर पड़े-पड़े ही इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे थे कि उनके पुरुषार्थ को देखते हुए आश्चर्यचकित हुए बिना रहा नहीं जाता। संसार के इतिहास में ऐसे अनेक करोड़पतियों का उल्लेख है, जिनकी निजी योग्यता और पूँजी नहीं के बराबर थी, फिर नियति ने उन्हें अदम्य उत्साह, सूझबूझ के सहारे धन कुबेर बनने का अवसर प्रदान किया। बाटा से लेकर टाटा एवं हेनरी फोर्ड, रॉकफेलर तक की बड़ी नामावली इसी पंक्ति में खड़ी दीख पड़ती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जापान के गाँधी कागाबा ने एक गंदे मुहल्ले में सेवा कार्य आरम्भ करते हुए, अन्ततः जापान के पतितोद्धारक के रूप में अद्‌भुत प्रतिष्ठा अर्जित की थी। बिहार का हजारी किसान अपनी लगन के बल पर उस क्षेत्र में हजार आम्र उद्यान लगाने में सफल हुआ था।

ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। वे भूतकाल में भी असंख्य थे और अब भी जहाँ-तहाँ से एक-एक बढ़ी-चढ़ी सफलताएँ अर्जित कर रहे हैं । इसमें व्यक्ति विशेष का नहीं, वरन् उसकी परिष्कृत प्रतिभा का ही चमत्कार दृष्टिगोचर होता है । यह हर किसी के लिए संभव है । आवश्यकता इतनी भर है कि लगन सच्ची हो और उसके लिए योजनाबद्ध रूप से पुरुषार्थ करने में कुछ उठा न रखा जाय ।

उत्कृष्टता के साथ जुड़ें, प्रतिभा के अनुदान पायें

प्रतिभा किसी पर आसमान से नहीं टपकती । उसे पुरुषार्थपूर्वक, मनोबल के सहारे अर्जित करना पड़ता है । अब तक के प्रतिभाशालियों के प्रगतिक्रम पर दृष्टिपात करने से एक ही निष्कर्ष निकलता है, कि अपनाये गये काम में उल्लास भरी उमंगें उमड़ती रहीं, मानसिक एकाग्रता के साथ तन्मयता जुटाई गयी, पुरुषार्थ को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर अवरोधों से जूझा गया तथा प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलकर अपनी प्रखरता का परिचय दिया गया । सफलताएँ इसी आधार पर मिलती हैं । सफलता मिलने पर हौसले बुलंद होते हैं । दूने उत्साह से काम करने को जी करता है । इस प्रयास में प्रतिभा विकसित होती है और परिपक्व भी बनती है । उत्कर्ष यही है । अभ्युदय का श्रेय इसी आधार पर आँका जाता है । इक्कीसवीं सदी प्रतिभावानों की क्रीड़ास्थली होगी । उन्हीं के द्वारा वह कर दिखाया जायेगा जो असंभव नहीं तो कष्टसाध्य तो कहा ही जाता रहा है ।

हवा का रुख पीठ पीछे हो तो गति में अनायास ही तेजी आ जाती है । वर्षा के दिनों में बोया गया बीज सहज ही अंकुरित होता है और उस अंकुर को पौधे के रूप में लहलहाते देर नहीं लगती । बसन्त में मादाएँ गर्भधारण के कीर्तिमान बनाती हैं । किशोरावस्था बीतते-बीतते जोड़ा बनाने की उमंग अनायास ही उभरने लगती है । वातावरण की अनुकूलता में, उस प्रकार के प्रयास गति पकड़ते हैं और प्रायः सफल भी होते हैं ।

दिव्यदर्शी अन्तःस्फुरण के आधार पर यह अनुभव करते हैं कि समय के परिवर्तन की ठीक यही बेला है। नवयुग के अरुणोदय में अब अधिक विलम्ब नहीं है । जन मानस वर्तमान अवांछनीयताओं से खीझ और ऊब उठा है । उसकी आकुलता, आतुरता के साथ वह दिशा अपना रही है, जिस पर चलने से घुटन से मुक्ति मिल सके और चैन की सांस लेने का अवसर मिल सके । साथ ही विश्व वातावरण ने भी अपना ऐसा निश्चय बनाया है, कि अनौचित्य को उलट कर औचित्य को प्रतिष्ठित करने में अनावश्यक विलम्ब न किया जाय । उथल-पुथल के ऐसे चिह्न प्रकट हो रहे हैं जो बताते हैं कि नियति की अवधारणा-सदाशयता की ज्ञानगंगा का अवतरण, आज की आवश्यकता के अनुरूप इन्हीं दिनों बन पड़ना सुनिश्चित है ।

दुर्दान्त रावण का अन्त होना था, तो दो तापसी युवक ही उस विशाल परिकर को धराशायी करने में समर्थ हो गये । दुर्धर्ष हिरण्यकश्यप हारा और प्रहलाद का सिक्का जम गया । समय आने पर, किसी दिग्भ्रान्त करने वाले झाड़ झंखारों में जंगल को दावानल बन कर नष्ट करने में एक चिन्गारी भी पर्याप्त हो सकती है। प्रलय की चुनौती जैसी ताड़का को राम ने और पूतना को कृष्ण ने बचपन में ही तो धराशायी कर दिया था । महाकाल का संकल्प यदि युग परिवर्तन का तारतम्य इन्हीं दिनों बिठा ले, तो किसी को भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए ।

निकट भविष्य की कुछ सुनिश्चित सम्भावनायें ऐसी हैं जिनमें हाथ डालने वाले सफल होकर ही रहेंगे । अर्जुन की तरह नियति द्वारा पहले से ही मारे गये विपक्षियों का हनन करके अनायास ही श्रेय और प्रेय का दुहरा लाभ प्राप्त करेंगे । इसी माहौल में उन्हें प्रतिभा परिवर्धन का वह लाभ भी मिल जायेगा जिसके आधार पर मूर्धन्य युगशिल्पियों में उनकी भी गणना हो सके ।

अगले दिनों प्रचलित दुष्प्रवृत्तियों में से अधिकांश अपनी मौत मरेंगे, जिस प्रकार शीत ऋतु में मक्खी मच्छरों का प्रकृति परम्परा के अनुसार अन्त हो जाता है । अन्धविश्वास, मूढ़ मान्यतायें, रूढ़ियाँ, अंध परम्परायें, दूरदर्शी विवेकशीलता का ऊषाकाल प्रकट होते ही, उल्लू, चमगादड़ों की तरह अपने कोटरों में जा घुसेंगी। संग्रही और अपव्ययी जिस प्रकार आज अपना दर्प दिखाते हैं, उसके लिए तब कोई आधार शेष न रहेगा । संग्रही, आलसी और लालची तब भाग्यवान होने की दुहाई न दे सकेंगे । एक और भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बड़ी बात यह होगी, कि चिरकाल से उपेक्षित नारी वर्ग न केवल अपनी गरिमा को उपलब्ध करेगा, वरन् उसे नर का मार्गदर्शन-नेतृत्व करने का गौरव भी मिलेगा । पिसे हुए, पिछड़े हुए ग्राम उभरेंगे और उन सभी सुविधाओं से सम्पन्न होंगे जिनके लिए उस क्षेत्र के निवासियों को आज शहरों की ओर भागना पड़ता है । समता और एकता के मार्ग में अड़े हुए अवरोध एक-एक करके स्वयं हटेंगे और औचित्य के विकसित होने का मार्ग साफ करते जायेंगे। सम्मान वैभव को नहीं, उस वर्चस्व को मिलेगा जो आदर्शों के लिए उत्सर्ग करने का साहस संजोता है। पाखण्ड का कुहासा पिछले दिनों कितना ही सघन क्यों न रहा हो, अगले दिनों उसके और लम्बे समय तक पैर जमाये रहने की कोई संभावना नहीं है ।

इन तथ्यों के प्रकटीकरण पर विश्वास करते हुए जो तदनुरूप अपनी गतिविधियों में परिवर्तन करेंगे, वे हर दृष्टि से नफे ही नफे में रहेंगे । आज का दृष्टिकोण जिसे घाटा बताता है, उपहासास्पद बताता है कल वैसी स्थिति न रहेगी । लोग वास्तविकता को अनुभव करेंगे और समय रहते अपनी भ्रान्तियों को बदल लेंगे।

जीवन्तों और जागृतों को इन दिनों युग चेतना अनुप्राणित किए बिना रह नहीं सकती । उन्हें ढर्रे का जीवन जीते रहने से ऊब उत्पन्न होगी और चेतना अन्तराल में ऐसी हलचलों का समुद्र मन्थन खड़ा करेगी, ऐसा—कुछ करने के लिए बाधित करेगी, जो समय को बदलने के लिए अभीष्ट एवं आवश्यक है । साँप नियत समय पर केंचुली बदलता है । अब ठीक यही समय है कि प्राणवान प्रज्ञावान अपना केंचुल बदल डालें । अपनी समग्र क्षमता संजोकर दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करें, जिससे भावी क्रिया-कलापों में ऐसे तत्त्वों का समावेश हो, जिन्हें अनुकरणीय-अभिनन्दनीय माना जा सके । अन्तराल में उत्कृष्ट उमंगें और क्रिया-कलापों का, आदतों का, नये सिरे से ऐसा निर्धारण करें जो, युगशिल्पियों के लिए प्रेरणाप्रद बन सके । आदर्शों को महत्त्व दें । यह न सोचें कि तथा कथित सगे-सम्बन्धी क्या परामर्श देते हैं ? प्रहलाद, विभीषण, भरत, मीरा आदि को कुटुम्बियों का नहीं, आदर्शों का अनुशासन अपनाना पड़ा था । उच्चस्तरीय साहस के प्रकटीकरण का यही केन्द्रबिन्दु है कि जीवन को श्रेय साधना से ओतप्रोत करके दिखाया जाय । यह प्रयोजन संयम और अनुशासन अपनाये जाने की अपेक्षा करता है । प्रचलन तो ढलान की ओर लुढ़कने का है । पानी नीचे की ओर बहता है, ऊपर से नीचे गिरता है । उत्कृष्टता की ऊँचाई तक उछलने के लिए शूरवीरों जैसा साहस दिखाना पड़ता है । इस प्रदर्शन को अभी टाल दिया गया तो संभव है, ऐसा अवसर फिर जीवन में आवे ही नहीं ।

मेघमंडल जब घटाटोप बनकर उमड़ते गरजते हैं तो कृषि-कर्मियों के मन आशा उत्साह से भर कर बल्लियों उछलने लगते हैं । इन्द्र वज्र सौ-सौ बार झुक कर उनकी सलामी देता है । अँधेरा आकाश प्रकाश से भर जाता है। मोर नाचते और पपीहे कूकते हैं । हरीतिमा उनकी प्रतीक्षा में मखमली चादर ओढ़े मुस्कराती पड़ी रहती है । यह मनुहार मेघों की ही क्यों होती है ? खोजने पर पता चलता है कि वे संचित जलराशि समेट, अपने आप को अति विनम्र बनाकर उसे धरती पर बिखेर देते हैं ।

प्रतिभा परिवर्धन के उद्दण्ड उपाय तो अनेक हैं । उन्हें आतंकवादी-अनाचारी तक अपनाते और प्रेत-पिशाचों की तरह अनेक को भयभीत कर देते हैं; किन्तु स्थिरता और सराहना उन्हीं प्रतिभावानों के साथ जुड़ी रहती है, जो शालीनता अपनाते और आदर्शों के प्रति अपने वैभव को उत्सर्ग करने में चूकते नहीं । ऐसे लोग शबरी, गिलहरी, केवट स्तर के ही क्यों न हों, अपने को अजर-अमर बना लेते हैं और अनुकरण करने के लिए अनेक को आकर्षित करते हैं । उनकी चुम्बकीय विलक्षणता न जाने क्या-क्या, कहाँ-कहाँ से बटोर लाती है और बीज को वृक्ष बनाकर खड़ा कर देती है ।

प्रतिभा परिष्कार का अजस्र लाभ उठाने के लिए इन दिनों स्वर्ण सुयोग आया है । युग सन्धि की बेला में, जीवट वाले प्राणवानों की आवश्यकता अनुभव की गई है । अवांछनीयताओं से ऐसे ही पराक्रमी जूझते हैं और हनुमान, अंगद जैसे अनगढ़ होते हुए भी लंका को धराशायी बनाने के एवं राम राज्य का सतयुगी वातावरण बनाने के दोनों मोर्चों पर अपनी समर्थ क्षमता का परिचय देते हैं । ऐसी परीक्षा की घड़ियाँ सदा नहीं आतीं । जो समय को पहचानते और बिना अवसर चूके अपना साहस का परिचय देते हैं, उन्हें प्रतिभा का धनी बनने में किसी अतिरिक्त अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं पड़ती । संयम और साहस का मिलन ही वरिष्ठता तक पहुँचा देता है । पुण्य और परमार्थ का राजमार्ग ऐसा है, जिसे अपनाने पर वरिष्ठता का लक्ष्य हर किसी को मिल सकता है । आत्म-साधना और लोक-साधना दोनों एक ही लक्ष्य के दो पहलू हैं । जहाँ एक को सही रीति से अपनाया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जायेगा वहाँ दूसरा उसके साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ जायेगा ।

लक्ष्य और उपक्रम निर्धारित कर लेने के उपरान्त यह निर्णय करना अति सरल पड़ता है कि कौन अपनी मनः स्थिति और परिस्थिति के अनुसार, सम्पर्क परिकर कैी आवश्यकताओं को देखते हुए, किन क्रिया-कलापों में हाथ डाले और प्रगति का एक-एक चरण उठाते हुए, अन्ततः बड़े से बड़े स्तर का क्या कुछ कर गुजरे? यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है, कि व्यक्ति अपने प्रभामण्डल सम्पन्न क्षेत्र के साथ जुड़कर ही पूर्ण बनता है । अकेला चना तो कभी भी भाड़ फोड़ सकने में समर्थ नहीं होता । अपने जैसे विचारों के अनेक घनिष्ठों को साथ लेकर और सहयोगपूर्वक बड़े कदम उठाना ही वह रीति-नीति है, जिसके सहारे अपनी और साथियों की प्रतिभा को साथ-साथ चार चाँद लगते हैं ।

सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय परब्रह्म-परमात्मा प्रतिभाओं का पुंज है । उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने पर संकीर्ण स्वार्थपरता में तो कटौती करनी पड़ती है पर साथ ही यह भी सत्य है कि अग्नि के साथ संबंध जोड़ने वाला ईंधन का ढेर, ज्योतिर्मय ज्वाल माल की तरह दमकने लगता है । उत्कृष्टता के साथ जुड़ने वालों में से किसी को भी यह नहीं कहना पड़ता, कि उसे प्रतिभा परिकर के भण्डागार में से किसी प्रकार की कुछ कम उपलब्धि हस्तगत हुई ।

परिष्कृत प्रतिभा एक दैवी अनुदान

इन दिनों स्रष्टा ने ही विश्व कल्याण के लिए, नवसृजन के लिए कर्मवीरों को पुकारा है । जो उस हेतु हाथ बढ़ायेंगे, वे खाली क्यों रहेंगे ? भगीरथ, गाँधी, बुद्ध आदि को जो समर्थता मिली, वह इसलिए मिली कि परमार्थ प्रयोजन के काम आये ।

इस दुनिया में ऐसी भी सुविधा है कि जब-तब बहुत सी उपयोगी वस्तुएँ बिना मूल्य भी मिल जाती हैं। हवा, पानी, छाया, खुशबू आदि हम बिना मूल्य ही पाते हैं; पर जौहरी या हलवाई की दुकान पर सुसज्जित रखी हुई वस्तुएँ उठा कर चल देने का कोई नियम नहीं है । उनका मूल्य चुकाना पड़ता है । गाय को घास न खिलायी जाय, तो दूध प्राप्त करते रहना कठिन है ।

भगवान ने सुदामा को अपनी द्वारिकापुरी, टूटी सुदामापुरी के स्थान पर स्थानान्तरित कर दी थी, पर इससे पहले यह विश्वास कर लिया था कि इस अनुदान को उस स्थान पर कारगर विश्व विद्यालय चलाने के लिए ही प्रयुक्त किया जायेगा । यदि बिना जाँच-पड़ताल के किसी को कुछ भी दे दिया जाये, तो भस्माँसुर द्वारा शिवजी को जिस प्रकार हैरान किया गया था, वैसी ही हैरानी अन्यों को भी उठानी पड़ सकती है ।

भगवान ने काय-कलेवर तो आरम्भ से ही बिना मूल्य दे दिया है, पर उसके बाद का दूसरा वरदान है—''परिष्कृत प्रतिभा'' । इसी के सहारे कोई महामानव स्तर का बड़प्पन उपलब्ध करता है । इतनी बहुमूल्य सम्पदा प्राप्त करने के लिए वैसा ही साहस एकत्रित करना पड़ेगा, जैसा कि लोकमंगल के लिए विवेकानन्द जैसों को अपनाना पड़ा था । इन दिनों परीक्षा भरी बेला है, जिसमें सिद्ध करना होगा कि जो कुछ दैवी अनुग्रह विशेष रूप से उपलब्ध होगा, उसे उच्चस्तरीय प्रयोजन में ही प्रयुक्त किया जायेगा । कहना न होगा कि इन दिनों नवयुग के अवतरण का पथ-प्रशस्त करना ही वह बड़ा काम है, जिसके लिए कटिबद्ध होने पर 'परिष्कृत प्रतिभा' का बड़ी मात्रा में अनुग्रह प्राप्त किया जा सकता है । उसे धारण करने पर 'हीरक हार' पहनने वाले की तरह शोभायमान बना जा सकता है ।

ईश्वरीय व्यवस्था में यही निर्धारण है कि बोया जाय और उसके बाद काटा जाय । पहले काट लें, उसके बाद बोयें, यह नहीं हो सकता । लोकसेवी उज्ज्वल छवि वाले लोग ही प्रायः वरिष्ठ, विश्वस्त गिने और उच्चस्तरीय प्रयोजनों के लिए प्रतिनिधि चुने जाते हैं । विशिष्ट पुरुषार्थ का परिचय देने के उपरान्त ही पुरस्कार मिलते हैं । परिष्कृत प्रतिभा ऐसी सम्पदा है, जिसकी तुलना में मनुष्य को गौरवान्वित करने वाला और कोई साधन है नहीं । उसे प्राप्त करने के लिए यह सिद्ध करने की आवश्यकता है कि मानवी गरिमा के गौरवान्वित करने वाली धर्म-धारणा कैे क्षेत्र में कितनी उदारता और कितनी सेवा साधना का परिचय देने का साहस जुटा पाया ।

दूसरों के हाथ रचाने के लिए, मेंहदी के पत्ते पीसने पर अपने हाथ स्वयमेव लाल हो जाते हैं । समय की माँग के अनुरूप पुण्य-परमार्थ का परिचय देने वालों को भी सदा नफे में ही रहने का सुयोग मिलता है । बाजरा, मक्का आदि का बोया हुआ एक दाना हजार दाने से लदी बाल बनकर इस तथ्य को प्रमाणित और परिपुष्ट करता है । भगवान के बैंक में जमा की हुई पूँजी इतने अधिक ब्याज समेत वापस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लौटती है, जितना लाभ अन्य किसी व्यवसाय या पूँजी-निवेश में कदाचित् ही हस्तगत होता हो ।

किसी की वरिष्ठता उसके पारमार्थिक पौरुष के आधार पर ही आँकी जाती है । श्रेष्ठों-वरिष्ठों का आकलन इसी एक आधार पर होता रहा है । साथ ही यह भी विश्वास किया जाता है कि बड़े कामों को सम्पन्न करने में उन्हीं की मनस्विता काम आती है । पटरी पर से उतरे इंजन को उठाकर फिर उसी स्थान पर रखने के लिए मजबूत और बड़ी क्रेन चाहिए । उफनती नदी में जब भँवर पड़ते रहते हैं, तब बलिष्ठ नाविकों के लिए ही यह संभव होता है कि वे डगमगाती नाव को खेकर पार पहुँचायें । समाज की सुविस्तृत संसार की उलझन भरी बड़ी समस्याओं को सही तरह सुलझा सकना, उन साहसी और मेधावी जनों से ही बन पड़ता है, जिन्हें दूसरे शब्दों में प्रतिभावान भी कहा जा सकता है । युग परिवर्तन जैसे महान प्रयोजनों को हाथ में लेने के लिए अपनी साहसिकता का गौरवभरी गरिमा का परिचय दे सकने वाले व्यक्ति चाहिए । आड़े समय में ऐसे ही प्रखर प्रतिभावानों को खोजा, उभारा और खरादा जाता है ।

एक संभावना यह है कि संचित अनाचारों का विस्फोट इन्हीं दिनों हो सकता है । उसे रोका न गया, तो कोई महायुद्ध भड़क सकता है । बढ़ता हुआ प्रदूषण, भयावह बहुप्रजनन, बढ़ता हुआ अनाचार मिल-जुलकर महाप्रलय या खण्डप्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं । उसे रोकने के लिए सशक्त अवरोध चाहिए । ऐसा अवरोध जो उफनती हुई नदियों पर बाँध बनाकर उस जल-संचय को नहरों द्वारा खेत-खेत तक पहुँचा सके । वह साधारणों का नहीं, असाधारणों का काम है ।

ताजमहल, मिस्र के पिरामिड, चीन की दीवार, पीसा की मीनार, स्वेज और पनामा की नहर, हॉलैण्ड द्वारा समुद्र को पीछे धकेलकर उस स्थान पर सुरम्य औद्योगिक नगर बसा लेने जैसे अद्भुत सृजन कार्य जहाँ-तहाँ विनिर्मित हुए दीख पड़ते हैं, वे आरम्भ में किन्हीं एकाध संकल्पवानों के ही मन-मानस में उभरे थे । बाद में सहयोगियों की मंडली जुड़ती गई और असीम साधनों की व्यवस्था बनती चली गयी । नवयुग का अवतरण भी इन सबमें बढ़ा-चढ़ा कार्य है, क्योंकि उसके साथ संसार के समूचे धरातल का जन समुदाय का संबंध किसी न किसी प्रकार जुड़ता है । इतने बड़े परिवर्तन एवं प्रयास के लिए अग्रदूत कौन बने ? अग्रिम पंक्ति में खड़ा कौन हो ? आवश्यक क्षमता और सम्पदा कौन जुटाये ? निश्चय ही यह नियोजन असाधारण एवं अभूतपूर्व है । इसे, बिना मनस्वी साथी-सहयोगियों के सम्पन्न नहीं किया जा सकता ।

प्रचण्ड मनोबल की प्रतिभा में परिणति

वह पौराणिक गाथा स्मरण रखने योग्य है कि सीता हरण के उपरान्त जब रावण को परास्त करने का प्रश्न सामने आया, तो राम के द्वारा भेजा गया निमंत्रण उन दिनों के राजाओं और संबंधियों तक ने अस्वीकृत कर दिया था, पर सुदृढ़ संकल्पों के अधूरे रहने से तो दिव्य व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगने की स्थिति आती है । वह भी तो अंगीकृत नहीं हो सकती।

'जिन खोजा, तिन पाइयाँ' वाली उक्ति के अनुरूप खोज की गयी, तो रीछ-वानरों में से भी ऐसे मनस्वी निकल पड़े, जो आदर्शों के निर्वाह में बड़े से बड़े जोखिम उठाने के लिए तत्परता दिखाने लगे । उनकी एक अच्छी-खासी मंडली कार्य क्षेत्र में उतरने के लिए कटिबद्ध होकर आगे आ गयी । बन्दरों ने लकड़ी-पत्थर एकत्रित किये, रीछों ने इंजीनियर की भूमिका निभाई और समुद्र पर सेतु बनकर खड़ा हो गया ।

ईश्वर उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं । प्रतिकूलताएँ हटतीं और अनुकूलताएँ जुटती चली गयीं । लंका विजय और श्रीराम की अवध-वापसी वाली कथा सर्वविदित है । सीता भी अनेक बन्धनों से छुटकारा पाकर वापस आ गयीं । यहाँ दो निष्कर्ष निकलते हैं । एक यह कि राम की प्रतिभा पर विश्वास करके वरिष्ठ वानर भी उत्साह और साहस से भर गये थे । अथवा राम दल के मूर्धन्यों ने सामान्य स्तर के वानरों को भी प्राण-चेतना से ओत-प्रोत कर दिया हो और समर्थ व्यक्तियों की एक अच्छी-खासी मंडली बन गयी हो ? दूसरी ओर समर्थ शासनाध्यक्ष भी रावण की समर्थता और अपनी दुर्बलता को देखते हुए डर गये हों और झंझट में पड़ने से डर कर कन्नी काट गये हों ? निष्कर्ष यही निकलता है कि परिष्कृत प्रतिभा, दुर्बल सहयोगियों की सहायता से भी बड़े से बड़े काम सम्पन्न कर लेती है, जबकि डरकर समर्थ व्यक्ति भी हाथ-पैर फुला बैठते हैं । राणाप्रताप के सैनिकों में अधिकांश आदिवासियों का ही पिछड़ा समझा जाने वाला समुदाय प्रमुख था । लक्ष्मीबाई ने घर के पिंजरे में बंद रहने वाली महिलाओं को भी प्रोत्साहन देकर युद्ध क्षेत्र में वीर सैनिकों की तरह ला खड़ा किया था । रानी लक्ष्मीबाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ने तो अपने समय के दुर्दान्त दस्यु सागर सिंह को लूट मार करके भागते समय केवल अपनी सहेली मुन्दर के सहयोग से बन्दी बनाकर दरबार में खड़ा कर दिया था। उनकी मनस्विता के समक्ष उसका सारा दुस्साहस ढह गया । रानी ने अन्ततः उसे अपना सहयोगी बनाकर उसकी प्रतिभा का उपयोग अपनी सेना की शक्ति बढ़ाने में किया ।

औजारों-हथियारों को ठीक तरह काम करने के लिए उनकी धार तेज रखने की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए उन्हें पत्थर पर रगड़कर शान पर चढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है । पहलवान भी चाहे जब दंगल में जाकर कुश्ती नहीं पछाड़ लेते, इसके लिए उन्हें मुद्दतों अखाड़े में अभ्यास करना पड़ता है । प्रतिभा भी यकायक परिष्कृत स्तर की नहीं बन जाती, इसके लिए आये दिन अवांछनीयताओं से जूझना और सुसंस्कारी आदर्शवादिता के अभिवर्धन का प्रयास निरन्तर जारी रखना पड़ता है । समाज सेवा के रूप में अन्यान्यों के साथ भी यह प्रयत्न जारी रखा जा सकता है । समाज में ऐसे अवसर निरन्तर नहीं मिलते । निजी जीवन और परिवार-परिकर का क्षेत्र ऐसा है, जिसमें सुधार परिष्कार के लिए कोई न कोई कारण निरन्तर विद्यमान रहते हैं । रोज घर में बुहारी लगाने की, नहाने, कपड़े धोने की आवश्यकता पड़ती है । अपने गुण, कर्म, स्वभाव में कहीं न कहीं से मलीनता घुस पड़ती है, उनका निराकरण करना नित्य ही आवश्यक होता है । मन में, स्वभाव में पूर्वसंचित कुसंस्कारों, परिचितों के सम्पर्कों से मात्र अनौचित्य ही पल्ले बंधता है । उसका निराकरण अपने आप से जूझे बिना, समझाने से लेकर धमकाने तक का प्रयोग करने के अतिरिक्त स्वच्छता, शालीनता बनाये बिना नहीं हो सकता । इसके अतिरिक्त आदर्शों का परिपालन भी स्वभाव का अंग बनाना पड़ता है । इसके लिए दूसरों से तो यत्किंचित सहायता ही मिल पाती है ।

बच्चे अपने प्रयास से रेंगने और खड़े होने का प्रयत्न करते हैं, तभी वे चलने और दौड़ने में समर्थ होते हैं । अपने आपको व्यक्तित्व के हर पक्ष को समुन्नत बनाने के लिए निरन्तर अवसर तलाशने और प्रयत्न करने पड़ते हैं । इस अवसर पर आत्म-निरीक्षण आत्म-समीक्षा, आत्म-सुधार और आत्म-विकास के लिए अपनी दिनचर्या में ही प्रगतिशीलता का अभ्यास करना होता है, इसी प्रकार शरीर से एक कदम आगे बढ़ते ही परिवार परिकर को श्रेष्ठ समुन्नत बनाने पर ही उनका भविष्य निखरता है । अस्तु, उनके परिशोधन के लिए भी श्रमशीलता, शिष्टता, मितव्ययिता, सुव्यवस्था और सहकारिता की प्रवृत्तियों को उन सब के अभ्यास में उतारने के लिए कुछ कारगर कदम उठाने पड़ते हैं; अन्यथा "पर उपदेश कुशल बहुतेरे" भर बन जाने से उपहास-तिरस्कार के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगता । अपनी योग्यता-क्षमता बढ़ा लेने के उपरान्त ही यह बन पड़ता है कि दूसरों पर इच्छित प्रभाव डाला जाय और उन्हें उठने-बैठने में सक्षम बनाया जाय ।

रेल का इंजन स्वयं समर्थ होता है और अपने साधनों से गति पकड़ता है । तभी उसके साथ जुड़े हुए पीछे वाले डिब्बे भी गति पकड़ते हैं । इंजन की क्षमता यदि अस्त-व्यस्त हो चले, तो फिर वह रेल लक्ष्य तक पहुँचना तो दूर, अन्यों का आवागमन भी रोक कर खड़ी हो जायेगी ।

दूसरों की सहायता मिलती तो है, पर उसे प्राप्त करने के लिए अपनी पात्रता को विकसित करने के लिए असाधारण प्रयत्न करने पड़ते हैं । पात्रता ही प्रकारान्तर से सफलता जैसे पुरस्कार साथ लेकर वापस लौटती है । वर्षा ऋतु कितने ही दिन क्यों न रहे, कितनी ही मूसलाधार वर्षा क्यों न बरसे, पर अपने पल्ले उतना ही पड़ेगा, जितना कि बर्तन का आकार हो अथवा गड्ढे की गहराई बन सके । उन दिनों सब जगह हरियाली उगती है, पर चट्टानों पर एक तिनका भी नहीं उगता । उर्वरता न हो, तो भूमि में कोई बीज उगेगा ही नहीं । छात्रों को अगली कक्षा में चढ़ने या पुरस्कार जीतने, छात्रवृत्ति पाने का अवसर किसी की कृपा से नहीं मिलता । उनकी परिश्रमपूर्वक बढ़ी हुई योग्यता ही काम आती है । प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत होने वाले जिस तिस का अनुग्रह मिलने की आशा नहीं लगाये रहते, वरन् अपनी दक्षता, समर्थता को विकसित करके बाजी जीतने वाले सफल व्यक्तियों की पंक्ति में जा बैठने की प्रतिष्ठा अर्जित करते हैं । देवताओं तक का अनुग्रह, तपश्चर्या की प्रखरता अपनाने वाले ही उपलब्ध करते हैं । बिना प्रयास के तो थाली में रखा हुआ भोजन तक, मुँह में प्रवेश करने और पेट तक पहुँचने में सफल नहीं होता ।

महान शक्तियों ने जिस पर भी अनुग्रह किया है, उसे सर्वप्रथम उत्कृष्टता अपनाने और प्रबल पुरुषार्थ में जुटने की ही प्रेरणा दी है । इसके बाद ही उनकी सहायता काम आती है । कुपात्रों को यह अपेक्षा करना व्यर्थ है कि उन्हें अनायास ही मानवी या दैवी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहायता उपलब्ध होगी और सफलताओं, सिद्धियों, विभूतियों से अलंकृत करके रख देगी । दुर्बलता धारण किये रहने पर तो प्रकृति भी "दैव भी दुर्बल का घातक होता है"—इस उक्ति को चरितार्थ करती देखी गयी है । दुर्बल शरीर पर ही विषाणुओं की अनेक प्रजातियाँ चढ़ दौड़ती हैं । शीत ऋतु का आगमन जहाँ सर्वसाधारण के स्वास्थ्य संवर्धन में सहायक होता है, वहाँ मक्खी-मच्छर जैसे कृमि—कीटकों के समूह को मृत्यु के मुँह में धकेल देता है ।

प्रतिभा की सहचरी सफलता और समर्थता

सड़क पर बसों-मोटरों का ढाँचा दौड़ता दीखता है, पर जानकार जानते हैं कि यह दौड़, भीतर टंकी में भरे ज्वलनशील तेल की करामात है । वह चुक जाय, तो बैठ कर सफर करने वाली सवारियों को उतर कर उस ढाँचे को अपने बाहुबल से धकेल कर आगे खिसकाना पड़ता है । मनुष्य के काय कलेवर के द्वारा जो अनेक चमत्कारी काम होते दीख पड़ते हैं, वे मात्र हाड़-माँस की उपलब्धि नहीं होते, वरन् उछलती उमंगों के रूप में प्रतिभा ही काम करती है । स्वयंवर में माला उन्हीं के गले में पड़ती है, जो दूसरों की तुलना में अपनी विशिष्टता सिद्ध करते हैं । चुनावों में वे ही जीतते हैं, जिनमें दक्षता प्रदर्शित करने और लोगों को अपने प्रभाव में लाने की योग्यता होती है । मजबूत कलाइयाँ ही हथियार का सफल प्रहार कर सकने में सफल होती हैं । दुर्बल भुजाएँ तो हारने के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त कर सकने में सफल ही नहीं होतीं ।

भीष्म ने मृत्यु को धमकाया था कि जब तक उत्तरायण सूर्य न आवे, तब तक इस ओर पैर न धरना। सावित्री ने यमराज के भैंसे की पूँछ पकड़ कर उसे रोक लिया था और सत्यवान के प्राण वापस करने के लिए बाधित किया था । अर्जुन ने पैना तीर चला कर पाताल-गंगा की धार ऊपर निकाली थी और भीष्म की इच्छानुसार उनकी प्यास बुझायी थी । राणा सांगा के शरीर में अस्सी गहरे घाव लगे थे, फिर भी वे पीड़ा की परवाह न करते हुए अन्तिम सांस रहने तक युद्ध में जूझते ही रहे थे । बड़े काम बड़े व्यक्तित्वों से ही बन पड़ते हैं । भारी वजन उठाने में हाथी जैसे सशक्त ही काम आते हैं । बकरों और गधों से उतना बन नहीं पड़ता, भले ही वे कल्पना करते, मन ललचाते या डींगें हाँकते रहें ।

प्रतिभा जिधर भी मुड़ती है, उधर ही बुलडोजरों की तरह मैदान साफ करती चलती है । सर्वविदित है कि योरोप का विश्व विजयी पहलवान सैन्डो किशोर अवस्था तक अनेक बीमारियों से घिरा, दुर्बल काया लिये फिरते थे । पर जब उनने समर्थ तत्त्वावधान में स्वास्थ्य का नये सिरे से संचालन और बढ़ाना शुरू किया, तो कुछ ही समय में विश्वविजयी स्तर के पहलवान बन गये । भारत के चंदगीराम पहलवान के बारे में अनेको ने सुना है कि वह हिन्द केसरी के नाम से प्रसिद्ध हुए थे । पहले वह अन्यमनस्क स्थिति में अध्यापकी से रोटी कमाने वाले क्षीणकाय व्यक्ति थे । उनने अपने मनोबल से ही नई रीति-नीति अपनायी और खोयी हुई सेहत नये सिरे से न केवल पायी, वरन् इतनी बढ़ायी कि हिन्द केसरी उपाधि से विभूषित हुए।

इंग्लैण्ड की एक महिला कैंसर रोग से बुरी तरह आक्रान्त थी । डाक्टरों ने उसे जवाब दे दिया कि अब छः महीने से अधिक जीने की गुंजायश नहीं है । जिस मशीन से उपचार हो सकता था, वह करोड़ों रुपये मूल्य की थी, जिसे अपने यहाँ रखने में कोई डॉक्टर समर्थ नहीं था । रोगी महिला ने नये सिरे से नया विचार किया । जब छः महीने में मरना ही है, तो अन्य अपने जैसे निरीहों के प्राण बचाने की कोशिश क्यों न करें । उसने टेलीविजन पर एक अपील की कि यदि तीन करोड़ रुपये का प्रबंध कोई उदारचेता कर सके, तो उस मशीन के द्वारा उस जैसे निराशों को जीवन-दान मिल सकता है । पैसा बरसा । उससे एक नहीं तीन मशीनें खरीद ली गयीं और इतना ही नहीं कैन्सर का एक साधन-सम्पन्न अस्पताल भी बन गया । रोगिणी इन्हीं कार्यों में इतने दत्तचित्त और मस्त रही कि उसे अपने मरने की बात का स्मरण तक न रहा । कार्य पूरा हो जाने पर उसकी जाँच पड़ताल हुई, तो पाया गया कि कैंसर का एक भी चिह्न उसके शरीर में बाकी नहीं रहा है ।

अस्पताल की चारपाई पर पड़े-पड़े वाल्टेयर ने अपने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की थी । कालिदास और वरदराज की मस्तिष्कीय क्षमता कितनी उपहासास्पद थी, इसकी जानकारी सभी को है, पर वे जब नया उत्साह समेट कर नये सिरे से विद्या पढ़ने में जुटे, तो मूर्धन्य विद्वानों में गिने जाने लगे । व्यक्ति की अन्तःचेतना, जिसे प्रतिभा भी कहते हैं, इतनी सबल है कि अनेकों अभावों और व्यवधानों को रौंदती हुई, वह उन्नति के उच्च शिखर तक जा पहुँचने में समर्थ होती है । प्रतिभा वस्तुतः वह सम्पदा है, जो व्यक्ति की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनस्विता, ओजस्विता, तेजस्विता के रूप में बहिरंग में प्रकट होती है । यदि प्रसुप्त को उभारा जा सके, स्वयं को खराद पर चढ़ाया जा सके, तो व्यक्ति असंभव को भी संभव बना सकता है । यह अध्यात्म-विज्ञान का एक सुनिश्चित सिद्धांत एवं अटल सत्य है।

आगे बढ़े और लक्ष्य तक पहुँचें

बिजली की शक्ति-सामर्थ्य से सभी परिचित हैं । छोटे-बड़े अनेकों यंत्र-उपकरण उसी की शक्ति से चलते और महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित करते हैं । मनुष्य शरीर में भी जीवनचर्या को सुसंचालित रखने में जैव विद्युत् ही काम आती है । चेहरे पर चमक, स्फूर्ति और पुरुषार्थ कर दिखाना उसी के अनुदान हैं । मन में शौर्य-पराक्रम, साहस-विश्वास आदि के रूप में जब उसका अनुपात संतोषजनक मात्रा में होता है, तो उसे प्रतिभा कहते हैं । वह अपनी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाती है । कठिनाइयों से जूझ पड़ना और उन्हें परास्त कर सकना भी उसी का काम है । महत्त्वपूर्ण सृजन-प्रयोजनों को कल्पना से आगे बढ़कर योजना तक और योजना को कार्यान्वित करते हुए सफलता की स्थिति तक पहुँचाने की सुनिश्चित क्षमता भी उसी प्रतिभा में है, जिसे अध्यात्म की भाषा में प्राणाग्नि एवं तेजस्वी मानसिकता कहते हैं । उपासना क्षेत्र में इसलिए प्राणायाम जैसे प्रयत्न सरलतापूर्वक किए जाते हैं । तपश्चर्या में तितीक्षा अपनाते हुए साधन-सुविधा की आवश्यकता इसी अन्तःशक्ति के सहारे संपन्न कर ली जाती थी । शाप-वरदान एवं असाधारण स्तर के चमत्कार दिखा सकना और कुछ नहीं मात्र प्राणाग्नि के ज्वलनशील होने से उत्पन्न हुई ऋद्धि-सिद्धि स्तर की क्षमता ही है ।

शरीर बल, धन बल, बुद्धि बल तो कई लोगों में पाये जाते हैं, पर प्रतिभा के धनी कभी कहीं कठिनाई से ही खोजे-पाये जा सकते हें । दैत्य दुष्प्रयोजनों में और देव सत्प्रयोजनों में इसी उपलब्ध शक्ति का उपयोग करते हैं। समुद्र मंथन जैसे महापराक्रम इसी सामर्थ्य की पृष्ठभूमि से बन पड़े हैं ।

सत्संग से उत्थान और कुसंग से पतन की पृष्ठभूमि बनती है । यह और कुछ नहीं किसी समर्थ की प्रतिभा का भले-बुरे स्तर का स्थानान्तरण ही है । मानवीय विद्युत् के अनेकानेक चमत्कारों की विवेचना करते हुए यह भी कहा जा सकता है कि यह प्रतिभा नाम से जानी जाने वाली प्राण-विद्युत् ही अपने क्षेत्र में अपने ढंग से अपना काम कर रही है । जिसमें इसका अभाव होता है, उसे कायर, अकर्मण्य, डरपोक, आलसी एवं आत्महीनता की ग्रन्थियों से ग्रसित माना जाता है । संकोची, परावलम्बी एवं मन ही मन घुटते रहने वाले प्रायः इसी विशिष्टता से रहित पाये जाते हैं।

सोचना, चाहना, कल्पना करना और इच्छा-आकांक्षाओं का लबादा ओढ़े फिरने वालों में से कितने ही ऐसे भी होते हैं, जो आकांक्षा अभिलाषा तो बड़ी-बड़ी सँजोये रहते हैं; पर उसके लिए जिस लगन, दृढ़ता, संकल्प एवं अनवरत प्रयत्न परायणता की आवश्यकता रहती है, उसे वह जुटा ही नहीं पाते । फलतः वे मन मार कर बैठे रहने और असफलताजन्य निराशा ही हाथ लगने तथा भाग्य को दोष देते रहने के अतिरिक्त मन समझाने के लिए और कोई विकल्प खोज या अपना नहीं पाते ।

पारस को छूकर लोहा सोना हो जाता है, यह प्रतिपादन सही हो या गलत; पर इस मान्यता में संदेह करने की गुंजायश नहीं, कि प्रतिभा को आत्मसात् करने के उपरान्त सामान्य परिस्थितियों में जन्मा और पला मनुष्य भी परिस्थितिजन्य अवरोधों को नकारता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रगामी ओर ऊर्ध्वगामी बनता चला जाता है । फूल खिलते हैं, तो उसके इर्द-गिर्द मधुमक्खियाँ और तितलियाँ कहीं से भी आकर उसकी शोभा बढ़ाने लगती हैं, भौंरे उसका यशगान करने में न चूकते हैं, न सकुचाते; देवता फूल बरसाते और ईश्वर उसकी सहायता करने में कोताही नहीं करते ।

व्यक्तित्व का परिष्कार ही प्रतिभा परिष्कार है । धातुओं की खदानें जहाँ भी होती हैं, उस क्षेत्र के वही धातु कण मिट्टी में दबे होते हुए भी उसी दिशा में रेंगते और खदान के चुम्बकीय आकर्षणों से आकर्षित होकर पूर्व संचित खदान का भार, कलेवर और गौरव बढ़ाने लगते हैं । व्यक्तित्ववान अनेकों का स्नेह, सहयोग, परामर्श एवं उपयोगी सान्निध्य प्राप्त करते चले जाते हैं । यह निजी पुरुषार्थ है । अन्य सुविधा—साधन तो दूसरों की अनुकम्पा भी उपलब्ध करा सकती है ; किन्तु प्रतिभा का परिष्कार करने में अपना संकल्प अपना समय और अपना पुरुषार्थ ही काम आता है । इस पौरुष में कोताही न करने के लिए गीताकार ने अनेक प्रसंगों पर विचारशीलों को प्रोत्साहित किया है। एक स्थान पर कहा गया है कि मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और स्वयं ही अपना मित्र है । इसलिए अपने को उठाओ, गिराओ मत ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पानी में बबूले अपने भीतर हवा भरने पर उभरते और उछलते हैं ; पर जब उनका अन्तर खोखला ही हो जाता है, तो उनके विलीन होने में भी देर नहीं लगती । अन्दर जीवट का बाहुल्य हो, तो बाहर का लिफाफा आकर्षक या अनाकर्षक कैसा भी हो सकता है; किन्तु यदि ढकोसले को ही सब कुछ मान लिया जाय और भीतर ढोल में पोल भरी हो, तो ढम-ढम की गर्जन-तर्जन के सिवाय और कुछ प्रयोजन सधता नहीं । पृथ्वी मोटी दृष्टि से जहाँ की तहाँ स्थिर रहती प्रतीत होती है; पर उसकी गतिशीलता और गुरुत्वाकर्षण शक्ति इस तेजी से दौड़ लगाती है कि एक वर्ष में सूर्य की लम्बी कक्षा में परिभ्रमण कर लेती है और साथ ही हर रोज अपनी धुरी पर भी लट्टू की तरह घूम जाती है ।कितने ही व्यक्ति दिनचर्या की दृष्टि से एक ढर्रा ही पूरा करते हैं; किन्तु भीतर वाली चेतना इस तेजी से गति पकड़ती है कि वे सामान्य परिस्थितियों में गुजर करते हुए भी उन्नति के उच्च शिखर तक जा पहुँचते हैं। सामर्थ्य भीतर ही रहती, बढ़ती और चमत्कार दिखाती है । उसी को निखारने, उजागर करने पर तत्परता बरती जाय, तो व्यक्तित्त्व की प्रखरता इतनी सटीक होती है, कि जहाँ भी निशाना लगता है, वहीं से आर-पार निकल जाता है ।

डार्विन के कथनानुसार बंदर की औलाद बताया गया मनुष्य, आज इसी कारण सृष्टि का मुकुट-मणि बन चुका है और धरती या समुद्र पर ही नहीं, अन्तरिक्ष पर भी अपना आधिपत्य जमा रहा है । कभी के समर्थ देवता चन्द्रमा को उसने अपने पैरों तले बैठने के लिए विवश कर दिया है ।

लकड़ी का लट्ठा पानी में तभी तक डूबा रहता है, जब तक कि उसकी पीठ पर भारी पत्थर बँधा हो। यदि उस वजन को उतार दिया जाय, तो छुटकारा पाते ही नदी की लहरों पर तैरने लगता है और भँवरों को पार करते हुए दनदनाता हुआ आगे बढ़ता है । राख की मोटी परत चढ़ जाने पर जलता हुआ अंगारा भी नगण्य मालूम पड़ता है; पर परत हटते ही वह अपनी जाज्वल्यमान ऊर्जा का परिचय देने लगता है । वस्तुतः मनुष्य अपने सृजेता की तरह ही सामर्थ्यवान है ।

प्रतिभा का प्रकटीकरण स्वयं के बूते भी संभव है

लकड़ियों को घिसकर आग पैदा कर लेने वाला मनुष्य अपने अन्दर विद्यमान सशक्त प्रतिभा को अपने बलबूते बिना किसी का अहसान लिए प्रकट न कर सके, ऐसी कोई बात नहीं । आवश्यकता केवल प्रबल इच्छा शक्ति एवं उत्कण्ठा की है । उसकी कमी न पड़ने दी जाय, तो मनुष्य अपनी उस क्षमता को प्रकट कर सकता है, जो न तो देवताओं से कम है और न दानवों से । जब वह घिनौने कार्य पर उतरता है, तो प्रेत-पिशाचों से भी भयंकर दीखता है । जब वह अपनी श्रेष्ठता को उभारने, कार्यान्वित करने में जुट जाता है, तो देवता भी उसे नमन करते हैं । मनुष्य ही है, जिसके कलेवर में बार-बार भगवान अवतार धारण करते हैं । मनुष्य ही है, जिसकी अभ्यर्थना पाने के लिए देवता लालायित रहते हैं और वैसा कुछ मिल जाने पर वरदानों से उसे निहाल करते हैं । स्वर्ग की देवियाँ ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में उसके आगे-पीछे फिरती हैं और आज्ञानुवर्ती बनकर मिले हुए आदेशों का पालन करती हैं । यह भूलोक रसौमण्डल के समस्त ग्रह-गोलकों से अधिक जीवन्त, सुसम्पन्न और शोभायमान माना जाता है; पर भुलाया यह भी नहीं जा सकता कि आदिकाल के इस अनगढ़, ऊबड़—खाबड़ धरातल को आज जैसी सुसज्जित स्थिति तक पहुँचाने का श्रेय केवल मानवी पुरुषार्थ को ही है । वह अनेक जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों का पालनकर्ता और आश्रयदाता है, फिर कोई कारण नहीं कि अपनी प्रस्तुत समर्थता को जगाने-उभारने के लिए यदि समुचित रूप से कटिबद्ध हो चले, तो उस प्रतिभा का धनी न बन सके, जिसकी यशगाथा गाने में लेखनी और वाणी को हार माननी पड़ती है ।

मनुष्य प्रभावशाली तो है; पर साथ ही वह सम्बद्ध वातावरण से प्रभाव भी ग्रहण करता हैं । दुर्गन्धित साँस लेने से सिर चकराने लगता है और सुगन्धि का प्रभाव शान्ति, प्रसन्नता और प्रफुल्लता प्रदान करता है। बुरे लोगों के बीच, बुराई से संचालित घटनाओं के मध्य समय गुजारने वाला, उनमें रुचि लेने वाला व्यक्ति क्रमशः पतन और पराभव के गर्त में ही गिरता जाता है, साथ ही यह भी सही है कि मनीषियों, चरित्रवानों, सत्साहसी लोगों के सम्पर्क में रहने पर उनका प्रभाव—अनुदान सहज ही खिंचता चला जाता है और व्यक्ति को उठाने-गिराने में असाधारण सहायता करता है । इन दिनों व्यक्ति और समाज में हीनता और निकृष्टता का ही बाहुल्य है । जहाँ इस प्रकार का वातावरण बहुलता लिये हुए हो, उससे यथासम्भव बचना और असहयोग करना ही उचित है।

सज्जनता का सान्निध्य कठिन तो है और सत्प्रवृत्तियों की भी अपनी समर्थता जहाँ-तहाँ ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दिखाई देती है । ऐसी दशा में पुरातन अथवा अर्वाचीन सदाशयता का परिचय पुस्तकों के प्रसंगों के, समाचारों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है और उन संस्मरणों को आत्मसात् करते हुए ऐसा अनुभव किया जा सकता है, मानो देवलोक के नन्दनवन में विचरण किया जा रहा है । इस सम्बन्ध में स्वाध्याय और सत्संग का सहारा लिया जा सकता है । इतिहास में से वे पृष्ठ ढूँढे जा सकते हैं, जो स्वर्णाक्षरों में लिखे हुए हैं और मानवी गरिमा को महिमामण्डित करते हैं ।

आत्म-विश्वास बड़ी चीज है । वह रस्सी को साँप और साँप को रस्सी बना सकने में समर्थ है । दूसरे लोगों का साथ न मिले, यह हो सकता है,किन्तु अपने चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को मनमर्जी के अनुरूप सुधारा-उभारा जा सकता है । संकल्प-शक्ति की विवेचना करने वाले कहते हैं कि वह चट्टान को भी चटका देती है, कठोर को भी नरम बना देती है और उन साधनों को खींच बुलाती है, जिनकी आशा अभिलाषा में जहाँ-तहाँ प्यासे कस्तूरी हिरण की तरह मारा-मारा फिरना पड़ता है ।

मनुष्य यदि उतारू हो जाय, तो दुष्कर्म भी कर गुजरता है । आत्महत्या तक के लिए उपाय अपना लेता है, फिर कोई कारण नहीं कि उत्थान का अभिलाषी अभीष्ट अभ्युदय के लिए सरंजाम न जुटा सके ? दूसरों पर विश्वास करके उन्हें मित्र-सहयोगी बनाया जा सकता है । श्रद्धा के सहारे पाषाण-प्रतिमा में देवता प्रकट होते देखे गये हैं, फिर कोई कारण नहीं कि अपनी श्रेष्ठता को समझा उभारा और संजोया जा सके, तो व्यक्ति ऐसी समुन्नत स्थिति तक न पहुँच सके, जिस तक जा पहुँचने वाले हर स्तर की सफलता अर्जित करके दिखाते हैं ।

आत्म निरीक्षण को सतर्कतापूर्वक संजोया जाता रहे, तो वे खोट भी दृष्टिगोचर होती हैं, जो आमतौर से छिपी रहती हैं और सूझ नहीं पड़तीं; किन्तु जिस प्रकार दूसरों का छिद्रान्वेषण करने में अभिरुचि रहती है, वैसी ही अपने दोष-दुर्गुणों को बारीकी से खोजा और उन्हें निरस्त करने के लिए समुचित साहस दिखाया जाय, तो कोई कारण नहीं कि उनसे छुटकारा पाने के उपरान्त अपने को समुचित और सुसंस्कृत न बनाया जा सके । इसी प्रकार औरों की अपेक्षा अपने में जो विशिष्टताएँ दीख पड़ती हैं, उन्हें सींचने-सँभालने में उत्साहपूर्वक निरत रहा जाय, तो कोई कारण नहीं कि व्यक्तित्त्व अधिक प्रगतिशील, अधिक प्रतिभासम्पन्न न बनने की दशा अपनायी जा सके ।

इस संदर्भ में सबसे बड़ा सुयोग इन दिनों है, जबकि नव-सृजन के लिए प्रचण्ड वातावरण बन रहा है; उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में नियन्ता का सारा ध्यान और प्रयास नियोजित है । ऐसे में हम भी उसके सहभागी बनकर अन्य सत्परिणामों के साथ ही; पर प्रतिभा-परिष्कार का लाभ तो हाथों-हाथ नकद धर्म की तरह प्राप्त होता हुआ सुनिश्चित रूप से अनुभव करेंगे ।

सृजन-शिल्पियों के समुदाय को अग्रगामी बनाने में लगी हुई केन्द्रीय शक्ति अपने और दूसरों के अनेकानेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह विश्वास दिलाती है, कि यह पारस से सटने का समय है, कल्पवृक्ष की छाया में बैठ सकने का अवसर है । प्रभात पर्व में जागरूकता का परिचय देकर हममें से हर किसी को प्रसन्नता, प्रफुल्लता और सफलता भरी उपलब्धियों का भरपूर लाभ मिल सकता है, साथ ही परिष्कृत-प्रतिभायुक्त व्यक्तित्व संजोने का भी ।

प्रतिभा—परिष्कार बनाम युग—परिवर्तन

युग-परिवर्तन का आरम्भ जन-साधारण का दृष्टिकोण परिवर्तन होने के साथ-साथ होता है । लोगों के विचार करने की शैली, आकांक्षा अभिरुचि, प्रवृत्ति यदि निकृष्टता की ओर हों तो उसके फलस्वरूप व्यक्ति एवं समाज के सम्मुख अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ, चिन्तायें तथा व्यथायें उत्पन्न होती हैं और सब ओर नारकीय वातावरण विनिर्मित होता है। इसके विपरीत यदि लोगों की रुचि उत्कृष्टता और आदर्शवादिता अपनाने में हो, प्रसन्नता का लक्ष्य बिन्दु परमार्थ हो तो संसार में स्वर्गीय परिस्थितियों का जन्म होता है और हर व्यक्ति प्रचुर सुख-शान्ति का अनुभव करता है । यही वह तथ्य है जिसके ऊपर विश्वशान्ति एवं सुख का सारा आधार निर्भर है ।

युग-परिवर्तन की प्रक्रिया कहाँ से आरंभ हुई, इसका पता लगाना हो तो उसकी एक ही कसौटी है कि कहाँ स्वार्थ की उपेक्षा करके उसके स्थान पर परमार्थ को प्रतिष्ठित किया गया ? कहाँ तृष्णा और वासना को तिलांजलि देकर उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता को चरितार्थ करने का साहस किया गया ? जहाँ इस प्रकार की सत्प्रवृत्तियाँ पनप रही हों समझना चाहिये कि यहीं से युग-निर्माण का शुभारम्भ हो रहा है । भावी परिवर्तित युग में जन-साधारण को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर निर्वाह के लिये सादगी से काम चला सकने जितनी स्वल्प आजीविका पर पूरा-पूरा सन्तोष करना होगा । भविष्य के लिए संग्रह करने की प्रवृत्ति किसी में न होगी । लोग परिवार सेवा का उत्तरदायित्व पूरी तरह निभायेंगे, पर बेटे-पोतों के लिये सात पीढ़ी तक बैठे-बैठे खाने के लिये सारी कमाई छोड़ जाने की मोह-मूढ़ता एक अनैतिक एवं हेय प्रवृत्ति मानी जायगी।

इस दृष्टि से समाजवाद और अध्यात्मवाद एक हैं। व्यक्ति को अपनी प्रतिभा, योग्यता एवं विभूतियों का एक अनिवार्य अंश ही अपने तथा अपने परिवार के लिये खर्च करना चाहिये और यह चेष्टा होनी चाहिये कि उसकी उपलब्धियों का अधिकाधिक लाभ समाज को मिले । यही दृष्टिकोण सतयुग का आधार है । रामराज्य की स्थापना इन्हीं सत्प्रवृत्तियों पर होगी । व्यक्ति जब जक अपने संकीर्ण स्वार्थों में कीड़ों की तरह कुलबुलाता रहेगा तब तक वह दिव्य वातावरण एवं स्थिर सुख-शान्ति का दर्शन करने से वंचित ही बना रहेगा । युग-परिवर्तन की नींव परमार्थ प्रवृत्ति पर निर्भर है । अतएव हमें उसी के लिये सारा ध्यान एकत्रित करना होगा और उसी प्रकार की घटनाओं की अभिवृद्धि करने का अभियान गतिशील करना होगा ।

अगला समय यह सुनिश्चित सम्भावना साथ लेकर आ रहा है कि सम्पत्ति पर व्यक्ति का नहीं समाज का स्वामित्व होगा । जिस प्रकार राजाओं के राज्य, जागीरदारों की जागीर, जमींदारों का जमींदारी देखते-देखते चली गयी, उसी प्रकार अगले दिनों व्यक्तिगत सम्पत्तियों का भी राष्ट्रीयकरण होगा । व्यक्ति उसमें से उतना ही लाभ ले सकेगा जिससे उसको औसत दर्जे के भारतीय नागरिक के स्तर पर जीवित रहने की सुविधा मिल जाय । मनुष्य अपनी प्रतिभा के अनुरूप उपार्जन तो कर सकेंगे पर उसका लाभ उसी व्यक्ति के लिए सुरक्षित नहीं रहेगा वरन् समस्त मानव जाति उस सदस्य की उपलब्धियों का लाभ उठाया करेगी । मनुष्य की प्रतिभाओं का विकास जिन परिस्थितियों पर निर्भर है वे समस्त मानव जाति की चिर संचित थाती हैं । शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के जिन साधनों में आगे बढ़ सका है, वे लाखों-करोड़ों लोगों के, लाखों-करोड़ों वर्षों के अनुदान से उत्पन्न हुए हैं । इसलिये समाज को पूरा-पूरा अधिकार है कि किसी व्यक्ति के पास यदि प्रतिभा क्षमता एवं सम्पदा है तो उसका उपयोग और उपभोग करे ।

आज यह बातें अटपटी लगती हैं । क्योंकि चिरकाल से हमारी विचार पद्धति एवं रीति-नीति संकीर्ण स्वार्थपरता से प्रभावित होती चली आ रही है। पर अब इसे बदलना ही होगा । साम्यवादी शासन के अन्तर्गत आज लगभग आधी मनुष्य जाति ने इसी रीति-नीति को स्वीकार कर लिया है और यह देख लिया है कि व्यक्ति और समाज का स्वस्थ विकास इसी पद्धति पर निर्भर है । यही मान्यता अध्यात्मवाद की भी है । प्राचीनकाल में दान का भारी महत्व था । व्यक्ति के पास जैसे ही कुछ पूँजी जमा हुई उसने लोकमंगल के लिये उसका उत्सर्ग करने की बात सोची । इसी में व्यक्ति को सन्तोष होता था और सम्मान मिलता था । स्वार्थी, संग्रहशील, कंजूस अपनी कमाई आप ही खाते रहने वाले संकीर्ण व्यक्ति सदा से चोर, पापी, तस्कर, हत्यारे आदि नामों से तिरस्कृत किये जाते रहे हैं । भारतीय इतिहास का पन्ना-पन्ना इसी तथ्य का साक्षी है । सम्पत्ति का उपार्जन तो व्यक्ति करते थे, पर उसका अधिकाधिक अंश लोक मंगल में ही खर्च होता था । लोग अपने बच्चों के सुसंस्कारों को बनाते थे पर उनके लिये दौलत छोड़ने जैसी दुश्मनी करने की बात नहीं सोचते थे । जहाँ अध्यात्मवाद का यही सुनिश्चित दृष्टिकोण कार्यान्वित होगा वहाँ पाप, शोषण, अनीति, दुष्टता के लिये कोई गुंजायश न रहेगी । लोभ और मोह ही सामाजिक अव्यवस्था, अपराध और असन्तोष उत्पन्न करते हैं । इन दोनों को जहाँ नियन्त्रण में ले लिया गया तो सुख-शान्ति की स्वर्गीय परिस्थितियाँ उत्पन्न होने में, विश्व-शान्ति की समस्या के हल होने में फिर कोई कठिनाई शेष न रह जायगी ।

युग-परिवर्तन मूलतः मनुष्य का भावनात्मक परिवर्तन ही है । आज हमारे व्यक्तिगत जीवन को वासना और तृष्णा ने बुरी तरह आच्छादित कर लिया है । मनुष्य की अधिकांश क्षमता इन्हीं दो दुष्प्रवृत्तियों की बलिवेदी पर चढ़ती रही है । शरीर को सजाने, रंगने, मौजमजा का आस्वादन कराने के सरंजाम एकत्र करने में अपने बहुमूल्य जीवन का बड़ा भाग खर्च किया जा रहा है । इन लिप्सा-लालसाओं की पूर्ति एक छोटी सीमा तक सम्भव करने में जितना श्रम-समय लगता है उसका लेखा-जोखा यदि लिया जाय तो वह एक बहुत बड़ी सद्गुणों की अभिवृद्धि में लगाया गया होता, परमार्थ प्रयोजनों में लोक मंगल के लिये खर्च किया गया होता तो स्थिति कुछ दूसरी ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

होती । संसार के महान् पुरुषों की पंक्ति में हम अपने को बैठा देखते ।

महामानवों के जीवनों पर गम्भीर दृष्टिपात करने से हम एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उन्होंने व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को-और लालसाओं को तिलांजलि दी । सादगी से जीने का व्रत लिया । जो आसानी से मिल गया उतने रूखे-सूखे में ही सन्तोष करके शरीर-यात्रा का ढर्रा चलते रहना पर्याप्त माना। यह रीति-नीति अपनाते ही मस्तिष्क में जो असंख्य कामनाओं की आग मरघट की चिताओं जैसी जलती रहती थी वह शान्त हो गयी, उद्विग्नता मिट गयी । स्वर्गीय जीवन का यही चिह्न है । जिसके अन्तःकरण में भौतिक कामनायें कुहराम नहीं मचातीं वस्तुतः वही योगी, यती और ज्ञानी है । शरीर के जैसे-तैसे साधन जुट जाने पर जिसे तृप्ति हो गयी, समझना चाहिये कि उसने अध्यात्मवाद का सारा तत्वज्ञान सार रूप में हृदयंगम कर लिया, भले ही उसने बड़े-बड़े ग्रन्थ न पढ़े हों ।

कुएँ में पानी के छोटे-छोटे स्रोत इधर-उधर से आकर गिरते हैं और उन्हीं नगण्य सी इकाइयों के अनुदान में बना यशस्वी कुआँ असंख्य मनुष्यों, प्राणियों, वनस्पतियों की प्यास चिरकाल तक बुझाते रहने में समर्थ होता है । कुएँ का सारा यश उन जल-धमनियों के आत्मदान का प्रतिफल है । यदि वे संकीर्ण होतीं, अपना बचाव सोचतीं, अपनी सम्पत्ति को मुफ्त में देने से कतरातीं तो इस संसार में एक भी कुआँ न बन सका होता और यहाँ सब कोई कभी के प्यास से तड़प कर अपना अस्तित्त्व गँवा चुके होते ।

संसार की सुख, शान्ति, समृद्धि और सुन्दरता एक यशस्वी कुएँ की तरह है जिसे सजीव रखने के लिये कुछ जल धमनियों का उत्कृष्ट आत्माओं का निरन्तर अनुदान मिलते रहना आवश्यक है । इन दिनों भारी दुष्काल इसी सत्प्रवृत्ति का पड़ गया है । लोग अपनी व्यक्तिगत तृष्णाओं की पूर्ति में पाँव से सिर तक डूबे पड़े हैं । दान-पुण्य एवं पूजा-पाठ के नाम पर राई-रत्ती जैसे उपकरण इस आशा में खर्च करते हैं कि अगले ही दिनों वह लाख-करोड़ गुना होकर उन्हें मिल जायेगा । अविवेकी नर-पशु इस स्तर के हों तो बात कुछ समझ में आती है, पर भक्ति, ज्ञान, अध्यात्म, वेदान्त, ब्रह्मज्ञान, तत्वदर्शन जैसे विषयों पर भारी माथापच्ची कर सकने में समर्थ लोग भी जब इस कसौटी पर कसे जाते हैं कि उनका अनुदान समाज के लिये क्या है, तो उत्तर निराशाजनक ही मिलता है । ऐसा ब्रह्मज्ञान भला किसी का क्या हित साधन करेगा जिसने मनुष्य के हृदय में इतनी करुणा एवं श्रद्धा उत्पन्न न कि विश्व मानव को उसके अनुदान की महती आवश्यकता है और वह उसे देना ही चाहिये ।

लोक मंगल की सर्वकल्याणकारी सत्प्रवृत्तियों से ही किसी व्यक्ति, देश, धर्म, समाज तथा संस्कृति की उत्कृष्टता नापी जा सकती है । खरेखोटे की पहचान इसी आधार पर होती है । हमारे देश में लोगों ने यश और वर्चस्व लूटने के लिये लोकमंगल के तमाशे जहाँ-तहाँ खड़े कर रखे हैं, पर यदि यह देखा जाय कि इसमें कितने व्यक्ति अपनी उपलब्धियों का कितना बड़ा अनुपात समर्पित कर रहे हैं, तो सब कुछ खोखला ही खोखला प्रतीत होता है । लोकमंगल के नाम पर खड़े किये गये यह डेरे-तम्बू आये दिन गढ़ते-उखड़ते रहते हैं । इनसे हम मनोरंजन अथवा आत्म प्रवंचना भले ही करते रहें, कोई ठोस काम न हो सकेगा । लोक मंगल की कोई प्रकाशित किरण कहीं उदय हो रही है, यह तलाश करना हो तो संस्थाओं में ऐसे लोग ढूँढने पड़ेंगे जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों का बड़े से बड़ा अनुपात जनता जनार्दन की सेवा में अर्पित कर दिया हो । गरीब के पास पसीना, शिक्षित के पास मस्तिष्क और धनी के पास धन की जो बचत होती है, आत्मा का, परमात्मा का एक ही तकाजा है कि वह उसे संकीर्णता के बन्धन तोड़कर परमार्थ प्रयोजन के लिये उत्सर्ग करें ।

जो इस तथ्य को हृदयंगम कर लेते हैं और इसी आधार पर अपनी रीति-नीति का निर्धारण करते हैं वस्तुतः वे ही इस धरती के देवता हैं । देवताओं के द्वारा ही युग परिवर्तन जैसे महान् कार्यों की भूमिका सम्पादित होती है । मुद्दतों से देव-परम्परायें अवरुद्ध हुई पड़ी हैं । अब हमें अपना सारा साहस समेट कर तृष्णा और वासना के कीचड़ से बाहर निकलना होगा और वाचालता एवं विडम्बना से नहीं अपनी कृतियों से अपनी उत्कृष्टता का प्रमाण देना होगा । हमारा उदाहरण ही दूसरे अनेक लोगों को अनुकरण का साहस प्रदान करेगा । वाणी और लेखनी के माध्यम से लोगों को किसी बात की, अध्यात्मवाद की भी जानकारी कराई जा सकती है । इससे अधिक भाषणों का कोई उपयोग नहीं । दूसरों को यदि कुछ सिखाना हो तो उसका एक मात्र तरीका अपना उदाहरण प्रस्तुत करना है । यही ठोस, वास्तविक और प्रभावशाली पद्धति है । दूसरों को बदलना हो तो सबसे पहले हमें अपने को बदलना चाहिये । दूसरों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को स्वार्थपरता से विरत होकर परमार्थ पर चलने की चिरस्थाई प्रेरणा देनी हो तो उसका शुभारम्भ अपनी रीति-नीति को तृष्णा और वासना के जंजाल से ऊँची उठी हुई बनाकर ही करनी चाहिए ।

युग परिवर्तन व्यक्ति-परिवर्तन से आरम्भ होता है। प्रबुद्ध परिजनों में से प्रत्येक को हर दिन, हर घड़ी यह प्रश्न करना चाहिये कि क्या इस प्रकार का प्रकाश और उत्साह अपने भीतर उत्पन्न होने लगा है । यदि हाँ, तो समझना चाहिये कि अपनी गणना महाकाल के देव पार्षदों में होने की पूरी-पूरी सम्भावना है । तब हम अपना ही नहीं इस विश्व वसुन्धरा की सुरक्षा और सुन्दरता बढ़ाने का शाश्वत श्रेय प्राप्त करेंगे ।

कसौटी के लिये तैयार रहें

तैयारियाँ हर कार्य के लिये की जाती हैं, पर युद्धस्तरीय तैयारी कुछ और ही होती है । युद्ध के लिये हर स्तर पर विशेष व्यवस्थायें की जाती हैं । सामान्य क्रम से कुछ अधिक तत्परता आवश्यक हो जाती है । युग संधिवेला के रूप में यह परिवर्तन प्रक्रिया भी अपनी असामान्य माँग प्रस्तुत करती है ।

युग परिवर्तन की संधि वेलायें-लम्बे समय के बाद कभी-कभी ही आती हैं, सामान्य काल में सामान्य परिस्थितियाँ चलती रहती हैं और लोगों का जीवन ढर्रा भी सामान्य रीति से ही चलता रहता है, पर जब असामान्य परिवर्तन की विशेष सन्धि वेला आती है, तब उस समय जन साधारण के विशेषतया प्रबुद्ध व्यक्तियों के कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व भी कुछ असामान्य हो जाते हैं और निभाने के लिये उस समय की जाग्रत आत्माओं को अपनी गतिविधियाँ भी असामान्य ही बनानी पड़ती हैं ।

बीमारी, दुर्घटना, अग्निकाण्ड, मृत्यु, फौजदारी जैसी कोई विशेष आकस्मिक घटना घर में घटित हो जाय तो परिवार के सदस्यों को अपने सामान्य क्रम में परिवर्तन करना पड़ता है और इस प्रकार व्यवस्था बनानी पड़ती है कि उस आकस्मिक परिस्थिति का हल निकल सके । इसी प्रकार युगों का जब परिवर्तन काल आता है तब उसमें विशेष परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और उनके समाधान के लिये उत्तरदायी लोगों को आगे बढ़कर अपने सामान्य कार्यक्रमों को छोड़कर उन विशेष कर्तव्यों का पालन करने के लिये तत्पर होना पड़ता है ।

जिन लोगों की अन्तरात्मा अविकसित है, उनके लिये अपने शारीरिक, आर्थिक एवं पारिवारिक स्वार्थ इतने प्रबल दिखाई पड़ते हैं कि उनकी पूर्ति वे दिन रात गलते-घुलते रहने पर भी कर नहीं पाते । देश, धर्म, समाज संस्कृति की चर्चा तो उन्हें मनोविनोद के लिये अच्छी लगती है पर जब उनके सम्बन्ध में कुछ कर्तव्य पालन करने, कष्ट सहने या त्याग करने का अवसर आता है तब बगलें झाँकने लगते हैं । वस्तुतः उनका अविकसित अन्तःकरण संकीर्ण स्वार्थों के अतिरिक्त और सोच समझ नहीं पाता, उनके लिये उतना ही दायरा सब कुछ है । मेंढक की सारी दुनियाँ कुएँ में भरे हुए पानी जितनी ही है, पर जो इससे कुछ अधिक देखते, समझते और सोचते हैं उनके सामने मानसरोवर से लेकर समुद्र तक की विशाल जल-राशि का दृश्य प्रस्तुत रहता है और वे उसी दृष्टिकोण से अपनी गतिविधियाँ निर्धारित करते हैं, जब कि कुएँ का मेंढक अपने उसी दायरे तक ही सीमित रहता है । जाग्रत आत्माओं का, प्रबुद्ध व्यक्तियों का, धर्मात्माओं एवं महापुरुषों का एक ही चिह्न है कि वे संकीर्ण क्षेत्र में सीमित नहीं रहते, शरीर, घर और धन इतना ही सब कुछ है ऐसा वे नहीं मानते और उसके अतिरिक्त और कुछ कर्त्तव्य भी उनका है, ऐसा वे सोचते हैं । अपने समय की, देश, धर्म, संस्कृति एवं समाज की जिम्मेदारियाँ वे समझते हैं और उनकी सामयिक आवश्यकतायें पूरी करने के लिए वे कुछ करते भी हैं। बकवास से नहीं कार्यों से ही किसी की महानता परखी जा सकती है ।

परीक्षा के समय कभी-कभी आते हैं । वे जब आते हैं तब वह यह परखते हैं कि इसने अब तक जो किया है उसके पीछे उसकी लगन, निष्ठा एवं वास्तविकता कितनी है । वार्षिक परीक्षा छात्रों के परिश्रमी, अध्यवसायी, लगनशील होने, न होने की परख कर देती है । बातूनी लड़के अपनी प्रशंसा में लम्बी-चौड़ी डींगें हाँकते रहते हैं । परीक्षा उनकी वास्तविकता-अवास्तविकता का निर्णय कर देती है । इसी प्रकार आदर्शवादी के जीवन में वे परीक्षा काल आते हैं जिनकी कसौटी पर यह सिद्ध हो जाता है कि सिद्धान्तों एवं आदर्शों के प्रति उनकी आस्था कितनी वास्तविक-अवास्तविक थी । राजा हरिश्चन्द्र, प्रहलाद, कर्ण, भीष्म, राम, कृष्ण, दधीचि, शिवि आदि के सामने परीक्षा के अवसर आये थे, उनमें वे खरे उतरे तो उनकी वास्तविकता प्रमाणित हो गयी और वे सच्चे आदर्शवादियों की श्रेणी में प्रतिष्ठित हो सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई आदर्शवादी धर्म एवं अध्यात्म की बात तो बहुत करे, पर परीक्षा का समय आने पर इधर-उधर छिपा रहे तो उसकी आस्था संदिग्ध ही मानी जायगी । ईश्वर और धर्म की मान्यतायें केवल इसीलिये हैं कि इन आस्थाओं को हृदयंगम करने वाला व्यक्ति, निजी जीवन में सदाचारी और समाजिक जीवन में परमार्थी बने । यदि यह दोनों प्रयोजन सिद्ध न होते हों, इन दोनो कसौटियों पर वास्तविकता सिद्ध न होती हो तो यही कहना पड़ेगा कि यह तथाकथित ईश्वर भक्ति और धर्मात्मापन दम्भ मात्र था । अपने लिये धन-दौलत और बेटे-पोते चाहने की कामना से माला घुमाते रहने का नाम ही भजन नहीं है वरन् उसका प्रमुख चिह्न यह है कि जिसे ईश्वर से प्रेम हो वह उसकी दुनिया को अधिक सुन्दर, अधिक व्यवस्थित अधिक विकसित बनाने में अधिक से अधिक योगदान करे । इस दिशा में किया हुआ त्याग, बलिदान ही किसी व्यक्ति के प्रबुद्ध जाग्रत, आदर्शवादी, ईश्वर भक्त एवं धर्मात्मा होने का चिह्न हो सकता है ।

विद्यार्थी साल-भर पढ़ते हैं । उस सामान्य समय में किसी के अध्ययन का ठीक तरह पता नहीं चलता । वार्षिक परीक्षा के दस-बीस दिन ही होते हैं, पर वे दूध-पानी का विश्लेषण करके रख जाते हैं । सामान्यकाल में किसी बकवादी एवं दम्भी, को भी ईश्वर भक्त, धर्मात्मा या आदर्शवादी समझा जा सकता है, पर जब परख की असामान्य घड़ी सामने आ उपस्थित हो तो यह पता चल जाता है कि कौन कितने गहरे पानी में है । चिरकाल के पश्चात इन दिनों ऐसा समय आया है जिसमें जन-साधारण की भीड़ में छिपे हुए नर-रत्नों, महामानवों एवं अध्यात्मवादियों को आगे आने, ऊँचे उठने और चमकने का अवसर मिलेगा । दूध जब गरम होता है, तो उसमें जितने अंश घी के होते हैं वे मलाई के रूप में ऊपर तैर कर आ जाते हैं । जिस समाज में जो महान आत्मायें छिपी रहती हैं, उनके प्रकाश में आने का अवसर ऐसे ही परीक्षा-काल में आता है जैसा कि आजकल है ।

बड़े कार्य सामान्य शक्ति से नहीं हो सकते कार्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान पर प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण पहले परीक्षित कर लिये जाते हैं । महत्त्वपूर्ण पदों की नियुक्ति के पूर्व कड़ी परीक्षायें होती हैं । आत्मिक स्तर पर किये जाने वाले बड़े कार्यों को सबल आत्मायें ही कर सकती हैं । उनके लिये यदि कठोर परीक्षायें न रखी जायें तो कुपात्रों के हाथ में जाकर योजना ही चौपट हो जाये । नव-निर्माण के कठिन कार्य को पूरा करने के लिये जिन महान् आत्माओं को उभर कर ऊपर आना है, उन्हें कठिनतम परिस्थितियों में अपनी प्रमाणिकता का परिचय देते हुए आगे बढ़ना होगा ।

निर्माण के लिये समर्थ सेनानायकों की आवश्यकता

निर्माण का इतिहास कठोर श्रम का इतिहास है। देश-विदेश के उदाहरण यही प्रतिपादित करते हैं- विगत एक सौ वर्षों में इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, रूस, चीन, जापान आदि देशों ने कितनी आश्चर्यजनक प्रगति की है । सौ वर्ष पूर्व इन देशों की दशा आज की तुलना में बहुत ही गई-गुजरी थी । भारतवर्ष को जो भौतिक एवं आध्यात्मिक साधन उपलब्ध हैं, उनके आधार पर वह २५ वर्षों में उतनी प्रगति कर सकता है जितनी दूसरों ने सौ वर्षों में की है, पर इसके लिये आवश्यकता उन सेनानायकों की है, जो भारतीय जनता के अस्त-व्यस्त लोक मानस को चमकाकर, उलट-पुलट कर रख दें और प्राचीनता के आधार पर उसका नव-निर्माण करने के लिये कटिबद्ध हों । ऐसे लोगों का अभाव नहीं, केवल निरुत्साह ही बाधक है। यदि यह कमी दूर हो सके, जन-जागरण के लिये एक सुगठित सेना की तरह यदि बौद्धिक-क्रान्ति करने वाले आदर्शवादी लोक-सेवक निकल पड़ें तो देश का काया-कल्प ही हो सकता है । सीमाओं पर आक्रमण करने वाले तो झक मार कर बैठ ही जायेंगे, साथ ही विघटनकारी अन्तर्द्वन्दों का भी कहीं पता न चलेगा । भाषा, प्रान्त और जाति, सम्प्रदायों के नाम पर जो विघटनकारी दुष्प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं उनका कहीं पता भी न चलेगा ।

उज्ज्वल भविष्य की समस्त सम्भावनायें इस बात पर निर्भर हैं कि प्रबुद्ध, जाग्रत एवं प्रतिभावान व्यक्ति अपनी सीमाबद्धताओं में ही उलझे न रहकर युग निर्माण के लिये-जनसाधारण के लिये कुछ कर गुजरने को कटिबद्ध हों । प्रचारात्मक और रचनात्मक कार्यों के द्वारा जनता को संगठित, जाग्रत एवं कर्तव्यपरायण बनाया जा सकता है । यह कार्य राजनीति से नहीं धर्म के मंच से ही संभव होगा । भारत की ८० फीसदी जनता अशिक्षित है और इतने ही लोग देहातों में रहते हैं, उन्हें किसी अन्य स्तर पर नहीं,केवल धार्मिक स्तर पर ही आन्दोलित किया जा सकता है । शिक्षित एवं शहरी वर्ग में भी उनकी आदर्शवादिता को उभारने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोजन केवल धर्म एवं अध्यात्म के आधार पर ही सम्भव हो सकता है ।

युग निर्माण परिवार में जो प्रबुद्ध आत्मायें हैं, उन्हें युग पुकारता है । वे संकीर्ण स्वार्थपरता का वैयक्तिक जीवन जीने की अपेक्षा युद्ध मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिकों की तरह त्याग-बलिदान करने के लिये तत्पर हों, समय दान करें, जन-सम्पर्क के लिये अवसर निकालें और जन-जन के मन में नव जीवन का संचार करने वाली भावनायें भरें, तब काम चलेगा।

लोग अपने को धर्मात्मा, ईश्वरभक्त एवं आदर्शवादी कहते, मानते हैं, उनके लिये आज की अग्नि परीक्षा की घड़ियाँ कुछ करने के लिये कह रही हैं । यदि उनमें से कोई कुछ करना चाहे तो अपनी स्थिति के अनुरूप बहुत कुछ कर सकता है । युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम उसे सादर आमंत्रित करते हैं । जो केवल पूजा पाठ की थोड़ी चिह्न पूजा करके ही स्वर्ग, मुक्ति, ईश्वर दर्शन के सपने देखते हैं उन्हें जानना चाहिये कि उनकी सच्चाई और आस्था अग्नि परीक्षा की कसौटी पर कसी जा रही हैं । यदि वे कष्टसाध्य कर्तव्यों से कतराते हैं तो मुलम्मा चढ़े सोने की तरह उस पर से उनकी आब जनता जनार्दन के सामने उतर ही जायेगी ।

वे वयोवृद्ध व्यक्ति जिनके ऊपर से कमाने धमाने की जिम्मेदारी चली गयी है, बच्चे परिवार की व्यवस्था संभाल लेते हैं, उन्हें अपने अधिकांश समय को राष्ट्रीय जागरण के लिये लगाना चाहिये । आज की परिस्थिति में ईश्वर की सबसे उत्तम भक्ति और आत्म-कल्याण की सर्वश्रेष्ठ साधना यही हो सकती हैं कि इस देवभूमि भारत को धरती का स्वर्ग बनाने के लिये जन-जन में विवेकशीलता एवं आदर्शवादिता की भावनायें उत्पन्न की जायें, इस साधना में लगे हुए वयोवृद्ध व्यक्ति अपना लोक परलोक सुधारेंगे, आत्म-कल्याण और ईश्वर प्राप्ति का लाभ प्राप्त करेंगे तथा देश, धर्म, समाज एवं संस्कृति के पुनरुत्थान में योगदान देकर अक्षय पुण्य अर्जित करेंगे । यों घर में कुछ न कुछ काम तो सदा ही लगा रहता है, पर राष्ट्र के नवनिर्माण का कार्य भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । इस आड़े समय में तो सब काम छोड़ कर भी उसे प्रधानता दी जानी चाहिये । फिर अवकाश प्राप्त वयोवृद्ध तो घर वालों की बिना कुछ अधिक हानि किये ही अपने अनुभवी व्यक्तित्त्व का बहुत कुछ लाभ जनता को दे सकते हैं ।

जो कई भाई हैं, उनमें से एक को समाज सेवा के लिये समय देना चाहिये । शेष भाई उसके पारिवारिक उत्तरदायित्त्वों को वहन करें ओर निश्चिन्ततापूर्वक समाज सेवा करने दें । जिस प्रकार युद्ध के लिये कितने ही परिवारों ने अपने यहाँ से एक-एक सैनिक दिया है, उसी प्रकार धर्म परायण लोग भी अपने घरों से एक-एक सुयोग्य प्रतिभाशाली व्यक्ति धर्म सेना में भर्ती होने के लिये दें । जिसका धर्म से सीधा सम्बन्ध नहीं है, वे शौर्य और देशभक्ति से प्रेरित होकर अपने घरों के नौनिहालों को गोलियों का सामना करने के लिये भेज सकते हैं । जो लोग धर्म, ईश्वर अध्यात्म, वैराग्य आदि की लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं उन्हें गोली के सामने न सही तो समाज सेवा के लिये तो अपने परिवारों से एक-एक व्यक्ति देना ही चाहिए ।

जिन लोगों के पास आजीविका के साधन मौजूद हैं, जमीन या पैसा किराये पर उठाकर जो लोग अपना खर्च चलाने की स्थिति में हैं, उनके लिये यही उचित है कि अब अधिक कमाई के, संग्रह करने में जोड़ने और बढ़ाने के कुचक्र में न फँसें । अगला समय ऐसा आ रहा है जिसमें वैयक्तिक धन अधिक मात्रा में किसी के पास भी न रहेगा । गुजारे-भर के लिये सामान्य लोगों की सी साधन सामग्री रह जायेगी, ऐसी दशा में जो लोग पूँजी बढ़ाने और भविष्य के लिये दौलत जोड़ने की सोचते हैं, वे भारी भ्रम में हैं । शहद की मक्खी की तरह अनावश्यक श्रम दूसरों के लिये, धन कमाने में खर्च किया जाय तो इसकी अपेक्षा यही उत्तम है कि जब गुजारे की व्ययस्था है तो अपना समय और श्रम लोक मंगल के लिये ही क्यों न खर्च किया जाय ?

साधु ब्राह्मणों का तो यह एक परम पवित्र कर्तव्य हैं कि इस समय जिस धर्म के आश्रय में वे अपनी आजीविका चलाते हैं और पूजा सम्मान प्राप्त करते हैं, उस धर्म रक्षा के लिये उन्हें कुछ काम भी करना चाहिये, कुछ कष्ट भी उठाना चाहिये । आज जबकि धर्म संकट में है, देश की सुरक्षा एवं प्रगति का प्रश्न है, तब तो उन्हें उन आदर्शों को परिपुष्ट करने के लिये अपना समय लगाना ही चाहिये । ऐसी विषम परिस्थितयों में भी दक्षिणा बटोरने और पैर पुजाने का ही धन्धा करते रहे, कर्तव्य को तिलांजलि दिये बैठे रहे तो आगामी पीढ़ियाँ उन्हें क्षमा न करेंगी । उन्हें धर्मध्वजी होने का सम्मान तो दूर, सामान्य नागरिक स्तर का भी न गिना जायगा । उनकी आज की अकर्मण्यता भविष्य में साधु-ब्राह्मण संस्था का ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्व एवं गौरव समाप्त कर देगी । इसलिये उन्हें तो समय रहते चेत ही जाना चाहिये ।

हर नागरिक के पास कुछ समय रहता है । आजीविका कमाने और शरीर यात्रा के दैनिक कार्यों के अतिरिक्त हर व्यक्ति के पास कुछ समय बचता है। यदि बचता न होता तो गपशप, यारबाशी, सिनेमा, शतरंज, ताश, यात्रा, मेले-ठेले आदि के लिये समय कहाँ से मिलता है ? लेखा-जोखा लेने पर हर आदमी के पास कुछ न कुछ ऐसा समय जरूर मिलेगा, जिसे वह नित्यकर्म और रोटी कमाने के अतिरिक्त अपनी मनमर्जी के कामों में लगाता है । यह मनमर्जी यदि हल्के और ओछे कामों में न लगे, जन जागरण और नव-निर्माण के रचनात्मक कार्यों में लगे तो व्यस्त से व्यस्त व्यक्ति भी इतना कार्य कर सकता है, जिससे वह आत्म-सन्तोष और आत्म-गौरव अनुभव कर सके। आवश्यकता केवल अभिरुचि बदलने की है । दूसरों को उपदेश करने की अपेक्षा अब अपने को रचनात्मक कार्य करने में संलग्न करना चाहिये । अपनी आदर्शवादिता की सच्चाई को प्रमाणित करना चाहिये । जिनमें आदर्शवादिता के प्रति आस्था एवं ममता है, जो उसे बढ़ते एवं आकर्षित होते देखना चाहते हैं उन्हें अपने समय का एक अंश राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिये कुछ करने के लिये लगाना ही चाहिये । साधारण नागरिक होने पर भी यदि कुछ भावना हो तो हर व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है यह समय ऐसा भी है, जब कि कुछ न कुछ हर व्यक्ति को करना ही चाहिये ।

यों समस्त प्रबुद्ध वर्ग के सामने अपनी समझदारी का परिचय देने का यह अवसर है, पर युग निर्माण परिवार से सम्बद्ध व्यक्तियों ने गत दिनों जो शिक्षा प्राप्त की है उसे वस्तुतः समझा अपनाया है या नहीं, इसकी परख का ठीक यही वक्त है । प्रस्तुत समय की चुनौती को अस्वीकार कर हमें अपना खोखलापन प्रमाणित नहीं करना चाहिये ।

युग सृजन के निमित्त प्रतिभाओं को चुनौती

प्रस्तुत समय, जिससे हम गुजर रहे हैं—संधिकाल है। यह युगसंधि का समय, अवसर न चूकने जैसा है । आपत्तिकाल में लोग निजी व्यवसाय छोड़ कर दुर्घटना से निपटने के लिए दौड़ पड़ते हैं । अग्निकाण्ड, भूकम्प, दुर्भिक्ष, महामारी, दुर्घटना जैसे अवसरों पर उदार सेवा भावना की परीक्षा होती है । भावनाशील इस अवसर पर चूकते नहीं । उपेक्षा करने वाले तिरस्कृत जैसे होते और सेवा साधना में जुट पड़ने वाले सदा सर्वदा के लिए लोगों के मन पर अपनी प्रामाणिक महानता की गहरी छाप छोड़ते हैं, जो कालान्तर में उन्हें अनेक माध्यमों से महत्त्वपूर्ण वरिष्ठता प्रदान कराती है ।

इतिहास साक्षी है कि आपत्ति काल में राजपूत घरानों से एक-एक सदस्य सेना में भर्ती होता था । सिख धर्म जिस दिनों चला था, तब भी उस विपन्न बेला में, उस प्रभाव क्षेत्र में आए हर परिवार ने अपने परिवार में से एक को 'सिख' सेना का सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहित किया था । आज की बेला, तब की अपेक्षा कम विपन्न नहीं है । नव सृजन में संलग्न होने के लिए हर घर से एक प्रतिभा को आगे आना चाहिए और भारत भूमि की सतयुगी गरिमा को जीवन्त रखने का श्रेय लेना चाहिए । इक्कीसवीं सदी में सतयुग की वापसी वाली संभावनाएँ सुस्पष्ट हैं । कुछेक चिह्न पहले से ही प्रकट हो रहे हैं । ऐसे व्यक्तित्त्व उभर रहे हैं, जो लोक निर्वाह में कटौती करके अपनी भाव संवेदनाएँ, आकांक्षाएँ एवम् गतिविधियों को सृजन प्रयोजनों में समर्पित कर सकें, जिससे उनका समर्पण अन्धकार में जलती मशाल की भूमिका निभाते हुए सब की आँखों में चमक पैदा कर सके ।

स्वर्ग मुक्ति दिव्य दर्शन आदि के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है और निराश भी रहना पड़ सकता है। पर सत्प्रयोजनों के लिए प्रस्तुत किया गया आदर्शवादी साहस व्यक्तित्व को ऐसा प्रामाणिक प्रखर एवं प्रतिभावान बनाता है, जिसके उपार्जन को दैवी सम्पदा के रूप में आँका जा सके; जिस पर आज की भौतिक सम्पदाओं सुविधाओं को निछावर किया जा सके । धनाढ्य और विद्वान कुछ लोगों पर ही अपनी धाक जमा पाते हैं, पर महामानव स्तर की प्रतिभाएँ इतिहास को-समस्त मानव जाति को कृतकृत्य करती हैं।

प्रतिभाओं का प्रयोग जहाँ कहीं भी जब कभी भी औचित्य की दिशा में हुआ है, वहाँ उन्हें हर प्रकार से सम्मानित पुरस्कृत किया गया है । अच्छे नम्बर लाने वाले छात्र पुरस्कार जीतते और छात्रवृत्ति के अधिकारी बनते हैं । सैनिकों में विशिष्टता प्रदर्शित करने वाले वीरता पदक पाते हैं । अधिकारियों की पदोन्नति होती है। लोकनायकों के अभिनन्दन किए जाते हैं । संसार उन्हें महामानव का सम्मान देता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथा भगवान उन्हें हनुमान, अर्जुन जैसा अपना सघन आत्मीय वरण करता है ।

युग सृजन बड़ा काम है । उसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति, क्षेत्र देश से नहीं वरन् विश्वव्यापी समस्त मानव जाति के चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में आमूल-चूल परिवर्तन करने से है । पतनोन्मुख प्रवृत्तियाँ तो आँधी तूफान की तरह गति पकड़ लेती हैं, पर उन्हें रोकना और तदुपरान्त उत्कृष्टता की दिशा में उछाल देना असाधारण दुस्साहस भरा प्रयत्न है । कैंसर के मरीज को रोग मुक्त करना और निरोग होने पर उसे पहलवान स्तर का समर्थ बनाना एक प्रकार से चमत्कारी कायाकल्प है । ऐसे उदाहरण सम्राट् अशोक स्तर के अपवाद स्वरूप ही दीख पड़ते हैं, पर जब यही क्रिया सार्वभौम बनानी हो तो कितनी दुरूह होगी, इसका अनुमान वे ही लगा सकते हैं, जिन्हें असंभव को संभव कर दिखाने का प्रण पूरा करना हो। जिन्हें करना कुछ न हो उनकी समीक्षा तो बाल विनोद ही हो सकती है ।

दुस्साहस पर प्रतिभाएँ उतरती हैं । विशेषतया जब वे सृजनात्मक हों । कटे हुए अंगों के घाव भरना, उनमें दूसरे प्रत्यारोपण जोड़ कर पूर्व स्थिति में लाना मुश्किल सर्जरी का ही काम है । युग की समस्याओं को सुलझाने के लिए अनौचित्य को निरस्त करने और सृजन का अभिनव उद्यान खड़ा करने के लिए ऐसे व्यक्तित्व चाहिए जो परावलम्बन की हीनता से, स्वार्थपरता की संकीर्णता से ऊँचे उठकर, अपने को परिष्कृत करने के साथ-साथ वातावरण को संस्कार सम्पन्न बना सकने की उत्कण्ठा से अन्तःकरण को भाव संवेदनाओं से ओतप्रोत कर सकें ।

आत्मबल की अनुभूति आदर्शवादी प्रतिभा में हो

आत्मबल बढ़ाने के लिये उपासना को सब कुछ माना जाता है और उसी के सहारे मनोकामनाओं की पूर्ति से लेकर स्वर्ग मुक्ति तक देवताओं और भगवानों से अपनी मान्यताओं के अनुरूप छवि बनाकर दर्शन देने की अपेक्षा की जाती है । ऋद्धि-सिद्धियों की आशा भी कितने ही लोग लगाए रहते हैं और सफलता की कसौटी यह मानते हैं कि उन्हें चित्र विचित्र कौतुक कौतूहल दृष्टिगोचर होते हैं । चमत्कार देखने और चमत्कार दिखाने तक ही उनकी सफलता सीमित रहती है । पर बात वस्तुतः ऐसी है नहीं । यदि आत्म शक्ति जागी तो उसका दर्शन आदर्शवादी प्रतिभा में ही अनुभव होगा । उसी में ध्वंस से निपटने और सृजन को चरितार्थ कर दिखाने की सामर्थ्य होती है । यही दैवी वरदान है । इसी को सिद्ध पुरुषों का अनुदान भी कह सकते हैं । यथार्थ खोजों-अन्वेषणों में भी यही तथ्य उभर कर आते हैं ।

भगवान शंकर ने परशुराम को काल कुठार थमाया था, उन्होंने पृथ्वी को इक्कीस बार अनाचारियों से मुक्त कराया । सहस्रबाहु की अदम्य समझी जाने वाली शक्ति का दमन उसी के द्वारा संभव हुआ था । प्रजापति ने दधीचि की अस्थियाँ माँग कर इन्द्र को वज्रोपम प्रतिभा प्रदान की थी, जिससे वृत्तासुर जैसे अजेय दानव से निपटा जा सका । अर्जुन को गाण्डीव देवताओं से मिला था । क्षत्रपति शिवाजी की भवानी तलवार देवी द्वारा प्रदान की गई बताई जाती है । वस्तुतः यह किन्हीं अस्त्र-शस्त्रों का उल्लेख नहीं है, वरन् उस समर्थता का उल्लेख है, जो लाठियों या ढेलों से भी अनीति को परास्त कर सकती है । गाँधी के सत्याग्रह में उसी स्तर के अनुयायियों की आवश्यकता पड़ी थी ।

ऋद्धियों-सिद्धियों द्वारा किसी को न तो बाजीगर बनाया जाता है और न कौतुक दिखाकर मनोरंजन किया जाता है । विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को यज्ञ के बहाने अपने आश्रम में ले गये थे । वहाँ उन्हें बला-अतिबला विद्या प्रदान की थी । उनके सहारे वे शिव-धनुष तोड़ने, सीता स्वयंवर जीतने, लंका की असुरता मिटाने और रामराज्य के रूप में सतयुग की वापसी संभव कर दिखाने में समर्थ हुए थे । विश्वामित्र ने ही अपने एक दूसरे शिष्य हरिश्चन्द्र को ऐसा कीर्तिमान स्थापित करने का साहस प्रदान किया था, जिसके आधार पर वे तत्कालीन युग सृजन योजना को सफल बनाने में समर्थ हुए थे । साथ ही साथ हरिश्चन्द्र के यश को भी इस स्तर तक पहुँचा सके थे जिसकी सुगंध पर मोहित होकर देवता भी आरती उतारने धरती पर आए ।

चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को कोई गढ़ा खजाना खोद कर नहीं थमाया था, वरन् ऐसा संकल्प बल उपलब्ध कराया था जिसके सहारे आक्रमणकारियों का मुँह तोड़कर चक्रवर्ती कहला सके थे । समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी के हौसले इतने बुलन्द किए थे कि वे अजेय समझे जाने वाले शासन को नाकों चने चबवाते रहे ।

नेपोलियन का कहना था कि असंभव शब्द मूर्खों के कोष में है । आल्प्स पर्वत जैसे दुर्गम अवरोध को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसने जब पार करने की ठानी, तो प्रश्न सामने आया कि अब तक कोई उसे पार नहीं कर सका, सभी महत्त्वाकांक्षी उसी अवरोध में उलझ कर अपनी हस्ती गँवा बैठे, तो उसके लिए ही कैसे संभव हो सकता था कि दूसरे छोर तक पहुँच सके ? उसके संकल्प ने आश्वासन दिया कि आल्प्स को नेपोलियन के लिए मार्ग देना ही पड़ेगा । हुआ भी ऐसा ही ।

देवताओं ने सिद्धार्थ को राजकुमार न रहकर धर्मचक्र प्रवर्तन में संलग्न होने का परामर्श दिया था । सिद्ध पुरुष माने जाने वाले गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ के तप वैभव के अधिकारी बने थे । रामानन्द ने कबीर को स्वर्ण खान कहाँ नहीं सौंपी थी ? वरन् वह प्रतिभा प्रदान की थी जिसके कारण कुलीनता और विद्वता के अभाव में भी अपने समय के प्रचण्ड प्रवर्तक के रूप में प्रख्यात हुए । भगवान के भक्तों में सर्वोपयोगी नारद माने जाते हैं । उन्हें वह ललक मिली थी कि जन-जन में भाव संवेदना का बीजारोपण करते हुए अनवरत रूप से संलग्न रह सकें । पवन ने अपने पुत्र हनुमान को वह वर्चस् प्रदान किया था कि राम चरित्र में मेरुदण्ड जैसी भूमिका का निर्वाह कर सके ।

गाँधी ने अपने प्रिय पात्र विनोबा को महान प्रयोजनों के लिए मर मिटने की भाव संवेदना प्रदान की थी । उनके सम्पर्क में आने वाले अन्य लोगों ने भी जुझारू प्रतिभा पायी और अपने चरित्र तथा कर्तृत्व से जन मानस पर गहरी छाप छोड़ने में सफल हो सके ।

सन्त यादवेन्द्र पुरी ने अपने शिष्य चैतन्य को जन जागरण के कर्मक्षेत्र में उतारा था । विरजानन्द ने दयानन्द को ऐसा ही पुरुषार्थ प्रकट करने के लिए उद्यत किया था । रामकृष्ण परमहंस द्वारा विवेकानन्द को जिस मार्ग पर चलाया गया वह लोकमंगल के लिए समर्पित होकर, स्वंय संकल्पवान नर रत्न की तरह चमकने और मूर्च्छित संस्कृति में प्राण चेतना फूंकने वाला राजमार्ग ही था ।

महर्षि अगस्त्य ने भगीरथ को राज-पाट छोड़कर गंगावतरण के महाप्रयास में संलग्न होने के लिए नियोजित किया था । लक्ष्य इतना उच्चस्तरीय था कि उनकी सफलता में योगदान देने के लिए स्वयं शंकर जी को कैलाश छोड़कर आना पड़ा था । योगी भर्तृहरि ने अपने भाई विक्रमादित्य को आदर्श शासक और भाँजे गोपीचन्द को तत्व दर्शन के अवगाहन में संलग्न किया था । इससे अधिक और कुछ कोई अपने स्वजन सम्बन्धियों को दे ही क्या सकता है ?

सम्राट अशोक ने जो प्रेरणा पाई थी । उसी को अपनाने के लिए अपने सुपुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को परिव्राजक के रूप में धर्म प्रचार के लिए समर्पित कर दिया था । स्वयं बुद्ध भी तो अपने पुत्र राहुल को इसी स्तर की दीक्षा दे चुके थे । बुद्ध परम्परा में आम्बपाली से लेकर कुमारजीव तक ऐसे अनेक प्रतिभाशाली हुए जो भौतिक सुख भोगों से कोसों दूर रहकर धर्म प्रयोजनों में ही लगे रहते थे । मध्यपूर्व को भारतीय संस्कृति की छत्र-छाया में लाने का श्रेय महाभाग कौंडिन्य को जाता है, जिनने उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीवन भर प्रयास जारी रखा ।

योग विज्ञान और प्रतिभा सम्पादन

भारत का एक पुरातन विज्ञान चेतना विज्ञान है, जिसे योग साधना, तपश्चर्या आदि के नाम से जाना जाता है। उसके फलस्वरूप उपलब्ध हो सकने वाली ऋद्धि-सिद्धियों से पुराण गाथाओं का पन्ना भरा है । यह योगाभ्यास आखिर है क्या ? इसकी गहराई तक उतरने वाले जानते हैं कि यह तितीक्षाओं के साथ जुड़ी हुई कर्मकाण्डों की प्रत्यक्ष फलश्रुति प्रतीत होते हुए भी वस्तुतः मनोबल को उभारने, प्रतिभा को जगाने और प्रसुप्त प्राणाग्नि को प्रज्ज्वलित करने की प्रक्रिया मात्र है । देवशक्तियों का केन्द्र बिन्दु वही है । वृक्ष पर फल-फूल आकाश से टपक कर चिपकते रहने की बात सोचने वाले वस्तुतः गलती पर होते हैं । जड़ों के द्वारा खींचा गया धरती का रस ही तने को मजबूत करता है; पल्लवों को हरियाली और वृक्षों को सुविस्तृत छायादार बना कर उन्हें फल-फूलों से लाद देता है । उसी जीवट के आधार पर वे आँधी तूफानों से लड़ते और अपनी जगह अकड़ कर चिरकाल तक खड़े रहते हैं । सिद्ध पुरुष अभीष्ट प्रगति के उच्च शिखर पर पहुँचते हैं । महापुरुषों की सफलताएँ पुरुषों को धिक्कारती और विजयश्री वरण कर सकने की शिक्षा प्रत्यक्ष प्रमाण बन कर देती हैं । उनसे उत्साहित होकर कभी-कभी तो अर्धमृत और अर्धमूर्च्छित भी देवमानवों जैसे पुरुषार्थ करके दिखाने लगते हैं ।

यदि किसी को पुरातन भारत की सशक्त महानता का आधार अध्यात्म योग मानने का शब्द मोह न हो, तो उसके साथ इतना और जोड़ना चाहिए-उसका भव्य भवन दो आधारों पर ईंट-चूने की नींव पर विनिर्मित हुआ था । उनमें से एक था तप अर्थात् व्यक्तित्त्व को उच्चस्तरीय साहसकिता से भरा पूरा प्रतिभा सम्पन्न बनाना और दूसरा सुव्यवस्था बना सकने की प्रवीणता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का प्रतिनिधित्त्व कर सकने वाले कौशल का पक्षधर दृष्टिकोण परिमार्जित करना । इन दोनों के लिए यदि चरम स्तर का प्रयत्न बन पड़े तो समझना चाहिए कि अध्यात्म योग का वास्तविक अर्थ समझ लिया गया। उस स्तर की प्रगति ही उन सफलताओं को प्रस्तुत करती है, जिन्हें ऋद्धि-सिद्धियों के नाम से जाना जाता है । वे किसी पर आसमान से पुष्प वर्षा होने की तरह बरसती नहीं है ।

अध्यात्म बल का सम्पादन कठिन नहीं वरन् सरल है । उसके लिए आत्मशोधन एवं लोकमंगल के क्रियाकलापों को जीवनचर्या का अंग बना लेने भर से काम चलता है । व्यक्तित्त्व में पैनापन, प्रखरता का समावेश इन्हीं दो आधारों पर बन पड़ता है । यह बन पड़े तो दैवी अनुग्रह अनायास बरसता है और आत्मबल अपने भीतर से ही प्रचुर परिमाण में उभर पड़ता है । केवट, शबरी, गिलहरी, रीछ-वानर, ग्वालबाल जैसों की भौतिक सामर्थ्य स्वल्प थी, पर वे अपने में देवत्व की मात्रा बढ़ा लेने पर ही इतने मनस्वी बन सके, जिसकी चर्चा इतिहासकार आये दिन करते रहते हैं । सुग्रीव की विजय के पीछे उसकी निज की बलिष्ठता मात्र ही कारण नहीं हुई थी । नरसी मेहता ने अभीष्ट धन अपने व्यवसाय से नहीं कमाया था । अमृतसर का स्वर्ण मंदिर किसी एक धनवान की कृति नहीं है । इनके पीछे देवत्व का अदृश्य सहयोग भी सम्मिलित रहा है । ध्रुव को ब्रह्माण्ड के केन्द्र बनने का श्रेय उसके तपोबल के सहारे ही संभव हुआ था । दक्षिण मुखी प्रवाह मोड़ते मरोड़ते गंगा को पूर्व की ओर बहने के लिए बाधित करने वाले तपस्वी भगीरथ की कथा गाथा प्रसिद्ध है । उन्हीं को भागीरथी का पिता कहलाने का श्रेय प्राप्त है। ऐसा ही एक प्रयास अनुसूया ने चित्रकूट के समीप मंदाकिनी को अभीष्ट दिशा में ले जाने का किया था । कहते तो यहाँ तक हैं कि उनके तेजस् से प्रभावित होकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश तक बालक बनकर अनुशासन पालन के लिए विवश हुए थे ।

सतयुग, ऋषियुग का ही प्रकट रूप है । असुरता की अभिवृद्धि होते ही कलह युग-कलियुग आ धमकता है । उच्च स्तरीय प्रतिभाओं का पौरुष जब कार्य क्षेत्र में उतरता है तो न केवल कुछ व्यक्तियों को, कुछ प्रतिभाओं को वरन् समूचे वातावरण को ही उलट-पुलट कर रख देता है । धोबी की भट्ठी पर चढ़ने से मैले कपड़ों को सफाई से चमचमाते देखा गया है । भट्ठी में तपने के बाद मिट्टी मिला बेकार लोहा फौलाद स्तर का बनता और उसके द्वारा कुछ न कुछ कर दिखाने वाले यंत्र उपकरण बनते हैं । आत्मशक्ति की प्रखरता को इसी स्तर का बताया और पाया गया है ।

इन दिनों आत्मबल परायण इन पुरुषार्थों की उपेक्षा कर शरीर ही आराध्य देव बना हुआ है । उसे बलिष्ठ और मजबूत बनाने में मनुष्य की तीन चौथाई क्षमता का नियोजन होता रहता है । इतने पर भी सज्जा, उपकरण,बहुमूल्य आहार, औषधियों के पिटारे कुछ काम नहीं आते । अमीर, गरीबों की अपेक्षा अधिक दुर्बल, बीमार और अल्पजीवी पाये जाते हैं । चिकित्सा के व्यवसायी अपने परिवार समेत स्वयं तक बीमारियों के शिकार बने रहते और तथाकथित आहार विज्ञान से लेकर औषधि विडम्बना को प्रत्यक्ष न सही, मन ही मन तो कोसते ही रहते हैं ।

मनोबल इससे सर्वथा भिन्न प्रकार की राह दिखाता है । वह जग गया, तो उससे जुड़ी रहने वली प्रतिभा भी प्रसुप्त नहीं पड़ी रहती । अफ्रीका के मसाई मात्र भालों के सहारे बब्बर-शेरों से भिड़ते और उन्हें मार कर अपनी शादी के लिए निश्चित शर्त को पीढ़ी दर पीढ़ी पूरी करते रहते हैं । विश्व विख्यात सेण्डो पहलवान जवानी की दहलीज तक पहुँचने तक हड्डियों का ढाँचा और जुकाम के जाल में पूरी तरह जकड़ा हुआ था । पर जब उसके मार्गदर्शक ने जीवन की नयी विधा सुझाई तो वह दिन-दिन स्वस्थ बलिष्ठ होता गया और एक दिन वह संसार का माना हुआ पहलवान बन गया। भारत का हिन्द केसरी उपाधि वाला चन्दगीराम अध्यापक की नौकरी करने के दिनों तक तपेदिक का मरीज था और उसकी छूत न लग जाने के भय से हर कोई दूर रहता था । पर जब उसने अपना मानसिक कायाकल्प साहसपूर्वक कर डाला, आदतों को पूरी तरह उलट दिया तो प्रकृति देवी ने उस पर अजस्र वरदान बरसाया और हिन्दुस्तान का जाना-माना पहलवान बना दिया ।

इक्कीसवीं सदी से प्रारंभ होने वाला युग अभियान सम्पन्न तो प्रतिभावान मनुष्यों द्वारा ही होगा, पर उनके पीछे निश्चित रूप से ऐसी दिव्य चेतना जुड़ी हुई होगी जैसी कि फ्रांस की एक कुमारी जोन ऑफ आर्क ने रण कौशल से अपरिचित होते हुए भी अपने देश को पराधीनता के पाश से मुक्त कराने में सफलता प्राप्त की थी । महात्मा गांधी और संत विनोबा जो कर सके वह उस स्थिति में कदाचित ही बन पड़ता जो वे बैरिस्टर, मिनिस्टर, नेता, अभिनेता आदि बनकर कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सके होते । वास्तव में यह उदात्त दृष्टिकोण की परिणति है ।

प्राचीन काल में ऐसे कथा कृत्यों की कथा गाथाएँ अपने स्थान पर विचित्र हैं । मिट्टी के टीले बनाकर किसी प्रकार साँसें गिनते रहने वाले च्यवन ऋषि ने जब अपने दृष्टिकोण और पुरुषार्थ को दूसरी दिशा में मोड़ दिया तो अश्विनी कुमार वैद्य भी अपनी दवाओं का पिटारा लेकर दौड़े आये और उन्हें बूढ़े से जवान बना दिया । जिनका दम निकलने की प्रतीक्षा में स्वादिष्ट भोजन पाने के लिए लोमड़ियाँ चक्कर काटती रहती हैं उन्हीं की सेवा सहायता करने के लिए सुकन्या जैसी अनिंद्य सुन्दरी राजकुमारी प्राणपण से जुट गई । ययाति के बूढ़े से जवान हो जाने की कथा प्रसिद्ध है । हनुमान बचपन से ही पवन-पुत्र प्राणपुंज कहलाते थे और उनके पहाड़ पर गिरने से विशालकाय शिला चूर-चूर हो गई थी । पार्वती की युगों तक तप करने से क्षीण हुई काया शिव को वरण करते ही त्रैलोक्य मोहिनी बन गई थी । अर्जुन के वाणों ने पाताल से जल धारा उभार कर मरणासन्न भीष्म पितामह को ताजा जल पिलाया था । टिटिहरी का समुद्र को सुखाकर अण्डे वापस लेने का संकल्प भले ही अगस्त्य के माध्यम से पूरा हुआ हो पर वह अधूरा तो नहीं ही रहा ।

यह कुछ उन साहसी प्रतिभावान मनस्वियों की गौरव-गाथा हुई, तो जिनने लोकहित को सर्वोपरि स्वीकारते हुए जीवन की तदनुरूप रीति-नीति निर्धारित की और अमर हो गये । इसके विपरीत वे पुराणपंथी हैं, जिनने वैभव बढ़ाने, सुविधा भोगने, दर्प दिखाने और औलाद के लिए भरे खजाने छोड़कर मरने जैसी सफलताएँ अर्जित तो कीं, पर उस गौरव गरिमा से वंचित ही बने रहे, जो प्रतिभावान महामानव प्राप्त कर सके । आजकल ऐसों की ही गली-कूचों में भरमार है।

श्रम संभवत: उन्हें भी महापुरुषों से कम न करना पड़ा होगा । पर संकीर्ण स्वार्थ परता की परिधि से ऊँचे न उठने के कारण सुर दुर्लभ जीवन सम्पदा के व्यर्थ नियोजन पर पश्चाताप करते ही मरे होंगे । इसके विपरीत महर्षि कर्वे, हीरालाल शास्त्री, बाबासाहब आम्टे, महामना मालवीय जी, भामाशाह, स्वामी श्रद्धानन्द, अहिल्या बाई, सुभाष चंन्द्र बोस जैसी विभूतियों को प्रात: स्मरणीय समझा जाता है, जिन्होंने स्वयं तो रोटी; कपड़े पर निर्वाह किया, पर अपने समूचे वर्चस् को परमार्थ प्रयोजनों के लिए नियोजित कर दिया । विदेशी प्रतिभाओं में जापान के गाँधी कागावा, बेडेन पॉवेल, रूस के मार्क्स, लेनिन आदि को संसार के इतिहास में जगमगाते हीरकों की तरह आँका जाता है। वस्तुत: प्रतिभाएँ संसार के हर क्षेत्र में मौजूद हैं। धनाढ्यों शासनाध्यक्षों, कलाकारों, व्यवसायियों, वैज्ञानिकों और मनीषियों को अपने-अपने ढंग से काम करते हुए देखा जा सकता है । उन्हें जो भी उत्तरदायित्त्व मिला, उसे उनकी प्रखरता और प्रचण्डता ने आश्चर्यजनक सफलता के साथ सम्पन्न किया है । इन वर्गों को युग चेतना अछूता नहीं छोड़ेगी, उन्हें झकझोरने और समय के अनुरूप बदलने के लिए बाधित करेगी । अब तक वे भले ही स्वार्थपरता और प्रमाद को प्रोत्साहित करते रहे हों; पर आगे उन्हें अपनी क्षमता को मोड़ना मरोड़ना और सृजन प्रयोजनों के लिए नियोजित करना ही होगा ।

तूफानों, भूकम्पों, विस्फोटों, आन्दोलनों का उद्‌गम कहीं भी क्यों न रहा हो, जब वे गति पकड़ते हैं तो व्यापक बनते चले जाते हैं । राजक्रान्तियों का सिलसिला इसी प्रकार चला था और असंख्य राजमुकुट अनायास ही धराशायी होते चले गये । सृजन की भी अपनी लहर है । कभी सतयुग में ऐसा ही प्रभावोत्पादक मानसून उठा होगा, उसने धरती पर मखमली फर्श बिठाते हुए स्वर्ग जैसा वातावरण विनिर्मित कर दिया होगा ।

रात्रि की तमिस्त्रा सदा नहीं रहती । दिन को भी प्रकट होने का अवसर मिलता है । तब छोटे पक्षी ही नहीं, गजराज भी अपनी चिंघाड़ और वनराज अपनी दहाड़ से दिशाओं को गुंजित करते दिखाई देते हैं । ऐसा ही सुयोग इन दिनों आ रहा है, यह आशा सब को रखनी चाहिए और विश्वास करना चाहिए कि प्रतिभासम्पन्न नवयुग का दिनमान जब कभी भी निकलेगा, तो उस वैभव विस्तार का उद्‌गम वह प्राणाग्नि केन्द्र ही होगा, जिसको उभारना मनुष्य का परम पुरुषार्थ और ईश्वर का एकमात्र अनुग्रह कहा गया है । आज इसी की आवश्यकता है कि वैभव स्थिर रहे और दिन-दिन बढ़ता रहे और अन्तत: उस श्रेष्ठतम सदुपयोग में काम आ सके जो नन्हे से बीज से बढ़कर अत्यन्त विशालकाय वट वृक्ष के रूप में परिणित होगा ।

वैभव किसका है ? पराक्रम किसका है ? विभूतियाँ किसकी हैं ? इन सबका उत्तर देते समय नाम भगवान का ही लिया जा सकता है । पर भगवान का निकटतम् और सुनिश्चित स्थान एक ही है —

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तराल में विद्यमान प्राणाग्नि । उसी को जानने उभारने से वह सब कुछ मिल सकता है जिसे धारण कर सकने की पात्रता मनुष्य ने अर्जित कर ली है । मेघमाला द्वारा समय-समय पर बरसने वाली अजस्र जलधारा का जल उन्हीं जलाशयों में एकत्र होता है जो उस संचय के लिए समुचित गहराई और पात्रता अर्जित कर सकने में समर्थ हो सकें । आकांक्षा ऋद्धि-सिद्धियों की हो, स्वर्ग मुक्ति की, या प्रतिभा सम्पन्न बनने की, इन्हें प्राप्त करने के लिए उस प्राणाग्नि को प्रज्वलित किया जाना अनिवार्य है, जो दैवी शक्तियों का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करती है ।

बड़े कामों के लिए वरिष्ठ प्रतिभाएँ

मजबूत किलों को विस्मार करने के लिए अष्ठधातु की तोपों की गोलाबारी ही काम आती है । पहाड़ों को समतल बनाने के लिए डायनामाइट की सुरंगों का प्रयोग करना पड़ता है । रेल के डिब्बे पटरी से उतर जाने पर, उन्हें उठाने के लिए बड़ी ताकत वाली क्रेन ही अभीष्ट उद्देश्य पूरा कर सकती है । कठिन मोर्चे जीतने के लिए प्रवीण-पारंगत दुस्साहसी सेनापति ही विजय वरण करते हैं । ऐसे बड़े कामों के लिए छिटपुट साधनों का उपयोग तो निरर्थक ही होता है ।

तलवार का वार सहने के लिए गेंडे की खाल वाली ढाल चाहिए । सहस्रों टन भार लाद ले जाने वाले जलयान जो काम करते हैं, वह छोटी डोंगियों से नहीं लिया जा सकता । भयंकर अग्निकाण्ड से निपटने के लिए, बड़े आकार वाले फायर ब्रिगेड चाहिए । ऊबड़-खाबड़ क्षेत्रों को समतल बनाने के लिए बुलडोजरों से कम में काम नहीं चलता । दलदल में फँसे हाथी को उससे भी बड़े आकार वाला गजराज जल्दी खींच कर किनारे पर लगाता है । नये नगरों और बड़े बाँधों के नक्शे, सूझ-बूझ वाले वरिष्ठ इन्जीनियर ही बनाकर देते हैं ।

बड़े कामों का दायित्व उठाने और उन्हें करने की जिम्मेदारी असाधारण क्षमता सम्पन्नों को ही सौंपी जाती है । यों महत्त्व तो टट्टुओं और बकरों का भी है, पर उनकी पीठ पर हाथी वाली अम्बारी नहीं रखी जा सकती । सौ खरगोश मिलकर भी एक चीते से दौड़ में आगे नहीं निकल सकते । बड़े कामों के लिए बड़ों की ही तलाश करनी पड़ती है ।

इन दिनों बड़ी उथल-पुथल होने जा रही है । शताब्दियों से संचित सड़ाँध भरे कचरे को हटाया और ठिकाने लगाया जाना है । कँटीली झाड़ियों वाले जंगल के स्थान पर सुरम्य उद्यान खड़े करना सहज काम नहीं है । धूल भरे, लावे जैसे जलते रेगिस्तान को भी लोगों ने लहलहाती हरियाली से सुरम्य बनाया है पर इसके लिए पैनी सूझ-बूझ का परिचय देने और विपुल साधन जुटाने की आवश्यकता पड़ती है । समुद्र को छलांगने और संजीवनी बूटी वाला पर्वत उखाड़कर लाने का चमत्कार हनुमान ही प्रस्तुत कर सके थे । हर वानर ऐसा दुस्साहस कर दिखाने की हिम्मत नहीं कर सकता । असुरता का व्यापक साम्राज्य ध्वस्त करने और उसके स्थान पर सतयुगी रामराज्य का वातावरण बनाने के लिए बड़ों की बड़ी योजना और उपयुक्त साधन जुटाने की क्षमता ही उद्देश्य पूरा करा सकी थी। ऐसी आशा साधारण से नहीं की जा सकती। समुद्र सोखने की चुनौती अगस्त्य ही स्वीकार कर सकते थे ।

इन दिनों औचित्य की बाढ़ को रोकने और दलदल को मधुवन बनाने जैसी समय की चुनौती सामने हैं । विनाश के ताण्डव को रोकना और विकास का उल्लास भरा सरंजाम जुटाना ऐसा ही है, जैसे खाई को पाटना भर ही नहीं, वरन् उस स्थान पर ऊँची मीनार खड़ी करने जैसा दुहरा पराक्रम । इसे प्रवाह को उलटना ही नहीं, उलटे को उलटकर सीधा करना भी कह सकते हैं । यों मनुष्य ही असंभव को संभव कर दिखाते हैं, पर उसके लिए कटिबद्ध होना ही नहीं, अपने को क्षमता सम्पन्न सिद्ध करके दिखाना दुहरे पराक्रम का काम है । युग परिवर्तन की इस विषम वेला में ऐसा ही कुछ बन पड़ने की आवश्यकता है, जैसा कि अंधकार से भरी तमिस्रा का स्वर्णिम आभा वाले अरुणोदय के साथ जुड़ना । इति और अथ का समन्वित संधिकाल यदाकदा ही आता है । इसकी प्रतीक्षा युग-युगान्तरों तक करनी पड़ती है। इन दिनों ऐसा ही कुछ होने जा रहा है ।

विभीषिकाओं का घटाटोप हर दिशा में गर्जन-तर्जन करता देखा जा सकता है । जो चल रहा है, उससे विपत्तियों का संकेत ही मिलता है । दुर्बुद्धि ने चरम सीमा तक पहुँच कर ऐसी संभावना प्रस्तुत कर दी है, जिसे बुरे किस्म की दुर्गति ही कह सकते हैं । प्रवाह को और अधिक उत्तेजित कर देना सरल है, पर उसे उलट कर सृजन की दिशा में योजनाबद्ध रूप से नियोजित कर सकना ऐसा है, जिसकी आशा विश्वकर्माओं से ही की जा सकती है । उन्हीं के लिए दशों दिशाओं से पुकार उठ रही है । उन्हीं को खोज निकालने या नये सिरे से ढालने के लिए समय मचल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहा है । बड़े काम आखिर बड़ों के बिना कर ही कौन सकेगा ?

प्रश्न क्षेत्र विशेष की परिस्थतियों से निपटने का नहीं है और न समुदाय विशेष से निपटने का । अभावों को दूर करने का भी नहीं है और न साधन जुटाने की अनिवार्यता जैसा अति कठिन कार्य। सामने यह है, कि संसार भर के मानव समुदाय पर छाई हुई विचार विकृति का परिशोधन किस प्रकार किया जाय ? यह कार्य लेखनी, वाणी एवं प्रचार माध्यमों से भी एक सीमा तक ही हो सकता है, सो भी बड़ी मंद गति से । जबकि आवश्यकता इस बात की है कि लोक चिन्तन में गहराई तक घुसी हुई भ्रष्टता से कैसे निपटा जाय और उसके फलस्वरूप जो दुराचरण का सिलसिला चल पड़ा है उसके उद्‌गम को बंद कैसे किया जाय ? धूर्तता इन दिनों इस कदर बढ़ी हुई है, कि वह कानूनी दंड व्यवस्था से लेकर धर्मोपदेश स्तर की नीति मर्यादा को भी अंगूठा दिखाती है । सदाशयता का जोर-शोर से समर्थन करने वाले ही जब नये-नये मुखौटे बदलकर कृत्य-कुकृत्य करने की दुरभिसंधियाँ रचते रहे हैं, तो उन्हें कौन किस प्रकार समझाये ? जागते हुए को कोई क्या कहे ? क्या सोते से जाग पड़ने की आवश्यकता समझाये ? प्रचार माध्यम अब अपनी विश्वसनीयता खोते चले जा रहे हैं। क्योंकि उपदेष्टा ही कथन के ठीक विपरीत आचरण करे तो उसे क्या कह कर, किस प्रकार समझाया जाय ? उसकी बात पर कोई क्यों और किस आधार पर, कितना विश्वास करे ?

एकमात्र उपाय यही है

उपाय एक ही शेष रह जाता है कि ऐसी प्रतिभाएँ नये सिरे से उभरें, जो अपना निज का आदर्श प्रस्तुत करते हुए सिद्ध करें कि सही मार्ग पर चलना न तो घाटे का सौदा है, न असंभव और अव्यावहारिक । खरा उदाहरण प्रस्तुत करना ही एक मात्र ऐसा उपाय अभी शेष है, जिसके आधार पर आदर्श अपनाने के लिए लोगों को सहमत एवं प्रोत्साहित किया जा सकता है । चोर, जुआरी, लावारिस, व्यभिचारी, नशेबाज, अनाचारी जब अपनी कथनी और करनी में एकता दिखाकर अनेक को अपने साथ चलने के लिए सहमत कर सकें, तो आदर्शों का अनुकरण करने के लिए तैयार करना भी कठिन नहीं है ।

प्राचीन काल में ऋषि ऐसे ही जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किया करते थे । स्वयं को उच्च आदर्शों के अनुरूप स्वयं के आचरण बनाने-ढालने के कष्ट साध्य क्रम को ही तपश्चर्या कहा जाता रहा । वशिष्ठ हों या विश्वामित्र, चरक हों या याज्ञवल्क्य, सभी ने समय के अनुरूप नयी शोध की, उसे स्वयं पर घटित करके उसकी प्रामाणिकता सिद्ध की और इसी आधार पर सारे समाज को लाभान्वित किया । बुद्ध इसी आधार पर अवतार कहलाए और गाँधी इसी प्रक्रिया की कसौटी पर कसे जाकर राष्ट्रपिता का सम्मान पा सके। वर्तमान समय की समस्यायें भी युग प्रतिभाओं से इसी स्तर के समाधान चाहती हैं ।

प्रतिभाओं को दुहरे मोर्चे पर लड़ने का अभ्यास करना चाहिए । उनमें से एक है दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन और दूसरा है सत्प्रवृत्ति संवर्धन । इन प्रयासों का शुभारम्भ अपने निज के जीवनक्रम से करके इन्हें परिवार में प्रचलित किया जा सकता है । इसके बाद पड़ोसियों, स्वजन-संबंधियों, परिचित घनिष्टों और उन सब को आलोक वितरण से लाभान्वित किया जा सकता है, जो अपने प्रभाव परिचय क्षेत्र में आते हैं।

अपने स्वभाव में अनेक ऐसी आदतें सम्मिलित हो सकती हैं, जो अखरती तो नहीं; पर लकड़ी में लगे घुन की तरह निरन्तर खोखला करने में अनवरत रूप से लगी रहती हैं । इनसे निपटने के लिए मोर्चाबंदी यहीं से आरम्भ करनी चाहिए । सबसे बुरी किन्तु सर्वाधिक प्रचलित कुटेव एक है:—वह है आलस्य । चोरी अनेक तरह की हैं, किन्तु अपने आपको और अपने सगे संबधियों को सबसे अधिक हानि पहुँचाने वाली है कामचोरी । इसमें प्रतीत भर ऐसा होता है कि हम आराम से रह रहे हैं, मजे के दिन काट रहे हैं, पर सच बात यह है कि इस कुटेव के कारण आदमी दिन-दिन अनुपयोगी, अनगढ़, अयोग्य, अक्षम अशक्त होता जाता है । प्रगति की समस्त संभावनाएँ, आलसी को दूर से ही नमस्कार करके उल्टे पैरों लौट जाती है।

यह समझा जाना चाहिए कि पसीने की हर बूँद मोती होती है । जीवन की बहुमूल्य शृंखला, क्षणों के छोटे-छोटे कणों से मिलकर बनी है । समुन्नत वह रहे हैं जिन्होंने समय का मूल्य समझा और उसकी हर इकाई का श्रेष्ठतम एवं क्रमबद्ध व्यस्त उपयेाग करने का तारतम्य बिठाया । जो आलस्य-प्रमाद में उसे गँवाते रहते हैं, धीमी गति और ढीले तारतम्य से उसे ज्यों-त्यों करके काटते रहते हैं, वे किसी प्रकार अपनी मौत के दिन पूरे भर कर पाते हैं । उन्हें और तो कुछ मिलना ही क्या था, प्रतिभा परिवर्धन के सहज लाभ तक से वंचित रह जाते हैं । यह दुर्घटना अपने या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने किसी प्रिय पात्र के जीवन में घटने न पाये; इसका विशेष सतर्कतापूर्वक ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है । लम्बे समय के भारी और कठिन काम करने वालों के बीच-बीच में थोड़ा सुस्ताने की आवश्यकता अवश्य पड़ती है, पर उसकी पूर्ति थोड़ी देर के लिए काम या मन बदलने भर से पूरी हो जाती है । हृदय, जन्म के दिन से लेकर मरणपर्यन्त धड़कता रहता है । इसी अवधि में वह कुछ क्षणों का विश्राम भी ले लेता है । हमारे भी काम और विश्राम के बीच इसी प्रकार का तालमेल बिठाया जाना चाहिए ।

अपने दायित्त्व की क्रमबद्ध व्यवस्था बना लेना इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति की दूरदर्शिता, विवेकशीलता और कार्य कुशलता उच्च स्तर की है । कारखानों-दफ्तरों में, मैनेजरों की योग्यता पर उनका संचालन और विकास निर्भर रहता है । शासन में, प्रान्तों के संरक्षक गवर्नर माने जाते हैं । अंग्रेजी शासन के जमाने में भारत के प्रधान व्यवस्थापक को गवर्नर जनरल कहते थे । वह पद सबसे ऊँचा माना जाता था। सुपरिण्टेण्डेण्ट शब्द भी प्रायः इसी अर्थ का बोधक है ।

महत्त्वपूर्ण सफलताएँ जब भी, जहाँ भी, जिन्हें भी मिली हैं; उनमें व्यवस्था तंत्र की प्रमुख भूमिका रही है। सेनापतियों का कौशल उनकी रणनीति के आधार पर आँका जाता है । योजनाबद्ध उपक्रम बनाकर ही विशालकाय निर्माण कार्य बन पड़ते हैं । श्रम को, श्रमिकों को, साधनों को पर्याप्त मात्रा में जुटा लेने पर भी इस बात की गारंटी नहीं होती कि जिस स्तर की जितनी सफलता अभीष्ट थी, वह मिल ही जायगी । यह संभावना इस बात पर टिकी रहती है, कि आज के उपलब्ध साधनों का किस प्रकार श्रेष्ठतम उपयोग करते बन पड़ा । यह इस बात पर निर्भर रहता है कि हाथ के नीचे जो काम हैं, उसके अनुकूल और प्रतिकूल पक्ष की, हर हलचल और समस्या को कितनी गंभीरता और यथार्थता के साथ आंका गया ? समय रहते उनसे निपटने का किस प्रकार जुगाड़ बिठाया गया ? सफलता ऐसे ही तेजस्वियों का वरण करती है, श्रेयाधिकरी वे ही बनते हैं जो मात्र अपने जिम्मे के काम को बेगार की तरह भुगत लेते हैं उन्हें श्रमिक भर कहा जा सकता है । व्यवस्थापक का श्रेय तो उन्हें मिल ही नहीं पाता । परिपूर्ण दिलचस्पी, एकाग्र मनोयोग, समुचित उत्साह और आगे बढ़ने का अदम्य साहस मिलकर ही ऐसी स्थिति विनिर्मित करते हैं, जिसमें बड़े काम सध सकें; भले ही प्रयत्नकर्ता साधारण साधनों, साधारण योग्यताओं वाला ही क्यों न हो । ऐसे लोग परिस्थितियों की प्रतिकूलता से भयभीत नहीं होते । उन्हें अनुकूल बनाने में अपनी समग्र क्षमता को दाँव पर लगाते हैं । ऐसे ही लोग समर्थ कहलाते और नेतृत्त्व कर सकने के अधिकारी सिद्ध होते हैं ।

समर्थों की भूमिका

आमतौर से समर्थों का आश्रय लेने असमर्थ ही आते हैं । जिन्हें पाना है वे उनके पास पहुँचते हैं जिनके पास देने की क्षमता है । कुए के पास प्यासा पहुँचता है, प्यासों के पास कुआँ कहाँ जाता है ? वृक्ष के नीचे थके-माँदे लोग पहुँचते हैं । वृक्ष को क्या पड़ी, जो उन्हें ढूँढता फिरे ? फूल से पराग पाने मधुमक्खियाँ पहुँचती हैं । दानी के पास भिक्षुक न्यायाधीश के पास संत्रस्त, अस्पताल में मरीज पहुँचते रहते हैं । समर्थ सम्पन्नों का क्या अटकाव जो समर्थों, दरिद्रों और पिछड़े लोगों को ढूँढें । सामान्य परम्परा यही है कि जिसकी गर्ज पड़े वह समर्थों को ढूँढे, सम्पर्क साधे और अभिलाषा व्यक्त करे ।

किन्तु कई बार कई परिस्थितियों में कई लोग तक ठीक विपरीत व्यवहार करते हुए भी देखे गए हैं । खेत बादलों के पास नहीं जाते, बादल ही समुद्र से पानी लादकर लाते । और खेत-खेत पर पहुँचाते देखे गए हैं। हवा ही प्राणियों तक दौड़कर जाती है और उन पर अपना आक्सीजन कोष बिना माँगे अहसान जताए निरन्तर उड़ेलती रहती है । सूर्य तक कौन पहुँच पाये? सूर्य ही अपनी ऊष्मा और आभा धरती के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए परिभ्रमण करता रहता है । चन्द्रमा की चाँदनी भी उसी प्रकार सर्वत्र पहुँचती और शीतलता बिखेरती है ।

कुछ ऐसे भी हैं जो रहते तो एक जगह पर हैं पर अपनी क्षमता से सुदूरवर्ती क्षेत्रों को लाभान्वित करते हैं। दीपक जलता तो अपने स्थान पर ही है पर उसका प्रकाश दूर-दूर तक पहुँचता है और अन्धकार के भटकाव को निरस्त करता है । समुद्र और हिमालय रहते तो नियत स्थान पर ही हैं पर ऐसी रीति-नीति अपनाते हैं कि उनकी सम्पदा सुदूर क्षेत्रों में बसे हुओं के ही काम आ सके । वैज्ञानिक, साहित्यकार, ऋषि, योगी प्रायः एक नियत स्थान पर ही रहते हैं पर उनका व्यक्तित्त्व और कर्तृत्व अपनी निजी लोभ लिप्सा में नियोजित न रहकर जन कल्याण की ही बात सोचता है और उसके लिए अपनी क्षमता प्रयुक्त करता है । शासक भी समूचा शासन तन्त्र अपने नियन्त्रण केन्द्र से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सँभालते और व्यापक क्षेत्र में बसे हुए प्रजा जनों की प्रगति, सुरक्षा का तानाबाना बुनते हैं। खदानें रहती तो जहाँ की तहाँ हैं पर उनकी विस्तृत खनिज सम्पदा से अगणित लोग लाभ उठाते रहते हैं । विद्यालय भी यथास्थान ही रहते हैं पर उनकी प्रशिक्षण-प्रक्रिया सभी संबद्ध दूरवर्ती लोगों की प्रतिभा निखारने और वैभव बढ़ाने की भूमिका निभाने में संलग्न रहती है । अगले दिनों ऐसे ही देव-मानवों की संख्या बढ़ेगी और अपने परम पुरुषार्थ से इसी धरती को स्वर्गीय परिस्थितियों से परिपूर्ण करेगी ।

घड़ी चलती तभी है जब उसके सभी कल-पुर्जे सहयोगपूर्वक काम करते हैं । इतने पर भी यह रहस्य किसी से छिपा नहीं है कि उन सबको चलने के लिए विवश करने का उत्तरदायित्त्व चाबी पर ही आता है । चाबी मरोड़ी जाती है तो फनर कड़ा हो जाता है और उसके दबाव से सभी कल-पुर्जे हरकत में आते हैं । यदि चाबी ढीली हो-फनर अड़ गया हो तो फिर समझना चाहिए कि अन्य कल-पुर्जों के सही होने पर भी घड़ी नई और ठीक होने पर भी समय बताने की सारी व्यवस्था ठप्प पड़ी रहेगी और वह बहुमूल्य यन्त्र बच्चों के खिलौने जैसे बन कर रह जायेंगे ।

यहाँ चर्चा उस तन्त्र की हो रही है जो गतिशीलता उत्पन्न करने के लिए विशेष रूप से उत्तरदायी है । शरीर में हृदय का स्थान मुट्ठी जितने आकार का है किन्तु समस्त शरीर को गतिशील रखने की जिम्मेदारी उसी की है । हृदय रक्त पहुँचाने और फेंफड़े सफाई करने में प्रमाद बरतने लगें तो समझना चाहिए अन्यान्य अवयवों की क्षमता एवं विशेषता का कोई उपयोग न रह जायेगा । वे सभी एक-एक करके बेमौत मरेंगे ।

यह उद्धरण इसलिए प्रस्तुत किये जा रहें हैं कि नवनिर्माण की भूमिका जन समुदाय में विद्यमान जागृतों और जीवन्तों को ही निभानी होगी । जनता को वे ही प्रेरणा देते हैं । प्रसुप्ति को जागृति में वे ही बदलते हैं । संकीर्णता और कृपणता के बन्धनों में बँधी हुई जनशक्ति को सत्प्रयोजनों में निरत करने की जिम्मेदारी उन्हीं की है । यदि वे उनींदे पड़े रहें तो फिर समझना चाहिए लोकमानस का कुम्भकरण पौराणिक दैत्य से भी अधिक आलसी सिद्ध होगा । वह छः महीने तो क्या छः हजार वर्षों में भी करवट बदलने को सहमत न होगा ।

प्रतिभावान सार्वजनिक हित के लिए ही उत्पन्न होते हैं । पेट भरने का काम तो अन्धे, गूँगे, बहरे भी कर लते हैं । मध्यकाल में ऐसा प्रचलन था कि उस क्षेत्र में जन्मी असाधारण सुन्दरी को अपनी गीत, वाद्य, नृत्य जैसी कला के माध्यम से सार्वजनिक मनोरंजन करना पड़ता था । वह किसी व्यक्ति विशेष की पत्नी नहीं बनती थी । 'नगरवधू' कहलाती थी । नगरवधू का अर्थ वेश्या नहीं, सार्वजनिक मनोरंजन के लिए समर्पित व्रतधारी महिला होती है । आम्रपाली नगरवधू थी । वह असाधारण सुन्दरी थी । प्रतिभाशाली और मनोरम थी । पीछे वह बुद्ध धर्म में दीक्षित होकर सार्वजनिक धर्मधारणा के क्षेत्र में उतर पड़ी । विशिष्ट प्रतिभाएँ सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में उतरें तभी उनकी विशिष्टता सार्थक होती है ।

प्रखर प्रतिभा—आज की आवश्यकता

सामान्य प्रतिभा तो बुद्धिमानों, क्रिया-कुशलों, व्यवस्थापकों और पराक्रम परायणों में भी देखी जाती है । इनके सहारे वे प्रचुर सम्पदा कमाते, यशस्वी बनते और अनुचरों से घिरे रहते हैं । आतंक उत्पन्न करना भी इन्हीं के सहारे संभव होता है । छद्म अपराधों की एक बड़ी शृंखला भी चलती है । इस सामाम्य प्रतिभा से सम्पन्न अनेक व्यक्ति देखे जाते हैं और उसके बल पर बड़प्पन का सरंजाम जुटाते हैं । तत्काल उसे हुण्डी की तरह भुना लिया जाता है । अच्छे वेतन पर अधिकारी स्तर का लाभदायक काम उन्हें मिल जाता है, किन्तु प्रखर प्रतिभा की बात इससे सर्वथा भिन्न है । प्रखरता से यहाँ तात्पर्य आदर्शवादी उत्कृष्टता से लिया जाना चाहिए । सज्जन और समर्पित संत इसी स्तर के होते हैं । कर्तव्य क्षेत्रों में वे सैनिकों जैसा अनुशासन पालन करते हैं । देवमानव इन्हीं को कहते हैं । महामानव युगपुरुष आदि नामों से भी इस स्तर के लोगों का स्मरण किया जाता है ।

इनमें विशेषता उच्चस्तरीय भाव संवेदनाओं की होती हैं । श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा जैसे तत्व उन्हीं में देखे पाये जाते हैं । सामान्य प्रतिभावान मात्र धन, यश या बड़प्पन का अपने निज के हेतु अर्जन करते रहते हैं । जिसे जितनी सफलता मिल जाती है वह अपने को उतना ही बड़ा मानता है । लोग भी उसी से प्रभावित होते हैं । उसके सहारे कुछ उपलब्ध कर लेने की इच्छा से अनेक चाटुकार पीछे फिरते हैं । अप्रसन्न होने पर वे अहित कर सकते हैं । इसलिए भी कितने ही उनका दबाव मानते हैं और इच्छा न होने पर भी सहयोग करते हैं । यह सामान्य प्रतिभा का विवेचन है।

प्रखर प्रतिभा संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँची उठी होती है। उसे मानवी गरिमा का ध्यान रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसमें आदर्शों के प्रति अनन्य निष्ठा का समावेश रहता है। लोक मंगल और सत्प्रवृत्ति-सम्वर्धन में उसे उतनी ही रुचि रहती है जितनी कि किसी लालची में किसी भी कीमत पर इच्छा पूर्ण करने के लिए आतुरता पाई जाती है ।

प्रखर प्रतिभा का दिव्य अनुदान एक प्रकार से दैवी अनुग्रह गिना जाता है । जबकि सामान्य लोगों को लोभ मोह के बन्धनों से क्षण भर के लिए भी छुटकारा नहीं मिलता तब प्रखर प्रतिभासम्पन्न लोग जन समस्याओं पर ही विचार करते और उनके समाधान की योजना बनाते रहते हैं। भावनाएँ उभरने पर मनुष्य बड़े से बड़ा त्याग और पुरुषार्थ कर दिखाने में तत्पर हो जाता है । ऐसे लोग असफल रहने पर शहीदों में गिने और देवताओं की तरह पूजे जाते हैं । यदि वे सफल होते हैं तो इतिहास बदल देते हैं । प्रवाहों को उलटना उन्हीं का काम होता है । मनुष्य शक्ति का पुंज हैं । उसकी बर्बादी तो लिप्सा, लालसा के क्षुद्र प्रयोजनों में होती रहती है । पर यदि कोई सामान्य स्तर का व्यक्ति भी लोक कल्याण के महान प्रयोजनों में जुट जाता है तो फिर उसका अनवरत श्रम चींटी के गिरि-शिखर पर जा पहुँचने का उदाहरण बनता है ।

आकाश बहुत बड़ा है पर उसमें सीमित संख्या में ही तारे चमकते दिखाई पड़ते हैं । उसी प्रकार जनसमुदाय को पेट-प्रजनन के अतिरिक्त और कुछ सोचते करते नहीं बन पड़ता किन्तु जिन पर दैवी अनुकम्पा की तरह प्रखर प्रतिभा अवतरित होती है उनका क्रियाकलाप ऐसा बन पड़ता है जिसका चिरकाल तक असंख्यों द्वारा अनुकरण अभिनन्दन होता रहे । भावुक जन इन्हीं को देवदूत, युग अवतार आदि नामों से पुकारते हैं ।

साहित्य सत्संग, प्रेरणा परामर्श आदि द्वारा भी सन्मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन मिलता है पर वह सब गले उन्हीं के उतरता है, जिनके अन्दर भाव संवेदनाएँ पहले से ही जीवित हैं । उनके लिए थोड़ी सी प्रेरणा भी क्रान्तिकारी परिवर्तन कर देती है । सीप में जल की एक बूँद ही मोती उत्पन्न कर देती है पर रेत में गिरने पर वह अपना अस्तित्त्व ही गँवा बैठती है । यही बात आदर्शवादी परमार्थों के सम्बन्ध में भी है । कई बार तो उपदेशकों तक की करनी-कथनी में जमीन-आसमान जैसा अन्तर देखा पाया जाता है। भावनाओं की प्रखरता रहने पर व्यक्ति अपने व्यस्त कार्यों में से भी समय और मनोबल निकाल लेता है जिससे अपनी सदाशयता को खाद-पानी देकर बढ़ाता रहे और सम्पर्क में आने वालों को भी अपने परामर्शों के साथ गहन भाव-संवेदनाओं का समन्वय करके इतना प्रभावित कर सके कि उनके लिए भी कुछ कर गुजरने में रुकना कठिन पड़े ।

इक्कीसवीं सदी में नई दुनिया बनाने जैसा कठिन कार्य किया जाना है । इसके लिए प्रचुर परिमाण में प्रखर प्रतिभा का उफान तूफान आना है । अनेक व्यक्ति उस सन्दर्भ में कार्य करेंगे । आँधी तूफान आने पर पत्ते, तिनके और धूलि कण तक आकाश तक जा पहुँचते हैं । दैवी प्रेरणा का अदृश्य प्रवाह इन्हीं दिनों ऐसा आवेगा जिसमें सृजन सैनिकों की विशालकाय सेना खड़ी दिखाई देगी और उस प्रकार के चमत्कार करेगी जैसे कि खण्डहर बने जापान को वहाँ के निवासियों ने अणु बम गिरने के बाद भी अपने देश को पहले से भी कहीं बेहतर बना लिया है । रूस, जर्मनी आदि ने भी कुछ ही दशाब्दियों में क्या से क्या चमत्कार कर दिखाये उसे अद्भुत ही कहा जा सकता है और इतिहास में अनुपम भी । सृजन शिल्पी इसी प्रकार संसार के कोने-कोने में प्रकट होंगे । प्रखर प्रतिभा वे दैवी अनुकम्पा के रूप में अनायास ही प्राप्त करेंगे । प्रवाह कुछ ऐसा चलेगा जिसमें हर प्रतिभाशाली के लिए सृजन, सुधार और परिवर्तन ही रुचि का विषय रह जायगा । जिनमें भाव संवेदनाओं के तत्व जीवित बचे होंगे वे अपनी सामर्थ्य का एक महत्त्वपूर्ण भाग नवसृजन के लिए नियोजित किये हुए दृष्टिगोचर होंगे। व्यस्तता और अभावग्रस्तता के बहाने एक मजाक बन जायेंगे । उनकी आड़ लेकर कोई भी न अपनी आत्म-प्रवंचना कर सकेगा और न सुनने वालों में से किसी को इस बात का विश्वास दिला सकेगा कि बात वस्तुतः ऐसी भी हो सकती है जैसी कि बहकावे के रूप में समझी या कही जा रही है ।

शक्कर बखेर देने पर चींटियाँ और मक्खियाँ दौड़ती चली आती हैं । दीपक जलते ही पतंगे इर्द गिर्द मँडराने लगते हैं । फूल खिलते ही तितलियों और भौंरों के झुण्ड चक्कर काटते देखे जाते हैं । बसन्त आते ही छिपी कोयलें न जाने कहाँ से आ धमकतीं और बिना आग्रह किये ही कूकने लगती हैं । घटा गरजते देर नहीं लगती कि बिना बुलाये मोरों का नाच ठन जाता है । उपयुक्त अवसर प्रस्तुत करने पर हो सकता है कि समय की पुकार सुन कर भावनाशीलों का अन्तराल उमगे । छप्पर उठाने के लिए आवाज लगाने पर कितने ही रास्ता चलते मनुष्य हाथ बँटाने के लिए मुड़ पड़ते हैं । मृतकों को शमशान तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पहुँचाने के लिए घर-घर निमंत्रण देने कौन जाता है । अग्निकाण्ड की सूचना मिलते ही उनींदे लोग भी घर का पानी भरा घड़ा सिर पर रख कर दौड़ते हैं । मानवी अन्तःकरण की एक विशेषता है यदि वहाँ सद्भावना के थोड़े से भी बीजांकुर होंगे तो वह समय की माँग पर आपत्ति-कालीन परिस्थितियों के समय कर्त्तव्य पालन में किसी भी जीवन्त को पीछे न रहने देगी । मुर्दों की बात दूसरी है । वे तो लातें खाते रहने पर भी निस्पृह बने रहते हैं। गिद्धों, सियारों और कुत्तों द्वारा माँस नोंचे जाने पर भी कुछ नहीं कहते । घर वालों का विलाप सुन कर भी नहीं पसीजते। सान्त्वना देने की बात तो बने ही कैसे ? मृतकों की तरह ही मूर्छितों के साथ भी यही होता है । सोते लोगों की लंगोटी खुल पड़े तो भी उन्हें लाज नहीं आती । सिरहाने चोरी होती रहने पर भी करवट तक नहीं बदलते, रोकथाम करने की चेष्टा तो करे ही कौन ?

अब नयी उलट-पलट में यह होने जा रहा है कि मूर्धन्य वर्ग का बहुत बड़ा भाग युग चेतना से प्रभावित होगा और अपनी दिशा धारा को उलट कर उस दिशा को अपनायेगा जिसके लिए युग धर्म ने समझाया, पुचकारा और ललकारा है । शक्ति की महिमा महत्ता सभी जानते हैं, वह जिस भी दिशा में कटिबद्ध होती है उसी में सफलताओं के अम्बार लगा देती है । अब तक बिगाड़ की दिशा अपनाई तो उसमें भी चमत्कार कर दिखाया । अब यदि उनका मानस बदलता है, तो समझना चाहिए कि उस बदलाव का प्रभाव भी कम न पड़ेगा । वे ऐसी गतिविधियाँ भी अपना सकते हैं, जो उनके स्वयं के लिए तो श्रेयस्कर होती हैं अगणित लोगों को भी अपने प्रभाव से प्रकाशित करेंगी ।

विश्वास किया जाना चाहिए कि यह मूर्धन्य वर्ग इन्हीं दिनों अपने भीतर समुद्र मंथन जैसी हलचलें अनुभव करेंगे, और उस दिशा में कदम बढ़ायेंगे जिन पर चलने से सबका कल्याण ही कल्याण है ।

भगीरथों और शुनिशेपों की खोज

देवताओं की संख्या बहुत बड़ी है, उनमें महादेव केवल-शिव शंकर को कहते हैं । महा का अर्थ है—बड़ा । अन्य देवता उतने बड़े नहीं जितने महादेव। इसलिये शिव के अतिरिक्त और किसी को भी महादेव नहीं कहा जाता । बड़प्पन, किसी के समर्थ, वैभवशाली एवं विभूतिवान होने से नहीं मिलता वरन् लोक-मंगल से त्याग, बलिदान एवं परदुःख निवारण के लिये करुणा की मात्रा पर निर्भर रहता है। इस कसौटी पर अन्य सभी देवताओं की तुलना में महाकाल शिव ही सर्वोत्कृष्ट सिद्ध हुए ।

समुद्र मन्थन से जो गरल निकला, उससे समस्त विश्व जल जाने की सम्भावना थी । इसी विभीषिका को, संसार पर आने वाली भयानक विपत्ति को भगवान शिव ने समझा और विश्व मंगल के लिए बलिदान की बड़ी से बड़ी सीमा हो सकती है उस तक पहुँचे । महागरल जिसकी एक बूँद से समस्त विश्व विमूर्च्छित हो सकता था, शिव ने शिरोधार्य किया और वे उसे पी गये । प्रतिक्रिया क्या हुई उसे दूसरे लोग नहीं जानते पर नीलकण्ठ का गला अनन्तकाल से लेकर अब तक रुँधा हुआ है । विष अभी तक उनके कण्ठ में बैठा है। "पीर पराई न जानने वाली दुनियाँ जय-जयकार करके अपने घर चली गयी पर, पर विषपान की प्रतिक्रिया क्या हुई इसे वही जानते हैं जिस पर बीती । इस त्याग ने उन्हें महादेव बना दिया ।

दूसरे देवता जहाँ अपने लिये पर्याप्त मात्रा में सुविधा साधन एकत्रित करके आमोद-प्रमोद भरा जीवनयापन करते हैं, वहाँ शिव का तौर-तरीका बिल्कुल अलग है । उन्होंने निहंग निर्वस्त्र रहना स्वीकार किया, उतना अपरिग्रह जितना सम्भव था, शिवजी ने अपनाया । लोकमंगल के लिये हर घड़ी मरण का वरण करने के लिए तैयार रहने की निष्ठा का प्रतीक उनका श्मशान में निवास करना है । सर्प रूपी विकारों और प्रलोभनों से वे डरते नहीं, भागते नहीं और अपने से लिपटाये रहने पर भी वह सामंजस्य संतुलन बनाये रहते हैं, पर सर्प दंश की अवांछनीय दुर्दशा में उन्हें कभी भी नहीं पड़ना पड़ता। भूत-प्रेतों, पतितों, पीड़ितों, उपेक्षितों और उपहासास्पदों को जहाँ दूसरे सब दुरदुराते हैं वहाँ शिव-सेना में वे भरे पड़े हैं । ऐसे पतितपावन को नहीं तो फिर किसे महादेव कहा जायेगा ? जिसका ललाट उज्ज्वल चरित्र के कारण चन्द्रमा की तरह चमकता हो, वह देवताओं का भी देवता महादेव नहीं तो और क्या है ?

महान् प्रयोजनों की पूर्ति महादेव से ही सम्भव है। महादेव की प्रसन्न करने में, उनका अनुग्रह प्राप्त करने में क्षुद्र, निकम्मे एंव पतित स्तर के नर-पशु नहीं वरन् महामानव ही समर्थ होते हैं । संसार पर जब-जब विपत्तियाँ आई हैं, तब-तब महादेव की, महाकाल की सहायता अपेक्षित हुई है और उसे उपलब्ध करने में महामानव ही समर्थ हुए हैं । विपन्न परिस्थितियों में इन महामानवों की अनिवार्य आवश्यकता होती है जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी महत्ता से महादेव को प्रभावित कर उनका अनुग्रह प्राप्त कर सकने में सफल हो सकें। विपन्नताग्रस्त युग जब तक ऐसे महामानव पैदा नहीं करता तब तक उसका परिणाम भी सम्भव नहीं होता।

प्राचीनकाल में राजा सगर के ६० हजार पुत्र अपने दुष्कर्मों के फलस्वरूप कपिल मुनि के शाप से शापित होकर जल मरे और उनकी चितायें अनन्त काल तक जलने के लिये, उन उद्धतों की आत्माओं को जलाने के लिये निरन्तर प्रज्वलित रहने लगीं । इस प्रकार चिरकाल व्यतीत हो गया। कई पीढ़ियाँ बीत गयीं, तब सगर वंश में एक महामानव जन्मा-भगीरथ।

बालक भगीरथ थोड़ा समर्थ हुआ तो उसने अपने पितरों को इस प्रकार नरक की अग्नि में जलते देखा । वे उससे बहुत दुखी हुए और उनके परित्राण का उपाय सोचने लगे । व्यापक संकट निवारण का एक ही उपाय उन्हें बताया गया-तप । तप से ही महादेव प्रसन्न होते हैं । और इस दैवी सहयोग से बड़े-बड़े कठिन कार्य सम्भव होते हैं । गंगा अवतरण जैसा कठिन कार्य तप से ही सम्भव हो सकता था । स्वर्ग से उतरकर गंगा की धारा जब पृथ्वी पर आती तभी सगर सुतों का उद्धार होना था ।

भगीरथ ने तपस्वी जीवन स्वीकार किया, वे स्वार्थ सिद्धि के लिये नहीं, परमार्थ प्रयोजन के लिये प्रचण्ड तप करने लगे । वास्तविक तप की परख धैर्य, निष्ठा, दृढ़ता एवं अडिग संकल्प की कसौटी पर की जाती है। आवेश ग्रस्त उतावले लोग तुर्त-फुर्त बहुत कुछ पा लेने के लिये व्याकुल रहते हैं । अभीष्ट मनोरथ की प्राप्ति में तनिक भी विलम्ब या अवरोध उन्हें सहन नहीं होता । ऐसे छछोरे दैवी अनुग्रह के अधिकारी नहीं हो सकते, इस बात को भगीरथ जानते थे इसलिये उन्होंने अगणित विघ्न बाधाओं, अवरोधों और कठिनाइयों का सामना करते हुए चिरकाल तक अपनी सतत साधना जारी रखने का निश्चय किया । सो कालान्तर में इनका पुरुषार्थ सफल हुआ । स्वर्ग में रहने वाली गंगा पृथ्वी पर आने को सहमत हो गयी । भगीरथ ने तप द्वारा यह कठिन कार्य सम्भव बना दिया कि अज्ञानग्रस्त संसार में स्वर्गीय ज्ञान-गंगा का अवतरण हो । अविवेक से समुत्पन्न अनाचार के दावानल में जलते हुए अगणित मानव-पुत्रों का उद्धार आखिर और कर भी कौन सकता है ?

अज्ञान ग्रस्त लोगों के मस्तिष्क में ज्ञान गरिमा प्रविष्ट करने का कार्य, सद्विचारों को फैलाने का आयोजन बड़ा दुरूह है । इसमें भयानक प्रतिक्रिया होती रही है। इसी प्रतिक्रिया की लपेट में सुकरात, ईसा, मंसूर, दयानन्द, गाँधी आदि न जाने कितनों को अपने प्राण खोने पड़े और न जाने कितनों को अपार यातनायें सहनी पड़ी । स्वर्ग से ऊँचे से नीचे गिरते समय धारा जमीन में गड्ढा कर देती है और गड्ढा अपनी भयानकता से कुछ दुर्घटना घटित न कर दे इसलिये उसके लिए महाकाल शिव की कृपा अनुग्रह अपेक्षित हुई । तपस्वी भगीरथ ने वह भी प्राप्त कर लिया । गंगा शिव की जटाओं में उतरीं और फिर वहाँ से पृथ्वी पर बह निकलीं । जलते हुए सगरसुतों का श्मशान, अशान्त संसार समाप्त हो गया । ज्ञान की गंगा जहाँ बहेगी, शान्ति क्यों न होगी ? भगीरथ की तपस्या का सत्परिणाम समस्त संसार को मिला, सभी ने उन्हें सराहा ।

ऐसी ही एक घटना अतीत काल में और भी हुई थी । बारह वर्ष तक लगातार दुर्भिक्ष पड़ा । इन्द्र देव ने कुपित होकर दुष्ट दुरात्मा प्रजा-जनों के दुष्कर्मों का दण्ड देने के लिए उन्हें वर्षा का अनुदान देना बन्द कर दिया । पानी न बरसने से घास-पात, पेड़-पौधे, जलाशय सब सूख गये । अन्न उपजना बन्द हो गया । तृषित और क्षुधित प्राणी त्राहि-त्राहि करके प्राण त्यागने लगे । सर्वत्र हाहाकार मच गया । स्थिति असह्य हो गयी तो मनीषियों ने विचार किया कि आकाश से जलधारा का अवतरण कैसे हो ? निष्कर्ष यही निकला कि देवता तप और त्याग से ही प्रसन्न होते हैं । उनके कुपित होने का एक मात्र कारण प्रजाजनों का अनाचार है । यदि त्याग और तप की अवरुद्ध परम्परा पुनः प्रचलित हो उठे तो देवताओं का मन पिघलते देर न लगे और अभीष्ट वर्षा का अभाव सहज ही दूर हो जाय ।

धरती वालों ने उत्कृष्टता और आदर्शवादिता की परम्पराओं को अपनाना-कुमार्ग छोड़कर सन्मार्ग पर चलना पुनः आरम्भ कर दिया है, देवताओं को इस बात का विश्वास दिलाने और प्रमाण देने की आवश्यकता पड़ी । इसके लिये नरमेध रचाया जाना था। बहुत दिन से बलि प्रथा बन्द हो गयी थी, उसका नये सिरे से शुभारम्भ करना था । लोग हिचकिचा रहे थे, यज्ञीय बलि के लिये अपने को कौन प्रस्तुत करे ? पहला साहस कौन दिखाये ? प्रश्न चुनौती जैसा बनता जा रहा था, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था । नरमेघ का आयोजन हो न सकेगा, कोई अपनी बलि देगा नहीं, तब फिर बारह वर्ष से चले आ रहे दुर्भिक्ष का अन्त भी न होगा । नरमेध आयोजन की व्यवस्था

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुनकर लोगों में जिस आशा का संचार हुआ था वह प्रमुख साधन बलिदान की व्यवस्था न बनने के कारण निराशा में परिणत होने लगी।

सन्नाटे को चीरता हुआ एक व्यक्ति आगे बढ़ा-नाम था उनका—शुनिशेप । उसने यज्ञ के अध्वर्यु और ऋत्विजों को सम्बोधित करते हुए कहा—"यज्ञीय बलिदान के लिये सर्वप्रथम प्रस्तुत हूँ ।" आशा की किरणें फूटीं, यज्ञ आयोजन आरम्भ हुआ, एक के बाद एक लोग बलि के लिये आगे बढ़ने लगे । परम्परा प्रचलित हुई तो आदमियों का ताँता लग गया । मनुष्यों की बदली मनोवृत्ति का परिचय पाकर आशुतोष शिव प्रसन्न हुए और उन्होंने दुर्भिक्ष निवारण के लिये विपुल वर्षा की व्यवस्था कर दी । प्राणियों के दु:ख दूर हुए और सर्वत्र सुख शान्ति भरे मोद-मंगल मनाये जाने लगे।

भावनात्मक दुर्भिक्ष का अन्त हो

परिस्थिति आज भी ठीक उसी तरह की है । मनुष्यों ने अपनी नैतिक मर्यादायें छोड़ दी हैं, परमार्थ का उदार मानवीय दृष्टिकोण भुला दिया गया और हर कोई अपने व्यक्तिगत संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति में बेतरह व्यस्त हो गया । इसके फलस्वरूप वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में असंख्य विकृतियाँ, उलझनें और समस्यायें उत्पन्न होनी ही थीं और उनकी प्रतिक्रिया अगणित शोक-संतापों के रूप में ही उपस्थिति हो सकती थी । आज साधनों का दुर्भिक्ष भले ही न हो भावनात्मक दुर्भिक्ष इतना विषम है कि नारकीय दावानल में जलते हुए प्राणी हर दिशा में हा-हाकार कर रहे हैं । महाकाल कुपित होकर कठोर प्रताड़ना का सरंजाम जुटाने में व्यस्त है ।

स्थिति को बदला कैसे जाय ? इसका एक ही उपाय है—लोग अपनी रीति-नीति बदलें, भावनात्मक परिवर्तन करें और तौर-तरीके उलटें। स्वार्थ निमग्नता को परमार्थ प्रयोजनों की अभिरुचि में परिवर्तित करें । देवता ऐसी ही मनोभूमि के लोगों को प्यार प्रदान करते हैं, उन्हीं पर उनका अनुग्रह बरसता है । इस उदात्त दृष्टि एवं जीवन पद्धति का नाम ही यज्ञ है । यज्ञ का मेरुदण्ड है—बलिदान । निरीह पशुओं का खून बहा डालना तो एक पैशाचिक कृत्य है । बलिदान का मर्म है परमार्थ के लिये अधिकाधिक आत्म-संयम और तप, त्याग का उदार परिचय-अपने लिये कम से कम रखकर अपनी क्षमता, योग्यता और समृद्धि का परमार्थ के लिये उत्सर्ग । यही मानवोचित पुण्य-परम्परा है । जब तक ऐसे यज्ञानुष्ठान घर-घर में होते रहते हैं, देवता प्रसन्न होकर विपुल सुख-शान्ति की वर्षा करते रहते हैं, पर जैसे ही लोगों ने यज्ञ से मुँह मोड़ा कि दैवी अनुग्रह की वर्षा बन्द हो जाती है । यज्ञ अग्निहोत्र को भी कहते हैं । अग्निहोत्र यज्ञीय परम्परा का एक प्रतीकात्मक पुण्य प्रदर्शन है । वास्तविक यज्ञ है-परमार्थ परायण जीवन जीने का निश्चय । देवता यही चाहते हैं और यही करने वालों को विभूतियाँ प्रदान करते हैं । स्वार्थरत यज्ञ विरोधी लोग दैवी कोप के भाजन बनते हैं और उन्हें वस्तुओं का सही सुख-शान्ति भरी परिस्थितियों का असह्य दुर्भिक्ष अवश्य त्रास देता है । अस्तु परिस्थिति बदलने की योजना बनाने वालों को बलिदानों की व्यवस्था करनी होती है-नरमेध रचाने होते हैं । ऐसे आयोजन खड़े करने होते हैं, जिनसे अधिकाधिक तप-त्याग करने की परम्परा प्रचलित हो सके । गाँधीजी अभी कुछ ही दिन पूर्व ऐसे नरमेध के ब्रह्मा रह चुके हैं, जिसमें हजारों-लाखों बलिदानियों ने बढ़-चढ़कर जौहर दिखाये थे । उस नरमेध से संतुष्ट हुए देवताओं ने भारत को हजार वर्ष की गुलामी से मुक्त किया और स्वाभिमानी, पुरुषार्थी लोगों की पंक्ति में बैठ सकने का अवसर प्रदान किया। यह एक कदम पूरा हुआ—यज्ञ का एक खण्ड चरण भी सम्पन्न हुआ । अभी दो चरण और शेष हैं । विश्व के भावनात्मक नव-निर्माण की आवश्यक पृष्ठभूमि की रचना और उसकी संघर्षात्मक स्थिति आने पर अधिक से अधिक बलिदान करने की तैयारी।

इन पुण्य प्रयोजनों के लिये बातूनों और ढोंगियों की नहीं बलिदानियों की आवश्यकता अनुभव की जा रही है । अभियान तैयार है, पर बलिदान का अवसर आते ही चतुर लोग बगलें झाँकते और बहाने बनाते दीख पड़ते हैं । किसी को फुरसत की कमी है, किसी की आर्थिक स्थिति खराब है, तो कोई तथाकथित झंझटों में फँसा है-बेचारा क्या करे? धूर्त बहाने बाज इस प्रकार अपनी आत्मा को धोखा देकर किसी प्रकार मन बहला सकते हैं, पर देवता तो असलियत जानते हैं। उन्हें तो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहिये कि धरती वालों ने बलिदानी परम्परायें अपनायी या नहीं ? इस प्रमाण के लिये आगे बढ़ने और साहस दिखाने से ही तो नरमेध पूरा हो सकता है और उसी से तो देवताओं का कोप अनुग्रह में बदल सकता है ।

आज फिर शुनिशेप आगे कदम बढ़ा सकें, बलिदानों की परम्परा पुन: प्रचलित हो सके तो वर्तमान विश्व संकट का समाधान हो सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सगर के ६० हजार जलते हुए बेटे-भारत के ८० करोड़ नागरिक-विश्व की पाँच अरब प्रजा श्मशान में जलती हुई चिताओं जैसी जिन्दगी जी रहे हैं । इन्हें शान्ति प्रदान करने के लिये ज्ञान-गंगा का अवतरण आवश्यक है । गंगावतरण की सम्भावना विद्यमान है-पर भगीरथ नहीं । दुर्भिक्ष का अन्त कर विपुल वर्षा का सरंजाम नरमेध रचा पड़ा है, पर शुनिशेप अभी भी चुप्पी साधे बैठे हैं । न जाने कब तक गंगा को भगीरथों की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, न जाने कब तक नरमेध का यज्ञकुण्ड बलिदानी शुनिशेपों की बाट जोहता रहेगा ?

कठिनाइयों से जूझने, अड़चनों को निरस्त करने और मार्ग रोक कर बैठे हुए अवरोधों को किसी प्रकार हटाने के लिए समुचित साहस, शौर्य और सूझ-बूझ का परिचय देना पड़ता है । अनेक समस्याएँ और कठिनाइयाँ आये दिन त्रास और संकट भरी परिस्थितियाँ ही उत्पन्न करती रहती हैं । जो कठिनाइयों से जूझ सकता है और प्रगति की दिशा में बढ़ चलने के साधन जुटा सकता है वास्तविक प्रतिभावान भगीरथ और शुनिशेप वही कहलाते हैं ।

प्रतिभा की निजी जीवन के विकास में निरन्तर आवश्यकता पड़ती है और अवरोधों को निरस्त करने में भी। जो आगे बढ़े-ऊँचे उठे हैं, उन्हें यह दोनों ही सरंजाम जुटाने पड़े हैं । उत्कर्ष की सूझ-बूझ और कठिनाइयों से लड़ सकने की हिम्मत, इन दोनों के बिना उन्नतिशील जीवन जी सकना सम्भव ही नहीं होता । फिर सामुदायिक सार्वजनिक क्षेत्र में सुव्यवस्था बनाने के लिए और भी अधिक प्रखरता चाहिए । यह विशाल क्षेत्र, आवश्यकताओं और गुत्थियों की दृष्टि से तो और भी बढ़ा-चढ़ा होता है ।

मनुष्यों के चार स्तर-चार वर्ग

मनुष्यों की आकृति-प्रकृति तो एक जैसी होती है, पर उनके स्तरों में भारी भिन्नता पाई जाती है । हीन स्तर के लोग परावलम्बी होते हैं । वे आँखें बन्द करके दूसरों के पीछे चलते हैं । औचित्य कहाँ है, इसकी विवेचना बुद्धि इनमें नहीं के बराबर होती है । वे साधनों के लिए मार्गदर्शन के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं; यहाँ तक कि जीवनोपयोगी साधन तक अपनी स्वतंत्र चेतना के बलबूते जुटा नहीं पाते । उनके उत्थान-पतन का निमित्त कारण दूसरे ही बने रहते हैं। यह परजीवी वर्ग ही मनुष्यों में बहुलता के साथ पाया जाता है । अनुकरण और आश्रय ही उनके स्वभाव का अंग बन कर रहता है । निजी निर्धारण कदाचित ही कभी कर पाते हैं । यह हीन वर्ग है, सम्पदा रहते हुए भी उन्हें दीन ही कहा जा सकता है ।

दूसरा वर्ग है जो समझदार होते हुए भी संकीर्ण स्वार्थपरता से घिरा रहता है । योग्यता और तत्परता जैसी विशेषताएँ होते हुए भी वे उन्हें मात्र लोभ, मोह, अहंकार की पूर्ति के लिए ही नियोजित किए रहते हैं। उनकी नीति अपने मतलब से मतलब रखने की होती है । आदर्श उन्हें प्रभावित नहीं करते । कृपणता और कायरता के दबाव से वे पुण्य परमार्थ की बात तो सोच ही नहीं पाते, अवसर मिलने पर अनुचित कर बैठने से भी नहीं चूकते। महत्त्व न मिलने पर वे अनर्थ कर बैठते हैं । गूलर के भुनगे जैसी स्वकेन्द्रित जिन्दगी ही जी पाते हैं । बुद्धिमान और धनवान होते हुए भी इन लोगों को निर्वाह भर में समर्थ 'प्रजाजन' ही कहा जाता है । वे जिस-तिस प्रकार जी तो लेते हैं, पर श्रेय सम्मान जैसी किसी मानवोचित उपलब्धि के साथ उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं जुड़ता । उन्हें जनसंख्या का एक घटक भर माना जाता है । फिर भी वे दीनहीनों की तरह परावलम्बी या भारभूत नहीं होते । उनकी गणना व्यक्तित्त्व की दृष्टि से अपंग अविकसित और असहायों में नहीं होती । कम से कम अपना बोझ अपने पैरों पर तो उठा लेते हैं ।

तीसरा वर्ग प्रतिभाशालियों का है । वे भौतिक क्षेत्र में कार्यरत रहते हैं, तो अनेक व्यवस्थाएँ बनाते हैं । अनुशासन में रहते और अनुबन्धों से बँधे रहते हैं । अपनी नाव अपने बलबूते खेते हैं और उसमें बिठाकर अन्य कितनों को ही पार करते हैं । बड़ी योजनाएँ बनाते और चलाते हैं । कारखानों के व्यवस्थापक और शासनाध्यक्ष प्रायः इन्हीं विशेषताओं से सम्पन्न होते हैं । जिन्होंने महत्त्वपूर्ण सफलताएँ पायीं, उपलब्धियाँ हस्तगत कीं, प्रतिस्पर्धाएँ जीतीं, उनमें ऐसी ही मौलिक सूझ-बूझ होती है । बोलचाल की भाषा में उन्हें ही प्रतिभावान कहते हैं । अपने वर्ग का नेतृत्त्व भी वही करते हैं। गुत्थियाँ सुलझाते और सफलताओं का पथ प्रशस्त करते हैं । मित्र और शत्रु सभी उनका लोहा मानते हैं । मरुस्थल में उद्यान खड़े करने जैसे चमत्कार भी उन्हीं से बन पड़ते हैं । भौतिक प्रगति का विशेष श्रेय यदि उन्हें ही दिया जाय तो अत्युक्ति न होगी । सूझ-बूझ के धनी, एक साथ अनेक पक्षों पर दृष्टि रख सकने की क्षमता भी तो उन्हीं में होती है । समय सब के पास सीमित है । कुछ लोग उसे ऐसे ही दैनिक ढर्रों के कार्यों में गुजार देते हैं; पर कुछ ऐसे भी होते हैं जो एक ही समय में,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक ही शरीर-मस्तिष्क से, अनेक ताने-बाने बुनते और अनेक जाल-जंजाल सुलझाते हैं। सफलता और प्रशंसा उनके आगे-पीछे फिरती है । अपने क्षेत्र, समुदाय या देश की प्रगति ऐसे सुव्यवस्थित प्रतिभावानों पर ही निर्भर रहती है ।

सबसे ऊँची श्रेणी देवमानवों की है, जिन्हें महापुरुष भी कहते हैं । प्रतिभा तो उनमें भरपूर होती है, पर वे उसका उपयोग आत्म-परिष्कार से लेकर लोग मङ्गल तक के उच्चस्तरीय प्रयोजनों में ही किया करते हैं । निजी आवश्यकताओं और महत्त्वाकाँक्षाओं को घटाते हैं; ताकि बचे हुए शक्ति भण्डार को परमार्थ में नियोजित कर सकें । समाज के उत्थान और सामयिक समस्याओं के समाधान का श्रेय उन्हें ही जाता है । किसी देश की सच्ची सम्पदा वे ही समझे जाते हैं । अपने कार्य-क्षेत्र को नंदनवन जैसा सुवासित करतें हैं । वे जहाँ भी बादलों की तरह बरसते हैं, वहीं मखमली हरीतिमा का फर्श बिछा देते हैं । वे वसंत की तरह अवतरित होते हैं । अपने प्रभाव से वृक्ष पादपों को सुगंधित, सुरभित पुष्पों से लाद देते हैं । वातावरण में ऐसी उमंगें भरते हैं, जिससे कोयलें कूकने, भौंरे गूँजने और मोर नाचने लगें ।

बड़े कामों को बड़े शक्ति केन्द्र ही सम्पन्न कर सकते हैं। दलदल में फँसे हाथी को बलवान हाथी ही खींच कर पार करते हैं । पटरी से उतरे इंजन को समर्थ क्रेन ही उठाकर यथास्थान रखती है । उफनते समुद्र में से नाव खे लाना, साहसी नाविकों से ही बन पड़ता है । समाज और संसार की बड़ी समस्याओं को हल करने के लिए, ऐसे ही वरिष्ठ प्रतिभावानों की आवश्यकता पड़ती है । पुल, बाँध, महल, किले जैसे निर्माणों में मूर्धन्य इन्जीनियरों की आवश्यकता पड़ती है। पेचीदा गुत्थियों को सुलझाना क़िन्हीं मेधावियों से ही बन पड़ता है । प्रतिभाएँ वस्तुतः ऐसी सम्पदायें हैं, जिनसे न केवल प्रतिभाशाली स्वयं भरपूर श्रेय अर्जित करते हैं, वरन् अपने क्षेत्र, समुदाय और देश की अति विकट दीखने वाली उलझनों को भी सुलझाने में सफल होते हैं । इसी कारण भावनावश ऐसे लोगों को देवदूत तक कहते हैं ।

आड़े समय में इन उच्चस्तरीय प्रतिभाओं की ही आवश्यकता होती है । उन्हीं को खोजा, उभारा और खरादा जाता है । विश्व के इतिहास में ऐसे ही महामानवों की यश गाथा स्वर्णिम अक्षरों में लिखी मिलती है । संसार के अनेक सौभाग्यों और सुन्दरताओं में अधिक मूर्धन्य महाप्राणों के व्यक्तित्त्व ही सबसे अधिक चमकते हैं । वे अपनी यश गाथा से असंख्यों का, अनन्त काल तक मार्गदर्शन करते रहते हैं । स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि के नाम से आध्यात्मिक भाषा में जिन महान् उपलब्धियों का अलंकारिक रूप से वर्णन किया जाता है, उनका सारतत्त्व वस्तुतः ऐसे ही महामनीषियों को करतलगत होता है । दूसरे लोग पूजा पाठ के सहारे कुछ मिलने की आशा करते हैं, पर मनस्वी, तेजस्वी और ओजस्वी ऐसे कर्मयोग की साधना में ही निरत रहते हैं, जो उनके व्यक्तित्त्व को प्रामाणिक और कर्तृत्त्व को ऊर्जा का उद्गम स्रोत सिद्ध कर सके ।

यह समय सामान्य नहीं है

वर्तमान समय विश्व इतिहास में अद्भुत एवं अभूतपूर्व स्तर का है । इसमें एक ओर महाविनाश का प्रलयंकर तूफान अपनी प्रचण्डता का परिचय दे रहा है, तो दूसरी ओर सतयुगी नव निर्माण की उमंगें भी उछल रही हैं । विनाश और विकास एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी हैं, तो भी उनका एक ही समय में अपनी-अपनी दिशा में चल सकना संभव है । इन दिनों आकाश में सघन तमिस्रा का साम्राज्य है, तो दूसरी ओर ब्रह्ममुहूर्त का आभास भी प्राची में उदीयमान होता दीख पड़ता है । इन दोनों के समन्वय को देखते हुए ही अपना समय युग संधि का समय माना गया है ऐसे अवसरों पर किन्हीं प्रखर-प्राणवानों को ही अपनी सही भूमिका निभानी पड़ती है ।

त्रेता में एक ओर रावण का आसुरी आतंक छाया हुआ था, दूसरी ओर रामराज्य वाले सतयुग की वापसी, अपने प्रयास पुरुषार्थ का परिचय देने के लिए मचल रही थी । इस विचित्रता को देखकर सामान्य जन भयभीत थे । राम के साथ लड़ने के लिए उन दिनों के एक भी राजा की शासकीय सेनायें आगे बढ़ कर नहीं आयीं । फिर भी हनुमान, अंगद के नेतृत्त्व में रीछ वानरों की मण्डली जान हथेली पर रख आगे आयी और समुद्र सेतु बाँधने, पर्वत उखाड़ने, लंका का विध्वंस करने में समर्थ हुई । राम ने उनके सहयोग की भाव भरी शब्दों में भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

ऐसा एक नहीं, अनेक उदाहरण हैं, जो यही सिद्ध करते हैं कि प्रतिभा ने जब कभी नेतृत्त्व सँभाला, तो सहयोगियों की कमी नहीं रही । संसार के हर कोने से, हर समय में ऐसे चमत्कारी घटनाक्रम प्रकट होते हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि सत्य की शक्ति अजेय है । उच्चस्तरीय प्रतिभाएँ उसे गंगावतरण काल के जैसे प्रयोजन में और परशुराम जैसे ध्वंस प्रयोजनों में प्रयुक्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करती रही हैं । महत्त्व घटनाक्रमों और साधनों का नहीं रहा, सदैव मूर्धन्य प्रतिभाओं ने ही महान समस्याओं का हल निकालने में प्रमुख भूमिका निभाई है ।

इन दिनों व्यक्तिगत समस्याओं का शिकंजा भी कम कसा हुआ नहीं है । आर्थिक, सामाजिक, मानसिक क्षेत्रों पर छायी हुई विभीषिकाएँ, सर्वसाधारण को चैन से जी सकने का अवसर नहीं दे रही हैं । इससे भी बढ़कर सार्वजनिक समस्याएँ हैं । संसार के सामने कितनी ही चुनौतियाँ हैं । बढ़ती हुई गरीबी, बेकारी, बीमारी, प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि, परमाणु विकिरण, युद्धोन्माद का बढ़ता दबाव, अन्तरिक्ष क्षेत्र में धूमकेतु की तरह अपनी विकरालता का परिचय दे रहा है । हिम प्रलय, जल प्रलय, दुर्भिक्ष, भूकम्पों आदि के माध्यम से प्रकृति अपने प्रकोप का परिचय दे रही है । मनुष्य की बौद्धिक भ्रष्टता और व्यावहारिक दुष्टता से, वह भी तो कम अप्रसन्न नहीं है । भविष्यवक्ता इन दिनों की विनाश विभीषिका की संभावना की जानकारी, अनेक स्तरों पर देते रहे हैं । दीखता है कि वह महाविनाश कहीं अगले दिनों घटित ही तो होने नहीं जा रहा है ?

पक्ष दूसरा भी है—इक्कीसवीं सदी की ऐसी सुखद संभावना, जिसे सतयुग की वापसी कहा जा सके। इन दोनों ही प्रयोजनों में आवश्यक मानवी भूमिका का समावेश होना अनिवार्य रूप से आवश्यक है । इस कार्य को मूर्धन्य प्रतिभाएँ ही सम्पन्न कर सकेंगी । ईश्वर, धर्म का संरक्षण और अधर्म के विनाश का काम तो करते हैं, पर अदृश्य प्रेरणा का परिवहन तो शरीरधारी महामानव ही करते हैं । आज उन्हीं की खोज है । उन्हीं को आकुल-व्याकुल होकर ढूँढा जा रहा है । दीन-हीन और पेट प्रजनन में निरत तो असंख्य प्रजाजन सर्वत्र बिखरे पड़े हैं । पर वे तो अपने भार से ही दबे हैं, अपनी ही लाश ढो रहे हैं । युग परिवर्तन जैसे सृजन और ध्वंस के महान प्रयोजन की पूर्ति के लिए प्राणवानों की आवश्यकता है। गोताखोर उन्हीं को इस खारे समुद्र में से मणिमुक्तकों की तरह ढूँढ निकालने में लगे हुए हैं ।

विशिष्टता का नये सिरे से उभार

दूध में मक्खन घुला होता है, पर उसे अलग निकालने के लिये उबालने, मथने जैसे कई कार्य सम्पन्न करते पड़ते हैं। प्राणवान प्रतिभाओं की इन दिनों अतिशय आवश्यकता पड़ रही है, ताकि इस समुद्र मन्थन जैसे युग संधि पर्व में अपनी महती भूमिका निभा सकें । अनिष्ट के अनर्थ से मानवीय गरिमा को विनष्ट होने से बचा सके । उज्ज्वल भविष्य की संरचना में ऐसा प्रचण्ड पुरुषार्थ प्रदर्शित कर सकें, जैसे गंगा अवतरण के संदर्भ में मनस्वी भगीरथ द्वारा सम्पन्न किया गया था ।

इन दिनों यह ढूँढ खोज ही बड़ा काम है । सीता को वापस लाने के लिए वानर समुदाय विशेष खोज में निकला था । समुद्र मन्थन भी ऐसी खोज का एक इतिहास है । गहरे समुद्र में उतर कर मणि मुक्ता खोजे जाते हैं । कोयले की खदानों में से खोजने वाले हीरे ढूँढ निकालते हैं, धातुओं की खदान इसी प्रकार धरती को खोद-खोद कर ढूँढी जाती है । दिव्य औषधियों को सघन वन प्रदेशों में खोजना पड़ता है । वैज्ञानिक प्रकृति के रहस्यों को खोज लेने का काम करते हैं। हाड़मांस की काया में से देवत्त्व का उदय, साधना द्वारा गहरी खोज करते हुए ही संभव किया जाता है । महाप्राणों की इन दिनों इसी कारण भारी खोज हो रही है कि उनके बिना, युग संधि का महाप्रयोजन पूरा भी तो नहीं हो सकेगा। आज तो व्यक्ति की सामयिक एवं क्षेत्रीय समस्याओं का निराकरण भी वातावरण बदले बिना संभव नहीं हो सकता । संसार में निकटता बढ़ जाने से, गुत्थियाँ भी वैयक्तिक न रहकर सामूहिक हो गई हैं । उनका निराकरण व्यक्ति को कुछ ले देकर नहीं हो सकता । चेचक की फुन्सियों पर पट्टी कहाँ बाँधते हैं ? स्थाई उपचार तो रक्त शोधन की प्रक्रिया से ही बन पड़ता है।

प्रस्तुत चिन्तन और प्रचलन में इतनी अधिक विकृतियों का समावेश हो गया है कि उन्हें औचित्य एवं विवेक से सर्वथा प्रतिकूल माना जा सकता है । अस्वस्थता, उद्विग्नता आक्रामकता, निष्ठुरता, स्वार्थान्धता, संकीर्णता, उद्दण्डता का बड़ों और छोटों में अपने-अपने ढंग का बाहुल्य है । लगता है, मानवीय मर्यादाओं और वर्जनाओं की प्रतिबद्धता से इन्कार कर दिया गया है । फलतः व्यक्ति को अनेकानेक संकटों और समाज को चित्र-विचित्र समस्याओं का सामना करना पड़ता है । न कोई सुखी दिखता है न संतुष्ट । अभाव और जन-बाहुल्य नयी-नयी विपत्तियाँ खड़ी कर रहे हैं । हर कोई आतंक और आशंका से विक्षुब्ध जैसा दिखता है ।

इन सबसे जूझने के लिए एक सुविस्तृत मोर्चेबंदी करनी होगी । सामान्य जन तो अपनी निजी आवश्यकताओं, उलझनों तक का समाधान नहीं कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाते, फिर व्यापक बनी-हर क्षेत्र में समायी विपन्नताओं से जूझने कें लिए उनसे क्या कुछ बन पड़ेगा ? इस कठिन कार्य को सम्पन्न करने के लिए विशिष्टता युक्त प्रतिभायें चाहिए । बड़े युद्धों को जीतना वरिष्ठ सेना-नायकों द्वारा अपनायी गयी रणनीति और सूझ-बूझ के सहारे ही सम्भव हो पाता है । यही बात बड़े सृजनों के सम्बन्ध में भी है । ताजमहल जैसी इमारत बनाने, चीन की दीवार खड़ी करने, हावड़ा जैसे पुल खड़े करने जैसे महापुरुषार्थों के लिए वरिष्ठ लोगों की, वस्तुस्थिति के साथ तालमेल बिठाकर चलने वाली नीति ही सफल होती है । उनके लिए आवश्यक साधन एवं सहयोग जुटाना भी हँसी-खेल नहीं होता । बड़ी प्रतिभायें ही बड़ी योजनायें बनाती हैं, वे ही उतने भारी भरकम दायित्त्व उठाती हैं । छोटे तो समर्थन भर देते हैं । सफलता पर हर्ष और असफलता पर विषाद प्रगट करने भर की उनमें क्षमता होती है ।

इन दिनों दो कार्य प्रमुख हैं : विपन्नता से जूझना और उन्हें निरस्त करना, साथ ही नव सृजन की ऐसी आधारशिला रखना जिससे अगले ही दिनों सम्पन्नता, बुद्धिमत्ता, कुशलता और समर्थता का सुहावना माहौल बन पड़े । इक्कीसवीं सदी को दूरदर्शी लोग सर्वतोमुखी प्रगति की सम्भावनाओं से भरी-पूरी मानते हैं । उस अवधि में सतयुग की वापसी पर विश्वास करते हैं । इस मान्यता के अनेक कारण भी हैं । उनमें से एक यह है, कि इन्हीं दिनों समर्थ प्रतिभाओं का सृजन, उन्नयन और प्रखरीकरण तेजी से हो रहा है । सम्भवत: अदृश्य शक्ति का ही इसमें हाथ हो ? ऐसी शक्ति का जो समय-समय पर, आड़े समय में बिगड़ता संतुलन सँभालने के लिए अपने वर्चस्व का प्रकटीकरण करती रही हैं । कहना न होगा, कि तेजस्वी प्रतिभायें ही भौतिक समृद्धि बढ़ाने, प्रगति का वातावरण उत्पन्न करने और अंधकार भरे वर्तमान को उज्ज्वल भविष्य में परिणित करने का श्रेय सम्पादित करती रही हैं । उन्हें ही किसी देश, समाज एवम् युग की वास्तविक शक्ति एवम् सम्पदा माना जाता है । स्पष्ट है कि वे उदीयमान वातावरण में ही उगती और फलित होती हैं। वर्षा में हरीतिमा और वसन्त में सुषमा का प्राकट्य होता है । प्रतिभायें अनायास ही नहीं बरस पड़तीं, न वे उद्भिजों की तरह उग पड़ती हैं । उन्हें प्रयत्नपूर्वक खोजा, उभारा और खरादा जाता है । इसके लिए आवश्यक एवम् उपयुक्त वातावरण का सृजन किया जाता है।

दो अति महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम

इन दिनों ऐसा ही कुछ चल रहा है । असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए महाकाल की कोई बड़ी योजना बन रही है । उसे मूर्त रूप देने के लिए दो छोटे किन्तु अति महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम सामने आए हैं । एक है आदर्शवादी सहायकों में उमंगों का उभारना और एक परिसर एक सूत्र में सम्बद्ध होना । साथ ही कुछ नियमित एवं सृजनात्मक गतिविधियों को प्रारम्भ करना, जो सद्विचारों को सद्कार्यों में परिणत कर सकने की भूमिका बना सकें । दूसरा कार्य यह है कि अनीति विरोधी मोर्चा खड़ा किया जाय, उसे एक प्रयास से आरम्भ करके विशाल-विकराल बनाया जाय। एक चिनगारी दावानल बनती है । छोटे बीज से वृक्ष बनता है । ध्वंस एवं सृजन दोनों का यही उपक्रम है । एक कदम शालीनता के सृजन का एवं दूसरा अनीति के दमन का । सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के दो मोर्चे पर, दोधारी तलवार से, दो स्तर की रीति-नीति अपनाना । यह है वह अग्रगमन, जिस पर कदम-कदम बढ़ते हुए नवयुग का अवतरण संभव हो सकता है । उज्जवल भविष्य की सर्वतोमुखी प्रगति एवं चिर स्थाई शान्ति के लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है । इसी स्थिति में पहुँचने पर ''सत्यमेव जयते'' का उद्घोष, प्रचण्ड प्रयासों का मार्ग पूरा करते हुए, अपनी यथार्थता का परिचय दे सकता है ।

इस महाजागरण से ही प्रतिभाओं की मूर्छना हटेगी। वे अँगड़ाई लेते हुए लम्बी मूर्छना से पीछा छुड़ाती और दिनमान की ऊर्जा प्रेरणा से कार्य क्षेत्र में अपने पौरुष का परिचय देती दृष्टिगोचर होंगी । इस भवितव्यता को हम सब इन्हीं आँखों से अपने ही सामने मूर्तिमान होते हुए देखेंगे ।

प्रयत्नपूर्वक खदानों से हीरे खोज तो लिए जाते हैं; पर उन्हें चमकदार, बहुमूल्य और हार में शोभायमान स्थान पाने के लिए खरादना अनिवार्य रूप से आवश्यक होता है । धातुएँ अनेक बार के अग्नि संस्कार से ही संजीवनी जैसी रसायनों के रूप में परिणत होती हैं । पहलवान अखाड़े में लम्बा अभ्यास करने के उपरान्त ही दंगल में विजयश्री वरण करते हैं। शिल्पी और कलाकार अपने विषय में प्रवीण-पारंगत बनने के लिए लम्बे समय तक अभ्यासरत रहते हैं । प्रतिभाओं का प्रशिक्षण और परिवर्धन, आदर्शवादी गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भूमिका निभाने के उपरान्त ही संभव हो पाता है । उस तथ्य के अनुरूप जहाँ प्रतिभाओं को खोजा जा रहा है, वहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनकी प्रखरता निखारने के लिए ऐसे कार्यों में जुटाया भी जा रहा है, जिनके कारण उनका ओजस्, तेजस् और वर्चस् जाज्वल्यमान हो सके । विश्वामित्र ने, दशरथ पुत्रों को, युग सृजन प्रयोजन के लिए, उपयुक्त समय पर उनकी तेजस्विता उभारने के लिए यज्ञ की रक्षा करने और असुरों से जूझने का काम सौंपा था । हनुमान, अर्जुन आदि ने ऐसी ही अग्नि परीक्षाओं से गुज़रते हुए असाधारण गौरव पाया था । इनसे बचकर किसी पर भी महानता आकाश से नहीं बरसी है । पराक्रम से जी चुराने वाले ही कृपणों प्रमादियों की तरह, मात्र हाथ ही मलते रहते हैं ।

इन दिनों जन्मान्तरों से संचित सुसंस्कारों वाली प्रतिभाएँ खोज निकाली गई हैं । उन्हें युग चेतना के साथ जोड़ा गया है । इन्हें नव सृजन साहित्य के माध्यम से पुष्प-वाटिका में मधु मक्खियों की तरह, दिव्य सुगन्ध ने आमंत्रित किया है और उसी परिकर में छत्ता बनाकर रहने के लिए सहमत किया है । प्रज्ञा परिकर को इसी रूप में देखा-समझा और आँका जा सकता है। प्रज्ञा परिजनों को युग सृजन का लक्ष्य लेकर अवतरित हुई दिव्य आत्माओं का समुदाय कहा जा सकता है । वे अन्तरात्मा को अमृत पिलाने वाले, युग साहित्य का रसास्वादन करते रहे हैं, मिशन की पत्रिकाएँ नियमित रूप से पढ़ते रहे हैं । युग चेतना की भाव भरी प्रेरणाओं का यथासंभव अनुसरण भी करते रहे हैं । उनके अब तक के योगदान को, परमार्थ पुरुषार्थ को, मुक्त कण्ठ से सराहा जा सकता है । पर बड़े प्रयोजनों के लिए इतना ही तो पर्याप्त नहीं ? समय की बढ़ती माँग को देखते हुए, बड़े कदम भी तो उठाने पड़ेंगे । बच्चे का छोटा सा पुरुषार्थ भी अभिभावकों द्वारा भली-भाँति सराहा जाता है, पर युवा होने पर बचपन की पुनरावृत्तियाँ करने भर से कौन यशस्वी बनता है ?

यहाँ परिजनों के पिछले दिनों के योगदान का मूल्यांकन घटाकर नहीं किया जा रहा है, पर इतने भर से बात तो नहीं बनती ? महाकाल की अभिनव चुनौती स्वीकारने के लिए उतने पर ही संतोष नहीं किया जा सकता, जो पिछले दिनों हो चुका है । यह लम्बा संग्राम है—संभवतः प्रस्तुत परिजनों के जीवन भर चलते रहने वाला । इक्कीसवीं सदी आरम्भ होने में अब पाँच वर्ष शेष हैं । इस युग संधि बेला में तो हम सब को, उस स्तर की तप साधना में संलग्न रहना है जिसे भगीरथ ने अपनाया और धरती पर स्वर्गस्थ गंगा का अवतरण संभव कर दिखाया था । महामानवों के जीवन में कहीं कोई विराम नहीं होता । वे निरंतर अनवरत गति से, शरीर छूटने तक चलते ही जाते हैं । इतने पर भी लक्ष्य पूरा न होने पर जन्म-जन्मान्तरों तक उसी प्रयास में निरत रहने का संकल्प संजोए रहते हैं । इसी परम्परा का निर्वाह उन्हें भी करना है, जिन्हें अपनी प्रतिभा निखारनी और निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसी उपलब्धियाँ कमानी हों, जिन्हें प्रेरणाप्रद, अनुकरणीय, अभिनन्दनीय एवं अविस्मरणीय कहा जा सके । अपने परिवार की प्रतिभाओं को उपेक्षित स्तर की नहीं ही रहना है । इनकी गणना उन लोगों में नहीं ही होनी चाहिए, जिन्हें परावलम्बी, या निर्वाह के लिये, जीवित भर रहने वाला कहा जाता है ।

कमल पुष्प, सामान्य तालाब में उगने पर भी अपनी पहचान अलग बनाते और दूर से देखने वाले के मन पर भी अपनी प्रफुल्लता की प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं । अपना स्वरूप एवं स्तर ऐसा ही होना चाहिए ।

प्रतिभा परिवर्धन के तथ्य और सिद्धान्त

जन साधारण के बीच प्रतिभाशाली अलग से चमकते हैं, जैसे पत्तों व काँटों के बीच फूल, तारों के बीच चन्द्रमा। यह जन्मजात उपलब्धियाँ नहीं हैं और न किसी का दिया हुआ वरदान। इसे भाग्यवश मिला हुआ आकस्मिक संयोग-सुयोग भी नहीं कहा जा सकता। वह स्वउपार्जित सम्पदा है। इस कार्य में दूसरे कुछ सहायक तो हो सकते हैं; पर प्रधानता तो अपने प्रबल प्रयास की ही रहती है।

धन आता है और चला जाता है। रूप यौवन भी सामयिक है। उसका संबंध चढ़ते खून से है। किशोर और तरुण ही सुन्दर दिखते हैं। इसके बाद ढलान आरम्भ होते ही अवयवों में कठोरता और चेहरे पर रुक्षता की हवाइयाँ उड़ने लगती हैं। विद्या उतनी ही स्मरण रहती है, जितनी कि व्यवहार में काम आती है। मित्र, सहयोगी, सम्बंधी, सहायकों के मन बदलते रहते हैं। आवश्यक नहीं कि उनकी घनिष्टता सदा एक सी बनी रहे। अधिकार भी चिरस्थाई नहीं है। समर्थन घटते ही वे दूसरों के हाथों चले जाते हैं। वयोवृद्धों के उत्पादन की, परिश्रम की क्षमता घट जाती है। आयु वृद्धि के साथ-साथ स्मरण शक्ति और स्फूर्ति भी जबाब देने लगती है। ऐसी दशा में तब कोई योजना बनाना और उसे चलाना भी, बस से बाहर हो जाता है। यह सब मरण के ही लक्षण हैं। जीवनी शक्ति का भण्डार धीरे-धीरे चुकता है और फिर वह अंततः जबाब दे जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विकासोन्मुख शरीर, चढ़ते खून और परिपक्व व्यक्तित्त्व वाले दिनों में ही रहता है। उसे भले ही कोई आलस्य प्रमाद में गुजारे, भले ही कोई लिप्सा-लालसा की वेदी पर विसर्जित कर दे। कोई-कोई तो उन दिनों भी अतिवादी उद्दण्डता दिखाने से भी नहीं चूकते। यह सब शक्तियों और सम्भावनाओं के भण्डार मनुष्य जीवन के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। दूरदर्शी वे हैं, जो विभूतियों में सर्वश्रेष्ठ 'प्रतिभा' को मानते हैं और उसके सम्पादन हेतु प्राणप्रण से प्रयत्न करते हैं; क्योंकि वही हर स्थिति में साथ रहती है, अपनी तथा दूसरों की गुत्थियाँ सुलझाती है और जन्म-जन्मान्तरों तक साथ रहकर, क्रमशः अधिकाधिक ऊँचे स्तर वाली परिस्थितियों का निर्माण करती रहती है। इस उपार्जन के लिए किये गये प्रयत्नों को ही, हर दृष्टि से सराहा और स्वर्ण सम्पदा की तरह किसी भी बाजार में भुनाया जा सकता है। भौतिक प्रगति में भी उसी के चमत्कार दिखते हैं और आदर्शवादी परमार्थ अपनाने वाली महानता को भी उसी के सहारे विकसित परिष्कृत होते हुए देखा जा सकता है।

प्रतिभा परिष्कार के कुछ मूलभूत सिद्धान्त हैं। इन्हें उन सभी को हृदयंगम करने का प्रयत्न करना चाहिए, जो समुन्नत, सुसंस्कृत एवं यशस्वी सफल जीवन जीने के लिए उत्सुक हैं।

प्रथम सिद्धान्त अथवा आधार है—क्षमताओं का अभिवर्धन। उनके लिए निरन्तर तत्परता का, तन्मयता का सुनियोजन। आलस्य-प्रमाद से बचकर सदा जागरूक और स्फूर्तिवान बने रहना। एक-एक क्षण को बहुमूल्य मानकर उन्हें सदुद्देश्यों में सुनियोजित रखने के लिए योजनाबद्ध आंकलन। यही है, वह मनः स्थिति जिसे 'महाजागरण' कहते हैं। आमतौर से लोग अर्धतंद्रा की स्थिति में जिन्दगी को दर्द की तरह जीते हैं। निर्वाह साधन पा लेने भर से उन्हें संतोष हो जाता है। वे भाव तरंगें उठती ही नहीं, जो आज की तुलना में कल को अधिक परिष्कृत बनाने के लिए लालायित रहती और प्रयत्नरत होती हैं। प्रतिभा के उपासक इस दलदल से उबरते हैं और अपनी निखरती क्षमताओं को बचाकर, मूल्यवान पूँजी की तरह एकत्रित करते हैं। जो हस्तगत है, उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग करते हैं। यही है कल्पवृक्ष का उत्पादन एवं उसका उद्देश्यपूर्ण सदुपयोग क्रियान्वयन।

दूसरा चरण है—अपने व्यक्तित्त्व को चुम्बकीय, आकर्षक एवं विश्वस्त स्तर का विकसित करना। यह मनुष्यता के साथ जुड़ने वाला प्राथमिक गुण है। इसके लिए अपना रहन-सहन ऐसा बनाना पड़ता जैसा जागरूक, जिम्मेदार और सज्जनता-सम्पन्नों का होना चाहिए। शरीर और मन की स्वच्छता, साथ ही शिष्टाचार का निर्वाह और वाणी में मधुरता का गहरा पुट लगाए रहना भी आवश्यक है। इसके लिए अपनी नम्रता का परिचय देना और दूसरों को सम्मान देना आवश्यक है। उसे वे ही कर पाते हैं जो दूसरों के गुण देखकर उनसे प्रेरणा ग्रहण करते रहते हैं, साथ ही अपनी त्रुटियों को खोजते एवं उनके निष्कासन-परिष्कार में लगे रहते हैं। ओछे व्यक्ति अपनी शेखी बघारते और दूसरों के दोष गिनते रहते हैं। उसी जंजाल में उनका चिन्तन एवं वर्चस्व घटता और समाप्त होता रहता है।

प्रतिभावानों के होठों पर मंद मुस्कान देखी जाती है। इसी आधार पर यह जाना जाता है कि वे अपने आप में सन्तुष्ट और प्रसन्न हैं। दूसरे भी ऐसे ही लोगों का सहारा ताकते और साथ देते हैं। खीजते और खिजाते रहने वालों को दूर से ही नमस्कार करने को जी करता है । जिन्हें अपना सही मूल्यांकन करना है, वे इस प्रकार की भूलें नहीं करते। यदि वे आदत में सम्मिलित होने लगे तो उन्हें बुहार फेंकने की मुस्तैदी दिखाते हैं।

तीसरा चरण है—सुव्यवस्था। अस्तव्यस्त स्थिति में ही, प्रचुर साधन रहते हुए भी लोग असफल रहते और उपहासास्पद बनते हैं। प्रतिभाएँ क्षण-क्षण में अपने कार्यों और नियोजनों की समीक्षा करती रहती हैं तथा उन्हें सही बनाने के लिए जो हेर-फेर करना आवश्यक होता है, उसे बिना हिचक तत्परतापूर्वक करती है। जड़ता, हठवादिता के शिकंजे में जकड़ने का उन्हें तनिक भी आग्रह नहीं होता। वे जानते हैं कि प्रगतिशीलों को सदा परिस्थितियों के अनुरूप रणनीति बनानी और चलते ढर्रे में आवश्यक सुधार लाने की चेष्टा करनी पड़ती है। व्यवस्था इसी प्रकार बन पड़ती है। जो अपने समय का, श्रम का, साधनों का, विचारों का, परिवार परिकर का सुनियोजन कर सकता है और उन्हें सही दिशा दे सकने में समर्थ हो सकता है, उसी को योग्य समझा जाता है कि वह कोई बड़ी या अतिरिक्त जिम्मेदारी को वहन कर सके। किन्हीं बढ़ी-चढ़ी महत्त्वाकांक्षाएँ संजोने से पूर्व यह प्रमाण देना पड़ता है कि व्यक्तित्त्व, परिकर एवं क्रिया कलापों में किस सीमा तक व्यवस्था बुद्धि का उपयोग किया गया और उन्हें कितना सफल-समुन्नत बनाकर दिखाया गया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चौथा व अन्तिम सूत्र है—अग्रगमन-नेतृत्त्व । यह उत्साह, साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक है। साधारण जन आत्महीनता से ग्रसित, झिझक, संकोच, अनिश्चय एवं साहसहीनता की मन:स्थिति में पड़े पाये जाते हैं। वे उचित कार्यों के लिए भी कदम बढ़ाने का साहस नहीं कर पाते। अधिक से अधिक इतना ही सोचते हैं कि कोई बढ़े तो उसके पीछे चलने लगें। ऐसे लोग उचित निष्कर्ष निकाल लेने पर भी उस मार्ग का अवलम्बन नहीं कर पाते। अपनी स्थिति को अनुपयुक्त मानते हुए भी उस परिधि से एक कदम भी आगे नहीं रख पाते। ऐसों के बीच उन्हीं को मनस्वी माना जाता है जो उचित के प्रति अटूट आस्था रखें और जो करना चाहिए उसे अन्यों का समर्थन-सहमति न मिलने पर भी एकाकी कर दिखायें। इसे दूध गरम करते ही मलाई के तैर कर ऊपर आ जाने के समकक्ष समझा जा सकता है।

प्रतिभाएँ एकाकी बढ़कर अपने अग्रगमन की क्षमता का प्रमाण प्रस्तुत करती है। फिर सर्वत्र उनकी मनस्विता का लोहा माना जाने लगता है। दूसरे लोग भी उनका अनुकरण करते हैं। जिनकी जिम्मेदारियाँ भारी हैं, वे ऐसे ही लोगों को तलाश करते रहते हैं। प्रामाणिकता की परख होने पर सब ओर से एक से एक बढ़कर भारी भरकम जिम्मेदारियाँ उनके ऊपर आग्रहपूर्वक डाली जाने लगती हैं। वे उन्हें स्वीकार करते और जो कार्य लिया गया है उसे सर्वांगपूर्ण ढंग से सम्पन्न कर दिखाते हैं।

रेल का इन्जन एकाकी चलता है। स्वयं दौड़ता है और अपने साथ भरे डिब्बों की लम्बी शृंखला को घसीटते हुए निर्धारित लक्ष्य की दिशा में पटरी पर दौड़ता चला जाता है। सर्वविदित है कि डिब्बों की तुलना में इन्जन को अधिक महत्त्व मिलता है। अधिक मूल्यांकन भी होता है। यह और कुछ नहीं साहस भरी व्यवस्था का परिचय देने वाली ऊर्जा की ही परिणति है। प्रतिभाओं में यह सद्गुण उनके द्वारा स्वउपार्जित स्तर का बड़ी मात्रा में पाया जाना है। वे औरों का मुँह ताकते हुए नहीं बैठे रहते, वरन् आगे बढ़कर औरों को अपने चुम्बकत्व के कारण जोड़ते और साथ चलने के लिए बाधित करते हैं। सफलताओं का यही स्रोत है। यों प्रतिभा का दुरुपयोग भी हो सकता है। धन का, बल का, सौन्दर्य का , कौशल का नियोजन यदि भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण में किया जाय तो वैसा भी हो सकता है। आंतकवादी, अनाचारी, उच्छृंखल, उद्धत लोग प्राय: वैसा करते भी हैं। इतने पर भी यह निश्चित है कि कोई इस आधार पर न तो स्थिर प्रगति कर सकता है और न कोई ऐसी परम्परा पीछे छोड़ सकता है, जिसे सराहा जा सके। आज नहीं तो कल-परसों ऐसे लोग आत्म प्रताड़ना, लोकभर्त्सना से लेकर राजदण्ड और दैवी प्रकोप के भाजन बनते ही हैं। लालच और घृणा तो भीतर-बाहर से उन पर निरन्तर बरसती ही रहती है।

दूरदर्शी विवेकवान अपनी श्रेष्ठता को विकसित करते हैं और अपने आदर्शवादी क्रियाकलापों के आधार पर प्रामाणिक माने जाते और विश्वस्त बनते हैं। जिनने उच्चस्तरीय सफलताएँ पायीं, उनका अनुकरण करते और सहयोग देते असंख्यों देखे जाते हैं। इसीलिए ''प्रतिभा महासिद्धि'' की साधना करने वाले अपने चरित्र की प्रामाणिकता को हर हालत में बनाये रहते हैं, भले ही इसके लिए अभावग्रस्त स्थिति में रहना पड़े और तात्कालिक मिल सकने वाली सफलता से वंचित रहना पड़े।

प्रतिभा तत्संबन्धी सिद्धान्तों का मनन चिन्तन करते रहने भर से हस्तगत नहीं होती। उसको स्वभाव का अंग बनाना पड़ता है। चिन्तन-चरित्र और व्यवहार में उन्हें भली प्रकार समाविष्ट करना पड़ता है। यह कार्य प्रत्यक्ष क्रियान्वयन के बिना संभव नहीं होता विचार वे ही प्रौढ़ एवं प्रखर होते हैं, जो क्रिया में उतरते रहते हैं। डायनैमो घूमता है तो बैट्री चार्ज होती है। विचारों और कार्यों के समन्वय से ही व्यक्तित्त्व का स्तर बनाता है। उसी आधार पर सफलता के क्षेत्र में कुछ महत्त्वपूर्ण गौरव हस्तगत होता है। यही वह हुण्डी है, जिसे किसी भी क्षेत्र में हाथों-हाथ भुनाया जा सकता है। बड़े काम कर गुजरने वाली जन्मजात विभूतियाँ साथ लेकर कदाचित ही कोई आते हैं। हर किसी को यह उपलब्धि अपने मनोयोग और प्रचण्ड प्रयास के आधार पर ही हस्तगत करनी होती है। सांसारिक दृष्टि से प्रत्यक्ष दीख पड़ने वाले बड़े कार्य भी ऐसे ही लोगों ने सम्पन्न किए हैं। बहुमुखी सफलताओं का श्रेय उन्हीं पर बरसा है। ऐसे ही लोग समाज को स्थिरता देते और अवांछनीय उल्टे प्रचलनों को उलट कर ठीक कर दिखाते हैं। समय का कायाकल्प करके वातावरण में नव जीवन का प्राण प्रवाह भरते ऐसे ही लोगों को देखा जाता है।

जिन व्यक्तियों ने युग परिवर्तन के सरंजाम को संभव कर दिखाया है, उनके क्रिया-कलापों पर एक दृष्टि डालकर यह भली-भाँति जाना जा सकता है कि जब भी प्रतिभा का सुनियोजन सही दिशा में होता है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस व्यक्ति का ही नहीं, वातावरण का भी कायाकल्प हो जाता है। महाप्रतापी राणा प्रताप व शिवाजी से लेकर सुभाषचन्द्र बोस, मनस्वी गाँधी इन्हीं कुछ शताब्दियों में जन्मे महामानव हैं, जिनने प्रतिभा के सुव्यवस्थित सुनियोजन से असंभव को संभव कर दिखाया। वस्तुतः महा मानवों का जीवन अपने आप में एक प्रयोगशाला है। उनके उदाहरणों से बहुत कुछ सीखा और पाया जा सकता है।

प्रतिभा परिवर्धन का प्रशिक्षण करने वाले कोई स्कूल कालेज कहीं नहीं है। इसके लिए निर्धारित सिद्धान्तों को व्यवहार में उतारने के लिए अवसर और वातावरण स्वयं तलाशना पड़ता है। उस प्रकार के अवसर कहीं एक जगह एकत्रित नहीं मिलते। उन्हें दाने बीनने वाले की तरह झोली में भरना पड़ता है। पर इन दिनों एक ऐसा सुयोग समाने है जिसके साथ सम्बन्ध सूत्र जोड़ने पर हर किसी को वह सुयोग हस्तगत हो सकता है। जिसके सहारे प्रतिभा सम्पादन का सौभाग्य अनायास ही प्राप्त हो सके। ऐसे सुयोग कभी-कभी ही सामने आते हैं और उन्हें कोई विरले ही पहचान कर लाभ उठा पाते है। हनुमान ने समय पहचाना और वे थोड़े ही समय में समुद्र लाँघने, पर्वत उखाड़ने और लंका को मटियामेट बनाने का श्रेय प्राप्त कर सके। इसे समय की पहचान ही कहना चाहिए। यदि उस सुयोग का लाभ उठाना उनसे न बन पड़ता तो सुग्रीव के सेवक वानर रहकर ही उन्हें भी दिन गुजारने पड़ते।

पात्रता की तात्कालिक आवश्यकता

परमात्मा ने, प्रकृति ने मनुष्य मात्र को बहुत कुछ ऐसा असाधारण दिया है, जिसके आधार पर वह सुख सौभाग्य, प्रगति स्वयं प्राप्त करने के साथ-साथ औरों के लिए भी सहायक सिद्ध हो सकता है। परन्तु मनुष्य की दुर्बुद्धि कहें या माया का भटकाव—जिसके प्रभाव से सुख-सौभाग्य के स्थान पर वह अपने तथा औरों के लिए समस्याएँ एवं विडम्बनाएँ ही रचता रह जाता है। लालसा, वासना और अहंता के चक्र में मनुष्य स्वयं को दयनीय स्थिति तक पहुँचा देता है।

इस स्वनिर्मित दुर्गति से पार निकलना कैसे हो ? गिरना तो किसी के लिए भी सरल हो सकता है; पर उबरने और ऊँचा उठने के लिए मात्र अपने पुरुषार्थ से ही काम नहीं चलता उसके लिए किसी समर्थ सहायक की जरूरत पड़ती है। यह सहायता भी किसी को अकस्मात् अप्रत्याशित रूप से मुफ्त में नहीं मिलती। उधार देकर समर्थ सत्ता भी उसका कुछ बदला चाहती है। मुफ्त में तो यहाँ किसी को कुछ भी नहीं मिलता।

पात्रता के नियम मनुष्य पर तीन प्रकार से लागू होते हैं-एक उत्साह और स्फूर्ति भरी श्रमशीलता; दूसरी तन्मयता, तत्परता भरी अभिरुचि; तीसरी उत्कृष्टता के लिए गहरी लगन और ललक। यह तीनों जहाँ-कहीं भी सम्मिलित रूप से पायी जायेंगी, समझना चाहिए कि सफलता तक दौड़कर जा पहुँचने का अवसर मिला। पात्र हो तो पानी से न सही, हवा से वह जरूर भर जायेगा। खाली तो कभी रहेगा ही नहीं। ईश्वर की अनुकम्पा भी ऐसे ही लोगों पर बरसती है। उच्च पदों पर नियुक्ति उन्हीं की होती है, जो निर्धारित प्रतिस्पर्धाओं में बाजी मारते हैं।

यों ईश्वर के लिए सभी समान और सभी प्रिय हैं; पर उनके साथ बेइंसाफी भी तो नहीं की जा सकती, जिनने अथक परिश्रम करके अपनी योग्यता का परिचय दिया है। कोई बड़ा कारखाना खड़ा किया जाना होता है और उसके निर्माण में जल्दी करनी होती है, तो एक ही उपाय रह जाता है कि सुयोग्य एवम् अनुभवी अधिकारियों की बड़ी संख्या में नियुक्ति की जाय, अधिक कारीगर खोजे और जुटाये जायें। यही अगले दिनों होने जा रहा है।

प्रतिभावान व्यक्ति जहाँ-तहाँ मारे-मारे नहीं फिरते। गुणवानों, प्रतिभावानों को कभी खाली नहीं पाया जाता। इस पर भी यह आपत्तिकाल है। गरज कारीगरों को उतनी नहीं पड़ी है, जितनी कि निर्माण-कर्ताओं को अपने अच्छे और भव्य काम समय रहते करा लेने की है।

भक्त भगवान से सदा अनुग्रह माँगते रहते हैं, पर अब की बार इन दिनों ऐसा समय है, जिसमें निर्माणकर्ता को ही बड़ी बेचैनी से सत्पात्रों की खोजबीन करनी पड़ रही है। काम तो नियन्ता का ही रुका पड़ा है। उसे ही उतावली है। जैसी सड़ी-गली परिस्थितियाँ आज हैं, वैसी अधिक दिनों नहीं रहने दी जा सकतीं। बदलाव में बढ़-चढ़कर जो भूमिका निभाई जानी है, उसके लिए सत्पात्र तेजी से ढूंढे जा रहे हैं। विशेष अनुदान और उपहार भी उन्हीं को अविलम्ब मिलने वाले हैं। औसत स्तर के व्यक्तियों से लेकर प्रतिभावानों तक को, इस अभिनव सृजन में भाव-भरा योगदान प्रस्तुत करने के लिए समुचित अनुदान उदारतापूर्वक दिये जाने हैं।

साधारण और औसत दर्जे का व्यक्ति भी यदि सामान्य चाल और धीमी गति से प्रगति पथ पर आगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़ता चले, तो इसका परिणाम भी ऐसा हो सकता है, जिससे उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न साकार होते देखा-समझा जा सके। प्रतिभाशालियों का समुदाय इसके अतिरिक्त है। जिनमें शारीरिक स्फूर्ति, मानसिक साहसिकता, और अन्तःकरण में उमंग भरी रहती है, वे परिस्थितियों की दृष्टि से सामान्य होने पर भी इतना कुछ कर सकते हैं, जिसे अद्भुत कहा जा सके। जटायु जैसे अपनी आदर्शवादी उमंगों के आधार पर इतना कुछ कर सके, जितना कि हीन मनोबल वाले तरुण और बलिष्ठ भी नहीं कर सके। ऐसी कृतियाँ सदा स्मरण की जाती रहेंगी। अष्टावक्र जैसे टूटे-फूटे शरीर वालों ने ऐसे इतिहास की संरचना की, जिसका स्मरण करने मात्र से मन उल्लास से भर जाता है। लक्ष्मीबाई जैसी लड़कियाँ शत्रुओं के दाँत खट्टे करके अपने पौरुष का परिचय दे सकीं। भामाशाह की थोड़ी सी पूँजी ने राणा प्रताप की हारती बाजी को जिता दिया। संसार ऐसी प्रतिभाओं की कथा-गाथाओं से भरा पड़ा है।

साहित्य कला, लगन, संगठन, सुनियोजन जैसे कितने ही गुण मनुष्य में ऐसे हैं, जिनका आंशिक उपयोग हो सके, तो वैयक्तिक और सामूहिक क्षेत्रों में आश्चर्यजनक चमत्कार सामने आ सकते हैं। ऐसे लोगों में वे साधन-सम्पन्न भी आते हैं, जिन्हें साधारण लोगों की तुलना में कहीं अधिक उपलब्धियाँ प्राप्त हैं। पैसे वाले ऐसे व्यापक व्यवसाय खड़े कर देते हैं, जिसके उत्पादन से अनेक बहुमुखी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। वकील, इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक आदि बुद्धिजीवी अपने कला-कौशल के आधार पर इतनी बड़ी सफलताएँ अर्जित करते हैं, जितनी की साधारण लोगों से तो कल्पना करते भी नहीं बनतीं। गायक, वादक, अभिनेता स्तर के कलाकार इतना यश और पैसा कमा लेते हैं, कि साधारण लोगों की दृष्टि में वह कोई वरदान जैसा प्रतीत होता है। कितने ही ऐसे विश्वासपात्र प्रतिभावान होते हैं कि वे जिस काम को भी हाथ में लेते हैं, उसे सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचा देते हैं।

देखा गया है कि ऐसे विभूतिवान भी मात्र लिप्सा, लालसा, तृष्णा, वासना, अहंता और संकीर्ण स्वार्थपरता जैसे हेय प्रयोजनों में ही अपनी उन उपलब्धियों को खपा देते हैं, जिनका उपयोग यदि लोक कल्याण के लिए हो सका होता , तो उतने पौरुष से निर्माण की दिशा में इतना कुछ बन पड़ा होता, जिनकी कीर्ति गाथा चिरकाल तक गाई जाती और उनका अनुकरण करके कितने ही लोग अनुकरणीय आदर्श उपस्थित कर सके होते ।

भगवान ने जिनको ऐसी सद्बुद्धि, सत्प्रेरणा और सत्साहसिकता प्रदान की है, उनने अपने साधनों को विलासिता, अहंता और मोह जन्य वासना में न लगा कर, ऐसे महान् प्रयोजनों में लगाया है, कि उनसे प्रेरणा पाकर अनेक लोग उसी मार्ग पर चल पड़े। तब उस समुदाय का सम्मिलित क्रिया-कलाप इतना बड़ा होता है, जिनकी कल्पना मात्र से लोगों का हृदय हुलसने लगता है और देखा-देखी वे भी ऐसा कुछ कर बैठने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं जिससे असंख्यों का हित-साधन हो। जब सामान्य साधनों और सामान्य परिस्थितियों के लोगों ने इतने भर से बड़े कार्य कर दिखाये, तो जिनके पास साधन है, शक्ति है, संगठन है, मनोबल है, सूझबूझ है, वे कुछ अतिरिक्त उच्च स्तर के काम न कर सकें, ऐसी कोई बात नहीं।

मनुष्य की कृपणता, कायरता, संकीर्णता ही ऐसा अभिशाप है, जो उसे समर्थ रहते हुए भी कुछ करने नहीं देती, कठिनाइयों के जैसे-तैसे बहाने गढ़ लेती है। इसी को धिक्कारते हुए गीताकार ने कहा था कि "क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वं तिष्ठ परं तपः"। हृदय की इस क्षुद्रता, कृपणता से कोई अपना पीछा छुड़ा सके, तो आदर्शवादी उदारता उसके ऐसे पुष्ट आधार बना देती है, जिसके बलबूते वह महामानवों की पंक्ति में बैठ सके और अपने साथ अन्यों को भी निहाल कर सके।

भावनात्मक परिवर्तन का एक मात्र प्रयोग साधन

मनुष्य शरीर में प्रसुप्त देवत्व का जागरण करना ही आज की सबसे बड़ी ईश्वर पूजा है । युग धर्म इसी के लिये प्रबुद्ध आत्माओं का आह्वान कर रहा है । नवयुग निर्माण की आधारशिला यही है । जिस असुरता की दुष्प्रवृत्तियों ने संसार को दुःख दारिद्र्य भरा नरक बनाया, जिस अविवेक ने परमात्मा के पुत्र आत्मा को निकृष्टतम कीड़े से गये गुजरे स्तर पर ला पटका, उसका उन्मूलन देवत्व के अभिवर्धन से ही होना है । अन्धकार को मिटाने के लिये प्रकाश उत्पन्न करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं । मनुष्य की आन्तरिक संकीर्णता एवं अविवेक ग्रस्त स्थिति का अन्त किये बिना उज्ज्वल भविष्य की आशा अन्य किसी प्रकार नहीं की जा सकती । धन वैभव बढ़ने से नहीं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्भाव बढ़ने से मानवीय गौरव का पुनरुत्थान सम्भव होगा ।

इस महाम् कार्य को भौतिक स्तर पर किये गये उथले क्रिया-कलापों द्वारा सम्पन्न नहीं किया जा सकता । इनके लिये अधिक गहराई में उतरना होगा और उस स्तर पर प्रयत्न करना होगा जहाँ से मानवीय अन्त:करण को स्पर्श एवं प्रभावित किया जा सके । अध्यात्म ही वह आधार हो सकता है । मनुष्य की प्रकृति को बदलने और गतिविधियों को उलटने का कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन तभी होगा जब उसका अन्त: करण बदले और अन्त:करण का परिवर्तन मात्र भौतिक साधनों एवं प्रयत्नों से सम्पन्न नहीं हो सकता । रक्तवाहिनी नाड़ियों में कोई औषधि प्रवेश करने के लिये इन्जेक्शन की सुई ही उपयुक्त होती है, इसी प्रकार मानवीय अन्त:करण को प्रभावित करने की प्रक्रिया आध्यात्मिक भावनाओं के माध्यम से ही सम्पन्न की जाती है ।

यों चाहते सभी हैं कि समाज में फैली हुई बुराइयाँ दूर हों और व्यक्ति अधिक ईमानदार बने । इसके लिये वही दो मोटे उपकरण सूझ पड़ते हैं, जो आमतौर से अन्य जानकारियाँ बढ़ाने के लिये काम में लाये जाते हैं—लेखनी और वाणी । इन्हीं दो साधनों से स्कूलों में बच्चों को हिसाब, भूगोल, इतिहास आदि की शिक्षा दी जाती है । कृषि, शिल्प, स्वास्थ्य आदि विषय की जानकारी भी आमतौर से इन्हीं माध्यमों से मिलती है । नेता लोग कोई आन्दोलन भी इन्हीं साधनों से चलाते हैं। प्रचार आज का एक शक्तिशाली साधन माना जाता है । जनसाधारण को अभीष्ट दिशा में मोड़ने के लिये विज्ञापनबाज व्यापारियों से लेकर धर्मोपदेशक और राज-नेता तक इन्हीं दो साधनों को काम में लाते हैं ।

पिछले बहुत दिनों से मानवीय प्रवृत्ति को पतन से उत्थान की ओर मोड़ने के लिये कुछ प्रयत्न छुट-पुट आन्दोलन के रूप में चलते रहे हैं सो उनका थोड़ा बहुत प्रभाव भी देखा है, पर वह था उतना ही नगण्य जिसके आधार पर कोई बड़ी आशा नहीं की जा सकती । कारण यही रहा है कि प्रयत्नकर्त्ता यह भूलते रहे हैं कि जिस बात की जानकारी न हो उसे लेखनी, वाणी से जताया जा सकता है पर जिसे जानते तो हैं, पर मानते नहीं, उसे मनवाने के लिये कुछ अधिक ऊँचे एवं अधिक शक्तिशाली माध्यम अपनाने की आवश्यकता है । सर्वसाधारण को दया, धर्म, सदाचार, संयम, भक्ति आदि का महत्त्व माहात्म्य मालूम न हो या वे उसे अस्वीकार करते हों ऐसी बात नहीं । वे दूसरों को उपदेश भी इन बातों का देते हैं, पर कठिनाई यह है कि स्वयं उस पर चल नहीं पाते, यह असमर्थता और दुर्बलता उनके शरीर मन आदि की नहीं वरन् अन्त:करण की है, इसलिये उपचार भी उसी दुर्बल अंग का किया जाना चाहिये । गुर्दे की बीमारी पैरों में तेल लगाने से दूर नहीं हो सकती । जो व्यथित अंग है उस तक उपचार का प्रभाव पहुँचे तब कुछ काम चले । लेखनी और वाणी जो घिसे-पिटे शब्दों में पेशेवर लोगों द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं, मस्तिष्क तक एक छोटी लहर पहुँचाकर वायुमण्डल में तिरोहित हो जाती है । देखा जाता है कि घिसे-पिटे प्रचारात्मक प्रयत्न मानवीय अन्त:करण को वासना, तृष्णा के आकर्षणों से विरत कर पवित्रता और परमार्थ की दिव्य ज्योति उत्पन्न करने में प्राय: असफल ही रहते हैं। हममें से अनेक ने सद्भावनापूर्वक कितने ही सुधारात्मक प्रयत्न आरम्भ किये हैं पर उनका स्तर उथला था, साधन हल्के थे, इसलिये थोड़ी-सी छटा दिखा करके वे और उनका प्रतिफल भी अन्तर्धान होता रहा । समस्त मानव समाज में एक व्यापक और सशक्त हलचल उत्पन्न कर सकने की, पतन के प्रचण्ड प्रवाह को पलट सकने की क्षमता केवल उच्चस्तरीय आध्यात्मिक प्रयोगों से ही होती है और उनका जब कभी भी ठीक तरह प्रयोग हुआ है, अभीष्ट परिणाम भी सामने आया है । इस स्तर के प्रयोग कभी असफल नहीं हो सकते ।

भारत के वर्चस्व का इतिहास उसके आत्म-बल की सफलता का उद्घोष है । चिर अतीत में हमारे महान् ऋषि ही इस देश की महान् परम्पराओं के निर्माता रहे हैं । उनके पास भौतिक साधन कम थे पर आत्मबल इतना प्रचण्ड था कि वे जनसमूह को अपने प्रवाह में एक निर्धारित समय में उसी प्रकार बहा ले चलते थे, जिस प्रकार प्रबल वेग से बहती हुई नदियाँ तिनकों को अपने साथ बहते चलने के लिये विवश कर देती हैं । कीचड़ में फँसे हाथी को सहस्त्रों मेंढकों की चेष्टा भी उबार नहीं पाती, उसे समर्थ हाथी ही युक्तिपूर्वक मजबूत रस्सों की सहायता से बाहर निकाल पाते हैं । आन्तरिक दुर्बलता का अभाव आत्म-बल सम्पन्न लोगों के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है । ऋषियों ने यही किया । चूँकि वे स्वयं प्रकाशवान थे, इसलिये उन्होंने अपने समस्त क्षेत्र को प्रकाशित कर दिया । कहना न होगा कि इस देश के निवासी जिन दिनों आध्यात्मिक मान्यताओं और भावनाओं से प्रभावित थे, उन दिनों इस धरती पर स्वर्ग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिखरा पड़ा था, हर मनुष्य के भीतर देवत्व झाँकता था और उस लाभ की लोभ लालसा से समस्त विश्व के लोग भारतवासियों का मार्गदर्शन, सहयोग एवं प्रकाश पाने के लिये लालायित रहते थे । इन्हीं विशेषताओं के कारण, भारतीय संस्कृति समस्त विश्व का सर्वोत्तम आकर्षण बनी हुई थी ।

प्रकाश स्तम्भों के बुझ जाने पर अन्धकार फैल जाना स्वाभाविक है । जैसे-जैसे उच्च आत्म-बल सम्पन्न हस्तियाँ घटती गयीं वैसे-वैसे जन मानस की उत्कृष्टता भी गिरती गयी । इस गिरावट को ओछे लोग प्रचारात्मक साधनों से रोक नहीं सकते थे और वे रोक भी नहीं सके । हम अपने लम्बे इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो उच्च आत्म-बल सम्पन्न आत्माओं के अवतरण अवसाद के साथ-साथ जन-मानस का उत्थान पतन भी जुड़ा हुआ देखते हैं । जिन दिनों महापुरुष जन्मे उन दिनों कोई भी युग बीत रहा हो सतयुग का वातावरण उत्पन्न हुआ है । भगवान् राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, गाँधी आदि की विचारधारा से कोटि-कोटि लोग प्रभावित हुए । समर्थ गुरु गोविन्दसिंह आदि की प्रेरणा से लोगों ने एक-से एक बढ़े-चढ़े त्याग, बलिदान प्रस्तुत करने में प्रतिस्पर्द्धा उपस्थित कर दी । अभी कल परसों गाँधी की आँधी में लाखों लोगों ने जिस आदर्शवादिता का परिचय दिया उससे यह मान्यता सार्थक सिद्ध हुई है कि उच्चस्तरीय आत्म-बल सम्पन्न आत्मायें ही जन-मानस की दिशा बदल देने में समर्थ हो सकती हैं। मामूली प्रचार साधन उपयोगी तो हैं पर उतने भर से इस दिशा में कोई प्रभावी परिणाम नहीं हो सकता ।

भावी नव-निर्माण में अध्यात्म को ही प्रमुख भूमिका सम्पन्न करनी पड़ेगी । प्रभात काल की शुभ सूचना लाने वाली ऊषा के साथ-साथ और प्रयास आरम्भ भी हो गये हैं । श्रीरामकृष्ण परमहंस और योगी अरविन्द की तपश्चर्या का यदि कोई रहस्योद्घाटन कर सके तो उसे लगेगा कि पिछली शताब्दी की सारी राजनैतिक और सुधारात्मक चेतनाओं का सूत्र संचालन इन दो दिव्य आत्माओं ने किया, कठपुतली कितनी ही पर्दे पर आती जाती रहीं और उसके विभिन्न अभिनय लोगों में उत्साह उत्पन्न करते रहे पर उनके सूत्र इन आत्म-बल के धनी महामानवों द्वारा ही संचालित होते रहे । भारत का हजार वर्ष की गुलामी से मुक्त होना और कतिपय सुधारात्मक चेतनाओं का उद्भव अपने सामने इस शताब्दी की दो महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं । इनका प्रत्यक्ष श्रेय किनको मिला किनको नहीं मिला, इस विवाद में पड़ने से बचकर भी हमें यह जान ही लेना चाहिये कि इस महान् जागरण के पीछे कुछ विशिष्ट अविदित रहस्यमय आध्यात्मिक शक्तियाँ भी काम कर रही थीं । आगे जो महान कार्य फैला पड़ा है, नये युग का जो नया निर्माण होने वाला है उसमें भी अध्यात्म की, अध्यात्म-बल सम्पन्न उच्च स्तरीय महामानवों की प्रधान भूमिका होगी । प्रत्यक्ष श्रेय भले ही किन्हीं को इतिहासकार देते रहें ।

विश्व का भावी नवनिर्माण मानवीय उत्कृष्टता के अभिवर्धन पर अवलम्बित होगा । इसके लिये प्रेरक केन्द्र कोई भी क्यों न हो, उसे सहस्रों सहयोगियों की आवश्यकता पड़ेगी । वे भले ही ऊँची योग्यताओं के न हों पर आत्मिक उत्कृष्टता की विशेषता तो अनिवार्य रूप से होनी ही चाहिये । इन दिनों इसी उत्पादन को सबसे बड़ा कार्य माना जाना चाहिये ।

पूर्व जन्मों की अनुपम आत्मिक सम्पत्ति जिनके पास संग्रहीत है ऐसी कितनी ही आत्मायें इस समय मौजूद हैं । पिछले कुछ समय से अनुपयुक्त परिस्थितियों में पड़े रहने से इन फौलादी तलवारों पर जंग लग गयी । इस जंग को छुड़ाने की प्रक्रिया युग निर्माण योजना के प्रस्तुत कार्यक्रमों के अन्तर्गत चल रही है । आशा करनी चाहिये कि अगले तीन वर्षों में यह प्रयोजन पूर्ण कर लिया जायेगा । इन दिनों जो व्यक्ति बिल्कुल साधारण स्तर के दिखाई पड़ते हैं और जिनसे किसी बड़े काम की सम्भावना नहीं मानी जा सकती, ऐसे कितने ही व्यक्ति असाधारण प्रतिभा और क्षमता लेकर कार्यक्षेत्र में उतरेंगे और नव-निर्माण का महान् कार्य जो आज एक स्वप्न मात्र दिखाई पड़ता है, कल मूर्तिमान सचाई के रूप में प्रस्तुत करते परिलक्षित होंगे ।

मनुष्य के आवरण के भीतर प्रसुप्त स्थिति में एक प्रबल देवता विद्यमान है । इसे जगाया जा सके तो फिर असम्भव जैसी कोई बात शेष नहीं रहेगी । देवत्व के जागरण का हमारा वर्तमान अभियान संसार का भावनात्मक नव-निर्माण करने में सफल होकर रहेगा, क्योंकि उसका आधार उथले ओछे प्रचार उपकरण नहीं वरन् आत्म-शक्ति के वही प्रयोग होंगे जो समय-समय पर असंख्य बार सफल होते रहे हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवत्व के जागरण की सौम्य साधना पद्धति

जड़ और चेतन तत्त्वों के सम्मिश्रण से बने मनुष्य की स्थूल शारीरिक व्यवस्था तो एक सीमा तक लोगों ने जानी है और आहार-विहार की अनुकूलता उपलब्ध कर स्वस्थ एवं सुन्दर बनने का यथासम्भव प्रयत्न किया है, किन्तु चेतन तत्त्व की, सूक्ष्म और कारण शरीर की व्यवस्था कैसे रखी जाय इसे कोई विरले ही जानते हैं । इस ज्ञान के अभाव में मानव जीवन के द्वारा उपलब्ध हो सकने वाले महत्त्वपूर्ण लाभों से हम प्राय: वंचित ही रह जाते हैं ।

मानुषी अस्तित्त्व को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है । (१) स्थूल (२) सूक्ष्म (३) कारण । अध्यात्मशास्त्र में मनुष्य के यह तीन शरीर बताये गये हैं । जिस प्रकार केले के तने को चीरने पर उसमें एक के भीतर एक पर्त निकलती हैं, प्याज के छिलके उतारते चलने पर उसके भीतर और छिलके निकलते हैं उसी प्रकार आँखों से दीखने वाले रक्त-माँस से बने स्थूल शरीर के भीतर एक कारण शरीर का अस्तित्त्व विद्यमान है । जिस प्रकार हम शरीर के ऊपर बनियान, उसके ऊपर जाकिट पहनते हैं, उसी प्रकार आत्मा ने भी अपने ऊपर उपर्युक्त तीन आवरण धारण किये हुए हैं ।

स्थूल शरीर वह है जिससे हम खाने, सोने, चलने, बोलने आदि की क्रियायें सम्पन्न करते हैं । जो माँ के पेट से आरम्भ होता है और श्मशान में समाप्त हो जाता है । सांसारिक जीवन इसी से चलता है । रोटी कमाने, शुभ, अशुभ कर्म करने, इन्द्रिय सुख भोगने आदि प्रयोजन इसी शरीर से पूरे होते हैं । इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारियाँ प्राप्त भी कर ली गयी हैं ।

इसके भीतर सूक्ष्म शरीर है । मन, बुद्धि चित्त, अहंकार इन चार वर्गों में विभाजित अन्त:करण मनुष्य का एक प्रकार से सूक्ष्म शरीर ही है । विचारणा, प्रतिभा, स्फूर्ति, आकांक्षा, अभिरुचि, क्रीड़ा जैसी मानसिक गतिविधियाँ इसी शरीर में सन्निहित हैं । यों यह आवरण स्थूल शरीर में दूध में घुले हुए घी की तरह समाविष्ट है, फिर भी इसका प्रधान स्थल मस्तिष्क माना गया है ।

तीसरा कारण शरीर आत्मा के अति समीप होने के कारण उच्च स्तरीय दिव्य भावनाओं का आधार है। उसमें केवल भावनायें संचारित होती हैं । जिनका आन्तरिक अध:पतन अत्यधिक हो चुका है, उनको छोड़कर शेष सभी के कारण शरीर में दया, प्रेम, करुणा, सेवा, संवेदना, धर्म, कर्त्तव्य, संयम और उच्च भाव उठते रहते हैं । जिनने दुष्टता में परिपक्वता प्राप्त कर ली है, उन्हीं का कारण शरीर नर-पिशाचों जैसी—'कनपटी मार बाबा' जैसी कुचेष्टायें करने पर सहमत हो जाता है ।

तीन शरीरों का संक्षिप्त परिचय यहाँ इसलिये दिया गया है कि मानव जीवन में देवत्व की सर्वांगीण प्रतिष्ठापना का वैज्ञानिक स्वरूप समझने में हमें सुविधा हो । युग परिवर्तन की नव-निर्माण प्रक्रिया उन व्यक्तियों के द्वारा सम्पन्न होगी, जिनमें देवत्व का प्रकाश समुचित मात्रा में प्रखर हो चला है । लेखक, वक्ता, नेता, अभिनेता, कलाकार, आन्दोलनकारी, प्रतिभावान् व्यक्ति अपने साधनों के आधार पर कुछ समय के लिये चमत्कार जैसा जादू खड़ा कर सकते हैं, पर उसमें स्थिरता तनिक भी न होगी । बालू की दीवार की तरह उनकी कृतियाँ देखते-देखते धूल-धूसरित हो जाती हैं और जिसका आज बहुत जयघोष था, कल उसके अस्तित्त्व का पता लगाना भी कठिन हो जाता है। स्थिरता तो सचाई और आत्मबल की गहराई में सन्निहित है । युग निर्माण जैसे महान कार्य ठोस आधार की शिला पर ही प्रतिष्ठापित हो सकते हैं। उनका भारी उत्तरदायित्त्व सहन करने की क्षमता केवल देवत्व सम्पन्न महामानवों में ही मिलेगी । अतएव नवनिर्माण के कर्णधारों, सूत्र संचालकों, सेनानायकों एवं दिग्पालों का देवत्व के प्रकाश से प्रकाशवान बनना या बनाया जाना आवश्यक है ।

स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों की चर्चा इसलिये करनी पड़ी कि इन तीनों को समान रूप से देवत्व सम्पन्न बनाने से ही समग्र देवत्व की आवश्यकता पूरी होती है । इन तीनों को ठीक तरह साधने-सँभालने का नाम 'साधना' है । साधना से ही मनुष्य में देवत्व का उदय होता है । यहाँ हमें यह भी जान लेना चाहिये कि उपासना प्राथमिक शिक्षा और साधना उच्च स्तरीय प्रशिक्षण है । भजन, पूजन, जप, ध्यान, व्रत, उपवास, कथा, कीर्तन आदि कर्मकाण्डपरक उपासना से मन की प्रवृत्ति माया से ब्रह्म की ओर मुड़ जाती है । ईश्वर के स्मरण और सान्निध्य की उपयोगिता प्रतीत होती है । आत्म-कल्याण का मार्ग मिलता है । इससे आगे का प्रयोजन साधना के द्वारा पूर्ण होता है । मनोवृत्तियों को वासना और तृष्णा से विरत कर संयम और परमार्थ में प्रवृत्त करना साधना का उद्देश्य है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस मार्ग पर जो जितना आगे बढ़ जाता है उसकी उतनी ही आन्तरिक पवित्रता निखरती है और ईश्वरीय प्रकाश का दिव्य दर्शन होता है ।

मानवीय व्यक्तित्त्व में देवत्व का अधिकाधिक समावेश करने के लिये हर श्रेयार्थी को जीवन साधना का अवलम्बन लेना पड़ता है । साधना के दो वर्ग हैं—(१) विशिष्ट लोगों की, विशिष्ट प्रयोजन के लिये विनिर्मित विशिष्ट प्रक्रिया, (२) सर्व साधारण के लिये सहज सुगम सौम्य पद्धति । विशिष्ट प्रक्रिया योगी, यती, एकान्तवासी, सांसारिक उत्तरदायित्त्वों से निवृत्त असाधारण मनोबल सम्पन्न, कठोर तपश्चर्या के लिये समुद्यत लोगों के लिये है । हठ योग, षट चक्र, वेधन, कुण्डलिनी जागरण, लययोग, ऋतु योग, तन्त्र योग, प्राण योग आदि साधनायें इसी प्रकार की होती हैं । इनसे ऐसी चमत्कारी ऋद्धि सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं जो किन्हीं विशेष अवसरों पर प्रयुक्त की जा सकें । सर्कस के अभिनेता जिस प्रकार अपने शारीरिक कला-कौशलों से दर्शकों को चमत्कृत कर देते हैं वैसे ही इन विशिष्ट साधन प्रक्रियाओं द्वारा ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं जो लोगों को अद्भुत चमत्कारी, आकर्षक एवं कौतूहल वर्धक प्रतीत हों । जिनके पास ऐसे चमत्कार होते हैं, उनसे लाभ पाने के लिये अनेक मनुष्य पीछे फिरते रहते हैं । सिद्ध पुरुष अपने अहंकार की पूर्ति कर लेते हैं और तत्कालीन कष्ट निवारण कर थोड़ा सन्तोष भी पा लेते हैं, किन्तु यह मार्ग कठिन बहुत है । भूल होने पर जोखिम भी बहुत है । इस एक ही काम का होकर मनुष्य रह जाता है, इसलिये इस मार्ग पर कोई विरले ही चलते हैं। जो चमत्कारों के लोभ में कदम तो बढ़ा देते हैं पर साधना की कठिनाई और मार्ग की लम्बाई को देखकर अक्सर निराश हो बैठते हैं, उनमें से कितने ही असफलता की झेंप मिटाने की धूर्तता के आधार पर लोगों को चमत्कृत करने का निकृष्ट धन्धा अपना लेते हैं और अपना तथा दूसरों का पतन करते हैं ।

उपर्युक्त मार्ग कुछ विशिष्ट परिस्थितियों वाले दुस्साहसी लोगों के लिये ही है । सर्व साधारण के लिये जो राजमार्ग प्रशस्त है उसमें आत्म-कल्याण, ईश्वर प्राप्ति और लोकमंगल की सभी सम्भावनायें विद्यमान हैं । जादूगरी जैसा चमत्कार भले ही न हो पर नर को नारायण की स्थिति तक पहुँचा देने का वास्तविक चमत्कार उसमें परिपूर्ण मात्रा में विद्यमान है । आजीविका उपार्जन तथा सामान्य गृहस्थ जीवन यापन करते हुए इस साधना क्रम को अपनाया जा सकता है और बिना किसी कठिनाई के श्रेय पथ पर गतिशील रहा जा सकता है । इस सौम्य पद्धति को अपनाने के लिये ही शास्त्रकारों और ऋषियों ने सर्वसाधारण को प्रोत्साहित किया है ।

देवत्व के व्यापक जागरण के लिये यह सौम्य पद्धति ही काम में लाई जाती है । प्रस्तुत साधना के अन्तर्गत तीन प्रयोग हैं—(१) कर्मयोग, (२) ज्ञान योग और (३) भक्ति योग । इन्हीं के द्वारा तीनों शरीर का संस्कार, परिष्कार, परिमार्जन, अभिवर्धन सम्भव होता है । स्थूल शरीर को ज्ञानयोग द्वारा और कारण शरीर को भक्तियोग द्वारा परिष्कृत किया जाता है । गीता में इसी योग क्रिया का वर्णन है । वेदों का प्रधान विषय कर्म, ज्ञान एवं उपासना ही है । धर्मशास्त्रों का विशालकाय कलेवर इस त्रिविध तत्त्व ज्ञान की विवेचना में ही खड़ा किया गया है । हमारी विचार पद्धति, कार्य पद्धति और भाव स्थिति में यदि इन आस्थाओं का समुचित समावेश हो सके तो निस्संदेह हम नर-पशु और नर-पिशाच की नारकीय स्थिति से छुटकारा पाकर इसी शरीर से इसी जीवन में अपने अन्दर देवत्व का उद्भव हुआ देख सकते हैं ।

गायत्री परिवार की संस्कारवान आत्माओं पर पिछले दिनों जिस मल आवरण विक्षेप की कलुष परतें जमा हो गयी हैं, उनका परिमार्जन आवश्यक है, जिससे उनका देवत्व जगे और नवनिर्माण के महान उत्तरदायित्त्व को वहन कर सकने की क्षमता उत्पन्न हो। इस प्रयोजन के लिये उन्हें कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग की एक सुसंतुलित क्रिया-पद्धति का प्रशिक्षण दिया जा रहा है ।

स्थूल शरीर का परिष्कार—कर्मयोग से

स्थूल शरीर कुकर्म करने से असुरता के गर्त में गिरता है और सत्कर्म करने से उसे स्वर्गीय सुख-शान्ति का अनुभव होता है । अस्तु, कुकर्मों से विरत कर सत्कर्मों के लिये प्रेरणा देना और पथ प्रशस्त करने के लिये कर्मयोग की सौम्य साधना पद्धति आप्त पुरुषों ने विनिर्मित की है ।

कर्म यदि ठीक तरह से किया जाय तो एक प्रकार से वह ईश्वर की पूजा का उत्कृष्ट उपकरण है, पर यदि उसमें स्वार्थपरता, उपेक्षा, अहंकृति, विकृति जैसे निकृष्ट तत्त्वों का समावेश हो तो फिर वही कुकर्म बन जाता है । मोटी दृष्टि से भरे-बुरे कर्मों का वर्गीकरण किया जाता है जैसे चोरी, झूठ, छल, व्यभिचार, उत्पीड़न, अनाचार, उत्तरदायित्त्व की अवहेलना आदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाप और दया, दान, सत्य, सदाचार, सेवा, संयम आदि पुण्य कहे जाते हैं । पर इनकी वास्तविकता जाननी हो तो कर्त्ता की भावना का पता लगाना होगा । वस्तुतः जो कर्म जिस भावना से किया जाता है उसके अनुरूप उसका तात्त्विक स्वरूप बनता है और उसी आधार पर परिणाम उत्पन्न होता है । साधुता का दम्भ बनाये अनेक व्यक्ति भीतर-भीतर दुष्टता करते रहते हैं । नेता, धर्मोपदेशक, सन्त-महन्त आदि में से कितने ही बाहर से ऐसी कार्य पद्धति अपनाये होते हैं जिससे उनके धर्मात्मा होने का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है, गहराई में देखने पर उनमें से कितनों ही के भीतर धूर्तता भरी पायी जाती है । ऐसी दशा में उनके बाहर से उत्तम दीखने पर भी उनके निज के लिये तथा दूसरों के लिये अन्ततः दुष्परिणाम ही उत्पन्न करेंगे । इसी प्रकार कई बुरे दीखने वाले और पाप प्रतीत होने वाले कार्य भी यदि निस्वार्थ भावना से, लोकमंगल की दृष्टि से किये गये हैं तो वे तत्त्वतः पुण्य ही कहे जायेंगे । जज का फाँसी का हुक्म सुनाना, जल्लाद का फाँसी देना, बाहर से देखने में हिंसा जैसे हेय प्रतीत होते हैं पर वस्तुतः उनके पीछे समाज व्यवस्था और न्याय रक्षा की दृष्टि होने से वे दोनों ही न केवल निर्दोष हैं वरन् कठोर कर्त्तव्य साहसपूर्वक करने की दृष्टि से पुण्यात्मा और प्रशंसनीय भी हैं ।

दैनिक जीवन में आजीविका उपार्जन, परिवार पोषण जैसे उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिये जो साधारण काम-काज हमें करने पड़ते हैं, उनमें कर्तव्य धर्म का लोक-मंगल का दृष्टिकोण समन्वित रहे तो वे ही मामूली दीखने वाले काम-काज पुण्य परमार्थ बन सकते हैं और साधारण जीवन क्रम सहयोग की साधना का आध्यात्मिक प्रयोग सिद्ध हो सकता है । बन्धन, भार और पाप तो वे कार्य बनते हैं, जिनमें स्वार्थ का दृष्टिकोण और अनीति का समन्वय होने पर ही मनुष्य अनीति बरतने लगता है और तृष्णा, लालसा एवं ममता अहंता की लालसायें ही उसे अनुचित कार्य करने की प्रेरणा देती हैं । यदि अपना दृष्टिकोण साफ हो, जो भी करना है कर्तव्य धर्म पालन करने के लिये, औचित्य की रक्षा के लिये मानवीय मर्यादाओं के अनुरूप करना है, यह मान्यता रखकर जो कार्य किये जायेंगे वे प्रायः पुण्य ही होंगे । कर्मयोग का दृष्टिकोण अनुचित कुकर्मों की सम्भावना को समाप्त कर देता है। जो पाप नहीं वह पुण्य ही तो होगा । निरन्तर पुण्य करते रहने वाले की आन्तरिक प्रगति अन्ततः देवत्व की ओर ही होगी ।

सामान्य काम-काज में उत्कृष्टता का दृष्टिकोण समाविष्ट रखना यही कर्मयोग है । कर्मयोग की साधना का अभ्यास करने के लिये परिजनों को एक मन्त्र दिया गया है—

"हर दिन नया जन्म-हर रात नई मौत ।"

प्रातःकाल आँख खुलते ही बिस्तर छोड़ने से पूर्व चारपाई पर पड़े-पड़े ही इस मन्त्र को मन ही मन दुहराना चाहिये और भावना करनी चाहिये कि आज का दिन हमें एक नये जन्म के रूप में मिला है । वस्तुतः निद्रा और जागरण, मृत्यु और जन्म का ही एक छोटा नमूना है । उसमें असत्य भी कुछ नहीं । सचमुच की मृत्यु भी एक लम्बी रात की गहरी नींद मात्र ही है । हर दिन को एक जन्म कहा जाय तो ऊपर से ही हँसी की बात लगती है, वस्तुतः वह एक स्थिर सच्चाई है । अतएव इस मान्यता में अत्युक्ति अथवा निराधार कल्पना जैसी भी कोई बात नहीं है ।

आज का नया जन्म अपने लिये एक अनमोल अवसर है । कहते हैं कि चौरासी लाख योनियों के बाद एक बार मनुष्य शरीर मिलता है, उसका सदुपयोग कर लेना ही शास्त्रकारों ने सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता मानी है । अस्तु हमें प्रातःकाल चारपाई पर पड़े-पड़े ही विचारना चाहिये कि आज का दिन अनमोल अवसर है उसे अधिक से अधिक उत्कृष्टता के साथ व्यतीत करना चाहिये । कोई भूल, उपेक्षा, अनीति, दुर्बुद्धि उसमें न रहे । आदर्शवादिता का, सद्भावना और सदाशयता का उसमें अधिकाधिक समावेश रहे, ऐसा दिन भर का कार्यक्रम बनाकर तैयार किया जाय ।

आमतौर से आलस्य, ढोल-पोल, शिथिलता में हमारा अधिक से अधिक समय बर्बाद होता है । तत्परता, स्फूर्ति, परिश्रम और दिलचस्पी के साथ करने पर जो कार्य एक घण्टे में हो सकता है उसी को अधिकतर लोग दो-दो, चार-चार घण्टे में पूरा करते हैं । आलस्य, अधूरामन, मंदगति, रुक-रुककर शिथिलतापूर्वक काम करने और ऐसे-वैसे ज्यों-त्यों बेकार बहुत-सा समय गुजार देने की आदत बहुतों की होती है और उनका आधा जीवन प्रायः इस आलस्य प्रमाद में बर्बाद हो जाता है । यह बुरी आदत संभव है थोड़ी बहुत मात्रा में अपने भीतर भी हो, उसे बारीकी से तलाश करना चाहिये और निश्चय करना चाहिये कि आज हर काम पूरी तत्परता और फौजी उत्साह के साथ करेंगे । समय ही जीवन है । वही ईश्वर प्रदत्त हमारी एकमात्र सम्पत्ति है । समय का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सदुपयोग करके ही हम अभीष्ट आकांक्षा पूर्ण करने और मंगलमयी उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकने में सफल हो सकते हैं । समय की बर्बादी एक प्रकार की मन्द आत्महत्या है । संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनमें से प्रत्येक ने अपने समय का एक-एक क्षण ठीक तरह उपयोग करके ही अभीष्ट सफलतायें प्राप्त की हैं इसलिये आज समय के सदुपयोग की, एक-एक पल भी बर्बाद न होने की, आलस्य शिथिलता एवं अन्यमनस्कता से लड़ने की पूरी तैयारी करनी चाहिये और दिन भर के समय विभाजन की दिनचर्या ऐसी बनानी चाहिये जिसमें वक्त की बर्बादी की तनिक भी गुञ्जायश न रहे। जो आवश्यक काम पिछले कई दिनों से टलते आ रहे हों, जिनकी उपयोगिता अधिक हो, उन सबको सुविधा हो तो आज ही करने के लिये नियत कर लेना चाहिये । दिनचर्या ऐसी बने जो सुविधाजनक भी हो और सुसंतुलित भी । अति उत्साह में ऐसा कार्यक्रम न बना लिया जाय जिसको पूरा कर सकना ही कठिन पड़ जाय ।

शारीरिक कार्यक्रमों के साथ-साथ मानसिक क्रिया पद्धति भी निर्धारित करनी चाहिये । किस कार्य को किस भावना के साथ करना है, इसकी रूपरेखा मस्तिष्क में पहले से ही निश्चित रहनी चाहिये । समय-समय पर बड़े ओछे संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण हेय विचार मन में उठते रहते हैं । सोचना चाहिये कि आज किस अवसर पर किस प्रकार का अनुपयुक्त विचार उठने की सम्भावना है, उस अवसर के लिये विरोधी विचारों के शस्त्र पहले से ही तैयार कर लिये जायें ।

आरम्भ में बुरे विचारों को उठने से रोक सकना कठिन है । हाँ जब वे उठें तो उन्हें, ठीक विरोधी विचारधारा पैदा करके काटा जा सकता है । लोहे से लोहा कटता है । विचारों से विचार भी काटे जा सकते हैं । कामुकता के अश्लील विचार यदि किसी नारी के प्रति उठ रहे हैं तो उसे अपनी बेटी, बहिन, भानजी आदि के रिश्ते में सोचने की, सफेद चमड़ी के भीतर मल-मूत्र, रक्त-मांस की घृणित दुर्गंध भरी होने की कल्पना करके उनका शमन किया जा सकता है । आवेश, उत्तेजना, क्रोध, उतावली की बुरी आदतें कइयों की होती हैं, जब वैसे अवसर आयें तब गम्भीरता, धैर्य, दूरदर्शिता, सज्जनता, शान्ति जैसे विचार अपने में उस समय तत्काल उठाने की तैयारी करनी चाहिये ।

प्रातःकाल चारपाई पर पड़े-पड़े दिन भर के समय विभाजन तथा विचार संघर्ष की योजना बनानी चाहिये और ऐसी दिनचर्या तैयार करनी चाहिये जिसमें शरीर से ठीक तरह कर्त्तव्य पालन और मन में ठीक तरह सद्भाव चिन्तन होता रहे । इस कार्य के लिये पन्द्रह मिनट से लेकर आधा घण्टे का समय पर्याप्त होना चाहिये । इतने में खुमारी भी दूर हो जाती है और बिस्तर छोड़ने के लिये आवश्यक स्फूर्ति भी आ जाती है । उस निर्धारित दिनचर्या को कागज पर नोट कर लेना चाहिये और समय-समय पर जाँचते रहना चाहिये कि निर्धारण के अनुरूप कार्यक्रम चल रहा है या नहीं । जहाँ भी चूक होती हो वहीं उसे तुरन्त सुधारना चाहिये । यदि सतर्कतापूर्वक दिनचर्या के पालन का ध्यान रखा जाय, शारीरिक आलस्य और मानसिक प्रमाद से पग-पग पर लड़ते रहा जाय तो प्रातःकाल की निर्धारित योजना रात को सोते समय तक ठीक ही चलती रहेगी ।

इस प्रकार हर दिन नया जन्म वाले मन्त्र का आधा भाग रात को सोते समय तक पूरा होता रहना चाहिये। हर घड़ी अपने को सतर्क, सक्रिय, जागरूक रखा जाय, उत्कृष्टता का जीवन में अधिकाधिक समावेश करने के लिये प्रयत्न किया जाय तो निस्संदेह वह दिन पिछले अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक संतोषप्रद, अधिक गौरवास्पद होगा । इस प्रकार हर दिन पिछले दिन की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक आदर्श बनता चला जायेगा और कर्मयोग के तत्त्वदर्शन में हमारी जीवन पद्धति ढलती चली जायेगी ।

अब मन्त्र का आधा भाग प्रयुक्त करने का अवसर आता है—"हर रात नई मौत" इस भावना को रात्रि में सोते समय प्रयुक्त करना चाहिये । सब कामों से निवृत्त होकर जब निद्रा देवी की गोद में जाने की घड़ी आये, तब कल्पना करनी चाहिये कि "एक सुन्दर नाटक का पटाक्षेप हो चला । यह संसार एक नाट्यशाला है । आज का दिन अपने को अभिनय करने के लिये मिला था, सो उसको अच्छी तरह खेलने का ईमानदारी से प्रयत्न किया । जो भूलें रह गयीं उन्हें याद रखेंगे और अगले दिन वैसी पुनरावृत्ति न होने देने की अधिक सावधानी बरतेंगे ।"

"अनेक वस्तुयें इस अभिनय में प्रयोग करने को मिलीं, अनेक साथियों का साथ रहा । उनका सान्निध्य एवं उपयोग जितना आवश्यक था कर लिया गया, अब यथासमय छोड़कर पूर्ण शान्ति के साथ अपनी आश्रय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दात्री माता निद्रा-मृत्यु-की गोद में निश्चिन्त होकर शयन करते हैं ।''

इस भावना में वैराग्य का अभ्यास है । अनासक्ति का प्रयोग है । उपलब्ध वस्तुओं में से एक भी अपनी नहीं, साथी व्यक्तियों में से एक भी अपना नहीं । वे सब अपने परमेश्वर के और अपने कर्त्तव्य की उपज हैं। हमारा न किसी पर अधिकार है न स्वामित्व। हर पदार्थ और हर प्राणी के साथ कर्त्तव्य बुद्धि से ठीक प्रकार व्यवहार कर लिया जाये, यही अपने लिये उचित है। इससे अधिक मोह-ममता के बंधन बांधना स्वामित्त्व और अधिकार की अहंता जोड़ना निरर्थक है । अपना तो यह शरीर भी नहीं, कल-परसों इसे धूलि बनकर उड़ जाना है । तब जो सम्पदा, प्रयोग सामग्री, पद, परिस्थिति, उपलब्ध है उस पर अपना स्वामित्त्व जमाने का क्या हक ? अनेक प्राणी सृष्टि के आदि से लेकर अब तक अपने कर्म भोगों को भुगतते अनेक के साथ आये दिन संयोग-वियोग करते रहते हैं। अपने साथ भी आज कितने ही प्राणी एक सज्जन साथी की तरह रह रहे हैं । इनके लिये कर्त्तव्य धर्म का ठीक तरह पालन किया जाय इतना ही पर्याप्त है । उनसे अनावश्यक ममता जोड़कर ऐसा कुछ न किया जाय जिससे अनुचित पाप कर्मों में संलग्न होना पड़े ।

यह विवेक हमें रात को सोते समय जागृत करना चाहिये और अनुभव करना चाहिये कि अहंता और ममता के बन्धन तोड़कर एकात्म भाव से भगवान की मंगलमय गोदी, निद्रा-मृत्यु में परम शान्ति और सन्तोषपूर्वक निमग्न हुआ जा रहा है ।

इस प्रकार की मनोभूमि का विकास होने से जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रगति होने की संभावना रहती है । इस प्रकार की भावना बनी रहने से मनुष्य माया-मोह के हानिकारक बन्धनों से अधिकांश में विमुक्त रहता है और आत्मोद्धार का वास्तविक लक्ष्य उसकी दृष्टि से ओझल नहीं होने पाता । इस प्रकार जो साधक जीवन के वास्तविक लक्ष्य को हस्तगत कर लेता है उसको फिर व्यर्थ के जंजाल में नहीं फँसना पड़ता ।

किसी दिन सचमुच ही मृत्यु आ जाय तो इन परिपक्व वैराग्य भावनाओं के आधार पर बिना भय और उद्वेग के शान्तिपूर्वक विदा होते हुए मरणोत्तर जीवन में परम शान्ति का अधिकारी बना जा सकता है । यह भावना लोभ और मोह की जड़ काटती है । कुकर्म प्रायः इन्हीं दो आन्तरिक दुर्बलताओं के कारण बन पड़ते हैं । हर रात्रि को एक मृत्यु मानने से लोभ और मोह का निराकरण और हर दिन को नया जन्म मानने से जीवन में आदर्शवादिता एवं उत्कृष्टता का समावेश करने की प्रेरणा मिलती है । यही प्रेरणा कर्म योग की आधारशिला है ।

हममें से प्रत्येक को ''हर दिन नया जन्म--हर रात नई मौत'' के भाव-मन्त्र की साधना करनी चाहिये। इससे स्थूल शरीर में कर्म योग का समावेश इस क्षेत्र में होगा और देवत्व के जागरण की एक महती आवश्यकता पूरी करने का सरल मार्ग उपलब्ध होगा ।

सूक्ष्म शरीर का उत्कर्ष—ज्ञान योग से

सूक्ष्म शरीर विचार प्रधान है । मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का अन्तःकरण चतुष्टय इस आवरण का आधार है। विविध कामनायें, वासनायें, आकांक्षायें, लालसायें इसी में उठती हैं । अभिरुचि और प्रकृति का केन्द्र यही है । शरीर विज्ञान के अनुसार मस्तिष्क में यह संवेदनायें समाविष्ट हैं, अतएव मस्तिष्क को सूक्ष्म शरीर का निवास स्थल माना गया है । यों यह चेतना समस्त शरीर में भी व्याप्त है । मस्तिष्क के दो भाग हैं—एक सचेतन, दूसरा अचेतन । माथे वाले अग्रभाग में सोचने, विचारने, समझने, बूझने, निर्णय और प्रयत्न करने वाला सचेतन मन रहता है और मेरुदण्ड से मिले हुए पिछले भाग में अचेतन मस्तिष्क का स्थान है। यह अनेक आदतें, संस्कार, मान्यतायें, अभिमान, प्रवृत्तियाँ मजबूती से अपने अन्दर धारण किये रहता है। शरीर के अविज्ञात क्रिया-कलापों का संचालन यहीं से होता है।

गुण विभाजन के अनुसार स्थूल शरीर तमोगुण (पंच तत्त्वों) से, सूक्ष्म सरीर रजोगुण (विचारणा) से और कारण शरीर सतोगुण (भावना) से विनिर्मित है। स्थूल शरीर को प्रवृत्ति प्रधान, सूक्ष्म शरीर को जीव प्रधान और कारण शरीर को आत्मा (परमात्मा) प्रधान माना गया है। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, आनन्दमय, विज्ञानमय कोष भी इन तीन शरीरों के अन्तर्गत ही है, जिनका वर्णन गायत्री महाविज्ञान (तृतीय खण्ड) में किया जा जुका है।

इन शरीरों के विस्तृत वर्णन का अवसर यहाँ नहीं है। अभी तो इतना जानना ही पर्याप्त है कि सूक्ष्म शरीर में देवत्व का अभिवर्धन करने के लिये ज्ञानयोग की आवश्यकता होती है । ज्ञानयोग का अर्थ उन जानकारियों को हृदयंगम करना है जो हमारे आदर्श, सिद्धान्त, मनोयोग और क्रिया-कलापों का निर्माण एवं संचालन करती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्कूल ज्ञान वह है जो सांसारिक जानकारियाँ बढ़ा कर हमारे मस्तिष्क को अधिक उर्वर, सक्षम एवं समर्थ बनाता है। यश, धन, व्यक्तित्त्व, शिल्प, कौशल आदि इसी आधार पर उपार्जित किये जाते हैं। इसी को शिक्षा कहते हैं। विविध विषयों की अगणित शिक्षा संस्थायें इसी प्रशिक्षण के लिये खुली हुई हैं, जिनमें पढ़कर छात्र अपनी रुचि एवं आवश्यकतानुसार जानकारी अर्जित करते हैं। पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, परस्पर संभाषण, भ्रमण आदि साधनों से भी मस्तिष्क को समुन्नत करने वाली जानकारी मिलती है। यह सब शिक्षा के ही भेद हैं।

शिक्षा सांसारिक जानकारी देती है, उसकी पहुँच मस्तिष्क तक है। विद्या अन्तःकरण तक पहुँचती है और उसके द्वारा व्यक्तित्त्व का निर्माण, निर्धारण होता है। विद्या को ही ज्ञान कहते हैं। ज्ञान का आधार अध्यात्म है। केवल शब्दों के श्रवण मनन से शिक्षा पूरी हो सकती है, पर विद्या का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब उसकी पहुँच अन्तरात्मा तक हो, उसका आधार अध्यात्म, तत्त्व-ज्ञान रहे और उसका प्रशिक्षण ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया हो जो अपना आदर्श उपस्थित कर उन भावनाओं को हृदयंगम करा सकने में समर्थ हो। यह आधार प्राप्त न हो तो विद्या एक तरह की भौतिक शिक्षा मात्र ही बन कर रह जाती है और उससे अभीष्ट प्रयोजन पूर्ण नहीं होता। आजकल अध्यात्म के नाम पर ज्ञान, योग के नाम पर वाचालता बहुत बढ़ गयी है। कथा-प्रवचनों के अम्बार खड़े होते हैं पर सुनने वालों का कौतूहल समाधान होने के अतिरिक्त लाभ कुछ नहीं होता। उनके अन्दर प्रभाव, प्रकाश एवं परिवर्तन तनिक भी दिखाई नहीं देता। इसका कारण यही है कि विद्या को भी शब्द शक्ति तक ही सीमित किया जा रहा है जबकि उसका प्रवेश और प्रकाश सीधा आत्मा तक पहुँचना चाहिये।

ज्ञान-योग का उद्देश्य आत्मा तक सद्ज्ञान का, तत्त्वज्ञान का प्रकाश पहुँचाना है। इसका शुभारम्भ आत्म-ज्ञान से होता है। लोग सांसारिक जानकारियों के बारे में बहुत चतुर, निपुण और निष्णात होते हैं, अपनी इस प्रतिभा के बल पर धन, यश, सुख और पद प्राप्त करते हैं। किन्तु खेद है कि अपने अस्तित्त्व, स्वरूप उद्देश्य और कर्तव्य के बारे में तात्त्विक दृष्टि से अन्जान ही बने रहते हैं। यों इन विषयों पर भी वे एक लम्बी स्पीच झाड़ सकते हैं, पर यह केवल उनका मस्तिष्कीय चमत्कार भर होता है, यदि आत्मज्ञान का थोड़ा भी तात्त्विक प्रकाश मनुष्य के अन्तःकरण में पहुँच जाय तो उसकी जीवन दिशा में उत्कृष्टता का समावेश हुए बिना नहीं रह सकता। उसकी विचारणा, निष्ठा तथा गतिविधि सामान्य लोगों जैसी नहीं-असामान्य पाई जायगी। सच्चा आत्म-ज्ञान केवल जानकारी भर बन कर नहीं रह सकता। उसकी पहुँच अन्तःकरण के गहन स्तर तक होती है और उस स्थान तक पहुँचा हुआ प्रकाश जीवन क्रम में प्रकाशित हुए बिना नहीं रह सकता।

अध्यात्मवाद का प्रथम प्रशिक्षण आत्म-ज्ञान की उपलब्धि के साथ ही दिया जाता है। उपनिषद्कार ने पुकार-पुकार कर कहा है-

''आत्मा व अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो।''

''अपने को सुनो, अपने बारे में जानो, अपने को देखो और अपने बारे में बार-बार मनन चिन्तन करो।'' वस्तुतः हम अपने को शरीर मानकर जीवन की उन गतिविधियों का निर्धारण करते हैं जिनसे केवल शरीर का ही यत्किंचित स्वार्थ सिद्ध होता है। आत्मा के हित और कल्पना के लिये हमारे जीवन क्रम में प्रायः नहीं के बराबर स्थान रहता है। यदि हम अपने को आत्मा और शरीर को उसका एक वाहन, औजार मात्र समझें तो सारा दृष्टिकोण ही बदल जाय, समस्त गतिविधियाँ उलट जायें, तब हम आत्मा के हित, लाभ और कल्याण को ध्यान में रख कर अपनी रीति-नीति निर्धारित करें। ऐसी दिशा में हमारा स्वरूप न नर-पशु जैसा रह सकता है और न नर-पिशाच जैसा। तब हम विशुद्ध नर-नारायण के रूप में परिलक्षित होंगे, देवत्व हमारे रोम-रोम से फूटा पड़ रहा होगा।

जन्म-दिन मनाने की प्रक्रिया के साथ युग निर्माण योजना के अन्तर्गत आत्म-ज्ञान का व्यापक उद्बोधन, व्यापक अभियान चलाया जा रहा है। प्रत्येक परिजन को बहुत जोर देकर कहा जा रहा है कि वह अपना जन्मदिन समारोह पूर्वक मनाया करे। उस दिन अपने में भावनात्मक उल्लास उत्पन्न किया करे। जीवन के स्वरूप, उद्देश्य एवं उपयोग के महान तत्त्वज्ञान पर एकान्त में विचार किया करे और अपने आपसे यह प्रश्न पूछा करे कि अपने अस्तित्त्व का मूल स्वरूप क्या है? इस सुर दुर्लभ मानव जीवन का उद्देश्य क्या है? और इन बहुमूल्य क्षणों का सर्वोत्तम सदुपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? इन प्रश्नों का यदि सही उत्तर भीतर से मिले और इतना साहस उत्पन्न हो जाय कि जो श्रेयस्कर है उसी को अपना लिया जाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो हमारे जीवन में एक आध्यात्मिक क्रान्ति उपस्थित हो सकती है। हम सामान्य से असामान्य, नर से नारायण, पुरुष से पुरुषोत्तम, तुच्छ से महान् और आत्मा से बढ़कर परमात्मा बन सकते हैं।

जन्म दिन के अवसर पर वर्षों के हिसाब से घृत-दीप जलाना, पंच तत्त्व पूजन, महा मृत्युञ्जय मंत्र का सामूहिक पाठ, गायत्री यज्ञ, पुष्पोपहार, अभिवन्दन आशीर्वाद जैसे धर्म कृत्य एक भावनात्मक उल्लासपूर्ण वातावरण विनिर्मित करते हैं। मित्रों, परिजनों का सम्मिलित सस्ता पेय जलपान, उस हंसी-खुशी को और बढ़ा देता है। उपस्थित लोगों में भी इस तरह का आयोजन करने और जन्म दिन मनाने की इच्छा उत्पन्न होती है और इस पुण्य परम्परा के प्रसारण की सम्भावना बढ़ती है। मनुष्य का निज का जन्म-दिन उसके लिये निजी दृष्टि से सबसे बड़ा त्यौहार होता है। कृष्ण जी की जन्माष्टमी, राम जी की रामनवमी अपने स्थान पर महत्वपूर्ण है, पर एक सामान्य व्यक्ति के जीवन में उसका जन्मदिन भी कम महत्त्व का नहीं। अपनापन हर किसी को पसन्द है। अपनी शक्ल शीशे या फोटो में देखकर, अपना नाम कहीं छपा देखकर, अपनी चर्चा कहीं सुन कर, हर किसी को गर्व-गौरव सन्तोष-आनन्द का अनुभव होता है। आन्तरिक उल्लास का अभिवर्धन एक आध्यात्मिक साधन है। इस प्रकार हर दृष्टि से जन्मदिन आयोजनों का मनाया जाना श्रेयस्कर ही है। इस प्रथा परम्परा को जितने अधिक उत्साह के साथ प्रचलित किया जायगा उतना ही राष्ट्र के आध्यात्मिक उत्कर्ष का उद्देश्य पूरा होगा। यों संसार के सभ्य समाज में सर्वत्र जन्मदिन का उत्सव मनाने का रिवाज है। इसे अच्छा भी माना जाता है, पर अपना उद्देश्य तो इससे ऊँचा है। सामाजिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक उत्सव मात्र ही इसे नहीं रहने देना है वरन् इस महान परम्परा को आध्यात्मिक जागरण का आधार भी बनाना है, जिससे युग निर्माण का, देवत्व के परिपोषण का महान् प्रयोजन पूर्ण हो सके।

जन्म-दिन के अवसर पर अपने आपसे तीन प्रश्न पूछने चाहिये-

(१) भगवान् को सभी प्राणी समान रूप से प्रिय पात्र हैं। फिर मनुष्य को ही बोलने, सोचने, लिखने एवं असंख्य सुख-सुविधायें प्राप्त करने का विशेष अनुदान क्यों मिला ? मनुष्य को हर दृष्टि से उत्कृष्ट स्तर का प्राणी बनाने में इतना असाधारण श्रम क्यों किया?

उत्तर एक ही हो सकता है-''अपने उद्यान इस संसार को अधिक सुन्दर और सुव्यवस्थित बनाने के लिये परमेश्वर को साथ सहचरों की जरूरत पड़ी और अपनी क्षमताओं से सुसज्जित एक सर्वांगीण प्राणी-मनुष्य इस प्रयोजन की पूर्ति के लिये बनाया। विशेष साधन सुविधायें इसीलिये दीं कि उनके द्वारा वह ईश्वरीय प्रयोजनों की पूर्ति ठीक तरह कर सके।

(२) दूसरा प्रश्न अपने आपसे पूछना चाहिये-जो सुविधायें, विभूतियाँ सम्पदायें हमें उपलब्ध हैं-''उनका लाभ यदि हम अकेले ही उठाते हैं तो इसमें क्या कोई हर्ज है ?''

उत्तर एक ही मिलेगा-''अन्य प्राणियों के अतिरिक्त जितनी भी बौद्धिक, आर्थिक, प्रतिभा कारक एवं अन्य किसी प्रकार की विशेषतायें हैं; वे विश्व मानव की ही पवित्र अमानत हैं और इनका उपयोग लोक-मंगल के लिये ही किया जाना चाहिये। शरीर रक्षा भर के आवश्यक उपकरणों के अतिरिक्त इन साधनों का विश्व कल्याण के लिये ही उपयोग किया जाय।''

(३) तीसरा प्रश्न अपने आप से करना चाहिये कि-''क्या इस सुरदुर्लभ मानव शरीर का सही सदुपयोग हो रहा है ?''

उत्तर यही मिलेगा-''हम सदाचारी, संयमी, परिश्रमी, उदार, सज्जन, हँसमुख, सेवा भावी बने बिना मानव जीवन को सार्थक नहीं बना सकते। इसलिये इन सद्गुणों का अभ्यास बढ़ाने के लिये जीवनयापन की रीति-नीति में उत्कृष्टता और आदर्शवादिता का, सभ्यता और सज्जनता का, पुरुषार्थ और साहस का समुचित समावेश करना चाहिये''।

इन्हीं प्रश्नोत्तरों में अध्यात्म तत्त्वज्ञान का सार सन्निहित है। यदि यह प्रश्न जीवन की महान् समस्या के रूप में सामने आये और उन्हें सुलझाने के लिये हम अपने पूरे विवेक का उपयोग करें तो भावी जीवनयापन का एक व्यवस्थित दर्शन और कार्यक्रम सामने आ खड़ा होगा। यदि साहसी शूरवीरों की तरह इस ईश्वरीय सन्देश को चुनौती के रूप में स्वीकार किया जा सका तो दूसरे ही दिन आकांक्षाओं और कामनाओं का स्वरूप बदला हुआ होगा। रीति-नीति और कार्य पद्धति में वैसा परिवर्तन परिलक्षित होगा जैसे आत्म-ज्ञान सम्पन्न मनुष्य को प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर होना चाहिये।

जन्म दिन मनाने और उससे प्रेरणा ग्रहण करने की साधना विधि अपनाने के लिये परिजनों से इसीलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुरोध किया जाता है कि वे अपने सूक्ष्म शरीर में मानसिक चेतना में ज्ञानयोग का समावेश कर देवत्व का जागरण करने की दिशा में आशाजनक प्रगति कर सकें।

ज्ञानयोग से जन-मानस का परिष्कार

ज्ञानयोग द्वारा सूक्ष्म शरीर में देवत्व की दैनिक प्रक्रिया है-स्वाध्याय। जन्म-दिन वर्ष में एक बार आता है, झकझोर कर चला जाता है। उसे आत्म-ज्ञान का शुभारम्भ, श्रीगणेश एवं प्रेरक पर्व कह सकते हैं, इस उपलब्धि को नित्य सींचना आवश्यक है और यह कार्य दैनिक स्वाध्याय से ही सम्भव हो सकता है।

वातावरण का मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है। आज के वातावरण में स्वार्थपरता, वासना, विलासिता, तृष्णा, उच्छृंखलता की मनोवृत्तियाँ बुरी तरह संव्याप्त हैं। इन्हीं से प्रेरित होकर लोगों की विभिन्न गतिविधियाँ संचालित होती हैं। लोग बाहर से आदर्शवादिता की बातें करते हैं, पर उनके क्रियाकलाप में उपर्युक्त तत्त्व ही घुले रहते हैं। बेईमानी और धूर्तता का सहारा लेकर सांसारिक वैभव उपार्जन करने वाले लोगों के उदाहरण चारों ओर भरे पड़े हैं? यह सारे का सारा वातावरण मौन रूप से मनुष्य को यही उपदेश करता है कि शीघ्र उन्नति करनी है, मौज-मजा के अधिक साधन उपलब्ध करने हों तो उचित-अनुचित का अन्तर करने के झंझट में न पड़कर जैसे बने वैसे अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहिये। आज के वातावरण की मौन रूप से यही शिक्षा है और यह शिक्षा हर दुर्बल मन:स्थिति के व्यक्ति को प्रभावित भी करती है। फलस्वरूप जनसाधारण की रुचि अकर्म और कुकर्म करने की और बढ़ती चली जाती है। असुरता को दिन-दिन बढ़ते और देवत्व को दिन-दिन क्षीण होते हम भली प्रकार देख सकते हैं।

आम लोग इस पतन प्रवाह में ही बहनें लगते हैं। सामाजिक मूढ़तायें, रूढ़ियाँ, अन्य परम्परायें अधिकांश लोगों को अपने चंगुल में जकड़े रहती हैं। उनकी देखा-देखी दुर्बल मन व्यक्ति भी अनुकरण करते हैं। विवेक उनकी उपयोगिता पर सन्देह तो उत्पन्न करता है पर समर्थन न मिलने से चुप ही बैठना पड़ता है और जो ढर्रा चल रहा है उसी के प्रवाह में लुढ़कना पड़ता है। इस प्रकार अवांछनीय सामाजिक कुरीतियाँ, मूढ़तायें और अन्य-परम्परायें घटने के बजाय बढ़ती ही रहती हैं: अनैतिकता का अभिवर्धन, व्यक्तिगत चरित्र को और सामजिक मूढ़ताओं का विस्तार सामूहिक जीवन को जर्जर बनाते चले जा रहे हैं। पतन का पहिया तेजी से घूमता है और दुर्दशा की दिशा में हम भयावह रूप से बढ़ते चले जा रहे हैं।

इस कुचक्र को कैसे रोका जाय? इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने से एक ही निष्कर्ष निकलता है कि सर्वसाधारण के मस्तिष्क को पतन की ओर आकर्षित करने वाले प्रशिक्षण की तुलना में ठीक उतना ही प्रबल प्रतिरोधी वातावरण ऐसा तैयार किया जाय जो जनमानस में, असुरता की विभीषिकाओं और देवत्व की शुभ सम्भावनाओं का प्रभाव उत्पन्न कर सके। अच्छा तो यह था कि जिस प्रकार दुष्टता अपनाकर सफलता उपलब्ध करने वालों के अगणित उदाहरण सामने उपस्थित हैं वैसे ही सज्जनता का अवलम्बन लेकर प्रगति के उच्च शिखर पर पहुँचने वालों के उदाहरण देखने को मिलते और उनका प्रभावग्रहण कर अनेक को उस सन्मार्ग का अनुकरण करने की प्रेरणा मिलती है। पर यदि वैसी व्यवस्था तत्काल नहीं हो सकती तो दूसरा उपाय यह है कि जन साधारण के मस्तिष्क को प्रभावित कर सकने योग्य उत्कृष्ट समर्थ विचार इतनी अधिक मात्रा में उपलब्ध हों कि सामयिक कुशिक्षा और दूषित प्रभाव का निराकरण किया जा सके।

यह कार्य स्वाध्याय की व्यापक सर्वांगपूर्ण व्यवस्था करके सम्पन्न किया जा सकता है। वर्तमान का काम इतिहास से चलाया जा सकता है और कुशिक्षा देने वाले वर्तमान व्यक्तियों के मुकाबले दूरस्थ अथवा दिवंगत महापुरुषों की विचार पद्धति सामने खड़ी की जा सकती है। स्वाध्याय इसी प्रक्रिया का नाम है। संसार में ऐसे उत्कृष्ट व्यक्तित्त्व हैं अथवा हो चुके हैं जिनकी ओजस्वी विचारधारा बड़ी समर्थ और सारगर्भित है, उसे सुनने का अवसर मिलता रहे तो वर्तमान दुर्बुद्धिपूर्ण शिक्षा की काट हो सकती है। इसी प्रकार दूरस्थ अथवा दिवंगत सन्मार्गगामी सज्जनों के महान चरित्र आँखों के सामने प्रस्तुत होते रहे तो भी वर्तमान दुरात्माओं के भ्रष्ट अनुकरण से बचने की हिम्मत जाग सकती है। प्रत्यक्ष न सही, परोक्ष रूप से मस्तिष्कों के सम्मुख प्रेरक प्रशिक्षण एवं घटनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा सके तो भी पतन के प्रवाह को रोकने में बहुत सहायता मिल सकती है। स्वाध्याय इसी महती आवश्यकता को पूर्ण करता है। स्वाध्याय ज्ञान योग का अविच्छिन्न अंग है।

'सत्यं वद, धर्मं चर' के बाद शास्त्र का मानव प्राणी के लिये महत्त्वपूर्ण निर्देश 'स्वाध्यायात्मा: प्रमद:' ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। स्वाध्याय में प्रमाद करने की कठोरतापूर्वक मनाही की गयी है। भोजन, शयन, स्नान जैसे नित्य कर्मों में ही स्वाध्याय की भी गणना है। जिस प्रकार आहार के बिना क्षुधा की निवृत्ति नहीं हो सकती । जिस मनोभूमि को स्वाध्याय नहीं मिलता वह ऊसर, नीरस, दुर्बल और विकृत होती चली जाती है, बर्तनों को नित्य माँजना पड़ता है, दाँत रोज साफ करने पड़ते हैं, स्नान नित्य किया जाता है, कमरे में झाड़ू रोज लगती है, इसी प्रकार मन पर वातावरण से निरन्तर पड़ने वाले बुरे प्रभाव का, मलीनता का निराकरण करने के लिये नित्य ही स्वाध्याय की आवश्यकता पड़ती है अन्यथा मनोभूमि मलीनता से इतनी आच्छादित हो जाती है कि उसमें सड़न और दुर्गन्ध के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता। ऐसा मन असुरता का ही निवास-स्थल हो सकता है।

पिछले दिनों कोई-कोई पौराणिक कथा ग्रन्थ थोड़ा-थोड़ा कर बाँच लेना अथवा किसी प्राचीन धार्मिक पुस्तक के थोड़े से पन्ने उलट लेना स्वाध्याय की लकीर पीटने के लिये काफी माना जाता रहा है। यह सर्वथा अपर्याप्त है । जीवन की, परिवार की, समाज की वाह्य तथा अन्तरंग समस्याओं पर जो साहित्य वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ का ध्यान रख कर व्यावहारिक एवं बुद्धि संगत हल उपस्थित कर सके वही स्वाध्याय का उपयुक्त माध्यम माना जा सकता है। उसी से किसी मार्गदर्शन की, समस्याओं के समाधान की आशा की जा सकती है।

खेद की बात है कि इस प्रकार का स्वाध्यायोपयोगी साहित्य ढूँढे नहीं मिलता। बुकसेलरों और प्रकाशकों के गोदामों में केवल कूड़ा कचरा ही भरा दिखाई पड़ता है और मानव जाति का, देश-धर्म और समाज-संस्कृति का दुर्भाग्य ही कहना चाहिये कि व्यक्ति तथा समाज का नवनिर्माण कर सकने की क्षमता सम्पन्न साहित्य का आज खटकने वाला अभाव दृष्टिगोचर होता है। इस अभाव की पूर्ति के लिये 'युग निर्माण योजना' के अन्तर्गत ऐसा सर्व-सुलभ साहित्य छोटे ट्रेक्टों के रूप में छापा गया है जो जन-मानस की विकृतियों का समाधान कर उसे आवश्यक प्रकाश एवं मार्गदर्शन प्रस्तुत कर सके। जीवन के हर पहलू और समाज की हर समस्या पर इस प्रकाशन के अन्तर्गत एक क्रमबद्ध प्रेरणा प्रस्तुत की जा रही है। इस एक बड़े अभाव की पूर्ति एक सीमा तक इस माध्यम से पूरी हो सकेगी ऐसी आशा करना उचित ही माना जा सकता है।

प्रिय परिजनों को ज्ञान-योग की साधना के लिये स्वाध्याय की अनिवार्य आवश्यकता को समझने के लिये आग्रह किया गया है। देवत्व के अभिवर्धन का, सूक्ष्म शरीर के परिष्करण का यह एक असाधारण उपाय है। हमें नित्य ही अनिवार्य रूप से इस 'युग निर्माण साहित्य' का अध्ययन करना चाहिये। कुछ समय इसके लिये पूजा, उपासना, आहार, स्नान आदि की तरह ही निर्धारित कर लेना चाहिये और कितने ही आवश्यक कार्यों की उपेक्षा कर इस आत्मिक आहार के लिये समय निकालना चाहिये। यह प्रेरक विचारधारा जिन अन्तःकरणों से निकलती है वह इतने समर्थ हैं कि पाठक में अपनी ज्योति एवं प्रेरणा उत्पन्न कर सकें। यों सद्गुणों का महत्त्व कई अन्य पुस्तकों एवं व्यक्तियों द्वारा समय-समय पर सुना समझा गया होगा, पर यह साहित्य उन सबसे भिन्न अपने ढंग का अनोखा है। वह पाठक के मस्तिष्क तक सीमित न रहकर अन्तःकरण के गहन स्तरों तक प्रवेश करने और वही हलचल उत्पन्न कर सकने की सामर्थ्य से सम्पन्न है। इसका नियमित अध्ययन किसी भी व्यक्ति को देवत्व को सत्य पर चलने की प्रबल प्रेरणा दिये बिना नहीं रह सकता। इसका वाचन निरर्थक नहीं जा सकता, उससे किसी भी व्यक्तित्त्व के उत्कर्ष में आशाजनक सहायता मिल सकती है।

स्वाध्याय ईश्वर उपासना है

हममें से प्रत्येक को ईश्वर की भावनात्मक उपासना करने के लिए स्वाध्याय को एक आवश्यक धर्म कर्तव्य बना लेना चाहिये। ईश्वर की प्राथमिक पूजा, मूर्ति, चित्र आदि के ध्यान और अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीप आदि उपकरणों के साथ होती है, पर आगे चलकर माध्यमिक उपासना उच्च विचारधारा रूपी प्रतिमा को मन मन्दिर में स्थापित करके ही अग्रगामी बनाई जाती है। संयम, साहस, विवेक, सेवा, दया, करुणा, मैत्री, उदारता, सौजन्य, पवित्रता आदि सद्गुण विशुद्ध रूप से ईश्वर की भावनात्मक प्रतिमा ही है। स्वाध्याय सत्संग और चिंतन मनन द्वारा जितनी देर मन मन्दिर में इन सद्गुणों का प्रकाश बना रहे और उनमें अपनी श्रद्धा जमी रहे तो समझना चाहिये कि उतनी देर उच्च स्तरीय ईश्वर पूजन होता रहा। प्रतिमायें ईश्वर की प्रतीक हैं पर उच्च भावनायें तो प्रभु की प्रतिनिधि ही मानी गयी हैं। इसलिये स्वाध्याय हमारी उपासनात्मक आवश्यकता को पूर्ण करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। जो हमें आज की स्थिति के अनुरूप उच्चस्तरीय मार्ग दर्शन एवं परामर्श

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दे सकें, ऐसे मनीषी महापुरुषों का सत्संग सान्निध्य हर घड़ी, चाहे जहाँ उपलब्ध नहीं हो सकता, पर सद्ग्रन्थों के माध्यम से हम जिस भी महापुरुष को, जिस भी समय, जिस भी विषय पर परामर्श देने के लिये बुलाना चाहें वह बिना किसी कठिनाई के सामने उपस्थित होगा । इतना सरल और दूसरा कोई साधन नहीं हो सकता जितना कि स्वाध्याय । अस्तु हमें मानसिक परिष्कार के इस अमोघ माध्यम को अपने दैनिक जीवन में दृढ़ता स्थिरता और श्रद्धापूर्वक स्थान देना चाहिये। स्वाध्याय में प्रमाद न करने की शास्त्राज्ञा को एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति की तरह हमें निश्चित रूप से शिरोधार्य ही करना चाहिये।

जो शुभ है, श्रेयस्कर है, मंगलमय है, उसे स्वयं तो ग्रहण करना ही चाहिये, अपने परिवार को भी उसका पूरा-पूरा लाभ देना चाहिये। हमारी भौतिक उपलब्धियों का लाभ परिवार के लोगों को मिलता है, उन्हें इस भावनात्मक प्रकाश का लाभ उठाने के लिये भी अवसर देना चाहिये। घर में जितने भी शिक्षित व्यक्ति हैं उन सबको उनके स्तर का स्वाध्याय साधन उपलब्ध कराना चाहिये और यदि उनमें अध्ययन की रुचि न हो तो प्रयत्नपूर्वक उसे जाग्रत करना चाहिये। इस रुचि का न होना मानव जीवन के विकास में एक भारी विघ्न है। इस गतिरोध को हटाने-मिटाने के लिये हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिये और तभी चैन लेना चाहिये जब अपने प्रिय परिवार के हर शिक्षित सदस्य में स्वाध्याय की अभिरुचि उत्पन्न हो जाय और वह श्रेयस्कर साहित्य उपलब्ध करने के लिये, उसकी तलाश के लिए स्वयं उत्सुक रहने लगे। इस मानसिक स्थिति तक अपने परिवार के सदस्यों को पहुँचा देना हर विवेकवान गृहपति का एक परम पवित्र धर्म कर्तव्य है। घर में पढ़े न हों उन्हें जीवन साहित्य सुनने का शौक लगाया जाय। पढ़े सदस्य यह सेवा स्वीकार करें और बिना पढ़ों को नित्य प्रेरक विचारधारा का कुछ न कुछ लाभ एवं प्रकाश उपलब्ध कराया करें। जिन घरों में यह परम्परा चलने लगे, समझना चाहिये देवत्व की दिशा में अग्रसर होने के लिये इस परिवार ने एक महत्वपूर्ण अवलम्बन ग्रहण कर लिया।

समाज की महती सेवा के लिये परिजनों को-- 'झोला पुस्तकालय' चलाने के लिये अनुरोध किया गया है। इस युग का यह सबसे बड़ा परमार्थ है। विचारों में उत्कृष्टता उत्पन्न करना मानव प्राणी की सबसे बड़ी सेवा है । उसी माध्यम से वह अपने वाह्य जीवन का, अन्तरंग जीवन का, परिवार का तथा समस्त समाज का हित साधन कर सकता है। बुरे विचार ही मनुष्य को नरक की आग में जलाते हैं और सद्विचारों के सहारे स्वर्गीय देव-जीवन जी सकना सम्भव होता है। अतएव सद्विचारों का दान, ब्रह्म दान सदा से इस धरती का श्रेष्ठतम पुण्य माना जाता रहा है। साधु, ब्राह्मण इसी परमार्थ के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग करते हैं। शोक संतप्त और पाप-ताप से संत्रस्त मानव जाति को वर्तमान दुर्दशा से विमुक्त करने के लिये सद्ज्ञान की संजीवनी बूटी ही एक मात्र उपाय है। इस आवश्यकता की पूर्ति का उत्तरदायित्त्व हममें से हर प्रबुद्ध व्यक्ति को वहन करना चाहिये।

एक छोटे झोले में बीस-तीस 'युग निर्माण ट्रेक्ट' लेकर ही हम घर से निकलें। दफ्तर में, दुकान में जहाँ भी कार्यक्षेत्र हो इस झोले को साथ रखें। जो भी विचारशील व्यक्ति दिन भर सम्पर्क में आवें, उनकी रुचि और आवश्यकता को समझकर, समाधान करके किसी ट्रेक्ट की चर्चा करनी चाहिये और बताना चाहिये कि उसे पढ़ने पर एक नया प्रकाश प्राप्त किया जा सकेगा। पहले दिन केवल पुस्तक का महत्त्व बताकर उसकी रुचि जाग्रत की जाय-और यदि उत्सुकता उत्पन्न हो जाय तो दूसरे दिन शीघ्र पढ़कर वापस करने का अनुरोध करते हुए वह पुस्तक देनी चाहिये। पढ़ लेने पर वापस माँगनी चाहिये और उसमें प्रस्तुत विषयों पर अनुकूल चर्चा करनी चहिये। इस प्रकार जिनसे भी सम्पर्क बने उनसे उनकी रुचि, स्थिति और आवश्यकता के अनुरूप साहित्य देने, वापस लेने का क्रम चलाना चाहिये। समय पर आवश्यक साहित्य मिल सके उसके लिये 'झोला पुस्तकालय' साथ रखना चाहिये।

बड़े पुस्तकालय एवं विद्यालय खोल देने की अपेक्षा एक 'झोला पुस्तकालय' चलाना अधिक सत्परिणाम उपस्थित कर सकता है। पुस्तकालयों में हजारों रुपया मूल्य की पुस्तकें सड़ती रहती हैं। उत्कृष्टता की ओर रुचि न होने से श्रेयस्कर पुस्तकें कोई छूता तक नहीं। गन्दी और बेहूदी पुस्तकें ही अक्सर पढ़ी जाती हैं। इस प्रकार पुस्तकालय भी उतने उपयोगी सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। लोगों की सत्साहित्य में रुचि जगाना खास बात है और वह व्यक्तिगत प्रभाव तथा दबाव डालकर ही उत्पन्न करनी पड़ेगी। 'झोला पुस्तकालय' चलाने वाले को यही सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता पूरी करनी पड़ती है। वह अपना सारा बुद्धि कौशल और प्रभाव बाजी पर लगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर ही अपने क्षेत्र में इस प्रकार की अभिरुचि उत्पन्न करता है। अतएव श्रेष्ठ साहित्य निर्माण करने वाले से भी अधिक बढ़ा-चढ़ा उसका सत्प्रयत्न माना जा सकता है। 'झोला पुस्तकालय' चलाने वाले का पुण्य परमार्थ किसी दार्शनिक, मनीषी, विद्वान् एवं लोक सेवी से किसी भी प्रकार कम नहीं वरन् कुछ बढ़ कर ही है। बीस पैसा प्रतिदिन नियमित रूप से निकालते रहने पर एक झोला पुस्तकालय चलाते रहने के लायक साहित्य मिल सकता है। जो इतना समय और श्रम देने को तत्पर हो जायेगा, उसे इतनी छोटी धनराशि किसी भी प्रकार भार रूप में प्रतीत न होगी। मन में भावना हो तो इतना भार, इतने बड़े परमार्थ का लाभ देखते हुए कोई भी विचारशील व्यक्ति बड़ी आसानी से उठा सकता है। भावना न हो तो फुरसत न होने और आर्थिक तंगी रहने का घिसापिटा बहाना मौजूद ही है। उसे मन समझाने के लिये कोई भी, कभी भी दुहरा सकता है। दो-चार दिन थोड़ी झिझक-संकोच यदि छुड़ा ली जाय, लोगों से मिलने-जुलने और अपनी बात कहने में जो झिझक अनुभव होती है उस आत्महीनता को हटा दिया जाय, तो फिर यह कार्य इतना अधिक आनन्ददायक प्रतीत होता है कि छोड़े नहीं छूटता।

ज्ञान योग को जनमानस में प्रतिष्ठापित कर देवत्व के जागरण का व्यापक अभियान गतिशील किया जा सकता है। जन्मदिन का प्रचलन और झोला पुस्तकालयों का हर प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा संचालन यह दो कार्य छोटे भले ही दीखें पर परिणाम में इतनें महान् हैं कि युग निर्माण जैसी समय की पुकार को इन्हीं के माध्यम से चमत्कारिक रीति से पूर्ण किया जा सकता है।

हम मनस्वी और आत्म-बल सम्पन्न बनें

कारण शरीर आत्मा का गहनतम स्तर है। उसमें भावनाओं का संचार रहता है। यहाँ निकृष्टता जड़ जमा ले तो मनुष्य नर-पशु ही नहीं रहता वरन् नर-पिशाच बनने के लिये अग्रसर होता जाता है। यदि यहाँ उत्कृष्टता के बीज जम जायें तो देवत्व की ओर प्रगति होनी स्वाभाविक है। जिसकी अन्तरात्मा में आदर्शवादिता के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा उत्पन्न हो जाय उसके लिये सांसारिक सुखों का कोई मूल्य नहीं, उसे अपनी आन्तरिक उत्कृष्टता से सम्पर्क में इतना अधिक सन्तोष एवं आनन्द मिलता है कि कितने ही बड़े कष्ट, आपदा, अभाव सहकर भी अपना मार्ग छोड़ने के लिये तैयार नहीं होता। ऋषि और महापुरुष इसी स्तर के निष्ठावान व्यक्ति होते हैं। साधन उनके भी सामान्य मनुष्यों जैसे ही होते हैं, पर उनकी आन्तरिक महत्ता जीवनक्रम को उत्कृष्टता की दिशा में इतनी तेजी से अग्रसर करती चली जाती है कि देखते-देखते दूसरों की तुलना में वह अन्तर आकाश-पाताल जैसा बन जाता है। हेय मनोभूमि के व्यक्ति किसी प्रकार मौत के दिन भी कराहते कुड़कुड़ाते व्यतीत कर पाते हैं। जब कि वे आदर्शनिष्ठा की चट्टान पर खड़े व्यक्ति स्वयं प्रकाशवान् होते और असंख्यों को प्रकाशवान करते हैं।

कारण शरीर में देवत्व के जागरण का प्रथम सोपान है-साहस। अपने भीतर की समस्त सद्भावना को समेट कर साधक को एक दुस्साहस पूर्ण छलांग लगानी पड़ती है, तब कहीं स्वार्थपरता और संकीर्णता का घेरा टूटता है। बहुत से लोग आदर्शवाद की विचारधारा को पसन्द करते हैं, पर जब कभी उन आदर्शों को कार्यान्वित करने का अवसर आता है तभी पीछे हट जाते हैं। संकोच, झिझक, भय, कृपणता कायरता का मिला-जुला जाल उन्हें कुछ भी साहसपूर्ण कदम नहीं उठाने देता। सोचते बहुत हैं, चाहते बहुत हैं पर कर कुछ भी नहीं पाते यह दुर्बलता ही आध्यात्म में सबसे बड़ी बाधा है। गीता का अर्जुन आत्म-निरीक्षण के उपरान्त अपनी इस दुर्बलता को अनुभव करता है और कहता है-

कार्पण्य दोषोपहत स्वभाव प्रच्छामि त्वां धर्म समूढ़-चेताः

"कायरता ने मेरे विवेक का अपहरण कर लिया है। इसलिये विमूढ़ बना मैं अर्जुन आप कृष्ण से पूछता हूँ।"

कर्तव्य-अकर्तव्य की गुत्थी कोई बहुत पेचीदा नहीं है। मानव जीवन का सदुपयोग-दुरुपयोग किसमें है, उस महत्व को बूझना कोई कठिन नहीं है जो अब तक सुना, समझा और विचारा है उसकी सहायता से ऐसा प्रखर कार्यक्रम आसानी से बन सकता है कि हम आज की कीचड़ में से निकल कर कल ही स्वर्ण सिंहासन पर बैठे दिखाई पड़ें। हम इसे जानते न हों ऐसी बात नहीं। बात केवल साहस के अभाव की है। कंजूसी, संकीर्णता, भीरुता हमें त्याग और बलिदान का कोई दुस्साहसपूर्ण कदम नहीं उठाने देती। यदि इस परिधि को तोड़ सकना किसी के लिये सम्भव हो सके तो अपने उस साहस के बल पर ही नर से नारायण बन सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्थ गुरु रामदास का विवाह हो रहा था। पुरोहित ने 'सावधान' की आवाज लगाई। उसने देखा जीवन के सदुपयोग का अवसर हाथ से निकला जा रहा है, ठीक यही समय सावधान होने का है। वे विवाह मण्डप से भाग खड़े हुए। उनके साहस ने उन्हें महामानव बना दिया। कितने ही लड़की-लड़के विवाह न करके कुछ बड़ा काम करने की बात सोचते रहते हैं पर जब समय आता है तब भीगी बिल्ली बन जाते हैं। पीछे जब समय गुजर जाता है, तब फिर कुड़कुड़ाते देखे जाते हैं। समर्थ गुरु की तरह जिनमें साहस हो वे ही आदर्शवादिता की दिशा में कोई बड़ा कदम उठा सकते हैं।

हर महापुरुष को अपने चारों ओर घिरे हुए पुराने ढर्रे के वातावरण को तोड़-फोड़ कर नया पथ प्रशस्त करने का दुस्साहस करना पड़ा है। बुद्ध, गाँधी, ईसा, प्रताप, शिवाजी, मीरा, विवेकानन्द, नानक, अरविन्द, भामाशाह, भगतसिंह, कर्वे, ठक्कर बापा, विनोबा, नेहरू आदि किसी भी श्रेष्ठ व्यक्ति का जीवन-क्रम परखें उनमें से हर एक ने पुरानी परिपाटी के ढर्रे को जीने से इन्कार कर अपने लिये अलग रास्ता चुना है और उस पर साहसपूर्वक अड़ जाने का साहस दिखाया है। उनके परिवार वाले तथाकथित मित्र अन्त तक इस प्रकार के साहस को निरुत्साहित ही करते रहे, पर उनने केवल अपने विवेक को स्वीकार किया और प्रत्येक 'शुभ-चिंतक' से दृढ़तापुर्वक असहमति प्रकट कर दी। शूरवीरों का यही रास्ता है। आत्म-कल्याण और विश्व-मंगल की सच्ची अकांक्षा रखने वाले को दुस्साहस को अनिवार्य रीति से शिरोधार्य करना ही पड़ता है। इससे कम क्षमता का व्यक्ति इस मार्ग पर देर तक नहीं चल सकता।

परमार्थ के लिये स्वार्थ को छोड़ना आवश्यक है। आत्म-कल्याण के लिये भौतिक श्री-समृद्धि की कामनाओं से मुँह मोड़ना पड़ता है। दोनों हाथ लड्डू मिलने वाली उक्ति इस क्षेत्र में चरितार्थ नहीं हो सकती। उन बाल बुद्धि लोगों से हमें कुछ नहीं कहना जो थोड़ा-सा पूजा-पाठ करके विपुल सुख साधन और स्वर्ग मुक्ति दोनों ही पाने की कल्पनायें करते रहते हैं दो में से एक ही मिल सकता है। जिसकी कामनायें प्रबल हैं वह उन्हीं की उधेड़बुन में इतना जकड़ा रहेगा कि श्रेय साधना एक बहुत दूरी की मधुर कल्पना भर बन कर रह जाती है और जिसे श्रेय साधना है उसे पेट भरने, तन ढकने में ही संतोष करना होगा तभी उसका समय एवं मनोयोग परमार्थ के लिये बच सकेगा। सृष्टि के आदि से लेकर अब तक के प्रत्येक श्रेयार्थी का इतिहास यही है। उसे भोगों से विमुख हो त्याग का मार्ग अपनाना पड़ा है। आत्मोत्कर्ष की इस कीमत को चुकाये बिना किसी का काम नहीं चलता।

आम लोगों की मनोभूमि तथा परिस्थिति कामना, वासना, लालसा, संकीर्णता और कायरता के ढर्रे में घूमती रहती है। इस चक्र में घूमते रहने वाला किसी तरह जिन्दगी के दिन ही पूरे कर सकता है। तीर्थ-यात्रा, व्रत-उद्यापन, कथा-कीर्तन, प्रणाम, प्राणायाम जैसे माध्यम मन बहलाने के लिये ठीक हैं, पर उनसे किसी को आत्मा की प्राप्ति या ईश्वर दर्शन जैसे महान् लाभ पाने की आशा नहीं करनी चाहिये। उपासना से नहीं साधना से कल्याण की प्राप्ति होती है और जीवन साधना के लिये व्यक्तिगत जीवन में इतना आदर्शवाद तो प्रतिष्ठापित करना ही होता है जिसमें लोक-मंगल के लिये महत्वपूर्ण स्थान एवं अनुदान सम्भव हो सके।

इस प्रकार के कदम उठा सकना केवल उसी के लिए संभव है जो त्याग, तप की दृष्टि से आवश्यक साहस प्रदर्शित कर सके। लोगों की निन्दा-स्तुति, प्रसन्नता-अप्रसन्नता का विचार किये बिना विवेक बुद्धि के निर्णय को शिरोधार्य कर सके। यदि वस्तुतः जीवन के सदुपयोग जैसी कुछ वस्तु पानी हो तो हमें साहस करने का अभ्यास प्रशस्त करते हुए दुस्साहसी सिद्ध होने की सीमा तक आगे बढ़ चलना होगा।

परमार्थ के लिये, आत्म-कल्याण के लिये कुछ अलग से समय और धन निकालने का साहस करने का अनुरोध हर परिजन से किया जाता रहा है। एक घण्टा समय और बीस पैसा प्रतिदिन नियमित रूप से निकालने के लिये कहा गया है। यह तप और त्याग का प्रथम अभ्यास है। निरर्थक, भौतिक और धार्मिक विडंबनाओं में लोग बहुत सारा समय नष्ट करते रहते हैं। पर सही दिशा में थोड़ा त्याग करना भी कठिन पड़ता है। सारा धन गुलछर्रे उड़ाने के लिये ही नहीं है। इन दोनों विभूतियों में अध्यात्म एवं लोक-मंगल का भी भाग है और ईमानदारी के साथ उसे दिया जाना चाहिये । इस प्रकार का कदम अपने को और अपनों को अखरता है तो भी साहसपूर्वक इतना त्याग और तप तो करना ही चाहिये।

यह अनुदान जितना-जितना बढ़ेगा उसी अनुपात से 'युग निर्माण' की सहस्त्रों योजनाओं को चरितार्थ किया जा सकना सम्भव होगा। यह तप त्याग ही किसी व्यक्ति की महानता का सच्चा इतिहास विनिर्मित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है। लोक-मंगल के लिये किसी का कितना अनुदान है, इसी कसौटी पर किसी की महानता परखी जाती है। सद्गुणों की आत्मिक सम्पदा भी तो उसी मार्ग पर चलते हुए अर्जित की जाती है। साहसी यह सब कर पाता है।

इन्द्रिय निग्रह में, तिक्षाओं के अभ्यास में, तप साधनाओं से इसी दुस्साहस की साधना की जाती है। अस्वाद व्रत, ब्रह्मचर्य व्रत, उपवास, सर्दी-गर्मी सहना, पैदल यात्रा, दान पुण्य, मौन आदि क्रिया-कलाप इसीलिये हैं कि शरीर यात्रा के प्रचलित ढर्रे को तोड़ कर आन्तरिक इच्छा के अनुसार कार्य के लिये शरीर तथा मन को विवश किया जाय। मनोबल बढ़ाने के लिये ही ये तपश्चर्यायें विनिर्मित की गयी हैं। मनोबल और साहस एक ही गुण के दो नाम हैं। मन को वश में करना एकाग्रता के अर्थ में नहीं माना जाना चाहिये। एकाग्रता बहुत छोटी चीज है। मन को वश में करने का अर्थ है आकांक्षाओं को भौतिक प्रवृत्तियों से मोड़ कर आत्मिक उद्देश्यों में नियोजत करना। इसी प्रकार आत्म-बल सम्पन्न होने का अर्थ है आदर्शवाद के लिये बड़े से बड़ा त्याग कर सकने का शौर्य।

हमें मनस्वी और आत्म-बल सम्पन्न होना चाहिये। आदर्शवाद के लिये तप और त्याग कर सकने का साहस अपने भीतर अधिकाधिक मात्रा में जुटाना चाहिये। तभी हमारा कारण शरीर परिपुष्ट होगा और उसमें देवत्व के जागरण की सम्भावना बढ़ेगी।

आत्मबल की दिव्य प्रेरणा

पतन के मौसम में गये-गुजरे ही बढ़ते हैं और उन्हीं का विस्तार होते देखा जाता है, किन्तु उत्थान का समय आते ही उसके भी चिह्न समय से पूर्व प्रकट होने लगते हैं । वह लक्षण है प्रतिभाओं का अभिवर्धन और उनकी भावनाओं में, गतिविधियों में, उत्कर्षवादी तत्त्वों का अभिवर्धन ।

अन्य जीव-जन्तुओं की भाँति मनुष्यों में भी अनगढ़ों की, गये-गुजरों की संख्या बढ़ती रहती है । यही वह चिह्न है, जिसके सहारे अगले दिनों अशुभ संभावनाओं का विस्तार होने जैसा अनुमान लगाया जा सकता है । अनीति का जब भी विस्तार हुआ है, तब उससे पूर्व यह पाया गया है कि घटिया व्यक्तित्व ही बढ़ने और क्रियाशील होने लगे हैं । इसी की प्रतिक्रिया परिस्थितियों में विपन्नता बढ़ने के रूप में देखी जाती है, किन्तु जब भावनाशील उत्कृष्टता की पक्षधर आशावादी व्यक्तित्वों की समर्थता और अभिवृद्धि होने लगे, तो समझना चाहिए कि वे संभावनायें निकट आ गईं, जो अनौचित्य को गिरातीं और प्रगति के उत्साह भरे आधार खड़े करती हैं ।

पिछले दिनों जब भी सराहनीय क्रान्तियाँ हुई हैं, तब अनुकूलता आकाश से नहीं बरसी, वरन् मात्र इतना हुआ है कि औचित्य की पक्षधर प्रतिभायें बढ़ीं, सुविस्तृत हुईं और कार्यरत दृष्टिगोचर हुई हैं । मनुष्य की सामर्थ्य असीम है । जब वह प्रकट होती है, तो प्रतिभा कही जाती है । यदि वह उच्च स्तर की हो, तो समझना चाहिए कि उनका समुदाय छोटा अथवा स्वल्प साधन वाला होते हुए भी अपने मनोबल के आधार पर महत्वपूर्ण अनुकूलतायें उपार्जित कर लेता है । साथियों की भी कमी नहीं रहती, अनुयायियों का अभाव भी नहीं देखा जाता, सबसे बड़ी बात यह है कि उनके अन्तराल में ऐसे तूफान उठते हैं, जो उच्च स्तरीय वातावरण बनाये बिना रह सकते ही नहीं। व्यक्तिगत वरिष्ठता के चरितार्थ होने पर ऐसा भी होते देखा गया है कि उस उत्साह में असंख्यों भाव-तरंगित होने लगते हैं । यह समुदाय ही उन महाक्रान्तियों की भूमिका बनाता है, जिसे ऐतिहासिक माना और सराहनीय कहा जाता है । कुछ के अन्तराल में उठी आदर्श की उमंगें अन्यान्यों को भी अपने रंग में रँग लेती हैं और देखते-देखते उस दिशा निर्धारण पर चल पड़ने वाले असंख्यों मनस्वी ऐसे कार्य कर गुजरते हैं, जिनके अनुकरण करने वाले आश्चर्यजनक संख्या में दीख पड़ते हैं । अनुकूलता भी अपने अनुरूप अनेक साधकों को एकत्रित कर लेती है ।

जिन परिस्थितियों में कोई बड़ा काम बन पड़ने की संभावना नहीं होती, उनमें अनौचित्य को घटाने या मिटाने की संभावना इसलिए नहीं दीखती कि प्रतिकूलताओं का पलड़ा बहुत अधिक भारी दीखता है और टकराने पर जीतने के लक्षण भी बहुत कम दीख पड़ते हैं, हार की संभावनाओं को देखते हुए उत्साह भी ठण्डा पड़ जाता है । किन्तु होता कुछ ऐसा विलक्षण एवं विपरीत है, जिसमें आशा और अपेक्षाओं का अनुकूल प्रवाह बहने लगता है और अप्रत्याशित सफलताओं के आधार न जाने कहाँ से और कैसे बन जाते हैं । क्रान्तियाँ प्रायः अप्रत्याशित ही हुई हैं । उनके लिए न जाने कहाँ से उत्साह उभरा-उफना कि सहयोगियों का दल दौड़ता चला आया और वे परिस्थितियाँ बन गईं जिनकी साधारण बुद्धि से कोई आशा या संभावना नहीं दीख पड़ती थी । हल्के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतीत होने वाले व्यक्ति भारी पड़ते हैं और इतने बड़े काम कर दिखाते हैं, जिनकी पूर्व कल्पना कदाचित ही किसी में रही हो । असाधारण शक्ति आदर्शों को अपनाने से उभरती है । प्रतिकूलताओं में बदल देने वाले अवसर यों तो कभी-कभी सामान्य मनस्वियों को भी मिल जाते हैं, पर सर्वांगपूर्ण सर्वतोमुखी प्रतिभा उन्हीं में उभरती है, जिनमें आदर्शों के पराक्रम कर गुजरने के उल्लास की उमंगें अपने अन्तर में ज्वार-भाटों की तरह उठती-उमगती दीखती हों ।

व्यवसाय बुद्धि सदा हानि-लाभ का हिसाब लगाती है और वही करती है, जिसमें अनुकूलता दृष्टिगोचर होती है । सफलता की संभावना के अवसर असंदिग्ध रूप से नजर आते हैं, किन्तु आदर्शवादी पराक्रमों में तो तात्कालिक घाटा ही दीख पड़ता है । व्यवसाय बुद्धि, ऐसे जोखिम भरे कदम उठाने से रोकती है । मात्र आदर्शों से प्रेरित साहस ऐसे समर्थन करता है, जिसमें आदर्शों की रक्षा में घाटा स्पष्ट दीखता है किन्तु अन्तःकरण वैसा कर गुजरने के बिना रुकता ही नहीं। बलिदानियों की परम्परा मात्र उन्हीं के गले उतरती है, जिनके अन्तःकरण में दैवी प्रयोजनों के लिए अपना सब कुछ निछावर कर देने हेतु संकट उठाने के साथ-साथ उत्साह भरी उमंगें ही हिलोरें लेती हैं और घाटे में नफा और नफे में घाटा देखती हैं । यह दैवी प्रेरणा है । वह अपने साथ अकूत शक्ति लेकर कार्यक्षेत्र में उतरती है और न जाने कहाँ कहाँ से संबंधी-सहयोगियों की प्राणवान मण्डली बुलाकर साथ चलने के लिए विवश कर देती है । ऐसे प्रसंगों में देखा गया है कि संख्या में कम और क्षमता की दृष्टि से साधारण दीखने वाले लोग भी साहस की दृष्टि से अतिशय बलिष्ठ सिद्ध होते हैं । यों आरम्भ में ऐसे लोगों के बारे में सामान्यतया यह धारणा नहीं बनती कि वे इतने बड़े शौर्य-बलिदान कर गुजरने के लिए उच्च स्तरीय साहस दिखा सकेंगे ।

शरीर-बल, साधन-बल, संगठन बल आदि कितने ही लोगों में होते हैं, पर वे उनका उपयोग भी साधारणतया हेय स्तर के कार्यों में ही कर पाते हैं। त्याग-बलिदान में एक प्रकार घाटे की, जोखिम की स्थिति दीखती है, साथ ही वहाँ यह भी प्रतीत होता है कि घाटे के साथ ही असफलता भी मिल सकती है । इतने पर भी यदि आत्मबल उच्च स्तरीय साहस उभार दे, तो यही समझना चाहिए कि आत्मबल के रूप में दैवी प्रेरणा कुछ अद्‌भुत कर गुजरने की प्रेरणा भर रही है । नवयुग के अवतरण पर व्यक्ति में ऐसी ही प्रेरणाओं का बाहुल्य उभरता है और असंभव को संभव बना देता है ।

महान् परिवर्तन इसी प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न होते रहे हैं व आगे भी महाकाल साधारण मनुष्यों को ही माध्यम बनाकर उनमें नवीन चेतना फूँककर उन्हें जीवन्त प्राणवान के रूप में उभार कर उनसे असंभव प्रतीत होने वाले कार्य सम्पन्न कर दिखाएगा । मानव में निहित यह संभावना ही युग परिवर्तन का आधार है।

प्रतिभा संवर्धन के दो आधार साहसिकता एवं सुव्यवस्था

एक कहावत है कि "ईश्वर मात्र उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं" । इसी से जुड़ती हुई एक और उक्ति है—जिसमें दैव पर "दुर्बल का घातक" होने का आरोप लगाया गया है । गीताकार का कथन है कि "मनुष्य अपना शत्रु आप है और स्वयं अपना मित्र भी । यह उसकी इच्छा पर निर्भर है कि अस्त-व्यस्तता अपनाकर अपने को दुर्गति के गर्त में धकेले, अथवा चुस्त दुरुस्त रहकर प्रगति के शिखर पर निर्बाध गति से आगे बढ़ता चला जाय ? गीताकार ने आगे चलकर अर्जुन के बहाने हर विचारशील से यह आग्रह किया है कि "अपने को उठाने में लगो, गिरते चलने की धृष्टता मत करो" ।

संसार कितना भी सुखद, सुन्दर, सुविधाजनक क्यों न हो, पर अपने में त्रुटियाँ रहने पर वह सारा विस्तार निरर्थक बन कर रहेगा । अपनी आँखें काम न करें, तो संसार भर का दृश्य और सौन्दर्य समाप्त हुआ समझा जाना चाहिए । कानों की श्रवण शक्ति चली जाय, तो प्रवचनकर्त्ता, परामर्शदाता और गायक वादक निरर्थक बन गये ही समझे जा सकते हैं । दिमाग खराब हो चले तो समझना चाहिए कि संसार का हर मनुष्य उलटी चाल चल रहा है । पेट खराब हो जाय या रक्त में विषाक्तता घुस पड़े, तो दुर्बलता रुग्णता से होकर अकाल मृत्यु का भयंकर आक्रमण अब तब में होने ही जा रहा है, यह मानना चाहिए ।

प्रगति का इतिहास, सुनियोजित तन्मयता और तत्परता की आधारशिला पर ही लिखा गया है । इनके अभाव में किसी को पूर्वजों की कमाई या सुविधाजनक परिस्थितियों का अम्बार ही हाथ क्यों न लग जाय, वह सारे वैभव को फुलझड़ी की तरह जलाकर क्षण भर का मनोरंजन कर लेगा और फिर सदा सर्वदा पश्चाताप से सिर धुनता रहेगा । हमारी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्मों की कलम ही अपने भविष्य की भली बुरी संभावना रचती रही है ।

शरीर का भारी, लम्बा तगड़ा होना एक बात है और हिम्मत का धनी होना सर्वथा दूसरी । तगड़ापन कुछ अच्छा और आश्चर्यजनक तो लगता है, पर उसमें इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति, हिम्मत और प्राणऊर्जा की कमी हो तो उसे कायरता और भीरुता के कारण चिन्तित, शंकाशील, खिन्न-उद्विग्न ही देखा जायगा । तनिक सी कठिनाई आ जाने पर राई को पर्वत की तरह बड़ा बना लेने और किसी प्रकार बचने बचाने की ही कामना बनी रहेगी । वह यह समझ ही नहीं सकता कि कठिनाइयाँ कागज के बने हाथी की तरह बड़ी और डरावनी तो होती हैं, पर मनस्वी के प्रतिरोध की एक ठोकर भी वे सह नहीं सकतीं ।

हर छोटे परमाणु में अजस्र शक्ति भरी होती है । यदि उसके विस्फोट का नियोजन किया जा सके, तो प्रतीत होगा 'न कुछ' दिखने वाले में 'सब कुछ' स्तर की सशक्तता भरी हुई है । आवश्यकता मात्र प्रसुप्ति के जागरण भर की है । औसत आदमी का इतना ही नगण्य सा स्तर जागृत रहता है, जिससे वह पेट एवं परिवार की गाड़ी किसी प्रकार धकेलता रहे । जिनके अन्तराल में सुनियोजित उच्च स्तर की महत्वाकांक्षाएँ अपना ताना बाना बुनती रहती है, वे इतने बड़े कार्य सम्पन्न कर लेते हैं, जिन्हें देखकर साथियों को आश्चर्य चकित रह जाना पड़े । वाह्य दृष्टि से एक जैसे लगने वाले व्यक्तियों के बीच भी जमीन आसमान जितना अन्तर पाया जाता है । यह अन्तर कहीं बाहर से आ धमका हुआ नहीं होता, वरन् व्यक्ति ने उनकी संरचना अपने हाथों स्वयं ही की होती है । हिम्मत बढ़ाना, साहस जुटाना, पराक्रम दिखाना और जो अनुचित है उससे लड़ पड़ने में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे असंभव तो क्या कठिन भी माना जा सके । प्रगति भीतर से आरंभ होती है और बाहर तो उसकी तदनुरूप परिणति-परछाईं ही दिखाई पड़ती है ।

झाड़ी, अंधेरे में भूत बनकर दिल दहला देती है । रस्सी को सांप समझने वाले की अंधेरे के माहौल में घिग्गी बँध जाती है । ''शंका डायन मनसा भूत'' की कहावत सोलहों आने सच है । हिम्मत वाले लम्बी दुर्गम यात्राएँ एकाकी पूरी करते हैं, पर कायरों को रात के समय पेशाब करने बाहर जाना पड़े, तो किसी साथी को जगाना पड़ता है । राणा सांगा को लड़ाई के मैदान में अस्सी से अधिक घाव लगे थे, पर वे कुछ भी परवाह किये बिना तब तक दोनों हाथों से तलवार चलाते रहे, जब तक कि उनके प्राण नहीं निकल गए। भीष्म पितामह का शरीर चुभे हुए बाणों के ऊपर टंगा हुआ था, पीड़ा बहुत थी, पर उनने मौत से स्पष्ट कह दिया था कि उत्तरायण सूर्य होने में अभी बहुत दिन हैं; तब तक मृत्यु को वापस लौटना चाहिए, जब तक इच्छित मुहूर्त न आ जाय । मौत को मनस्वी का कहना मानना ही पड़ा । किसी ने सच ही कहा है बहादुर जिन्दगी में एक बार मरते हैं, पर कायरों को तो पग-पग पर मरना पड़ता है ।

इसें दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि मनुष्य अपनी मानसिक क्षमता का मात्र सात प्रतिशत ही, शरीर यात्रा के साधन जुटाने भर में आजीवन गंवाता-खपाता रहता है । जबकि उसकी ९३ प्रतिशत सामर्थ्य, सोई, खोई, मरी मूर्छित या अविज्ञात स्थिति में ही पड़ी रहती है । अपनी दौलत भरी तिजोरी की चाबी खो देने पर कोई दरिद्रियों की तरह दुर्गतिग्रस्त स्थिति में फिरे, तो उसके लिए कोई क्या कुछ करे ? यदि आत्म निर्माण में जुटा जा सके, बुरी आदतों को कूड़े करकट की तरह बुहारा जा सके, दृष्टिकोण में मानवी गरिमा के अनुरूप मान्यताओं का समावेश किया जा सके, तो समझना चाहिए कि वन मानुष के नर-नारायण में बदल जाने जैसा कायाकल्प उपलब्ध हो गया । उसे प्रकारान्तर से व्यवस्था बुद्धि का विकास कहा जा सकता है । अपना एवं दूसरों का प्रबंध कर सकना यों एक बहुत मामूली व्यवस्था मालूम पड़ती है, पर सही बात यह है कि उससे बढ़कर और कोई गौरवास्पद वैभव-वरदान है नहीं ।

सेनापति भी आरम्भ में मामूली सिपाही की तरह भर्ती होता है । फिर अधिकारी देखता रहता है कि उनमें से किनमें व्यवस्था बुद्धि है । वह अनुपात जिनमें जितना बढ़ा चढ़ा पाया जाता है, वह उतनी ही भारी जिम्मेदारियाँ उठाता और अपने कौशल के बल पर असंभव को संभव कर दिखा जाता है । गौरवान्वित वे इसी आधार पर होते रहते हैं । मिलों, फैक्ट्रियों, कारखानों, उद्योगों की प्राण शक्ति कुशल प्रबंधक संचालकों पर केन्द्रित रहती है । उन्हीं की दूरदर्शिता से छोटे कारखाने बढ़कर आशातीत प्रगति का श्रेय पाते और अपने कौशल से हर किसी को अचम्भे में डालते हैं । संस्थानों को शानदार स्तर और आन्दोलनों को छोटे शुभारंभ से आगे बढ़ाते हुए आशातीत सफलता तक यही प्रतिभावान पहुँचाकर दिखाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अंग्रेजी जमाने में प्रान्तों के शासनाध्यक्ष ''गवर्नर'' कहलाते थे । केन्द्रीय सरकार का सूत्र संचालक गर्वनर जनरल (वायसराय) कहलाता था । गवर्नर शब्द का सीधा अर्थ है 'प्रबंधक' । अपनी इसी विशेषता के कारण इंजीनियर बड़े-बड़े निर्माण कार्य सम्पन्न करते और व्यवसायी छोटा सा उद्योग खड़ा करके देखते-देखते धन कुबेर बनते हैं । विपत्तियों से जूझने और प्रगति के महत्त्वपूर्ण आधार खड़े करने में जो भी सफल हुए हैं, उनमें साहसिकता और सुव्यवस्था का गुण सुनिश्चित रूप से विद्यमान रहा है।

शक्ति, शक्ति है । उसे भले काम की तरह बुरे काम में भी लगाया जा सकता है । दैत्य, दानव, आततायी, आतंकवादी और अनाचारी तक इसी विशेषता के आधार पर रोमांच खड़े कर सकने वाले दुष्कर्म कर बैठते हैं । अनीति का आचरण करते हुए भी, अपने आतंक से दूर-दूर तक विपन्नता खड़ी कर देने वाले दस्यु और तस्कर तक अपनी सफलता का ढिंढोरा पीटते समय कारण एक ही बताते हैं कि उनने अपने साहस और व्यवस्था बुद्धि के सहारे ही यह कमाल दिखाये हैं ।

सद्गुण एक दैवी विभूति

सद्गुणों में अनेक धर्म धारणाओं और व्रत अनुशासनों का वर्णन किया जाता है । उनके कारण स्वर्ग-मोक्ष की, ऋद्धि-सिद्धि की विभूतियाँ हस्तगत होने की बात कही जाती है । ऐसे प्रतिपादन प्राय: संयम और परमार्थ की महत्ता को ही बताते हैं । इन समस्त उपचारों का उद्देश्य एक ही है, कि व्यक्तित्त्व हर दृष्टि से स्फूर्तिवान एवं श्रमशील बने । मनोयोगपूर्वक कार्य में संलग्न होने में अपनी प्रतिष्ठा, वरिष्ठता एवं सफलता, समर्थता की अनुभूति करे । मानवी गरिमा के अनुरूप अपने गुण कर्म स्वभाव को विनिर्मित कर लेना, संसार में एक नये देवता की अभिवृद्धि करना है । व्यक्ति के बहिरंग पर जो कुछ आच्छादित है, उसका अनेकानेक अनुकरण करते और उसके प्रभाव से अनुप्राणित होते हैं । यहाँ तक कि मरने के उपरान्त भी हरिश्चन्द्र, भगीरथ जैसों की कथागाथा अक्षुण्ण बनी रहकर, अनेकानेक को प्रकाश देती रहती है । यही बात अन्तरंग के सम्बन्ध में भी है। यदि चिन्तन, चरित्र, व्यवस्था, आस्था, विश्वास, श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा की उच्च स्तरीय स्थिति है, तो उसका प्रभाव-परिणाम धारणकर्त्ता तक ही सीमित नहीं रहता । उसका प्रभाव न जाने कितनों को; विशेषतया सम्पर्क क्षेत्र वालों को उठाने, उछालने, की क्रिया-प्रक्रिया सम्पन्न करता है । तेजोवलय अन्तरिक्ष में उड़ता है और जहाँ भी पहुँचता है, वहीं अपने अनुरूप चेतना—वसंत खिलाता चलता है ।

पारस को छूकर लोहा, सोना बनता है या नहीं ? इसमें अभी संदेह है । पर यह सुनिश्चित है कि प्रतापी व्यक्ति असंख्यों, को अपना अनुयायी सहयोगी बना लेते हैं । महामानवों में से अधिकांश की जीवन गाथा यही बताती हैं, कि वे अपनी प्रामाणिकता और प्रखरता के बल पर हर दिशा से प्राण शक्ति संग्रह करते हुए, न जाने कहाँ से चलकर कहाँ जा पहुँचे । मात्र अपने प्रभाव से दूसरों द्वारा ऐसे-ऐसे कृत्य करा लेने में सफल हुए, जिन्हें वे कदाचित स्वयं हाथ में लेते तो न कर पाते । ऐसी दिव्य क्षमता को अर्जित कर लेना और उससे अनेक की अस्त व्यस्तता को सुनियोजितता में बदल देना, सफल वरदान यही है । दान देने की तरह, दान दिलाना भी पुण्य मानना चाहिए । साहसिकता और सुव्यवस्था के दो गुणों में जिस किसी को भी अभ्यस्त अनुशासित किया जाय, समझना चाहिए कि उसकी सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार किसी ने खोल दिया। भले ही उस अविज्ञात शक्ति पुंज की जय-जयकार कहीं न होती हो ।

मनुष्यों में से अधिकांश की आकृति-प्रकृति लगभग मिलती जुलती है । उनका खानपान, सोना जागना आदि भी एक सा ही होता है । कोई तो साधनों-अभावों का रोना रोता रहता है, किन्तु किसी की प्रतिभा उन्हीं साधनों अवसरों के रहते चौगुना—सौगुना काम करा देती है । उसका यश, प्रभाव और कौशल इतना बढ़ा देती है, कि देखने वाले तक आश्चर्यचकित रह जाते हैं । साथ ही सहयोगियों की सेना भी अनायास ही खिंचती घिसटती चली आती है । रीछ वानरों की, ग्वाल बालों की, भिक्षु परिव्राजकों की, सत्याग्रहियों की टोलियों को निमंत्रित या गठित करने कौन कहाँ गया था ? फूलों पर तितलियाँ और मधुमक्खियाँ न जाने कहाँ-कहाँ से दौड़ती चली आती हैं ? महामानवों के असुविधा भरे जीवन भी ऐसे आकर्षक होते हैं, कि उसी कष्ट साध्य परिपाटी को अपनाने के लिए अनेकानेक आतुर होते और कदम से कदम मिलाते आदर्शवादी संरचना के लिए प्रयाण करते देखे गये हैं ।

संसार में जितनी भव्यताएँ दीख पड़ती हैं, वे मात्र साधनों के सहारे ही खड़ी नहीं हो गयीं । उनके पीछे किन्हीं सृजन शिल्पियों की मेधा ने ऐसा जादू चमत्कार दिखाया, कि ठीक समय पर उसकी योजना बन गयीं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ढाँचा खड़ा हो गया, उसमें प्रयुक्त होने वाले तारतम्य को बिठा दिया गया और फिर स्वप्नों को साकार बनाने में अपने आपको पूरी तरह खपा दिया । इसी प्रक्रिया का नाम सफलता है । उसे वरण करने के लिए किन्हीं दूसरों की मनुहार करने की जरूरत नहीं है । यदि व्यक्ति अपनी समझ को क्रमशः तेज करता चले, क्रमशः अधिक बड़ी जिम्मेदारियाँ कंधों पर उठाता और उन्हें पूरी करता चले, तो समझना चाहिए कि इसी विकसित प्रबंध शक्ति के आधार पर वह जहाँ भी जायेगा, सरताज बन कर रहेगा । यही सबसे बड़ी दैवी विभूति है, जो व्यक्ति को साधारण से असाधारण बनाती है ।

प्रतिभा संवर्धन हेतु निर्धारित विज्ञान सम्मत प्रयोग—उपचार

प्रतिभा परिष्कार के लिए व्यक्ति की प्रामाणिकता और प्रखरता के दोनों पक्ष समान रूप से मजबूत बनाने पड़ते हैं । भावभरी उमंग—उत्साहों से सनी एकाग्र तन्मयता उभारनी पड़ती है । साथ ही समय को श्रम के साथ ही अविच्छिन्न रूप से जोड़े रहने वाली तत्परता या श्रमशीलता कार्यान्वित करनी पड़ती है । संकीर्ण स्वार्थपरता के दायरे से आगे बढ़ना होता है; ताकि सादा जीवन उच्च विचार की रीति—नीति अपनाने के साथ ही बचे समय, श्रम और साधनों को सत्प्रवृत्ति संवधर्न में—लोक सेवा में लगाया जा सके । उच्चस्तरीय प्रतिभा का संवर्धन इसी प्रकार होता है ।

यहाँ प्रतिभा का आशय सदैव आदर्शोन्मुख बुद्धि व भावना के समन्वित विकास से लिया जाना चाहिए। ऐसे प्रतिभा सम्पन्न ही स्वयं को प्रेरणा पुंज आदर्शों के प्रतीक रूप में उभारते एवम् स्वयं को ही नहीं, समय को भी निहाल करते हैं । चर्चा इसी प्रतिभा के विकास से संबंधित उपचारों की चल रही है ।

क्या ऐसा भी संभव है कि बालकों को लिखने की पट्टी पर मनके सरका कर गिनती सिखाने, अथवा तीन पहिए की गाड़ी का सहारा लेकर चलना सिखाने की तरह, किन्हीं अभ्यासों के माध्यम से जन साधारण को भी प्रतिभा सम्पादित करने की दिशा में अग्रसर किया जा सके ? उत्तर ''हाँ'' में भी दिया जा सकता है । जन सामान्य शारीरिक अंग—अवयवों की पुष्टाई के लिए अखाड़े जाने की विधि—व्यवस्था बताते हैं । अखाड़ों में निर्धारित अभ्यासों को अपनाना, शारीरिक अंगों को सशक्त बनाने के लिए व्यायामों का उपक्रम एवम् आहार में परिवर्तन अभीष्ट माना जाता है । ऐसे ही कतिपय साधना उपक्रम प्रतिभा परिष्कार के संदर्भ में भी निर्धारित हैं और वे बहुत हद तक सफल होते भी देखे गये हैं । ऐसे कुछ आधारों का, जिनका ब्रह्मवर्चस् की शोध प्रक्रिया में प्रयोग किया जाता है, अथवा जिन्हें वर्तमान या संशोधित रूप में प्रयुक्त किये जाने की संभावना है, उनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है ।

(१) स्वसंकेत (ऑटोसजेशन):—शान्त वातावरण में स्थिर शरीर और एकाग्र मन से बैठा जाय । भावना की जाय कि अपने मस्तिष्क केन्द्र से निस्सृत प्राण विद्युत् का समुच्चय शरीर के अंग—अवयवों में अपेक्षाकृत अधिक—मात्रा में प्रवाहित हो रहा है । शिथिलता का स्थान समर्थ सक्रियता ग्रहण कर रही है । उस आधार पर प्रत्येक अवयव पुष्ट हो रहे हैं । इन्द्रियों की क्षमता का अभिवर्धन हो रहा है । चेहरे पर चमक बढ़ रही है । बौद्धिक स्तर में ऐसा उभार आ रहा है जिसका अनुभव प्रतिभा परिवर्धन के रूप में अपने को तथा दूसरों को हो सके।

वस्तुतः स्वसंकेतों में ही मानसिक काया कल्प का मर्म छिपा पड़ा है । श्रुति की मान्यता है कि —''यो यच्छ्रद्धः स एव सः'' । अर्थात् जो जैसा सोचता और अपने संबंध में भावना करता है वह वैसा ही बन जाता है । विधेयात्मक चिन्तन, महापुरुषों के गुणों के अपने अन्दर समावेश होने की भावना से, सजातीय विचार खिंचते चले आते हैं व वांछित विद्युत् प्रवाहों को जन्म देने लगते हैं ।

मनोवैज्ञानिक इसी आधार पर व्यक्तित्त्व में, विचार प्रवाह में परिवर्तन लाने की बात कहते हैं । उनका मत है कि जैसे पृथ्वी के चारों ओर आयनोस्फीयर है, उसी प्रकार मानवी मस्तिष्क के चारों ओर भी एक 'आयडियोस्फीयर' होता है । यह वैसा होता है जैसा मनुष्य का चिन्तन—क्रम होता है । क्षण मात्र में यह बदल भी सकता है और पुनः वैसा ही सोचने पर पूर्ववत् भी हो सकता है । इसी चिन्तन प्रवाह के आदर्शोन्मुख, श्रेष्ठता की ओर गतिशील होने पर व्यक्ति का मुखमण्डल चमकने लगता है, और वह दूसरों को आकर्षित करता है । ऐसे ही व्यक्ति के कथन प्रभावोत्पादक होते हैं; इस सीमा तक कि अन्य अनेक में भी परिवर्तन ला सकें ।

एक प्रकार से स्व-संकेतों द्वारा अपने आभामंडल को एक सशक्त चुम्बक में परिणित किया जाता है, मनोवैज्ञानिक कहते हैं—'थिंक एण्ड ग्रो रिच, अथवा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'एडाप्ट पाजिटिव प्रिंसीपल ट्रूडे' । आशय यह है कि सोचिये, विधेयात्मक सोचिये एवं अभी इसी क्षण सोचिये, ताकि आप स्वयं को श्रेष्ठ बना सकें । सारे महामानव स्व-संकेतों से ही महान बने हैं । गाँधी जी ने हरिश्चन्द्र के नाटक को देखकर स्वंय को संकेत दिया कि सत्य के प्रयोगों को जीवन में उतारो व उसके परिणाम देखो । उनकी प्रगति में इस चिंतन की कितनी महान् भूमिका थी, यह सभी जानते हैं ।

ब्रह्मवर्चस् की शोध प्रक्रिया में ऑडियो एवं वीडियो कैसेट का आश्रय लेकर ईयरफोन द्वारा संकेत दिये जाते हैं । कुछ विराम के बाद पुनः उन सभी प्रसंगों पर चिन्तन करते रहने को कहा जाता है । इससे प्रभावशाली विद्युत् प्रवाह जन्म लेने लगता है । इसकी प्रत्यक्ष परिणति जी. एस. आर. बायोफीडबैक के रूप में देखी जा सकती है; जिसमें व्यक्ति चिन्तन द्वारा ही अपने त्वचा प्रतिरोध को घटाता—बढ़ाता व स्वयं भी उसे देखता है । इसी प्रकार श्वसन दर, हृदय की गति, रक्त चाप आदि को स्व-संकेतों से प्रभावित किया जा सकता है । विपश्यना ध्यान एवं जैन ध्यान पद्धति इसी स्व-संकेत पद्धति पर आधारित है । कोई कारण नहीं कि सही पद्धति का आश्रय लेने पर प्रतिभा में वांछित परिवर्तन उत्पन्न न किये जा सकें ।

(२) दर्पण साधनाः—यह मूलतः आत्मावलोकन की, आत्मपरिष्कार की साधना है । बड़े आकार के दर्पण को सामने रखकर बैठा जाय । सुखासन में जमीन पर या कुर्सी पर बैठा जा सकता है। खुले शरीर के प्रत्येक भाग पर विश्वास भरी दृष्टि से अवलोकन किया जाय । पहले अपने आपके बारे में चिन्तन कर, अंतः के दोष—दुर्गुणों से मुक्त होते रहने की भावना की जाय । वह परम सत्ता बड़ी दयालु है। भूत को भुलाकर अब यह अनुभूति की जाय कि भीतरी संरचना में प्राण विद्युत् बढ़ रही है और उस की तेजस्विता त्वचा के ऊपरी भाग में चमक बढ़ाती हुई अंग—अंग से फूटी पड़ रही है । पहले जो निस्तेज—क्षीण, दुर्बल काय सत्ता थी, यह बदल गयी है एवं शरीर के रोम—रोम में विद्युत् शक्ति ही छायी हुई है । विकासक्रम में उभार आ रहा है । प्रतिभा परिवर्धन के लक्षण निश्चित रूप में दीख पड़ रहे हैं एवं सामने बैठी आकृति में अपना अस्तित्व पूर्णतः विलीन हो रहा है । यह ध्यान प्रक्रिया लय योग की ध्यान साधना कहलाती है और व्यक्ति का भाव कल्प कर दिखाती है ।

(३) रंगीन वातावरण का ध्यानः—हर रंग में सूर्य किरणों के अपने—अपने स्तर के रसायन, धातु तत्व एवं विद्युत् प्रवाह होते हैं । वे शरीर और मस्तिष्क पर अतिरिक्त प्रभाव छोड़ते हैं । इनमें से किसी का अनुपात घट-बढ़ जाता है, अथवा विकृत असंतुलित हो जाता है, तो कई प्रकार के रोग—उत्पात उठ खड़े होते हैं । इस हेतु रंगीन पारदर्शी काँच के माध्यम से अथवा विभिन्न रंगों के बल्बों द्वारा पीड़ित अंग पर अथवा अंग विशेष पर उसकी सक्रियता बढ़ाने के लिए रंगीन किरणों को आवश्यकतानुसार निर्धारित अवधि तक लेने का विधान है । प्रतिभा परिवर्धन हेतु उचित रंग विशेष का आँखें बन्द करके ध्यान भी किया जाता है । कुछ देर तक सप्त वर्णों के क्रम में से निर्धारित रंग, (बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल) के फ्लेशेस स्ट्रोबोस्कोप यंत्र द्वारा चमकाये जाते हैं एवं आँख पर पहने चश्मे में वही वर्ण विशेष सतत् दीखता रहता है । इसका प्रभाव मस्तिष्क के सूक्ष्म केन्द्रों, चक्र संस्थानों आदि पर पड़ता है । नियमित रूप से कुछ देर के ध्यान के क्रमशः अभ्यास करते रहने पर वांछित परिवर्तन प्रक्रिया आरंभ हो जाती है । ध्यान यह किया जाता है कि संसार में सर्वत्र उसी एक रंग की सत्ता है, जो अपने शरीर में प्रवेश करके अभीष्ट विशेषताओं की ऊर्जा शरीर में प्रवाहित करती है । यह ध्यान पाँच से दस मिनट तक किया जाता है । विशेषज्ञों के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकृति के साधकों के लिए भिन्न-भिन्न वर्णों का निर्धारण करके ही यह प्रक्रिया आरम्भ की जाती है ।

(४) प्राणाकर्षण प्राणायामः—इस समस्त ब्रह्माण्ड में प्राणतत्व भरा पड़ा है । उसमें से साधारणताया प्राणी को उतनी ही मात्रा मिलती है, जिससे वह अपना जीवन निर्वाह चलाता रहे । इससे अधिक मात्रा खींचने की आवश्यकता तब पड़ती है, जब किन्हीं उच्च उद्देश्यों के लिए प्राण चेतना का अधिक अंश आवश्यक हो । शरीरगत प्राण एवं समष्टिगत महाप्राण का संयोग शरीर, स्थित प्राण का नवीनीकरण ही नहीं करता, प्राण धारण कर उसे प्रयुक्त करने की क्षमता को भी बढ़ाता है । चेतना जगत में प्राण ही एक ऐसी शक्ति है जो विद्युत् ऊर्जा के रूप में "निगेटिव आयन्स" के रूप में विद्यमान है। इनकी कमी व्यक्ति को रोगी, निस्तेज, प्राणहीन बनाती है, उसकी प्रभावोत्पादकता को कम करती है एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रचुर मात्रा उसे निरोग, तेजस्वी, प्राण सम्पन्न बनाकर उसकी प्रभाव क्षमता में अभिवर्धन करती है ।

प्रतिभा परिवर्धन के लिए एक विधान प्रणाकर्षण प्राणायाम का है । इसकी विधि यह है कि कमर सीधी, सरल आसन में हाथ गोदी में, मेरुदण्ड सीधा रखकर बैठा जाय । ध्यान किया जाय कि बादलों जैसी शक्ल के प्राण का उफान हमारे चारों ओर उमड़ता चला आ रहा है और हम उसके बीच निश्चिन्त प्रसन्न मुद्रा में बैठे हैं । नासिका के दोनों छिद्रों से धीरे—धीरे साँस खींचते हुए भावना की जाय कि साँस के साथ प्रखर प्राण की मात्रा भी घुली हुई है और वह शरीर में प्रवेश कर रही है । अंग—अवयवों द्वारा वह धारण की जा रही है । खींचते समय प्राण के प्रवेश करने की व सांस रोकते समय अवधारण की भावना की जाय । धीरे—धीरे सांस बाहर निकालने के साथ यह विश्वास किया जाय कि जो भी अवांछनीयताओं के, दुर्बलता के तत्व भीतर थे, वे साँस के साथ घुलकर बाहर जा रहे है । फिर लौटने वाले नहीं हैं। इस प्राणायाम को आरंभ में पाँच से दस मिनट ही करना पर्याप्त है । क्रमशः यह अवधि बढ़ाई जा सकती है । शोध संस्थान द्वारा यह जाँचा जाता है कि प्राण धारण क्षमता कितनी बढ़ी, रक्त में से दूषित तत्व कितनी मात्रा में निकले तथा रक्त में आक्सीजन का अनुपात कितना बढ़ा । यही निरोगता का, प्रतिभाशीलता का चिह्न है ।

(५) सूर्य वेधन प्राणायामः—ध्यान मुद्रा में बैठा जाय । कपड़े शरीर पर कम से कम रहें । मुख पूर्व की ओर हो, समय अरुणोदय का । ध्यान किया जाय कि आत्मसत्ता शरीर में से निकल कर सीधे सूर्य लोक तक पहुँच रही है । जिस प्रकार सुई में पिरोया हुआ धागा कपड़े से होकर जाता है, जलती अग्नि में से छड़ आर-पार निकल जाती है, उसी प्रकार आत्म-चेतना प्रातःकालीन सूर्य का वेधन करती हुई आर पार जा रही है । सूर्य ऊर्जा से अपनी चेतना भर रही है । दायीं नासिका से खींचा श्वांस अन्दर तक जाकर सूर्यचक्र को आन्दोलित उत्तेजित कर रहा है । ओजस्, तेजस्, वर्चस् की बड़ी मात्रा अपने में धारण करके वापस बायीं नासिका से सारे कल्मष निकल रहे हैं । पहले की अपेक्षा अब अपने में प्राण ऊर्जा की मात्रा भी अधिक बढ़ गयी है, जो प्रतिभा परिवर्धन के रूप में अनुभव में आती है । क्रिया को गौण व भावना को प्रधान मानते हुए यह अभ्यास नियमित रूप से किया जाय तो निश्चित ही फलदायी होता है ।

(६) चुम्बक स्पर्शः—चुम्बक का चिकित्सा में बड़ा योगदान माना गया है । एक्युपंक्चर, एक्युप्रेशर, शरीर के सूक्ष्म संस्थानों को मुद्राबध द्वारा प्रभावित करना एवं चुम्बक चिकित्सा में अद्‌भुत साम्य है । हमारी धरती एक विराट चुम्बक है व निश्चित मात्रा में प्राण उत्तरी ध्रुव से खींचती और अनावश्यक कल्मषों को दक्षिण ध्रुव से फेंक देती है । चुम्बक स्पर्श में भी यही सिद्धान्त प्रयुक्त होता है । लौह चुम्बक का सहज क्षमता वाला पिण्ड लेकर धीरे-धीरे मस्तिष्क रीढ़ और हृदय पर बायें से दायीं ओर गोलाई में घुमाया जाता है । गति धीमी रहे । कण्ठ से लेकर नाभि छिद्रों के ऊपर होते हुए जननेन्द्रियों तक उस चुम्बक को पहुँचाया जाय । स्पर्श कराने घुमाने के उपरान्त उसे धो दिया जाय; ताकि उसके साथ कोई प्रभाव न जुड़ा रहे । चुम्बक से प्रभावित जल तथा विद्युत्‌चुम्बक का प्रयोग भी इसी क्रम में किया जाता है। किस कमी के लिए, किस रूप में, किस प्रकार प्रयोग किया जाना है, उसका निर्धारण विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है ।

(७) प्राणवानों का सान्निध्य— शक्तिपात की तांत्रिक क्रिया तो करने-कराने में कठिन है व जोखिम भरी भी; किन्तु यह सरल है कि किन्हीं वरिष्ठों—प्राण चेतना सम्पन्न व्यक्तियों के यथा-संभव निकट पहुँचने का प्रयत्न किया जाय । चरण स्पर्श जैसे समीपता वाले उपक्रमों से लाभ उठाया जाय। अप्रत्यक्ष रूप से यह ध्यान किया जा सकता है कि हनुमान, भगीरथ जैसे किसी प्राणवान के साथ अपनी भावनात्मक एकता बन रही है और पारस्परिक आदान-प्रदान का सिलसिला चल रहा है। साबुन जिस प्रकार अपनी सफेदी प्रदान करता है और कपड़े का मैल हटा देता है, उसी प्रकार की भावना इस सघन सम्पर्क की ध्यान धारणा में की जा सकती है। दृश्य चित्र व उन महामानवों के कर्तव्यों के गुणों का चिन्तन भी उसमें सहायक होता है । इस आधार पर भी प्राण चेतना बढ़ती है उसी प्रकार जिस प्रकार माँ के स्तन पान से बालक एवं गुरु की शक्ति से शिष्य लाभान्वित होता है ।

(८) नाद योगः—वाद्य यंत्रों और उनकी ध्वनि लहरियों के अपने-अपने प्रभाव हैं । उन्हें कोलाहल रहित स्थान में सुनने का अभ्यास भी प्रतिभा परिवर्धन में सहायक होता है । यह कार्य, शब्द शक्ति [जो चेतना का ईंधन है] के श्रवण से अन्तः के ऊर्जा केन्द्रों को उत्तेजित व जगाकर संभव है । टेपरिकार्डर से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत सुनकर भी यह कार्य संभव है एवं स्वयं उच्चारित मंत्रों या संगीत पर ध्यान लगाकर भी । अपने लिए उपयुक्त संगीत का चयन भी इस विषय के विशेषज्ञों द्वारा ही निर्धारित करना चाहिए । एक ही वाद्य व समयानुकूल राग का चयन किया जाना चाहिए। यह श्रवण आरंभ में पाँच से दस मिनट तक ही किया जाय। क्रमशः अभ्यास के साथ बढ़ाया जा सकता है । इस विषय पर विभिन्न स्तर के व्यक्तियों के लिए धुनों का चयन कर संगीत कैसेट बनाने का कार्य शांति कुञ्ज द्वारा सम्पन्न हो रहा है ।

(९) प्रायश्चित्तः—व्यभिचार, छल, धन अपहरण जैसे दुष्कर्मों से भी प्राण शक्ति क्षीण होती है और प्रतिभा का अनुपात घट जाता है । इसके लिए दुष्कर्मों के अनुरूप प्रायश्चित किया जाय । क्रिश्चियन धर्म में "कन्फेशन" की बड़ी महत्ता बताई गयी है । दुष्कर्मों की भरपाई कर सकने जैसे कोई सत्कर्म किये जायें । चान्द्रायण जैसे व्रत उपवास भी इस भार को उतारने में सहायक होते हैं । कौन किन दोषों के बदले क्या प्रायश्चित्त करे, इसके लिए गुरु सत्ता जैसे विशेषज्ञों से अपनी पूरी बात कहकर काफी हल्कापन आ जाता है व आगे कुछ नया करने की दिशा मिलती है । प्रायश्चित्त धुलाई की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता पूरी करता है । प्रतिभा संवर्धन हेतु अंतरंग की धुलाई जरुरी भी है ।

(१०) अंकुरों का कल्क एवं वनौषधि सेवनः—अन्न धान्यों एवं जड़ी-बूटी वनस्पतियों के अपने-अपने प्रभाव हैं । वे जब अंकुरित स्थिति में फूटते हैं तब उनमें अभिनव एवं अतिरिक्त गुण होता है जो अपनी आवश्यकता के अनुकूल निर्धारित हो, उसके सात गमले एक—एक दिन के अंतर से उगाये जायें । सातवें दिन अंकुरों को पीस कर उसका कल्क तीन ग्राम व पानी 11.664 ग्राम लेकर छान लें इसे प्रातः काल खाली पेट मधु या उचित अनुपान के साथ लें । ये टॉनिक तेजस् की अभिवृद्धि, मेधा वृद्धि, जीवनी शक्ति संवर्धन में सहायक होते हैं । इसी प्रकार हरी जड़ी बूटियों या उन औषधियों के सूखे चूर्णों का भी कल्क बनाकर ग्रहण किया जा सकता है। निर्धारण विशेषज्ञ करते हैं। किन्हीं स्थितियों में वाष्पीभूत रूप में अग्निहोत्र प्रक्रिया से नासिका मार्ग द्वारा ग्रहण किये जाने का भी प्रावधान है ।

यहाँ संक्षेप में प्रतिभा संवर्धन के निर्धारित दस उपचारों की चर्चा की गयी है । विस्तार से इन्हें शिविरों में सम्मिलित होने पर, प्रत्यक्ष शांति कुञ्ज आने पर समझाया जाता रहता है ।

प्रतिभाओं के अवतरण की नई पृष्ठभूमि

कुछेक घुने बीजों को छोड़कर प्रायः सबमें उगने की सामर्थ्य होती है । ऊसर जमीनें भी होती तो हैं, पर आमतौर से हर जमीन में ऐसी क्षमता होती है कि उसे थोड़ा प्रयत्न करके उपजाऊ बनाया जा सके । बादलों का पानी टीलों पर रुकता नहीं और वे भारी वर्षा होने के उपरान्त भी सजल रहित ही बने रहते हैं । इतने पर भी यदि उन्हें थोड़ा खोदा—कुरेदा जा सके तो पर्वत शिखरों पर भी तालाब बन सकते हैं । नदी, सरोवरों के तट पर रहने वालों की तरह उन दुर्गम स्थानों पर भी उद्यान लग सकते हैं । यह प्रयत्न परायणता की महिमा का है । किसान अपने घर से फसल नहीं लाता और न माली की जेब में फल सम्पदा भरी रहती है । प्राकृतिक साधनों का उपयोग भर वे लोग करते हैं और उसी बुद्धिमत्तापूर्ण नियोजन का लाभ उठाते हैं । बुद्धि हर किसी में मौजूद है । मूढ़ और विक्षिप्त थोड़े से ही होते हैं । हर मस्तिष्क में प्रतिभा रहती है और उसे शिक्षण एवं वातावरण के सहारे विज्ञ एवं प्रबुद्ध बनाया जा सकता है । अध्यापक और विद्यालय इसी प्रयोजन की पूर्ति करते रहते हैं ।

पारस से सटकर ही सोना बना जा सकता है । कल्पवृक्ष की छाया में बैठकर ही महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हस्तगत की जा सकती हैं । श्रेष्ठ वातावरण का लाभ लेकर प्राणवान, शक्ति संपन्नों के सान्निध्य द्वारा हर कोई अपनी प्रसुप्त प्रतिभा को खराद पर चढ़ा सकता है । यही कारण है कि जब भी प्रतिभा के परिष्कार की बात आती है, सुसंस्कारित वातावरण की प्रशिक्षण स्थली की ढूँढ—खोज की जाती है ।

प्राणवान प्रशिक्षण से ही प्रतिभा परिष्कार संभव

उच्चस्तरीय प्रशिक्षण हर जगह नहीं हो सकते । उसके लिए उपयुक्त साधन, वातावरण एवं प्रशिक्षकों का स्तर भी ऊँचा होना चाहिए । सेना के उच्च अफसर प्रशिक्षित कहाँ किये जायें, इसके लिए ऐसा स्थान तलाश करना पड़ता है, जहाँ से गोपनीय राजनीति के रहस्य फूट कर अनुपयुक्त लोगों तक न पहुँचें । सैनिकों के स्वास्थ्य से लेकर मनोभूमि बनाने की उपयुक्त स्थिति वहाँ है या नहीं ? चूँकि प्रसंग देश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की सुरक्षा से जुड़ा होने के कारण अत्यधिक महत्त्व का है । उसके लिए तीक्ष्ण बुद्धि वाले अनुभवी, बहुज्ञ और व्युत्पन्नमति वाले अध्यापक भी चाहिए, जो बहुत कठिनाई से थोड़ी ही मात्रा में मिल सकते हैं ।

ऊँची क्वालिटी के पौधे जिन नर्सरियों में तैयार किये जाते हैं, वहाँ की भूमि में पाये जाने वाले रसायनों की विशेष रूप से देखभाल की जाती है । इसी प्रकार घटिया पौधे लगाने वाले मालियों की अपेक्षा इन विशिष्ट नर्सरियों को विकसित करने के लिए विशेषज्ञों का पता लगाना और उन्हें महँगे वेतन पर भी किसी प्रकार सहमत करने और नियुक्त करने की आवश्यकता पड़ती है ।

वेधशालाएँ हर जगह नहीं बन सकतीं । जहाँ ग्रह—उपग्रहों की कक्षाएँ सीधे कोण बनाती हैं, वहाँ उनके लिए स्थान का चयन होता है । प्राचीन काल का कोणार्क इसी स्तर का होने के कारण वहाँ सूर्य मंदिर बना था । उज्जयिनी के वेधशाला भी स्थान विशेष की महत्ता के कारण बनी थी । मिस्र के पिरामिड भी निर्माण की दृष्टि से अत्यंत असुविधाजनक होते हुए भी इसी कारण एक विशेष स्थान पर बनाये गये थे ।

उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव जहाँ भी अवस्थित हैं, वहाँ से समस्त भूमण्डल असाधारण रूप से प्रभावित होता है । भूमध्य रेखा, कर्क रेखा, मकर रेखा आदि के अक्षांश अपने—अपने समीपवर्ती क्षेत्रों में वातावरण को असाधारण रूप से प्रभावित करते हैं।

सौर मंडल की, ग्रह—उपग्रहों की पृथ्वी के जिस क्षेत्र पर जिस स्तर की किरणें पहुँचती हैं, वहाँ के लोगों के रंग, कद, स्वभाव, आकार—प्रकार भी उसी स्तर के बनते हैं । मोटे तौर पर समझा यह जाता है कि वंश परम्परा के अनुरूप जीन्स संरचना इसका प्रमुख कारण है, पर वस्तुतः ''जीन्स'' अन्तरिक्षीय अभिवर्षण की सूक्ष्मता के अनुरूप ही अपना ढाँचा खड़ा करते हैं ।

प्राचीन काल में महामानव ढालने वाले विशेषज्ञों ने भी अपने क्रिया—कलाप सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए उपयुक्त स्थानों का चयन किया था, भले ही वे आवागमन अथवा अन्य कठिनाइयों से घिरे हुए ही क्यों न रहे हों ? राम—लक्ष्मण को शिक्षा के लिए अन्य स्थान भी सुविधाजनक हो सकते थे; पर दशरथ की असहमति होते हुए भी वशिष्ठ के दबाव से उन्हें विश्वामित्र के आश्रम में ही भेजा गया ? भले ही उसकी तुलना में अन्य स्थान अधिक सुविधा—सम्पन्न ही क्यों न रहे हों ? कृष्ण की शिक्षा उज्जैन में सान्दीपन आश्रम में ही बहुत कुछ सोच—समझकर की गयी । भले ही मथुरा के समीपवर्ती स्थानों में ही अधिक सुविधा—सम्पन्न स्थान क्यों न रहे हों । कण्व आश्रम में चक्रवती भरत का शिक्षण संयोगवश ही नहीं, किन्हीं विशिष्ट कारणों पर अवलम्बित था । लव—कुश के शिक्षण हेतु अन्य स्थान अधिक सुविधा—सम्पन्न ढूँढे जा सकते थे, पर वाल्मीकि आश्रम अभीष्ट प्रयोजन के लिए हर कसौटी पर खरा समझा गया था । बुद्धकाल में तक्षशिला एवं नालन्दा विश्वविद्यालयों में दूर देशों से छात्र वहाँ की विशेषताओं के कारण ही पहुँचते थे । इसमें छात्रों की अपनी प्रयत्नशीलता तो कारण रही ही होगी, पर इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि उन स्थानों, शिक्षण—केन्द्रों एवं अध्यापकों का भी उन सफल छात्रों पर अतिरिक्त अनुदान बरसा होगा ।

प्राचीन काल में ऋषिकल्प अध्यात्म विज्ञानी अपने आत्मशक्ति का प्रयोग और प्रयोगशालाओं के लिए स्थानों के चयन को प्राथमिकता देते थे । मात्र सुविधा के सहारे कहीं भी पसर नहीं जाते थे । हिमालय की ऊबड़-खाबड़ जमीन और शीत की अधिकता आदि अनेक असुविधाओं के रहते हुए भी उन स्थानों का चयन अति गंभीरता के साथ, स्थान की सूक्ष्म विशेषंताओं को ध्यान में रखते हुए ही किया गया था ।

प्राचीन काल में हर दृष्टि से विशिष्ट गरिमा से भरे-पूरे क्षेत्रों में ही तीर्थ-स्थानों की स्थापना होती थी। वहाँ की प्रेरणा अनायास ही आगन्तुकों में अतिरिक्त शक्ति-संचार कर देती थी । उन्हीं स्थानों में गुरुकुल, आश्रम, आरण्यक एवं तपोवन स्थापित किये जाते थे । आज के समय में तो कुछ कहा नहीं जो सकता, क्योंकि सर्वत्र विकृतियों का प्रवेश और अवांछनीयताओं का अतिशय बाहुल्य हो जाने से तीर्थ भी वह प्रयोजन पूरा नहीं करते । अब तो वे पर्यटन-केन्द्र मात्र बन कर रह गये हैं ।

इन दिनों युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि बन रही है । इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण होने ही जा रहा है । इसके लिए कोई ऐसा ऊर्जा-स्रोत चाहिए, जहाँ से युगान्तरीय चेतना का आलोक उद्‌भूत हो और समस्त विश्व को अनुप्राणित करे । मत्स्यावतार की तरह इस छोटे से कमण्डलु में पैदा होकर भी, विश्व-वसुधा को उस प्रभाव से अनुप्राणित करे, जो इस संधि-काल में अनिवार्य रूप से आवश्यक है; क्योंकि यह महाक्रान्ति की वेला है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह ऊर्जा-स्रोत 'शान्ति कुञ्ज' के छोटे से कार्य-क्षेत्र के रूप में निर्धारित हुआ है । प्रत्यक्ष रूप से देखने पर यह गंगा की गोद-हिमालय की छाया, सप्तऋषियों की तपोभूमि के रूप में देखा-जाना जा सकता है । पर इसके अतिरिक्त भी यहाँ बहुत कुछ है। जिस दैवी सत्ता ने महान् परिवर्तन की रूपरेखा बनायी है, उसी ने इस भूमि का भी परिशोधन, निर्धारण और भूमि-पूजन किया है । अखण्डदीप, अखण्ड जप, नित्य-नियमित रूप से नौ कुण्डीय यज्ञ शाला में अग्निहोत्र की प्रक्रिया आरंभ करायी है । इतना ही नहीं एक प्रशिक्षण शैली का उपक्रम भी निर्धारित किया है । साथ ही बैटरी-चार्ज करने जैसी अतिरिक्त व्यवस्था भी बनायी है, जिसका विद्युत् प्रवाह उन सभी को अनुप्राणित-उत्तेजित करता है, जो उसके साथ भावनापूर्वक उच्च उद्देश्यों को साथ लेकर आते और जो कुछ यहाँ विद्यमान है, उसके अवगाहन में लग जाते हैं ।

शान्ति कुञ्ज में क्या पढ़ाया जाता है, इसके लिए पाठ्यक्रम उलटने-पुलटने की आवश्यकता नहीं है । एक ही बात देखी जानी चाहिए कि यहाँ का एक ही मन्तव्य है "प्रतिभा-परिष्कार" । यह किसी के हाथ लग सके, तो शरीर और बुद्धि तथा परिस्थितियों की दृष्टि से साधारण होते हुए भी व्यक्तित्व की दृष्टि से असाधारण बना जा सकता है । ऐसे कर्तृत्व प्रस्तुत हो सकते हैं, जैसा कि हनुमान, अंगद, नल-नील, जामवन्त जैसों ने, साधारण दीख पड़ने वालों ने कर दिखाये । उन्होंने न केवल अपने को उत्कृष्ट बनाया, वरन् अपने समय और वातावरण को भी परिष्कृत बनाने में वे समर्थ हो सके । तूफानी चक्रवात एवं प्रचण्ड धारा में दृष्टिगोचर होने वाली भँवरों के समतुल्य अपनी सत्ता व विशिष्टता का भी परिचय दे सके । समय की सबसे बड़ी आवश्यकता युग नेतृत्व की है । इसके साथ स्थानीय, क्षेत्रीय, वैयक्तिक, सामूहिक, राजनैतिक, आर्थिक, बौद्धिक, चारित्रिक एवं सृजन-संभावनाओं का सही रूप में समाधान कर सकने की क्षमता भी जुड़ती है । संक्षिप्त में शान्ति कुञ्ज का प्रशिक्षण, शक्ति-अनुदान वह साहस-कौशल उभारता है, जो बीज रूप में हर किसी के भीतर विद्यमान है । ऐसी ही, संचित संस्कारों वाली प्रतिभाओं की तुलना उन बहुमूल्य हीरों से की जाती है, जिनमें मौलिक विशिष्टता विद्यमान है । उन पर किया गया थोड़ा-सा तराशने-खरादने का प्रयत्न अधिक लाभ और श्रेय दे सकता है । फिर भी उन शिल्पियों का महत्व बना ही रहेगा जो घटिया पत्थरों को भी इस प्रकार काटते-घिसते हैं कि उन्हें हीरों का स्थानापान्न बनने का सौभाग्य मिल सके । सोने का अपना महत्व है उसे लड़ी के रूप में भी उचित मूल्य पर बेचा जा सकता है । इतने पर भी स्वर्णकारों की कला को सराहा ही जाता रहेगा । वे आभूषण बनाकर सोने को आकर्षण का केन्द्र बना देते हैं । यहाँ तक कि घटिया धातु या मिलावट के सहारे ऐसा बना देते हैं कि उससे भी साज-सज्जा का काम चल सके । प्रचीन काल में उपाध्यक्षों के हाथ में यही कला थी वे मनुष्यों को गढ़ते थे, उन्हें सामान्य से असामान्य बनाते थे । संयोगवश कोई सुसंस्कारी आत्मा हाथ लग सके तब तो उन शिल्पियों को, उनके कौशल को, ढलाई के कारखाने गुरुकुलों को अनोखा ही श्रेय मिल जाता था। संदीपन ऋषि के आश्रम में कृष्ण और विश्वामित्र आरण्यक में राम की ढलाई हुई थी । यही सब प्रयोक्ता धन्य माने जाते हैं ।

युग परिवर्तन की महती आवश्यकता पूरी करने के लिए इन दिनों देवत्व से सम्पन्न आत्माओं को ढूँढ निकालना एक बड़ा काम है । साथ ही उन्हें उभारना— प्रशिक्षित परिपक्व करना भी उतने ही महत्व की प्रक्रिया है । तेल के कुँए ढूँढ निकालना एक बड़ी सफलता है, पर उस कीचड़ जैसे खनिज की सफाई करने वाला यन्त्र खड़ा न हो सका तो उस ढूँढ़ने भर से भी अभीष्ट प्रयोजन सिद्ध न होगा । कच्ची धातुओं की खदान-खोजने वालों की प्रशंसा होती है किन्तु उन्हें पकाने, ढालने का कारखाना न लग सके तो उस भारी मिट्टी से कोई प्रयोजन सिद्ध न होगा ।

कच्चे लोहे को गला कर फौलाद बनाने वाले संस्थान

प्राचीन भारत ने इस आवश्यकता को गंभीरता पूर्वक अनुभव किया था, अस्तु इस निमित्त तब ऐसे अनेक आश्रम और संस्थान विनिर्मित किये गये थे, जहाँ शिक्षण और प्रशिक्षण द्वारा पात्रों को मूर्धन्य और उच्च स्तर के प्रतिभा सम्पन्न बनाये जाते थे । प्राग्ऐतिहासिक कालीन महर्षि अगस्त्य की वेद पुरी, भारद्वाज की प्रयाग स्थिति प्रशिक्षण शाला, महर्षि विश्वामित्र का सिद्धाश्रम आदि ऐसे ही संस्थान थे । वेदपुरी में महर्षि अगस्त्य के प्रशिक्षण के प्रखरता की सराहना करते हुए आदि कवि वाल्मीकि कहते हैं अनीतिकारी आसुरी शक्तियाँ उस दिशा से भय खाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थीं । राक्षसों को अगस्त्य की दिशा से इतना खौफ था कि उधर पैर रखने का साहस नहीं करते थे । दस हजार छात्रों वाली भारद्वाज की प्रशिक्षण शाला जन को जाग्रत और कर्तव्यनिष्ठा के लिए सचेत करने वाले प्रहरी तैयार करती रहती । सिद्धाश्रम को केन्द्र बनाकर उपयुक्त पात्रों को प्रशिक्षित कर विश्वामित्र ने अनीतियों के विरुद्ध व्यूह रचना की । रामराज्य की सतयुगी परिस्थितियाँ इन्हीं प्रशिक्षण शालाओं की उर्वरता और प्रशिक्षकों के चमत्कारी व्यक्तित्व गढ़ने में महारथ का परिणाम था । इस तीनों के यहाँ स्वयं जाकर श्रीराम ने सतयुग के विस्तार की तकनीकें और सहायता प्राप्त की ।

बीच के समय में भी भारत को सोने की चिड़िया स्वर्ण भूमि कहलाने का सौभाग्य ऐसे ही विश्वविद्यालयों ने प्रदान किया था । गान्धार स्थित तक्षशिला, राजगिरि के समीप नालन्दा, भागलपुर स्थित विक्रमशिला, काठियावाड़ के वल्लभी विश्वविद्यालयों ने अपने समय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । चाणक्य की दुधर्ष प्रखरता तक्षशिला से उपजी थी । यहीं के स्नातक उनके प्रथम सहयोगी थे जिनके सम्मिलित प्रयासों से जन जाग्रति की लहर फैली और विशाल भारत की अभिनव समाज संरचना अपना पूर्ण सौन्दर्य प्रकट कर सकी । विचारक्रान्ति के अग्रदूत कुमारिल भट्ट नालन्दा में गढ़े गए, जिनकी रखी मजबूत नींव पर शंकराचार्य ने सांस्कृतिक क्रान्ति की भव्यता विनिर्मित की । चोल सम्राट देवपाल के समय विक्रम-शिला से गढ़े गए परिव्राजकों ने भारत ही क्यों सुदूर बर्मा, मलाया आदि जगहों पर जा जीवन विद्या का प्रसार किया । पाँचवीं से आठवीं शती तक वल्लभी के स्नातकों ने काठियावाड़ ही क्यों समूचे भारत की जन चेतना को जीवन्त और सचेत रखा, यहाँ के प्रशिक्षक व्यक्तित्वों को ढालने में इतने माहिर थे, कि अन्य देशों के लोग भी यहाँ दाखिले के लिए तरसते थे।

यही क्यों उज्जयिनी, कांचीपुरम्, अमरावती, औदन्तपुरी आदि स्थानों में ऐसी ही कार्यशालाएँ थीं जहाँ से साधारण व्यक्ति असाधारण प्रखर बनकर निकलते थे । वह स्वयं के साथ देश-समाज के लिए उपयोगिता की कसौटी पर खरे सिद्ध होते । नेशनल कालेज की स्थापना के पीछे श्री अरविन्द का यही उद्देश्य था और बहुत कुछ पूरा भी हुआ । बंगाल की भूमि ने ऐसी ही प्रशिक्षण संस्थाओं के बल पर नर रत्नों की झड़ी लगा दी । काशी विद्यापीठ की भूमिका भी कुछ ऐसी ही थी । बाबू सम्पूर्णानन्द, आचार्य जुगलकिशोर, लालबहादुर शास्त्री, राजाराम शास्त्री, भगवान दास यहीं तराशे और निखारे गए थे । यहीं के उत्पादकों ने राजा महेन्द्र प्रताप का प्रेम महाविद्यालय, प्रयाग विद्यापीठ आदि स्थानों पर जाकर अपने जैसे अनेक बनाए ।

आज उसी उद्देश्य की पूर्ति शान्तिकुंज की टकसाल कर रही है । उसकी एक छोटी सी खदान को खोदने वाले अगले ही दिनों वहाँ से असंख्यों हीरा पन्ना निकलते देखेंगे । कभी भगीरथ अकेले ही गंगा को स्वर्ग से धरती पर ले आये थे । अब वह श्रेय किसी एक को तो नहीं मिलेगा, पर एक तूफान उठते, आग उगलते जैसा दृश्य देखा जा सकेगा जो उलटी दिशा में बहने वाली अवांछनीयता को अपने ही भुजदंडों से उलट कर सीधा कर दे ।

गंगा गोमुख से निकलती है और जमुना जमुनोत्री से । नर्मदा का अवतरण अमरकंटक के एक छोटे से कुण्ड से होता है । मानसरोवर से ब्रह्मपुत्र निकलती है और पंजाब की ओर जाने वाली पाँच नदियाँ भी वहीं से निकलती हैं । शांतिकुंज ऐसे अनेक प्रवाहों को प्रवाहित कर रहा है जिनका प्रभाव न केवल भारत को वरन् समूचे विश्व को एक नई दिशा में घसीटता हुआ ले चले ।

प्रसंग असामान्यों के ढूँढने, उभारने का चल रहा है । उनका अस्तित्व रहता तो हर युग और हर क्षेत्र में है, पर खोजने और पकाने की प्रक्रिया शिथिल हो जाने से प्रतिभाएँ जहाँ-तहाँ छिपी और उपेक्षित पड़ी रहती हैं । अभी भी भूमि में इतना वैभव दबा पड़ा है जिसे उपयोग में आने वाली सम्पदा की तुलना में असंख्य गुना कहा जा सके । सराहना खोज की ही है। उसी के बलबूते प्रस्तुत उपलब्धियाँ करतलगत हो सकी हैं और भविष्य में जो कुछ मिलेगा उसमें खोजी और पकाने वाले ही श्रेयाधिकारी बनेंगे ।

शान्तिकुञ्ज की १ मासीय या ९ दिवसीय सत्र-साधना हर बीज को अंकुरित कर देने तक ही सफलता उपलब्ध कराती है । यह प्रयत्न स्वयं का साहस और वातावरण जुटाने पर निर्भर है कि बीज में उगे हुए अंकुर किस गति से ऊँचे उठ सकें और किस स्तर की द्रुतगामिता अपनाकर अपने को देव मानवों की, युग पुरुषों की पंक्ति में खड़े करने में सफल हो सकें ? इसे परखने की एक ही कसौटी होगी कि हमारी रुचियों और प्रवृत्तियों में उच्च आदर्शवादिता का समावेश हुआ या नहीं । यदि हाँ, तो किस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुपात में कितना ? इस अध्ययन के आधार पर कोई भी अपनी स्थिति का स्पष्ट मूल्यांकन कर सकता और यह अन्दाज लगा सकता है कि वर्तमान में वह किस भूमिका में कहाँ खड़ा है । इस कसौटी पर किन्हीं का भी अन्तराल जांचा जा सकता है । शराबी, जुआरी, व्यभिचारी अपने अनुरूप परिस्थितियाँ देखते ही मचलने लगते और रोकथाम होते हुए भी सम्पर्क साधने और सहयोग साधने का ताना-बाना बुनने लगते हैं । बाजीगर का खेल होते ही मनचले बच्चे पढ़ाई छोड़कर दौड़ पड़ते हैं और तमाशे का मजा लेते हैं । सन्त, सज्जनों की सुसंस्कारिता भी अपने अनुरूप अवसर सामने आने पर न केवल वहाँ किसी प्रकार जा ही पहुँचते हैं वरन् रुचि लेने और सहयोग देने का भी प्रयास बिना माँगे ही करने लगते हैं । अन्तः प्रेरणा उन्हें उसके लिए विवश जो करती है । पकड़ का यही सबसे सरल तरीका है । सीता की खोज में राम सघन बन में विचरते हैं और लक्ष्मण से कहते हैं—इस क्षेत्र में सीता होंगी तो नदी तट पर संध्या करने अवश्य आयेंगी । चलकर उसे वहीं खोजना चाहिए । इस प्रसंग से प्रकट होता है कि मूल प्रकृति मनुष्य को किस प्रकार विवश करती है और कठिन परिस्थितियों से भी वह उसकी पूर्ति का प्रयास कता है । युग साहित्य के प्रति अभिरुचि, श्रेष्ठ वातावरण में प्रसन्नता—सत्यवृत्तियों में सहयोग यह तीन प्रयोजनों के इर्द-गिर्द उच्च आत्माएँ इन दिनों जमा हुई पाई जा सकती हैं । वन्य जीवों को सघन वन में देखना हो तो चुपचाप वहाँ किसी जलाशय के निकट बैठ जाना चाहिए । प्यास बुझाने के लिए आने पर उन्हें आँखें भर कर देखा जा सकता है । युग निर्माण योजना के विविध प्रयास ऐसे हैं जिनमें सामान्य स्तर के लोगों को न रुचि हो सकती है न उत्साह । सहयोग की बात तो उनके बस से बाहर ही होती है किन्तु जिनमें देवत्व के अंश अधिक परिमाण में विद्यमान है वे अपनी मर्जी से नये शुभारम्भ न कर पाने पर भी जहाँ भी अपने अनुरूप वातावरण देखते हैं, उसमें सम्मिलित हुए बिना, योगदान दिये बिना रह ही नहीं सकते । युग निर्माण मिशन में इसी प्रक्रिया से अधिक जागृत आत्माओं का एकत्रीकरण हुआ है अब उनकी समर्थता और संख्या अधिक चाहिए तो उन खोज प्रयासों को अधिक उच्चस्तरीय, आकर्षक एवं परिमाण में सुविस्तृत किया जायगा ।

शान्ति कुञ्ज की भूमि एक प्रकार से अभिमंत्रित की गयी है । लक्ष्मण-रेखा भी इसी प्रकार अभिमंत्रित की गई थी, जिसकी मर्यादा में रहने पर सीता हर दृष्टि से सुरक्षित रहतीं । इसी प्रकार इस भूमि को लगभग वैसा बनाया गया है, जैसा कि माता के गर्भ में भ्रूण सुरक्षित रहता है । साधना एवं शिक्षण की अवधि में छात्रों को अधिकांश समय इसी परिधि में रहने का अनुबंध है । समुचित लाभ के लिए यह आवश्यक भी था । अनावश्यक लोगों को, अशिक्षितों, वयोवृद्धों, बीमारों, बच्चों को साथ लेकर चलने की मनाही इसीलिए की है कि सैर-सपाटे के उत्सुकों और अति गंभीर अध्यात्म-प्रसंगों पर दत्तचित्त होने वालों के बीच किसी प्रकार का तालमेल बन नहीं पाता; साथ ही आश्रम का अनुशासन भी भंग होता है ।

जिस प्रकार इन दिनों पिता का नाम भी सरकारी कागजों में दर्ज किया जाता है, उसी प्रकार पुरातन काल में उस गुरुकुल का भी उल्लेख रहता था, जिससे ज्ञात होता था कि प्रशिक्षण का, अविच्छिन्न अंग समझी जाने वाली महत्ता एवं गरिमा कहाँ से प्राप्त की? जिस प्रकार राजा की संतानें राजकुमार कही जातीं और अपेक्षाकृत ऊँचे स्तर पर सम्मानित होती थीं, उसी प्रकार अगले दिनों शान्तिकुञ्ज के प्रशिक्षण के साथ अपने को जुड़ा हुआ होने के रूप में अपना परिचय देने वाले भी निश्चित रूप से गौरवान्वित होंगे। वंश-गोत्र के रूप में पूर्वजों के साथ जुड़ी परम्पराओं का उल्लेख चिरकाल तक होता रहता है । गुरुकुल एवं वंशकुल का स्तर प्रायः एक ही प्रकार की शृंखला के साथ जुड़ता है । इस प्रकार न केवल सत्र-श्रंखला में सम्मिलित होने वाले अपनी गौरव-गरिमा का अभिवर्धन करेंगे, वरन् अपनी भावी पीढ़ियों को भी उस श्रेय से अभिभूत करने का सुयोग सौभाग्य प्रदान करेंगे । हनुमान के वंशज समझे जाने वाले बन्दरों की अभी भी मंगलवार के दिन अभ्यर्थना होती है । बगीचा लगाने वाला स्वयं भी यशस्वी होता है और उसकी दूसरी-तीसरी पीढ़ियाँ भी लाभान्वित एवं यशस्वी होती हैं ।

शान्ति कुञ्ज का कोई प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अपने में कोई अतिरिक्त विशिष्टता उत्पन्न न करें, यह हो ही नहीं सकता । उस आधार पर कोई गौरव-गरिमा भरे काम करने में, जन-नेतृत्व में समर्थ होकर ही रहेगा । इस आधार पर उस यशस्वी-परम्परा की चर्चा भविष्य में भी होती है । अगले दिनों जब शान्ति कुञ्ज से संबंधित नवनिर्माण में योगदान करने वाले प्रतिभा सम्पन्नों का इतिहास लिखा जायेगा, तो हो सकता है कि उस प्रकाशन से मात्र पहली पीढ़ी ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं, वरन् उन पद-चिह्नों पर चलने वाली दूसरी-तीसरी पीढ़ी भी अपने को गौरवान्वित अनुभव करे, स्वयं को धन्य माने ।

प्रतिभा संवर्धन का मूल्य भी चुकाया जाय

गाँधी युग में जो सत्याग्रही उभर कर आगे आए, वे स्वतन्त्रता सेनानी कहलाए, यशस्वी बने । ताम्र पत्र, पेन्शन और आवागमन के मुफ्त पास प्राप्त करने के लाभों से गौरवान्वित हुए । जो-जो उनमें वरिष्ठ और विशिष्ट थे, वे देश का, शासन का सूत्र संचालन करने वाले मूर्धन्य बने । बापू के सम्पर्क में रहे नेहरू, पटेल जैसे अनेक रत्न ऐसे हैं जिनके स्मारकों को नमन किया जाता है। इतिहास के पृष्ठों पर यशोगाथा पढ़कर भाव विभोर हुआ जाता है । यह उनकी प्रचण्ड प्रतिभा का प्रतिफल मात्र है । यदि वे संकीर्ण स्वार्थपरायणों की तरह अपने मतलब से ही मतलब रखते, तो मात्र कुछ सुख-साधनों से मन बहला पाते, प्रकाश स्तम्भ बनने के सुयोग सौभाग्य से तो उन्हें वंचित ही रहना पड़ता । जो उन दिनों कृपणता धारण किए रहे वे अग्रगामियों के साथ अपनी तुलना करने पर 'माया मिली न राम' वाली स्थिति पर पश्चाताप ही करते रहते हैं । पर बीता हुआ समय पुनः लौटता कहाँ है ?

बुद्ध, गाँधी, दयानन्द, विवेकानन्द, विनोबा जैसों की महान उपलब्धियाँ स्मरण करके हर विचारशील का अन्तःकरण उमंगता हैं, कि यदि उन्हें ऐसा ही श्रेय मिल सका होता तो कितना अच्छा होता । उस अवसर को गँवाकर वे जिस ललक लिप्सा की पूर्ति का दिवा-स्वप्न देखते रहते हैं, उसे भी कौन साकार कर पाता है ? तृष्णा मरते समय तक प्रौढ़ ही बनी रहती हैं । शेखचिल्लियों का समुदाय कुबेर जैसा धनाढ्य और इन्द्र जैसा प्रतापी बनने के सपने देखता है। पर अब निष्कर्ष की वेला में मात्र इतना ही प्रतीत होता है कि कोल्हू के बैल की तरह पिलते और पिसते हुए समय बीत गया । श्मशान के भूत पलीत की तरह डरते और डराते रहने के अतिरिक्त और कुछ हाथ न लगा ।

भाग्यवान वे हैं, जिनने आदर्शों के साथ रिश्ता जोड़ा, महानता का मार्ग अपनाया और ऐसा कुछ कर दिखाया, जिसका अनुकरण करते हुए असंख्यों को गौरव-गरिमा का लक्ष्य प्रदान करने वाला ऊर्जा भरा प्रकाश उपलब्ध होता रहे । मूर्खता और बुद्धिमत्ता के चयन के लिए इसी चौराहे पर सही निर्णय करने का अवसर है । वैसा अवसर सुयोग भी इन्हीं दिनों है जिसका लाभ भगीरथ और अर्जुन ने अपनी उद्दात्त साहसिकता के बदले खरीदा था । वरदान अनायास ही किसी को कहाँ मिलते हैं ? देवता कुपात्रों और असमर्थों पर कृपा कहाँ करते हैं ? पात्रता की गहराई रहने पर ही वर्षा का पानी विशाल जलाशय के रूप में लहराता है ।

यह युग सन्धि का प्रभात पर्व ऐसा है जिसमें महाकाल को प्राणवान प्रतिभाओं की असाधारण आवश्यकता पड़ रही है । दैवी प्रयोजन महामानवों के माध्यम से ही क्रियान्वित होते हैं । अदृश्य शक्तियाँ तो उनमें प्रेरणा भर भरती हैं । यह व्यक्ति का स्वतंत्र निर्धारण होता है कि उन्हें अपनाये या ठुकराये । कृष्ण ने अर्जुन को कहा था कि 'दुष्ट कौरव तो पहले से ही मरे पड़े हैं । मैंने उनका पहले ही तेज हरण कर लिया। तुझे तो धर्म युद्ध में निरत होकर मात्र श्रेय भर गले धारण करना है ।' वस्तुतः युग की विकृतियों का शमन होना ही है । नव सृजन का ऐसा महायज्ञ जाज्वल्यमान होना है, जिससे आगामी लम्बे समय तक सुख-शान्ति और प्रगति का वातावरण बना रहे, एकता और समता को मान्यता मिले, ध्वंस का स्थान सृजन ग्रहण करे और चेतन तथा भौतिक शक्तियों का नियोजन मात्र सत्प्रयोजनों के निमित्त होता रहे । इसी उज्ज्वल भविष्य को 'सतयुग की वापसी' नाम दिया गया है । अनीति की असुरता का दमन देवताओं की सामूहिक शक्ति-संघशक्ति दुर्गा के अवतरण से सम्भव हुआ था । लगभग उसी पुरातन प्रक्रिया का प्रत्यावर्तन नये सिरे से, नये रूप में इन दिनों सम्पन्न होने जा रहा है । उस प्रवाह में सम्मिलित होने वाले सामान्य पत्तों की तरह हल्के होते हुए भी सरिता की धाराओं पर सवार होकर बिना कुछ विशेष प्रयास के ही महानता के महासमुद्र में जा मिलने में सफल हो सकेंगे ।

अपने काम से किसी से कुछ पाने के लिए कहीं जाना एक बात है और किसी समर्थ सत्ता द्वारा अपने सहायक के रूप में बुलाये जाने पर वहाँ पहुँचना सर्वथा दूसरी । पहली में एक पक्ष की दीनता और दूसरे पक्ष की स्वाभाविक उपेक्षा भर रहती है पर आमंत्रित अतिथि को लेने स्टेशन पर माला लेकर पहुँचा और सम्मानपूर्वक ठहराया जाता है । उसके वार्तालाप को भी प्रमुखता दी जाती है और ऐसा आधार खड़ा किया जाता है कि आमंत्रित व्यक्ति में निमंत्रण का उद्देश्य समझने और उसमें सहभागी बनने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की प्रतिक्रिया उत्पन्न हो । महाकाल द्वारा प्रज्ञा परिजनों को भेजे गये आमंत्रण को इसी रूप में देखा समझा जाना चाहिए ।

जिन्हें पारदर्शी दृष्टि प्राप्त है वे देख सकते हैं कि महाकाल ने अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए प्राणवानों के सामने गिड़गिड़ाने का उपक्रम नहीं किया है वरन् सुनिश्चित संभावनाओं में भागीदार बनकर अजस्र सौभाग्य प्रदान करने के लिए चुना है। इस तरह बरसने वाले वरदान की उपेक्षा अवमानना करना किन्हीं अदूरदर्शी हतभागियों से ही बन पड़ेगा । लोभ-मोह के बन्धन में फँसने और बँधे रहने के लिए तो हीन स्तर के प्राणी भी स्वतन्त्र हैं, फिर मनुष्य अपनी गरिमा भरे भविष्य को यदि उसी तुच्छता पर आधारित करने का हठ करे, तो उसे किस प्रकार समझदारों की पंक्ति में बिठाया जा सकेगा ?

सरकार मोर्चे पर सैनिकों को लड़ने भेजती है, तो उनके लिए आवश्यक अस्त्रों उपकरणों-वाहनों की, भोजन-आच्छादन की व्यवस्था भी करती है और उनके घर-परिवार के सदस्यों के निर्वाह हेतु वेतन भी प्रदान करती है । युग सृजन के लिए कटिबद्ध होने वालों को आवश्यक प्रतिभा से लेकर उपयुक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध न हों, ऐसा हो ही नहीं सकता । नव सृजन की संभावना तो पूरी होने ही वाली है, क्योंकि उसके न बन पड़ने पर "महाप्रलय" ही शेष रह जाती है, जो कि सृष्टा को अभी स्वीकार नहीं ।

व्यक्ति और समाज अब इस कदर गुँथ गये हैं कि दोनों का पारस्परिक तालमेल पानी और मछली जैसा अविच्छिन्न हो गया है । कोई निजी उन्नति से, निजी सुविधा सम्पादन भर से सुखी नहीं रह सकता। सम्बद्ध वातावरण यदि विपन्न हैं तो किसी सज्जन की भी शांति सुरक्षित नहीं रह सकती । अग्नि और महामारी किसी घर विशेष तक सीमित नहीं रहती । गुण्डागर्दी एक जगह पनपेगी तो समूचे क्षेत्र में विग्रह खड़ा करने का निमित्त कारण बनेगी । बढ़ी हुई जनसंख्या और आधुनिक प्रगति के फलस्वरूप अब निजी जीवन को सही बना लेने भर से काम चलने वाली है नहीं । इसलिए जनमानस के गिरे हुए स्तर को उभारना प्रकारान्तर से अपनी और अपने परिकर की सुरक्षा करना है । सामूहिक जीवन मनुष्य की नियति है । इन दिनों सामूहिकता और भी अनिवार्य हो गयी है । अपने मतलब से मतलब रखने की नीति अपनाने वाले यह नहीं समझते कि समुन्नत समाज के घटक ही वास्तव में सुखी रह सकते हैं ।

प्रतिभा सम्पादन के लिए विशेषतया उच्चस्तरीय वातावरण में रहना, उत्कृष्ट सोचना और आदर्शवादी क्रिया-कलापों में निरत रहना चाहिए । निजी सुधार एवं अभ्युदय भी इसके बिना नहीं हो सकता । अपनी स्थिति लोकसेवी और उदारचेतना सद्गुणी रखे बिना, किसी को शारीरिक बनावट मात्र से प्रभावशाली होने का अवसर नहीं मिल सकता । सद्गुणों का बाहुल्य एवं अभ्यास ही किसी को इस योग्य बनाता है कि वह अन्यान्यों का सम्मान एवं सहयोग अर्जित कर सके । इसी सफलता के आधार पर किसी की प्रतिभा और गरिमा का वास्तविक मूल्यांकन हो सकता है ।

आवश्यक है कि संकीर्ण स्वार्थपरता की पूर्ति में ही अपनी समूची क्षमताएँ न खपा दी जायें । इसमें जितना लाभ दिखाई पड़ता है उसकी तुलना में घाटा अधिक है । व्यापक स्तर का सार्वजनीन स्वार्थ ही परमार्थ है । परमार्थ परायण अपना निज का हित साधन तो निश्चित रूप से करते ही हैं, साथ ही चन्दन वृक्ष की तरह निकटवर्ती लोगों को भी गरिमा प्रदान करते हैं । प्रतिभा सम्पादन के लिए जिस प्राथमिक कक्षा में पढ़े बिना काम नहीं चलता, वह है— सेवा—साधना उच्चस्तरीय सेवा—साधना में दो ही तत्व प्रमुख हैं-एक सत्प्रवत्ति संवर्धन, दूसरा दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन । इन दो प्रयासों को अपनाने के लिए अपने समय और साधनों का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहने का महत्त्व समझा जाना चाहिए । एक सुनिश्चित व्रतधारण कर उसका निर्वाह करते रहने में अपनी श्रद्धा-निष्ठा एवं मनस्विता का परिचय देना चाहिए । इसे "प्रतिभा परिवर्धन" की अनिवार्य फीस मानकर चलना चाहिए । युग परिवर्तन का सरंजाम इसी माध्यम से संपन्न होगा ।

प्रतिभा का सुनियोजन

अभावग्रस्तों को कठिनाइयों का समाना करना पड़े तो बात समझ में आती है । पर आश्चर्य तब होता है जब विपुल साधन अपने अधिकार में होने पर भी, जानकारी के अभाव में लोग हैरान फिरते पाये जाते हैं। ऐसी घटनाएँ जब सुनने को मिलती हैं तो उस अनजानेपन को दुर्भाग्य का प्रतीक मानकर खेद व्यक्त किया जाता है ।

कहते हैं कि किसी अनाड़ी ने बाप के छोड़े हीरे को काँच समझ कर अनाड़ी के हाथों बेच दिया और खुद जीवन भर दरिद्री बना रहा । लाल मणियों की माला पड़ी मिलने पर एक भीलनी उन्हें कौड़ियों के मोल बेंच आई थी । कस्तूरी हिरन की नाभि में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कस्तूरी रहती है, पर वह सुगंध की तलाश निरन्तर दौड़-धूप करता और थक कर प्राण गँवा देता है । माचिस जेब में होने की बात याद न रहने पर ढेरों घास फूँस, पास रहने पर भी एक यात्री ठण्ड में सिकुड़ कर मर गया था । घर के आंगन में खजाना गड़ा होने की बात ज्ञात न होने पर, उस झोंपड़ी के निवासी को जब तब मजूरी मिलने पर आधे पेट सोना पड़ता था । ऐसी घटनाएँ प्रायः कौतूहल पूर्वक सुनी जाती हैं, तो सुनने वालों तक को हैरानी होती है ।

दिशा भ्रम हो जाने पर बनजारे रात भर चलते रहने पर भी बेकार भटकते रहते हैं और भूल का पता चलने पर वापस लौटते हैं । खण्डहरों में भूलभुलैया बनी पाई जाती हैं, उसमें घुस जाने के बाद यह ख्याल नहीं रहता कि वापस लौटने का दरवाजा कौन सा है। हड़बड़ी उस मानसिकता को और भी अधिक बेजार कर देती है । सुना है कि कई तो इस भटकाव में कई दिन घिरे रहकर मर तक जाते हैं । बालू को पानी समझकर भटकने वाले हिरनों की मृगतृष्णा का उदाहरण लोग प्रायः दिया करते हैं । वह कहानी भी प्रसिद्ध है कि सिंह का बच्चा भेड़ों के समूह में मिलने पर अपने को ही भेड़ समझने लगा था । बाद में जब उसे आत्मबोध कराया गया, तो वहाँ से हटकर सिंह के समूह में चला गया । सपने की स्थिति में भी लोग बेतुके स्वप्न देखते रहते हैं । नशेबाजों की खुमारी ऐसी होती है, जिसमें ऐसा कुछ सूझ पड़ता है, जिसकी वास्तविकता के साथ दूर की भी संगति नहीं बैठती।

इस प्रकार की घटनाएँ वस्तुस्थिति की सही जानकारी न होने के कारण होती हैं । पर अचम्भा तब होता है जब आम आदमी ऐसी ही विसंगतियों और भटकाव में कुछ दिन ही नहीं गंवाता, वरन् सारी जिन्दगी दाँव पर लगा देता है । आम आदमी अपने-अपने ढंग की उलझनें कठिनाइयाँ, समस्याएँ, चिन्ताएँ, व्यवस्थाएँ सिर पर लादे रहता है और उनके समाधान के लिए भी जिस तिस का आसरा ताकता है । स्पष्ट है, कभी-कभार किसी की छोटी मोटी सहायता हाथ लग भी सकती है; पर जब पूरा जगत् ही उलझन भरा है तो कौन किसकी, कब तक, कितनी सहायता कर सकता है ? विशेषतया तब जब कि हर किसी को अपनी-अपनी समस्याओं में ही इतना उलझे रहना पड़ता है, कि दूसरों की सहायता करने जैसी न तो स्थिति रह जाती है और न वैसी अभिरुचि या फुरसत ही होती है ।

अपनी गलती ढूँढने-खोजने की किसी को आदत नहीं है । भ्रमों में से एक बड़ा भ्रमों हर आदमी में यह भी पाया जाता है, कि अपनी दौलत कम और दूसरों की दौलत चौगुनी-सौगुनी समझ पड़ती है । वस्तुतः सर्वथा दोष रहित व्यक्ति कदाचित कोई भी नहीं होता। पर अपनी गलती कोई सोचे कैसे ? इससे हेठी जो होती है, नाक जो कटती है, अपनी सर्वज्ञता पर आँच जो आती है । इसलिए काम बिगड़ने पर उसका लांछन अपने ऊपर न लगने देने के लिए यह सस्ता नुस्खा हाथ लगता है कि दोष किसी दूसरे पर थोप दिया जाय। इसके लिए सामने वाले किसी को दोषी ठहराने पर तो झंझट खड़ा होने का डर रहता है, इसलिए हननकर्ता किसी ऐसे निरीह को ढूँढ लेते हैं जो सामने आकर प्रतिवाद करने में समर्थ न हो । भाग्य चक्र, समय का फेर, गृह दशा, विधाता का विधान, कर्म रेखा आदि पर कोई भी दोषारोपण करता रहता है । जिन पर दोष थोपा गया है, वे उलट कर सफाई देने के स्थिति में तो होते नहीं । ऐसी दशा में आरोपी को अपनी मान्यता और भी अधिक सुनिश्चित होने का मत बना रहने में कुछ कठिनाई नहीं होती ।

एक ओर तो दूसरों पर लांछन लगाने की प्रवृत्ति जमी रहती है, और दूसरी ओर आत्म—समीक्षा न कर पाने की प्रवृत्ति मनुष्यों को भ्रमित किए रहती है । एक दुष्कल्पना से ग्रसित अधिकांश लोग पाए जाते हैं कि "अपनी निज की सामर्थ्य अकिंचन है, उसे बढ़ाने के लिए हम क्या कुछ कर सकते हैं ? उत्कर्ष से सुयोग मिलना अपने हाथ में नहीं है । जितना प्रयत्न अच्छे के लिए किया जा चुका है उससे अधिक और कुछ करने का अवसर ही कहाँ था"। इसी प्रकार की बातें सोचकर आत्म-समीक्षा, आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण ओर आत्म-विकास का अवसर ही गँवा दिया जाता है। उपाय न सूझ पड़ने पर कुड़कुड़ाते, खीजते, झल्लाते, उद्विग्न रहने और चिन्तातुर रहने के अतिरिक्त कुछ बन भी नहीं पड़ता । अपने को तनावग्रस्त बना लेना तो दुष्कल्पनाओं के आधार पर और भी अधिक सरल संभव हो जाता है । ऐसा ही लोग करते भी रहते हैं ।

इस व्यापक भ्रान्ति को महामारी जैसा प्रकोप कहा जाय तो इसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं मानी जा सकती । जन साधारण को यह समझने का सुयोग नहीं मिल पाता कि मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियाँ इतनी अधिक हैं कि यदि उन्हें प्रसुप्ति से विरत करके जागृत एवं क्रियाशील बनाया जा सके, तो हर समान्य समझा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने वाला व्यक्ति अपने को असामान्य सिद्ध करके दिखा सकता है । इसमें कोई रहस्यवाद नहीं है, न कुछ ऐसा है, जिसे अमान्य ठहराया जा सके । पुरातन इतिहास के पृष्ठ पलटने या अर्वाचीन इतिहास की गतिविधियों पर तनिक गम्भीरतापूर्वक नजर डालने पर ऐसे असंख्यों उदाहरण आँखों देखे और कानों सुने जा सकते हैं । जिनमें आत्मविश्वास और प्रचण्ड साहस के बलबूते प्रगति की दिशा में चलने का सूझ-बूझ के साथ प्रयत्न किया गया और वे क्रमशः अधिक उपयुक्त अवसर पाते चले गये । अन्ततः इतनी ऊँचाई पार कर सके, जिसे देखते हुए आश्चर्य लगता है और किसी दैवी वरदान का भ्रम होता है । इसके विपरीत ऐसे उदाहरण भी कम नहीं देखे जा सके, जिनमें अपार साधन और अवसर होते हुए भी दुर्गुणों के शिकार रह कर, व्यक्ति दिन—दिन पतन पराभव की ओर लुढ़कते चले गये और अन्त में वहाँ पहुँच गये, जिसे दुर्गति या दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है ।

भ्रम से उबरा जाय—साधारण समझ से अपनी पृथ्वी जहाँ की तहाँ स्थिर खड़ी दीखती है । पर जिनने कुछ अधिक जानकारी प्राप्त की है, वे विश्वास-पूर्वक कह सकते हैं कि वह अपनी धुरी पर लट्टू की तरह घूमती रहती है । सूर्य की परिक्रमा के लिए तीर की तरह सनसनाती हुई दौड़ती है । मनुष्य के संबध में भी यही बात है । उसकी जीवनचर्या के लिए अग्रगमन की प्रगति संभावनाएँ कूट—कूट कर भरी हुई हैं । कमी केवल इस बात की है कि वस्तुस्थिति समझने और उस पर विश्वास करने का विवेक जगा नहीं । अपने ऊपर दीनता और हीनता की परतें इतनी मोटी जमी होती हैं कि वही अपना वास्तविक स्वरूप प्रतीत होता है ।

उपर्युक्त भ्रम से निकलने के सामान्य प्रयासों को आसपास का वातावरण नष्ट कर देता है । अहंकारियों का समुदाय दूसरों को हेय ठहरा कर ही अपने बड़प्पन की पुष्टि कर सकता है । ऐसे समुदाय के अपने से समर्थ लोग इसी स्तर की समीक्षा करते रहते हैं । बड़ों की बात ही सही मान भी ली जाती है। इस कथन को औसत आदमी हृदयंगम भी करता रहा है और यह मान बैठता है कि उसकी हस्ती नगण्य है। उससे कोई बड़ा काम का बड़ा वजन उठ नही सकता। इसलिए खैर इसी में है कि जैसे भी कुछ दिन गुजर रहे हैं, उसी प्रकार संतोषपूर्वक समय काट दिया जाय । संकटों को सह लिया जाय, दुर्दिनों के साथ तालमेल बिठा लिया जाय । इस स्तर का मानस बन जाने पर विद्यमान क्षमताएँ और भी गहरे गर्त में चली जाती हैं । उन्हें उभारने, उठाने का जब भीतर या बाहर से कोई प्रयत्न ही नहीं होता, तो आगे बढ़ने, ऊँचे उठने की संभावना ही कैसे बने ? उस दिशा में कुछ ठोस प्रयत्न करने का प्रयास ही कैसे चले ? जब उमंगें ही मर गयीं तो फिर अग्रगमन का अवसर छप्पर फाड़ कर आकाश से आँगन में क्योंकर आ धमके ?

संसार में पैसे की चमक-दमक बहुत जगह देखी जा सकती है और उसके आधार पर जो खरीदा जा सकता है उसकी सजधज भी अपनी चमक—दमक दिखाती, आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करती देखी जा सकती है। किन्हीं—किन्हीं का रूप लावण्य भी मनमोहक दीख पड़ता है । कलाकार, व्यवसायी, गुणी भी कई देखे जाते हैं । पर ऐसे कम ही दीख पड़ते हैं जिन्होंने अपने साहस और पौरुष के सहारे अवरोधों से टकराते हुए प्रगति का पथ प्रशस्त किया हो । जिन्होंने गिरों को उठाया, उठों को चलाया, चलतों को दौड़ाया और दौड़तों को उछाला हो । अपनी राह तो सभी चल लेते हैं, पर सराहना उनकी है जो अपनी नाव पर अनेक को बिठाकर उन्हें इस पार से उस पार पहुँचा सकें ।

इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि ऐसी प्रचण्ड सामर्थ्य हर किसी के भीतर होते हुए भी उसका सदुपयोग कर सकना तो दूर, पहचानना तक नहीं बन पड़ता । आत्म विस्मृति ही वह अभिशाप है जिसे लोग जाने या अनजाने स्वयं अपनाते हैं और कन्धे पर लादकर चलते हैं । इसी को कहते हैं प्रतिभा का अभाव । जो कभी—कभी तो मोटे पहलवानों को भी आन्तरिक दृष्टि से खोखला देखकर आश्चर्य रूप में व्यक्त किया जाता है । शारीरिक बल का प्रदर्शन तो भेडें और भैसें भी आपस में टक्कर मार कर दर्प जताते देखे गये हैं । तीतरों और मुर्गों को भी मोर्चे लड़ाते और अहंता में अग्रणी होने का दर्प जताते देखा जाता है । यह वास्तविक बलिष्ठता का प्रमाण नहीं है । गहराई तक जाना हो तो देखना पड़ेगा, कि मन की कौन सी दिशाधारा उस बल का प्रयोग कर रही है । गुण्डे, आतंकवादी, आततायी, अनाचारी अपनी अकड़ दिखाते और रौब जमाते देखे जाते हैं । दूसरों पर धाक जमाना और उन्हें डर दिखाकर उचित—अनुचित करा लेना यही उनका प्रयास—व्यवसाय रहता है । ऐसे लोगों की शारिरिक बलिष्ठता कैसे सराही जा सकेगी ? यही बात बुद्धिबल, धनबल आदि के संबंध में है । उसका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुरुपयोग करने वाले अपने लिए भर्त्सना और दूसरों के लिए विपत्ति ही खड़ी करते हैं । कला का दुरुपयोग भी कम नहीं हुआ है । शृंगारिकता, विलासिता, अनैतिकता जैसी पशु प्रवृत्तियों को भड़काने में संगीत, चित्रकला, साहित्य आदि का कम सहारा नहीं लिया गया है । ऐसी दशा में उस कला को किस प्रकार सराहा जाय, जो आकर्षित—प्रभावित तो अनेक को करती है बदले में पूरी कीमत बटोर लेने में भी सफल रहती है, पर यदि उसके और परिणामों को देखा जाय तो यही कहना पड़ा है कि ऐसे प्रख्यात कलाकार यदि अविख्यात अनजान लोगों की तरह साधारण स्थिति में रह रहे होते तो कहीं अच्छे थे । तब वे लोगों को चमत्कृत करके कुमार्ग पर चलने के लिए ललचाने वाला कुकृत्य तो न कर सके होते ।

उपलब्धि क्या हस्तगत हुई ? यह देखना ही पर्याप्त नहीं ? जाँचा यह भी जाना चाहिए कि उसका उपयोग लोकहित के लिए किस प्रकार और कितना बन पड़ा ? यदि इस कसौटी को छोड़ दिया जाय तो सर्प—बिच्छुओं की शरीर संरचना ही प्रशंसा की पात्र बनेंगी । चीते ओर भेड़िये भी दूसरों की तुलना में अधिक बलिष्ठ होने के कारण प्रतिष्ठा पाने के अधिकरी समझे जायेंगे । तब उनकी मार से डरने और बचने की कोई आवश्यकता न रहेगी । सराहनीय वही बल—कौशल है जिसका उपयोग सदुद्देश्य के लिए बन पड़े । अन्यथा बड़ी हुई प्रतिभा बारहसिंगे के बढ़े हुए सींगों की तरह है, जो देखने में कौतूहल वर्धक तो लगते हैं, पर अपना प्रयास प्रयोजन कुछ भी साध सकने में समर्थ नहीं होते ।

अपना परिवार—उच्च आत्माओं का भाण्डागार

युग-परिवर्तन एक बहुत बड़ा प्रयोजन है । उसके लिये तदनुरूप बढ़े साधनों एवं उपकरणों की भी आवश्यकता होगी । यह साधन उत्कृष्ट स्तर के व्यक्तियों के रूप में अभीष्ट होंगे । संसार का भावनात्मक परिवर्तन करने के लिये भावनाशील-श्रद्धा और सद्भावना के धनी व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी । इन दिनों वही सब जुटाया जा रहा है । विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न क्षमता सम्पन्न ऐसे व्यक्तियों का इन दिनों सृजन हो रहा है जो आगे चल कर युग-निर्माताओं की महत्वपूर्ण भूमिका बड़ी खूबी से सम्पादन कर सकें ।

यह एक विचित्र और विलक्षण रहस्य है कि जन्मजात रूप से तो महामानव कोई विरले ही, यदाकदा ही उत्पन्न होते हैं । शेष तो बीच में से ही उस महाकाल की दृष्टि में आते हैं और देखते-देखते कुछ से कुछ बन जाते हैं। पूर्ण अवतारों की बात जाने दीजिये, मध्यावतार अक्सर जीवन के किसी मध्यकाल में ही परिवर्तित होते हैं । आवश्यकतानुसार महाकाल उन्हें अपनी भुजाओं में कस लेते हैं और देखते-देखते वे कुछ से कुछ बन जाते हैं ।

बुद्ध जन्मजात अवतार नहीं थे । यदि होते तो उन्हें आरम्भ से ही अपने उद्देश्य का ज्ञान होता और विवाह करने, बच्चा उत्पन्न करने और उन्हें बिलखता छोड़ने की भूल न करते । गांधी जी जन्मजात अवतार नहीं थे। यदि होते तो उनको लगभग तीस वर्ष तक की आयु तक इधर-उधर भटकना न पड़ता । रामायण के पात्रों में हनुमान, अंगद, सुग्रीव, जामवन्त, जटायु आदि की भूमिकायें बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं, पर वे लोग यदि जन्मजात महापुरुष होते तो उनका जीवन-क्रम आरम्भ से ही निर्धारित दिशा में चल रहा होता । वाल्मीकि, अंगुलिमाल, अम्बपाली, सूरदास, सम्राट अशोक आदि के जीवन आरम्भ में कलुषित ही तो थे। अगणित सन्त महात्माओं एवं महापुरुषों के जीवन-क्रम ऐसे ही हैं जिन्हें ध्यानपूर्वक देखने से स्पष्ट होता है कि वे जन्मजात रूप से कोई महानता लेकर नहीं आये थे । जीवन का बहुत बड़ा भाग उन्होंने निरर्थक अथवा अस्त-व्यस्त गँवाया । समयानुसार उनकी अन्तःचेतना ने पलटा खाया, दिशा बदली और फिर वे कुछ से कुछ हो गये । इससे प्रकट होता है कि महानता का कोई पूर्व-संचित कण यदि अन्तःकरण में विद्यमान है तो वह कभी भी प्रतिफलित हो सकता है। महाकाल की एक दृष्टि किरण उसका कायाकल्प कर सकती है। गर्मी के दिनों में घास सूख जाती है, पर वर्षा आते ही उसकी सूखी जड़ें फिर हरी हो जाती हैं और घास की बेल देखते ही देखते भूमि को हरीतमा से ढँक देती है ।

अनेक महात्माओं में पूर्व जन्मों की महानता प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहती है । आवश्यक नहीं कि वह जन्मते ही प्रकट हो जाय । ऐसे महामानव आरम्भिक जीवन में सामान्य स्तर की नगण्य जैसी महत्व की गतिविधियों में रहते देखे जाते हैं । पर जैसे ही उपयुक्त अवसर आता है, साहसपूर्वक अपनी पूर्व भूमिका में परिणत-परिवर्तित हो जाते हैं। इस दुस्साहस में ही इतनी महानता छिपी रहती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महाकाल का प्रबुद्ध आत्माओं में अवतरण स्वाँति बूँद की तरह होता है, जिससे साधारण दीखने वाली सीपी को अपने गर्भ से महान् मोती उगाने का सौभाग्य मिलता है । इस अनुग्रह से सामान्य व्यक्तित्व देखते-देखते महान् हो जाता है ।

यह एक प्रकट रहस्य है कि समुद्र मंथन करके चौदह रत्न खोज निकालने की तरह उन आत्माओं को तलाश कर लिया गया है जो पिछले युगों में महाकाल का पुण्य प्रयोजन पूरा करने में शानदार भूमिका सफलतापूर्वक प्रस्तुत करती रही हैं । जब आवश्यकता पड़ी है महाकाल ने उन्हें सेवानिवृत्त सैनिकों की तरह युद्धकाल की आवश्यकताओं को देखते हुए पुकार बुलाया है और वे खुशी-खुशी अपने चारों ओर बिखरे हुए मकड़ी के जाले जैसे जाल-जंजालों को तोड़-मरोड़ कर उस पुकार को पूरा करने के लिये उपस्थित होते रहे हैं । जिन्होंने अतीत में अपने-अपने समय पर महामानव युग पुरुष, लोकनायक और वीर-बलिदानी बनने का महानतम गौरव प्राप्त किया है, वे उस अनुपम, अलौकिक आनन्द का रसास्वादन जानते हैं, अतएव जब अवसर आता है,तब उस सुअवसर का लाभ उठाने के लिये सबसे आगे आ जाते हैं । महारास में कृष्ण की वंशी सुनकर गोपियाँ अपना लौकिक जाल-जंजाल छोड़ कर उस अमृत का रसास्वादन करने को दौड़ पड़ी थीं। इस रहस्य की अब पुनरावृत्ति होने जा रही है। नव निर्माण का कठिन कार्य एक प्रकार का धर्मयुद्ध है। इसमें प्रवृत्त होने की शंखध्वनि से जब दिशायें गुञ्जित होने लगेंगी तो प्रबुद्ध आत्माओं के लिये भीरुता धारण किये रहना कठिन होगा । उन्हें अपने जाल-जंजाल तोड़कर उस महान आह्वान की पूर्ति में संलग्न होना ही होगा ।

इस संध्याकाल में सभी उच्च आत्मायें महाकाल का पुण्य प्रयोजन पूर्ण करने के लिये उसी तरह विद्यमान हैं जिस प्रकार सभी ऋषि, मुनि, वनवासी अपने निकटवर्ती जलाशय पर संध्यावंदन करने के लिये एकत्रित हो जाते हैं या विवाह, शादी जैसे उत्सवों में सभी कुटुम्बी सम्बन्धी जमा होते हैं । युग परिवर्तन ऐसा ही अवसर है, इसमें अनादि काल से लेकर अब तक प्रायः सभी प्रबुद्ध आत्मायें मनुष्य शरीरों में विद्यमान हैं । विश्वामित्र, अत्रि, कपिल, कण्व, व्यास, वशिष्ठ, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य, गौतम, नारद, लोमश, महावीर, बुद्ध, शंकराचार्य, कुमारिल, आदि—ऋषि विवेकानन्द, रामतीर्थ, रामदास, तुकाराम, एकनाथ, ज्ञानेश्वर, कबीर, नानक, रैदास, रामकृष्ण परमहंस, सूर, तुलसी, आदि सन्त—अर्जुन, द्रोण, भीष्म, कर्ण आदि योद्धा—चाणक्य, शुक्राचार्य आदि नीतिज्ञ—हरिश्चन्द्र, शिवि, दधीचि, मोरध्वज, कर्ण, भामाशाह जैसे उदार परोपकारी—अनुसूया, मदालसा, कुन्ती, द्रौपदी, सुभद्रा, सत्यवती, मैत्रेयी, गार्गी, भारती, दुर्गावती, लक्ष्मीबाई, अम्बपाली, मीरा, शबरी, अहिल्या बाई, सारन्धा आदि जैसी देवियाँ—अभिमन्यु, ध्रुव, प्रहलाद, फतेहसिंह, जोरावर जैसे वीर बालक इन दिनों मौजूद हैं । वे साधारण जीवन व्यतीत कर रहे हैं । अभी वे साधारण स्थिति में हैं, पर अगले ही दिनों उनको असाधारण बनते देर न लगेगी । लोग आश्चर्य करेंगे कि कल का साधारण समझा जाने वाला व्यक्ति आज इतना असाधारण—इतना महान् कैसे बन गया ? यह बस महाकाल का युग निर्माण प्रत्यावर्तन—महारास का दिव्यदर्शन जैसी ही अद्भुत घटना होगी ।

नव-निर्माण की सीमा केवल भारत ही नहीं सारा विश्व है । किन्तु यह कार्य भारत से ही आरम्भ हो रहा है । कारण कि इस परिवर्तन का आधार अध्यात्म है । भारत अध्यात्म की मातृभूमि है । इसलिये इस कार्य का श्रीगणेश यहीं से हो सकता है । यह शुभारम्भ अवश्य गीता नायक भगवान कृष्ण की जन्मभूमि से हो रहा है, पर उसका क्षेत्र व्यापक है । यह प्रकाश विश्व के कोने-कोने में पहुँचाना है और सारी दुनिया को ही मानवता के उच्च आदर्शों को अपनाने के लिये प्रशिक्षित करना है । अस्तु इस अभियान को विश्व आन्दोलन ही कहना चाहिये । इस प्रयास में विश्व भर की सभी आत्माओं का योगदान रहना है । अतएव वे भी भारत भूमि में ही इन दिनों अवतरित हो रही हैं । कुछ के जन्म हो चुके हैं, कुछ के होने वाले हैं । विश्व के सभी धर्मों के देवदूतों का आगमन हो रहा है। समय पर जिनने विश्व को राजनैतिक, नैतिक, बौद्धिक, आर्थिक परिस्थितियों को सुधारने के लिये अपने ढंग से मानव जाति की महत्त्वपूर्ण सेवा की है, ऐसी अनुभवी, प्रशिक्षित और परखी हुई आत्मायें फिर अवतरित हो रही हैं ।

जो जन्म ले चुकीं वह समय पर अपना आवरण हटाकर प्रकट होंगी । जिनका जन्म नहीं हुआ वे घर ढूँढ रही हैं । कई आत्मायें उपयुक्त नर-नारियों के रज-वीर्य में प्रवेश कर चुकी हैं और अवसर मिलने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर वे जन्म धारण कर लेंगी । इस दृष्टि से कुछ ही समय में भारत महापुरुषों की एक रत्नराशि के रूप में अपना अस्तित्व प्रकट करेगा ।

प्रज्ञा परिवार के सदस्यों में ऐसी अनेक उच्च स्तरीय आत्मायें विद्यमान हैं । वे जब कभी अपने बारे में विचार करती हैं तो उन्हें स्पष्ट विदित होता है कि वे साधारण नहीं असाधारण हैं । इन दिनों उनकी आत्मा जोरों से कोंच रही हैं और निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप कोई साहसपूर्ण कदम बढ़ाने के लिये जोरदार धक्के देकर विवश कर रही है । अपने परिवार में ऐसी अनेक आत्माओं को नव निर्माण के लिये ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करते हुए देखा जाय तो उसे आश्यर्च नहीं स्वाभाविक मानना चाहिये । क्योंकि वे साधारण परिस्थितियों में पड़े हुए तो हैं पर वस्तुत: साधारण नहीं हैं । समय आने पर वे साहसपूर्वक आगे बढेंगे और अपना अवतरण उद्देश्य पूरा करेंगे ।

विशेष प्रयोजन के लिये विशिष्ट आत्माओं का विशेष अवतरण

अगले दिनों निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी घटना घटित होने वाली है । इतनी बड़ी जिसकी तुलना में इतिहास की पिछली सभी परिवर्तन चर्चायें फीकी पड़ जायेंगी । प्राचीन काल में विज्ञान का इतना विकास नहीं हुआ था । जनसंख्या की दृष्टि से मनुष्य इतने अधिक नहीं बढ़े फैले थे ओर न यातायात की इतनी त्वरा सुविधायें थीं जितनी आज हैं । आज तो सारा संसार एक नगर की गली-मुहल्ले जैसा हो गया है । उन दिनों विद्वान तो थे पर सर्वसाधारण तक विचारशीलता की हवा नहीं पहुँची थी । थोड़े लोग शक्ति सम्पन्न होते थे इसलिये उन्हीं की हार-जीत संसार की स्थिति बदल देती थी, पर आज स्थिति एवं शक्ति का स्रोत नागरिकों तक जा पहुँचा है । इसलिये अब हर क्षेत्र का दायरा बहुत बढ़ गया है । इसी दृष्टि से भावी परिवर्तन अब तक के सभी परिवर्तनों की अपेक्षा अधिक बड़ा, अधिक व्यापक और अधिक उथल-पुथल भरा होगा ।

क्या राजनैतिक, क्या दार्शनिक, क्या वैज्ञानिक, क्या समाजशास्त्री, क्या अर्थ विशेषज्ञ, क्या अध्यात्मवादी—सभी एक स्वर से यह अनुभव करते हैं कि जिस रास्ते पर आज दुनिया चल पड़ी है वह गलत और अनुचित है । इसकी प्रतिक्रिया हमें हर बीसवें साल एक ऐसा महायुद्ध लड़ने के लिये विवश करती है जिसमें उत्तरोत्तर धन जन की अपार हानि होती है और नई-नई समस्यायें, उलझनें और गुत्थियाँ उठ खड़ी होती हैं । इसके अतिरिक्त मानव जाति की वर्तमान विचारधारा जन साधारण के जीवन को दिन-दिन अधिक बोझिल, अधिक अशान्त और अधिक जटिल, अधिक कष्टकर और अधिक असफल बनाती चली जा रही है । आज भी कम विपन्नता नहीं है, आज भी सर्वसाधारण को इन परिस्थितियों के कारण बहुत असंतोष, बहुत रोष और बहुत कष्ट है फिर यदि यही वातावरण बना रहा है और जैसी कि सम्भावना है अगले दिनों और भी बिगड़ा तो यह दुनिया मनुष्यों के रहने लायक न रह जायगी । उलझनें इतनी अधिक बढ़ेंगी कि लोग उन्हीं से मर खप कर नष्ट हो जायेंगे ।

यह परिस्थिति हर विचारशील को यह सोचने के लिये विवश करती है कि आज की रीति-नीति को बदला जाना चाहिये । बदलाव के स्वरूपों और तरीकों में अन्तर है पर यह निष्कर्ष सर्वसम्मत है कि आदमी को नेक और उदार होना चाहिये तथा उसकी गतिविधियाँ ऐसी हों जो एक-दूसरे से टकराने की नहीं, स्नेह सहयोग की स्थिति पैदा करें । साधनों को विनाश के लिये विकास के लिये प्रयुक्त किया जाय । यही युग की पुकार है, यही महाकाल की आकांक्षा है पर दुनिया एक नशेबाज की तरह है, जिसे अपने पुराने ढर्रे के दोष विदित होते हुए भी उसे बदलने में बड़ी कठिनाई प्रतीत होती है । परिवर्तन की बात सुनकर उसका जी घबराता है, डर लगता है । जो है सो ठीक। जो ढर्रा चल रहा है उसी लकीर पर लुढ़कते रहने में लोग सुविधा सोचते हैं । विवेक एवं औचित्य के स्थान पर सर्वसाधारण की रुचि पुराने ढर्रे पर चलते रहने की है । यदि इस रुचि को बदला न जाय, लकीर के फकीर बने रहने की रुढ़िगत परम्पराओं से चिपके रहने की आदतों को न सुधारा जाय तो फिर तेजी से सर्वनाश के निकट जा पहुँचना ही एक मात्र परिणाम शेष रह जायगा ।

अस्तु भावनात्मक एवं क्रिया-पद्धति की वर्तमान रीति-नीति में साधारण सुधार नहीं भारी परिवर्तन आज की एक अनिवार्य आवश्यकता बनकर सामने आया है और वह पूरा होकर रहेगा । जन—मानस में यह अभिलाषा अव्यक्त रूप से काम कर रही है । वे स्वयं बदलना भले ही पसन्द न करें पर परिस्थितियों को जरूर बदला देखना चाहते हैं । ऐसी जन आकांक्षा को अध्यात्मवादी दैवी प्रेरणा के रूप में देखते हैं । विश्व की सूक्ष्म परिस्थितियों का ज्ञान रखने वाले तत्वदर्शी इस प्रवाह के पीछे परब्रह्म-परमात्मा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की महाप्रेरणा को कर्म करता हुआ मानते हैं । महाकाल ऐसी ही ईश्वरी शक्ति है जो अवांछनीय परिस्थितियों में अवांछनीयता को बदल देने का अपना काम अनादिकाल से अभीष्ट अवसरों पर बड़ी खूबी के साथ सम्पन्न करती रही है । उसी महाशक्ति की हलचलों को इन दिनों हर तत्त्वदर्शी अनुभव करता है और भावी परिवर्तन को अवश्यम्भावी मानता है । स्वभावतः ऐसे व्यापक परिवर्तनों के अवसर पर अवांछनीय तत्त्व प्रतिरोध करते हैं, गड़बड़ फैलाते और बाधा डालते हैं । उन्हें इस उद्धतता का सबक सिखाने के लिये दैव—दण्ड के करारे प्रहार सहने होते हैं । जितने बड़े परिवर्तन होते हैं, उतने ही उसके प्रतिरोध भी सामने खड़े होते हैं और उतने ही कड़े वज्र दण्ड बरसते हैं । पहले भी यही होता रहा है अगले दिनों भी यही होने वाला है। इतिहास अपनी पुनरावृत्ति करता रहता है । अब फिर लगभग उसी आधार पर थोड़े हेर—फेर के साथ घटनाचक्र प्रवर्तित होने वाला है ।

यह महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ इसलिये प्रस्तुत की गयी हैं कि यदि सम्भव है तो समय रहते अपने को और दूसरों को बदलने की चेष्टा की जाय, इससे महाकाल के कार्य में सरलता होगी, कष्टों से संसार को बहुत कुछ राहत मिल जायगी और उपद्रवों की उग्रता अनावश्यक विक्षोभ पैदा करने में रुक जायगी । जिम्मेदार, ईमानदार और थोड़े ऊँचे उठे हुए लोगों को करना भी यही चाहिये, आग को बुझाने के लिये दैनिक कार्यों और सुविधाओं को छोड़ना ही उचित है। इसी औचित्य का उद्‌बोधन इस रहस्योद्‌घाटन का लक्ष्य है । अगला समय कैसा आयेगा उससे बदली हुई रीति-नीति किस प्रकार की होगी, इससे भली-भाँति समझकर यदि हम अपनी सोचने की पद्धति बदलें व महाकाल के निर्धारणानुसार चलें, इसी में हमारा कल्याण है ।

यहाँ यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिये कि इस परिवर्तन प्रक्रिया की अभीष्ट पृष्ठभूमि तैयार करने की ईश्वरीय जिम्मेदारी कुछ विशेष आत्माओं पर सौंपी गयी है । उनमें से बहुत कुछ को गायत्री परिवार के अन्तर्गत संगठित कर दिया गया है । जो बाहर हैं वे भी अगले प्रवाह में साथ हो लेंगी । यों देखने में हम एक साधारण स्तर का जीवन जीते हैं और बाहर से कोई विशेषता अपने अन्दर दिखाई नहीं पड़ती, फिर भी "परमार्थ प्रयोजनों के लिये बहुत कुछ कर गुजरने की अभिलाषा" एक ऐसा तत्त्व है जिसे ईश्वरीय प्रकाश एवं पूर्व जन्मों के संचित उत्कृष्ट संस्कारों का प्रवाह कह सकते हैं । अपनी यही विशेषता है । जिसके भीतर जितनी ईश्वरीय प्रयोजनों में सहयोगी बनने की तड़पन है वह उतना ही दिव्य आत्मा है । तड़पन पानी के स्रोतों की तरह है जो पहाड़ जैसी कठोरता को चीर कर बाहर निकल आती है । साधारण परिस्थिति के लोग भी उपयुक्त अवसर पर अपनी तड़पन क्रियान्वित करने का साहस कर बैठते हैं, तब वह साहस ही ईश्वरीय अवतरण के रूप में उन्हें सूर्य, चन्द्रमा की तरह चमका देता है । तड़पन का फूट पड़ना , इसी का नाम अवतरण है ।

अपने परिवार में एक से एक बढ़कर उत्कृष्ट स्तर की आत्मायें इन दिनों मौजूद हैं । वे जन्मी भी इसी प्रयोजन के लिये हैं । ऐसे महान् अवसरों पर उत्कृष्टता सम्पन्न सुसंस्कारी आत्मायें ही बड़ी भूमिकायें प्रस्तुत करने का साहस करती हैं । आंतरिक साहस उनकी संसारिक सुविधाओं को मकड़ी के जाले की तरह तोड़—फोड़ कर रख देता है और लगता है यह व्यक्ति अपनी विषम परिस्थितियों के कारण कोई कहने लायक काम न कर सकेगा । देखा जाता है कि वही ऐतिहासिक महापुरुष स्तर के काम करता है । यह और कुछ नहीं उत्कृष्ट सुयोजनों के लिये दुस्साहस कर बैठने की हिम्मत ही है, जिसे ईश्वरीय प्रेरणा के रूप में परखा जा सकता है । हममें से अनेको परिजन अभी अपनी ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करने की बात सोच रहे हैं। कई उसके लिये कदम बढ़ा रहे हैं । कई दुस्साहसपूर्वक अग्रगामी होने की स्थिति को छू रहे हैं। यह शुभ लक्षण हैं । यह इस बात के प्रमाण हैं कि जो कार्य हमें सौंपा गया है, जिसके लिये अपना यह महत्त्वपूर्ण जन्म है, अब उसकी पूर्णता के लिये अभीष्ट प्रकाश एवं साहस अपने अन्दर उत्पन्न हो चला है वह करने का समय आ गया, जो इन्हीं दिनों करना आवश्यक है ।

इतिहास अपनी पुनरावृत्ति कर रहा है । अपना परिवार एक ईश्वरीय महान् प्रयोजन की पूर्ति में सहायक बनने के लिये पुनः आ इकट्‌ठा हुआ है । अच्छा हो हम अपने को पहचानें और अतीत काल की सूखी स्मृतियों को फिर हरी कर लें । निश्चित रूप से हम एक अत्यन्त घनिष्ट और निकटवर्ती आत्मीय परिवार के चिर आत्मीय सदस्य रहते चले आ रहे हैं। समय आने पर इसका रहस्य भी खुल जायगा, पर अभी वह समय नहीं आया । हम लोग इसकी हल्की-सी झाँकी इस रूप में पा सकते हैं कि परस्पर हममें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से किसका क्या सम्बन्ध रहा है और कितने समय पूर्व किसने, किस प्रकार की दिव्य भूमिकायें सम्पादित की थीं । थोड़ा-सा प्रयत्न करने पर यह अनुभव आसानी से हो सकते हैं । ऐसी जानकारी आत्मज्ञान की दृष्टि से श्रेयस्कर एवं सहायक ही होगी। रात्रि के अन्तिम भाग में प्राय: अन्त:चेतना स्पष्ट एवं निर्मल होती है । उस समय आँख खुलने पर बिस्तर में पड़े-पड़े ही अन्त:करण को सामान्य विचारों से खाली करके इस अनुभव के लिये खुला छोड़ देना चाहिये कि अपने अतीत जन्मों एवं क्रिया-कलापों की हल्की-सी अनुभूति उससे प्रस्फुटित हो । कई दिन ऐसा प्रयास करते रहने से अनुभव में स्थिरता आ जायगी । हिलते हुए पानी की लहरों में प्रतिबिम्ब ठीक से नहीं दीखता पर जैसे—जैसे पानी का हिलना स्थिर होता जाता है प्रतिबिम्ब स्पष्ट दीखने लगता है । ठीक उसी प्रकार एक—दूसरे से भिन्न प्रकार के—परस्पर विरोधी एवं विसंगत अनुभव भी आयेंगे पर थोड़े ही दिनों में कुछ अनुभूतियाँ बार—बार, अधिक स्पष्ट और अधिक वास्तविक प्रतीत होने लगेंगी । वे क्रई जन्मों की होंगी। इस प्रकार की अनुभूतियों को नोट करते रहा जाय तो स्थिति की बहुत कुछ सफाई हो सकती है।

विभूतियों का आह्वान

समय की पुकार पर विशिष्ट तथा चेतना सम्पन्न व्यक्ति कुछ कर गुजरने के लिये खड़े हुए हैं, उन्हीं का संगठित रूप युग निर्माण परिवार के नाम से जाना जाता है । जैसे-जैसे कार्य का विस्तार होता है वैसे-वैसे उसके लिये अधिक व्यापक व्यवस्था करनी पड़ती है । नव निर्माण के कार्य के लिये भी अब विभूति सम्पन्न व्यक्तियों को विशेष भूमिका में उतारना होगा ।

यों सभी मनुष्य ईश्वर के पुत्र हैं पर जिनमें विशेष विभूतियाँ चमकती हैं, उन्हें ईश्वर के विशेष अंश की सम्पदा से सम्पन्न जानना चाहिये । गीता के विभूति योग अध्याय में भगवान कृष्ण ने विशिष्ट विभूतियों में अपना विशेष अंश होने की बात उदाहरणों समेत बताई है । यों जीवनयापन तो अन्य प्राणियों की तरह मनुष्य भी करते हैं, पर जिनके पास विशेष शक्तियाँ-विभूतियाँ हैं, कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य वे ही कर पाते हैं। इसलिये भावनात्मक नव—निर्माण जैसे युगान्तकारी अभियानों में उनका विशेष हाथ रहना आवश्यक है ।

कार्य बढ़ाने के लिये प्रयास करने के साथ बढ़े हुए कार्य को व्यवस्थित और सुनियोजित ढंग से चलाना भी आवश्यक है । उसके लिये विभूतिवान व्यक्तियों की आस्थायें जागृत करके उनकी विभूतियों को इस दिशा में लगाया जाना है । ईश्वरीय प्रयोजनों की पूर्ति के लिये उपयोग में लाया जाना ही विभूतियों को सार्थक बनाना है ।

वस्तुत: विभूतियाँ होती ही इसीलिये हैं । विभूतियाँ ईश्वर प्रदत्त होती हैं, व्यक्तियों को वह सौंप तो दी जाती हैं परन्तु मात्र धरोहर के रूप में । उनका मन चाहा प्रयोग किया जाना अनैतिक भी है तथा उनकी पात्रता को खो देने की भूमिका भी जिसके लिये जो वस्तु दी जाये उसमें उसका उपयोग न किया जा सके तो उसे छीन भी लिया जाना अस्वाभाविक नहीं । विभूतियाँ की आवश्यकता युग परिवर्तन जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये है । तो उन्हें उसके लिये लगना ही होगा । महाकाल के संकेत की अवहेलना की नहीं जा सकती । इसीलिये जिनके पास विभूतियाँ हैं—उन्हें सचेत करना, झकझोरना भी आवश्यक है । युग निर्माण योजना द्वारा यह कार्य भी किया जा रहा है। हर समझदार व्यक्ति को चाहिये कि वह विभूतिवानों को संकेत करे तथा समयानुकूल दिशा उन्हें दिखाये । जिन सात विभूतियों को झकझोरने का, सन्मार्गगामी बनाने का कार्य किया जाना है उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

विभूतियों को सात भागों में विभक्त कर सकते हैं। (१) भावना, (२) शिक्षा—साहित्य, (३) कला, (४) सत्ता, (५) सम्पदा, (६) भौतिकी, (७) प्रतिभा । इन सातों के सदुपयोग से ही व्यक्ति और समाज का कल्याण होता है ।

युग निर्माण आन्दोलन का प्रथम प्रयास जन-जागरण था अब अगला कदम विभूतियों को भी झकझोरना है और उन्हें उलझी हुई स्थिति से निकाल कर जीवन अथवा मरण में से एक को चुन लेने के लिये विवश करना है । अब तक यह अभियान भारत तक—विशेषतया हिन्दू वर्ग के प्रगतिशील वर्ग तक सीमित रहा है अब इसकी परिधि विश्वव्यापी बनाई जा रही है । प्रथम चरण में मजबूती आ जाने पर यह दूसरा चरण उठाया जाना आवश्यक भी है ।

१—भावना (धर्म एवं अध्यात्म)

व्यक्तित्व को उत्कृष्ट और गतिविधियों को आदर्श बनाने की अन्त: प्रेरणा को भावना कहा जाता है । धर्म धारणा और अध्यात्म साधना के समस्त कलेवर को इसी प्रयोजन के लिये खड़ा किया गया है । युग निर्माण योजना ने बताया है कि चरित्र गठन का नाम धर्म और अपनी क्षमताओं को लोक मंगल के लिये समर्पित करने की पृष्ठिभूमि का नाम अध्यात्म है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावनाओं को कल्पना लोक में नहीं उड़ते रहना चाहिये वरन् उन्हें अपने तथा समाज के समग्र निर्माण में संलग्न होना चाहिये । यही उनका वास्तविक प्रयोजन है भी ।

धर्म की प्राचीनता और दार्शनिकता से प्रभावित लोगों को कहा जा रहा है कि अपने सम्प्रदाय की संख्या बढ़ाने—धर्म परिवर्तन के अति उत्साह में शक्तियों का अपव्यय न करें । हमारा सतत प्रयास है—सब धर्मों में परस्पर सहिष्णुता और समन्वय की प्रवृत्ति उत्पन्न करना । वे अपने स्वरूप को भले ही बनाये रहें पर विश्व धर्म के घटक बनकर रहें और अपने प्रभाव को चरित्र गठन एवं परमार्थ प्रयोजन में ही नियोजित करें । प्रथा परम्पराओं वाले कलेवर को गौण समझें । सभी धर्म सम्प्रदाय अपनी परम्पराओं में से उत्कृष्ट अंश अपनाकर—विश्व एकता के उत्कृष्ट मानवता और आदर्श समाज रचना के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ें और एक ही केन्द्र पर केन्द्रित हों । धर्मों के जीवित रहने का, अपनी उपयोगिता बनाये रहने का, मात्र यही तरीका है ।

धर्म और अध्यात्म क्षेत्र मे लगी प्रचुर पूँजी, जन शक्ति और प्रभावशीलता को भविष्य में निहित स्वार्थों के पोषण के लिये प्रयुक्त नहीं होते रहने देना चाहिये । राज-तन्त्र में उसकी शक्ति सृजनात्मक दिशा में लगनी चाहिये । भावनाशील लोग-न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति से सन्तुष्ट रहकर अपनी भौतिक एवं आत्मिक क्षमताओं का उपयोग मानव जाति के लिये समर्पित कर दें तो निस्संदेह सर्वोत्तम युग साधना होगी और उसका सत्परिणाम प्रत्यक्ष परिलक्षित होगा ।

(२) शिक्षा एवं साहित्य

व्यक्ति की समस्त गरिमा उसकी मन:स्थिति पर, विचार प्रक्रिया पर निर्भर है । इस जीवन प्राण के मर्म स्थल को शिक्षा एवं साहित्य के माध्यम से ही परिष्कृत बनाया जा सकता है । व्यक्ति और समाज के निर्माण में शिक्षा और साहित्य की महत्ता सर्वविदित है । युग परिवर्तन की इन घड़ियों में दोनों माध्यमों का समुचित उपयोग किया जाना चाहिये ।

सरकारों को अपने ढंग से काम करने देना चाहिये। वर्तमान वातावरण में उनके लिये यह कठिन ही है । नये युग के अनुरूप मस्तिष्क ढालने वाली शिक्षा पद्धति के बारे में सही ढंग से कुछ सोच सकें और वैसा ही कुछ सही कदम उठा सकें । सरकारें भौतिक जानकारियाँ देने वाली जो शिक्षा प्रक्रिया चला रही है उससे लाभ उठाना चाहिये, किन्तु भाव परिष्कार की पूरक, धर्म शिक्षा, नैतिक शिक्षा, भावनात्मक नव निर्माण की शिक्षा पद्धति का संचालन जनता स्तर पर होना चाहिये । प्रौढ़ शिक्षा का कार्य भी जनता को ही अपने हाथ में लेना चाहिये । ये सरकारी स्तर पर नहीं, जन स्तर पर ही हल हो सकती हैं । विवाहित महिलाओं की शिक्षा का प्रबन्ध सरकारी विद्यालय कर सकेंगे यह आशा रखना व्यर्थ है। दृष्टिकोण परिष्कार, आज की परिस्थितियों में चरित्र निर्माण का व्यवस्थित पथ समाज संरचना की अगणित समस्यायें और हल, विश्व परिवार के लिये बाध्य करने वाले प्रचण्ड वातावरण का निर्माण, यह सब प्रयोजन जन स्तर के विद्यालय ही पूरा कर सकेंगे। पूरे या अधूरे समय के लिये जनता अपनी रोटी, कपड़ा, दवा, मनोरंजन आदि का खर्च स्वयं उठाती है, इसके लिये सरकार से अनुदान नहीं माँगती तो फिर भावनात्मक नव निर्माण की शिक्षा के लिये सरकार का मुँह ताका जाय इसकी क्या आवश्यकता है ।

हर जगह ऐसे सुशिक्षित भावनाशील लोग मौजूद हैं, जिनके अन्दर परमार्थ के लिये आन्तरिक ज्योति चमकती रहती है । मार्ग न मिलने से वह अवरुद्ध रहती है इन्हें इन विद्यालयों को चलाने के लिये अपना थोड़ा—सा समय अवैतनिक रूप से अनुदान देने के लिये कहा जाय तो अवश्य ही अनेक जागृत आत्मायें आगे आयेंगी और लाखों शिक्षकों की आवश्यकता सहज ही पूरी हो जायगी । ढलती उम्र के लोग वानप्रस्थ परम्परा अपनाकर लोकमंगल के क्षेत्र में उतरने के लिये प्रोत्साहित किये जा सकें तो भी इस दिशा में तत्पर काम हो सकता है ।

लोक शिक्षण की महती आवश्यकता पूरी कर सकने वाले विद्यालय हर गाँव और हर मुहल्ले में स्थापित हो सकते हैं और सफलतापूर्वक चल सकते हैं । अब यह युग धर्म समझा जाना चाहिये और सोचने तक ही सीमित न रहकर इसकी स्थापना और संचालन के लिये कटिबद्ध होना चाहिये । हम अगले दिनों इसकी प्रचण्ड प्रेरणा सर्वत्र भरने के लिये अपने प्रखर आत्मबल का प्रयोग करने जा रहे हैं । कहना न होगा कि अगले ही दिनों इस संदर्भ में आशाजनक सफलता उत्पन्न होते हम सब अपनी इन्हीं आँखों से प्रत्यक्ष देखेंगे ।

साहित्यकारों से इसी दिशा में लेखनी उठाने के लिये कहा जा रहा है । कवियों से मूर्च्छित जनता को जागृति में परिणत कर सकने वाले अग्नि गीत लिखने के लिये कहा गया है । पत्रकार अपने पत्रों में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पत्रिकाओं में इस प्रकार के समाचारों और लेखों को स्थान देना आरम्भ करें, प्रकाशक ऐसी ही पुस्तकें छापें। संसार में लगभग ६०० भाषायें हैं । भारत में ही सरकारी मान्यता प्राप्त १४ भाषायें हैं और इससे कई गुनी संख्या उन भाषाओं की हैं जिन्हें मान्यता प्राप्त नहीं है । इन सभी भाषाओं में प्रचुर साहित्य लिखा जाना, अनुदित किया जाना, छापा जाना और विक्रय किया जाना आवश्यक है । इस प्रकाशन व्यवसाय के लिये प्रकाशन व्यवसाय के लिये पूँजी और प्रतिभा दोनों की ही आवश्यकता है । मात्र लेखक नहीं, प्रकाशक भी जब इस क्षेत्र में उतरेंगे तो उनके परस्पर सहयोग समन्वय से कुछ काम चलेगा । इस दिशा में प्रत्यक्ष रूप से उपयुक्त व्यक्तियों को प्रेरणा दी जानी है, दी भी जा रही है । युग निर्माण योजना ने जो शुभारम्भ मथुरा से किया है वह एक नमूना मात्र है । अभी सैकड़ों धारायें इस क्षेत्र में काम करने के लिये बाकी पड़ी हैं और उन्हें क्रियान्वित किया ही जाना चाहिये।

(३) कला मंच से भाव स्पन्दन

कला मंच में चित्र, मूर्तियाँ, नाटक, अभिनय, संगीत आदि आते हैं । संगीत विद्यालय हर जगह खुलें, सरल संगीत के ऐसे पाठ्यक्रम हों जो वर्षों में नहीं महीनों में सीखें जा सकें । प्रचण्ड प्रेरणा भरे गीतों का प्रचलन प्रसारण इन विद्यालयों द्वारा हो और प्रत्येक हर्षोत्सव पर प्रेरक गायनों की ही प्रधानता रहे। अग्नि गीतों की पुस्तिकायें सर्वत्र उपलब्ध रहें । संगीत सम्मेलन, संगीत गोष्ठियाँ, कीर्तन, प्रवचन, सहगान क्रिया गान (ऐक्शन सांग) नाटक, अभिनय, लोक नृत्य जैसे अगणित मंच मण्डप सर्वत्र बनें और वे लोकरंजन की आवश्यकता पूरी करें ।

चित्र प्रकाशन अपने आप में एक बड़ा काम है। कलेण्डर तथा दूसरे चित्र आजकल खूब छपते—बिकते हैं । उनमें प्रेरक प्रसंगों को जोड़ा जा सके तो जनमानस को मोड़ने में भारी सहायता मिल सकती है। आदर्शवादी चित्र प्रकाशन की योजना सामने हो तो चित्रकार उस तरह की तस्वीरें और भी अधिक प्रसन्नतापूर्वक बना देंगे । यह कार्य ऐसे हैं जिनमें प्रतिभा-पूँजी, सूझबूझ और लगन का थोड़ा भी समन्वय हो जाय तो बिना किसी खतरे का सामना किये सहज ही यह आवश्यकता पूरी की जा सकती है।

पुस्तकालयों की-चल पुस्तकालयों की, झोला पुस्तकालयों की योजना छोटे रूप में अपना परिवार चला भी रहा है । इसे व्यापक और विस्तृत बनाया जाना चाहिये । स्थान-स्थान पर पुस्तकालय खुलने चाहिये । पुस्तक विक्रय के लिये चल पुस्तकालयों का व्यावसायिक रूप मिल सकता है । जब शाक—भाजी तक ठेल—ढकेल पर बेचने वाले हजारों व्यक्ति रोजी रोटी कमाते हैं तो कोई कारण नहीं कि कि चल पुस्तकालय से भी हजारों व्यक्ति रोटी न कमाने लगें । पुस्तक विक्रय की दुकान खोलकर भी सत्साहित प्रसार का उद्देश्य पूरा होता है । इन्हें आर्थिक आधार पर भी किया जा सकता है । आवश्यकता मार्ग—दर्शन और क्रिया संगठन की है । प्रतिभायें यदि वह साधन जुटाने के लिये निकल पड़ें तो न जाने कितना बड़ा काम बौद्धिक क्रान्ति की दिशा में हो सकता है । इसी प्रकार कलामंच को भी व्यावसायिक रूप देकर आगे बढ़ाया जा सकता है ।

यन्त्रीकरण और कला का समन्वय होने से ग्रामोफोन रिकार्ड, टेपरिकार्डर तथा फिल्म सिनेमा के नये प्रभावशाली माध्यम सामने आये हैं । उनका सदुपयोग होना चाहिये । चित्र प्रदर्शनियों के उपयुक्त बड़े साइज के चित्र छपने चाहिये । रिकार्ड बनाने का कार्य योजनाबद्ध रूप से आगे बढ़ना चाहिये । यों शुरुआत दस रिकार्डों से की गयी थी, पर अभी उसे सभी भाषाओं के लिये सभी प्रयोजनों के लिये उपयुक्त बनाने में बड़ी शक्ति, पूँजी लगानी पड़ेगी । इस प्रकार फिल्म निर्माण का कार्य हाथ में लेना होगा । आँकड़े यह बताते हैं कि समाचार पत्र और रेडियो मिलकर जितने लोगों को सन्देश सुनाते हैं उससे कहीं अधिक सन्देश अकेला सिनेमा पहुँचाता है । समाचार पत्रों के पाठकों और रेडियो सुनने वालों की मिली संख्या से भी सिनेमा देखने वालों की संख्या अधिक है । यदि यह उद्योग विवेकवान और दूरदर्शी हाथों में हो और वे उसका उपयोग, जन—मानस को परिष्कृत करने तथा नवयुग के अनुरूप बनाने में कर गुजरें तो उसका आश्चर्यजनक परिणाम सामने आ सकता है जिनके हाथ में इन दिनों यह उद्योग है उनका दृष्टिकोण बदला जाय तथा नये लोग, नई पूँजी और नई लगन के साथ इस क्षेत्र में उतरें तो इतना अधिक कार्य हो सकता है, जिसकी कल्पना भी इस समय कठिन है ।

(४) विज्ञान

विज्ञान की उपलब्धियाँ आश्चर्य जनक हैं उसने मानवी सुख—सुविधाओं में आश्चर्यजनक अभिवृद्धि की है, पर यह भी सही है कि उसके दुरुपयोग से होने वाली हानियाँ भी कम नहीं उठानी पड़ रही हैं । वस्त्रों के उत्पादन में विशेषतया गैसें, किरण एवं अणु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विस्फोट जन्य अस्त्रों ने तो अस्तित्व को ही संकट में डालने की विभीषिका उत्पन्न कर दी है यदि यह शोध, आविष्कार, सृजनात्मक प्रयोजनों तक ही सीमित रहे तो उसका प्रतिफल धरती पर स्वर्गीय परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकता है । ध्वंसात्मक उपकरण जुटाने में जितने साधन खपाये जा रहे हैं, यदि उन्हें मानवी अभावों और शोक सन्तापों की निवृत्ति में लगा दिया जाय तो उसका प्रतिफल इस संसार को स्वर्गोपम बनाने में हो सकता है । समुद्र के खारी पानी से मीठा जल प्राप्त किया जा सकता है । जमीन के नीचे बहने वाली विशाल नदियों का जल धरती पर लाया जा सकता है और सारी दुनिया सचमुच शस्य—श्यामला बन सकती है । कृषि,पशुपालन, बागवानी, वनसम्पदा, स्वास्थ्य सम्वर्धन और मस्तिष्कीय विकास की दिशा में विज्ञान को अभी बहुत काम करना बाकी है । प्रकृति के प्रकोपों से लोहा लेने के साधन जुटाने में अतिवृष्टि, अनावृष्टि, महामारी, भूकम्प, बाढ़, तूफान, शीत-ताप की असहनीयता का सामना करने योग्य शक्ति का उपार्जन हो सकता है । वाहनों को सरल एवं सस्ता बनाया जा सकता है, संचार साधनों के विस्तार की अभी बहुत गुञ्जायश है ।

सबसे बड़ा काम विज्ञान को यह करना है कि वह अध्यात्म के साथ अपनी संगति बिठाये और सिद्ध करे कि शक्ति स्रोत जड़ पदार्थ की अणुसत्ता एवं ऊर्जा में नहीं वरन् चेतना के संकल्पों में, आत्मबल में सन्निहित है । विशालकाय यन्त्र संस्थानों की तुलना में व्यक्ति का शरीर, मस्तिष्क और अन्तःकरण अधिक सशक्त हैं और उस क्षमता का सदुपयोग करके व्यक्ति को देवोपम और समाज को स्वर्गीय वातावरण से ओत—प्रोत बनाया जा सकना नितान्त सम्भव है । इस सत्य को तथ्य के रूप में प्रस्तुत करना, अभिज्ञान को प्रत्यक्ष बनाना विज्ञान का काम है और यह उसे करना ही चाहिये, करना ही होगा । इसके लिये विज्ञान के उच्च क्षेत्र में काम करने वाले विज्ञानियों को आवश्यक प्रेरणा एवं दिशा मिलनी चाहिये । युग की यह माँग है और उसे पूरा करना ही पड़ेगा । पिछले दिनों अखण्ड ज्योति पत्रिका के माध्यम से विज्ञान और अध्यात्म का सम्बन्ध समन्वय प्रतिपादन किया भी जाता रहा है अब उसे और भी अधिक स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष करना पड़ेगा ।

(५) शासन तंत्र

राज सत्ता जिनके हाथ में इन दिनों है अथवा अगले दिनों आने वाली है उन्हें संकीर्ण राष्ट्रीयता के अपने प्रिय क्षेत्र या वर्ग के लोगों को लाभान्वित करने की बात छोड़ कर समस्त विश्व की समान रूप से सुख—शान्ति की बात सोचनी चाहिये और समस्त विश्व की समान रूप से सुख—शान्ति की बात सोचनी चाहिये और समस्त संसार को एक परिवार की नीति अपनाकर प्रकृति प्रदत्त साधनों एवं मानवी उपार्जन को समान रूप से सर्वसाधारण के लिये उपलब्ध करना होगा । युद्धों की भाषा में सोचना बन्द कर न्याय का आधार स्वीकार करना होगा । वर्ग भेद और वर्ण भेद की जड़ें उखाड़नी होंगी ।

अनीति, शोषण, अपराध, रिश्वत, भ्रष्टाचार के वास्तविक शत्रु से जूझना सरकारों का काम है बेकारी, बीमारी और गरीबी दूर करने की दिशा में भी वह बहुत कुछ कर सकती हैं । इसके लिये सत्ता संचालकों और शासकीय कर्मचारियों में बेतरह घुसी हुई स्वार्थपरता एवं अनैतिकता को जड़ मूल से उखाड़ना होगा । इसके लिये प्रजातन्त्री देशों के वोटरों को उनके कर्तव्य विशेष रूप से समझाने होंगे ताकि वे सुयोग्य प्रतिनिधि चुनने और श्रेष्ठ सरकार प्राप्त करने में सफल हो सकें ।

(६) सम्पदा

विभूतियों में इन दिनों सर्वोपरि मान्यता पूँजी को मिली है । धन का वर्चस्व सर्वविदित है । सम्पत्ति में स्वयं कोई दोष नहीं । दोष उसके दुरुपयोग में है । व्यक्तिगत विलासिता में, अहंता की वृद्धि में, यदि उसका उपयोग होता है, संग्रह बढ़ता है एवं उसका लाभ बेटे—पोतों तक ही रखने का प्रयत्न किया जाता है तो निस्संदेह ऐसा धन निन्दनीय है । अगले दिनों आर्थिक समता के आधार पर ही समाज व्यवस्था बनेगी । सामर्थ्य भर श्रम एवं आवश्यकता भर साधन प्राप्त करने के ही क्रम चलें तब सम्पदा पर व्यक्ति का नहीं समाज का अधिकार होगा । समाज में न कोई गरीब दिखाई देगा न अमीर । पर जब तक वह स्थिति नहीं बन जाती तब तक संग्रहीत पूँजी को लोकमंगल के लिये लगाने की दूरदर्शिता दिखाने के लिये धनपतियों को कहा जायेगा । कहा ही नहीं, इसके लिए उन्हें प्रभावित भी किया जायेगा । उन्हें यह समझने का, अवसर दिया जायगा कि समय बदल चुका । पूँजीवाद, सामंतवाद, संग्रहवाद, अमीरी के दिन लद गये । अब उस सड़ी लाश से चिपके रहने में केवल घृणा एवं विपत्ति ही हाथ लगेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस समय उचित तो यह है कि सम्पत्तिवान लोग इस तथ्य को समझें तथा अपने धन का उपयोग समाज हितैषी कार्यों में करें । समाज का धन समाज को लौटा दें । धन के चिपके रहने में बड़प्पन की मान्यता बदलें और उसे लोक मंगल के पुण्य कार्यों में नियोजित करें। पर अपने धन के प्रति मोह बहुत प्रबल होने के तथ्य को स्वीकार करते हुए भी उसे छोड़ देना हर किसी के लिये संभव नहीं । जिस पर अपना अधिकार समझते आये हैं उसे दूसरे के अधिकार में दे देना सामान्य रूप से रुचता नहीं । समाज के प्रति अपनापन इतना गहन हो जाये कि उसके कार्य और उसकी आवश्यकतायें अपनी जैसी दिखने लगें तब तो बात ही कुछ और है । फिर तो उसके लिये कुछ भी खर्च कर देना स्वाभाविक है । जब तक अपनेपन की ऐसी स्थिति नहीं आती और पैसे के प्रति मोह भी कम नहीं होता तब तक उसे समाज को सौंप देना हर किसी के लिये सम्भव नहीं।

दान न सही कम से कम इतना तो होना ही चाहिये कि युग परिवर्तन का पथ प्रशस्त करने वाले प्रचारात्मक कार्यक्रमों में पूँजी की कमी न पड़े । भले ही यह व्यवसाय बुद्धि से किया जाय । भले ही अभी व्यक्तिगत लाभ की बात भी जुड़ी रहने दी जाय तो इतना ही होना चाहिये कि युग परिवर्तन के प्रवाह में अनुकूलता उत्पन्न करने वाला विनियोग इस पूँजी का हो सके । पिछले पृष्ठों पर ऐसे कितने ही क्रिया कलापों की चर्चा की गयी है जिनमें पूँजी के रूप में यदि धन लगा सके तो भी बहुत कुछ हो सकता है । (१) साहित्य प्रकाशन (२) चित्र प्रकाशन (३) अभिनय मण्डलियाँ (४) टेप-रिकार्ड (५) फिल्म निर्माण। यह पाँच कार्य ऐसे हैं जिनके लिये विशालकाय अर्थ संस्थान खड़े किये जाने चाहिये और लोक मानस को परिष्कृत बनाने की आवश्यकता पूरी की जानी चाहिये।

धनवानों को इसके लिये कहा जायेगा । साथ ही जनसाधारण के पास यदि थोड़ी सी भी बचत पूँजी हो तो उसे इन लोकोपयोगी कार्यों में लगा देने के लिये कहा जायेगा । कहना न होगा कि युग परिवर्तन का प्रवाह दैवी प्रेरणाओं के आधार पर चल रहा है । इसमें सहयोग देने वाले घाटे में नहीं नफे में ही रहेंगे । पूँजी डूबने जैसी आशंका किसी को भी नहीं करनी चाहिये । यह तो सुरक्षित ही रहने वाली है—बैंक आदि से अधिक ब्याज भी मिलने वाला है । साथ ही युग देवता की सेवा-साधना का ऐसा अवसर भी मिलता है जिसके कारण असाधारण आत्म-सन्तोष का वरदान भी अनन्त काल तक मिलता रहेगा । जन स्तर पर पूँजी इकट्ठी करने के लिये सरकारी समितियाँ, लिमिटेड कम्पनियाँ बनाई जा सकती हैं । उनमें पूँजी लगाने के लिये हर भावनाशील व्यक्ति को अपनी संग्रहीत पूँजी लगाने के लिये कहा जा सकता है । अनावश्यक जमीन जायदाद, जेवर, जमा पूँजी, बचत फण्ड आदि के रूप में कितना ही ऐसा पैसा पड़ा रहता है जिसकी साधारणतया कोई विशेष उपयोगिता नहीं होती, पर उपर्युक्त आवश्यकता पूरी करने वाले अर्थ संस्थानों में लग जाय तो उससे 'आम के आम, गुठली के दाम' वाली कहावत पूरी हो सकती है । पूँजी तो सुरक्षित रहती है साथ ही साथ कुछ लाभ, ब्याज भी कमाती रहती है । इसके अतिरिक्त युग की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता पूरी करने का जो श्रेय मिलता है उसे तो हर दृष्टि से भूरि-भूरि प्रशंसा के योग्य ही कहा जायेगा ।

ऐसा किया जाना कोई कठिन कार्य नहीं । कोई भी समझदार व्यक्ति इसे समझकर उत्साह के साथ आगे आ सकता है । जिस कार्य और उद्देश्य के लिये प्रयास किया जाना है उसके लिये लाभ का लोभ छोड़कर बल्कि थोड़ा-बहुत घाटा उठाकर भी सहयोग करने की इच्छा रखने वाले भावना सम्पन्न व्यक्तियों का देश में अभाव नहीं है । फिर पूँजी की सुरक्षा के साथ-साथ लाभांश की भी सुनिश्चितता होने पर तो व्यवसाय बुद्धि से भी सम्पन्न लोग उसमें उल्लेखनीय सहयोग दे सकते हैं । आवश्यकता केवल इस बात की है कि वस्तुस्थिति उन्हें समझाई जा सके तथा योजना को व्यावहारिक स्वरूप दिया जा सके ।

प्रतिभा एक विशिष्ट और अतिरिक्त विभूति है । कुछ लोगों के व्यक्तित्व ऐसे साहसी, स्फूर्तिवान, सूक्ष्मदर्शी, मिलनसार, क्रिया-कुशल और प्रभावशाली होते हैं कि वे जिस काम को भी हाथ में लें, उसी आधार पर गतिशील बनाते चले जाते हैं और सफलता के उच्च शिखर तक पहुँचा देते हैं । इस विशेषता को प्रतिभा कहते हैं । सूझ-बूझ, आत्म-विश्वास, कर्मठता, जैसे अनेक सद्गुण उनमें भरे रहते हैं । आमतौर से ऐसे ही लोग महान् कार्यों के संस्थापक एवं संचालक होते हैं । सफलतायें उनके पीछे छाया की तरह फिरती हैं, क्योंकि उन्हें ज्ञान होता है कि कठिनाइयों से कैसे निपटा जाता है, उन्हें सरल कैसे बनाया जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभावान व्यक्ति में चिन्तन को क्रिया में बदल देने की विशेषता होती है । जहाँ सम्भावना नहीं दिखाई दे वहाँ मार्ग खोज निकालने में उन्हें रस आता है । जिन प्रसंगों को कठिनाइयाँ कहकर सामान्य लोग उनसे बचने का प्रयास करते हैं प्रतिभावान की इच्छा उनमें घुसकर कुछ कर दिखाने की होती है । हर कठिन प्रयास को वह अपनी कसौटी का एक सुअवसर मानकर उत्साहपूर्वक उसमें पिल पड़ते हैं ।

योग्यताओं का अधिक से अधिक उपयोग प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति कर लेते हैं । बड़ी योग्यता वाले अन्य व्यक्ति जहाँ किन्तु परन्तु करते हुए सोचते रह जाते हैं वहाँ प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति थोड़ी योग्यता का भी प्रयोग चमत्कारी ढंग से करके काम फतह कर दिखाते हैं । यही कारण है कि विश्व का इतिहास प्रतिभावानों का इतिहास कहा जाय तो अनुचित नहीं । किसी भी क्षेत्र में उनकी यह विभूति समान तीव्रता से अपना प्रभाव दिखाती है ।

प्रतिभाशाली व्यक्ति ही सफल सन्त, राजनेता, समाजसेवी, साहित्यकार, कलाकार, व्यवसायी, व्यवस्थापक होते देखे गये हैं । प्रतिभावान ही डाकू, चोर, ठग जैसे दुस्साहसपूर्ण कार्य करते हैं । सेनानायकों के रूप में, लड़ाकू योद्धाओं के रूप में उन्हें ही अग्रिम पंक्ति में खड़ा देखा जाता है । क्रान्तिकारी भी इसी स्तर के लोग बनते हैं । युग निर्माण अभियान के हर पक्ष को प्रकाशवान बनाने के लिये ऐसे ही लोग चाहिये । प्रतिभाशाली तत्व जहाँ कहीं भी चमक रहे हों वहाँ से उन्हें आमन्त्रित किया जा रहा है कि वे अपने ईश्वरीय अनुदान को निरर्थक विडम्बनाओं में खर्च न करें वरन् उसे नव निर्माण के ऐसे महान प्रयोजन में निरत कर दें, जिससे समस्त संसार का हित साधन हो सके ।

सातों विभूतियों के क्षेत्र में संसार की करोड़ों प्रतिभायें आती हैं, उन्हें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करने का कार्य साधारण नहीं असाधारण है, पर इतना महत्वपूर्ण कि उसे किये बिना लक्ष्य प्राप्ति के लिये और कोई मार्ग नहीं । जन साधारण को उठाने का कार्य आरम्भ से ही चला आ रहा है और अन्त तक चलता रहेगा, पर उतना ही पर्याप्त नहीं । युग परिवर्तन जैसे बड़े कार्यों के उत्तरदायित्व और भार सामर्थ्य सम्पन्न लोग ही संभाल सकते हैं । युग निर्माण योजना की विचारधारा और क्रिया पद्धति विभूति सम्पन्न लोगों तक पहुँचाई जानी चाहिये । खोज-खोजकर उन्हें प्रभावित किया जाना चाहिये । तथ्यों का प्रस्तुतीकरण ठीक ढंग से किया जाय तो महाकाल का आह्वान वह भली प्रकार समझ सकते हैं और अपना समर्थ योगदान देकर कार्य की प्रगति में कई गुनी गति ला सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्त्रष्टा का सर्वोपरि उपहार-प्रखर प्रज्ञा

चेतना की सत्ता एवं उसका विस्तार

इस संसार में जड़ के साथ चेतन भी गुथा हुआ है। काम करती तो काया ही दीखती है, पर वस्तुतः उसके पीछे सचेतन की शक्ति काम कर रही होती है। प्राण निकल जाय तो अच्छी खासी काया निर्जीव हो जाती है । कुछ करना-धरना तो दूर मरते ही सड़ने-गलने का क्रम आरम्भ हो जाता है और बताता है कि जड़ शरीर तभी तक सक्रिय रह सकता है जब तक कि उसके साथ ईश्वरीय चेतना जुड़ी रहती है । दोनों के पृथक् होते ही समूचे खेल का अन्त हो जाता है ।

एकाकी चेतना का स्वतः अस्तित्व तो है । उसकी निराकार सत्ता सर्वत्र समाई हुई है । साकार होती तो किसी एक स्थान पर, एक नाम रूप के बन्धन में बँध कर रहना पड़ता और वह ससीम बनकर रह जाती है। इसलिए उसे भी अपनी इच्छित गतिविधियाँ चलाने के लिए किन्हीं शरीर कलेवरों का आश्रय लेना पड़ता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करना सम्भव है । निराकार तो प्रकृति की लेसर, एक्स-किरणें आदि अनेक धाराएँ काम करती हैं, पर उनको समझ सकना खुली आँखों से नहीं, वरन् किन्हीं सूक्ष्म उपकरणों के सहारे ही सम्भव हो पाता है । गाड़ी के दो पहिए मिल जुलकर ही काम चलाते हैं । इसी प्रकार इस संसार की विविध गतिविधियाँ विशेषतया प्राणि समुदाय की इच्छित हलचलों के पीछे अदृश्य सत्ता ही काम करती है, जिसे ईश्वर आदि नामों से जाना जाता है ।

विराट् ब्रह्माण्ड में संव्याप्त सत्ता को विराट् ब्रह्म या परमात्मा कहते हैं । वही सर्वव्यापी, न्यायकर्त्ता, सत, चित आनन्द आदि विशेषणों से जाना जाता है । उसी का एक छोटा अंश जीवधारियों के भीतर काम करता है। मनुष्य में इस अंश का स्तर ऊँचा भी है और अधिक भी है इसलिए उसके अंतराल में अनेक विभूतियों की सत्ता प्रसुप्त रूप में विद्यमान पाई जाती है। यह अपने निजी पुरुषार्थ के ऊपर अवलम्बित है कि उसे विकसित किया जाय या ऐसे ही उपेक्षित रूप में गई-गुजरी स्थिति में वहीं पड़ी रहने दिया जाय ।

इस सम्मिश्रण का जहाँ भी अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत स्वरूप दिखाई पड़ता है, उसे प्रतिभा कहते हैं। सदुद्देश्यों के लिए प्रयुक्त किये जाने पर यही प्रतिभा देव स्तर की बन जाती है और अपना परिचय महामानवों जैसा देती है । किन्तु साथ ही यदि मनुष्य अपनी उपलब्ध स्वतन्त्रता का उपयोग अनुचित कामों में करने लगे तो वह दुरुपयोग ही दैत्य बन जाता है । दैत्य अपने और अपने सम्पर्क वालों के लिए विपत्ति का कारण ही बनते हैं, जबकि देवता पग-पग पर अपनी शालीनता और उदारता का परिचय देते हुए अपने प्रभाव क्षेत्र में सुख, शान्ति एवं प्रगति का वातावरण बनाते रहते हैं । दैत्य स्तर के अभ्यास बन जाने पर तो पतन और पराभव ही बन पड़ता है । उसमें तात्कालिक लाभ दीखते हुए भी अन्ततः दुर्गुणों का दुष्परिणाम ही भुगतता है ।

सृष्टि के नियम में कर्म और फल के बीच कुछ समय लगने का विधान है । बीज बोने पर उससे वृक्ष बनने में कुछ समय लग जाता है । गर्भाधान के कई मास बाद बच्चा उत्पन्न होता है । आज का दूध कहीं कल जाकर दही बनता है । अभक्ष खा लेने पर दस्त-उल्टी आदि होने का सिलसिला कुछ समय बाद आरम्भ होता है । मनुष्यों में यह बाल बुद्धि देखी जाती है कि वे तत्काल कर्म फल चाहते हैं । देर लगने पर अधीर हो जाते हैं और यह चाहते हैं कि हथेली पर सरसों जमे । कल तक उसमें पौधे जमने की प्रतीक्षा न करनी पड़े । उतावली आतुरता उत्पन्न करती है और मनःस्थिति प्रायः अर्ध विक्षिप्त की सी बना देती है, जिसमें तात्कालिक लाभ भर दीख पड़ता है, चाहे वह कितना ही क्षणिक या दुःखदायी ही क्यों न हो । वह विवेकवान दूरदर्शिता न जाने कहाँ चली जाती है जिसे अपनाकर विद्यार्थी-विद्वान, दुबले, पहलवान, मंदबुद्धि, विद्वान, निर्धन और पिछड़े, धनवान बनते हैं । यह एक ही मनुष्य की प्रधान भूल है जिसके कारण वह अपने जीवन का उद्देश्य, स्वरूप और वरिष्ठता तक भूल जाता है । मार्ग से भटक कर झाड़-झंखाड़ों में मारा-मारा फिरता है । इस भूल को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखकर कई बार यह भी स्वीकारना पड़ता है कि "मनुष्य वस्तुतः ईश्वर की सन्तान तो है ही नहीं, वरन् वह डार्विन के कथनानुसार बन्दर की अनगढ़ औलाद ही है ।"

यह व्यंग्य-उपहास मनुष्य के अचिन्त्य चिन्तन का है । इसी के कारण उसके चरित्र और व्यवहार में भ्रष्टता घुस पड़ती है और तरह-तरह के आक्षेप उलाहना लगने शुरू होते हैं । दुष्ट चिन्तन ही भ्रष्ट आचरण का निमित्त बनता है और इसी के कारण अनेकों अवांछनीयताएँ उसके सिर पर लद लेती हैं । कहना न होगा कि कर्म फल भोगे बिना किसी को छुटकारा नहीं । भले ही वह भटकाव के कारण ही क्यों न बन पड़ी हो ? चारे के लोभ में चिड़ियाँ और मछलियाँ बहेलियों के हाथ पड़ती हैं और अपनी जान गंवाती देखी गई हैं । जो बोया है वही तो काटना पड़ेगा, भले ही पीछे सतर्कता बरती गई हो या समझदारी से काम लिया गया हो ।

यही है भ्रान्ति, विकृति और विपत्ति का केन्द्र । इसके भँवर में फंसकर अधिकांश लोग गर्हित गतिविधियाँ अपनाते और दुर्गति के भाजन बनते हैं । यदि इस भूल से बचा जा सके तो मनुष्य को ईश्वर का उत्तराधिकारी, ज्येष्ठ राजकुमार कहने में किसी को क्यों आपत्ति हो ? फिर उसकी प्रवृत्ति स्वार्थी बनकर आनन्द का रसास्वादन करते रहने में क्यों किसी प्रकार बाधक बने ? क्यों उसे वासना, तृष्णा और अहन्ता के लौह पाशों में जकड़ जाने पर बन्दीगृह के कैदी जैसी विडम्बनाएँ सहनी पड़ें ? क्यों मरघट में रहने वाले व्यक्तियों जैसा नीरस-निष्ठुर और हेय जीवन जीना पड़े । क्यों डरती-डराती और रोती रुलाती जिन्दगी जीनी पड़े ?

इस संसार में अंधकार भी है और प्रकाश भी । स्वर्ग भी है और नरक भी, पतन भी है और उत्थान भी, त्रास भी है और आनन्द भी । इन दोनों में से जिसे चाहे मनुष्य इच्छानुसार चुन सकता है । कुछ भी करने की सभी को छूट है, पर प्रतिबंध इतना ही है कि कृत्य के प्रतिफल से बचा नहीं जा सकता । स्रष्टा के निर्धारित क्रम को तोड़ा नहीं जा सकता । करने की छूट होते हुए भी उसे परिणाम भुगतने के लिए सर्वथा बाधित रहना पड़ता है । यह दूसरी बात है कि इस प्रक्रिया के पकने में कुछ विलम्ब लगता है । मुकदमा दायर होने और सजा मिलने में अपने न्यायाधीश भी तो ढेरों समय लगा लेते हैं । ईश्वर का कार्यक्षेत्र तो और भी अधिक विस्तृत है । उनके न्याय करने में यदि देर लग जाती है तो मनुष्य को धैर्य खोने की आवश्यकता नहीं है और न यह अनुमान लगाने की कि वहाँ अंधेरगर्दी चलती है । चतुरता के बलबूते अपने यहाँ तो भी अनेकों अपराधी दण्ड पाने से बच जाते हैं, पर सर्वव्यापी और सर्वसाक्षी न्यायाधीश के न्याय तुलना में बहुत करके किसी को ऐसे अवसर नहीं मिलते । इस वास्तविकता से असहमत रहने के कारण ही लोग अक्सर नास्तिक बन जाते हैं । कर्मफल की मान्यता का उपहास उड़ाते हुए स्वेच्छाचार बरतते हैं । विवेक होने की समझ तभी आती है जब समयानुसार क्रिया की प्रतिक्रिया सामने आ खड़ी होती है ।

यहाँ तो प्रसंग इस बात का चल रहा है कि ईश्वर और जीव आपस में अविच्छिन्न होकर रह रहे हैं । अत्यन्त सघन भाव और अविच्छिन्न साथी-सहचर की तरह । स्थिति को देखते हुए इस बात की पूरी गुंजायश है कि समर्थ बीज से उपजा समर्थ बालक अभीष्ट सहयोग प्राप्त कर सके और अभावग्रस्तता की दुःखदायी स्थिति से सरलतापूर्वक छूट सके । पर प्रचलित विडम्बनाओं में से एक यह भी है कि नितान्त निकट रहते हुए भी परिचय ऐसा बना लिया गया है मानो एक दूसरे से नितान्त अपरिचित हैं । कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि विशालकाय नगरों में एक ही बड़े भवन की चारदीवारी में रहने वाले किरायेदार एक-दूसरे से परिचित तक नहीं होते । हम अपने शरीर के भीतरी अवयवों को भी पूरी तरह कहाँ समझ पाते हैं। शरीर में समाये विषाणुओं का पता नहीं चलता और यह भी नहीं बन पड़ता कि उनके कारण उत्पन्न होने वाले खतरों को समझ सकें और समय रहते कुछ उपाय उपचार कर सकें । समझदार कहे जाने वाले मनुष्य के इस भुलक्कड़पन को देखते हुए उसे नासमझ कहा जाय तो कुछ भी अनुचित न होगा। स्वस्थ दीखने वाले भी इस अस्वस्थता से जकड़े हुए हैं। घुन लगी लकड़ी की तरह भीतर ही भीतर पोले हो रहे हैं। स्थिति इतनी बदतर है कि अणु से लेकर विराट् विभु के कण-कण में एक अत्यन्त सुव्यवस्था के संव्याप्त होने पर भी अपनी अक्ल यही धोखा देती रहती है कि इस खेत का कोई बोने वाला या रखवाला नहीं है । चाहे जो करने और चाहे जो पाने की मनमानी करते रहने में कोई हर्ज नहीं । आम प्रचलन में इन दिनों ऐसे ही सोच की भरमार है ।

अनास्था की जननी—दुर्बुद्धि

इस भ्रान्त धारणा की एक हानि यह है कि मनुष्य स्वेच्छाचारी, अनाचारी बनता है और अपनी राह पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तीर की नोंक वाले कांटे बोने में लगा रहता है । न चाहते हुए भी अंधकारमय परिस्थितियों को अपने समीप बुलानें के लिए निमंत्रण देने में बाध्य रहा है । अभावग्रस्तता, विषमता और विपन्नताएँ प्रायः इसीलिए दीख पड़ती हैं । यदि सोच ठीक रही होती और उसके प्रकाश में सीधे मार्ग पर चल सकना सम्भव हुआ होता तो यहाँ सब लोग मिल-जुलकर रहते, हँसती-हँसाती जिन्दगी जीते, एक-दूसरे को ऊँचा उठाने-आगे बढ़ाने में सहयोग करते । तब सीमित साधनों में भी लोग संतुष्ट रहते और अभीष्ट वातावरण बना हुआ होता । हर किसी को अदृश्य मार्ग का दृश्यमान अरुणोदय अनुभव करने का अवसर मिल रहा होता । पर उस दुर्बुद्धि को क्या कहा जाय जिसने मनुष्य को मर्यादाओं, प्रतिबंधों और वर्जनाओं को तोड़ने के लिए उद्धत स्वभाव वाला वनमानुष बनाकर रख दिया है ।

आश्चर्य इस बात का है कि मनुष्य को बंदर बनाने वाली दो भूलें एक साथ जन्मी हैं और उनने एक ही चक्कर में पूरी तरह चोट करने के बाद आगे बढ़ने का सिलसिला बनाया है । दूसरी भूल है कि अपने स्वरूप, कर्त्तव्य और उद्देश्य को भूलने की तथा अपने अति निकट रहने वाले उदार स्वभाव वाले परम सज्जन भगवान से परिचय बनाने तक की इच्छा न करने की अन्यमनस्कता-अवमानना । अपने से बड़ी शक्ति के साथ सम्बन्ध जोड़ने की महत्ता को छोटे बच्चे तक समझते हैं । वे उसी की ओर खिसकते हैं जिसके पास खिलौने, चाकलेट, और अच्छे उपहारों का सामान होता है । जो प्यार से बुलाते और दुलारपूर्वक गोदी में चढ़ाते हैं । जब इतनी समझ छोटे बालकों तक में पाई जाती है, तो आश्चर्य होता है कि मनुष्य भगवान का घनिष्ठ बनने या उसे अपना घनिष्ठ बनाने में इतनी अधिक उपेक्षा क्यों बरतता है ।

ऊँची सतह के बड़े तालाब में अधिक पानी होता है । पास में ही कोई कम पानी वाला गड्ढा हो तो दोनों की तुलना में असाधारण अन्तर होगा । उतने पर भी यदि दोनों के बीच एक नाली बना दी जाय तो ऊँचे तालाब का पानी नीचे गड्ढे को भरना जल्दी आरम्भ कर देगा और वह सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक कि दोनों जलाशय एक सतह पर नहीं आ जाते । नीचे वाले गड्ढे का पानी निश्चित रूप से ऊँचा उठेगा, भले ही इसमें ऊँचे वाले को कुछ घाटा ही क्यों न रहा हो ।

ईश्वर सान्निध्य के लिए किये गये प्रयास अन्धविश्वास नहीं हैं । यदि उसका सही तरीका न समझा जा सके तो मृगतृष्णा में भटकने वाले हिरण की तरह भ्रमग्रस्तों जैसी धमाचौकड़ी मचाता रहेगा । तब तो खिन्नता, विपन्नता और असफलताएँ ही हाथ लगेंगी । यदि रुके बिना धीरे-धीरे चलने वाली चींटी भी पर्वत शिखर पर जा पहुँचती है, तो फिर कोई कारण नहीं कि ईश्वर सान्निध्य का सही मार्ग विदित हो जाने पर उस प्रयोजन में आश्चर्यजनक सफलता न मिल सके ।

कहना न होगा कि सशक्तों की समीपता-सान्निध्यता मनुष्य के लिए सदा लाभदायक ही होती है। सुगन्ध जलाते ही दुकान पर सजी चीजों में से अनेकानेक महकने लगती हैं। चन्दन के समीप उगे हुए झाड़-झंखाड़ भी प्रायः वैसी ही सुगन्ध वाले बन जाते हैं । पारस को छूने से लोहे के सोना बनने वाली उक्ति बहुचर्चित है । कल्पवृक्ष के नीचे बैठने वालों का मनोरथ पूरा होने की बात सुनी जाती है । अमृत की कुछ बूँदें मुँह में चले जाने पर मुर्दे जी उठते हैं । भृंग अपने संकल्प के प्रभाव से छोटे कीड़े को अपने सांचे में ढाल लेता है । हरियाली की समीपता में रहने वाले टिड्डे और सांप हरे रंग के हो जाते हैं । सीप में स्वाति की बूदें गिरने पर मोती बनने और बांस के ढेरों में बंसलोचन उत्पन्न होने की मान्यता प्रसिद्ध है । इनमें से कितनी बात सही और कितनी गलत है, इस विवेचना की तो यहाँ आवश्यकता नहीं पर इतना निश्चित है कि सज्जनों के महामानवों के सान्निध्य में रहने वाले अधिकांश लोग प्रतापी जैसी विशेषताओं में से बहुत कुछ अपना लेते हैं । राज दरबारी शिष्टाचार का पालन अच्छी तरह कर सकते हैं । इसलिये हर कोई बड़ों का सान्निध्य चाहता है । किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि सर्वशक्तिमान साथी के साथ जुड़ने में हमारे प्रयत्न उतने भी नहीं होते जितनी कि स्वजन कुटुम्बियों के साथ आत्मीयता प्रदर्शित करते हैं । यदि ऐसा बन सकना सम्भव न होता तो हम जड़ से रहे होते और इस स्थिति में पड़े न रहते जिसमें कि किसी प्रकार खाते-पीते इन दिनों समय गुजार रहे हैं ।

ईश्वर सम्बन्धी भ्रांतियाँ

इस संदर्भ में एक और भी बढ़ी-चढ़ी मूर्खता जन साधारण के मन में और भी गहरी जड़ें जमाकर बैठ गई है कि ईश्वर में सिद्धान्त रहित किसी ऐसे भूत-प्रेत की कल्पना समाविष्ट कर ली गई जो निशिदिन उपहार बटोरते और नाक रगड़ते हुए भक्तजनों के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पीछे पड़ा रहता है । साथ ही पूजापाठ की छिटपुट टंटघंट कर देने भर से फूल कर कुप्पा हो जाता है और मन चाहे उपहार वरदान बाँटकर हर किसी की मनोकामनाएँ पूरी करता है । भले ही वे कितनी ही अनावश्यक या अनुचित क्यों न हों ।

इसके अतिरिक्त इस परमेश्वर में एक और भी बुरी आदत है कि पूजा-पत्री में कोई छोटी-मोटी गलती हो जाय तो भी वह आग-बबूला हो जाता है और कल तक जिसे भक्त मानता था आज उसकी जान लेने तक को तैयार हो जाता है । राजी होने के लिए बढ़े-चढ़े उपहार मांगता है । अपना भक्त किसी दूसरे देवता की पूजा करने लगे तो उसकी भी अच्छी खासी ख़बर लेता है ।

यही है आज का सशक्त परमेश्वर जिसे जातियों, वर्गों, कबीलों और मत-मतान्तरों वाले लोग अपने-अपने तरीके से खोजते और अपनी-अपनी मान्यता के अनुरूप नाम, रूप देते हैं । इस काल-भैरव से किसी का क्या भला होता है इसे तो पूजने वाले ही जानें । पर एक बात निश्चित है कि इन स्वयंभू देवी देवताओं के स्वयंभू एजेण्टों की पाँचों उंगलियाँ हर घड़ी घी में रहती हैं । वे मनोकामना पूरी कराने अथवा गरीबी दूर करने-कराने के बहाने हर स्थिति में अपने एजेण्टों का धन्धा बढ़ाते चलते रहे हैं ।

विचारणीय यह है कि क्या सिद्धान्त रहित उपहार, मनुहार का लालची और किसी भी चाटुकार की सही-गलत मनोकामनाएँ पूरी करने वाला कोई परमेश्वर हो भी सकता है क्या ? इस संदर्भ में किसी भी दृष्टिकोण से विचार करने पर उत्तर नहीं में ही देना पड़ता है । क्योंकि यह सिलसिला यदि चल पड़े तो रही बची विवेकशीलता और न्यायनिष्ठा के परखचे ही उड़ जायेंगे ।

ऐसे कबायली परमेश्वर को पूजने वाले ही मनोकामनाएँ पूरी न होने पर उसे सौ गुनी गाली भी देते देखे गये हैं । जिसमें कि आशाएँ लगाये रहने से पूर्व मिन्नतें करने और चमचागिरी दिखाने में अतिवाद की सीमा तक पहुँच जाते हैं । इस भ्रान्त मान्यताओं वाले जंजाल को ही यदि परमेश्वर माना जाय तो फिर इसी के साथ एक बात और भी जान लेनी चाहिए कि इसके पीछे वास्तविकता कुछ भी न होने से लाभ कुछ भी नहीं होने वाला है । अंधे के हाथों कभी बटेर लग जाय तो बात दूसरी है । पर उससे भ्रान्ति पर आधारित मान्यता की पुष्टि नहीं होती ।

उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़ने के उपरान्त तथाकथित पूजा पाठ करने वालों की मान्यताएँ डाँवाडोल बन सकती हैं । जो थोड़ी बहुत आधे-अधूरे मन से टंट-घंट करते थे, उसमें भी कमी आ सकती है । भक्तिवाद की आड़ में यह मिथ्या भ्रम जंजाल चलाते रहने वाले को तो अपने व्यवसाय में घाटा दीख पड़ते ही अनख होने में ऐसी स्थिति भी आ सकती है जो प्रतिपक्ष पर किसी भी स्तर का आक्रोश लेकर पिल पड़े। पर सही अध्यात्म की स्थापना करने के लिए यह भी सहना पड़े तो उद्यत रहना चाहिए ।

दैवी सत्ता की सुनियोजित विधि-व्यवस्था

भ्रान्तियों का स्वरूप समझ लेने के उपरान्त यह भी आवश्यक है कि उसका समाधान भी समझा जाय और यह जानने का प्रयत्न किया जाय कि वह वास्तविकता क्या है जिसकी आड़ लेकर धुँए का बादल बनाकर खड़ा कर दिया गया ।

समझा जाना चाहिए कि संसार के दृश्यमान जड़ पदार्थों के साथ-साथ ऐसी एक सर्वव्यापी नियामक सत्ता भी है, जो इस आश्चर्य भरे ब्रह्माण्ड को बनाने से लेकर और भी न जाने क्या-क्या बनाती रहती है ।

असल की नकल इन दिनों खूब चल पड़ी है । नकली चीजें सस्ती भी होती हैं । चलती भी अधिक हैं और बिक्री भी उन्हीं की अधिक होती देखी जाती है। नकली सोने के, नकली चांदी के जेवरों की दुकानों में भरमार देखी जाती है। नकली हीरे मोती भी खूब बिकते हैं । नकली रेशम, नकली दांत अधिक चमकते हैं । नकली घी से दुकानें पटी पड़ी हैं । नकली शहद सस्ते भाव में कहीं भी मिल सकता है, पर वह वस्तुएँ ऐसे चमकीली होते हुए भी असली जैसा सम्मान नहीं पाती । बेचने पर कीमत भी नहीं उठती । अध्यात्म का नकलीपन भी बहुत प्रचलित हुआ है । उसे उपहार-मनुहार की टंटघंट पूरी करके उन लाभों को पाने की प्रतीक्षा की जाने लगती है जिनके लिए प्रबल पुरुषार्थ और व्यक्ति के उठे हुए स्तर की अपेक्षा की जाती है । समुचित मूल्य न चुकाने पर कोई कीमती वस्तु ऐसे ही तिकड़मबाजी के सहारे हाथ कैसे लगे ? देखा जाता है कि मनोकामनाओं का पुलन्दा बाँधे फिरने वाले जिस-तिस देवी-देवता के पीछे गिड़गिड़ाते फिरने के उपरान्त भी खाली हाथ लौटते हैं और विधि-विधान में कोई गलती रहने या पूजा पाठ को व्यर्थ बताने की नास्तिकों जैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रहते हैं । आये दिन लाभ मिलते रहने की बात न बनते देखकर उस प्रक्रिया को छोड़ बैठते हैं । या जब-जब अनमने मन से लकीर पीट लेते हैं ।

अच्छा होता अध्यात्म का दर्शन, स्वरूप, उद्देश्य और प्रयोग के सन्बन्ध में गहराई में उतरकर जानने का प्रयत्न किया गया होता तो पूरा मूल्य लेकर असली चीज पाने की मान्यता को आवश्यकता न तब इस संदर्भ में किसी को कोई शिकायत पड़ती । के शक्ति भण्डार में सर्वोपरि आत्म कहा जा चुका है । धन बल, बुद्धि बल , शस्त्र बल, सत्ता बल,बल है, नहीं हो सकती। वे सभी छोटे और बौने पड़ते हैं । जो कार्य आत्मबल सम्पन्न कर सके वे दूसरों से नहीं बन पड़े । पुरुषार्थ का अपना प्रयोजन तो है, पर यदि उसके पीछे आत्मबल का समावेश न हो तो फिर समझाना चाहिए कि फुलझड़ी का तमाशा मात्र बन कर रह जायेगा । असुरों में से अनेकों ने साधना बल के सहारे कई प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त कीं, पर वे न तो अधिक समय टिकीं और न अंततः सुखद परिणाम ही प्रस्तुत कर सकीं । भस्मासुर, महिषासुर, वृत्रासुर, रावण आदि की सिद्धियाँ अंततः उनके और उनके सम्बन्धियों के लिए विनाश और विपत्ति का कारण ही बनीं । इसके विपरीत उस दिशा में उद्देश्यपूर्ण कदम बढ़ाने वाले स्वल्प साधनों में भी उच्चस्तरीय एवं प्रशंसनीय सफलता प्राप्त कर सके । बुद्ध, गाँधी, अरविंद, रमण, रामकृष्ण, चाणक्य, रामदास, विवेकानन्द, दयानन्द आदि की साधनाएँ जहाँ उन्हें मनस्वी बना सकीं, वहीं उनके कर्तृत्व ने समाज का असाधारण हित-साधन किया । ऋषियों की समस्त श्रृंखला उसी प्रकार की है। वे स्वयं तो आकाश में नक्षत्रों की तरह अभी भी चमकते हैं, साथ ही उनके समय में उनके साथ जो भी रहे वे भी सत्संग जन्य लाभों से निहाल होकर रहे और उच्चकोटि के अनुदान-वरदान प्राप्त करके कृत-कृत्य हो सके ।

भगवान के अनुग्रह से कितने छोटे-छोटे, असाधारण श्रेय साधन से सम्पन्न हुए हैं । हनुमान, अंगद, नल-नील, जामवन्त, भगीरथ, प्रहलाद, सुदामा, विभीषण आदि की सफलताएँ ऐसी ही हैं जिन्हें वे किसी पुरुषार्थ से प्राप्त नहीं कर सकते थे । मनुष्य के अपने में आत्मबल के साथ है, पर उसके साथ यदि दैवी अनुग्रह के रूप सम्मिश्रण जैसी बात भी बन जाती है तो फिर सोने में सुगंध के उदाहरण के लिए सामने है। कुन्ती, महाप्रभु ईसा का जीवन, अरुन्धती आदि महिलाओं ने भी अपनी सांसारिक या द्रौपदी, सुकन्या ने भी आत्मिक विभूतियों के सहारे कहीं अधिक पाया था।

इक्कीसवीं सदी में मानवी पुरुषार्थ की आवश्यकता तो बहुत पड़ेगी । सतयुग की तरह साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थी, परिव्राजकों की तरह असंख्यों को आत्मोत्कर्ष की सेवा साधनाओं में भी अपने को खपाना पड़ेगा, किन्तु यह नहीं समझा जाना चाहिए कि इतना बड़ा काम मात्र मानवी भागदौड़ से पूरा हो जायेगा । जब अपने छोटे से कुटुम्ब के थोड़े से दायरे में वाद-विवाद, मनोमालिन्य, लोक व्यवहार के झगड़े काबू में नहीं आ पाते, तो ६०० करोड़ मनुष्यों में से प्रत्येक के पीछे लगी हुई ढेरों दुष्प्रवृत्तियों का कुप्रचलन कुछ थोड़े से व्यक्ति थोड़ी सी योजनाएँ बनाकर हलके-फुलके व्यक्तियों के सहारे उसे पूरा कर सकेंगे, यह आशा कैसे की जा सकती है ? इतने प्रबल पुरुषार्थ और समाधान के पीछे दैवी शक्ति का समावेश भी होना चाहिए अन्यथा मानवी पुरुषार्थ अपनी भूलों, कमजोरियों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण ही सफलता के स्थान पर असफलता प्राप्त करते देखे गये हैं ।

आत्मबल से उभरी परिष्कृत प्रतिभा

अध्यात्म बल का सम्पादन कठिन नहीं वरन् सरल है। उसके लिए आत्मशोधन एवं लोकमंगल के क्रियाकलापों को जीवनचर्या का अंग बना लेने भर से काम चलता है । व्यक्तित्व में पैनापन, प्रखरता का समावेश इन्हीं दो आधारों पर बन पड़ता है । यह बन पड़े तो दैवी अनुग्रह अनायास बरसता है और आत्मबल अपने भीतर से ही प्रचुर परिमाण में उभर पड़ता है । केवट, शबरी गिलहरी, रीछ-वानर, ग्वालबाल जैसों की भौतिक सामर्थ्य स्वल्प थी, पर वे अपने में देवत्व की मात्रा बढ़ा लेने पर ही इतने मनस्वी बन सके, जिसकी चर्चा इतिहासकार आये दिन करते रहते हैं । सुग्रीव की विजय के पीछे उसकी निज की बलिष्ठता मात्र ही कारण नहीं हुई थी । नरसी मेहता ने अभीष्ट धन अपने व्यवसाय से नहीं कमाया था । अमृतसर का स्वर्ण मंदिर किसी एक धनवान की कृति नहीं है । इनके पीछे देवत्व का अदृश्य सहयोग भी सम्मिलित रहा है । ध्रुव को ब्रह्माण्ड के केन्द्र बनने का श्रेय उसके तपोबल के सहारे ही सम्भव हुआ था । अगस्त्य का समुद्र पान और परशुराम द्वारा अपने कुल्हाड़े के बल पर लाखों करोड़ों का जो ''ब्रेन वाशिंग'' हुआ था उसे किन्हीं वक्ताओं के धर्मोपदेश से कम नहीं कहा जा सकता ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सतयुग, ऋषियुग का ही प्रकट रूप है । असुरता की अभिवृद्धि होते ही कलह युग—कलियुग आ धमकता है । उच्चस्तरीय प्रतिभाओं का पौरुष जब कार्य क्षेत्र में उतरता है तो न केवल कुछ व्यक्तियों को, कुछ प्रतिभाओं को वरन् समूचे वातावरण को ही उलट-पुलट कर रख देता है । धोबी की भट्ठी पर चढ़ने से मैले कपड़ों की सफाई से चमचमाते देखा गया है । भट्ठी में तपने के बाद मिट्टी मिला बेकार लोहा फौलाद स्तर का बनता और उसके द्वारा कुछ न कुछ कर दिखाने वाले यंत्र उपकरण बनते हैं । आत्मशक्ति की प्रखरता को इसी स्तर का बताया और पाया गया है ।

इक्कीसवीं सदी से प्रारम्भ होने वाला युग अभियान सम्पन्न तो प्रतिभावान मनुष्यों द्वारा ही होगा, पर उनके पीछे निश्चित रूप से ऐसी दिव्य चेतना जुड़ी हुई होगी जैसी कि फ्रांस की एक कुमारी जोन ऑफ आर्क ने रण कौशल से अपरिचित होते हुए भी अपने देश को पराधीनता के पाश से मुक्त कराने में सफलता प्राप्त की थी । महात्मा गाँधी और सन्त विनोबा जी जो कर सके वह उस स्थिति में कदाचित ही बन पड़ता जो वे बैरिस्टर, मिनिस्टर, नेता, अभिनेता आदि बनकर कर सके होते ।

चंद्रगुप्त जब विश्व विजय की योजना सुनकर सकपकाने लगा तो चाणक्य ने कहा—''तुम्हारी दासी पुत्र वाली मनोदशा को मैं जानता हूँ। उससे ऊपर उठो और चाणक्य के वरद् पुत्र जैसी भूमिका निभाओ। विजय प्राप्त कराने की जिम्मेदारी तुम्हारी नहीं मेरी है।'' शिवाजी जब अपने सैन्य बल को देखते हुए असमंजस में थे कि इतनी बड़ी लड़ाई कैसे लड़ी जा सकेगी, तो समर्थ रामदास ने उन्हें भवानी के हाथों अक्षय तलवार दिलाई थी और कहा था तुम छत्रपति हो गये। पराजय की बात ही मत सोचो। राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के बहाने बला और अतिबला का कौशल सिखाने ले गये थे, ताकि वे युद्ध लड़ सकें । असुरता के समापन और रामराज्य के रूप में ''सतयुग की वापसी'' सम्भव कर सकें। महाभारत लड़ने का निश्चय सुनकर अर्जुन सकपका गया था और कहने लगा था कि ''मैं अपने गुजारे के लिए तो कुछ भी कर लूंगा, फिर हे केशव! आप इस घोर युद्ध में मुझे नियोजित क्यों कर रहे हैं? इसके उत्तर में भगवान ने एक ही बात कही थी कि—''इन कौरवों को तो मैंने पहले से ही मारकर रख दिया है। तुझे यदि श्रेय लेना है तो आगे आ, अन्यथा तेरे सहयोग के बिना भी यह सब हो जायेगा जो होने वाला है। घाटे में तू ही रहेगा। श्रेय गंवा बैठेगा और उस गौरव से भी वंचित रहेगा जो विजेता और राजसिंहासन के रूप में मिला करता है।'' अर्जुन ने वस्तुस्थिति समझी और कहने लगा-''करिष्ये वचनं तव'' अर्थात् आपका आदेश मानूंगा। ऐसी ही हिचकिचाहट हनुमान, अंगद, नल-नील आदि की रही होती तो वे अपनी निजी शक्ति के बल पर किसी प्रकार जीवित तो रहते पर उस अक्षय कीर्ति से वंचित ही बने रहते जो उन्हें अनन्त काल तक मिलने वाली है। युग सृजन में श्रेय किन्हीं को भी मिले, पर उसके पीछे वास्तविक शक्ति उस ईश्वरी सत्ता की ही होगी जिसने नई सृष्टि रचने जैसे स्तर की अभिनव योजना बनाई है और उसके लिये आवश्यक साधनों एवं अवसर विनिर्मित करने का साधन जुटाने वाला संकल्प किया है।

मानवी पुरुषार्थ एवं दैवी शक्ति का युग्म

कठिनाइयों को निरस्त करने वाला साहस अपने आप में ईश्वरीय अनुग्रह है। राजनैतिक, सामाजिक बौद्धिक क्रांतिकारियों की सफलतायें उनके साहस के साथ जुड़ी हैं। दुस्साहसियों में नेपोलियन जैसे मनुष्यों की गणना प्रायः होती रहती है। इंग्लैंड के ऊपर जब जर्मनी के बेतहाशा बमवारी हो रही थी और उस देश के पराजित होने का अन्देशा नागरिकों के मन पर बुरी तरह छाया हुआ था तो तत्कालीन प्रधानमंत्री ने एक नारा दिया था-''वी'' फार विक्ट्री । यह नारा घर-घर पर अंकित कर दिया गया और जनता में नये सिरे से उत्साह जगाया गया कि जीतेगा अंततः इंग्लैण्ड ही। इन दोनों बातों से जन-जीवन में नया मनोबल उभरा और उसके सहारे उभरते पराक्रम ने इंग्लैण्ड की हारती बाजी को जिताकर दिखाया। दुष्प्रयोजनों के लिये तो लुटेरे हत्यारे भी साहस दिखाते रहते हैं, पर ऊँचे उद्देश्यों के लिए जब भी साहस उभरता है तब उसके पीछे साधनों की कमी होते हुए भी मनोबल का ऐसा प्रचण्ड प्रवाह उभरता है। जिसके सहारे पराजय विजय में बदल जाती है। ऐसा सत्साहस प्रायः दैवी ही होता है। क्षुद्र स्तर के प्राणी तो स्वार्थ सिद्धि की लड़ाई ही लड़ते देखे गये हैं। मुहल्लों में कुत्तों जैसी लड़ाई होती तो कहीं भी देखी जाती है।

अगले दिनों प्रतिभाओं को युग परिवर्तन के लिए ऐसा कुछ पराक्रम करना पड़ेगा जिसे अभूतपूर्व और ऐतिहासिक कहा जा सके। क्योंकि इतने व्यापक क्षेत्र में इतने बड़े और इतने कष्ट साध्य परिवर्तन प्रस्तुत करने का अवसर कदाचित् पृथ्वी में पहली बार ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिला है। राजाओं-सामन्तों की सेना अपने साधनों के बल पर लड़कर हारती और जीतती रही है, पर ऐसा प्रथम अवसर है जब अधिकांश राजा प्रजा का विकृत चिन्तन और चरित्र नये सिरे से अभ्यास से पूर्व ही उत्कृष्टता की दिशा में ढाला गया है और उसके लिए वरिष्ठ प्रतिभाओं को आगे बढ़कर बुद्ध के धर्म चक्र प्रवर्तन जैसी भूमिका निभाने के लिये सामूहिक रूप से समुद्यत होना पड़ेगा। इसके लिये दैवी अनुदान आवश्यक है। यदि वह न बन पड़े तो मौसम की प्रतिकूलता ही बड़ी सैन्य सज्जा को आगे बढ़ने से रोक देती है। फिर इतने बड़े अभियान में तो साधन रहित वर्ग के लिये छोटी-छोटी कठिनाइयाँ ही प्रगति का पथ अवरुद्ध कर सकती हैं। उल्टे संकट खड़े कर सकती हैं। पीछे की हवा हो तो पैदल अथवा वाहन सरलतापूर्वक तेज दौड़ लेते हैं, जबकि सामने की तेज हवा का दबाव पथ में पग-पग पर रोकथाम करता है।

पात्रता से दैवी अनुग्रह की प्राप्ति

नव सृजन के इस विश्व मानव के भाग्य-भविष्य को नये सिरे से लिखने वाले सुयोग में दैवी शक्ति का निश्चित रूप से बड़ा योगदान रहेगा। इसके लिए किसी को किसी से कुछ मांगने की, आग्रह या अनुरोध करने की आवश्यकता नहीं है। अपनी पात्रता अनुरूप बना लेने पर सब कुछ अनायास ही खिंचता चला आता है। वर्षाकाल में खुले में रखा बर्तन अनायास ही भर जाता है। पर छोटी कटोरी हो तो उसमें इतना ही कम पानी दीखेगा, जबकि बड़ी बाल्टी पूरी तरह भरी हुई मिलेगी। यह पात्रता का ही चमत्कार है। गहरे सरोवर लबालब भर जाते हैं, जबकि ऊँचे टीलों पर पानी की कुछ बूँदें भी नहीं टिकतीं । वर्षा में उपजाऊ जमीन हरियाली से लद जाती है, पर ऊसर बंजर ज्यों के त्यों वीरान पड़े रहते हैं। नदियां चूँकि समतल की अपेक्षा गहरी होती हैं इसलिये चारों ओर का पानी सिमट कर उनमें भरने और बहने लगता है। यह उपलब्धि ही है, जिसके अनुसार छात्रवृत्ति, प्रतिस्पर्धा, पुरस्कार आदि मिलते। कोई अफसर लाभ मात्र चापलूसी करने भर से किसी को नहीं यदि अनुचित पद या उपहार प्रदान खुशामद से प्रसन्न होकर किसी को कर्त्तव्य पालन की जिम्मेदारी पूरी न करने का आपकी न्यायनिष्ठा पर कारण उसकी खिंचाई होती है। यह नियम शाश्वत है, यह नियम भगवान पर भी लागू होता है और उनके भगवान पर भी।

पात्रता अर्जित कर लेने पर बिना किसी अतिरिक्त कोशिश सिफारिश के अपनी योग्यता के अनुरूप पद प्राप्त कर लिये जाते हैं। इसलिये दैवी शक्तियों के अवतरण के लिये पहली शर्त है साधक की पात्रता, पवित्रता और प्रामाणिकता। सर्वत्र इसी की खोज और माँग है, क्योंकि विवाह योग्य हो जाने पर अभिभावक उपयुक्त जोड़ा तलाश करने के लिये काफी भागदौड़ करते हैं, किन्तु कोई कुपात्र पड़ौस में बसता हो तो भी उसकी ओर से मुंह फेर लेते हैं । खुशामद सिफारिश और संदेश पहुँचने पर भी ध्यान नहीं देते। आध्यात्मिक सिद्धियाँ ईश्वर की पुत्रियाँ हैं। उन्हें प्राप्त करने के लिये व्यक्ति को सर्वांग सुन्दर होना चाहिए। भीतर से भी और बाहर से भी। यह पात्रता की परिभाषा है।

उदारता जन्मदात्री है प्रामाणिकता की

दूसरा सद्गुण जो इतना ही आवश्यक है वह है- "उदारता" जिसके अन्तराल में करुणा, ममता, सेवा सहायता की कोमलता है, वही दूसरों को भी निष्ठुरता से विरत कर सकता है, करुणाकर बना सकता है। ईश्वर की अनुकम्पा उन्हें मिलती है, जो दूसरों पर अनुकम्पा करने में रुचि रखते हैं। निष्ठुरों की कठोरता-संकीर्ण स्वार्थपरता देखकर पड़ोसियों से लेकर भगवान तक की अनुकम्पा वापस लौट जाती है। असुरों की निष्ठुरता और अनैतिकता प्रसिद्ध है, इसलिये उनका अन्त भी बड़ा दुःखद होता है ।

यदि सदभावना सेवा—सहायता और करुणा उदारता भाव कृत्यों से यह दोनों उद्देश्य सध रही हो, तो समझना चाहिये कि इनका समुचित लाभ मिलेगा, किन्तु यदि क्रिया मात्र चल रही हो और सद्भावनाओं के विकास-परिष्कार पर उनका कोई प्रभाव न पड़ रहा हो, तो समझना चाहिए कि क्रियाकलापों की लकीर भर पीटी जा रही है और उसके सहारे आत्म-प्रवंचना जैसी ही कुछ विडम्बना बन पड़ेगी। इन दिनों प्रायः ऐसा ही खेल-खिलवाड़ चलता रहा है और लोग देवी-देवताओं की हजामत बनाने के लिये चित्र-विचित्र स्वांग रचते रहते और बड़ी मनोकामनाओं की पूर्ति की प्रतीक्षा करते रहे हैं। देवता उतने मूर्ख हैं नहीं, जितने कि समझे जाते हैं। हेय स्तर का व्यक्ति ही छोटे-मोटे उपहारों या कथन-श्रवणों से भरमाया जा सकता है, पर देवता तो वास्तविकता परखने में प्रवीण होते हैं। साथ ही उतने दरिद्र भी नहीं हैं कि छोटे-छोटे उपहारों के लिये आँखें मूँद कर दौड़ पड़ें, जो माँगा गया है, उसे मुफ्त में ही बांटते बखेरते रहें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यही कारण है कि मनौती मनाने के लिये पूजा पत्री का सरंजाम जुटाने वालों में से अधिकांश को निराश रहना पड़ता है। आरम्भ में जो लाटरी खुलने जैसा उत्साह होता है, वह परीक्षा की कसौटी पर कसे जाने पर निरर्थक ही सिद्ध होता है। आस्तिकता के प्रति उपेक्षा आशंका का भाव बढ़ते जाने का एक बड़ा कारण यह भी है कि लोग कम कीमत में बहुमूल्य वस्तुएँ पाने की आशा लगाने लग जाते हैं और जब विसंगति गलत सिद्ध होती है तो कभी साधना को कभी देवता को, कभी अपने भाग्य को दोष देते हुए भविष्य के लिए एक प्रकार से अनास्थावान ही बन जाते हैं।

हमें तथ्यों को समझना चाहिए । प्रामाणिकता की परख होने पर ही कोई बड़े काम, दायित्त्व या अधिकार सौंपे जाते हैं। ईश्वर के दरबार में भी यही नियम है। वहाँ साधना का अर्थ जीवन के हर पक्ष में आदर्शवादिता और प्रामाणिकता का समावेश लगाया जाता है। जो भी इस कसौटी पर खरा उतरता है, उसको स्वर्णकार की तरह सम्मानपूर्वक उचित मूल्य मिलता है, पर पीतल सोना बनाकर बेचने की फिराक में फिरने वाले को हर कहीं दुत्कारा जाता है।

छोटे बच्चे को खड़ा होने और धीरे-धीरे चलने में सहारा देने के लिए तीन पहिये की हाथगाड़ी बना दी जाती है। बच्चे को खड़ा तो अपने ही पैरों पर होना पड़ता है, पर उस गाड़ी की सहायता मिलने से कार्य सरल हो जाता है। ठीक इसी प्रकार पूजा अर्चना मनुष्य के व्यक्तित्त्व को प्रामाणिक बनाने भर के लिए की जानी चाहिए, अन्यथा भीतर घटियापन छाया रहने पर यह भी कहा जा सकता है कि साधना का सटीक अर्थ न समझा गया, उसे सही रीति से सम्पन्न न किया जा सका।

उदारमना होना भी ईश्वर भक्ति का अविच्छिन्न अंग है। कृपणता, निष्ठुरता एवं संकीर्ण स्वार्थपरता उसके रहते टिक ही नहीं सकती। सन्त, भक्तजन, इसीलिए अमीर नहीं रहते कि वे उपलब्धियों का न्यूनतम उपयोग करके जो बचत सम्भव हो, उसे प्रसन्नतापूर्वक परमार्थ प्रयोजनों में लगाते रहे। यह उदारता ही उनमें दैवी उदारता का आह्वान करती और उसे घसीट कर बड़ी मात्रा में सामने ले आती है। बादल उदारता पूर्वक बरसते रहते हैं। समुद्र उनके भण्डार को खाली न होने देने की प्रतिज्ञा निभाते रहते हैं। नदियाँ भूमि पर प्राणियों की प्यास बुझाती हैं। उनमें जल कम न पड़ने पाये इसकी जिम्मेदारी हिमालय पर पिघलती रहने वाली बर्फ उठाती है। पेड़ बिना मूल्य फल देते रहते हैं, बदले में नई फसल पर उन्हें उतने ही नये फल बिना मूल्य मिल जाते हैं। गाय दूध देती है। इससे उसका थन खाली नहीं हो जाता। सबेरे खाली हो गया थन शाम तक फिर उतने ही दूध से भर जाता है। धरती बार-बार अन्न उपजाती है। उसकी उर्वरता अनादि काल से बनी हुई है और अनन्त काल तक अक्षुण बनी रहेगी। उदार सेवा भावना जिसके चिन्तन और व्यवहार में जितना पुट है, समझना चाहिए कि उस प्रामाणिक व्यक्ति को समाज का सम्मान भरा सहयोग और ईश्वर का अनुदान उसी अनुपात में निरन्तर मिलता रहेगा।

जीवन साधना एवं ईश-उपासना

आस्तिकता या अध्यात्मिकता का क्रिया पक्ष भी अपने स्थान पर उचित है। उससे अभीष्ट प्रयोजन के सधने में सुविधा भी रहती है और सरलता भी होती है, पर किसी को यह अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए कि पूजा कृत्यों की प्रक्रिया पूरी करने भर से आध्यात्मिकता के साथ जुड़ी रहने वाली फलश्रुतियों और विभूतियों की प्राप्ति भी हो जाती है। यह तो संकेत "सिम्बल" मात्र है, जो दिशा निर्धारण करता है और मील के पत्थर की तरह बताता है कि अपनी दिशा धारा किस ओर होनी चाहिए।

साधना का प्रयोजन है-जीवन साधना अपने साथ कड़ाई और दूसरों के साथ उदारता बरतना। कड़ाई का तात्पर्य है- संयम अनुशासन का कठोरतापूर्वक परिपालन। इंद्रिय संयम, अर्थ संयम और विचार संयम ही साधना के चार चरण हैं। इन्हीं को तत्परता के नाम से जाना जाता है। इस प्रयोजन के लिये अपव्यय को कठोरतापूर्वक रोकना पड़ता है और जो समय, श्रम, चिन्तन, साधन आदि बचाया जा सकता है, उसे तत्परतापूर्वक रोका जाता है और साथ ही इसका भी ध्यान रखना पड़ता है कि उसका सत्प्रयोजनों में श्रेष्ठतम सदुपयोग किस प्रकार बन पड़े, यदि यह निभ सके, तो समझना चाहिए कि वास्तविक संयम साधना की तपश्चर्या सही दिशा में सही रीति से चल रही है और उसका सदुपयोग भी उच्चस्तरीय प्रतिफल प्रदान करके रहेगा।

पूजा अर्चा प्रतीक मात्र है, जो बताती है कि वास्तविक उपासना का स्वरूप क्या होना चाहिए और उसके साथ क्या उद्देश्य क्या उपक्रम जुड़ा रहना चाहिए। देवता के सम्मुख दीपक जलाने का तात्पर्य यहाँ दीपक की तरह जलने और सर्वसाधारण के लिये प्रकाश प्रदान करने की अवधारणा हृदयंगम कराना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है। पुष्प चढ़ाने का तात्पर्य यह है कि जीवनक्रम को सर्वांग सुन्दर, कोमल सुशोभित रहने में कोई कमी न रहने दी जाय। अक्षत-चढ़ाने का तात्पर्य है कि हमारे कार्य का एक नियमित अंशदान परमार्थ प्रयोजन के लिये लगता रहेगा। चन्दन लेपन का तात्पर्य यह है कि सम्पर्क क्षेत्र में अपनी विशिष्टता सुगंध बनकर अधिक विकसित हो। नैवेद्य चढ़ाने का तात्पर्य है अपने स्वभाव और व्यवहार में मधुरता का अधिकाधिक समावेश करना। जप का उद्देश्य है अपने मन:क्षेत्र में निर्धारित प्रकाश परिपूर्णता का समावेश करने के लिए उसकी रट लगाये रहना। ध्यान का अर्थ है अपनी मानसिकता को लक्ष्य विशेष पर अविचल भाव से केन्द्रीभूत किये रहना। प्राणायाम का प्रयोजन है अपने आपको हर दृष्टि से प्राणवान, प्रखर, प्रतिभा सम्पन्न बनाये रहना। समूचे साधना विज्ञान का तत्त्वदर्शन इस बात पर केन्द्रीभूत है कि जीवनचर्या का बहिरंग और अंतरंग पक्ष निरन्तर मानवी गरिमा के उपयुक्त ढांचे में ढलता रहे। । कषाय-कल्मषों के दोष दुर्गुण जहाँ भी छिपे हुये हों, उनका निराकरण होता चले। मनुष्य जितना ही निर्मल होता है उसे उसी तत्परता के साथ आत्मा के दर्पण में ईश्वर की झांकी होने लगती है। इसी को प्रसुप्ति का जागरण में परिवर्तित होना कहते हैं। आत्म ज्ञान की उपलब्धि या आत्म साक्षात्कार यही है। इस दिशा में जो जितना बढ़ पाते हैं उसे उसी प्रकार का सुविकसित सिद्ध पुरुष या महामानव समझा जाता है।

सड़क चलने में सहायता तो करती है, पर उसे पार करने के लिए अपने पैरों का पुरुषार्थ ही काम देता है। भजन-पूजन तो एक प्रकार का जल स्नान है, जिससे शरीर पर जमी हुई मलीनता दूर होती है। यह आवश्यक होते हुए भी समग्र नहीं है। जीवन धारण किये रहने के लिए तो खाना-पीना, सोना-जागना आदि भी आवश्यक है। पूजा अर्चना का महत्त्व समझा जाय, उसे नियमित रूप से अपनाया भी जाय, किन्तु यह मान बैठने की भूल न की जाय कि आत्मिक प्रगति में पात्रता और प्रामणिकता की उपेक्षा की जाने लगे या मान लिया जाय कि क्रिया-कृत्यों से ही अध्यात्म का समस्त प्रयोजन पूरा हो जायेगा। यदि वरिष्ठता और महत्ता की जाँच-पड़ताल करनी हो तो एक ही बात खोजनी चाहिए कि व्यक्ति सामान्य जनों की अपेक्षा अपने व्यक्तित्व, चिंतन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का अधिक समावेश कर सका या नहीं । सोने को कसौटी पर कसने के अतिरिक्त आग में भी तपाया जाता है, तब पता चलता है कि उसके खरेपन में कहीं कोई कमी नहीं है। इसी प्रकार देखा यह भी जाना चाहिए कि सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन जैसे लोकमंगल कार्यों में किसका कितना बढ़ा-चढ़ा अनुदान रहा। अद्यावधि संसार के इतिहास में महामानवों का, ईश्वर भक्तों का इतिहास इन्हीं दो विशेषताओं से जुड़ा हुआ रहा है। इनने इन्हीं दो चरणों को क्रमबद्ध रूप से उठाते हुए उत्कृष्टता के उच्च लक्ष्य तक पहुँच सकना सम्भव बनाया है। अन्य किसी के लिए भी इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। कोई ऐसा शार्टकट कहाँ है जिसे पकड़ कर जीवन के स्तर को घटिया बनाये रखकर भी कोई ठोस और सार्थक प्रगति की जा सके।

चतुरता के हथकण्डों में से कई ऐसे हैं तो सही, जो बाजीगरों जैसे चमत्कार दिखाकर भोले दर्शकों को अपने कौतूहलों से चमत्कृत कर देते हैं। बेईमानी से भी कभी-कभी कोई कुछ सफलता प्राप्त कर लेता है, पर इस तथ्य को भुला न दिया जाय कि बाजीगर हथेली पर सरसों जमा तो देते हैं, पर उसका तेल निकालते और लाभ मिलते किसी ने नहीं देखा। पानी के बबूले कुछ ही देर उछल-कूद करते और फिर सदा के लिए अपना अस्तित्त्व गंवा बैठते हैं।

धातुओं की खदानें जहाँ कहीं होती हैं, उस क्षेत्र के अपने सजातीय कणों को धीरे-धीरे खींचती और एकत्रित करती रहती हैं। उनका क्रमिक विस्तार इस प्रकार हो जाता है। जहाँ सघन वृक्षावली होती है, वहाँ भी हरीतिमा का चुम्बकत्व आकाश से बादलों को खींच कर अपने क्षेत्र में बरसने के लिये विवश किया करता है। खिले हुए फूलों पर तितलियाँ न जाने कहाँ-कहाँ से उड़-उड़ कर आ जाती हैं। इसी प्रकार प्रामाणिकता और उदारता की विभूतियाँ जहाँ कहीं भी सघन हो जाती है। वे अपने आप में एक चुम्बक की भूमिका निभाती हैं और अखिल ब्रह्माण्ड में अपनी सजातीय चेतना को आकर्षित करके अवधारण कर लेती हैं। ईश्वरीय अंश इसी प्रकार मनुष्यों की अपेक्षा निश्चित रूप से प्राणवानों में अधिक पाया जाता है। सामान्य प्राण को महाप्राण में परिवर्तित करना ही ईश्वर-उपासना का उद्देश्य है। इसी के फलित होने पर मनुष्य को मनीषी, क्षुद्र को महान, नर को नारायण बनने का अवसर मिलता है।

प्रखर प्रतिभा का उद्गम स्त्रोत

जिस प्रकार कुछ भी उपार्जन करने में मनुष्य समर्थ है, उसी प्रकार उसकी इच्छा पर यह भी निर्भर

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है कि उसका सदुपयोग या दुरुपयोग करने लगे। कर्मफल अवश्य ही नियन्ता ने अपने हाथ में रखा है, फिर भी जहाँ तक कर्त्तव्य का सम्बन्ध हैं, वहाँ तक मनुष्य अपनी मनमर्जी बरतने में स्वतंत्र है। अर्जित प्राणशक्ति के बारे में भी यही बात है। दैत्य स्तर के लोग भौतिक सामर्थ्यों की तरह आत्मिक विभूतियों का दुरुपयोग कर सकते हैं । तांत्रिक, अघोरी कापालिक आदि ऐसे ही उद्धत प्रयोग करते रहे हैं।

प्राण शक्ति का भौतिक लाभ के लिये भी प्रयोग किया जा सकता है। जीवट वाले व्यक्ति सामान्य परिस्थितियों में पैदा होने पर भी अपने लिये अपने उपयुक्त वातावरण बनाते और व्यवहार-कुशलता का परिचय देते हुए अभीष्ट क्षेत्र की प्रगति अर्जित करते हैं। धनवान, बलवान, विद्वान, कलाकार स्तर के लोग अपनी तत्परता, तन्मयता, कुशलता और जागरुकता के सहारे अपनी इच्छित सफलताएँ अर्जित करते हैं। जबकि अनगढ़ स्तर के लोग किसी प्रकार अपना गुजारा भर चला पाते हैं। कई बार तो ऐसे जाल-जंजाल बुन लेते हैं जिनके कारण उन्हें अनेकानेक विग्रहों-संकटों का सामना करना पड़ता है। असावधान और अव्यावहारिक लोग अक्सर लोक व्यवहार में भी इतनी भूलें करते देखे गये हैं, जिनके कारण उनके लिये चैन से दिन गुजारना भी कठिन पड़ जाता है, सफलता और समृद्धियाँ प्राप्त कर सकना तो दूर की बात बन जाती है।

भौतिक क्षेत्र में अपनी जीवट का सुनियोजन करने वाले आम तौर से अभीष्ट सफलता की दिशा में ही बढ़ते हैं। सम्पत्तिवान, प्रगतिशील सफलताओं के अधिष्ठाता कहलाते हैं। कभी-कभी ऐसे लोग चालाकी भी अपनाते हैं, पर इतना तो निश्चित है कि जीवट का धनी हुए बिना कोई उस स्थिति तक नहीं पहुँच सकता जिसे उन्नतिशील कहलाने का श्रेय मिल सके।

अनगढ़ और पुरुषार्थी दो स्तर के लोग आम जनता के बीच पाये जाते हैं, उन्हीं को गरीब-अमीर, सफल-असफल भी कहते हैं, किन्तु इन सबसे ऊँचा एक और स्तर है, जिसे देवमानव कहकर सराहा जाता है। प्रतिभाशाली उपयुक्त सफलताएँ पाते हैं, भले ही उनका दुरुपयोग करके अपयश के भाजन ही क्यों न बनें ? किन्तु जिनने अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुनियोजित, सुसंस्कृत बना लिया है, उनके लिये आत्मिक संतोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह तीनों ही सुरक्षित रहते और दिन-दिन समुन्नत होते जाते हैं। वस्तुतः व्यक्तित्त्व का परिष्कार और उदात्तीकरण ही वह योगाभ्यास है, जिसके महात्म्य को लोक और परलोक की अभीष्ट सफलताएँ देने वाला बताया गया है। प्रखर प्रतिभा का उद्गम स्रोत ईश्वर है, जिसे दूसरे शब्दों में सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय भी कहा जा सकता है। मनुष्य जीवन में वह गरिमामयी आदर्शवादिता और उत्कृष्टता के रूप में अवतरित होता है। पूजा-उपासना के समस्त कर्मकाण्डों का उद्देश्य इसी आंतरिक वरिष्ठता का सम्पादन और अभिवर्धन करना है।

मशीनों में बिजली का करेण्ट कम मात्रा में पहुँचाता है तो उनकी चाल बहुत धीमी पड़ जाती है, पर जैसे-जैसे वह विद्युत् प्रवाह बढ़ता है, वैसे-वैसे ही उन सब में तेजी, गति, शक्ति बढ़ती जाती है। चेतना का कामचलाऊ अंश तो प्राणि मात्र में रहता है, जिससे वह किसी प्रकार अपनी जीवनचर्या चलाता रह सके। यह जन्मजात है, किन्तु जब कभी इसकी अतिरिक्त मात्रा की आवश्यकता पड़ती है, तो वह योग और तप परक साधना करता है। इन दोनों का तात्पर्य प्रकारान्तर से प्रतिभा और सेवा साधना में सरसता अनुभव होने की प्रकृति ही समझी जा सकती है।

योगदर्शन में अष्टांग साधना में सर्वप्रथम यम-नियम की गणना की गई है। यह अंतरंग और बहिरंग सुव्यवस्था के ही दो रूप हैं। जिसने इस दिशा में जितनी प्रगति की, समझना चाहिए कि उसे उतनी ही आत्मिक प्रगति हस्तगत हुई और उसकी क्षमता उस स्तर की निखरी, जिसका वर्णन महामानवों में पाई जाने वाली ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में किया जाता है। उपासनात्मक समस्त कर्मकाण्डों की संरचना इसी एक प्रयोजन के लिये हुई है कि व्यक्ति की पशु प्रवृत्तियों के घटने और दैवी सम्पदाओं के बढ़ने का सिलसिला क्रमबद्ध रूप से चलता रहे। यदि उद्देश्य का विस्मरण कर दिया जाय और मात्र पूजा परक क्रिया-कृत्यों को ही सब कुछ मान लिया जाय, तो यह चिह्न पूजा का निर्जीव उपक्रम ही माना जायगा और उतने भर से बढ़ी-चढ़ी उपलब्धियों की आशा करने वालों को निराश ही रहना पड़ेगा।

समर्थ पक्षियों के नेतृत्त्व में अनेको छोटी चिड़ियाँ उड़ान भरती हैं। बलिष्ठ मृग के परिवार में आश्रय पाने के लिये उसे जाति के अनेक प्राणी सम्मिलित होते जाते हैं। चीटियाँ कतार बनाकर चलती हैं। बलिष्ठ आत्मबल के होने पर दैवी शक्तियों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अवतरण आरम्भ हो जाता है और साधक क्रमशः अधिक सिद्ध स्तर का बनता जाता है। यही है वह उपलब्धि, जिसके सहारे महान प्रयोजन सधते और ऐसे गौरवास्पद कार्य बन पड़ते हैं, जिन्हें सामान्य स्तर के लोग प्रायः असम्भव ही मानते रहते हैं।

बड़ी उपलब्धियों के लिये प्रायः दो मोर्चे संभालने पड़ते हैं-एक यह कि अपनी निजी दुर्बलताओं को घटाना मिटाना पड़ता है। उनके रहते मनुष्य में आधी चौथाई शक्ति ही शेष रह जाती है। अधिकांश तो निजी दुर्बलताओं के छिद्रों से होकर बह जाती है। जिनके लिए अपनी समस्याओं को सुलझाना ही कठिन पड़ता है, वह व्यापक क्षेत्र के बड़े कामों का संरजाम किस प्रकार जुटा सकेंगे । भूखा व्यक्ति किसी भी मोर्चे पर जीत नहीं पाता इसी प्रकार दुगुर्णी व्यक्ति स्वयं अपने लिये इतनी समस्याएँ खड़ी करता रहता है, जिनके सुलझने में उपलब्ध योग्यता का अधिकांश भाग खपा देने पर भी यह निश्चय नहीं होता कि अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादित करने के लिये कुछ सामर्थ्य बचेगी या नहीं।

बच्चों को लोरी गाकर सुला दिया जाता है। झूले पर हिलते रहने वाले बच्चे भी जल्दी सो जाते हैं। रोने वाले बच्चे को अफीम चटा कर खुमारी में डाल दिया जाता है। इसी प्रकार व्यक्ति को भी कुसंग में, दुर्व्यसन में, आलस्य-प्रमाद का आदी बना कर ऐसा कुछ बना दिया जाता है, मानो वह अर्धमृत या अर्धविक्षिप्त, अनगढ़ स्थिति में रह रहा है । ऐसे व्यक्ति पग-पग पर भूलें करते और कुमार्ग पर चलते देखे जाते हैं। उपलब्धियों का आमतौर से ऐसे ही लोग दुरुपयोग करते और घाटा उठाते हैं, किन्तु जिनने इस अनौचित्य की हानियों को समझ लिया है, उनके लिए आत्मानुशासन कठिन नहीं रहता, वरन् उसके मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को उससे कहीं अधिक हल्की अनुभव करते हैं, जो कुमार्ग पर चलने वाले को पग-पग पर उठानी पड़ती हैं। परमार्थ कार्यों में समय और साधनों का खर्च तो होता है, पर वह उतने दुष्परिणाम उत्पन्न नहीं करता जितना कि संकीर्ण स्वार्थपरता अपनाकर तत्काल दीखने वाले लाभों के व्यामोह में निरन्तर पतन और पराभव ही हाथ लगता है।

हर महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये प्रतिभाशाली व्यक्तित्व चाहिए, अन्यथा असावधान एवं अनगढ़ जितना कुछ कर पाते हैं, उससे अधिक हानि करते रहते हैं। ऐसों की न कहीं आवश्यकता होती है, न इज्जत और न उपयोगिता। ऐसी दशा में उन्हें जहाँ-तहाँ ठोकरें ही खाते देखा जाता है। इसके विपरीत उन जागरूक लोगों का पुरुषार्थ है, जो पूरे मनोयोग के साथ काम को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाते हैं। बड़प्पन ऐसों के हिस्से में ही आता है। बड़े काम सम्पन्न करते ऐसे ही लोग देखे जाते हैं। बड़ाई उन्हीं के हिस्से में आती है। साधन तो सहायक भर होते हैं। वस्तुतः मनुष्य की क्षमता और दक्षता उसके गुण, कर्म, स्वभाव के निखार पर निर्भर रहती है।

अध्यात्म जादूगरी नहीं है और न कहीं आसमान से बरसने वाले वरदान-अनुदान। देवी-देवताओं का भी यह धंधा नहीं है कि चापलूसी करने वालों को निहाल करते रहें और जो इनके लिए ध्यान न दे सकें उन्हें उपेक्षित रखें या आक्रोश का भाजन बनायें। वस्तुतः देवत्व आत्मजागरण की एक स्थिति विशेष है, जिसमें अपने ही प्रसुप्त वर्चस्व को प्रयत्नपूर्वक काम में लाया जाता है और सत्प्रयासों का अधिकाधिक लाभ उठाया जाता है।

कहते हैं कि भगवान शेष शय्या पर सोते रहते हैं। कुसंस्कारी लोगों का भगवान उन बचकानों की बेहूदी धमा-चौकड़ी से तंग आकर आँखे मूंदकर इसी प्रकार जान बचाता है, पर जो मनस्वी उसकी सहायता से कठिनाइयों में त्राण पाना चाहते हैं, उनके लिये द्रौपदी या गज की तरह उसकी कष्ट निवारण शक्ति भी दौड़ी आती है। जिन्हें वर्चस्व प्राप्त करना होता है, उन्हें सुदामा, नरसी, विभीषण, सुग्रीव की तरह अयाचित वैभव भी प्रचुर परिमाण में हस्तगत होता है।

इच्छा शक्ति संसार की सबसे बड़ी सामर्थ्य है । साहस भरे संकल्प बल से बढ़कर इस संसार में और कोई बलिष्ठ नहीं । इन्हीं को अर्जित करते जाना जीवन का वास्तविक लक्ष्य है, क्योंकि स्वर्ग-मुक्ति जैसे आध्यात्मिक और ऋद्धि-सिद्धि जैसे भौतिक लाभ इसी आधार पर उपलब्ध किये जाते रहते हैं ।

स्वयं का भार वहन करना भी आम तौर से कठिन काम माना जाता है । फिर अनेको का भार वहन करते हुए उन्हें ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने का लक्ष्य पूरा करना तो और भी अधिक कठिन पड़ना चाहिए । पर यह कठिनाई या असमर्थता तभी तक टिकती है जब तक अपने से समर्थ की कमी रहती है । उसका बाहुल्य हो तो मजबूत क्रेनें रेलगाड़ी के पटरी से उतरे डिब्बों को अंकुश में लपेट कर उलट कर सीधा करती और यथास्थान चलने योग्य बनाकर अच्छी स्थिति में पहुँचा देती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इक्कीसवीं सदी में उससे कहीं अधिक पुरुषार्थ किये जाने हैं, जितना कि पिछले दो महायुद्धों की विनाश विभीषिका में ध्वस्त हुआ है । जैसे कि वायु प्रदूषण ने जीवन मरण का संकट उत्पन्न किया है । विषमताओं और अनाचार जन्य विभीषिकाओं ने भी संकट उत्पन्न किये हैं । शक्ति तो इन सभी में खर्च हुई, पर ध्वंस की अपेक्षा सृजन के लिये कहीं अधिक सामर्थ्य और साधनों की आवश्यकता पड़ती है । इसका यदि संचय समय रहते किया जा सके, तो समझना चाहिए कि दुष्ट चिन्तन और भ्रष्ट आचरण के कारण उन असंख्य समस्याओं का समाधान सम्भव होगा जो इन दिनों हर किसी को उत्तेजित विक्षुब्ध और आतंकित किये हुए हैं ।

युग परिवर्तन प्रतिभा ही करेगी

प्रयोजन बड़ा होते हुए भी उसका समाधान सरल है, यदि प्रतिभाओं के परिष्कार का क्रम चल पड़े । उनके आविर्भाव का उपचार बन पड़े तो समझना चाहिए कि इन अनुदानों के सहारे विश्वव्यापी कार्य सध जाता है । सामाजिक और क्षेत्रीय समस्याओं के सम्भालते रहना और भी अधिक सरल पड़ता जायगा ।

हर महत्त्वपूर्ण कार्य में तदनुरूप ऊर्जा की जरूरत पड़ती है । उसके बिना तो छोटे-छोटे कार्य भी पूरे नहीं होते । हर महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए ऊर्जा चाहिए, फिर युग निर्माण जैसा विश्वव्यापी और अत्यधिक भारी भरकम काम तो वरिष्ठ प्रतिभा सम्पन्नों के कंधा लगाये बिना पूरा हो सकने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

नव निर्माण की विश्व व्यापी संरचना जिसने सोची और खड़ी की है, उसने इस पुण्य प्रयोजन की पूर्ति के लिये प्राणवान जीवट के धनी व्यक्तित्वों की अच्छी खासी सेना खड़ी करने की आवश्यकता अनुभव की है और उसे समय रहते जुटा लेने की तैयारी की है । यह उल्लेख उद्‌बोधन उन्हीं के लिए है । प्रतिभा परिष्कार का सुयोग उपयुक्त मात्रा में बन पड़ा तो फिर अपनी दुनिया का स्वरूप और परिवेश बदल डालने में नियन्ता के सामने और कोई बड़ी कठिनाई शेष न रहेगी ।

भूतकाल में भी मनस्वी लोगों ने एक से एक आश्चर्यजनक कार्य किये हैं । इनमें अगस्त्य का समुद्र सोखना, हनुमान का पर्वत उठाना, विश्वामित्र के तत्वावधान में रामराज्य की स्थापना होना जैसी घटनाएँ ऐसी हैं जो बताती हैं कि करने-मरने पर उतारू व्यक्ति के लिये क्या कुछ ऐसा है जिसे सम्भव करके नहीं दिखाया जा सकता । स्वर्ग से धरती पर गंगा उतारने वाले भगीरथ अपने कार्य में सफल हुए थे तो फिर कोई कारण नहीं कि नव निर्माण में जुटे भगीरथों की अपनी मंडली भ्रम जंजाल से निकलकर सीधे और सरल काम कर सकने के लिए समर्थ क्यों नहीं बन सकती ?

प्रतिभाओं का निखार दूसरे किसी की कृपा, अनुकम्पा के ऊपर निर्भर नहीं है । वह तो पूरी तरह अपने बस की बात है । शरीर से इच्छानुरूप काम लिया जा सकता है । उस पर पूरा नियंत्रण अपना रहता है । जो लोग संसार के वर्तमान प्रचलनों की बातों को ही सब कुछ मानते हैं, उन्हें क्या कहा जाय। अन्यथा अपने मनोबल और प्रयास को यदि दिशाबद्ध किया जा सके, तो हर व्यक्ति अंतः की प्रेरणा से न जाने क्या से क्या कुछ करके दिखा सकता है । यह नया प्रयोग नहीं है । भूतकाल में ऐसे ही प्रयोग होते रहे हैं । युग बदलते रहे और मनुष्य अपनी प्रथा परम्पराओं में आमूलचूल परिवर्तन करता रहा है । इस बात की महाकाल द्वारा दी गई चुनौती को अस्वीकार करते न बन पड़ेगा ।

गान्धी, बुद्ध, ईसा आदि के धार्मिक आन्दोलनों को सफल बनाने के पीछे भगवान की इच्छा कार्य करती रही है । इस बार प्रतिभावानों की पूर्ति का सरंजाम जुट रहा है । समय रहते वह पूरा भी होगा । यह सम्भावना अधूरी न रहेगी क्योंकि प्रतिभावानों में हुंकार जब भी उठी है, उसने विशिष्ट स्तर की प्रतिभाओं को विकसित किया है । यह प्रतिभावानों की विशेषता रही है । इसके लिए शरीर बल, साधन बल, बुद्धि बल की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी कि गांधी, बुद्ध, विनोबा जैसे प्रतिभावानों की । समय स्वल्प हो तो भी अपने सम्पर्क क्षेत्र में प्रतिभा का परिचय देने वाले मनस्वी तो हर किसी को उभार सकते हैं और गीध, गिलहरी, शबरी, भील जैसे चमत्कार प्रस्तुत कर सकते हैं जो छोटों के लिए भी सम्भव हो सकता है ।

इक्कीसवीं सदी में आन्दोलन की भागीदारी स्वीकार करने के लिए भाव सम्वेदना के धनी वर्ग का आह्वान किया गया है । आरम्भ की दृष्टि से हल्के काम सौंपे गये हैं युग संधि पुरश्चरण के अन्तर्गत जप, साधना, समयदान, अंशदान, साप्ताहिक सत्संग, झोला पुस्तकालय आदि । उन्हें हल्के दर्जे के स्काउट व्यायाम स्तर का समझा जाय जिससे अभिरुचि और आस्था की परिस्थिति बढ़ चले ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनगढ़ता मिटे, सुगढ़ता विकसित हो

पृथ्वी का उत्तर ध्रुव निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त पदार्थ सम्पदा में से अपने लिये आवश्यक तत्त्व खींचता रहता है । वही धरती की विविध आवश्यकताएँ पूरी करता है । जो निरर्थक अंश बच रहता है वह पदार्थ ध्रुव मार्ग से कचरे की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। यही क्रम मनुष्य शरीर का है । वह अपनी रुचि और प्रकृति के अनुरूप चेतन तत्त्व आकाश में से खींचता और छोड़ता रहता है । उसी पूँजी से अपना काम चलाता है । क्या ग्रहण करना और क्या बहिष्कृत करना है ? यह मनुष्य के मानसिक चुम्बकत्त्व पर निर्भर है । यदि अपना मानस उच्चस्तरीय बन चुका है तो उसका आकर्षण विश्व ब्रह्माण्ड से अपने स्तर के सहकारी तत्त्व खींचता और भण्डार करता रहेगा, पर पूँजी अपने मनोबल के अनुरूप ही जमा होती रहती है । वैसे मनुष्य को जन्मजात रूप से विभूतियों का वैभव प्रचुर मात्रा में मिला है, पर वह प्रसुप्ति की तिजोरी में बंद रहता है ताकि आवश्यकता अनुभव होने पर ही उसे प्रयत्नपूर्वक उभारा और काम में लाया जा सके । सभी जानते हैं कि भूगर्भ में विभिन्न स्तर के रासायनिक द्रव्य भरे पड़े हैं । यह भी किसी से छिपा नहीं है कि आकाश से निरन्तर धरती पर प्राण तत्त्व की वर्षा होती रहती है । वनस्पतियों और प्राणियों का गुजारा इन्हीं उभयपक्षीय अनुदानों के सहारे चलता है । मानवी व्यक्तित्त्व के सम्बन्ध में भी यही बात है । वह इच्छित प्रगति के लिए अपने वर्चस्व का कितना ही महत्त्वपूर्ण अंश उभार सकता है और अपने बलबूते वांछित दिशा में अग्रगमन कर सकता है । उर्वरता भूमि में होती है पर उसके प्रगट होने के लिए ऊपर से जल बरसना भी आवश्यक है अन्यथा उर्वरता हरीतमा का रूप धारण न कर सकेगी। मनुष्य को अपने में सन्निहित विशेषताओं को भी ऊर्ध्वगामी बनाना चाहिए और साथ ही अदृश्य जगत के विपुल वैभव का अंश भी अपनी आकर्षण शक्ति से खींच कर अधिकाधिक सुसम्पन्न बनाना चाहिए । अपने गुण, कर्म-स्वभाव को प्रखर परिष्कृत बनाना और ईश्वर सान्निध्य स्थापित करके व्यापक शक्ति के लिए कुछ उपयुक्त से खींच बुलाना-यह दोनों ही क्रियायें अपने ढंग से नियमित रूप से चलती रहें तो समझना चाहिए कि प्रगति का सुव्यवस्थित सरंजाम जुटने की समुचित व्यवस्था बन गई । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए चिन्तन, चरित्र और स्वभाव को गुण, कर्म और भाव सम्वेदना को दिनों-दिन अधिक उत्कृष्ट बनाते चलने की आवश्यकता को ध्यान रखने पर जोर दिया गया है । साथ ही आवश्यक यह भी है कि इस विराट विश्व की कामधेनु की अनुकूलता प्राप्त करके अमृत भरे पयपान का लाभ उठाते रहा जाये ।

प्राण अपना है, प्रतिभा भी अपनी है, पर वह अनगढ़ स्थिति में झाड़-झंखाड़ों से भरी रहती है । उसे सुरम्य उद्यान में बदलने के लिए कुशल माली जैसे अनुभव और सतर्कता भरा प्रयत्न चाहिए । जो उसे कर पाते हैं वे ही देखते हैं कि "ईश्वर अंश जीव अविनाशी" का प्रतिपादन सोलहों आना सच है । उसमें किसी प्रकार की अत्युक्ति नहीं है । घाटे में वे रहते हैं जो अपनी उपेक्षा आप करते हैं । जो अपनी अवमानना अवहेलना करेगा वह दूसरों से भी तिरस्कृत होगा और स्वयं भी घाटे में रहेगा ।

प्रतिभाओं का अभिनव अभ्युदय

इक्कीसवीं सदी में यों अपनी-अपनी भावना और योग्यता के अनुरूप हर किसी को कुछ न कुछ करना ही चाहिए । व्यस्तता और अभावग्रस्तता के कुहासे में कुछ करना धरना सूझ न पड़ता हो तो फिर अपनी मनःस्थिति और परिस्थिति का उल्लेख करते हुए शान्तिकुंज हरिद्वार से परामर्श कर लेना चाहिए ।

विशेषतया इस शताब्दी में प्रखर प्रतिभाओं की बड़ी संख्या में आवश्यकता पड़ेगी । पिछली शताब्दी में प्रदूषण फैला, दुर्भाव बढ़ा और कुप्रचलन का विस्तार हुआ है। उसमें सामान्यजनों का कम और प्रतिभाशालियों द्वारा किये गये अनर्थ का दोष अधिक है। अब सुधार की बेला आई है तो कचरा बिखेरने वाले वर्ग को ही उसकी सफाई का प्रायश्चित करना चाहिए । तोड़ने वाले मजदूर सस्ते मिल जाते हैं किन्तु कलात्मक निर्माण करने के लिए अधिक कुशल कारीगर चाहिए । नव निर्माण में लगाई जाने वाली प्रतिभाओं की हर दृष्टि, कुशलता और तत्परता अधिक ऊँचे स्तर की चाहिए । उनका अन्तराल भी समुज्ज्वल होना चाहिए और वाह्य दृष्टि से इतना अवकाश एवं साधन भी उनके पास होना चाहिए ताकि अनावश्यक विलम्ब न हो, नये युग की क्षतिपूर्ति कर नव निर्माण वह विश्वकर्मा जैसी तत्परता के साथ कर सके । जो एकांगी न सोचे वरन् बहुमुखी आवश्यकताओं के हर पक्ष को सम्भालने में अपनी दक्षता का परिचय दे सके। यही निर्माण आज का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। सृजेता ही कार्य सम्पन्न कर दिखाता है । मूकदर्शक तो खड़े-खड़े साक्षी की तरह देखते रहते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। ऐसी भीड़ में असुविधा ही बढ़ती है । गंदगी और गड़बड़ी फैलाते रहना ही अनगढ़ लोगों का काम होता है । सृजेता की सृजन प्रेरणा किस गति से चल रही है और उज्ज्वल भविष्य की निकटता में अब कितना विलम्ब है । इसकी जांच पड़ताल एक ही उपाय से हो सकती है कि कितनों के अंतःकरण में उस परीक्षा की घड़ी में असाधारण कौशल दिखाने की उमंगें उठ रही हैं। स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ अपनाना कितना अधिक सुदृढ़ होता चला जाता है । समय की सबसे बड़ी आवश्यकता नव सृजन के लिए सोच तो कोई कुछ भी सकता है, पर क्रिया रूप में कुछ कर पड़ना उन्हीं के लिए सम्भव हो सकता है जो निजी महत्वाकांक्षाओं में कटौती करके अधिक से अधिक समय, श्रम, मनोयोग एवं साधनों को नियोजित कर सकें । भवन खड़ा करने के लिए ईंट, चूना, सीमेंट, लकड़ी, लोहा आदि अनिवार्य रूप से चाहिए । युग सृजन भी ऐसे ही अनेक साधनों की अपेक्षा करता है, उन्हें जुटाने के लिए पहला अनुदान अपने से ही प्रस्तुत करने वालों को ही यह आशा करनी चाहिए कि अन्य लोग भी उनका अनुकरण करेंगे । ऐसा समर्थन सहयोग देने में उत्साह का प्रदर्शन करेंगे ।

कहा जा चुका है कि युग सृजन जैसा महान उत्तरदायित्त्व पूरा करने में सृष्टा की उच्चस्तरीय सृजन शक्तियाँ ही प्रमुख भूमिका सम्पन्न करेंगी । मनुष्य की औसत उपलब्धि तो यही रही है कि वह बनाता कम और बिगाड़ता अधिक है । पर जहाँ बनाना ही बनाना एक मात्र लक्ष्य हो, वहाँ तो सृष्टा की सृजन सेना ही अग्रिम मोर्चा सँभालती दिखाई देगी । हर सैनिक के लिए अपने ढंग का अस्त्र-शस्त्र होता है । युग सृजन में आदर्शों के प्रति सघन श्रद्धा चाहिए और ऐसी लगन जिसे किन्हीं आकर्षण या दबाव से विचलित न किया जा सके । ऐसे व्यक्तियों को ही देव मानव कहते हैं और उन्हीं के द्वारा ऐसे कार्य कर गुजरने की आशा की जाती है। जिनको विचार करने तक की तथाकथित कुंठाग्रस्त, मायाग्रस्त लोगों को सुनने विचारने तक की फुरसत नहीं होती, उनसे तो कुछ बन पड़ेगा ही कैसे ?

ईश्वर का स्वरूप न समझने वाले उसे मात्र मनोकामनाओं की पूर्ति का ऐसा माध्यम मानते हैं, जो किसी की पात्रता देखे बिना आँखें बन्द करके योजनाओं की पूर्ति करता रहता है भले ही वे उचित हों या अनुचित । किन्तु जिन्हें ब्रह्म-सत्ता की वास्तविकता का ज्ञान है वे जानते हैं कि आत्म-परिष्कार और लोक-कल्याण को प्रमुखता देने वाले ही ईश्वर भक्त कहे जाने योग्य हैं । इसके बदले में अनुग्रह के रूप में सजल श्रद्धा और प्रखर प्रज्ञा के अनुदान मिलते हैं । उनकी उपस्थिति से ही पुण्य प्रयोजनों के लिए ऐसी लगन उभरती है, जिसे पूरा किये बिना चैन ही नहीं पड़ता । उस ललक के रहते वासना, तृष्णा और अहन्ता की मोह निद्रा या तो पास ही नहीं फटकती या फिर आकर वापस लौट जाती है। नर रत्न ऐसों को ही कहते हैं । प्रेरणाप्रद इतिहास का ऐसे ही लोग सृजन करते हैं । उनके चरण चिह्नों का अनुसरण करते हुए सामान्य सामर्थ्य वाले लोग परम लक्ष्य तक पहुँच कर रहते हैं । यही उत्पादन यदि छोटे बड़े रूप में उभरता दीख पड़े तो अनुमान लगाना चाहिए कि भावभरा बदलाव आने ही वाला है। कोपलें निकलीं तो कलियाँ बनेंगी, फूल खिलेंगे, वातावरण शोभायमान होगा और उस स्थिति के आते भी देर न लगेगी, जिससे वृक्ष फलों से लदते और अपनी उपस्थिति का परिचय देकर हर किसी को प्रमुदित करते हैं ।

इन दिनों औसत आदमी संकीर्ण स्वार्थपरता की पूर्ति में एड़ी से चोटी तक डूबा प्रतीत होता है । उनकी आँखें न सजल होकर ईद-गिर्द बिखरे हुए पतन पराभव को देखती हैं और न ऐसा कुछ सूझता है कि अवांछनीयता को औचित्य में बदलने के लिये उनसे क्या कुछ बन पड़ सकता है ? जिनके कानों में कराह की पुकार ही नहीं पहुँचती है, जिन्हें घुंघरू के बोल ही सुहाते हैं, वे युग की पुकार और ईश्वर की वाणी सुन सकने में किस प्रकार समर्थ हो सकते हैं ? मानवी भाव सम्वेदना जहाँ से पलायन कर जाती है और जहाँ मरघट जैसी नीरवता, नीरसता ही छाई रहती है, वहाँ शालीनता का स्नेह सद्भाव कैसे बन पड़ेगा ? कैसे उस दिशा में उनके कुछ कदम उठ सकेंगे ? ऐसे वातावरण में यदि कोई पुण्य परमार्थ को वरण करने की बात सोचता है तो समझना चाहिए इसी आकाश में उदीयमान नक्षत्रों की चमक प्रारम्भ हुई और रात्रि को भी रत्नजड़ित चांदनी से सजा देने वाली मंगलमयी वेला का आगमन शुरू हुआ ।

आदर्शों के प्रति श्रद्धा और कर्त्तव्य के प्रति लगन का जहाँ भी उदय हो रहा है, समझना चाहिए कि वहाँ किसी देवमानव का आविर्भाव हो रहा है । बड़े काम बड़े लोग कर पाते हैं । हाथी का वजन हाथी ही उठाता है । गधे की पीठ पर यदि उसे लाद दिया जाय तो बेचारे की कमर ही टूट जाय । क्षुद्र कृमि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कीटक मात्र अपना अस्तित्त्व बनाये रहने की परिधि में ही क्षमताओं को खपा देते हैं । उनसे यह बन नहीं पड़ता कि आदर्शों की बात सोचें, उत्कृष्टता अपनायें और विश्व कल्याण के क्रिया-कलापों में रुचि लेकर कुछ ऐसा करें जिसकी युगधर्म ने पुकार लगाई और गुहार मचाई है ।

वर्षा आती है और हरीतिमा अनायास ही सर्वत्र उभर पड़ती है । बसन्त आता है और हर पेड़, पौधे पर फूलों की शोभा निखरती है । समझना चाहिए कि नव सृजन की इस पुण्य वेला में तनिक सी गर्मी पाते ही मलाई दूध के ऊपर आकर तैरने लगेगी । नवयुग का चमत्कार अरुणोदय की तरह यह दृष्टिकोण उभारेगा कि लोग अपने निर्वाह के प्रति स्वल्प संतोषी दृष्टिकोण अपनायेंगे और युगधर्म की बहुमुखी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए इस प्रकार जुट पड़ेंगे मानो इसी एक काम के लिये उनका सृजन अवतरण हुआ हो । अप्रत्याशित को निर्झर की तर जमीन फोड़कर उभर पड़ना उसी को कहा जायेगा जो अगले दिनों होने जा रहा है ।

समय अपनी गति से चलता और बदलता है, पर जब कभी आकस्मिक परिवर्तन दीख पड़े तो समझना चाहिए कि वह संध्याकाल जैसा परिवर्तन पर्व है । परिवर्तन पर्व निकट है । उनमें बहुत कुछ बदलना है, पर बदलाव की प्रथम किरण जहाँ से दृष्टिगोचर होगी उसे प्रखर प्रतिभाओं का अभिनव उद्भव कहा जा सकेगा । भगवान मनुष्य के रूप में परिवर्तित होंगे और उनकी निजी गतिविधियों का परिवर्तन विश्व परिवर्तन की भूमिका बनकर और व्यापक बनता चला जायगा ।

योजना, प्रेरणा, दक्षता, व्यवस्था और समर्थता भगवान की काम करेगी । श्रेय वे लोग प्राप्त करेंगे जिनकी अन्तरात्मा में युग के अनुरूप श्रद्धा और लगन जग पाई है । मुर्गा जग कर अपने जागने की सूचना देता है, पर उस बांग को सुनकर असंख्यों को ब्रह्म मुहूर्त की सूचना मिलती है और वे भी अरुणोदय वेला का लाभ लेने के लिये कार्यक्षेत्र में कदम उठाते हुए अगले दिनों दृष्टिगोचर होंगे ।

सद्बुद्धि का उभार कैसे हो ?

अभावों और संकटों में से कितने ही ऐसे हैं जिनके कारण मनुष्य को आये दिन बेचैन रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में वह दूसरे सम्पन्नों से आशा भी करता है कि उनकी कुछ मदद की जाय । करने वाला इसमें कर्त्तव्य पालन और पुण्य परमार्थ अनुभव करता है ।

दुर्बलता, रुग्णता, दरिद्रता, शत्रुता, मूर्खता, आशंका जैसे कितने ही कारण ऐसे हैं जो दुःखों को बढ़ाते और त्रास देते रहते हैं । पर इन सब के मूल में एक ही विपत्ति सर्वोपरि है जिसका नाम है—अदूरदर्शिता । अविवेक भी इसी को कहते हैं । दिग्भ्रान्त मनुष्य अपने को समझदार मानते हुए भी कुचक्र में फंसते और भटकाव के कारण पग-पग पर ठोकरें खाते हैं । अनाचार भी इस कारण बनते हैं । गुण, कर्म स्वभाव में निकृष्टता इसी कारण घुस पड़ती है । जड़ में से अनेक टहनियाँ, पत्तियाँ फूटती हैं, इसी प्रकार एक अविवेकशीलता का बाहुल्य रहने पर कारणवश या अकारण ही समस्याओं में उलझना और विपत्तियों में फँसना पड़ता है ।

पत्ते सींचने से पेड़ की सुव्यवस्था नहीं बन पड़ती। इसलिए जड़ में खाद पानी लगाने और उजाड़ करने वालों से रखवाली करनी पड़ती है । इतना प्रबन्ध किये बिना अच्छी भूमि में बोया गया अच्छा बीज भी फूलने-फलने की स्थिति तक नहीं पहुँचता ।

सद्ज्ञान को समस्त विपत्तियों का निवारक माना गया है । रामायण का कथन है कि "जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना ।" अर्थात् जहाँ विचारशीलता विद्यमान रहेगी, वहाँ अनेकानेक सुविधाओं-सम्पदाओं की शृंखला अनायास ही खिंचती चली आयेगी । यही कारण है कि सद्बुद्धि की अधिष्ठात्री गायत्री को माना गया है । मनःस्थिति परिस्थितियों का निर्माण करती है। परिस्थितियाँ ही सुख-दुःख का, उत्थान-पतन का निमित्त कारण बनकर सामने आती हैं । गीताकार ने सच ही कहा है कि मनुष्य ही अपना शत्रु है और वही चाहे तो अपने को सघन सहयोगी मित्र बना सकता है। इसलिये अपने आपको गिराना नहीं उठाना चाहिए ।

आशा और विश्वास के बल पर कष्ट साध्य रोगों के रोगी बीमारियों से लड़ते-लड़ते देर सबेर चंगे हो जाते हैं, जबकि शंकालु, डरपोक और अशुभ चिंतन करते रहने वाले साधारण रोगों को ही तिल का ताड़ बनाकर मौत के मुँह में जबरदस्ती जा घुसते हैं । देखा गया है कि अशुभ चिन्तन के अभ्यासी अपनी जीवट और साहस आधे से अधिक मात्रा में अपनी अनुपयुक्त आदतों के कारण ही गँवा बैठते हैं । कठिनाइयाँ और अड़चनें हर किसी के जीवन में आती हैं, पर उनमें से एक भी ऐसी न होगी जिसे धैर्य और साहसपूर्वक लड़ते हुए परास्त न किया जा सके । सहनशीलता एक ऐसा गुण है जिसके साथ धैर्य भी जुड़ा होता है और साहस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी । आजीवन जेल की सजा पाये हुए कैदी भी उस विपत्ति को ध्यान में न रखकर घरेलू जैसी जिन्दगी जी लेते हैं और अवधि पूरा करके वापस लौट आते हैं । सुनसान बीहड़ों में खेत या बगीचे रखाने वाले निर्भय होकर चौकीदारी करते रहते हैं । जबकि डरपोकों को घर में चुहिया की खड़बड़ भी भूत-बला के घर में घुस आने जैसी डरावनी प्रतीत होती है । शत्रु किसी का उतना अहित नहीं कर पाते जितनी उनके द्वारा पहुँचाई जा सकने वाली हानि की कल्पना संत्रस्त करती रहती है । कुछ लोग गरीबी के रहते हुए भी हँसती-हँसाती जिंदगी जी लेते हैं, जबकि कितनों के पास पर्याप्त साधन होते हुए भी तृष्णा छाई दिखती रहती है । यह मन का खेल है । हर किसी की अपनी एक अलग दुनिया होती है, जो उसकी अपनी निज की संरचना ही होती है । परिस्थितियों और साथियों का इस निर्माण कार्य में यत्किंचित सहयोग ही होता है । जीवन गीली मिट्टी की भांति है, उसे कोई जैसा भी कुछ चाहे गीली मिट्टी की तरह आकृति दे सकता है।

निजी जीवन में आन, बान, शान पर मर मिटने वालों की लम्बी कहानी है । जयचन्द्र, मीरजाफर के उदाहरण ऐसे ही लोगों में सम्मिलित हैं । शत्रु से बदला चुकाने के नाम पर न जाने क्या-क्या अनर्थ होते रहे हैं । ईर्ष्या ने अपने प्रतिद्वन्दियों को धूल चटाने में कमी नहीं रखी । ऐसे बहुत हैं जो भयंकर अग्निकांड रचने की ललक में अपने को भी घास-फूस की तरह जला बैठे । यहाँ की कथा-गाथाओं के पीछे भी इन्हीं दुष्प्रवृत्तियों की भूमिका काम करती रही है । कहने को तो उन्हें भी दुस्साहस ही कह सकते हैं। अनाचारी, आतंकवादी और षडयंत्रकारी ऐसा ही ताना-बाना बुनते रहते हैं ।

प्रश्न इन दिनों सर्वथा दूसरी प्रकार का है । सृजन और उन्नयन के लिए किसकी सद्भावना किस हद तक उभरती है । देखा जाना है—स्वार्थ के मुकाबले में परमार्थ सुहाता किसे है ? ध्वंस करने वाले जिस प्रकार मूँछों पर ताव देते हैं और शेखी बघारते हैं, वैसा अवसर सृजन कर्मियों को कहाँ मिलता है । निर्माणकर्त्ताओं की मंद-गंध चंदन जैसी होती है जो बहुत समीप से ही सूंघी जा सकती है, पर ध्वंस की दुर्गन्ध तो अपने समूचे क्षेत्र को ही कुरुचि से भर देती है और अपनी उपस्थिति का दूर-दूर तक परिचय देती है । दुष्टता भरी दुर्घटनाएँ दूर-दूर तक चर्चा का विषय बन जाती हैं, पर सेवा-सद्भावना से भरे कार्य कुछेक लोगों की जानकारी में ही आते हैं । इतने पर भी उन्हें वैसा विज्ञापित होने का अवसर नहीं मिलता है जैसा कि दुष्ट दुराचारी अपने नाम की चर्चा दूर-दूर तक होती सुन लेते हैं और अहंकार को फलितार्थ हुआ देखते हैं ।

इन परिस्थितियों में सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन जैसे सत्प्रयोजनों के लिए किन्हीं दूरदर्शी और सद्भावना सम्पन्नों के कदम ही उठते हैं । अनुकरण के प्रत्यक्ष उदाहरण सामने न होने पर अपना उत्साह भी ठंडा होता रहता है । संचित कुसंस्कारों से लेकर वर्तमान प्रचलनों के अनेकों अवरोध इस मार्ग में अड़ते हैं कि फूटे खण्डहरों जैसी व्यवस्थाओं को किस प्रकार नये सिरे से भव्य भवन का विशाल रूप देने की योजना बनाई जाय ? इसके लिए निरन्तर कार्यरत रहने और आवश्यक साधन जुटाने की हिम्मत कैसे जुटाई जाय ?

इन दिनों की सर्वोपरि आवश्यकता

करने को तो काम एक ही है पर वह है इतना बड़ा और व्यापक जिसकी तुलना हजार छोटे-बड़े कामों के समूह से की जा सकती है । बदलाव पदार्थों का सरल है । लोहे तक को गलाकर दूसरे ढांचे में ढाला जा सकता है । वेश विन्यास से कुरूप को भी रूपवानों की पंक्ति में बिठाया जा सकता है, पर विचारों का क्या किया जाय जो चिरकाल से बन पड़ते रहे कुकर्मों के कारण स्वभाव का अंग बन गये हैं और आदतों की तरह बिना प्रयास के चरितार्थ होते रहते हैं । सभी जानते हैं कि नीचे गिराने में तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति ही पूरा-पूरा जोर हर घड़ी लगाये रहती है, पर ऊँचा उठने या उठाने के लिए तो आवश्यकता के अनुरूप समर्थ साधन चाहिए । इस निमित्त सामर्थ्य भर जोर लगाना पड़ता है । श्रेष्ठ काम कर गुजरने वालों में आततायी वर्ग द्वारा प्रयुक्त होने वाली शक्ति की तुलना में सैकड़ों गुनी अधिक सामर्थ्य चाहिए । किसी मकान को एक दिन में नष्ट किया जा सकता है और इसके लिए एक फावड़ा ही पर्याप्त हो सकता है । पर यदि उसे नये सिरे से बनाना हो तो उसके लिए कितना समय, कितना कौशल लगाना पड़ेगा और बनाने सुधारने की आवश्यकता भी पड़ेगी इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है । श्रेय ध्वंस को नहीं सृजन को ही मिलता रहा है ।

इन दिनों एक ही बड़ा काम सामने है कि जन-जन के मन-मस्तिष्क पर छाई हुई दुर्भावना के निराकरण के लिए कितना बड़ा, कितना कठिन, कितने शौर्य पराक्रम की अपेक्षा रखने वाला पुरुषार्थ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जुटाया जाना चाहिए । यह कार्य मात्र उपदेशों से भी तो नहीं होगा । इसके लिए तदनुरूप वातावरण चाहिए। फिर उपदेष्टा का व्यक्तित्व ऐसा चाहिए जो अपने कथन व अपने व्यवहार में उतरने की कसौटी पर हर दृष्टि से खरा उतरता हो । बढ़िया बंदूक ही सहज निशाना लगाने में समर्थ होती है । टेढ़ी-मेढ़ी अनगढ़ नहीं । बालक का तमंचा प्राय: असफल निशाना ही लगाता रहता है । सदाशयता और सद्भावना का निजी जीवन में परिचय देने वाले ही दूसरों को ऊँचा चढ़ाने, आगे बढ़ाने और सृजनात्मक प्रयोजनों को पूरा कर पाने में समर्थ हो पाते हैं ।

विचार क्रांति आज की सर्वोपरि आवश्यकता है । हेय चिन्तन ही दरिद्रता, अशिक्षा, अस्वस्थता, कुचेष्टा और दुष्प्रवृत्तियों का परिणाम है । इन बीमारियों का अलग-अलग इलाज कारगर नहीं हो सकता । रक्त शोधक उपचार करने से ही आये दिन उगने वाले फोड़े-फुंसियों से छुटकारा मिलता है । जड़ सींचने से ही पेड़ हरा होता है । वह कार्य पत्तों को पोसने से पूरा होना सम्भव नहीं । विकास और सुधार के लिए तो अनेकानेक प्रकार के काम करने को पड़े हैं, पर यदि उन सबको समेटने की अपेक्षा विचारों का तारतम्य सही बिठा लिया जाय तो अन्यान्य बहुमुखी विकृतियों पर सहज काबू पाया जा सकता है । विचारों से ही कार्य विनिर्मित होते हैं । इन्हीं के कारण उत्थान-पतन की भूमिका दृष्टिगोचर होती है । यदि विचारों को शालीनता, सज्जनता, नीति-निष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता और समाजनिष्ठा की दिशा में उन्मुख किया जा सके, तो फिर शरीर एवं साधनों के माध्यम से मात्र वे ही कार्य बन पड़ेंगे जो सुधार एवं विकास के लिए आवश्यक हैं।

प्राचीनकाल में घर-घर अलख जगाने, सम्पर्क साधने और विचार विनिमय करने जैसे कुछ ही कार्य ऐसे थे जिनके सहारे लोकमानस का परिष्कार बन पड़ता था । अधिक लोगों को एक स्थान पर एकत्रित करने के लिए सामूहिक कर्मकाण्डों की आवश्यकता होती थी । पर अब तो विज्ञान ने उन सभी कार्यों को सरल बना दिया है । यदि उन्हें योजनाबद्ध रूप से बड़े पैमाने पर किया जा सके तो क्षेत्र की व्यापकता होते हुए भी प्रयोजन की पूर्ति में अधिक कठिनाई न रहेगी।

प्रेस अपने समय का एक वरदान है । इसके द्वारा कम समय में अधिक लोगों तक सस्ते आधार पर पहुँचना सम्भव हो सकता है । लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर, वीडियो, स्लाइड प्रोजेक्टर जैसे सस्ते उपकरण भी अधिक लोगों तक कम समय में विचारोत्तेजक प्रवाह पहुँचाने में समर्थ हो सकते हैं । संगीत मंडलियां यदि योजनाबद्ध रूप से काम करें तो उनके सहारे भी जन जागरण का बड़ा काम बड़े परिमाण में बन सकना सम्भव हो सकता है । ऐसे ही अन्य छोटे-बड़े माध्यम भी ढूँढे जा सकते हैं जो उल्टी दिशा में बहते विप्लवरिधि में सम्पन्न हो सकता है

इतने पर भी एक कठिनाई फिर भी ज्यों की त्यों रह जाती है कि अंत:करण की गहराई तक प्रवेश करके उन्हें क्रियान्वित होते देखने की आशा सम्भावना तभी पूरी होती है, जब उस हेतु प्रखर प्रतिभाएँ निखर कर आगे बढ़ कर आयें और मोर्चा सँभालें । यह कार्य घटिया लोगों का नहीं है, उनकी कृतियाँ उपहासास्पद बनती हैं । दूरवर्ती अनजान लोग किसी की वाचालता पर सहज विश्वास नहीं करते और जो मन, वचन, कर्म से आदर्शों के प्रति समर्पित हों, ऐसे लोग ढूँढ़े नहीं मिलते । इस विसंगति के कारण लोक मानस में अभीष्ट परिवर्तन बन नहीं पड़ता और अनेक विडम्बनाओं की तरह धर्मोपदेश भी मनोरंजन का एक निमित्त कारण बन कर रह जाता है ।

कठिनाई यही दूर करनी है । स्रष्टा की दिव्य चेतना का अवतरण इन्हीं दिनों इस प्रकार होना है जिसमें भावनाशील लोग अपनी कुत्सा-कुंठाओं पर विजय प्राप्त करें । ब्राह्मणोचित जीवन अंगीकार करें और अपना समग्र व्यक्तित्व इस स्तर का ढालें, जिसके प्रभाव क्षेत्र में आने वाले सभी लोग यह विश्वास कर सकें कि उत्कृष्टता की पक्षधर आदर्शवादिता कार्यरूप में अपनाई जा सकती है और उसमें हानि ही हानि सहनी पड़े, ऐसी बात नहीं है । आर्थिक दृष्टि से सुविधा साधनों में कुछ कमी हो सकती है, पर उसके बदले जो आत्म-संतोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह उपलब्ध होता है वह इतने कम महत्त्व का नहीं है, जिसे संकीर्ण स्वार्थपरता के बन्धनों में बंधे रोते-कलपते जीवन की तुलना में किसी भी प्रकार कम महत्त्व का माना जा सके ।

इन दिनों यही होना चाहिए । सम्भवत: होने भी वाला है । भाव सम्वेदना मात्र कल्पना-जल्पना के क्षेत्र तक सीमित न रहे, वरन् कार्यक्षेत्र में उतरे और अपनी सामर्थ्य के अनुरूप प्रचार प्रयोजनों में से उन्हें अपनाये जो उसके लिए सम्भव और स्वाभाविक है ।

ऐसे परामर्श हर परिष्कृत अंत:करण में दैवी प्रेरणा से अनायास ही अवतरित हो रहे हैं । आवश्यकता मात्र उन्हें हृदयंगम करने और कार्य रूप में परिणित करने भर की है । ●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मानुष्ठानों की आवश्यकता क्यों ?

जिस प्रकार मनुष्य में शरीर और प्राण के दो तत्व हैं, उसी प्रकार प्रत्येक पदार्थ का दृश्यमान स्वरूप और अदृश्य गुण होते हैं । जड़ के भीतर चेतन भी काम करता है। पदार्थ दीखता है, लेकिन उसका प्राण अदृश्य रहता है । स्थूल जगत के भीतर भी सूक्ष्म अदृश्य जगत है जो प्रायः आकाश में भरा रहता है । यह दृश्य की तुलना में अदृश्य असंख्य गुना शक्तिशाली होता है ।

ठण्डक, गर्मी और वर्षा ऋतुओं के अदृश्य प्रभाव से प्राणियों की शारीरिक हलचलों, गतिविधियों में भारी परिवर्तन होता है । बसन्त में न केवल शरीर में मन में भी उमंगें उठती हैं । परिस्थितियाँ तो ऋतु प्रभाव से बहुत कुछ प्रभावित होती हैं । इसे स्थूल प्रकृति का अदृश्य अनुदान कह सकते हैं । यही है वायुमण्डलीय प्रभाव क्षेत्र ।

वातावरण चेतनात्मक है । उसका प्राण प्रवाह के स्तर से सम्बन्ध है । सत्युग में ऐसा अदृश्य प्राण प्रवाह चलता था जिससे व्यक्तियों की भावना, मान्यता और आकाँक्षा प्रभावित होती थीं । गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता भरी रहती थी । चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में आदर्शवादिता का परिपूर्ण समावेश रहता था । यों इस दिशा में मानवी प्रयत्न भी चलते थे, पर उन्हें सफल बनाने में अदृश्य वातावरण की भूमिका, अनुकूलता का भी भारी योगदान रहता था । हवा पीछे की है तो स्वभावतः यात्रियों और वाहनों की गति बढ़ती और सरल रहती है । यह बात परिस्थितियों के सम्बन्ध में भी है । मनःस्थिति के आधार पर ही परिस्थितियाँ इतने बड़े करवट लेती हैं कि उसे भाग्यविधि, ईश्वर इच्छा जैसे नाम देने पड़ते हैं, इसलिए अदृश्य जगत से सम्बन्धित वायुमण्डल की तरह ही उसका दूसरा पक्ष—वातावरण भी ऐसा महत्त्वपूर्ण नहीं होता ।

इन दिनों अदृश्य जगत् के दोनों ही पक्ष अपने-अपने ढंङ्ग की विषाक्तता से भरते जा रहे हैं । धुआँ, कोलाहल, विकिरण की अवांछनीय अभिवृद्धि से शरीरों, हाथों, पदार्थों के लिए अनेकानेक प्रकार के भंवर खड़े हो रहे हैं और खण्ड प्रलय जैसी विभीषिका सामने खड़ी दीखती है । भय और आतंक से संसार भर में असुरक्षा, अनिश्चिता की आशंका संव्याप्त है । दूसरा वातावरण पक्ष और भी बुरी स्थिति में है । लोकमानस में संकीर्ण स्वार्थपरता, विलासिता, निष्ठुरता, प्रवंचना, उच्छृंखलता जैसे आसुरी तत्व अनायास ही भरते जा रहे हैं । कुछ समय पूर्व लोग परिस्थितिवश अपराध करते थे, अब परिस्थिति नहीं मनःस्थिति कारण बन गई है । सम्पन्नों में डकैती, बेईमानी, भरेपूरे गृहस्थों में व्यभिचारी प्रवृत्ति देखकर आश्चर्य होता है । धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों के नेता, प्रवक्ता उससे सर्वथा प्रतिकूल आचरण करते देखे जाते हैं जैसा कि वे जनसाधारण को उपदेश करते हैं । विद्वानों में, बुद्धिवादियों के निजी जीवन में अनपढ़, अशिक्षितों जैसे तो नहीं पर दूसरी तरह के इतने अन्धविश्वास और दुर्व्यसन पाये जाते हैं कि कई बार तो उनके विद्वान होने तक में सन्देह उठता है । व्यक्तित्व की दृष्टि से पिछड़े कहे जाने वाले लोगों की अपेक्षा प्रगतिशीलों में पाई जाने वाली निकृष्टता अधिक भारी, कष्टकारक और विनाशकारी है ।

ऐसा क्यों होता है ? इसका प्रत्यक्ष कारण तो शिक्षा, व्यवस्था, परम्परा, शासन, साहित्य, कला आदि में घुसी अनुपयुक्तता को भी कहा जा सकता है और उसके लिए राजनेताओं, मनीषियों को दोष दिया जा सकता है। गम्भीर पर्यवेक्षण करने पर यह खोट प्रचलन प्रवाह तक सीमित नहीं रहता, उसकी जड़ अदृश्य वातावरण में विषाक्तता उत्पन्न होती है और विषाक्त वातावरण से लोकमानस में असुरता निकृष्टता बढ़ती चली जाती है । यह एक कुचक्र है जो एक बार चल पड़ने पर टूटने का नाम नहीं लेता । अन्तरिक्ष में ग्रह-उपग्रह जब एक बार एक कक्ष में घूमने लगें तो फिर वे समयानुसार मरने पर ही विराम लेते हैं । मुर्गी से अण्डा, अण्डे से मुर्गी । बीज से वृक्ष, वृक्ष से बीज । नर से नारी, नारी से नर । समुद्र से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वर्षा, वर्षा से समुद्र की तरह एक गति चक्र है जो अपनी धुरी पर घूमने लगता है । अदृश्य वातावरण से लोकमानस और लोकमानस से अदृश्य वातावरण का भी अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है ।

इस कुचक्र को तोड़ने के लिए परमात्मा की तरह आत्मा को भी अपना उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है । सृजन सन्तुलन लड़खड़ाने पर सृजेता अवतार लेते और अनियन्त्रित स्थिति को नियन्त्रण में लाने के लिए प्राणवान प्रवाह उत्पन्न करते हैं । यह अवतार प्रकरण की सूक्ष्म प्रक्रिया का परिचय हुआ । इस सुधार प्रयोजन का दूसरा पथ मनुष्य कृत है जिसे जागृत आत्मायें ऐसी विषम बेला में आपत्ति धर्म की तरह अपनाती और सृष्टा के प्रयोजन में हाथ बटाती हैं, उन्हें अध्यात्म उपचारों का आश्रय लेना पड़ता है । विशालकाय सामूहिक धर्मानुष्ठान प्रायः इसी प्रयोजन के लिए किये जाते हैं ।

इस संदर्भ में इतिहास की कुछ घटनायें दृष्टव्य हैं। लंका विजय में असुर तो मरे पर अदृश्य वातावरण में विषाक्तता भरी रहने से लक्ष्य का सामयिक समाधान न हुआ, अदृश्य का संशोधन भी होना चाहिए । इसके लिए भगवान राम ने दश अश्वमेधों का आयोजन किया । उस उपक्रम की साक्षी काशी का दशाश्वमेध घाट अब भी देता है । कुरुक्षेत्र में महाभारत संग्राम के उपरान्त कंस, दुर्योधन, जरासन्ध से पीछा तो छूटा पर अदृश्य में विषाक्तता भरे रहने से स्थाई समाधान नहीं दीख पड़ा । इसके लिए अध्यात्म उपचार का आश्रय लिया गया और विशाल रूप में राजसूय यज्ञ की भी ऐसी ही अध्यात्म परक योजना बनाई गई जैसी कि महाभारत की मारकाट के निमित्त बनी थी । इस प्रसंग में जो कमी रही थी उसकी पूर्ति परीक्षित पुत्र जन्मेजय ने नाग यज्ञ के रूप में सम्पन्न की थी ।

धर्मानुष्ठानों से अदृश्य वातावरण की संशुद्धि के और भी अगणित प्रमाण उदाहरण इतिहास - पुराण में भरे पड़े हैं । अनेक ऋषियों के रक्त संचय से घड़ा भरा गया था । उससे सीता जन्मी और तमिस्रा की स्थिति बदली । देवता असुरों से जब भी हारे तब अपनी विशृङ्खलता की समस्या को लेकर संयुक्त रूप से प्रजापति के पास गये । एक स्वर में बोले । ऐसी ही पुकार सुनी भी जाती है । प्रजापति ने उन्हीं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति एकत्रित करके दुर्गा को सृजा और उसने देखते-देखते संकट को निरस्त कर दिया। इन कथाओं में प्रकारान्तर से इस सिद्धान्त का प्रतिपादन है कि देव मानवों को संयुक्त रूप से अध्यात्म पुरुषार्थ करके अदृश्य वातावरण की प्रतिकूलता का शमन करके समाधान करके अनुकूलता उत्पन्न करनी चाहिए ।

सामूहिकता की प्रतिक्रिया

सूक्ष्म स्तर के विश्व-व्यवस्था से जुड़े हुए धर्मानुष्ठान सदा सामूहिक ही होते रहे हैं । कितने धर्मानुष्ठान तो निजी स्तर के भौतिक या आध्यात्मिक लाभ के लिए किये जाते हैं, पर जब उन्हें व्यापक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त करना होता है तो सामूहिक साधना की ही व्यवस्था करनी पड़ती है । कुंभ पर्व जैसे ज्ञान यज्ञ इसी निमित्त आरम्भ किये गये थे कि उस अवसर पर धर्मानुष्ठान चलें और उससे लोक-शिक्षण एवं अदृश्य संशोधन के दोनों ही कार्य सम्पन्न होते रहें। पर्व स्नानों के विशेष अवसरों पर तीर्थ समारोहों की परम्परा भी इसी प्रयोजन के लिए प्रयुक्त होती रही है । तीर्थों में ऐसा ही धर्मानुष्ठानों का क्रम चलते रहने के कारण उनकी गरिमा समझी जाती रही है । आज तो हर क्षेत्र में विकृतियों का ही साम्राज्य छाया हुआ है, पर भूतकाल में जब अध्यात्म को विज्ञान के समकक्ष प्रामाणिक माना जाता था, तब सामूहिक अनुष्ठानों का महान् महत्त्व और प्रभाव सर्वत्र स्वीकारा जाता था । उस हेतु समय-समय पर, स्थान-स्थान पर अभीष्ट आयोजन होते रहते थे । आज तो उनका एक प्रकार से अकाल ही पड़ गया है।

सामूहिकता का अपना महत्त्व है । समूहगत मनुष्यों की एक दिशा में प्रवाहित होने वाली मानसिक धारायें जब मिलती हैं तो उनका सूक्ष्म जगत में एक प्रवाह बन जाता है । यही उपक्रम सामूहिक धर्मानुष्ठानों, पर्वों पर एकत्रित जन-समूह से भी सम्भव है । उस संयुक्त भाव-शक्ति से जो तरंगें उत्पन्न होती हैं, वे अपने साथ अनेको को साथ लेकर आँधी की तरह आसमान में उड़ती दिखलाई पड़ती हैं । सूक्ष्मदर्शी जानते हैं कि जन-समुदाय की भावभरी मनः स्थिति जब कभी एकत्रित होती है तो उसकी प्रतिक्रियायें असाधारण प्रतिफल एकत्र करती हैं । पुलों पर चलते समय मिलिट्री के जवानों को कदम न मिलाने का निर्देश होता है, क्योंकि सामूहिक ताल की शक्ति से पुल ध्वस्त हो सकते हैं । होली के अवसरों पर सामूहिक गायनों से निर्जन स्थल भी प्रफुल्लता से ओत-प्रोत हो उठते हैं । प्रातः सायं मन्दिरों में होने वाली आरती, विद्यार्थियों की सामूहिक प्रार्थना में भी यही विशेषता रहती है कि संयुक्त मन, संयुक्त भाव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवाह से उत्पन्न शब्द शक्ति उच्चारण कर्त्ताओं से लेकर अन्य असंख्यों के समग्र वातावरण को प्रभावित करने में बिशेष रूप से फलप्रद होती है ।

ध्वनि शक्ति के सन्दर्भ में जो शोध कार्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में चल रहा है, उससे सामूहिक उच्चारण की प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में नये तथ्य सामने आये हैं । एक निष्कर्ष यह निकला है कि संसार के ५० प्रतिशत व्यक्ति भी यदि सक्रिय हों तो वे शब्दों तथा ध्वनियों द्वारा ३ घण्टे में छः हजार खरब वाट विद्युत शक्ति पैदा करते हैं, जो भारत में पैदा की जाने वाली कुल ऊर्जा से ८ गुना ज्यादा है । सम्पूर्ण विश्व में इस ऊर्जा से घण्टों प्रकाश किया जा सकता है ।

यह शब्द शक्ति की एक प्रकार की प्रतिक्रिया हुई। इसकी दूसरी प्रतिक्रिया श्रोता के मस्तिष्क को प्रभावित करती है, जो दो प्रकार की होती है-पहला, मुख से शब्द निकलने से पूर्व वक्ता के मस्तिष्क से कुछ उसी प्रकार की विद्युत-चुम्बकीय लहरें निकलती हैं जिन्हें श्रोता का मस्तिष्क ग्रहण करने का प्रयत्न करता है । दूसरा—उच्चारित शब्द वायु-कम्पनों के माध्यम से विद्युत संचार के रूप में कर्णरन्ध्रों से होते हुए मस्तिष्क तक पहुँचकर विभिन्न आवेग उत्पन्न करते हैं । अपमान सूचक शब्द कहने से दूसरों को किस तरह क्रोध आता है एवं फलस्वरूप अनर्थ होता है, इसका उदाहरण द्रौपदी के थोड़े शब्दों से महाभारत का हो जाना है । दुःखद शोक-सन्ताप की घटना सुनकर कैसा बुरा हाल हो जाता है । भावनाओं को उभारने तथा तरंगित करने का काम संगीत कितनी अच्छी तरह करता है, यह सर्वविदित है ।

इसकी यही शक्ति जब मंत्र-विज्ञान के माध्यम से सामूहिक धर्मानुष्ठानों के निमित्त प्रयुक्त होती है, तो फलश्रुति वातावरण परिशोधन के रूप में सामने आती है। सितार के तारों पर क्रमबद्ध उँगुलियाँ रखने से जिस तरह विभिन्न प्रकार की स्वर-लहरियाँ निकलती हैं उसी प्रकार शब्दों के उच्चारण का एक लयबद्ध क्रम रहने से उसमें भी विशेष प्रकार के, विशेष शक्तिशाली कम्पन्न उत्पन्न होते हैं । मन्त्रों में अक्षरों के क्रम तथा उनके उच्चारण की विशेष विधि-व्यवस्था का ही अधिक महत्त्व है । कण्ठ, तालु, दाँत, होंठ, मूर्धा आदि जिन ध्यानों से शब्दोच्चारण होता है उनका सीधा सम्बन्ध मानव शरीर के सूक्ष्म संस्थानों से है । षटचक्र, उपत्यिका एवं दिव्य नाड़ियों, ग्रन्थियों का एक सूक्ष्म संस्थान है, जिनसे हमारे मुखयन्त्र के तार जुड़े हैं। जब मन्त्र गुंफनों का प्रभाव उक्त संस्थानों पर पड़ता है, तब कुछ अतिरिक्त शक्ति तरंगों का प्रवाह चल पड़ता है, जो मन्त्र-विज्ञानी को लाभान्वित करता और उसकी प्रस्तुत क्षमताओं को जगाता है । जब वे कम्पन बाहर निकलते हैं तो वातावरण को प्रभावित करते हैं। ये कम्पन सूक्ष्म जगत में अभीष्ट परिस्थितियों का सृजन करते हैं और व्यक्ति को प्रभावित करना हो, तो उस पर भी असर डालते हैं ।

यह शब्द-शक्ति तब और भी अधिक प्रखर हो उठती है, जब उसका भावनात्मक तारतम्य एवं उच्चारण का प्रवाह सामूहिकता को अपना ले । वेद मन्त्रों को सामगान के स्वरक्रम में गाने वाले उद्गाता अपने उपक्रम से चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करते हैं । यज्ञानुष्ठानों में भी यही शब्द सहकार एक महत्त्वपूर्ण तथ्य होता है और उसका प्रभाव भी असाधारण ही होता है ।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए आर्ष वाङ्मय में सामूहिकता पर इतना जोर दिया गया है । ऋग्वेद और अथर्ववेद के सामनस्य सूक्तों में इसी कारण सामूहिक अनुभूति और सामूहिक कामनाएँ ही व्यक्त हुई हैं । जैसे—

"सं गच्छध्वं, सं वद्ध्वं स वो मनांसि जनताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते ।।"

अर्थात्—हम सब साथ-साथ चलें, साथ-साथ बात-चीत, विचार-विमर्श करें और एक से मनोभावों से युक्त रहें ।

"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो, यथा वः सुसहासति ।।

अर्थात्—हमारी चित्तवृत्तियाँ समान हों, हृदय और मन समान हों, जिससे सौहार्द्र से रह सकें ।

वातावरण का परिशोधन प्रज्ञा पुरश्चरण से

यज्ञ इसी चिन्तन का व्यावहारिक स्वरूप है । अध्यात्म उपचारों में इसे मूर्धन्य माना गया है । इसके दो पक्ष हैं—एक मन्त्रोच्चार, दूसरा हव्य पदार्थों का यजन । दोनों के मिलने से ही समग्र अग्निहोत्र बनता है । दोनों की प्रकृति और प्रेरणा एक जैसी है । दोनों का प्रवाह एक ही दिशा धारा में बहता है । प्रज्ञा अभियान द्वारा आरम्भ किये गये प्रज्ञा पुरश्चरणों में इन दोनों ही पक्षों का समान समावेश है । गायत्री को माता और यज्ञ को पिता कहा गया है । दोनों में एक रूपता तो नहीं है, पर एकता आवश्यक है । दोनों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक प्राण दो शरीर कहा जा सकता है । गायत्री उपासना में भी एकाकीपन नहीं है । उसका स्वरूप और प्रयोग इस महामन्त्र के "नः" शब्द में छिपा हुआ है । नः का अर्थ होता है—"हम सब" सद्बुद्धि की सविता देवता से याचना करते समय साधक अपना उद्देश्य स्पष्ट करता है और कहता है कि यह अनुदान मुझ अकेले को देने से काम न चलेगा । बात तो तभी बनेगी जब यह अनुकम्पा हर किसी को प्राप्त हो । जिस तरह परिवार का मुखिया स्वस्थ्य हो पर शेष घर वाले बीमार हों तो मुखिया की स्वास्थ सुरक्षा भी उसे किसी तरह की सुख-शान्ति प्रदान न कर सकेगी विश्व-व्यवस्था भी ऐसी ही है जिसमें सुख-सुविधायें परस्पर विभक्त होनी चाहिये । इस तरह की भावनायें अपने आप में ही प्रसन्नतादायक होती हैं, व्यवहार आनन्द की तो कल्पना कठिन है ।

यज्ञ विशुद्ध रूप से सामूहिक विधि-व्यवस्था है । उसमें यजमान, यजमान पत्नी, ब्रह्मा आचार्य अध्वर्यु, उदगाता आदि की प्रमुखता रहती है । इसके अतिरिक्त स्वस्तिवाचन, देव पूजन, पूर्णाहुति, भस्म धारण, घृत-अवघ्राण, क्षमाप्रार्थना, आरती, प्रदक्षिणा आदि में अनेकानेक अन्य व्यक्ति भी सम्मिलित होते हैं। जल-यात्रा से लेकर कुण्ड मण्डप निर्माण तक की अनेक क्रिया-प्रतिक्रियाएँ तथा प्रयुक्त होने वाली अनेकानेक वस्तुयें ऐसी हैं जिन्हें एक व्यक्ति के बलबूते नहीं संजोया जा सकता है । उस पूरी प्रक्रिया में आदि से अन्त तक सामूहिकता का ही समावेश है। वह पुण्यकृत समूचे वायुमण्डल का वातावरण का परिशोधन करने के लिये किया जाता है। अपनी परिश्रम की कमाई को अग्निहोत्र के माध्यम से वायुभूत बनाकर जन-कल्याण के लिये बिखेर देना यही तो यज्ञ है । इसमें लोकहित ही प्रधान है । जहाँ परमार्थ होगा, वहाँ प्रकारान्तर से स्वार्थ तो बिना प्रयत्न के ही सधता चला जायेगा ।

प्रस्तुत महापुरश्चरणों से ब्रह्माण्ड में व्याप्त कुसंस्कारों के शमन और शक्ति आकर्षण की एक ऐसी विज्ञान सम्मत प्रक्रिया उत्पन्न होगी जिससे निकटवर्ती समय में ही मानवीय प्रगति और उसकी सुख-शान्ति की परिस्थितियाँ खिंचती हुई चली आयेंगी। वस्तुतः युग की अपनी कोई सत्ता नहीं है, वह मात्र घटनाओं का अच्छे-बुरे सामूहिक आचरण का इतिहास होता है । यदि वह संसार आकर्षित किये जा सकें तो युग परिवर्तन की आवश्यकता स्वचालित प्रक्रिया की तरह अपने आप पूर्ण होती चली जायेगी । अवतारों ने इसी सत्य को पहचाना था । यह कहें—अथवा उन्होंने सही समय पर अवतार लिया, यह दोनों तथ्य एक ही हैं । ज्योतिषविज्ञान की दृष्टि से यही प्रज्ञावतार का समय है अतएव प्रस्तुत प्रेरणाओं को लोक-मंगल की सनातन परम्परा का ही अङ्ग मानना चाहिये ।

पिछले दिनों जिन यज्ञों की व्यवस्थायें सारे देश भर में हुई थीं उनका कोई पृथक् अस्तित्व नहीं था, वे इस पुरश्चरण का अङ्ग मात्र थे । जप का दशांश हवन करने का विधान है । साधना विज्ञान के इसी पक्ष का स्पर्श कर २५ कुण्डीय यज्ञों की शृंखला चलाई गई । इन्हें महापुरश्चरणों का स्थानीय समापन समझना चाहिये । प्रधानता महापुरश्चरण की ही है, अतएव उसमें अधिक से अधिक लोगों को अधिक समय देकर सम्मिलित होने की प्रेरणा दी जानी चाहिये।

यह तथ्य हर किसी को विदित होना चाहिए कि निजी समस्याओं के लिए निजी परिस्थितियों का अनुकूल होना ही पर्याप्त नहीं होता, वरन् इर्द-गिर्द की परिस्थितियों को सुधारने, बदलने की बात भी सोचनी पड़ती है । चारों ओर गन्दगी भरी रहे तो स्वास्थ्य के नियम पालने वाला भी बीमार पड़े बिना न रहेगा । गुण्डों से भरे मुहल्ले में किसी सज्जन को भी शान्ति से रह सकने का सुयोग नहीं मिल सकता है । चारों ओर आग लगे तो अपना घर भी कहाँ बचेगा ? इसलिए दूरदर्शिता इसी में है कि न केवल अपना शरीर परिवार सम्भाला जाय, वरन् संव्याप्त वातावरण के सम्बन्ध में भी गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय । अस्तु सामूहिक धर्मानुष्ठान की महत्ता इसी सन्दर्भ में अनुभव की जानी चाहिए और उत्साहपूर्वक उसे अपनाया जाना चाहिये ।

भाव समन्वय और सामूहिक धर्मानुष्ठान की इस पुनीत प्रक्रिया के सहारे उस महान् प्रयोजन की पूर्ति हो सकती है जिसके सहारे वायुमण्डल और वातावरण की विषाक्तता हट सके । साथ ही उज्ज्वल भविष्य के-प्रज्ञा युग के अवतरण का सुयोग बन सके।

रजत जयन्ती वर्ष में युग शक्ति गायत्री का अवतरण तथा उस महाशक्ति की अभ्यर्थना में प्रारम्भ की गई प्रज्ञा-पुरश्चरणों की शृंखला के पीछे कोई नया सिद्धान्त और नई परम्परा नहीं है, वरन् आर्ष परम्परा का ही एक असाधारण प्रयोग है, जिसके माध्यम से सृष्टा जगत को धर्मनिष्ठ और स्वर्ग तुल्य बनाने का अपना संकल्प भी पूर्ण करने जा रहे हैं साथ ही इस देश और यहाँ के जातीय जीवन में एक अभिनव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामर्थ्य भी पैदा करने का प्रयोजन पूर्ण कर रहे हैं । इसे ब्रह्म बेला का ईश्वरीय निनाद समझा जाये और इस महान् प्रयोजन की पूर्ति में सम्पूर्ण निष्ठा के साथ जुटा जाय तो यह स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों से कम त्याग और बलिदान की बात नहीं होगी । पराधीनता के पाप से मुक्ति दिलाना एक महत्त्वपूर्ण कार्य था, भग्न राष्ट्र का पुनर्निर्माण उससे भी बड़ा कार्य है । दैवी अनुग्रह उसके लिए स्वयं आ प्रस्तुत हुआ है । अब अपनी-अपनी बात है कि उसे प्राप्त करने का पुरुषार्थ कौन लोग करते हैं और कौन लोग अमृत वर्षा के समय भी औंधे मुँह पड़े पात्र की तरह इस अलभ्य अवसर से चूककर रह जाते हैं ?

प्रज्ञा पुरश्चरण का स्वरूप और सामर्थ्य

प्रज्ञा पुरश्चरण के निम्नलिखित चार चरण हैं—

(१) प्रातः सूर्योदय के समय पाँच मिनट मौन मानसिक गायत्री जप, प्रकाश का ध्यान, उस कृत्य का प्रतिफल, अदृश्य अनुकूल के लिए अन्तरिक्ष में बिखेरने के संकल्प के रूप में । इसे जो जिस भी स्थिति में जहाँ भी हो वहाँ कर सकता है । उसमें स्नान जैसा कोई प्रतिबंध नहीं है।

(२) महीने में एक बार किसी भी तिथि का क्रम बनाकर प्रज्ञा अग्निहोत्र, पाँच दीपक, पाँच-पाँच अगरबत्तियों के पाँच गुच्छक, चौबीस बार गायत्री मन्त्रों का सामूहिक पुरश्चरण, उपस्थित लोगों के मस्तिष्क पर चन्दन का तिलक । इस कृत्य की पन्द्रह मिनट में पूर्णता ।

(३) प्रज्ञा उद्‌बोधन, अग्निहोत्र के उपरान्त पन्द्रह मिनट युग संगीत एक घण्टा प्रज्ञा प्रवचन । इसके लिए प्रज्ञा अभियान के किन्हीं चुने हुये लेखों को भावाभिव्यक्ति के साथ सुनाया जाना । इसमें एक घण्टा।

इस प्रकार पन्द्रह मिनट में अग्निहोत्र, पन्द्रह मिनट युग संगीत और एक घण्टा प्रज्ञा प्रवचन, डेढ़ घण्टे का समय मासिक आयोजन में लगता है । हर काम समय पर आरम्भ किया जाय ।

प्रज्ञा पुरश्चरण का केन्द्र स्वाध्याय मण्डल के रूप में स्थापित किया जाय । यह बिना इमारत के प्रज्ञा संस्थान छोटे रूप में उसी उद्देश्य की पूर्ति करते हैं, जिसका कि गायत्री शक्ति पीठें, प्रज्ञा पीठें-बड़े रूप में सम्पन्न कर रही हैं । प्रज्ञा युग के अवतरण में इन केन्द्र संस्थानों की महती भूमिका सुनिश्चित है ।

प्रत्येक प्रज्ञा परिजन को इस नितान्त सरल, किन्तु अतीव महत्त्वपूर्ण धर्मानुष्ठान में भागीदार बनने के लिए कहा गया है और आशा, अपेक्षा की गयी है कि वे अपने सम्पर्क क्षेत्र में न्यूनतम पाँच और इसके भागीदार बनायें ।

वर्तमान २४ लाख प्रज्ञा परिजनों के द्वारा किये गये इस अभूतपूर्व महापुरश्चरण में प्रतिदिन २४ करोड़ जप सम्पन्न होगा । लक्ष्य इसे इसी वर्ष पाँच गुना बढ़ा देने का है ताकि हर दिन १२० करोड़ जब नित्य नियमित रूप से सम्पन्न होता रहे । साथ ही उसी अनुपात में उसका अपेक्षित अग्निहोत्र भी साथ-साथ चलता रहे । इस शुभारम्भ के साथ-साथ युग परिवर्तन के लिए आवश्यक अनेकानेक महत्त्वपूर्ण दृश्य और अदृश्य उपक्रम सम्मिलित होते रहे हैं जिनकी कि चर्चा अन्यत्र की गयी है ।

प्रज्ञा पुरश्चरण शृंखला का आयोजन वातावरण में सूक्ष्म परिवर्तन के लिए, प्रज्ञावतार के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि निर्मित करने के लिए किया जा रहा है । कहना नहीं होगा कि यह अवतरण परिवर्तन सामाजिक स्थिति में क्रान्तिकारी बदलाव प्रस्तुत करेगा। व्यक्तिगत रूप से हम स्वयं भी उस परिवर्तन प्रक्रिया में सहयोगी और भागीदार बनें । इसके लिए अपने विकारों और दुष्प्रवृत्तियों का शोधन करें । महापुरश्चरण और गायत्री यज्ञ के साथ देव दक्षिणा का क्रम इसीलिए जोड़कर रखा गया है ।

सन् ५८ में मथुरा में सहस्र कुण्डी गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ था । उसमें प्रायः चार लाख धर्मप्रेमी एकत्रित हुए थे । अदृश्य वातावरण को सदाशयता के पक्ष में प्रभावित एवं प्रवाहित करने के लिए जहाँ समर्थ आध्यात्मिक प्रयोग सम्पन्न हुआ, वहाँ एक प्रत्यक्ष प्रक्रिया भी सम्पन्न हुई-गायत्री परिवार के अभिनव शुभारम्भ की । नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति का शंखनाद उसी अवसर पर हुआ और सर्वत्र सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन एवं दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के अति महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम सुनियोजित रूप से चलने लगे ।

इसके उपरान्त गायत्री शक्ति पीठों की स्थापना के साथ क्षेत्रीय गायत्री यज्ञों की शृंखला चलती रही । इसका अन्तरिक्ष पर कितना प्रभाव पड़ा होगा, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, पर यह देखा गया कि लोक-शिक्षण के प्रयास ने चमत्कार दिखाया और हजारों व्यक्ति अपने-अपने कार्यक्षेत्र में समयदान, अंशदान नियोजित करते हुए सृजनात्मक एवं सुधारात्मक कार्यक्रम में निरत रहने लगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ ही वर्ष पीछे की बात है, पाकिस्तान के अंग बंगलादेश में प्राय: एक करोड़ शरणार्थी बंगलादेश से भारत आ घुसे थे । लौटाने का अनुरोध करने पर लड़ाई की धमकियाँ ही नहीं दी गईं वरन् हिमायती अमेरिका के अणु-आयुधों से लदे जलयान भारत की सीमा पर आ धमके । सभी आतंकित थे । उन दिनों गायत्री परिवार ने एक सामूहिक महापुरश्चरण किया था । उसके सदस्यों में हर दिन चौबीस लाख प्रतिदिन का साधना क्रम चलाया था । परिणाम आश्चर्यजनक हुआ । मँडराते बादल टल गए । उतना ही नहीं बंगलादेश स्वतन्त्र हुआ और शरणार्थियों की समस्या हल हुई । भारत विपत्ति में फँसने के स्थान पर श्रेयाधिकारी बना ।

उस घटना को पाठक भूले नहीं हैं, जब भटका हुआ महाभयंकर उपग्रह स्काईलैब भारत के इर्द-गिर्द गिरने वाला था । भय और आतंक सर्वत्र छाया हुआ था । अमेरिकी सरकार ने आश्वासन तक दिया था कि जो क्षति होगी उसकी पूर्ति हम करेंगे ।

उस अवसर पर इसी संकट के निराकरण के लिए गायत्री परिवार के सदस्यों ने सामूहिक गायत्री पुरश्चरण किया । विपत्ति टल गई । उपग्रह आस्ट्रेलिया के समीप समुद्र में एक सुनसान क्षेत्र में गिरा । किसी की राई भर हानि न हुई ।

आपत्तिकाल घोषणा के समय भी आतंक का वातावरण बना था । उस समय भी ऐसा ही सामूहिक पुरश्चरण किया गया और अचम्भा तब हुआ, जब वे दिन जल्दी ही समाप्त हो गये ।

एक पुरश्चरण इन दिनों (सन् १९८४ में) चल रहा है । इस वर्ष के आरम्भ में ही हर गायत्री परिजन को एक माला नित्य जप करने के लिए कहा गया था। उसका कारण तो नहीं बताया गया, किन्तु इतना अवश्य कहा गया कि यह वर्ष अपने देश की प्रगति में भारी बाधक है और उसे टालने के लिए हमें आध्यात्मिक अस्त्र उठाना चाहिए । परिजनों ने उस बात पर पूरा विश्वास किया और इस नये अनुष्ठान को परिपूर्ण श्रद्धा के साथ आरम्भ कर दिया । इस वर्ष देश पर क्या बीती ? हम सभी जानते हैं । असम की घटनाओं का सभी को स्मरण है। पंजाब की गत डेढ़ वर्ष से चली आ रही अराजकता को कौन भूल सकता है ? इस सन्दर्भ में मामला बढ़कर कहाँ से कहाँ तक पहुँचा ? इसे भुलाया नहीं जा सका है । परिस्थिति यहाँ तक पहुँचेगी इसकी किसी को कल्पना भी नहीं थी ।

इस आकस्मिक विप्लव को यदि और कुछ दिन सुलगने दिया गया होता तो स्थिति विस्फोटक होती । घटनाचक्र इस तेजी से घूमा कि किसी सामूहिक प्रयत्न की गुंजायश नहीं थी । इस अवसर पर एक दैवी चेतना के निर्देश पर एक प्रज्ञानिष्ठ साधक ने एकाकी ऐसा महाव्रत ठाना जिसकी किसी को सम्भावना तक न थी। प्रज्ञा तन्त्र के संचालक ने एकान्तवास, मौन और कठिन व्रत उपवास धारण कर लिया । रात्रि तक किसी सगे स्वजन तक को इस प्रकार के आरम्भ की भनक न थी । सभी हैरत में थे कि सूत्र-संचालक कभी कोई आकस्मिक कदम नहीं उठाते । जो करना होता है उसका कारण और समय बता देते हैं । चौबीस दिन के जल उपवास का कारण और समय उन्होंने सभी अपने विरानों तक को बता दिया था, पर इस बात का ऐसा अचम्भा हुआ कि इतना कठोर कदम उठाया । जिनके कानों भनक पड़ी है, उन्होंने जाना है कि पंजाब में भारी अनिष्ट की आशंका थी । उसे ही नहीं, देशव्यापी उत्पात को रोकने के लिए सामूहिक कदम उठाने की सम्भावना थी । उन्होंने अकेले ही पूरी सामर्थ्य झोंक दी और अंगद जैसा पैर गाढ़ा कि रोकना या प्राण देना । इस बार भी वैसा ही चमत्कार सामने आया । प्राण नहीं देने पड़े और संकट एक सीमा तक टल गया । इस प्रयास और कारण की चर्चा अभी तक कहीं नहीं की गई है । इतने पर भी यह नहीं समझना चाहिए कि विपत्ति से राष्ट्र उबर गया ।

अन्यान्य छोटे-बड़े आध्यात्मिक एवं सामूहिक प्रयासों की चर्चा करना यहाँ अनावश्यक होगा, पर इतना कहा जा सकता है कि पिछले वर्षों में दीप-यज्ञों की शृंखला ने अतीव सस्ता और नितान्त सरल संगठन कार्यक्रम धर्म चेतना वाले जन साधारण को दिया है । उसके साथ, लाखों लोग जुड़े हैं और प्रस्तुत धर्म चेतना के सहारे आत्म परिष्कार और नये सृजन प्रयोजनों में लगे भावनाशील लोगों की संख्या एक करोड़ तक जा पहुँची है ।

युगसंधि महापुरश्चरण : प्रयोजन और प्रयास

अब उन पिछले चरणों से कहीं अधिक महत्त्व का और कहीं अधिक व्यापक चरण है-''युग संधि महापुरश्चरण का'' । यह विगत आश्विन नवरात्रि (सन् १९८८)से आरम्भ हुआ है और सन् २००० की चैत्र नव रात्रि तक चलेगा । इक्कीसवीं सदी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरम्भ में ही वे लक्षण प्रगट होने की आशा और सम्भावना है जिनसे यह अनुमान लगाया जा सके कि उज्ज्वल भविष्य के लक्षण ब्रह्ममुहूर्त में प्रगट होने वाले अरुणोदय की तरह परिलक्षित होने लगेंगे ।

बीसवीं सदी के अन्तिम बारह वर्ष कई दृष्टियों से कठिनाइयों से भरे माने जाते हैं । इतने पर भी यह विश्वास करने का कारण है कि असंख्यजनों की प्रसुप्त दिव्य चेतना जागेगी और वह प्रस्तुत व्यवधानों के निरस्त करने से लेकर स्वर्णिम संभावनाओं के अवतरण हेतु अग्रसर होगी और अपने पराक्रम से ऐसा कुछ कर सकेगी जिससे अवांछनीयता का अन्त और सुख संभावनाओं का अवतरण सम्भव हो सके।

शान्तिकुँज हरिद्वारा में अगले बारह वर्षों तक इस साधना का उपक्रम जारी रहेगा । गायत्री जप अनुष्ठान, स्वर्णिम सविता का ध्यान, अग्निहोत्र और अर्द्ध उपवास के आधार पर चलने वाली यह साधना अपने प्रतिष्ठा क्षेत्र की प्रयोगशाला में ऐसे प्रवाह प्रवाहित कर सकेगी जो अदृश्य अन्तरिक्ष को अनुकूलता की दिशा में गति देने से लेकर साधनारत व्यक्तियों को भी परिष्कृत व्यक्तित्व के निर्माण में प्रेरणा दे सके ।

केन्द्र तो संकल्पित स्थान पर ही रहेगा, पर उसके साथी सहचर आयोजन साप्ताहिक सत्संग के रूप में अनेकानेक स्थानों पर होते रहेंगे । उनकी संख्या आरम्भ में हजारों से लेकर अन्त तक लाखों में पहुँच सकती है । बीसवीं सदी के अन्त में इसकी पूर्णाहुति भी होगी जिसे अभूतपूर्व स्तर का समझा जा सकेगा ।

युग सन्धि के इस ऐतिहासिक पर्व पर करने के लिए अनेकों काम सामने पड़े हैं । उनका विशेष उत्तरदायित्व अग्रिम पंक्ति में खड़े होने वाली जागृत आत्माओं का है । उन्हें अपने को बदलना चाहिए ताकि दूसरे उन्हें देखकर बदलें । उन्हें समय की आवश्यकता देखते हुए लोकहित की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने को खपाना चाहिए ताकि उनके पीछे अन्य अनेको चलें । अपने स्थान में, अपने तत्वावधान में इस महान् पुरश्चरण को गतिशील बनाने के लिए कुछ न कुछ प्रदान करने का सभी परिजनों से अनुरोध है । वह देखने में किसी को भले ही कठिन लगता हो, वस्तुत वह: है अति सरल, सामयिक और श्रेयस्कर ही ।

युग संधि महापुरश्चरण सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य

प्रस्तुत विषम बेला में गायत्री परिवार द्वारा युग संधि महापुरश्चरण की व्यवस्था बनाई है । यह अब से लेकर सन् २००० तक चलेगा । सन् २००० की गायत्री जयन्ती पर इसकी पूर्णाहुति होगी । इसके भागीदार मात्र जप संख्या ही पूरी नहीं करेंगे वरन् उस प्रयोग में अधिकाधिक निष्ठा का भी समावेश करेंगे । सर्वविदित है कि उपासना देवता की छुटपुट पूजा-पत्री करके लम्बी-चौड़ी मनोकामनाएँ पूरी करने वाली विडम्बना नहीं वरन् आत्मबल उभारने वाली एक विशिष्ठ पद्धति है । इस स्तर पर खरी उतरने वाली साधनाएँ ही चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करती हैं । निष्ठावान् साधनों से ही सिद्धि उपलब्ध होती है । युग संधि महापुरश्चरण के प्रत्येक भागीदार को शौकिया मनमौजी अस्त-व्यस्त, भजन-पूजन करके मन समझाने की स्थिति में नहीं रहना होगा, वरन् जो कुछ भी थोड़ा या बहुत करना है उसमें परिपूर्ण नैष्ठिकता का समावेश करना है । उसी मार्ग पर चलते हुए आत्मशक्ति का विकास एवं आत्म कल्याण का लक्ष्य पूरा होता है । नैष्ठिक साधनाएँ ही गंगावतरण से लेकर युग अवतरण जैसे विशिष्ट अवसरों पर कारगर सिद्ध होती हैं ।

युग संधि महापुरश्चरण में ऐसे लोग ही योजक बनेंगे जो निष्ठा का महत्त्व समझते हैं और प्रयोजन का वजन समझते हुए उस स्तर का संकल्प सिद्ध कर सकते हैं । इन दिनों उन्हीं को खोजा जा रहा है जो मिल रहे हैं, उनसे इस युग साधना में सम्मिलित होने का अनुरोध किया जा रहा है।

युग परिवर्तन का प्रयोजन पूरा करने में प्रधानतया आत्म-शक्ति का ही प्रयोग होगा। उसका उत्पादन वैयक्तिक एवं सामूहिक दोनों ही स्तरों पर आवश्यक है। युग शिल्पियों को अगले दिनों बड़े काम करने हैं, इसलिए उनमें बड़ी सामर्थ्य भी होनी चाहिये, आत्म-शक्ति ही युग-शक्ति बनने जा रही है। यह कार्य धन-बल, बुद्धि-बल, श्रम-बल के सहारे नहीं आत्मबल के सहारे ही सम्पन्न होता है। इसलिए सृजन शिल्पी इस समर्थता के धनी होने चाहिए। युग-संधि-अनुष्ठान में सम्मिलित होने वाले यह समर्थता अधिक सरलतापूर्वक अधिक मात्रा में उपार्जित करके व्यक्तिगत रूप से भी लाभान्वित हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में निष्ठावान् उपासकों द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया गया सामूहिक पुरश्चरण पुरुषार्थ अदृश्य वातावरण में भरी हुई विषाक्तता का परिशोधन करने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होगा। प्रतिकूलताओं को अनुकूल बनाने में प्रस्तुत महापुरश्चरण की उपयोगिता चमत्कारी होगी।

युग-संधि महापुरश्चरण में सम्मिलित होने वाले साधकों को नैष्ठिक कहा जायगा। नैष्ठिक इसलिए कि उन्हें निर्धारित उपासना में ढीलपोल नहीं बरतनी है, पर संकल्प के निर्वाह के प्रति निष्ठावान् रहने और उसके परिपालन में अनुशासन का पालन भावनापूर्वक करने की आवश्यकता पड़ेगी।

नैष्ठिक सदस्यों को जिन अनुशासनों का पालन करना होगा वे निम्नलिखित हैं—

(१) हर दिन न्यूनतम गायत्री महामन्त्र की पाँच मालाओं का जप।

(२) प्रातः पन्द्रह मिनट प्राण संचार की ध्यान धारणा।

(३) गुरुवार या रविवार को बिना नमक का भोजन, ब्रह्मचर्य एवं दो घण्टे का मौन।

(४) महीने में न्यूनतम एक बार चौबीस आहुतियों का हवन।

(५) आश्विन और चैत्र नवरात्रियों में गायत्री अनुष्ठान।

यह व्यक्तिगत रूप से सम्पन्न हो सकने वाला अनुक्रम हुआ। इसके अतिरिक्त नैष्ठिक उपासना का एक प्रयत्न यह भी करना पड़ेगा कि वह अपने सम्पर्क क्षेत्र में दस सामान्य गायत्री उपासक बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे। लक्ष्य दस का रखें एवम् कम बन पड़े तो भी काम चलेगा। प्रयास यह संख्या अधिकाधिक बढ़ाने का होना चाहिए।

सामान्य गायत्री उपासकों पर दैनिक जप भर का अनुशासन है। वे अन्य नियमों का पालन करने के लिए बाधित नहीं हैं। उन्हें न्यूनतम माला जप अथवा २४ गायत्री मंत्र लेखन तो करना ही चाहिए। अधिक बन पड़े तो और उत्तम। यह अनुसाधक भी महापुरश्चरण के सामान्य भागीदार माने जायेंगे। प्रमुखता नैष्ठिकों की ही रहेगी।

संकल्प एक लाख नैष्ठिक साधक बनाने का है। नैष्ठिकों और सामान्यों को मिला कर दैनिक जप २४ करोड़ हो जायेगा। यह बहुत बड़ी संख्या है। नियमित रूप से इतनी साधना चल पड़ने से अन्तरिक्ष के परिशोधन एवं वातावरण के अनुकूलन में भारी सहायता मिलेगी। इससे सम्भावित विपत्तियों के टल जाने की आशा की जाती है। साथ ही उज्ज्वल भविष्य के नव-सृजन में इस साधना की प्रतिक्रिया बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। सम्मिलित होने वाले आशा से अधिक लाभान्वित होंगे। आत्म-कल्याण एवं लोक-कल्याण का दुहरा श्रम साधन उनसे बन पड़ेगा।

नैष्ठिक साधक निजी साधना के अतिरिक्त युग चेतना का आलोक वितरण करने के प्रयास में भी संलग्न रहेंगे। उसी के लिए उन्हें दस नये साधक अपने प्रभाव क्षेत्र में बनाये रहने और उनके मार्ग-दर्शन का काम सौंपा गया है। इन नये साधकों को तीन माला जप करने के लिए प्रोत्साहित सहमत करने के अतिरिक्त उन्हें युग साहित्य पढ़ाने का चस्का भी लगाना होगा। यह कार्य नैष्ठिक साधकों की सदस्यता शर्त पूरी करने पर बिना किसी कठिनाई के चलता रहेगा। युग-निर्माण अभियान की सक्रिय सदस्यता में एक घंटा नित्य समय एवं दस पैसा नियमित रूप से अंशदान देना पड़ता है। इस पैसे को युग साहित्य खरीदने में और इस समय को सम्पर्क क्षेत्र में झोला पुस्तकालय चलाने में, युग साहित्य को पढ़ने और वापस लेने में लगाना होता है। यही ज्ञान-यज्ञ की छोटी किन्तु सुनियोजित प्रक्रिया है। मिशन के सभी सक्रिय सदस्य इस शर्त का पालन करते हैं। महापुरश्चरण के नैष्ठिक साधक तो उसे करेंगे ही। इस आधार पर उनके प्रचार एवं प्रभाव क्षेत्र में आलोक वितरण का काम अनायास ही पूरा होता रहेगा। कालान्तर में यह सामान्य साधक भी नैष्ठिक बनने की प्रगति करते रहेंगे। फलतः एक से दस-दस से सौ-सौ से हजार की दस गुनी प्रक्रिया समयानुसार समस्त मानव समाज तक नव-युग का संदेश पहुँचाने की-युगान्तरीय चेतना से अनुप्राणित करने में सफल हो सकेगी।

नैष्ठिक उपासना और शौकिया मनमौजी साधना के बाह्य स्वरूप में तो बहुत थोड़ा अन्तर है, पर निष्ठा के साथ जिस भाव श्रद्धा एवं अनुशासन का समावेश है उसके आधार पर वह अन्तः क्षेत्र को परोक्ष रूप से प्रभावित करने में, तपश्चर्या की आदत डालने में असाधारण रूप से सहायक सिद्ध होती है। फलतः उसके परिणाम भी चमत्कारी होंगे ।

पाँच माला का संकल्प पूरा करने में आलस्य प्रमाद बाधक न बने इसलिए उसके साथ भोजन या शयन न करने का प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है । जब तक पाँच माला न कर लेंगे, तब तक या तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भोजन न करेंगे या सोयेंगे नहीं । यह नियम बना लेने पर किसी का भी साधनाक्रम नहीं टूट पायेगा । स्नान न बन पड़े, सफर में रहना पड़े तो मानसिक जप हो सकता है । कारणवश नागा हो जाय तो एक महीने के भीतर उसकी पूर्ति कर ली जाये । इस अनुशासन को पालने वालों की आस्था निश्चित रूप से परिपक्व होगी । संकल्प शक्ति बढ़ने से आत्म-बल की प्रखरता भी बढ़ती चलेगी ।

गुरुवार के दिन साधना में संयम की तपश्चर्या का हल्का सा समावेश है । आहार पर संयम का तत्व ज्ञान—उस दिन नमक छोड़ने भर से विचारणा को प्रभावित करेगा । दो घंटे का मौन यहाँ प्रेरणा देगा कि विनयशीलता, शिष्टता एवं सद्भावना सम्पन्न ही वाणी निकलनी चाहिए । ब्रह्मचर्य का मोटा अर्थ तो वीर्य रक्षा है, पर उसके सूक्ष्म दर्शन में कामुकता की मनोवृत्ति को परिष्कृत एवं पवित्र बनाने का प्रयत्न करना है । यह त्रिविध अनुशासन इन्द्रिय निग्रह एवं मनोनिग्रह की ही पृष्ठभूमि बनाता है, पर वस्तुतः यह दिशाधारा है, जिस पर चलते हुए क्रमशः विचार संयम, समय-संयम एवं अर्थ-संयम का परिपालन करने का स्वभाव बनता है । कहना न होगा कि व्यक्तित्व को उच्चस्तरीय बनाने में आदर्शवादी अनुशासन ही सफल होता है । महामानवों और सिद्ध पुरुषों ने इसी राजमार्ग पर चलते हुए अभीष्ट आत्मबल अर्जित किया है । प्रगति के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचने का यही सुनिश्चित अवलम्बन है । तपस्वी ही सिद्ध पुरुष बनते हैं ।

दस अनुसाधकों से सम्पर्क साधने और प्रेरणा देने में वह तत्व ज्ञान भरा पड़ा है जिसमें जनमानस के परिष्कार और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन का उत्तरदायित्व सृजन शिल्पियों के कंधों पर आता है और उसे पूर्ण करने की सदाशयता उभारता है ।

नैष्ठिकता के साथ जुड़ा हुआ अनुशासन सध न सका तो कैसे होगा, यह असमंजस करने की किसी को आवश्यकता नहीं है । व्रतशीलता को अक्षुण्य रखने के लिए दूसरा प्रबन्ध किया गया है । हर वर्ष हर नैष्ठिक साधक को गायत्री जयन्ती पर एक वर्ष की साधना तथा लोकसेवा का विवरण भेजना होगा । उसी में यह उल्लेख भी करना होगा कि उस वर्ष साधना क्रम में कोई कमी तो नहीं रही । यदि रही होगी तो उसकी पूर्ति शान्तिकुंज में निवास करने वाले साधकों से करा दी जाया करेगी । यहाँ तक कि यदि किसी साधक का देहावसान हो गया है तो सन् २००० तक उनके संकल्प की पूर्ति किसी अन्य साधक द्वारा करा दी जाती रहेगी। इस प्रकार युगसंधि महापुरश्चरण के नैष्ठिक साधकों की साधना पूरे बीस वर्ष तक चलते रहने का पक्का प्रबंध कर लिया गया है ।

सूर्य की ध्यान धारणा

प्रस्तुत युग साधना में अन्य क्रिया-कलाप तो साधारण अनुष्ठानों की भाँति ही रहेंगे, पर एक बात विशिष्ट रहेगी "सूर्योपस्थान" भगवान सूर्य की निकटता । उन्हें ही इस महान् प्रक्रिया का अधिष्ठाता वरण किया गया है । इसलिए जप गायत्री का, पूजन गायत्री का करते हुए भी प्रातः काल उदय होते हुए स्वर्णिम आभा वाले सविता देव का ध्यान करते रहना होगा । ध्यान ही नहीं प्राण प्रत्यावर्तन का भाव समर्पण भी । साधक का प्राण सविता में प्रवेश करके वैसा ही लाल हो जाता है, जैसा भट्ठी में कुछ समय पड़ा रहने के उपरान्त सोना लाल हो जाता है । ईंधन को आग में डालने पर भी यही होता है । यह समर्पण हुआ । दूसरा भाग है सविता का साधक की सत्ता में अवतरण। जिस प्रकार किरणें धरती पर उतरती हैं और प्रभाव क्षेत्र को ऊर्जा एवं आभार से भर देती हैं, उसी प्रकार साधक भी अनुभव करेगा कि सविता का ओजस, तेजस, वर्चस बरसता है और उपासनारत को अपने दिव्य अनुग्रह से ओत-प्रोत कर देता है ।

गहरी साँस लेते हुए सूर्य के अवतरण की ओर धीरे-धीरे साँस छोड़ते हुए सूर्यार्घ्य दान की तरह सविता को आत्म-समर्पण करने की भावना करते रहना चाहिए ।

इक्कीसवीं सदी में सूर्य तेजस् में भी अनुकूल परिवर्तन होगा और उसका प्रभाव समस्त वातावरण पर पड़ेगा । प्राणियों में भी क्षमता और चेतना विकसित होगी । ईंधन का, विद्युत का, रोग नियंत्रण का समुद्र से पानी लाकर मेघ बरसाने, वायु संशोधन का काम तो सूर्य अभी भी करता है । सड़ी हुई दुर्गन्ध को मिटाने और विषाणुओं का हनन करने में उसके चमत्कार निरन्तर देखे जाते हैं । शरीरों में विटामिन "डी" का उत्पादन स्रोत वही है । अगले दिनों उसकी प्रखरता चेतना, क्षेत्र को भी प्रभाव में लेगी । गिरों को उठाने और उठों को उछालने में जहाँ मानवी प्रयत्न काम करेंगे, वहाँ उसे सफल सम्भव बनाने में सविता की अदृश्य भूमिका भी काम करेगी । आद्यशक्ति गायत्री का अधिष्ठाता भी तो सविता ही है। उसी के प्रतीक रूप में दीपक ज्योति को, अगरबत्ती के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूर्य योग के सम्बन्ध में सूर्यपुराण, सूर्यउपनिषद् चाक्षुष्योपनिषद् आदि में बहुत कुछ कहा गया है । सावित्री और सविता का युग्म अपने समय की आवश्यकता भली प्रकार पूरी कर सकेगा, ऐसा विश्वास किया जाता है । निराकरण, उन्नयन के लिए जो भौतिक प्रयत्न चल रहे हैं उनमें से इस दिव्य साधना का समावेश हो जाने से लक्ष्य की पूर्ति में असाधारण योगदान मिलने की आशा है । इसीलिए पुरश्चरण में गायत्री मंत्र और सूर्योपासना का महत्त्व दिया गया है । दैनिक साधना की पूर्णाहुति सूर्यार्घ्यदान के रूप में होती रहेगी । अन्तिम पूर्णाहुति में भी उस महातेज की अभ्यर्थना होगी, ऐसी जिसे अभूतपूर्व कहा जा सके।

रविवार सूर्य का दिन है । उस दिन कुछ विशेष उपक्रम करना चाहिए । उस दिन प्रातः परिवार के जितने लोग सम्मिलित हो सकें, उन्हें इकट्ठा करके उपर्युक्त साधना सामूहिक रूप से करनी चाहिए । देव प्रतीक के रूप में चौकी पर दीपक अगरबत्ती और जल पात्र रख लेना चाहिए । साधना प्रयोग पूरा होने पर जलपात्र लेकर पूर्व दिशा में सूर्य की ओर अर्घ्य चढ़ाकर साधना का समापन करना चाहिए । जिनसे सधे वे रविवार को आधे दिन का उपवास करें, एक समय ही भोजन करें । यह सभी नियम सर्वसुलभ हैं । जो अधिक व्यस्त हैं और सामूहिक उपक्रम बनाने में समर्थ नहीं हो पाते, वे भी इतना क्रम तो सहज ही अपना सकते हैं ।

शान्तिकुंज और उसका प्रज्ञा परिवार

शान्तिकुञ्ज को केन्द्र यहाँ की परम्परागत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है । गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्त ऋषियों का तपस्थान, जैसी पुरातन और नित्य गायत्री जप यश व गुरुकुल, आरण्यक जैसी विशेषताओं के कारण वह एक प्रकार से असाधारण विशेषताओं से सम्पन्न हो चला है । घर गृहस्थी के वातावरण की अपेक्षा ऐसे दिव्य केन्द्र में रह कर साधना करने में कितनी अधिक विशेषता हो सकती है, उसका अनुमान कोई भी लगा सकता है । सभी इच्छुकों को अवसर मिल सके, इस दृष्टि से नौ दिवसीय साधना सत्र बारह वर्ष तक चलते रहने का संकल्प प्रगट किया गया है । अन्तरिक्ष का विभाजन बारह राशियों में हुआ है । पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हुए ठीक अपनी उसी स्थिति में बारह वर्ष में आती है । इस तथ्य को देखते हुए पुरश्चरण की अवधि बारह वर्ष रखी गयी है ।

स्थान और समय का चयन अपने आप में असाधारण महत्त्व रखता है । महाभारत के लिए कुरुक्षेत्र चुना गया था । भुसावल के केले, लखनऊ के अमरूद, नागपुर के संतरे, मैसूर का चंदन प्रसिद्ध है । वह उत्पादन हर कहीं उसी स्तर का नहीं हो सकता । बीजों के बोने का समय सही रखना अच्छी फसल पाने के लिए आवश्यक है । वर्षा और बसन्त की, असाधारण दृश्य उत्पन्न करने वाली अपनी-अपनी अवधि होती है । वे विशेषताएँ हर समय नहीं देखी जा सकती हैं । सेनेटोरियम उपयुक्त जलवायु में बनाये जाते हैं । ब्रह्माण्ड की खोज करने हेतु कोणार्क के सूर्य मन्दिर जैसी जगह चुनकर निर्धारित की गयी, जहाँ संसार भर के वैज्ञानिक सूर्य ग्रहण का अन्वेषण-परीक्षण करने आया करते हैं । इसी प्रकार संसार में अनेकों स्थान अपनी-अपनी विशिष्टता के लिए प्रख्यात हैं । हिमालय क्षेत्र को तपस्या के लिए अनादि काल से उपयुक्त स्थान माना जाता रहा है । शान्तिकुंज की निर्माण स्थली भी ऐसे ही सूक्ष्म परीक्षणों के उपरान्त चुनी गयी है । यहाँ जो आते हैं वे अपनी-अपनी पात्रता और आवश्यकता के अनुरूप शक्ति, साहस और प्रकाश प्रेरणा लेकर वापस लौटते हैं । इन्हीं आधारों पर शान्तिकुंज को चेतना का उद्गम बनाया गया है और उसे युग चेतना की गंगोत्री मान कर उसके विश्व विस्तार की प्रक्रिया किसी अदृश्य प्रेरणा के संकेत पर क्रियान्वित हो रही है ।

युग सन्धि पुरश्चरण शान्तिकुञ्ज में उद्भूत अवश्य हुआ है पर उसका विस्तार उद्गम तक ही सीमित होकर न रहे । सूर्य सर्वप्रथम पूर्वांचल से निकलता है और वहाँ से आगे बढ़ते-बढ़ते समस्त संसार को आभा से आच्छादित करता है । गंगोत्री से आरम्भ होने वाला निर्झर, बंगाल पहुँचते-पहुँचते सहस्र धाराओं में विकसित हुआ दीख पड़ता है । इस युग साधना का शुभारम्भ शांतिकुंज से होते हुए भी, उसका विस्तार देश के कोने-कोने और विश्व के हर भाग में व्यापक होते हुए देखा जा सकेगा ।

कम से कम प्रज्ञा परिवार के तो सभी लोग उसमें भाग लेंगे ही । जो घर से बाहर नहीं जा सकते, अत्यधिक व्यस्त या प्रतिबंधित हैं, वे अवकाश के किसी भी समय कम से कम दस मिनट मानसिक रूप से गायत्री का जप और ध्यान कर सकते हैं । मन में ही सूर्यार्घ्य देने की भावना की जा सकती है और शान्तिकुञ्ज पहुँच कर मन ही मन उस उद्गम की परिक्रमा लगाने की भी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जहाँ प्रज्ञा पीठें बनी हैं, जहाँ प्रज्ञा मण्डल या महिला मण्डल बनें हों, गायत्री परिवार जीवन्त हैं, वहाँ भी महा पुरश्चरण की एक इकाई अपने यहाँ प्रतिष्ठित करनी चाहिए । हर रोज बन पड़ना कठिन रहे तो सप्ताह में एक दिन इसके लिए निश्चित किया जा सकता है । रविवार—यह सूर्य का दिन भी है । उस दिन किसी स्थिर स्थान में अथवा बारी-बारी आमंत्रित करने वाले सदस्यों के घरों में यह आयोजन रखा जा सकता है । समय प्रातः काल का रखना ही ठीक पड़ता है ।

सामूहिक गायत्री पाठ । दीप यज्ञ का प्रज्ज्वलन। पाँच दीपक एक माचिस, अगरबत्ती दो थालियों में सूर्य प्रतीक के रूप में स्थापन । आधा घण्टा मानसिक जप ध्यान, युग संगीत का सहगान कीर्तन, 'यन्मण्डलम्'' स्तोत्रों से सविता का स्तवन । इसके बाद झोला पुस्तकालय उपक्रम में सभी उपस्थित जनों को भागीदार बनाना । जिनके जितनों, जितनों से सम्बन्ध हों वे उतनी पुस्तकें पढ़ाने के लिए मण्डल से ले जायें और अगले सप्ताह जब आवें तो अधिकाधिक शिक्षितों को पढ़ाने और अशिक्षितों को सुनाने के उपरान्त वापिस कर दें । यही है साप्ताहिक साधना का वह उपक्रम, जिसमें दिव्य अवतरण तो प्रधान है ही, पर साथ में जन-मानस को परिष्कृत करने वाले ज्ञान यज्ञ का भी समावेश है । युग-संगीत और युग-साहित्य द्वारा आलोक वितरण यह दोनों कार्य इसी स्तर के हैं, जिनके माध्यम से विचार क्रान्ति अभियान का भी विस्तार होता है ।

''पाँच से पच्चीस'' बनने का प्रेरणा मंत्र किसी को भी भूलना नहीं चाहिए । इसी आधार पर तो अपना सीमित परिवार विश्वव्यापी बनेगा । साप्ताहिक आयोजनों में सम्मिलित होने वाले इस प्रयत्न में रहें कि अगले सप्ताह अपने प्रभाव क्षेत्र से अधिक लोगों को लेकर चलें । उनकी निष्ठा बढ़े तो वे भी पाँच नये खोज निकालें और आयोजन के साथ जोड़ें । इसी प्रयास के अन्तर्गत प्रज्ञा-मण्डलों और महिला-मण्डलों का गठन एवं विस्तार होता चलेगा। संघ शक्ति बन कर अगले दिनों कंधे पर आने वाले उत्तरदायित्वों का वहन कर सकेंगे ।

जहाँ भी युग पुरश्चरण की उपर्युक्त सामूहिक साधना का उपक्रम चले वहाँ से नए सम्मिलित होने वाले श्रद्धालुओं को एक बार एक अनुष्ठान शान्ति कुञ्ज में जाकर पूरा करने के लिए कहा जाय । लौटने पर वे पूरा उत्साह लेकर लौटेंगे और बारह वर्ष तक सम्मिलित होते रहने के व्रत का निर्वाह करेंगे । यह लोग मिल कर स्थानीय आयोजन को तो सुव्यवस्थित बनाए रहेंगे, समीपवर्ती क्षेत्रों में भी विस्तार करेंगे । एक ही बड़े नगर में ऐसे छोटे-छोटे कई मण्डल बन सकते हैं ।

आयोजनों का खर्च चलाने के लिए सम्मिलित होने वाले साधकों के यहाँ बीस पैसे नित्य जमा करने के लिए ज्ञानघट स्थापित किए जायें । उसी संग्रहीत राशि से साप्ताहिक आयोजन का खर्च चलता रहेगा । इस आपूर्ति की जिम्मेदारी साधकों को ही मिल-जुल कर उठानी चाहिए । बड़े खर्च वाली आवश्यकताओं के लिए ही बाहर के लोगों के अनुदान स्वीकार किये जायें ।

प्रचार उपकरणों के लिए लाउडस्पीकर, टेप रिकार्डर, स्लाइड प्रोजेक्टर आदि की आवश्यकता पड़ती है । इसमें लगभग दो हजार खर्च होते हैं । दीप यज्ञायोजनों एवं ज्ञान रथ की स्थापना के लिए भी कुछ अतिरिक्त धन की आवश्यकता पड़ती है । इन सब के लिए जन-सहयोग लिया जा सकता है । जो एकत्र हो और किस प्रकार खर्च किया गया, उसका विवरण दान देने वालों को देते रहने से किसी को अँगली उठाने का अवसर नहीं मिलता ।

युग संधि पुरश्चरण के आरम्भिक वर्ष में युग चेतना का उदय दृष्टिगोचर कराने वाले आदर्श वाक्यों के स्टीकर घर-घर चिपकाने का आन्दोलन पूरे उत्साह के साथ चलाया जाना चाहिए । कोई दूकान, कोई घर, कोई दफ्तर-कारखाना, कोई वाहन ऐसा न बचे जहाँ आदर्श वाक्यों का अंकन दृष्टिगोचर न हो । देखने वालों को लगता है कि घर-घर में स्थान-स्थान पर युग चेतना की छवि उभरने लगी है । नव-युग की चेतना उभरने का परिचय स्टिकरों के माध्यम से मिले तो जन-जन को लगे कि आदर्शवादिता जड़ जमने लगी । पतन या उत्थान के लिए प्रेरणाएँ दृश्य वातावरण से बनती हैं । इसके लिए अति सस्ते और सरल उपाय स्टिकर योजना को अधिकाधिक व्यापक बनाना है । इन्हें मुफ्त न बाँटा जाय, लागत मूल्य पर दिया जाय । यह प्रयास भी प्रकारान्तर से युग संधि के अवसर पर किए जाने वाले पुरश्चरण, जन-मानस के परिष्कार एवं सदुद्देश्य के लिए सत्पुरुषों को उल्लसित एवं संगठित करने का ही एक अंग है ।

यह तो पुरश्चरण का सेवा साधना से सम्बन्धित पहलू हुआ । इसमें तप-साधना सम्बन्धी एक अन्य पक्ष भी सम्मिलित है । इसे प्राण-संचार साधना नाम दिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गया है । इसके माध्यम से उन सभी में शक्ति-संचार की व्यवस्था की गई है, जो प्रज्ञा परिवार से सम्बद्ध हैं।

प्राणसंचार साधना क्रम

युग अवतरण के संचालक सूत्र हिमालय के ध्रुव केन्द्र में हैं । वहाँ से युग सन्धि के बीस वर्षों में एक विशिष्ट स्तर का प्राण प्रवाह हर दिन दो बार एक-एक घण्टे के लिए निःसृत होगा । (१) सूर्योदय से एक घण्टा पूर्व से लेकर प्रातःसूर्योदय तक, (२) सूर्य अस्त के एक घण्टा बाद से लेकर दो घण्टा पूरे होने तक प्रातःकाल नैष्ठिक साधकों को अपने स्थान पर करने के लिए, सायंकाल जहाँ सामूहिक ध्यान व्यवस्था बन पड़े, केवल वहाँ के लिए । दोनों प्रवाहों के स्तर भी उनके उद्देश्यों के अनुरूप भिन्न-भिन्न हैं । प्राण-प्रवाह तो दोनों समय एक-एक घण्टा चलेगा पर इसमें से न्यूनतम पन्द्रह मिनट और अधिकतम तीस मिनट ही ग्रहण किया जाना चाहिए ।

दोनों समय की प्राण-संचार साधना का उपक्रम इस प्रकार है—

(१) स्थिर शरीर, शान्त चित्त, सुखासन (पालथी) कमर सीधी, हाथ गोद में, आँखें बन्द, ध्यान मुद्रा । (२) सांस धीरे-धीरे खींचें । अनुभव करें कि हिमालय केन्द्र से प्रेरित विशिष्ट प्राण-प्रवाह सांस के साथ घुसकर शरीर में भीतर पहुँच रहा है । (३) यह प्राण युक्त सांस, मल-मूत्र, छिद्रों के मध्य मूलाधार चक्र तक पहुँच कर उससे टकराता है । (४) प्राण-वायु के टकराने से मूलाधार में सोई पड़ी सर्पिणी के सदृश्य कुण्डलिनी शक्ति में हलचल उत्पन्न होती है । (५)कुण्डलिनी स्वांस में घुले प्राण-प्रवाह को पीकर जागृत और परिपुष्ट होती है । उस जागरण से स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों को बल मिलता है । (६) सांस को खींचते समय प्राण के मूलाधार चक्र तक पहुँचने की और रोकते समय मूलाधार से टकराने तक कुण्डलिनी जागने की धारणा की जाय । (७) छोड़ते समय यह किया जाय कि प्राण-वायु मेरुदण्ड मार्ग से ऊपर उठती हुई मस्तिष्क के मध्यम केन्द्र तक पहुँचती है और वहाँ से वह नासिका द्वारा अनन्त अन्तरिक्ष में बिखर जाती है । यह समस्त प्राण-प्रवाह ब्रह्माण्ड में फैलता है । उसके प्रवाह से विभीषकायें निरस्त होती हैं और अनुकूलतायें बढ़ती हैं ।

यह एक प्राणायाम हुआ । इसमें पूरक, कुम्भक और रेचक तीन ध्यान हैं । तीनों के तीन उद्देश्य हैं— धारण, जागरण एवं संचार । इससे आत्म-सत्ता की प्रखरता बढ़ती है और वातावरण के अनुकूलन में सहायता मिलती है ।

पन्द्रह मिनट में इस प्रकार के जितने प्राणायाम बन पड़ें, उतने कर लेने चाहिए । इस विशिष्ट अनुदान को एक प्रकार का आध्यात्मिक 'टानिक' समझा जाय । जो इसे प्राप्त कर आत्म-बल से सम्पन्न होंगे, वे अपने भीतर ओजस्, तेजस्, वर्चस् की क्रमिक अभिवृद्धि होती अनुभव करेंगे । सांस खींचने का प्रथम पूरक भाग इसी निमित्त है । इसे अनुदान पाने और सम्भाल कर रखने की धारणा कह सकते हैं । दूसरा कुम्भक भाग, मूलाधार में अवस्थित दिव्य कुण्डली शक्ति को जगाता है, उसे प्रसुप्ति का जागरण समझा जाय । अतीन्द्रिय क्षमता अन्तराल में छिपी पड़ी है । उसे जगाने पर साधक में देवी-शक्तियाँ बढ़ती और परिपुष्ट होती हैं ।

युग शिल्पियों को इन दिनों इतना अवकाश नहीं मिलेगा कि वे अभीष्ट आत्म-बल उपलब्ध करने के लिए लम्बी एकांत साधना एवं कठिन तपश्चर्यायें कर सकें । किन्तु विशिष्ट उत्तरदायित्वों को वहन करने के लिए अतिरिक्त सामर्थ्य तो चाहिए ही । यह उपलब्धि इस साधना द्वारा मिल सकेगी । इस साधना का एक प्रयोजन है—आत्मबल का संवर्धन और दूसरा है-अदृश्यं जगत में संव्याप्त वातावरण का अनुकूलन । दूसरे प्रयोजन को विश्व-कल्याण के निमित्त प्रस्तुत किया गया साधक का योगदान कह सकते हैं । दूषित और विक्षुब्ध वातावरण पृथ्वी के इर्द-गिर्द छाया हुआ है। विपत्तियों और विभीषिकाओं के बरसने की आशंका इसी काली घटा से है । इसे धकेल कर अनन्त ब्रह्माण्ड में तिरोहित करना है । इस प्रयोजन के लिए संचार-साधना द्वारा छोड़ा गया प्राण-प्रवाह अभीष्ट उद्देश्य को पूरा कर सकेगा ।

प्रस्तुत युग-सन्धि महापुरश्चरण गायत्री परिवार, शान्तिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में चल रहा है । अस्तु उसके भागीदार नैष्ठिक साधकों को अपना पंजीकरण भी वहीं से करा लेना चाहिए । इसके लिए छपे फार्म पर भरे गये नहीं, हाथ से लिखे हुए प्रतिज्ञा पत्र ही स्वीकृत किये जायेंगे । प्रतिज्ञा पत्र इस प्रकार है—

अ. भा. गायत्री परिवार—शान्तिकुंज हरिद्वार

युग संधि महापुरश्चरण

(नैष्ठिक साधना का संकल्प पत्र)

युगसंधि पुरश्चरण का उद्देश्य और उपक्रम मैंने भली-भाँति समझ लिया है । उसमें सन् २००० तक भागीदार रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना के पाँचों नियमों का पालन करूँगा । (१)न्यूनतम पाँच माला जप (२) प्रातः १५ मिनट प्राण संचार की ध्यानधारणा (३) गुरुवार को बिना नमक का भोजन ब्रह्मचर्य एवं दो घंटे का मौन (४) महीने में न्यूनतम एकबार २४ आहुतियों का हवन । (५) आश्विन और चैत्र की नवरात्रियों में गायत्री अनुष्ठान।

इसके अतिरिक्त आलोक वितरण के लिए दस अनुसाधक बनाने, उनकी साधना का मार्ग-दर्शन करने तथा युग साहित्य पढ़ाने का प्रयास भी करता रहूँगा । हर वर्ष गायत्री जयन्ती पर अपनी साधना तथा सेवा का विवरण भेजा करूँगा । पुरश्चरण आरम्भ करने की तारीख—

नाम एवं पूरा पता

शिक्षा जाति

जन्म तारीख व्यवसाय

हस्तलिखित प्रतिज्ञा-पत्र अ. भा. गायत्री परिवार, शान्तिकुंज, हरिद्वार (उ. प्र.) के पते पर भेजा जाना चाहिए और पंजीकरण का प्रमाणपत्र प्राप्त कर लेना चाहिए ।

एक करोड़ की पूर्णाहुति दो चरणों में

''इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना'' अब क्रमशः निकट से निकटतम आती जा रही है। रात्रि के पलायन और अरुणोदय के उदय का इसे प्रभात पर्व भी कहा जा सकता है। इसे अपने समय का गंगावतरण एवं विस्तार की दृष्टि से मत्स्यावतार की तरह व्यापकता अपनाने की बेला भी कहा जा सकता है। प्रसव-काल में एक ओर पीड़ा-वेदना का महौल रहता है, वहीं दूसरी ओर सुखद शिशु-जन्म की समभावना भी हँसती-मुस्कराती है। सन् २००० के आगमन में जिन सम्भावनाओं के आगमन की प्रतीक्षा है, उन्हें इसी स्तर का समझा जा सकता है।

दीपावली के आगन से पूर्व घरों में लिपाई-पुताई होती है। हर पर्व से पूर्व भी ऐसी ही सजधज की जाती है। विवाह आदि के दिनों में भी ऐसा ही उत्साह दिखाई देता है। सन् २००० तक का समय ऐसे ही हर्षोत्सव से भरा-पूरा, अवतरण की आरती सँजोये हुए दिव्य आगमन का समय है।

इन दिनों १४ करोड़ का नित्य गायत्री जप चल रहा है। नवयुग के अनुरूप प्रज्ञा विस्तार के लिये तूफानी गति से काम हो रहा है। संकल्प यह है कि विश्व के, विशेषतया भारत के किसी कोने में कहीं कोई स्थान, कोई व्यक्ति ऐसा न रह जाय, जहाँ युगान्तरीय चेतना का संदेश न पहुँचे और जीवित-जागृत स्तर के लोग बढ़-चढ़कर अपना कर्त्तव्य न निवाहें। शान्तिकुंज के पाँच लाख परिजनों के लिये ही यह संदेश निस्सृत हुआ है। वे ही बदले समय के परिवर्तन प्रवाह को अपने दिव्य चक्षुओं से देख सकेंगे। उन्हीं दिव्य कानों को कुछ ऐसा सुनाई पड़ेगा, जिसे युग धर्म का आह्वान जैसा कहा जा सकेगा।

युग सन्धि की पूर्णाहुति सन् २००० में होगी। उस अवसर तक एक करोड़ प्रज्ञा पुत्रों के उल्लसित हो जाने, कार्य क्षेत्र में उतरने और उस महापर्व में सम्मिलित होने की ऐसी आशा की गई है, जिसे संकल्प स्तर का कहा जा सके। इसे पूरा करने के लिये प्रतिभायें अभी से जुट गयीं हैं। इस अभियान में सम्मिलित होने वालों को न्यूनतम एक माला गायत्री मंत्र का जप, साथ ही प्रातःकाल के स्वर्णिम सूर्य का ध्यान करते रहना आवश्यक माना गया है। साथ ही पाँच मिनट का एक ध्यान यह भी जुड़ा हुआ है कि प्रातःकाल आँख खुलते ही शान्तिकुंज पहुँचने, मानसिक गंगा में स्नान करने, एक परिक्रमा इस आश्रम-केन्द्र बिन्दु की करने, अखण्ड दीपक के निकट बैठकर प्राण ऊर्जा ग्रहण करने की भावना भी सम्मिलित रखी गयी है। इस आयोजन का केन्द्रबिन्दु शान्तिकुंज हरिद्वार है। इसलिये उसके साथ दैनिक सम्पर्क साधने की आवश्यकता समझी गई है । वह मानसिक ध्यान धारणा के माध्यम से पाँच मिनट में पूरी भी हो जाती है।

पूर्व निर्धारण यह था कि सन् २००० में वह पूर्णाहुति होगी, जिसमें एक करोड़ साधक सम्मिलित होंगे। जिन्होंने आरम्भ से ही व्रत धारण किया है, वे एक साथ अपने क्षेत्र के विचारवानों को परिचित प्रभावित कर लेंगे, ऐसा विश्वास किया गया है। इस दृष्टि से अपने ही लोग थोड़ा प्रयास कर लेने पर फैलकर एक करोड़ हो जायेंगे। किसी अतिरिक्त प्रयास, प्रचार-प्रसार की आवश्यकता न पड़ेगी। अपना परिवार इतना दायित्व उठा लेगा, इसका विश्वास अब तक एक भाव भरे सहयोग एवं अनुगमन को देखते हुए सहज ही कर लिया गया है।

सन ९० के आरम्भ में ही नया संदेश उभरा है कि लम्बे समय की प्रतीक्षा न करके इसी वर्ष न्यूनतम एक लाख संदेशवाहक, अग्रदूत, देवदूत तैयार कर लिये जायें और उनके जिम्मे काम आरम्भ से ही बाँट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया जाय। उन्हें इस महाभियान की रीढ़ माना जाय और विश्वास किया जाय कि इतने लोग मिल-जुलकर सन् २००० तक जो कुछ किया जाना है, अपने बलबूते कर लेंगे।

पूर्व निश्चय के अनुसार समग्र पूर्णाहुति सन् २००० में होनी थी। उसी में एक करोड़ व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाना था। अब नये निर्धारण के अनुसार उसे दो खण्डों में बाँट दिया जायेगा। पचास-पचास लाख प्रज्ञापुत्रों का प्रयास यदि पाँच-पाँच वर्ष के अन्तर से हो, तो सभी पर भार भी कम पड़ेगा, व्यवस्था हल्की रहेगी और बहुत लम्बे समय की प्रतीक्षा में किसी को ऊब भी नहीं आयेगी।

एक लाख दीपयज्ञों, पचास लाख याज्ञिकों की पूर्णाहुतियाँ अगले १० वर्षों में दो बार होंगी। एक सन् १९९५ में, दूसरी सन् २००० में। इन्हें एक स्थान पर नहीं किया जा सकेगा, वरन् जिन संदेशवाहकों, अग्रदूतों ने इस महापुरश्चरण में बढ़-चढ़कर योगदान दिया है, उनके इच्छित स्थानों में एक-एक हजार वेदी के यज्ञ आबंटित कर दिये जायेंगे और उसी अनुपात में साधकों, याज्ञिकों को एकत्रित करने की व्यवस्था कर दी जायेगी। इस निर्णय के अनुसार देश का कोई कोना ऐसा नहीं बचेगा, जिसमें इक्कीसवीं सदी के महायज्ञ की पूर्णाहुति संभव न हुई हो। एक लाख संदेशवाहकों, अग्रदूतों, देवदूतों को इस युग पुरश्चरण का मेरुदण्ड माना गया है। उन्हें उनके प्रयत्नों के अनुरूप पुण्य-फल में भागीदार बनने और श्रेय सम्पादन करने का अवसर भी मिलेगा।

अग्रदूतों के क्षेत्र में जहाँ एक-एक हजार दीप वेदियों के दीप यज्ञ होंगे और औसतन दस हजार साधक भागीदार होंगे, उनकी व्यवस्था वे सरलतापूर्वक जुटा लेंगें। जिन्हें सन् ५८ में गायत्री तपोभूमि मथुरा में सम्पन्न हुए सहस्र कुण्डी गायत्री महायज्ञ का स्मरण है, उन्हें यह विश्वास भी हुए बिना न रहेगा कि किसी महाशक्ति की अनुकम्पा से जब इतना विशालकाय आयोजन सम्पन्न हो गया था, तो उनके जिम्मे आया यह आयोजन सफल होकर क्यों नहीं रहेगा? संरक्षण सत्ता तो सभी जगह एक जैसा काम करती है। उसका अनुग्रह तो हर किसी पर, हर कहीं समान रूप से बरसता है।

इन्हीं दिनों एक-एक हजार वेदी के दीप यज्ञ एक हजार की संख्या में करने की तैयारी को ध्यान में रखकर उन्हें चलना चाहिये, जिनके मन में युग-चेतना उमंग भरी उफान ले और जिनका साहस हिलोरें ले।

अग्रदूतों को अभीष्ट प्राण-चेतना उत्पादित करने के लिये एक काम सौंपा गया है कि वे अपने निकटवर्ती सम्पर्क क्षेत्र में कम से कम एक सौ व्यक्तियों को इस संकल्प का स्वरूप और उसका प्रतिफल समझाने में अभी से कटिबद्ध हो जायें । इसके लिये कई माध्यम विनिर्मित किये गये हैं।

(१) झोला पुस्तकालय चलायें। हर दिन दो घण्टे का समय और बीस पैसे का अंशदान निकालें। इस योगदान से इक्कीसवीं सदी की प्राण-चेतना भरने वाला अत्यन्त सस्ता साहित्य खरीदते रहें और उसे क्रमशः सौ व्यक्तियों को पढ़ाते रहें। विश्वास किया जाना चाहिये कि यह सौ व्यक्ति उनकी पूर्णाहुति आयोजन में सच्चे मन से सहायक बने रहेंगे और संकल्पित आयोजन बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जायेगा। पुस्तकें पढ़ने देने और वापस लेने में समय तो अवश्य लगेगा, पर उसमें लगी हुई पूँजी अपने घरेलू पुस्तकालय में पीढ़ियों तक सुरक्षित रहेगी।

(२) एक प्रचार पेटी उनके लिये बनायी गयी है, जो पढ़ने की स्थिति में नहीं हैं, मात्र सुन ही सकते हैं, इनके लिये इस पेटी में एक टेपरिकार्डर, दो लाउडस्पीकर, दस कैसेट रखे हुए हैं। गुरुजी के प्रवचन, माताजी के संदेश और देवकन्याओं के दर्शन भर प्राण-चेतना भरने वाले युग गीत इनमें समाहित हैं। इसी पेटी को किसी के घर में जाकर वहाँ एकत्रित लोगों को एक घण्टे या न्यूनाधिक समय तक सुनाया जा सकता है।

(३) प्रचार साइकिल, इस साधारण साइकिल में टेपरिकार्डर, लाउडस्पीकर एवं पुस्तकें सज-धज के साथ रखी जा सकती हैं। इसे कहीं भी खड़ी करके नुक्कड़ सभा का माहौल बनाया जा सकता है। सैकड़ों व्यक्तियों को युग संदेश सुनाने का पुण्य अर्जित किया जा सकता है।

(४) ज्ञान रथ, साइकिल के पहियों वाली, मन्दिर आकृति की गाड़ी, जिसे देवताओं की रथयात्रा के समतुल्य समझा जा सकता है। पुस्तकें रखने के लिये भी उसमें पर्याप्त स्थान है। लाउडस्पीकर के अतिरिक्त इसमें बैटरी भी लग जाती है, जिसे दिन भर चलाने के बाद इसी में फिट चार्जर द्वारा नये सिरे से शक्ति सम्पन्न किया जा सकता है।

उपरोक्त चार साधनों में से जिनके लिये जो अनुकूल पड़े, वे उसे ले सकते हैं और दो घण्टे समय लगाने भर से सौ व्यक्तियों को युग चेतना से अनुप्राणित कर सकते हैं। इनके मूल्य भी इतने सस्ते हैं कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधारण स्थिति का कोई व्यक्ति अपने बलबूते खरीद सके या अपने मित्र-सम्बन्धियों की सहायता से उनमें से जिसका चाहे जुगाड़ बना सके।

साप्ताहिक सत्संग अथवा जन्मदिवसोत्सव इन्हीं उपकरणों की सहायता से सरलतापूर्वक मनाये जाते रह सकते हैं। सप्ताह में एक दिन आयोजनों के लिये निकाला जाता रहे, तो समझना चाहिये कि छोटे ५४ दीप यज्ञ अकेले व्यक्ति ने अपने बलबूते सम्पन्न कर लिये।

उपरोक्त आयोजनों के माध्यम से हर दिन एक सौ व्यक्तियों से सम्पर्क होते रह सकता है। यदि यह क्रम नियमित रूप से चल पड़े, तो एक वर्ष में तीन हजार व्यक्तियों को युग संदेश से अवगत-अनुप्राणित करने का अवसर मिल सकता है। सोचा गया है कि सन् १९९० में एक लाख संदेशवाहक-अग्रदूत खड़े कर लिये जायेंगे और उनके माध्यम से नव-चेतना का इतना विस्तार किया जा सकेगा, तो पाँच वर्ष में एक करोड़ नहीं वरन् कई करोड़ इन सब आयोजनों में सम्मिलित हो सकेंगे।

यह अनुमान लगाने में किसी को भी कोई कठिनाई नहीं। शान्तिकुंज का एक अत्यन्त विशालकाय दीखने वाला संकल्प जब इतनी आसानी से पूरा हो सकता है, तो प्रक्रिया की चक्रवृद्धि गुणन प्रक्रिया अपनी तूफानी गति से इतने लोगों को लपेट में लेगी कि सृजन-शिल्पियों की जो कमी इन दिनों दीख रही है, उसकी पूर्ति इस प्रकार होगी मानो पतझड़ के बाद बसन्त आता है और सब कुछ नया एवं उल्लास भरा दीख पड़ता है।

युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री एवं अखण्ड ज्योति पत्रिका के वर्तमान सदस्यों के जन्मदिन, फोटो आदि इसी लिये मँगाये गये हैं कि भवितव्यता के अनुरूप उन्हें यह सुझाया जा सके कि उनके लिये भविष्य में कब, क्या कदम उठाने पर वे उपलब्धियाँ मिल सकेंगी, जो सहज ही हर किसी को हस्तगत नहीं हो पातीं।

एक लाख अग्रदूतों को इसी वर्ष प्रशिक्षित किया जाना है। इसलिये जिनमें उसके लिये उत्साह हो, उन्हें सन् १९९० में ही पाँच दिन के सत्र के लिये अपना स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए।

अन्तिम दायित्व जो निभाना ही चाहिए

भावी परिवर्तन में मानवी और देवी शक्ति का प्रचुर नियोजन अभीष्ट है। वह सब अपने बलबूते का न हो, तो इतना तो किया जा सकता है कि अपनी और अपने परिवार की समर्थता को तो पूरी तरह दाँव पर लगा ही दिया जाय। यह अपने वश की बात है। यही किया भी जा रहा है।

प्रतिभाओं को परिष्कृत करने, सूक्ष्म वातावरण को अनुकूल बनाने और सृजनात्मक प्रवृत्तियों को प्रचण्ड गति देने के लिए, युग संधि पर्व पर एक सुनियोजित ''धर्म यज्ञ'' शन्ति कुञ्ज हरिद्वार में आरम्भ किया जा रहा है। यहि निर्धारित अवधि तक नियमित रूप से चलेगा एवं उसकी पूर्णाहुति इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में एक करोड़ साधकों द्वारा सम्पन्न होगी।

हमें पूरा विश्वास है, कि प्रस्तुत युग संधि महापुरश्चरण की आध्यात्मिक प्रक्रिया और बहुमुखी सेवा-साधना का जो व्रत लिया है, उसे अपना परिवार पूरा करेगा ही। पत्रिकाओं के सदस्य एवं पाठक मिलकर ही अपना परिवार बनाते हैं। इनमें से सबका कार्य-क्षेत्र में उतरना सम्भव न हो, तो इतनी आशा तो की ही जा सकती है कि इस समुदाय के अधिकांश व्यक्ति अपनी अधिकांश क्षमता को नव-सृजन में नियोजित करेंगे और जितने में औसत नागरिक स्तर का निर्वाह चल सके, उतने भर से अपना काम चलायेंगे और बची हुई क्षमता इस महान् प्रयोजन में लगायेंगे।

युग संधि के इन वर्षों में अपना परिवार कितना कुछ कर सकेगा, इसकी एक मोटी रूप रेखा बनायी गई है और उसे कार्यान्वित करने की तत्परता चल पड़ी है।

एक लाख सृजन शिल्पी बनाए जा रहे हैं, हर परिवार पीछे एक सिख एक सैनिक, एक साधु निकाले जाने की परम्परा अपने समाज के कई वर्गों में चलती रही है। इस उत्साह को पुनर्जीवित किया जा रहा है। इतने व्यक्ति शान्तिकुञ्ज में प्रशिक्षित किए जा रहे हैं। उनका परिवार कोई कुटीर उद्योग अपनाकर निर्वाह चला लिया करे और परिवार की ओर से समाज को अर्पित किया व्यक्ति निश्चिन्ततापूर्वक सेवा-कार्य में लगा रहे, तो उसके लिए वेतन-व्यवस्था की चिन्ता न करनी पड़ेगी तथा दस-बीस पैसा और एक दो घण्टा समय नित्य अंशदान के रूप में निकालने की परम्परा भी आवश्यक कार्यों की पूर्ति कर दिया करेगी।

युग संधि पुरश्चरण की पूर्णाहुति सन् २००० के अन्त और इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में होगी। उसकी रूपरेखा बना ली गई है कि 'एक करोड़ भागीदार'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस महान् आयोजन में सम्मिलित होंगे। तब तक इतने भागीदार विनिर्मित हो चुके होंगे। वे जब एकत्रित होंगे और यज्ञ वेदी पर भावी क्रिया-कलापों का संकल्प लेकर लौटेंगे तो विश्वास किया जा सकता है कि अपने परिवार का वह पुरुषार्थ भी स्वर्ग से धरती पर गंगा को उतार लाने वाले भागीरथी प्रयास की समानता करेगा। शेष काम अन्य लोगों का है। युग निर्माण परिवार से बाहर भी तो असंख्या भावनाशील प्रतिभाएँ हैं, वे भी चुप क्यों बैठेगी? उनका प्रयास युग निर्माण परिवार से कम नहीं अधिक ही होगा और लक्ष्य तक पहुँचने की प्रक्रिया पूरी होकर रहेगी।

सन् १९५८ में गायत्री तपोभूमि मथुरा में सहस्र कुण्डी गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ था । उसमें उपस्थित लाखों साधकों को उनके हिस्से का काम बाँट दिया गया था। उसी धक्के का परिणाम है कि इतनी दूरी तक गाड़ी लुढ़कती चली गई है और इस बीच इतना कार्य बन पड़ा है, जिसका लेखाजोखा लेने वाले आश्चर्यचकित होकर रह जाते हैं। प्रयासों को अनुपम बताते हैं।

अब हमारे जीवन का अंतिम पुरुषार्थ युग संधि पुरश्चरण की पूर्णाहुति के रूप में चलेगा। एक करोड़ साधक भागीदार अपने जिम्मे, अगले दिनों करने के लिए जितना दायित्व स्वीकार करेंगे, उसे देखते हुए हिसाब लगाया जा सकता है कि सन् ५८ के समय लिये गये संकल्प की तुलना में वे पच्चीस गुने अधिक होंगे। अर्थात् नये २५ युग-निर्माण स्तर के प्रयास नये सिरे से चल पड़ेंगे और अधिकांश जन-समुदाय को नव चेतना से आन्दोलित करेंगे।

यह कहा जाता है कि सन् २००० तक वर्तमान प्रक्रिया का संचालन करने के लिए हम जीवित न रहेंगे, तब इतनी बड़ी योजना का कार्यान्वयन कैसे होगा? इस संदर्भ में हर प्रश्नकर्त्ता को ध्यान में रखना चाहिए, कि हमारे द्वारा बन पड़े परमार्थों में ९८ प्रतिशत दैवी चेतना करती रही है। इस शरीर से तो एक प्रतिशत जितना ही कुछ बन पड़ा है। अगले दिनों प्रेरक सत्ता अपना काम करेगी और जो हम जीवित रहकर कर सकते थे, उससे सैकड़ों गुनी सुव्यवस्था अपने बलबूते चला लेगी। चिन्ता या असफलता का अवसर किसी को देखने के लिये नहीं मिलेगा।

अगले दिन अति महत्त्वपूर्ण हैं, उनमें हमारे कन्धों पर आया भार भी कहीं अधिक बढ़ा है। उसे इस वयोवृद्ध स्थूल शरीर से कर सकना सम्भव न होगा। हाड़मांस की काया की कार्य-क्षमता सीमित ही रहती है। सूक्ष्म शरीर से हजार गुना काम अधिक हो सकता है। जूझने और सृजन के दुहरे मोर्चे पर जितनी लड़ाई लड़ेनी पड़ेगी, उसके लिए सूक्ष्म और कारण शरीर का आश्रय लिए बिना गुजारा नहीं। काया स्वस्थ होते हुए भी जिम्मेदारी बहुत अधिक बढ़ी है, इसलिए उसे छोड़कर शान्ति कुञ्ज काया का आश्रय अनिवार्य हो जाता है। समझा जाना चाहिए कि व्यापक क्रिया-कलापों का निर्वाह करते हुए भी हम शान्ति कुञ्ज और उसके साथ जुड़ी हुई जिम्मेदारियों को पूरा करने में तनिक भी प्रमाद नहीं बरतेंगे। सब कार्य यथावत् ही नहीं वरन् और भी अच्छी तरह सम्पन्न होते रहेंगे। एक करोड़ साधकों वाली पूर्णाहुति भी पूरी होकर रहेगी और उसके आवश्यक साधन भी जुट जायेंगे। हमें अपने हिस्से के कार्यों की चिन्ता है। परिजन अपनी जिम्मेदारी की चिन्ता करें तो इतना ही बहुत है।

वर्तमान परिजनों में से प्रत्येक से कहा गया है कि वे इन दिनों जितनी सेवा-साधना और ध्यान धारणा बढ़ा सकें, बढ़ा लें। साथ ही ''एक से पाँच, पाँच से पच्चीस'' वाले उपक्रम का भी ध्यान रखें। अभी तो सभी परिजन निजी जिम्मेदारी उठाने वाले भागीदार मात्र हैं। अगले दिनों उन्हें प्रेमी-साथी और बनाने हैं, तभी पूर्णाहुति के वर्ष तक पच्चीस कर सकेंगे। जिनके तत्वावधान में पच्चीस भागीदार होंगे, उन्हें संरक्षक गिना जायेगा और उनका स्थान अधिक प्रामणिक माना जायेगा। पच्चीस न भी बना सके तो भी कम से कम पाँच भागीदार यों हर किसी को बना ही लेने चाहिये; ताकि एक करोड़ की संख्या पूरी होने में कमी न पड़ने पाए।

उद्यान लगाने वालों की पीढ़ी दर पीढ़ी उसका लाभ उठाती रहती है। समझा जाना चाहिए कि युगसंधि पुरश्चरण को खाद-पानी देने वाले प्रयास तुलना में वे कहीं अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। उतना ही नहीं उनके पुण्य से उनकी अगली पीढ़ीयाँ भी मोद मनाती रहेंगी। इस अलभ्य अवसर से जो चूकेंगे, उन्हें यह पश्चाताप ही कचोटता रहेगा कि एक ऐतिहासिक सुयोग का अवसर आया था और हमने उसकी उपेक्षा कर उसे आलस्य प्रमाद में गँवा दिया । आशा की गई है कि वर्तमान परिजनों में से कदाचित ही कोई ऐसे रहें; जिनसे युग धर्म का वर्तमान निर्वाह न बन पड़े, जो समयदान अंशदान से जी चुरायें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तुत पुरश्चरण मात्र भारत तक सीमित नहीं है। इसमें अन्य देशों और धर्मों के लोग भी प्रसन्नता पूर्वक सम्मिलित हो सकते हैं।

युग-संधि की शक्ति-संचार साधना

सन् १९८० से २००० तक का समय नव-युग का संधिकाल है। देश-विदेश के ज्योतिर्विदों, वैज्ञानिकों एवं भविष्य दृष्टाओं ने यह सत्य एक स्वर से स्वीकार किया है। इस बीच ध्वंस और सृजन दोनों ही प्रक्रियाएँ तीव्र से तीव्रतर होंगी। ध्वंस की भीषण प्रतिक्रियाओं से बचाव और सृजन की मंगलमय उपलब्धियों के विस्तार के लिए भौतिक पुरुषार्थ पर्याप्त नहीं होंगे। उसके लिये व्यवस्थित, सुनियोजित, आध्यात्मिक पुरुषार्थ की आवश्यकता होगी, इस सुनिश्चित सत्य को भी आज हर विचारशील वर्ग स्वीकार कर रहा है।

युग-निर्माण योजना के अन्तर्गत इस महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिये युग-संधि महापुरश्चरण की अति प्रभावकारी साधना का सूत्रपात इस गायत्री जयन्ती २३ जून, ८० से कर दिया गया है। इस साधना की दो महत्त्वपूर्ण धाराएँ हैं—(१) नैष्ठिक साधकों द्वारा किया जाने वाला जप, तप युक्त साधनात्मक पुरुषार्थ। (२) दिव्य प्रयोजन की पूर्ति के लिए सत्पात्रों को दिया जाने वाला दिव्यानुदान-शक्ति-संचार। यह दोनों ही व्यक्तियों में देवत्व के उदय तथा धरती पर स्वर्ग के अवतरण के उद्देश्य को फलीभूत करने में असामान्य रूप से सक्षम हैं।

पहले घोषणा की गयी थी कि शक्ति संचार के दिव्य अनुदान का लाभ केवल नैष्ठिक उपासक के परिपूर्ण उत्तरदायित्व निभाने वाले व्यक्ति ही उठा सकेंगे। किन्तु अब ऐसी व्यवस्था बन गयी है कि अन्य जिज्ञासु साधक भी उसका लाभ प्राप्त कर सकेंगे। यहाँ इस अति दुर्लभ उपलब्धि को सर्वसुलभ सर्वजनीन बनाने वाले सूत्रों में मर्यादाओं का विवरण दिया गया है। जिन्हें आध्यात्मिक पुरुषार्थ पर विश्वास है तथा साधना के प्रति रुचि और उत्साह है, वे सभी व्यक्ति अति व्यस्तता के बीच भी इस प्रक्रिया का लाभ उठा सकेंगे। इसमें लिंग, आयु, जाति सम्प्रदाय आदि का कोई बन्धन नहीं है।

आत्मिक प्रगति के तीन आधार

विद्यार्थी को अच्छे नम्बर से उत्तीर्ण होने और उस सफलता के आधार पर उच्च पद पाने के लिए कई बातों पर आश्रित रहना पड़ता है। अपना निजी मनोयोग एवं परिश्रम तो सर्वप्रथम है ही, उसके बिना तो गाड़ी एक कदम नहीं बढ़ती, पर इसके अतिरिक्त भी अन्य दो साधन चाहिए। इसमें एक है—उपयुक्त शिक्षक एवं सुनिश्चित पाठ्यक्रम। दूसरा है — अभिभावकों का सहयोग, अनुदान। यह तीनों सुयोग जब बन पड़ते हैं तो सफलता सुनिश्चित हो जाती है। इनमें से एक आधार भी लड़खड़ाने लगे तो समझना चाहिए कि प्रगतिक्रम रुका और सफलता संदिग्ध हो गई। अपवाद रूप में तो कोई एकाकी मात्र अपने बलबूते भी बहुत कुछ कर सकता है, पर साधारण क्रम यही है। निजी पुरुषार्थ के अतिरिक्त साधन और सहयोग की भी हर प्रसंग में आवश्यकता पड़ती है। उसके न मिल सकने पर सुयोग्यों को भी असफलता का दुःख उठाना पड़ता है।

आत्मिक क्षेत्र की सफलता के सम्बन्ध में भी यही बात है। उसमें विद्यार्थी की तरह साधक को मनोयोग पूर्वक साधनात्मक पुरुषार्थ करना पड़ता है। उपयुक्त साधना विधि का सुनिश्चित पाठ्क्रम तथा अनुभवी मार्ग-दर्शक की भी आवश्यकता पड़ती है। इसी के साथ अभिभावकों के सहयोग की तरह दिव्यात्माओं के अनुदानों की संगति मिलानी होती है।

इसी प्रकार के साधनात्मक प्रयोग बड़े पैमाने पर गायत्री परिवार के अन्तर्गत बड़ी सफलता के साथ होते रहे हैं। युग संधि महापुरश्चरण के रूप में उसी दिशा में अधिक प्रखर तथा अधिक व्यापक कदम उठाया गया है। उसमें साधनात्मक पुरुषार्थ उपयुक्त साधना विधि एवं मार्ग-दर्शन और शक्ति-संचार के दिव्यानुदान की तीनों धाराएँ मिल कर आध्यात्मिक त्रिवेणी का निर्माण कर रही हैं। इसका लाभ बिना किसी भेदभाव के सभी उठा सकते हैं, पर उसके दर्शन और नियमों को अपनाकर ही आगे बढ़ाया जा सकता है। यहाँ उन्हें ही स्पष्ट किया जा रहा है।

साधनात्मक पुरुषार्थ के दो पक्ष हैं—एक श्रम, दूसरा मनोयोग। श्रम में स्फूर्ति और तत्परता होनी चाहिए। मनोयोग में तन्मयता, निष्ठा का समावेश होना चाहिए। अन्यथा इन दोनों का स्तर नहीं बनता और चिह्न पूजा होने जैसी स्थिति बनी रहती है। लकीर पिटते रहने को पुरुषार्थ नहीं बेगार भुगताना कहा जाता है। उसका प्रतिफल भी नगण्य ही मिलता है। साधना के क्षेत्र में भी उच्चस्तरीय पुरुषार्थ चाहिए। साधक को उपासना में साधन श्रद्धा और जीवन प्रक्रिया में उत्कृष्टता का अधिकाधिक समन्वय करना चाहिए। भजन-पूजन बेगार भुगतने की तरह क्रिया-कृत्य बन कर ही नहीं चलते रहना चाहिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वरन् उसमें सघन निष्ठा का समावेश होना चाहिए । इन दिनों युग पुरश्चरण का जो महान संकल्प चल पड़ा है, उसमें संख्या और समय स्वल्प है, पर निष्ठा का स्तर बढ़ाने पर पूरा जोर दिया गया है । कहा गया है कि उसकी नियमितता और आवश्यकता भोजन, शयन से कम नहीं वरन् अधिक ही अनुभव की जानी चाहिए और व्रत लिया जाना चाहिए कि भोजन या शयन से पूर्व निर्धारित साधना क्रम पूरा किया जायगा । किसी कारणवश बन नहीं पड़ा तो उसे छोड़ नहीं दिया जाना चाहिए, वरन् अगले दिनों साधन बढ़ा कर उसे पूरा किया जाना चाहिए । यह नैष्ठिक अनुशासन है । इसी को व्रत कहते हैं । व्रत के बिना साधना में शक्ति उत्पन्न ही नहीं होती । प्रत्यंचा खींचे बिना बाण की प्रखरता कहाँ दृष्टिगोचर होती है ?

साधनात्मक पुरुषार्थ में (१) उपासना का नियमित और निश्चित होना । (२) व्यक्तित्व में पवित्रता एवं प्रखरता का समावेश बढ़ना व (३)तपश्चर्या की संयम एवं सेवा शर्तों को पूरा किया जाना—यह तीन चरण हैं । साधक इन्हीं के सहारे इतना सशक्त बनता है कि अन्तराल से सिद्धिओं का उभार—संसार से सम्मान, सहयोग और अदृश्य जगत से दैवी अनुग्रह की विद्युत वर्षा होने लगे । इस वर्ष की नैष्ठिक उपासना में सप्ताह में एक दिन अस्वाद ब्रह्मचर्य एवं मौन की संयम साधना पर जोर दिया गया है । साथ ही नवसृजन के लिए अंशदान की उदारता बरतने में निष्ठावान रहना चाहिए । इन्हें तपश्चर्या की नीति अपनाने का अंगुलि निर्देश समझा जाना चाहिए। इन्हें मात्र कृत्य की तहर पूरा भर नहीं कर लिया जाना चाहिए, वरन् उन्हें तपस्वी जीवन के आधारभूत सिद्धान्त समझा जाना चाहिए और निरन्तर यह प्रयत्न करना चाहिए कि आदर्श व्यक्तित्व के अंग बनकर दबे देवत्व को उभारने का चमत्कर दिखा सकें ।

अध्यात्म क्षेत्र का आत्म-शोधन एवं आत्म-परिष्कार करना ही परम पुरुषार्थ है । इसी के लिए व्रत, संयम, तप के विभिन्न अनुशासन अपनाने पड़ते हैं। उपासना पद्धति में भी निष्ठा और नियमितता का अधिकाधिक समावेश करना पड़ता है । जो इन तथ्यों पर जितना अधिक ध्यान देता है वह उसी अनुपात से सच्चा साधक माना जाता है और उसी परिमाण से चमत्कारी सिद्धियाँ प्राप्त करता है । जो उस ओर ध्यान नहीं देते, मात्र उपासना कृत्यों को ही एब कुछ मान बैठते हैं, उनको बाल बुद्धि की जादूगरी में रस लेने वाला कहा जा सकता है । हाथों की हेरा-फेरी और जीभ की लपालपी भर से बाजीगर ही चमत्कार दिखा सकते हैं । जो इतना भी नहीं समझते कि सस्ते उपचारों से बड़े चमत्कार दिखाने वाले बाजीगर वस्तुतः खोखले होते हैं और बाल मनोरंजन करके पेट भरने मात्र की कमाई कर पाते हैं । साधना को जो बाजीगरी भर मानते हैं और देवताओं को छुट-पुट उपहार मनुहार से बरगलाये जा सकने जैसे मूर्ख मानते हैं वे भारी भूल करते हैं । तत्वतः आत्मिक क्षेत्र का पुरुषार्थ उपासना पद्धति और जीवन प्रक्रिया में उच्चस्तरीय निष्ठा का समावेश करते चलना ही है ।

गायत्री के परिजनों ने अपनी साधना में निष्ठा का समावेश करने का प्रयत्न सदा से किया है । अब युग-सन्धि की बेला में वे उस प्रयास को और भी अधिक तत्परता के साथ सम्पन्न करने जा रहे हैं । इन दिनों जागृत आत्माओं के कन्धों पर जो विशिष्ट उत्तरदायित्व आये हैं उनका निर्वाह कर सकने में नैष्ठिक साधना अपनाने पर बहुत जोर दिया जा रहा है । जो इस दिशा में जितने शौर्य पराक्रम कर सकेंगे वे उतने ही बड़े पुरुषार्थी कहे जायेंगे और आत्मिक प्रगति के सुनिश्चित परिणाम उत्पन्न करने वाले त्रिविध अवलम्बनों में एक अति महत्त्वपूर्ण पक्ष की पूर्ति करेंगे।

साधना के उपयुक्त पाठ्यक्रम तथा उसे पूरा कराने के लिए अनुभवी मार्ग-दर्शक सहयोग व्यवस्था से गायत्री परिवार से सम्बद्ध हर व्यक्ति परिचित हो रहा है । आज व्यस्ततम दिनचर्या एवं अनेक असुविधाओं के बीच भी चलायी जा सकने योग्य सुगम और प्रभावशाली साधना विधि सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति के पसन्द की है और उससे समुचित लाभ उठाया है । आध्यात्मिक जगत में फैली हुई भ्राँतियों के घटाटोप को चीर कर तर्क एवं विवेक सम्मत, श्रद्धा को जीवन्त बनाने वाले सूत्रों की खोज और स्थापना अपने आप में एक दुर्लभ सफलता है । लाखों व्यक्ति इसका लाभ नियमित रूप से उठाते रहे हैं । इसीलिए यह प्रक्रिया सूखी लकड़ी में आग की तरह फैलती जा रही है ।

भारतीय साधना पद्धति में अनादि काल से गायत्री साधना सर्वश्रेष्ठ साधना के रूप में चली आ रही है । मात्र इसी को गुरु-मन्त्र कहा गया है । अवतारों तक ने इसी के सहारे सफलता पायी है । मध्य युग में इस पर प्रतिबन्ध लग गया, यह और बात है, पर उसे किसी ने छोटा नहीं कहा । वर्तमान समय में जब ईश्वरीय चेतना 'प्रज्ञावतार' के रूप में अवतरित हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रही है, तब तो गायत्री साधना अनिवार्य आवश्यकता बन गयी है । गायत्री परिवार के सूत्रधारों ने सारे आर्षवाङ्मय के सार और अपनी दीर्घकालीन साधना के निचोड़ के रूप में जो साधना पद्धति विकसित की है वह अब प्रयोगों और प्रत्यक्ष प्रतिफलों के आधार भी इस युग के लिए अनुपम साधना के रूप में प्रतिष्ठा पा गयी है ।

इसी प्रक्रिया का नया संस्करण 'युग संधि महापुरश्चरण' के रूप में प्रयुक्त हो रहा है । शक्ति-संचार का दिव्य अनुदान इसी साधना का अंग है । इस अनुदान का लाभ नैष्ठिक उपासकों को स्वभावत: अधिक मिलेगा । पर जो किसी भी रूप में नियमित गायत्री साधना करेंगे उन्हें भी उसका पर्याप्त लाभ मिल सकेगा ।

जो नैष्ठिक साधक का परिपूर्ण उत्तरदायित्व वहन न कर सकें वे नियमित साधना अवश्य करें । उसमें भाव भरी उपासना, व्यक्तित्व में पवित्रता-प्रखरता की जीवन साधना तथा संयम सेवा का समावेश यह तीनों धाराएँ जुड़ी रहें । इससे उन्हें असाधारण सौभाग्य एवं आत्मिक प्रगति की उपलबिध हो सकेगी ।

इस साधना के भागीदार साधकों को समर्थ एवं समग्र मार्ग दर्शन तथा संरक्षण-सहयोग की सुविधा भी प्राप्त रहेगी । यह कोई नयी बात नहीं है । साधना के प्रति सच्चे अर्थों में जो निष्ठावान हैं, उन्हें सिद्ध पुरुषों के उच्चस्तरीय अनुदान मिलते हैं और वे स्वल्प पुरुषार्थ में भी उच्चस्तरीय सफलताएँ प्राप्त कर सकने में सफल होते हैं । विवेकानन्द को परमहंस का, शिवाजी को समर्थ का, चन्द्रगुप्त को चाणक्य का, विनोबा को गाँधी का अनुदान मिला और वे मूलत: अकिंचन होते हुए भी अन्तत: महान् बन सकने में सफल हुए ।

गुरु और शिक्षक में मौलिक अन्तर है । शिक्षक मार्ग-दर्शक भर होता है । बताने, पढ़ाने के उपरान्त उसकी जिम्मेदारी पूर्ण हो जाती है, किन्तु गुरु की गरिमा इतनी सीमित नहीं है, उसे शिष्य को प्रशिक्षण से भी अधिक अनुदान देना पड़ता है । अध्यापक कोई भी हो सकता है, पर अनुदान देने वाले अभिभावक तो भाग्यवानों को ही मिलते हैं । यदि यह आवश्यकता पूर्ण न हो सके तो मार्ग-दर्शन और पुरुषार्थ के दोनों आधार बन पड़ने पर भी एक बड़े महत्त्व का अवलम्बन अनुपलब्ध ही रह जाता है और उच्चस्तरीय सफलता संदिग्ध बनकर रह जाती है ।

कई व्यक्ति ऐसे सिद्ध पुरुषों की तलाश में रहते हैं, जिनके वरदान, आशीर्वाद से उनकी कठिनाई का हल निकले एवं अभीष्ट सफलताओं में सरलता हो सके । ऐसे सिद्ध पुरुष प्राचीनकाल में तो बहुत थे, पर अब भी उनका वंश नष्ट नहीं हुआ है । सत्पात्रों को उनकी सेवा सहायता अभी भी प्राचीनकाल की तरह उपलब्ध होती है ।

आत्मिक प्रगति का तीसरा अवलम्बन है— वरिष्ठों का अनुदान । छात्र की सफलता का उदाहरण देते हुए कहा जा चुका है कि उन्हें अभिभावकों का बहुमुखी सहयोग मिलना चाहिए । अध्यात्म क्षेत्र में जो साधक आचरण द्वारा अपने आपको दिव्यात्माओं का सम्बन्धी, सहयोगी, परिजन सिद्ध कर देते हैं, उन्हें उन दिव्य अभिभावकों का ईश्वर का बहुमुखी सहयोग अवश्य मिलता है । पुराणों एवं इतिहास में इसकी अगणित साक्षियाँ मिलती हैं । हनुमान, अंगद और नल-नील की चमत्कारी उपलब्धियाँ उनकी अपनी उपार्जित नहीं थीं वे अनुदान में मिली थीं । कुन्ती पुत्र पाण्डव जो पराक्रम दिखा सके वह उनका निज का नहीं देव प्रदत्त था । गंगा लाए तो भागीरथ ही थे, पर उस सफलता में उन्हें शिवजी का अनुदान कम नहीं मिला था । तपश्चर्याएँ ऐसे ही अनुदान, वरदान प्राप्त करने के निमित्त की जाती हैं ।

सर्वविदित है कि युग-निर्माण योजना के सूत्र संचालकों की अपनी उपार्जित आत्मिक सम्पदा जितनी है उससे असंख्य गुनी अनुदानस्वरूप मिलती है । यदि ऐसा न होता तो गोवर्धन उठाने और समुद्र सेतु बनाने जैसे जो महान् प्रयत्न चल रहे हैं, उनमें से एक भी अग्रगामी न हो सका होता ।

सामान्य स्थिति में ऐसे दुर्लभ अनुदान सहज ही नहीं मिलते, किन्तु कभी-कभी उन्हें मुक्तहस्त से वितरित किया जाता है । कुछ समय ऐसे होते हैं, जब साधकों को सिद्ध ढूँढने पड़ते हैं । कुछ समय ऐसे आते हैं जिसमें सिद्धों को साधक ढूँढ़ने पड़ते हैं । ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं । समय की आवश्यकता पूरी करने के लिए भगवान तूफान की तरह युगान्तरीय चेतना बनकर आते हैं और अपने प्रवाह में धूलिकणों और तिनकों तक को उछालकर गगनचुम्बी बनने का अवसर प्रदान करते हैं ।

सामान्य अवसरों पर सेना में भर्ती होने के लिए अनेक प्रकार की जाँच-पड़तालों में पास होना पड़ता है, तब जगह मिलती है । किन्तु देश पर शत्रु चढ़ आने की स्थिति में आपत्तिकालीन नियम बनते हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनिच्छुक वयस्कों को भी बलपूर्वक सेना में भर्ती होने के लिए विवश किया जाता है । युग-सन्धि ऐसी ही असामान्य बेला है जिसमें ध्वंस को सृजन में-दैत्य को देव में परिवर्तित करने के लिए सूक्ष्म और स्थूल जगत में कायाकल्प जैसी प्रक्रिया उफनती दृष्टिगोचर होगी । लोक-चेतना में भरी हुई अवांछनीयता की गलाई और उसकी उपयुक्तता के ढाँचे में ढलाई होने जा रही है । इसके लिए आध्यात्मिक भट्टी गर्म करने में समर्थ प्रचण्ड प्राण-प्रवाह के अनुदान की व्यवस्था अनिवार्य हो गई है ।

हिमालय के मध्यवर्ती आध्यात्मिक ध्रुव केन्द्र से युग-सन्धि के दिनों एक विशिष्ट प्राण-प्रवाह रेडियो प्रसारण की तरह, वर्षा मानसून की तहर उमड़ता रहेगा । उससे लाभान्वित होने के लिए सभी जागरूकों को आमन्त्रित किया गया है । युग पुरश्चरण के भागीदारों का साहस एवं उत्तरदायित्व अधिक होने के कारण उन्हें अनुदान भी उसी स्तर का मिलेगा, किन्तु जो इतना साहस न जुटा सकेंगे उन्हें भी अपनी पात्रता के अनुरूप हल्के स्तर के उपहार पाने का अवसर मिलेगा ।

अकाल पड़ने पर कुआँ खोदने आदि के लिए तकाबी बाँटने के लिए सरकारी अफसर स्वयं गाँव-गाँव घूमते हैं । इतना ही नहीं खोदने की सुविधा एवं जानकारी देते हुए प्रयत्नरत होने के लिए किसानों की खुशामद भी करते हैं । यों प्रत्यक्ष लाभ किसानों का ही है । पीने का पानी और सिंचाई का साधन मिलने से राहत उन्हीं को मिलती है, फिर भी सरकार जानती है कि समर्थ किसानों पर ही देश की खुशहाली निर्भर है। इसलिए तकाब लेने और कुएँ खोदते देखकर उन्हें भी कम प्रसन्नता नहीं होती । युग-सन्धि में हिमालय की दिव्य शक्तियाँ जो अनुदान वितरण कर रही हैं वे कई प्रकार की हैं और उनकी गरिमा का स्तर भी क्रमशः अधिकाधिक बढ़ा-चढ़ा है । जो उन्हें प्राप्त करेगा, वह आत्म श्रेय और दैवी अनुदान का दुहरा लाभ प्राप्त करने वाला सौभाग्यशाली होगा।

यह दुर्लभ अनुदान विशिष्ट उद्देश्यों के लिए है। इसका प्रथम उद्देश्य सृष्टि सन्तुलन बनाने की ईश्वरीय इच्छा को पूरा करना है । अवतरण इसी प्रयोजन के लिए होते हैं । अधर्म का उन्मूलन और धर्म का संस्थापन ही अवतारों का उद्देश्य रहा है । इन दिनों भी इसी उद्देश्य के लिए प्रज्ञावतार की युगान्तरीय चेतना गतिशील हो रही है । उसके अनुकूल वातावरण बन सके इसके लिए देव पक्ष का समर्थन करने वाले प्रवाह अदृश्य लोक से चल पड़े हैं ।

दूसरा उद्देश्य है संचित संस्कार सम्पदा वाले सत्पात्रों, जागरूकों को सामयिक श्रेय मिल सके । सूखी हुई दूब भी वर्षाऋतु आते ही हरी-भरी हो उठती है । यह उसका पुरुषार्थ नहीं सौभाग्य अनुदान है । सीप को मोती की उपलब्धि उसका पुरुषार्थ नहीं, समय का सुयोग एवं वरिष्ठ का अनुग्रह है । इसमें दाता और ग्रहीता दोनों की कृतकृत्य होते हैं । दुर्भाग्य और कुछ नहीं, पात्रता के अभाव का प्रतिफल मात्र है । विशेषतया ऐसे सुअवसरों की उपेक्षा करना तो एक प्रकार स्वयं अपनाया गया अभिशाप है ।

युगान्तरीय चेतना जागृतों का वरण करती है और उन्हीं के माध्यम से अपना प्रयोजन पूर्ण करती है। इन वरण - वाहनों का सौभाग्य अनन्तकाल तक सराहा जाता रहता है । प्रज्ञावतार की इस पुण्य बेला में, युग-सन्धि में भी ऐसा ही सुयोग सामने है उसमें जागृतों के लिए अनुपम अनुदानों का सुअवसर अनायास ही प्रस्तुत है । किन्तु उसके साथ सदा की तरह अभी भी पुण्य प्रयोजनों के लिए अनुदानों का उपयोग करने की शर्त जुड़ी हुई है । जो दूसरों की जेब काटकर अपनी मजेदारी का ताना-बाना बुनते रहते हैं उनके लिए तो यह सुयोग भी सन्तोषप्रद सिद्ध न हो सकेगा । देव समुदाय में प्रवेश करने की प्रामाणिक पात्रता तो उदात्त चरित्र, उदार व्यवहार के सहारे ही विकसित होती है ।

दैवी अनुदान उपलब्ध करने वालों की सूची तैयार की जा सके तो अनादिकाल से लेकर अद्यावधि एक भी ऐसा न मिलेगा जो उन वरदानों को पुण्य-प्रयोजनों में खर्च न करके अपनी वासना-तृष्णा की पूर्ति में लगातार बर्बाद करता रहा हो । जिनने ऐसी भूल की है या जिन देवताओं ने भूल की है उन दोनों को ही दुर्गति सहन करनी पड़ी है । भस्मासुर का प्रसंग सर्वविदित है जिसमें उपलब्धकर्त्ता और दानी दोनों को ही यातना और निन्दा का भागी बनना पड़ा था । रावण, कंस, हिरण्यकश्यप, मारीच ने दैवी-सिद्धियाँ प्राप्त करके उनसे निकृष्ट स्वार्थों की सिद्धि सोची तो उनका प्रयास परिश्रम लाभदायक सिद्ध न होकर हानिकारक परिणाम ही उत्पन्न कर सका, यही सनातन क्रम है । 'दैवी अनुदान दिव्य प्रयोजनों के लिए'—का अकाट्य सिद्धान्त जो सही रूप से समझ पाते हैं उन्हीं की सर्वाङ्गीण प्रगति में दैवी अनुकम्पा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का, गुरु कृपा का समुचित सहयोग बन पड़ता है । उन्हीं को सच्चा लाभ मिलता है ।

इन दिनों यह सुविधा अधिक सरलतापूर्वक असंख्यों को उपलब्ध हो रही है । वर्षा के दिनों नमी और हरितिमा का दृश्य अधिक स्थानों पर देखा जा सकता है । युग-सन्धियों में दैवी तत्वों को उभारने के लिए दिव्य अनुकम्पा वर्षा की तरह झरती है और जहाँ भी थोड़ी अनुकूलता पाती है वहीं अपनी उत्पादक शक्ति का परिचय देने लगती है । गड्ढे और नाले भी बिना प्रयास के भरे-पूरे दीखने लगते हैं । अवतारों के प्रकटीकरण की बेला में यह प्रवाह और भी तेजी से बहने लगता है । रीछ-वानरों ने, ग्वाल-वालों ने अपनी सदाशयता भर निश्चित की थी, इतने भर से उन्हें सामर्थ्य और श्रेय का अजस्र अनुदान मिलने लगा था, ठीक वैसा ही अवसर इन दिनों भी है।

उल्लेख किया जा चुका है कि उच्चस्तरीय अनुदानों का प्रवाह नव-निर्माण के महान् लक्ष्य की पूर्ति के उद्देश्य से प्रवाहित हो रहा है । युग-परिवर्तन की दो निर्धारणाएँ हैं—(१) मनुष्य में देवत्व का उदय (२) धरती पर स्वर्ग का अवतरण । इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जन-जन की मनःस्थिति में उत्कृष्टता का समावेश और परिस्थिति में आदर्शवादिता का समन्वय करना पड़ेगा । यही दो चरण हैं जिन्हें उठाते हुए निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचना सम्भव हो सकता है ।

युग सृजन का आधार चिन्तन में उत्कृष्टता और व्यवहार में आदर्शवादिता का समावेश करना है । यह दोनों ही कार्य उथले भौतिक दर्शनों के आधार पर चिरस्थायी रूप से सम्पन्न नहीं किये जा सकते हैं । इन्हें लालच, लुभा कर नहीं, श्रद्धा भरी सद्भावना जगाकर ही सम्पन्न कराया जा सकता है । यह कार्य वस्तुतः धर्म और अध्यात्म का है । भौतिक दर्शन के आधार पर समृद्धि सम्वर्धन में अमेरिका, रूस, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस आदि कितने ही देश आश्चर्यजनक परिमाण में सफल हुए हैं । इतने पर भी वहाँ सत्युग जैसी मनःस्थिति और परिस्थिति बनने के लक्षण कहीं भी दिखाई नहीं पड़ रहे । सर्व विदित है कि शालीनता के अभाव से समृद्धि उपयोगी नहीं रहती, कई बार तो वह दरिद्रता से भी अधिक विघातक बन जाती है । सम्पन्नता का अपना महत्त्व है किन्तु उत्कृष्टता की गरिमा तो उससे भी असंख्य गुनी बड़ी है ।

इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के उपरान्त युग-निर्माण योजना के प्रतिपादनों में सन्निहित दूरदर्शिता और सुख-सम्भावना में सन्देह करने की गुञ्जायश नहीं रह जाती । प्रस्तुत विभीषिकाओं को सुखद सम्भावनाओं में परिवर्तित करने के लिए वही किया जाना है जो युग सृजन अभियान के द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है ।

प्रतिपादनों के क्रियान्व्यय के लिए अग्रगमन का साहस करने वाले जागृत आत्माओं पर ही घुमा-फिरा कर वे समस्त उत्तरदायित्व आ जाते हैं जिनके द्वारा उज्ज्वल भविष्य को प्रत्यक्ष बनाया जाना है । तर्क और तथ्य की दृष्टि से युगान्तरीय चेतना का समर्थन करने वालों की कमी नहीं । पर कमी उस साहसिकता की है जो इस पुण्य प्रयोजन के लिए कुछ कर सकने का पराक्रम प्रदर्शित कर सके । परिस्थितियाँ असंख्यों की ऐसी हैं जो चाहें तो सरलतापूर्वक युग-सृजन के लिए, आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं, पर मनःस्थिति में विपन्नता भरी रहने के कारण वे बहानेबाजी करते और बगलें झाँकते देखे जाते हैं । आदर्श जब उभरते हैं तो विपन्न और व्यस्त लोगों से भी आश्चर्यजनक स्तर के सत्कर्म करा लेते हैं । इसके विपरीत जब अन्तःक्षेत्र सोया रहता है, तो सुयोग्य और सुविधा सम्पन्न भी मनसूबे भर बाँधते हैं, कुछ कर नहीं पाते ।

जागृत आत्माओं में उच्चस्तरीय आत्म-बल कैसे जागे ? और वे किस प्रकार सच्चे अर्थों में स्वार्थ परमार्थ की साधना करते हुए आत्म-सन्तोष एवं ईश्वरीय अनुग्रह के भागी बन सकें ? इसका उपाय युग प्रवाह के सूत्र-संचालकों को यह सूझा है कि सत्पात्रों को अतिरिक्त प्राण चेतना का अनुदान दिया जाय और उन्हें बाहर से सामान्य रहते हुए भी-भीतर से असामान्य बनाया जाय । शक्ति और प्रगति का मूलभूत आधार अन्तरंग में ही रहता है, इसे सभी विज्ञजन भीली-भाँति जानते हैं ।

अनुदान उपलब्ध करना और कराना भी अध्यात्म क्षेत्र की एक महान् परम्परा है । उसे साधनात्मक पुरुषार्थ से कम नहीं वरन् अधिक ही महत्त्व दिया जा सकता है । साधना दीर्घकालीन तपश्चर्या के आधार पर फलित होती है, किन्तु अनुदानों का लाभ तत्काल मिलता है । युग सन्धि की इस पुण्य बेला में उच्च सत्ता ने सत्पात्रों को दिव्य प्रयोजनों के लिए अनुदान वितरण का क्षेत्र और भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिक बढ़ा दिया है । अब तक वह नैष्ठिकों के लिए था, अब उसे जागृतों के लिए उपलब्ध किया जा रहा है ।

युग पुरश्चरण की नैष्ठिक भागीदारी लम्बे समय की है और उसके साथ कई प्रतिबन्ध भी जुड़े हुए हैं, इसलिए उसके निर्वाह का साहस सीमित व्यक्ति ही जुटा सकेंगे—यह निश्चित है । धार्मिकता और साधना के इतने बड़े क्षेत्र में इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए एक लाख साधकों का लक्ष्य रखा गया है और उतने भर लोगों से ही युग पुरश्चरण की दैनिक साधना २४० करोड़ जप बनाये रहने का व्रत लिया गया है । यह महापुरश्चरण सामूहिक अध्यात्म उपचारों के इतिहास में अनुपम और अद्‌भुत है । उस प्रयोग के सत्परिणाम भी दूरगामी होंगे । इतने पर भी यह मानना ही होगा कि यह सीमित लोगों द्वारा वातावरण अनुकूलन जैसे विशिष्ट प्रयोजन को लेकर किया गया उपचार है । सद्‌भाव सम्पन्न साधारण जनों को लाभ नहीं मिल सकेगा । क्योंकि वे नियमितता और निष्ठा के साथ जुड़ी हुई व्रतशीलता का निर्वाह उच्चस्तरीय मनोबल के अभाव में कर नहीं सकेंगे । ऐसे भी बहुत हैं जो कर तो सकते हैं, पर उसके लिए आवश्यक मनोबल न होने के कारण हिचकिचाते ही रहेंगे और वैसा साहस जुटा नहीं सकेंगे । इस वर्ग को द्वितीय श्रेणी के परिजन कहा जा सकता है । उन्हें पिछले निर्धारण के अनुसार युग-सन्धि में बहने वाले विशिष्ट प्राण-प्रवाह का वह अनायास लाभ नहीं मिल सकता जो युग पुरश्चरण के भागीदारों के निमित्त निश्चित हैं ।

इस द्वितीय वर्ग के असमंजस को ध्यान में रखते हुए इसी गायत्री जयन्ती (२३ जून) से एक नया निर्धारण किया गया है कि गायत्री परिवार के परिजनों में से कोई भी इस दिव्य अनुदान प्रवाह का सीमित लाभ उठा सकेगा और आत्मिक प्रगति के लिए जिस 'अनुदान' प्रयोजन की आवश्यकता पड़ती है उससे वंचित रहने का असमंजस सहन न करेगा । हल्के स्तर की उपलब्धि उनके लिए भी सुलभ हो गई है जो युग पुरश्चरण में तो सम्मिलित नहीं हो सके, किन्तु प्रज्ञा परिवार में सम्मिलित हैं और आत्म-कल्याण एवं विश्व-कल्याण के लिए कुछ करने की बात गम्भीरता पूर्वक सोचते रहते हैं । ऐसे लोगों के पैरों में गति और हाथों में प्रगति के सूत्र थमाने वाले अनुदान की आवश्यकता पड़ेगी । इसकी पूर्ति करने के लिए महाकाल ने नया कदम उठाया है और दिव्य उपलब्धि कराने वाली ध्यान धारणा का नया द्वार खोला है । इस सुविधा का लाभ अब बिना युग पुरश्चरण में सम्मिलित हुए भी सभी जागृत आत्माओं को मिल सकेगा । इसे युग सन्धि का असाधारण उपहार समझा जाना चाहिए और उससे लाभान्वित होने का परिजनों में से प्रत्येक को प्रयत्न करना चाहिए ।

अनुदानों का ग्रहण अभ्यास

इस प्रसारण का समय और उद्‌देश्य निर्धारित है—प्रातःकाल दिन निकलने से एक घण्टा पूर्व से लेकर ठीक सूर्योदय तक । रात्रि को दिन छिपने से एक घण्टा उपरान्त से लेकर तीन घण्टा रात्रि गये तक। प्रातः मात्र एक-एक घण्टा और रात्रि में दो घण्टे का समय इस वितरण और ग्रहण के लिए नियत हैं । प्रातः एकांकी ध्यान धारणा के लिए और रात्रि को सामूहिक साधना के लिए । जहाँ जैसी आवश्यकता और सुविधा समझी जाय वहाँ वैसा प्रबन्ध किया जाय । चूँकि दिन घटते-बढ़ते रहते हैं और सर्दी-गर्मी के बीच घड़ी घण्टों के समय की स्थिति में काफी अन्तर पड़ जाता है, इसलिए समय का निर्धारण सूर्योदय एवं सूर्यास्त के अनुरूप ही करते रहना चाहिए । इसमें घण्टे-मिनटों का अन्तर प्रायः हर महीने या हर सप्ताह करते रहने की आवश्यकता पड़ेगी ।

स्नान करके उपासना पर बैठने की उपयोगिता के सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते, किन्तु इस ध्यान धारणा में उसकी अनिवार्यता नहीं । नित्य कर्म से निपट कर बिना स्नान के भी इसे किया जा सकता है। रात्रि की सामूहिक साधना में तो हाथ-पैर धोकर बैठ जाना ही पर्याप्त है। आसन बिछा कर बैठा जाय । खाली जमीन पर न बैठें । ऊपर से आने वाली बिजली शरीर में प्रवेश करने के उपरान्त धरती में न उतर जाय, इसके लिए अवरोध आसन बिछाया जाना आवश्यक है । कुशा, चटाई, जूट, ऊन का हो तो और भी उत्तम है, अन्यथा कपड़े का आसन भी काम दे सकता है ।

साधक पालथी मारकर बैठें । पंच पात्र आदि अन्य किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं है । स्थान जहाँ तक हो सके खुला हवादार ही ढूँढा जाय। बन्द और घुटन के स्थान में दीवारों का अवरोध उत्पन्न होता है ।

सभी प्रकार की ध्यान साधना में 'ध्यान मुद्रा' बनाने का नियम है । उसका पालन इस विशिष्ट ध्यान धारणा में तो अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए । ध्यान मुद्रा के पाँच अनुशासन हैं—(१) स्थिर शरीर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(२) शान्त चित्त (३) कमर सीधी (४) हाथ गोदी में (५) आँखें बन्द । शरीर और मन की स्थिति इस स्तर की बना लेने के उपरान्त ही ध्यान योग की साधना सधती है ।

स्थिर शरीर का तात्पर्य है-देह को लकड़ी, पत्थर की की बनी प्रतिमा जैसी बना लेना । अङ्गों का ऐन्द्रिक संचालन रोक देना । श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन, निमेष-उन्मेष जैसी अनैच्छिक क्रियायें भर चलने देना । ऐसी स्थिति लाने के लिए शिथिलासन, शवासन, अर्धमृतक मूर्छित जैसी भावना करनी पड़ती है । शरीर की हलचलें जितनी कम होंगी-ध्यान उतना ही अच्छी तरह लगेगा । हिलते-जुलते, मटकते-फिरकते रहने से मन की चंचलता बनी ही रहती है ।

शान्त चित्त का अर्थ है—कल्पनाओं की उड़ानें बन्द करना-एकाग्रता । यह स्थिति तभी प्राप्त होती है जब किसी श्रेष्ठ के साथ अपने को गुथा देने की, घुला देने की भावना की जाय । 'स्व' को किसी विशिष्ट से तादात्म्य बना देने को ही समर्पण या लययोग कहते हैं। एकता ही एकाग्रता है । तन्मयता से ही चित्त शान्त होता है । इसका भोंडा उदाहरण समर्पित रतिक्रिया है। विषयानन्द की उपमा देकर ब्रह्मानन्द की सरसता का परिचय दिया जाता है । अपने 'स्व' को इष्टदेव की सत्ता में भावातिरेक के साथ गुथा दिया जाय । मन में मन को, प्राण में प्राण को, आत्मा में आत्मा को घुला देने का अभ्यास करें तो भक्ति-भाव की उच्च भूमिका उत्पन्न होती है और शान्त चित्त की मनःस्थिति बन जाती है । ईंधन का आग में, बूँद का समुद्र में, नमक का पानी में, जिस प्रकार विलय हो जाता है । दो शरीर जिस प्रकार एक प्राण बन जाते हैं, उसी स्तर की भावना इष्टदेव के साथ करने में जितनी सफलता मिलेगी वह उतना ही 'शान्तचित्त' का अनुभव करेगा। द्वैत ही चंचलता और अद्वैत ही एकाग्रता की भूमिका है । इष्टदेव का प्रथम निर्धारण सदगुरु के रूप में भी हो सकता है और प्रत्यक्ष परिचय होने के कारण उस माध्यम से अभ्यास और भी सरल पड़ता है ।

मेरुदण्ड सीधा रखना इसलिए आवश्यक है कि ब्रह्मरन्ध्र उत्तरी ध्रुव और मूलाधार-कुण्डलिनी के केन्द्र दक्षिणी ध्रुव हैं । दोनों के मध्य प्रवाह क्रम जारी रहने से ही इस संसार में समर्थता एवं सम्पन्नता विद्यमान है। इसमें अवरोध होने से सुव्यवस्था लड़खड़ाती है और विश्व-व्यवस्था में कई प्रकार की गड़बड़ी उत्पन्न होती हैं । ठीक यही बात मेरुदण्ड के सम्बन्ध में भी है । इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना के त्रिविधि प्राण-प्रवाह उसी में होकर चलते हैं । षटचक्रों के दिव्य भण्डार इसी मार्ग में सन्निहित हैं । इसी मार्ग को सीधा और साफ रखने के लिए मेरुदण्ड सीधा रखना योगाभ्यास का आवश्यक नियम है । कमर में दर्द होता हो तो सहारा लेकर जितना सम्भव हो, सीधा रखने का प्रयत्न करना चाहिए ।

हाथ गोदी में रखने के साथ दोनों हाथ खुले रहें। बायीं हथेली के ऊपर दाहिना हाथ रहे । कर्मेन्द्रियों में हाथ ही सबसे अधिक सक्षम हैं, वे दोनों मिलते हैं तो नमस्कार से लेकर पुरुषार्थ तक के समस्त काम मिलक भली प्रकार सम्पन्न करते हैं । साधना में भी दोनों के साथ होने से अन्तः विद्युत का एक उपयोगी सर्किट बनता है । ध्यान मुद्रा में यह स्थिति अतीव उपयोगी मानी गई है ।

आँखें बन्द करने के दो उद्देश्य हैं—एक है बहिर्मुखी वृत्तियों को अन्तर्मुखी बनाना । दूसरा है आँखों से निस्तृत होने वाले विद्युत प्रवाह को इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर बाहर बिखरने न देना । वाणी की मौन तपश्चर्या की तरह, आँखों को बन्द रखना भी नेत्र-तप माना गया है । चित्तवृत्ति अन्तर्मुखी होने से अन्तर्गत के वैभव को समझना और कहाँ क्या छिपा है ? इस जानकारी के आधार पर उसे प्राप्त करना तभी सम्भव होता है, जब उस क्षेत्र का पर्यवेक्षण किया जाय । बहिर्मुखी वृत्तियाँ बाहर ही उलझी रहती हैं । अतएव उस दिव्य भाण्डागार को देखने, समझने और उखाड़ने के लिए कुछ बन ही नहीं पड़ता नेत्र बन्द करना, अन्तर्मुखी होना अर्थात् अन्तर्गत में प्रवेश करना है । आत्मोकर्ष के लिए की जाने वाली ध्यान धारणा में सदा नेत्र बन्द रखे जाते हैं ।

अकेली ध्यान मुद्रा में भी यदि आत्मिक उत्कृष्टता और श्रेष्ठता के प्रति समर्पण की धारणा जारी रखी जाय तो उतने से भी ध्यान योग का सामान्य प्रयोजन भली प्रकार पूरा होता रह सकता है । इसके यदि हिमालय के मनुदानों का ग्रहण और धारण करने का उपक्रम भी चल पड़े तो सोने में सुगन्ध की स्थिति बन पड़ती है । पुरुषार्थ के रूप में ध्यान मुद्रा और अनुग्रह के रूप में अनुदान उपलब्धि का सुयोग बनने पर तो प्रगति का क्रम अनेक गुने वेग से द्रुतगति से चल पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तीन प्रकार के प्रवाह

इस अनुदान प्रवाहों के तीन स्तर हैं—(१) स्थूल चेतना के लिए प्राण-संचार कुण्डलिनी अनुदान (२)सूक्ष्म चेतना के लिए—ज्योति अवतरण दिव्य दृष्टि जागरण (३) कारण चेतना के लिए—ब्रह्म सम्पर्क अमृत । यह तीनों क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं । इन्हें कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग की साधना की सहज पूर्ति कर सकने वाले अनुदान कह सकते हैं । सत्कर्म, सद्ज्ञान और सद्भाव ही वे उपलब्धियाँ हैं जिनके सहारे मनुष्य को महामानव ऋषि और अवतार, अग्रदूत बनने का अवसर मिलता है । इनमें से जिसे अपने लिए जिस स्तर की आवश्यकता अनुभव होती हो वह उन्हें इन दिनों बिना किसी अड़चन के उपयुक्त मात्रा में उपलब्ध कर सकता है । प्राण ऊर्जा, दिव्य दृष्टि और सरल श्रद्धा के रूप में इन तीनों का अनुभव किया जा सकता है । साधना की भाषा में इन्हें क्रमशः कुण्डलिनी, ज्योति धारा एवं रसानुभूति के नाम से जाना जाता है । इन तीनों के ग्रहण केन्द्र क्रमशः ब्रह्मरन्ध्र, आज्ञाचक्र एवं हृदय चक्र में हैं । इन्हीं तीनों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहते हैं । समर्थता, प्रतिभा एवं वरिष्ठता यह इन तीनों क्षेत्रों की सिद्धियाँ हैं । इन्हीं हुण्डियों को बाजार में भुना कर मनचाही परिस्थितियों एवं सफलता को उपलब्ध किया जा सकता है । सिद्ध पुरुष अध्यात्म क्षेत्र की विभूतियों एवं क्षमताओं से सम्पन्न व्यक्ति को ही कहते हैं, फूलों का उद्यान लगा कर पाया जाने वाला लाभ इन दिनों इत्र उपहार की तरह अनायास ही मिल रहा है । इसे जो प्राणवान परिजन प्राप्त कर सकेंगे, निश्चय उन्हें सौभाग्यवान कहलाने का अवसर मिलेगा । तीनों धाराओं के विवरण इस प्रकार हैं—

(१) प्राण ऊर्जा स्फूर्ति—समर्थता साहसिकता, जीवन जैसे शब्दों से प्राण ऊर्जा, कुण्डलिनी शक्ति का परिचय कराया जाता है । यह सभी विशेषताएँ काय-कलेवर में सन्निहित रहती हैं । इसलिए इन्हें प्राण सामर्थ्य कहा जाता है । क्रियाशीलता, तत्परता, कर्मनिष्ठा इसी सामर्थ्य की परिणति मानी जाती है । सत्कर्म इसी के सहारे बन पड़ते हैं । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राण संचार प्रक्रिया है । इसे कुण्डलिनी जागरण का प्रथम सोपान समझा जा सकता है । जिन्हें यह क्षेत्र अभीष्ट हो उन्हें प्राण-प्रवाह के वितरण का लाभ लेना चाहिए ।

(२) ज्योति अवतरण का तात्पर्य है—तृतीय नेत्र उन्मीलन, दूरदर्शिता, विवेकशीलता का जागरण । ज्योति का अर्थ अध्यात्म क्षेत्र में सद्ज्ञान के लिए होता है । आत्म-बोध, तत्व-बोध एवं आत्म-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान की उपलब्धि के लिये ज्योति अवतरण की साधना की जाती है । तपों के सहारे अन्धकार में मुक्ति मिलती है और माया की ग्रन्थि खुलती है । आज्ञाचक्र को दिव्य-दर्शन का केन्द्र संस्थान माना गया है । शिव और दुर्गा की छवियों में तीन नेत्र हैं । दो सामान्य तीसरा भृकुटि स्थान पर दिव्य नेत्र । इसे गीता में दिव्य चक्षु कहा गया है और इसके सहारे विराट् ब्रह्म का दर्शन सम्भव बताया गया है । दिव्य दर्शन, दिव्य श्रवण, भविष्य ज्ञान, दूसरों को प्रभावित करने जैसी अनेक सिद्धियों का संस्थान इसी को माना गया है । प्रतिभा एवं प्रखरता यहाँ से उभरती है । यह सूक्ष्म शरीर का कार्य-क्षेत्र है, जिन्हें इस क्षेत्र की उपलब्धियाँ अभीष्ट हों उनके लिए ज्योति अवतरण के प्रवाह से सम्पर्क साधना चाहिए ।

रसानुभूति का तात्पर्य है आत्मा और परमात्मा के मिलन से मिलने वाली सरसता का रसास्वादन । ऋण और धन विद्युत प्रवाहों की तरह आत्मा और परमात्मा की सत्ताएँ हैं । जब भी दोनों का मिलन होगा, उमंग भरी फुलझड़ियाँ उड़ेंगी । बिजली के दो तार मिलने पर चिन्गारियाँ उठती हैं और करेन्ट जल पड़ता है । अध्यात्म क्षेत्र की फुलझड़ियाँ हैं—तुष्टि, तृप्ति, शान्ति । जिन्हें उत्साह, सन्तोष, आनन्द आदि के रूप में अनुभव किया जाता है ।

चिन्तन में उत्कृष्टता और चरित्र में आदर्शवादिता की मात्रा देखकर ही यह अनुमान लगाया जाता है कि किसे ईश्वर की कितनी समीपता प्राप्त हुई और कौन कितनी रसानुभूति कर रहा है । अमृतत्व इसी प्रकार की भाव सम्वेदना को कहा गया है । इस स्थिति में एक विशेष प्रकार का आवेश छाया रहता है, जिसमें उच्च स्तरीय निर्णय साहस एवं प्रयास कने में तनिक भी कठिनाई का अनुभव नहीं होता । परिष्कृत दृष्टिकोण ही स्वर्ग है । क्षुद्र समुदाय का लोक प्रवाह ही बन्धन है । उससे छुटकारा पाने और यथार्थतावादी अवलम्बन अपना सकने की साहसिकता का नाम 'मुक्ति' है । इन्हीं दोनों परम पुरुषार्थ एवं पूर्णता का प्रतिफल कहते हैं । यह चेतना का कारण क्षेत्र है । इसमें भाव सम्वेदनाएँ ही प्रधान रहती हैं । 'भक्ति' यही है । इस क्षेत्र का व्यक्ति योगी, यति, ऋषि, देवात्मा जैसी स्थिति तक जा पहुँचता है ।

इसी उच्चस्तरीय भूमिका को लक्ष्य मानने वाले आरम्भिक छोटे चरण उठाने की सामर्थ्य प्राप्त करने के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए रसानुभूति स्तर के वितरण से लाभान्वित हो सकते हैं । इन ध्यानों में से जिसे भी करना हो पन्द्रह मिनट से आरम्भ करना चाहिए । सप्ताह में एक मिनट बढ़ाते हुए आधा घण्टे तक पहुँचना चाहिए ।

जिस प्रकार सरस्वती, लक्ष्मी, काली के तीन बीज ह्रीं, श्रीं क्लीं का उपयोग गायत्री मन्त्र के साथ करते हुए बुद्धि, समृद्धि और सामर्थ्य की आराधना करते हैं, उसी प्रकार उपरोक्त तीनों वितरणों में से अपनी स्थिति और आवश्यकता को देखते हुए कोई भी साधना क्रम अपनाया जा सकता है, पर जो अपनाया जाय उसे जल्दी-जल्दी बदला न जाय । उतावले लोग चंचल मनःस्थिति में बार-बार अपना साधना क्रम बदलते हैं फलतः अपने श्रम को निरर्थक करते हुए संकल्प शक्ति को दुर्बल करते रहते हैं । अच्छा हो निर्धारण के समय शान्ति-कुंज हरिद्वार से परामर्श कर लिया जाय । जो इसकी आवश्यकता समझें, वे हर वर्ष गायत्री जयन्ती या बसन्त पर्व पर वर्ष में एक बार अपनी प्रगति का लेखा-जोखा भी भेज दिया करें । स्मरण रहे इस सन्दर्भ में परामर्श या उत्तर प्राप्त करने के लिए जवाबी पत्र भेजना अनिवार्य रूप से आवश्यक है ।

साधनाओं का उपक्रम इस प्रकार है । ध्यान अवधि में इन्हीं भावनाओं में निमग्न रहा जाय । क्रम पहले से ही याद कर लिया जाय ।

[१] प्राण संचरण [कुण्डलिनी स्फुरण]

* हिमालय के मध्यवर्ती अध्यात्म केन्द्र से उमड़ता दिव्य प्राण-प्रवाह ।

* शुभ्र चमकीले बादल जैसा प्रवाह साधक की ओर पहुँचना, साधक तक ।

* साधक ब्रह्मरंध्र द्वारा प्राण-प्रवाह का स्वागत, आकर्षण, अभिनन्दन ग्रहण, अवधारण, मस्तिष्क मध्य के सहस्रार चक्र में ।

* सहस्रार मस्तिष्क मध्य, मूलाधार मल-मूत्र छिद्रों का मध्य ।

* सहस्रार से मूलाधार तक, मूलाधार से सहस्रार तक, सहस्रार से मूलाधार तक, मूलाधार से सहस्रार तक प्राण ऊर्जा का मंथन, मेरुदण्ड मार्ग, मंथन-मंथन-मंथन ।

* मंथन से प्राण ऊर्जा की उत्पत्ति, अग्नि शिखा की जागृति, कुण्डलिनी में स्फूर्ति ।

* कण-कण में प्राण विद्युत, नस-नस में प्राण विद्युत, रोम-रोम में प्राण विद्युत, प्राण विद्युत कुण्डलिनी ।

* साधक प्राण पुंज—अग्नि पिण्ड प्राणवान ओजवान ।

ॐकार का पाँच बार गुंजन शङ्खनाद वत् ।

ॐतमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय मृत्योर्माऽमृतंगमय ।

* तीन बार । तमसो मा, तमसो मा, तमसो मा। ज्योतिर्गमय, ज्योतिर्गमय, ज्योतिर्गमय । शांति समाप्ति ।

[२] ज्योति अवतरण—दिव्य-दृष्टि जागरण

* हिमालय के अध्यात्म ध्रुव केन्द्र में स्वर्णिम सूर्योदय ।

* ज्योति किरणों का प्रसारण, पहुँच साधक तक।

* नमन-वन्दन-ग्रहण । आज्ञा-चक्र में । आज्ञा-चक्र भृकुटि केन्द्र, प्रवेश दिव्य-ज्योति का आज्ञाचक्र में दिव्य ज्योति प्रज्ञा ।

* कण-कण में ज्योति, नस-नस में ज्योति, रोम रोम में ज्योति, साधक ज्योतिवान, तेजवान, प्रज्ञावान ।

* रक्त ज्योतिवान्, मांस ज्योतिवान्, अस्थि ज्योतिवान्, स्थूल शरीर ज्योतिवान् ।

* मन ज्योतिवान, बुद्धि ज्योतिवान, चित्त ज्योविान, सूक्ष्म शरीर ज्योतिवान ।

* अन्तर्जगत ज्योतिवान, अन्तःकरण ज्योतिवान, अन्तरात्मा ज्योतिवान, कारण शरीर ज्योतिवान ।

* स्थूल शरीर ज्योतिवान् सूक्ष्म शरीर ज्योतिवान, कारण शरीर ज्योतिवान ।

साधक ज्योति पिण्ड, तेजपुज प्रज्ञापुंज ।

ॐकार का पाँच बार गुंजन शंखनादवत् ।

ॐतमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मां-सद्गमय, तामसो मा ज्योतिर्गमय, तीन बार ।

* तमसो मा, तमसो मा, तामसो मा, ज्योतिर्गमय ज्योतिगमय, ज्योतिर्गमय, शान्ति समाप्ति ।

[३] रसवर्षण [प्रभु मिलन]

* हिमालय के अध्यात्म ध्रुव केन्द्र से अमृत उफान-दूध झाग जैसा ।

* रस सिन्धु की हिलोरें—साधक तक ।

* नमन वन्दन ग्रहण, हृदय केन्द्र में प्रवेश भाव श्रद्धा का ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य १. ४.२६

* अमृत वर्षा घन-घोर अर्मत वर्षा, साधक रस विभोर, आनन्द से सरावोर ।

* कण-कण में अमृत, नस-नस में अमृत, रोम-रोम में अमृत ।

* समर्पण साधक का—परब्रह्म को विलय-विसर्जन, एकत्व, अद्वैत, भक्त भगवान एक ।

* पय पान, सोम पान, अमृत पान ।

* परिवर्तन-तमसा का उषा में, कामना का भावना में, जड़ता का चेतना में, क्षुद्रता का महानता में, आत्मा का परमात्मा में ।

* तृष्ण-तुष्टि-शान्ति ।

* साधक की अनुभूति सत्-चित् आनन्द, आत्म-दर्शन, ब्रह्म-दर्शन ।

* ॐकार गुंजन पाँच बार शङ्खनादवत् ।

ॐतमसो मा ज्योतिर्गमय, असतो मा सद्गमय, मृत्योर्माऽमृतंगमय । तीन बार ।

* तमसो मा, तमसो मा, तमसो मा, ज्योतिर्गमय, ज्योतिर्गमय, ज्योतिर्गमय शान्ति समाप्ति ।

तीनों ध्यानों में आत्मोत्कर्ष एवं वातावरण अनुकूलन के दोनों ही लाभ उठाए जाने चाहिए । प्रारम्भ में ध्यान मुद्रा में स्थित हो । उसके बाद शक्ति संचार—दव्यि अनुदान के लिए तीन में से अपने लिए चुना गया ध्यान करें । वातावरण अनुकूलन के लिए सद्भाव संचार छोड़ें । वातावरण अनुकूलन के लिए संचार में पंच ॐकार गुंजन तथा तमसो मा ज्योतिर्गमय आदि उच्चारण के साथ किया जाता है । व्यक्तिगत ध्यान में साधक स्वयं बोलें । समूहिक में यदि बाह्य निर्देश टेप या स्वयं या व्यक्ति द्वारा दिया जा रहा है तो सब लोग न बोलें निर्देश के स्वर के साथ अपनी भाव संगति करें । भावना करें कि दिव्य अनुदानों से समर्थ हुआ अन्तःकरण कृतज्ञता व्यक्त करते हुए वातावरण के अनुकूलन के लिए अपनी विनम्र आहुति डाल रहा है । सद्भाव तरंगें सूक्ष्म जगत में विक्षोभों विकारों का शमन तथा सदाशयता की वृद्धि कर रही है ।

यह तीनों ही धाराएँ अभ्यास में अति सरल एवं सर्वथा हानि रहित हैं । इन्हें बाल-वृद्ध, नर-नारी, रुग्ण-स्वस्थ कोई भी कर सकते हैं । यथा सम्भव शरीर और वस्त्रों की शुद्धि करके ही बैठाना चाहिए । व्यक्तिगत उपासना में उत्तर मुख बैठने का प्रयत्न किया जाय । किन्तु सामूहिक साधना में वैसा प्रतिबन्ध नहीं। वहाँ बैठने की सुविधा को ही प्रधानता देनी चाहिए ।

इस साधना क्रम को सभी जाग्रत आत्माएँ बिना किसी धर्म सम्प्रदाय का भेदभाव किये अपना सकती हैं। गायत्री उपसना का न्यूनाधिक क्रम चलता रहे तो इसका लाभ विशेष मिलता है । न करने पर भी हानि या रुकावट कुछ नहीं है । गायत्री परिवार के सभी परिजन इस उपक्रम का आरम्भ तत्काल कर दें । जहाँ सद्यमूहिक साधना की सम्भवना हो वहाँ दैनिक न सही साप्ताहिक या मासिक रूप से इसे चलाया जा सकता है । इस अनुदान का लाभ अपनी ग्रहण शक्ति के अनुरूप न्यूनाधिक मात्रा में हर कोई उठा सकता है। इसलिए उसका प्रसार प्रशिक्षण करने में कोई हर्ज नहीं है। ध्यानकर्त्ता अपना नामांकन शान्तिकुञ्ज में करालें और समय-समय पर अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए परामर्श प्राप्त करते रहना चाहें, तो अधिक मात्रा में अधिक उच्चस्तर का उपयुक्त अनुदान मिलने की अधिक सम्भावना रहेगी । ●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शान्ति-कुंज और उसका प्रज्ञा-अभियान

नव-सृजन का एक विनम्र, किन्तु समर्थ प्रयासः प्रज्ञा अभियान

जन-मानस का परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन प्रज्ञा-अभियान के लक्ष्य और कार्यक्रम हैं। इन्हीं की सुखद सम्भावनाओं के लिए मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण कह कर जन-साधारण को उत्साहित किया जाता रहा है। भावनात्मक परिवर्तन, परिष्कार के अनेकानेक प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रम इस उद्देश्य को लेकर गतिशील हो रहे हैं ।

प्रज्ञा-अभियान के तत्वावधान में दो सूत्र संचालक केन्द्र क्रियाशील हैं—मथुरा में गायत्री तपोभूमि तथा हरिद्वार में शान्ति-कुंज। दोनों एक ही निर्धारण के दो प्रयास हैं। कार्यकर्त्ता विभाजन की सुविधा के लिए ही दो स्थान रखे गये हैं और दो नाम दिये गये हैं।

गायत्री तपोभूमि का कार्य युग निर्माण योजना के नाम से चलता है। मथुरा वृन्दावन रोड पर उसकी तिमंजली और सुविस्तृत भव्य इमारत है। इसमें प्रेस, प्रकाशन, स्वावलम्बी समाज कवियों का प्रशिक्षण, व्यापक कार्य-क्षेत्र में सृजन शिल्पियों का संगठन और जनजागरण का, सृजनात्मक सत्प्रवृत्ति संवर्धन का सुविस्तृत प्रयास चलता है।

अब से ५० वर्ष पूर्व किसी प्रयोजन के लिए हिन्दी ''अखण्ड-ज्योति'' प्रकाशित की गयी। यह मासिक पत्रिका मात्र नहीं हमारी चिन्तन चेतना का नवनीत था, जिसकी प्रेरणा सतत् हमें दुर्गम हिमालय से मिलती थी। आरम्भ में इसकी ५०० प्रतियाँ छापी गयीं। स्वयं सेवक स्तर पर घर-घर जाकर बाँटने का क्रम बनाया गया। अब वह उसकी अपेक्षा ५०० गुनी अधिक; अर्थात् ढाई लाख से अधिक की संख्या में छपने लगी है। क्रमशः बढ़ते-बढ़ते १९८९ के अप्रैल माह तक उसकी ग्राहक संख्या तीन लाख आ पहुँची है। अध्यात्म तत्व-दर्शन का विज्ञान सम्मत प्रतिपादन, विज्ञान को नयी दिशा देने वाले समन्वयात्मक तथ्य परक लेखों का संकलन, मनुष्य में छिपी अनन्त संभावनाएँ व उनके विकास के विधि-उपचारों के सम्बन्ध में इस पत्रिका में प्रस्तुतीकरण किया जाता है। जिसने भी इसे पढ़ा है, उसे न केवल लेखन शैली ने प्रभावित किया है, वरन् गूढ़ समयानुकूल प्रतिपादनों ने नयी प्रेरणा भी दी है।

दूसरी पत्रिका आज से २७ वर्ष पूर्व '*युग निर्माण योजना*' नाम से आरम्भ की गयी। इस विषयवस्तु की परिधि वह थी, जो अखण्ड-ज्योति की सीमा में नहीं आती थी। परिवार एवं सामाजिक निर्माण के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले प्रतिपादनों का प्रचार-प्रसार यह पत्रिका करने लगी। देखते-देखते यह भी ७० हजार छपने लगी। गुजराती, मराठी, उड़िया, तमिल, तेलगू भाषा के संस्करण बड़ी संख्या में पाठकों के समक्ष पहुँच रहे हैं। इनमें गुजराती पत्रिका युग-शक्ति नाम से डेढ़ लाख से भी अधिक की संख्या में प्रकाशित हो रही है। गुरुमुखी, बंगला एवं अँग्रेजी संस्करण प्रकाशित हुए, पर उनकी व्यवस्था ठीक तरह बन न पाने का कारण उन्हें पुस्तकाकार रूप में समय-समय पर प्रकाशित किए जाने की व्यवस्था बना ली गयी । इस प्रकार पत्रिकाओं के जो संस्करण छपते हैं, उनकी संख्या चार और पाँच लाख के बीच रही है। हर पत्रिका को न्यूनतम पाँच पाठक पढ़ते हैं। इस प्रकार वे सभी मिलकर प्रायः पच्चीस लाख व्यक्तियों की विचार चेतना को हर माह झकझोरती है।

बिना विज्ञापन लिए, बिना अर्थ याचना किए, मात्र अपनी उपयोगिता और पाठकों की सहयोगी सद्भावना के सहारे यह ग्राहक संख्या बढ़ी है। मात्र कागज, छपाई एवं डाक खर्च का ही भार इस प्रकाशन पर पड़ता है एवं नो प्रोफिट नो लॉस' प्रक्रिया पर अखण्ड-ज्योति, युग-शक्ति, गुजराती, युग-निर्माण योजना हिन्दी, सतत् प्रकाशित हो रही हैं एवं विज्ञापन न लेने का अपना संकल्प दुहराती हुई दूने उत्साह से पाठकों के बीच पहुँच रही हैं।

यह एक उदाहरण है कि बड़ी प्रतिभाएँ यदि बड़े साधनों से बड़े क्षेत्र में यह कार्य करें, तो विचार क्रान्ति की प्रथम आवश्यकता की पूर्ति हो सकना, किसी भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रकार असम्भव नहीं रह सकता। जब एक व्यक्ति अपने श्रेय समर्पण से इतना कुछ कर सकता है, तो ऐसे ही अनेकों की श्रम साधना कितने बड़े क्षेत्र को प्रभावित कर सकने वाली सफलता प्रस्तुत कर सकेंगी, इसका अनुमान लगा सकना किसी के लिए भी कठिन नहीं होना चाहिए।

साहित्य क्षेत्र में स्थायी महत्त्व की पुस्तकों की भी आवश्यकता है। पत्रिकाएँ पुरानी हो जाने पर उनका महत्त्व कुछ कम हो जाता है। शान्तिकुंज के माध्यम से एवं युग-निर्माण-योजना द्वारा युग-साहित्य के अन्तर्गत प्रायः ढाई हजार से अधिक पुस्तकें अब तक छपी हैं। ये समस्त-मानव, परिवार समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओं पर हैं। देश की अधिकांश भाषाओं में उनके अनुवाद हुए हैं। कई-कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं .। मूल्य के सम्बन्ध में वही निश्चित नीति है, 'न नफा न नुकसान'। गरीब देश का, देहात परिकर का पाठक बड़ी मूल्यों की पुस्तकों का लाभ नहीं उठा पाता। प्रचार इसी आधार पर बन पड़ा है, कि जिसने भी पढ़ा उसने दूसरों को पढ़ाया और उन्हें खरीदने के लिए उकसाया। झोला पुस्तकालय को कंधों पर लादे, पाठक अपने परिचय क्षेत्र में निकलते हैं। दूसरों को पुस्तकें पढ़ने देने और वापस लेने जाते हैं। कोई उत्साह दिखाता है तो बेच भी देते हैं। यह कार्य विशुद्ध सेवा-भावना से होता है। इसलिए कमीशन की उलझन खड़ी नहीं होने पाती। ईसाई मिशन और कम्युनिस्ट प्रचारक अपना साहित्य प्रायः इसी प्रकार फैलाते रहे हैं।

पत्रिकाएँ और पुस्तकें कितना क्रान्तिकारी कार्य कर सकती हैं, यह अब तक की इनकी भूमिकाओं से स्पष्ट हो गया है। एक व्यापक परिकर के लोगों को बड़े प्रयास अपनाने की प्रेरणा देकर, विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों के लिए विचार संशोधन और संवर्धन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण प्रस्तुतियाँ इन पुस्तकों के माध्यम से की जा सकती हैं। इस प्रकार व्यापक परिवर्तन का आधार बन सकता है।

मथुरा केन्द्र के अन्तर्गत प्रगतिशीलता उभारने वाला सत्-साहित्य प्रचुर परिमाण में विनिर्मित किया गया है। इसके अतिरिक्त धर्मतन्त्र का दर्शन और कर्मकाण्डों का स्वरूप प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ हैं। व्यवहार में अध्यात्म का समावेश करने वाली पुस्तकों की संख्या एक हजार से ऊपर है। इसके अतिरिक्त आदर्श वाक्यों के सैकड़ों प्रकार के छोटे-बड़े पोस्टर लाखों की संख्या में छपते हैं। इन्हें लोग अपने घरों पर, सामान पर टांगते, चिपकाते गौरवन्वित होते हैं। इस नगण्य से प्रयास द्वार करोड़ों को युगान्तरीय चेतना का परिचय एवं आलोक मिलता है। वह सभी साहित्य घर-घर पहुँचाने के लिए चल पुस्तकालयों के रूप में ज्ञान रथ एवं व्यक्तिगत प्रयास में झोला पुस्तकालय चलाते हैं। इनका प्रमुख कार्य है पढ़ाना, वापिस लेना, साथ ही उत्सुकों को बेच भी देना। इन माध्यमों से यह प्रज्ञा साहित्य करोड़ों तक पहुँचता है और जो पढ़ते हैं उन्हें चरित्रवान् तथा सृजन प्रयत्नों में सहयोग देने के लिए प्रेरित करता है। इन प्रयासों का विस्तार सम्भालने के लिए गायत्री तपोभूमि मथुरा में ही चौदह कर्मचारियों का बड़ डाकखाना है। साथ ही शिड्यूल बैंक की शाखा भी। यह दोनों ही स्थापनायें निरन्तर गायत्री तपोभूमि के काम में ही लगे रहते हैं। आटोमैटिक मशीनें और जेनरेटर की सहायता से यह मुद्रण प्रकाशन अपने ढंग का अनोखा है। रचनात्मक साहित्य का इतना विस्तार ईसाई मिशन को छोड़कर कदाचित् ही अन्यत्र कहीं देखा जा सके।

रचनात्मक कार्यों के लिए स्ववलम्बी कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में तैयार करने के लिए गायत्री तपोभूमि में एक वर्ष का उद्योग प्रशिक्षण चलता है, जिसमें हर जगह चल सकने वाली, संतोषजनक आजीविका देने वाले कितने ही उद्योग सिखाए जाते हैं। साथ ही उन्हें चरित्र-निर्माण तथा रचनात्मक कार्यों की, भाषण, सम्भाषण, गायन, वादन, की शिक्षा दी जाती है। इस आधार पर प्रायः सौ नये कार्यकर्त्ता हर वर्ष निकलते हैं और स्वावलम्बन पूर्वक आजीविका चलाते हुए वन सृजन में संलग्न होते हैं।

हरिद्वार के शान्ति कुञ्ज आश्रम में उपयुक्त पत्रिकाओं का सम्पादन होता है। तर्क, तथ्य और धर्म धारणओं के प्रगतिशील स्वरूप का निर्माण करने वाला यह साहित्य अपने ढंग का अनोखा है।

जन मानस को झकझोरने और उलटे को उलट कर सीधा करने में समर्थ दूसरा पक्ष है वाणी। सत्संग, प्रवचन-गोष्ठी, सभायें, विचार-विनिमय, सत्र समारोह आदि इसी के अन्तर्गत आते हैं। शांति-कुंज में, पिछले लम्बे समय से, वर्ष भर एक-एक माह के युग शिल्पी सत्र तथा ९-९ दिन के संजीवनी विद्या के प्रतिभा संवर्धन सत्र चलते आ रहे हैं, जिनमें अब तक पाँच लाख से भी अधिक व्यक्ति भाग ले चुके हैं। युग शिल्पी सत्र जो १-१ माह के होते हैं में प्रचारक स्तर की योग्यता उत्पन्न की जाती है। सुगम संगीत, सुगम वाद्ययंत्र, कथा प्रवचन, स्लाइड प्रोजेक्टर, वीडियो

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि के माध्यम से आदर्शवादी प्रचलनों की, दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन, स्टीकर आन्दोलन, दीप यज्ञों के माध्यम से बिना खर्च के बड़े और प्रभावी समारोह स्तर की विधि व्यवस्था इन्हीं सत्रों में सिखा दी जाती है। प्रतिभागी सत्रार्थियों के निवास, भोजन, शिक्षण आवश्यक उपकरण आदि की समुचित व्यवस्था यहाँ है। अपने अभ्यास व प्रशिक्षण के आधार पर ये प्रचारक जहाँ जाते हैं, वहाँ भीड़ एकत्रित कर, लोकरंजन से लोकमंगल-जन जागरण का प्रयोजन पूरा करते हैं। जो प्रतिपादन गले उतारना है, उसे सुगम संगीत के माध्यम से प्रस्तुत करते रहते हैं व हजारों की संख्या में जनता इन आदर्शवादी प्रकरणों को सुनने आती है। स्थायी स्तर पर हर वर्ष प्राय: साढ़े तीन हजार प्रचारक इस सत्र पद्धति के अन्तर्गत विनिर्मित हो जाते हैं।

जिनके पास समय कम है, वे नौ दिन के सत्रों में जीवन साधना विषयक संजीवनी विद्या का ज्ञान प्राप्त करने, अपनी मन:शक्ति का सम्वर्धन करने के निमित्त आते हैं। ये सत्र अलग से चलते हैं व उनकी संख्या प्राय: पाँच सौ से एक हजार के बीच हो जाती है। ये कार्यकर्त्ता भी क्षेत्रों में जाकर प्रचारक की भूमिका निभाते हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधान एवं प्रयोग परीक्षण के लिए शान्ति-कुञ्ज का ब्रह्मवचस्स शोध संस्थान चलता है। विश्वव्यापी लोक मानस का प्रवाह उलटने की दृष्टि से इस संस्थान के प्रयास अगले दिनों भागीरथी प्रयत्नों के समतुल्य आँके जायेंगे। अध्यात्म और विज्ञान का तत्वदर्शन और कर्मयोग का समन्वय करने वाले यह प्रयत्न जनमानस के परिष्कार में असाधारण योगदान करेंगे। ऐसा निकटवर्ती लोगों की सुनिश्चित मान्यता है। आधुनिकतम यन्त्रों से सुसज्जित, अपने विषयों के उच्च शिक्षा से निष्णात कार्यकर्त्ता इस संस्थान को उत्साह प्रगति के साथ चला रहे हैं। यज्ञ विज्ञान द्वारा शारीरिक, मानसिक रोगों का निवारण तथा अध्यात्म का प्रत्यक्ष जगत पर प्रभाव प्रस्तुत शोध प्रयासों के प्रमुख विषय हैं। जड़ी बूटी उद्यान में दुर्लभ औषधियाँ उगाई जा रही हैं। उसके प्रभाव का नये सिरे से पर्यवेक्षण किया जा रहा है।

अन्तर्ग्रही प्रभाव का पृथ्वी के पदार्थों, प्राणियों तथा परिस्थितियों पर क्या प्रभाव पड़ता है? सौर मंडल की कब क्या स्थिति रहती है? इसकी जाँच पड़ताल के लिए एक छोटी, किन्तु प्रमुख सभी आवश्यक उपकरणों से सम्पन्न वेधशाला शान्ति-कुञ्ज में निर्माणाधीन है। अन्तर्ग्रही परिस्थितियों के अच्छे प्रभाव से लाभान्वित होने और बुरे प्रभाव से बचने का मार्ग ढूँढ निकालना इस वेधशाला कक्ष का प्रमुख उद्देश्य है।

देवात्मा हिमालय का, भागीरथ गंगा का भावनात्मक एवं तथ्य परक स्वरूप प्रस्तुत करने वाला देवालय शान्ति-कुञ्ज की अपनी विशेषता है। आद्य शक्ति गायत्री का मंदिर, अखण्ड गायत्री जप का कक्ष, नित्य दो घंटा यज्ञ एवम् अखण्ड अग्नि से सम्पन्न नौ कुण्डी यज्ञशाला के सम्पर्क में आने वाले उपयोगी भाव श्रद्धा अर्जित करते हैं। भारत के समस्त प्रमुख तीर्थों का दर्शन कराने वाली चित्र गैलरी दर्शकों की श्रद्धा को सृजन प्रयोजनों के साथ जोड़ने में बहुत हद तक सफल होती रहती है।

शान्ति-कुंज में आर्थिक स्वावलम्बन के लिए कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था बनाई गई है। इसके द्वार महिलाएँ अतिरिक्त आजीविका से पूरे परिवार को इतना सहारा देने का प्रयत्न करती हैं, कि घर का एक व्यक्ति निरंतर समाज निर्माण के कार्यों में लगा रहे।

प्रज्ञा परिवार के लाखों परिजन अपनी व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षेत्र की अगणित समस्याओं पर परामर्श प्राप्त करने के लिए निरन्तर पत्र लिखते रहते हैं। सघन आत्मीयता जुड़ने पर ऐसा होना स्वाभाविक भी है। सभी के उत्तर चौबीस घंटे के भीतर भिजवाने का प्रबंध है। इस विभाग को एक प्रकार से जीवन प्रगति का पत्राचार विद्यालय ही कहा जा सकता है।

शांति-कुंज के तत्वावधान में देश के कौने-कौने में प्राय: २४०० छोटे-बड़े प्रज्ञा संस्था स्थापित हैं। इनमें अपनी इमारतें हैं। हर संस्थान में न्यूनतम दो कार्यकर्त्ता नियुक्त हैं। सहयोग, समयदानी तो इन सभी में सैकड़ों हैं। यह समुदाय अपने-अपने क्षेत्र में नव-जागरण एवं सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के दुहरे क्रिया-कलापों में संलग्न रहता है। जीवन के उत्तरार्द्ध को लोक मंगल में लगाने की वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित किया गया है। फलत: निवृत्त वर्ग में से हजारों की संख्या में हर वर्ष नये समाज सेवी उपलब्ध होते रहते हैं। इनकी एक-एक महीने की ट्रेनिंग शान्ति-कुंज में होती रहती है।

सुविस्तृत मिशन की स्थानीय एवं केन्द्रीय गतिविधियों को अर्थ-व्यवस्था का एक ही उद्गम स्रोत है और वह है। प्रज्ञा परिजनों का नियमित अंशदान। सहयोगियों में से प्रत्येक पुरुष को दस पैसा नित्य ज्ञान घट में और प्रत्येक नारी को एक मुट्ठी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनाज धर्म घट में जमा करते रहने के लिए कहा गया है जिसे सभी भावनाशील श्रद्धा पूर्वक निभाते हैं। इसी राशि से २४०० प्रज्ञा संस्थानों का, नियुक्त कार्यकर्त्ताओं का तथा रचनात्मक कार्यक्रमों के अन्यान्य निर्धारणों का काम मंथर गति से, किन्तु संतोषजनक और उत्साहवर्धक क्रम में चलता रहता है।

शान्ति-कुंज के नीति निर्धारण व्यवस्था क्रम अर्थतन्त्र के सात उच्चस्तरीय प्रबुद्ध प्रतिभाएँ आश्चर्यजनक संख्या में जुड़ी हुई हैं। वे अपना उत्तरदायित्व अहर्निशि सतत् सतर्कता बरतते हुए निभाती हैं। शोध, शिक्षण और प्रचार प्रक्रिया के विविध पक्षों को कार्यान्वित करने में संलग्न व्यक्तित्व तो हाथ पैरों की तरह अपना कार्य सम्पादन करते हैं, परन्तु मिशन का स्तर उच्चस्तरीय बनाये रखने की जिम्मेदारी सीमित लोग ही चलाते हैं। इस प्रबुद्ध वर्ग में न्यायाधीश, वकील, चार्टर्ड-एकाउण्टेन्ट, इंजीनियर, सिविल-सर्जन, पोस्टग्रेजुएट स्तर के चिकित्सक आर्युर्वेदाचार्य, पी. एच.डी. डबल एम. ए., एम. एस. सी. स्तर की सौ से भी अधिक प्रतिभाएँ सम्मिलित हैं। इनमें से कई उच्च सरकारी पदों को छोड़कर आए हैं। एक लॉ कॉलेज के प्रोफेसर जिनकी योग्यता एल. एल. एम. स्तर की है, यहीं के स्थायी निवासी पिछले दिनों बने हैं। इस प्रकार आश्रम की कानूनी व्यवस्था जानने सम्भालने वाले चार वकील-प्लीडर आश्रम निवासी ही हैं। महिलाओं में एक दर्जन से अधिक पोस्टग्रेजुएट स्तर की हैं। जो आश्रम की शिक्षण प्रक्रिया में निरन्तर संलग्न रहती हैं। यद्यपि शिक्षण का महत्त्व अपनी जगह है, पर आश्रम के संचालन-तंत्र ने भावनाशीलों, कर्मठों को अधिकाधिक महत्त्व दिया है। यहाँ पढ़ाई का मापदण्ड नहीं, श्रेष्ठता के प्रति समर्पण, त्याग बलिदान सबसे बड़ी कसौटी है। इस आधार पर तीन सौ से भी अधिक व्यक्ति एक विशाल परिवार बनाकर स्नेह-सद्भाव से रहते, सृजन प्रयोजनों में निरत यहाँ देखे जा सकते हैं। सभी स्वयं सेवक हैं, नेता नहीं।

सात ट्रस्टी मिलकर संचालक-संरक्षक के मार्ग-दर्शन में यहाँ की सारी व्यवस्था सम्भालते हैं। सातों ट्रस्टी अपने दायित्वों को निभाने और मिशन के स्तर को निरन्तर उच्चस्तरीय बनाने में समग्र श्रद्धा के साथ इस प्रकार संलग्न रहते हैं, मानो लोक सेवियों के आदर्श को प्रस्तुत करते रहना उन्हीं के जिम्मे आया हो। इनमें विभिन्न योग्यताओं के पच्चीस वर्षों से भी अधिक समय से जुड़े भली-भाँति परखे निष्ठावान व्यक्ति हैं, जिनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध हैं। आश्रम का हिसाब-किताब प्रामाणिक व्यक्तियों का तंत्र सम्भालता है, जिनका अपना कठोर नियंत्रण तो है ही, आर्थिक तंत्र से गड़बड़ी करने की कोशिश करने की रंचमात्र भी गुंजाइश कहीं नहीं है।

संचालकों की संलग्न सभी प्रतिभाओं को कड़ी हिदायत है कि आर्थिक या नैतिक छिद्र अपनी प्रक्रिया में कहीं भी बनने न पाये, अन्यथा प्रामाणिकता पर उँगली उठने लगने पर यह तेजस्विता समाप्त हो जाएगी, जिसके आधार पर असंभव समझे जाने वाले कार्य सम्पन्न होने जा रहे हैं। प्रगति का क्रम तभी तक तूफानी गति से चल सकेगा, जब तक उसकी पवित्रता और प्रामाणिकता हर कसौटी पर खरी सिद्ध होती रहेगी। अन्य आदेशों में सम्भव है किसी से कहीं कुछ प्रमाद हुआ हो, पर संगठन की मूलभूत शक्ति सामर्थ्य में कहीं कोई छिद्र बन सके, ऐसा नहीं होने दिया गया है। सभी प्रहरी इस मोर्चे पर एकमत और एक जुट हैं। वे सभी जानते हैं कि आदर्शों के लिए समर्पित प्रतिभाओं का प्रवाह तभी तक मिशन के साथ जुड़ता रहेगा, जब तक कि उसके स्तर की उत्कृष्टता अपनी गरिमा को यथावत् बनाये रहेगी।

जबकि अधिकांश संगठनों को प्रतिभाशाली निर्लोभी, कर्मठ और समर्पित कार्य-कर्त्ताओं की कमी अनुभव की जाती है, तब मिशन के परिकर में सम्मिलित होते चलने वालों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है, पर यह सब अनायास नहीं होता। भावावेश भी उन्हें घसीटकर नहीं लाता। तर्क, समीक्षा और जाँच पड़ताल के आधार पर खरापन सिद्ध होने से ही जो प्रभावित हो सकते हैं, उन्हें कोई सहज ही बहका नहीं सकता । बहका ले तो देर तक भ्रम में नहीं रख सकता और न टिक सकता है। किन्तु कार्य संलग्न नैष्ठिकों में से अधिकांश ऐसे हैं जिन्होंने मिशन के लक्ष्य उद्देश्यों को भली-भाँति परखा व समझा तो है ही, साथ ही यह भी जाँचा है कि कहीं कोई मिलावट-बनावट तो नहीं है। साथ ही उनको खींचा है—सूत्र संचालकों के आदर्श भरे जीवन ने, उनके अगाध स्नेह ने एवं पारिवारिक स्तर पर निभने वाले स्नेह सौजन्य ने। इतना सब हुए बिना उन लोगों का जुड़ जाना कठिन था जो ऊँची आजीविका कमाते और सुसम्पन्न स्थिति में निर्वाह करते थे। यहाँ तो हर किसी को उतनी ही सुविधाएँ मिलती हैं, जिसमें रोटी, कपड़ा और मकान की ब्राह्मणोचित निर्वाह व्यवस्था जुट सके। ऐसी दशा में किसी को क्या पड़ी है जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुविधा सम्पन्न परिस्थितियों को छोड़कर दिन और रात एक करके बिना थके ऊबे, प्रफुल्ल भाव से निरन्तर काम में जुटा रहे।

समयदानी भी इच्छानुसार आते और आवश्यक काम निभने पर वापस भी चले जाते हैं। उन पर समय का कोई प्रतिबंध नहीं होता, फिर भी उनमें से अधिकांश को यहाँ का ब्राह्मणोचित जीवन रास आ जाता है और देर तक या अन्त तक वे यहाँ बने भी रहते हैं।

वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं में से प्राय: ऐसे हैं जो अपनी पेन्शन या संचित सम्पदा से ही अपना खर्च चलाते हैं। मिशन से एक पैसा नहीं लेते। कइयों ने तो अपने जेवर, जमापूँजी इत्यादि मिशन को ही समर्पित कर दी हैं व यहाँ से मात्र निर्वाह भत्ता तथा भोजन मात्र लेते हैं। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर कई हैं, पर सभी अपने को मात्र एक स्वयं सेवक मानकर निष्ठापूर्वक दिये हुए कार्य में संलग्न रहते हैं। यह उदार भावनाएँ उनकी तब जगीं, जब उनने सूत्र संचालक को ऋषिकल्प प्रमाण प्रस्तुत करते देखा। अन्यथा चोरी के माल की हिस्सेदारी बाँटने का ही जो लोक प्रचलन है वह यहाँ भी दीख पड़ता और असंख्यों को ऐसा कहते न सुना जाता कि सतयुगी वातावरण शांतिकुंज आकर देखा जा सकता है।

आमतौर से लोक सेवी संस्थाओं को धन याचना के कार्य में अधिकांश शक्ति खपानी पड़ती है, पर शांति-कुंज ही एक ऐसा संस्थान है जिसने किसी के समाने हाथ न पसारने और मुँह न खोलने की प्रतिज्ञा आरम्भ से निबाही है और अन्त तक निभाती रहेगी स्वेच्छा सहयोग की अयाचित वृत्ति से ही सभी आवश्यक काम चलते रहते हैं। कभी कहीं कोई रुकावट नहीं आती। भोजनालय में प्राय: एक हजार व्यक्तियों की रसोई बनती है, पर बिना पूर्व योजना के नियत समय पर आवश्यक खाद्य सामग्री उपलब्ध होती रहती है। भवन, निर्माण, बिजली, आवश्यक उपकरण भी पैसा माँगते हैं, पर कभी हाथ रुकता नहीं। इसे ईश्वर कृपा और सहयोगियों की उदारता के अतिरिक्त तीसरी बात यह भी समझी जानी चाहिए कि सेवा प्रयासों की उत्कृष्टता, कार्यकर्त्ताओं की निस्पृहता तथा व्यवस्था की प्रामाणिकता हर किसी को ऐसे पुण्य प्रयोजन में सहयोग करने के लिए उकसाती है। विनोबा कहते थे कि किसी संस्था को तभी तक जीवित रहना चाहिए जब तक जनता उसे उपयोगिता की कसौटी पर खरा समझे और सहयोग के लिए स्वेच्छापूर्वक उल्लसित हो। यदि ऐसा न बन पड़े तो अच्छा यह है कि जहाँ तहाँ से जुगाड़ बैठाने की अपेक्षा उस ढकोसले को बन्द ही कर दिया जाय ।

प्रसन्नता की बात है कि वह आदर्श कहीं अन्यत्र निभा हो या न निभा हो, पर वह युग सृजन चेतना के सम्बन्ध में पूरी तरह लागू हुआ है। दस पैसा या एक मुठ्ठी अनाज के अनुदान से ही असंख्यों श्रद्धालु इस संस्थान को चलाते और अग्रगामी बनाते हैं। ईसाई मिशन का भी ऐसा ही उदाहरण है। मदर टेरेसा, रामकृष्ण मिशन से लेकर अनेक स्वयंसेवी संगठन इसी आदर्श के साथ अपने क्रिया-कलापों को बिना किसी अड़चन के अग्रगामी बनाये हुए हैं। गाँधी का सत्याग्रह और बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन भी कम खर्चीला न था, पर वे सभी सफलतापूर्वक चलते रहे।

शान्ति-कुंज के सभी कार्यकर्त्ता अब तक के जीवन काल में प्रखर प्रामाणिकता से भरे पूरे रहे हैं। इनमें से प्रत्येक को भोजन, वस्त्र एवं अन्य खर्चों के लिए मात्र ४५० रुपये मासिक में निर्वाह करना पड़ता है, जिसे वे औसत भारतीय स्तर का मानकर प्रसन्नता पूर्वक अपनाते और प्रफुल्ल संतुष्ट रहते हैं। रामकृष्ण मिशन के पश्चात् जीवनदानियों की उत्कृष्टता एवं संख्या की दृष्टि से शान्ति-कुंज को ही सफलता मिली है। इन भावनाशील सृजन शिल्पियों के सहयोग से ही नव-निर्माण की गतिविधियाँ बढ़ती और गगनचुम्बी बनती चली आई हैं। भविष्य में इस सेवा साधना से व्यक्ति, राष्ट्र और विश्व की महती सेवा बन पड़ने की आशा सभी निकट सम्पर्क में आने वाले विश्वास—पूर्वक करते हैं।

प्रज्ञा-अभियान और धर्मतन्त्र से लोक-शिक्षण

प्रज्ञा अभियान का शुभारम्भ स्वतंत्रता प्राप्ति की घोषणा के दिन से होता है। राजतंत्र के कंधे पर भौतिक क्षेत्र की सुव्यवस्था, सम्पन्नता एवं सुरक्षा का त्रिविध उत्तरदायित्व रहता है। इतने भर को वह कर सके तो बहुत। इसके अतिरिक्त भी शान्ति और प्रगति के लिए और भी बहुत कुछ करने को रह जाता है। जिन कारणों से पिछड़ापन और पराभव लदता है उसमें तीन विभीषिकायें प्रमुख हैं: (१) अनैतिकता (२) मूढ़ मान्यता (३) सामाजिक अव्यवस्था। अपना देश चिरकाल से इन्हीं तीनों का अभिशाप भुगतता रहा है। राजनैतिक पराभव तो उसका प्रतीक मात्र था। देश को सच्चे अर्थों में समर्थ बनाना हो तो गरीबी,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बीमारी और विशृंखलता की ही तरह मानवी उत्कृष्टता एवं प्रखरता भी बढ़ानी होगी। जन-समुदाय का सम्मिलित स्वरूप ही तो राष्ट्र है। व्यक्तियों का स्तर ही राष्ट्र का स्तर है।

भौतिक पक्ष की प्रगति राजतंत्र के कंधों पर है, पर आत्मिक क्षेत्र में उसकी गहरी पहुँच या पकड़ नहीं हो सकती। आस्थायें, विचारणायें एवं प्रवृत्तियाँ ही वस्तुतः मानवी विशेषताएँ हैं। उन्हें परिष्कृत करने के लिए जिन उपायों का अवलम्बन किया जाना चाहिए उनमें नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति एवं सामाजिक क्रान्ति आवश्यक है। क्रान्ति अर्थात् अवांछनीयताओं का उन्मूलन और उनके स्थान पर सत्प्रवृत्तियों का सुगठित संस्थापन। इसके लिए सृजनात्मक योजनायें बनानी होंगी और व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण के क्षेत्र में दूरगामी परिणाम उत्पन्न कर सकने वाले तत्वों का समावेश करना होगा।

अपना देश पराक्रम या बुद्धि वैभव की कमी से पराजित नहीं हुआ। उसका मूलभूत कारण मध्यकालीन युग का अन्धकार, अज्ञान, विघटन तथा मूढ़ मान्यताओं का प्रचलन ही प्रमुख बना। राजनैतिक स्वतंत्रता मिल जाने के बाद भी यह सभी असुर अपने-अपने स्थानों पर यथावत् विराजमान हैं। उनका निवास आस्था क्षेत्र में है, जहाँ राजतंत्र नहीं धर्मतंत्र ही पहुँच पाता है। दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि मानवी आस्था में, स्तर में उत्कृष्टता का बाहुल्य बनाये रहने में समर्थ धर्मतन्त्र भी बुरी तरह लड़खड़ाया और उसने आस्थाओं के साथ जुड़ी रहने वाली सत्प्रवृत्तियों को उभारने के स्थान पर उलटे निहित स्वार्थों का पृष्ठ-पोषण एवं भावुक जनों का शोषण करना आरम्भ कर दिया। साबुन ही जब कोलतार से बने फिर कपड़ा कैसे धुले? धर्मतंत्र की समर्थता के बिना लोक मानस परिष्कृत कैसे बने ? आन्तरिक उत्कृष्टता के बिना भौतिक प्रगति के स्थायी आधार कैसे बनें ? पतित व्यक्तित्व तो सम्पदा पाकर सुविधा के स्थान पर संकट ही खड़ा करते हैं।

यही है वह चिन्तन जिसने स्वाधीनता प्राप्ति के दिन से ही धर्मतन्त्र से लोक-शिक्षण की, युग-निर्माण की आवश्यकता पूरी करने का व्रत लिया और उसके लिए सुनिश्चित कार्यक्रम बनाया गया ।

इस दिशा में प्रथम कार्य यह था कि धर्म के नाम पर प्रचलित वर्तमान सम्प्रदायवाद और उसकी आड़ में पलने वाले अवांछनीय दुराग्रहों के सम्बन्ध में सर्व साधारण को यह बताया जाय कि वर्तमान प्रचलन न तो शाश्वत् धर्म के मन्तव्यों के अनुरूप हैं और न उनके साथ तात्विक प्रतिपादनों का कोई तालमेल है। इसके लिए पुरातन धर्मशास्त्रों को सर्व साधारण के लिए सुलभ कराया गया, ताकि उनकी प्रगतिशीलता और वर्तमान प्रतिगामिता का अन्तर समझा जा सकें। साथ ही धार्मिक कर्मकाण्डों के पीछे छिपी उन भावनाओं से भी जन-साधारण को परिचित कराया गया जिनके बिना क्रिया कृत्यों को मात्र ढकोसला और पण्डावर्ग का स्वार्थ साधन भर समझा जाने लगा है। धर्मकृत्यों में षोडस संस्कार, पर्व-त्यौहार, तीर्थ यात्रा, देवपूजन, कथा-कीर्तन, जप यज्ञ आदि अनेकों प्रसंग आते हैं। इनके पीछे भावनात्मक चारित्रिक, सामाजिक स्तर की ऐसी अगणित प्रेरणायें भरी पड़ी हैं जिनके आधार पर लोक शिक्षण ही नहीं, लोक निर्माण का प्रयोजन भी भली प्रकार पूरा होता है।

प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत धर्म का तत्व-दर्शन और क्रिया पक्ष इस प्रकार उभारा गया है कि उससे मानवीय चिन्तन में उत्कृष्टता और चरित्र में आदर्शवादिता का समावेश कर सकना उत्साहवर्धक मात्रा में सम्भव हो सके। उपरोक्त दोनों ही प्रयोजनों के लिए प्राचीन धर्म शास्त्रों का यथार्थवादी अनुवाद प्रकाशन किया गया। साथ ही कर्मकाण्डों की विधि-व्यवस्था के साथ ऐसी व्यवस्थायें जोड़ी गयीं जिसमें उन्हें करने वाले ही नहीं देखने वाले भी मानवीय गरिमा एवं उसकी जिम्मेदारी को प्राचीनतम, किन्तु साथ ही नवीनतम दृष्टिकोण में समझने, अनुप्राणित होने में समर्थ हो सकें।

अभी यह कार्य हिन्दू धर्म से आरम्भ किया गया है, क्योंकि मिशन के सूत्र संचालकों का ज्ञान, अनुभव एवं सम्पर्क उसी क्षेत्र में रहा है। अब जैसे-जैसे विस्तार क्रम चलेगा, संसार के समस्त धर्मों को इसी शृंखला में आबद्ध कर लिया जायगा और उनकी शास्त्रीय मान्यताओं को युग की माँग के साथ तालमेल बिठा सकने की स्थिति में पहुँचने के लिये सहमत किया जायगा। धर्म सम्प्रदायों के आपस में टकराने का कोई कारण नहीं। वे सभी अपने-अपने क्षेत्रों में अपने प्रभाव का उपयोग मानवीय गरिमा उभारने एवं प्रगतिशीलता को अग्रगामी बनाने में भली प्रकार कर सकते हैं। यह कैसे सम्भव हो, इसका व्यावहारिक स्वरूप अगले ही दिनों प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत उसी प्रकार किया जायगा जैसा कि अब तक हिन्दू धर्म की परिधि में सफलता पूर्वक किया जाता रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हिन्दू धर्म के दायरे में इन दिनों ६० लाख के लगभग घोषित धर्मजीवी,साधु महात्मा हैं। उनके निर्वाह का खर्चीला रंग-ढंग जन-साधारण को वहन करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त धर्म-क्षेत्र की अघोषित जन-शक्ति भी है, जो अपने समय का बड़ा भाग इन्हीं प्रयोजनों में खर्च करती है। इतना ही नहीं प्रकारान्तर से दान-दक्षिणा का लाभ भी उठाती है। पुरोहित वर्ग इसी स्तर का है। इसकी संख्या एवं व्यय राशि भी उससे कम नहीं, जितनी कि घोषित धर्मजीवियों की। यह जनशक्ति की बात हुई। धर्म के नाम पर किये जाने वाले खर्चों का अनुमान लगाया जाय तो वह सरकारी राजस्व से कम नहीं वरन् अधिक ही बैठता है। मंदिर, तीर्थ, धार्मिक मेलों, कथा, कर्मकाण्डों पर होने वाली राशि का अनुमान लगाया जाय तो प्रतीत होगा कि धर्म की दुर्गति एवं उपेक्षा के इस जमाने में भी कितनी जनशक्ति, कितनी धनशक्ति और कितनी भावनाशक्ति धर्म प्रयोजनों के निमित्त व्यय होती है।

भौतिक साधनों को ही सब कुछ न माना जाय। भावना और विचारणा की भी अपनी शक्ति है। उसे यदि सृजनात्मक सत्प्रयोजनों के लिए नियोजित किया जा सके तो चमत्कारी परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं। साठ लाख संत, सात लाख गाँव। एक गाँव पीछे साढ़े आठ संत। यदि ये लोग राष्ट्र के भावना क्षेत्र और साधना क्षेत्रों को सम्भालने में लग सकें तो उसकी परिणति राष्ट्रीय स्तर को ऊँचा उठाने में उससे कम किसी भी प्रकार न रहेगी जैसा कि राजतंत्र द्वारा किया जाता है। ईसाई चर्चों के रचनात्मक प्रयास सर्वविदित हैं। उनने संसार की एक तिहाई जनता को देखते-देखते अपने धर्म में दीक्षित कर लिया। ऐसे ही प्रयत्न यदि सम्प्रदायगत प्रयोजनों से ऊँचे उठाकर मानवीय उत्कृष्टता उभारने में लगाये जा सकें तो उसकी परिणति ऐसी होगी जिसे अद्भुत एवं आश्चर्यजनक कहा जा सके। सतयुग में इन्हीं प्रयोगों के सत्परिणाम सर्व साधारण के सामने प्रस्तुत थे। भारत भूमि की प्रयोगशाला में वे प्रयास, प्रयोग पूर्णतया सफल होते रहे हैं।

सदुद्देश्य को यदि उत्कृष्ट भाव संवेदनाओं के साथ प्रामाणिक व्यक्तित्वों के द्वारा हाथ में लिया जाय तो उसकी परिणति सुनिश्चित रूप से अद्भुत होती है, हुई भी है। धर्म-क्षेत्र के निहित स्वार्थों को तो अभी मोड़ने, मरोड़ने में नगण्य-सी ही सफलता मिली है, किन्तु समानान्तर धर्म-क्षेत्र की स्थापना में गगन चुम्बी सत्परिणाम सामने आया है।

प्रज्ञा अभियान की धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण एवं लोक-निर्माण योजना, लोगों के गले भली प्रकार उतरी है। उनने माना है कि भारत जैसे तीन चौथाई अशिक्षित एवं प्रायः उतने ही सुदूर देहातों में बसे हुए लोगों की मनोभूमि को देखते हुए उनमें उपयोगी आरोपण करने के लिए एक मात्र धर्म-दर्शन ही कारगर सिद्ध हो सकता है। अपने देश की बहुसंख्यक जनता को राजनीति, तर्कशास्त्र, समाज शास्त्र, नागरिक शास्त्र, मनोविज्ञान आदि गूढ़ विषयों की पृष्ठभूमि बनाकर विचार क्रान्ति के, युगचेतना के सिद्धान्तों को गले उतारना अति कठिन है। सरल यही है जो कहा जाता है। इसे धर्म मान्यता एवं कथा प्रसङ्गों में कहा जाय। यह पृष्ठभूमि शिक्षितों और शहरी लोगों के लिए कम आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक नहीं है। समर्थ गुरु रामदास, दयानन्द, गोविन्द सिंह, गाँधी, तिलक, मालवीय, विनोबा आदि धर्म को प्रमुखता देने वालों ने जितना जन-साधारण का हृदय जीता और अनुप्राणित किया, उतना अन्य क्षेत्रों के नेता भावना क्षेत्र का स्पर्श करने में समर्थ नहीं हुए । इन दिनों जिस लोकमानस के परिष्कार की तात्कालिक आवश्यकता है, उसकी पूर्ति के लिए धर्मतन्त्र को माध्यम बनाकर जितनी सरलता एवं सफलता के साथ आगे बढ़ा जा सकता है उतना और किसी प्रकार नहीं। इस तथ्य को इन आधार पर हाथों हाथ जाँचा परखा जा सकता है कि प्रज्ञा अभियान के साधनहीन प्रयत्नों ने लाखों सहयोगी उत्पन्न किये हैं और उनके सहारे नव-जागरण, सत्प्रवृत्ति संवर्धन एवं अनौचित्य उन्मूलन में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है।

प्रज्ञा-अभियान का अदृश्य सूत्र संचालन

प्रज्ञा-अभियान की निर्धारणाओं और सफलताओं का लेखा-जोखा लेने वालों को कार्य-कारण की संगति बिठाने में सफलता नहीं मिल सकती। मानवी प्रयत्नों की एक सीमा है। उसे पार करते हुए अप्रत्याशित परिस्थिति उत्पन्न कर सकना नियन्ता की विधि व्यवस्था के सहारे ही सम्भव हो सकता है। वर्षा काल जैसी सजलता हरीतिमा, सर्दी जैसी ठिठुरन, बसन्त जैसी मुस्कान, गर्मी जैसी तपन कोई मनुष्य उत्पन्न नहीं कर सकता, भले ही वह कितना ही समर्थ क्यों न हो। आँधी जितना व्यापक बुहारी लगाती है, उतना कर सकना किसी के बस की बात नहीं। हवा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पीछे की चलती है तो वाहनों से लेकर यात्रियों तक की गति बढ़ा देती या सरलता अनुभव होती है । ऐसी अनुकूलताएँ पूर्णतया सृष्टा की इच्छा व्यवस्था पर निर्भर रहती हैं। तूफान के साथ उड़ने को सहमत होने वाले तिनके पत्ते तथा धूलि कण आकाश चूमते और अपंग होते हुए भी द्रुतगामी दौड़ लगाते हैं इसे कौन नहीं जानता ?

इतिहास में ऐसे घटनाक्रमों का उल्लेख है जिनकी संगति कायिक और बौद्धिक क्षमता के साथ नहीं बैठती। हनुमान का पर्वत उखाड़ना, समुद्र लाँघना और लंका उजाड़ना उनकी निजी सामर्थ्य से सम्भव हो सकता था, यह किस प्रकार माना जाय ? यदि वे इतने ही समर्थ थे तो अपने स्वामी सुग्रीव को बालि के त्रास से क्यों न छुड़ा सके? अर्जुन यदि सचमुच ही महाबली थे तो द्रौपदी का भरी सभा में अपमान क्यों होने देते? अज्ञातवास के दिनों जिस-तिस की नौकरी करके छिपते-छिपाते दिन क्यों गुजारते रहे? इन शंकाओं का कोई बुद्धि संगत समाधान मिलता नहीं।

टिटहरी द्वारा समुद्र पाटने का प्रयत्न अगस्त ऋषि की सहायता से सम्भव होना व्यवहार बुद्धि की पहुँच से बाहर है। एक परशुराम धरती पर फैले हुए अर्वाँछनीय तत्वों का इक्कीस बार सफाया करें और कोई उनके मार्ग में आड़े न आये इसकी क्या तुक? ग्वाल वालों की सहायता से गोवर्धन उठाना और रीछ वानरों के कौशल से समुद्र का पुल बाँधना भी कुछ ऐसा ही बेतुका है।

यदि पौराणिक गाथाओं की उपेक्षा की जाय तो भी ऐतिहासिक घटनाक्रम ठीक इसी स्तर के आश्चर्य की अगणित साक्षियाँ प्रस्तुत कर सकने में समर्थ है। बुद्ध की निजी क्षमता और उनके धर्मचक्र प्रवर्तन की व्यापक सफलता का तारतम्य मिलाया जाय तो वणिक बुद्धि का कोई गणित फार्मूला काम देता नहीं दीखता। गाँधीजी का सफल स्वतन्त्रता संग्राम किस प्रकार घोर निराशा और प्रतिकूलता को परास्त कर सका, इसकी कार्य कारण संगति किसी कम्प्यूटर के सहारे बैठती नहीं है। समर्थ रामदास, गुरु गोविन्द सिंह, विवेकानन्द, दयानन्द, विनोबा आदि की सफलताओं को उनका निजी पुरुषार्थ भर माना जाय तो विवेचना न्यायसंगत नहीं होगी। उनके पीछे अदृश्य की अनुकूलता का समर्थ अनुदान भी काम करता पाया जाएगा, अन्यथा इनसे भी बड़ी योजनाएँ समर्थ साधनों के सहारे बनाने वालों में से असंख्यों को असफलताएँ देखकर यही सोचना पड़ता है कि उनका निजी पराक्रम उस लकड़ी की नाव जैसा सिद्ध हुआ जो तूफान में फँसकर-चट्टान से टकरा कर अपना अस्तित्व गँवा बैठी और मल्लाह के डाँड सतह पर तैरते भर रह गये।

प्रज्ञा-अभियान के आरम्भ से लेकर अब तक के इतिहास से जिनका निकटवर्ती सम्बन्ध रहा है, उनकी सामान्य बुद्धि आश्चर्य चकित हुए बिना नहीं रह सकती। आज उसकी स्थिति और प्रगति इस स्तर की है कि संसार के महान् परिवर्तन प्रस्तुत करने वाले अविस्मरणीय आन्दोलनों में उसकी गणना हो सके। स्थानीय और थोड़ी-सी समस्याओं को लेकर ही अब तक राजनैतिक, सामाजिक आन्दोलन होते और सृजन संघर्ष के उपक्रम भी चलते रहे हैं, पर ऐसा किसी भी मंच से कदम उठाना तो दूर, सोचा तक नहीं गया कि ६०० करोड़ मनुष्यों के चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने के लिए कारगर प्रयास कब और किस प्रकार किया जाय ? प्रज्ञा अभियान ही है जिसने इस सन्दर्भ में गम्भीरता पूर्वक सोचा, कदम उठाया और वह कर दिखाया जिस पर सहज बुद्धि को सहज विश्वास ही नहीं हो सकता।

प्रज्ञा-अभियान की युग-निर्माण योजना सामान्य योग्यता के व्यक्ति द्वारा साधनों का सर्वथा अभाव रहने और मानवी सहयोग दृष्टि से मात्र उपहास ही हाथ लगने जैसी परिस्थितियों में ही चलाई गई है। उसे अवरोधों, प्रतिकूलताओं ने पग-पग पर चुनौती दी है। इतने पर भी यह प्रयास गगनचुम्बी स्तर तक पहुँचा। इसका रहस्य ढूँढ़ना हो तो एक ही निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए कि अदृश्य सत्ता की इच्छा प्रेरणा और व्यवस्था ही इस रूप में प्रकट हो रही है जिसे युग परिवर्तन का दृश्यमान सरंजाम कहा जा सके।

एक व्यक्ति सोचता है कि धर्मतन्त्र की शक्ति राजतन्त्र से अधिक है। भौतिक क्षेत्र की व्यवस्था और प्रगति का उत्तरदायित्व राजतन्त्र के कन्धों पर आता है, जबकि चिन्तन, चरित्र, व्यवहार और प्रचलन को सही रखने की जिम्मेदारी उठा सकने में मात्र धर्मतन्त्र ही समर्थ है । मनःस्थिति ही परिस्थितियों की निर्मात्री है। मनःस्थिति को पवित्र और प्रखर बनाये रहने में धर्मतन्त्र की भूमिका ही कारगर हो सकती है। इसलिए दुर्दशाग्रस्त धर्मतन्त्र को पुनर्जीवित किया जाय। इसके लिए देश भर के प्रगतिशील धर्म-प्रेमियों को संगठित किया जाय और उनकी संयुक्त शक्ति को लोकमानस के परिष्कार एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन में यथा तथ्य रूप में लगाया जाय । यह चिन्तन तो एकाकी भी हो सकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था, पर इसका कार्यान्वित होना ऐसा ही असंभव समझा गया जैसा विश्वामित्र की युग परिवर्तन चेष्टा और परशुराम की विचार परिवर्तन प्रक्रिया को तत्कालीन लोगों ने उपहासास्पद बताया था । उन दिनों योजनायें रंग लाईं । धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण का विचार भी कार्यरूप में परिणत हुआ और आज संसार चकित है कि किस प्रकार यह सृजन सरंजाम साधन रहित परिस्थितियों में भी जुटाकर सफलता की ओर तूफानी गति से आगे बढ़ा ।

सन् ५८ का सहस्रकुण्डी गायत्री महायज्ञ जिनने मथुरा में देखा है, वे उसे दैवी चमत्कार कहते हैं। नगण्य से निमन्त्रण पर देशभर के प्रगतिशील धर्म-प्रेमियों का चार लाख की संख्या में एकत्रित होना, सभी का धर्म चेतना के जीर्णोद्धार के निमित्त कटिबद्ध होना । हाथों-हाथ युग-निर्माण योजना का स्वरूप बनना और देखते-देखते उसका कार्यान्वित होकर देश के कोने-कोने में युगान्तरीय चेतना का आलोक वितरित करना, सचमुच ही ऐसा चमत्कार है जिसे जादुई कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी । मत्स्यावतार की कथा में एक नन्हीं-सी मछली ने देखते-देखते समुद्र को ढक लेने जितना आकर बढ़ाया था । ऐसा किसी मानवी प्रयत्न से नहीं हो सकता । परिस्थितियों के साथ प्रगति का गणित हतप्रभ होकर किसी कोने में जा बैठता है।

इस दिनों प्रज्ञा परिवार के प्रायः चौबीस लाख परिजन हैं । सभी एक तरह सोचते और एक दिशा में छोटे-बड़े कदम उठाते हैं । नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति का आवेश सभी पर छाया है । व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण समाज-निर्माण की उमंगें पग-पग पर कार्यान्वित होती हुई देखी जा सकती हैं । एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य के अंशदान के बूँद-बूँद से गागर भरती है और श्रम-शक्ति, भाव-शक्ति एवं साधन-शक्ति के अभाव में कोई काम रुकता नहीं । इतना बड़ा आन्दोलन जिसमें पूरे समय के प्रायः एक लाख व्यक्तियों जितना श्रम समय नियमित रूप से लगता हो, अनुपम है । इसे बुद्ध और गाँधी के महान् आन्दोलनों के साथ जोड़ा जा सकता है । वे बड़े थे उनके बड़े सहयोगी थे, पर यहाँ तो रीछ-वानर ही समुद्र पर पुल बाँधते और ग्वाल-बाल ही गोवर्धन उठाते दीखते हैं ।

धर्मतन्त्र पर लगे प्रतिगामिता के लांछन को हटाने और उसकी प्रचंड प्रगतिशीलता सिद्ध करने के लिए आवश्यक समझा गया कि आर्ष-ग्रन्थों को जन-जन तक पहुँचाया और धर्मधारणा का स्वरूप अवगत कराया जाय । देखते-देखते चारों वेद, १०८ उपनिषद्, छहों दर्शन, २४ गीताएँ, २० स्मृतियाँ, आरण्यक, ब्राह्मण सूत्र एवं १८ पुराण अनुवादित प्रकाशित और प्रचारित होने लगे । जो कार्य अनेकों ऋषियों ने सहस्रों वर्षों में सम्पन्न किया था लगभग उतना ही श्रम एक व्यक्ति के प्रयास से इतनी स्वल्प अवधि और बिना पूँजी की व्यवस्था के किस प्रकार सम्पन्न हो गया । मानवी क्षमता की सीमा को समझने वालों के लिए यह रहस्य अभी भी अनबूझ पहेली बना हुआ है ।

पुराण लिखने में व्यासजी बोलते और गणेशजी लिखते थे । दो के प्रयास से वह कार्य सम्पन्न हुआ था। यहाँ तो एक ही व्यक्ति सब कुछ करता दीखता है। विचार क्रान्ति प्रयोजन के लिए विभिन्न भाषाओं वाली सात पत्रिकाएँ छपती हैं और मात्र पाठकों के निश्चित अनुबन्ध के अन्तर्गत २५ लाख द्वारा पढ़ी जाती हैं । इतनी बड़ी संख्या में अपने देश की पत्रिकाओं में कदाचित् ही किसी के पाठक हों । करोड़ों की पूँजी वाले पत्र व्यवसायियों को पीछे छोड़कर आठ सौ रुपये की लागत से आरम्भ हुआ हैण्ड प्रेस इतनी बड़ी भूमिका किस प्रकार निभा सका इसकी कार्यकारण संगति कैसे बैठे ।

शांतिकुंज हरिद्वार और गायत्री तपोभूमि मथुरा की इमारतें जिनने देखी हैं, जो देश के कोने-कोने में विनिर्मित २४०० गायत्री शक्ति-पीठें देखकर आये हैं वे जानते हैं कि इनके निर्माण में १०० करोड़ से कम खर्च नहीं हुआ है । तीर्थ और देवालय तो पुरातन काल में भी बने थे और वे सभी राजाओं और सेठों ने बनाये हैं । जंन स्तर पर इतने बड़े निर्माण चन्द दिनों में संकेत मात्र से बनकर खड़े हो गये हों, ऐसा उदाहरण अनादि काल से लेकर आद्यावधि कोई कहीं भी नहीं मिलेगा । अपने क्षेत्रों में वे सभी प्रज्ञा संस्थान जेनरेटरों की, ट्यूब वैलों की, नर्सरियों की, प्रकाश स्तम्भों की भूमिका निभा रहे हैं । सभी के साथ समयदानी, कार्यकर्त्ताओं की उत्साहवर्धक संख्या कार्यरत है । सभी का निर्वाह चल रहा है । सभी अपनी-अपनी सीमा परिधि में नवयुग के अनुरूप वातावरण बनाने में आशातीत ढंग से सफल हो रहे हैं।

सामूहिक साधनाओं के माध्यम से विषाक्त वायुमण्डल-वातावरण को बदलने के लिए प्रज्ञा पुरश्चरण की प्रक्रिया इन दिनों चल रही है। उसमें २४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाख व्यक्ति भागीदार हैं और प्रतिदिन २४ करोड़ गायत्री जप सम्पन्न करते हैं । हरितमा संवर्धन का जन-आन्दोलन भी साथ-साथ चल रहा है । सामूहिक धर्मानुष्ठानों के इतिहास में इसे अभूतपूर्व ही कहा जा सकता है ।

एक लाख युगशिल्पी अपने-अपने कार्य-क्षेत्रों में शिक्षा-विस्तार, प्रौढ़ पाठशाला, चल पुस्तकालय, महिला जागरण, स्वास्थ्य संवर्धन, व्यायामशाला, स्वच्छता अभियान, सामूहिक श्रमदान, हरितमा संवर्धन जैसे रचनात्मक कार्यों में प्राणपण से संलग्न हैं। नशा निवारण, दहेज उन्मूलन, पर्दा प्रथा, जाति-पाँत, ऊँच-नीच, भिक्षा व्यवसाय, अपव्यय विरोध, परिवार-नियोजन जैसी महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों को व्यापक बनाने में वे जन-जन का भावभरा सहयोग अर्जित करने में सफल हो रहे हैं । प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने में जितनी प्रगति हो रही है उसे देखते हुए मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का संकल्प अब दिवास्वप्न नहीं रह गया । उसकी पूर्ति पर सहज विश्वास व्यक्त किया जाने लगा है ।

उपरोक्त तथ्य वे हैं जो सर्वसाधारण को भली भाँति विदित हैं । विगत सत्प्रयासों का प्रतिफल थाली में परोसा और चखा जा रहा है । हाँडी में जो पक रहा है और अगले ही दिनों दृश्यमान होकर पिछली उपलब्धियों से अनेक गुने बढ़े-चढ़े चमत्कार प्रस्तुत करने जा रहा है उनका अनुमान वे लोग लगाते हैं जो सूत्र संचालकों के निकट सम्पर्क में हैं ।

चर्म चक्षुओं से अदृश्य जगत का तूफानी प्रवाह दृष्टिगोचर नहीं होता । वे इसका निमित्त कारण किन्हीं शरीरधारी व्यक्तियों को देखते हैं । गुरुजी माताजी की ओर इशारा करते और उनकी तप-साधना को श्रेय देते हैं। अनेकों को जो व्यक्तिगत लाभ मिले हैं और वातावरण बदलने वाले जो प्रयास चले हैं, उनके पीछे इसी युग्म की भावभरी चर्चा करते हैं, पर वस्तुतः बात वैसी है नहीं । यह सदा समझा जाता रहा है कि कठपुतली के खेल में लकड़ी के खिलौने उचकते-मटकते भर हैं, उनके पीछे किसी बाजीगर की सधी हुई अदृश्य उँगलियाँ काम कर रही हैं । नियन्ता की युग-परिवर्तन आकांक्षा ही योजना का एकमात्र कारण है। श्रेय किसे कितना मिला यह उसकी और अग्रगमन की साहसिकता पर निर्भर है । जो सोचते हैं कि सूत्र संचालकों के न रहने पर प्रज्ञा-अभियान लड़खड़ाने लगेगा उन्हें मिशन की तूफानी गति को देखकर अपनी आशंका का इस आधार पर समाधान करना चाहिए कि यह किसी व्यक्ति विशेष के पराक्रम, निर्धारण, कौशल का परिणाम नहीं है । जो हुआ है वह नियन्ता के निर्धारण के अनुसार हुआ है, अगले दिनों उससे भी अनेक गुने समर्थ एवं व्यापक कदम उठेंगे । ६०० करोड़ मनुष्यों का भाग्य भविष्य बदलने के लिए उससे कहीं अधिक होना है जो किया जा चुका या किया जा रहा है । इसका सरंजाम कौन जुटायेगा ? इसका समाधान एक ही आधार पर होता है कि तूफान अपना रास्ता आप बनाता है । उसका साथ तिनके-पत्ते तक देते हैं । मार्ग में अड़ने वाले विशालकाय वृक्ष उखड़ते और रेतीले टीले हवा में उड़ते और सत्ता समाप्त करते हैं । शीत, ग्रीष्म और वर्षा का बदलता मौसम जब परिस्थितियों में आश्चर्यजनक परिवर्तन करता है तो कोई कारण नहीं कि अदृश्य जगत में चल रहा नियन्ता का प्रेरणा प्रवाह उसके लिए उपयुक्त आधार खड़ा न कर सके । प्रज्ञा-अभियान की अद्यावधि सफलताओं को इसी दृष्टि से देखा और भावी सम्भावनाओं का अनुमान इसी आधार पर लगाया जाना चाहिये ।

सशक्त शक्ति-उद्गम से सम्बन्ध साधें

उद्गम के प्रति सार्वभौम श्रद्धा

भगवान राम और कृष्ण ने, अपने-अपने समय में धर्म की रक्षा और अधर्म के परित्राण के लिए, व्यापक क्षेत्र में वातावरण विनिर्मित किया । उन्होंने जो क्रिया-कलाप अपनाया, उसका रामायण और महाभारत में सुविस्तृत उल्लेख है । उनकी क्रिया-प्रक्रिया का कहीं भी अनुभव किया और अनुमान लगाया जा सकता है। मंदिरों में उनकी प्रतिमाएँ और घरों में उनकी तस्वीरें विद्यमान हैं । इतने पर भी भक्तजनों की यह ललक उमँगती ही रहती है, कि मथुरा एवं अयोध्या पहुँच कर उस उद्गम का दर्शन किया जाय, जहाँ वे जन्मे और बड़े होने पर बड़े काम कर सकने में समर्थ हुए ।

इस्लाम धर्म के संस्थान दुनियाँ भर में फैले पड़े हैं। उन्हें कुरान के माध्यम से इस्लाम के संदेश अपने स्थानों पर अभी भी मिलते रहते हैं; किन्तु उस समुदाय के प्रत्येक श्रद्धालु के मन में यह उमंग उठती रहती है कि जहाँ पैगम्बर जन्मे थे, उस तीर्थ के दर्शन हेतु सशरीर पहुँचा जाय । लाखों लोग हर साल हज-यात्रा पर जाते और उस प्रक्रिया को पूर्ण कर लेने पर ''हाजी'' शब्द अपने नाम के आगे लगाकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गौरवान्वित होते हैं । ईसा के जन्म स्थान यरूशलम पहुँचने की प्राय: वैसी ही इच्छा ईसाइयों को रहती है। बौद्ध समुदाय के लोग तथागत की जन्मभूमि लुम्बिनी पहुँचने की इच्छा तो सँजोये ही रहते हैं, भले ही परिस्थितिवश वे वहाँ बड़ी संख्या में हर साल पहुँच न पायें । सिख धर्म के जन्मदाता सद्गुरु का जन्म-स्थल 'ननकाना' यों अब पाकिस्तान में चला गया है; पर वहाँ भी सिख धर्मानुयायी प्राय: प्रत्येक वर्ष पासपोर्ट लेकर जाते रहते हैं । अन्य धर्मों के सम्बन्ध में भी यही बात है । उद्गम तक पहुँचने की लालसा गहन श्रद्धा का परिचय देती है । वह श्रद्धा आगे चलकर धर्म-धारणा को विकसित करने में सहायक भी होती है ।

गंगा लम्बा रास्ता पार करती है । उसका जल सुविस्तृत क्षेत्र में उपलब्ध रहता है । बंगाल पहुँचते-पहुँचते तो उसकी सहस्रों धाराएँ विभाजित हो गयी हैं, लोग उसी का जल नहाने और पीने आदि के उपयोग में लाते रहते हैं । इतने से ही पूर्ण समाधान नहीं होता और जिनमें समर्थता है, वे गंगोत्री ही नहीं, गोमुख तक भी जा पहुँचते हैं । यमुना के प्रति श्रद्धावान लोगों को यमुनोत्री और नर्मदा में अगाध श्रद्धा रखने वालों को अमरकंटक की यात्रा करके ही चैन पड़ता है ।

कैलास पर्वत में शिव का निवास माना जाता है और पार्वती का प्रत्यक्ष स्वरूप मानसरोवर के रूप में बखाना गया है । यों सप्त-सरिताओं का उद्गम भी मानसरोवर है । कैलास मानसरोवर यात्रा अब बहुत कठिन हो गई है, फिर भी किसी प्रकार वहाँ तक जा पहुँचने वालों की बड़ी संख्या होती है । उद्गमों तक जा पहुँचने और वहाँ से प्रेरणा लेकर लौटने की परम्परा अकारण भी नहीं है । उसके पीछे श्रद्धा-संवेदना का गहरा पुट जो लगा होता है । इस श्रद्धा-संवेदना की शक्ति का ठीक उपयोग करने का प्रयास हर धर्मसम्प्रदाय अथवा संस्कृति ने किया है ।

२१ वीं सदी की गंगोत्री

युग-निर्माण योजना का आरम्भिक ताना-बाना जहाँ से बुना गया है, इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य का उद्घोष जहाँ से किया गया है; उस महा युगान्तरीय चेतना का सामयिक केन्द्र शान्ति-कुञ्ज है । उसका सान्निध्य पाने के लिए निरन्तर लाखों की संख्या में श्रद्धालु प्रज्ञा परिजन भी पहुँचते हैं और ऐसा कुछ लेकर लौटते हैं, जिसे बैटरी को नये सिरे से चार्ज किए जाने के समतुल्य समझा जा सके । गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्तऋषियों की तपोभूमि जैसी कितनी पुरातन विशेषताएँ भी यहाँ हैं । इसके अतिरिक्त, गायत्री तीर्थ के रूप में विकसित होने के साथ-साथ और भी अनेक विशेषताएँ उसके साथ जुड़ गयीं हैं ।

स्थापना के दिनों से लेकर अब तक नित्य-नियमित रूप से लाखों की संख्या में गायत्री जप साधना यहाँ नैष्ठिक साधकों द्वारा होती है । वर्ष भर में तो वह जप संख्या अरबों-खरबों की गणना तक जा पहुँचती है । नौ कुण्डों की विनिर्मित यज्ञशाला में नित्य-नियमित रूप से यज्ञ होता है और वर्ष में आहुतियों की संख्या करोड़ों तक जा पहुँचती है ।

जिस अखण्ड ज्योति की स्थापना इस महा मिशन के साथ साक्षी रूप में हुई थी, वह दीपक यहाँ पर पिछले पैंसठ वर्षों से अनवरत रूप से ज्योतिर्मय है । गंगावतरण की उपमा की तरह, यहाँ किसी दिव्य सत्ता का संरक्षण अवतरित होते अनुभव किया जा सकता है। गायत्री माता की प्राण-प्रतिष्ठा, सविता देवता का मन्दिर, शिव-अभिषेक, देवात्मा हिमालय की एकमात्र प्रतीक प्रतिमा, सप्तऋषियों की प्रतिमाएँ यहाँ स्थापित हैं। सभी प्रतिमाएँ भली प्रकार उपासना, आराधना के रूप में अर्जित की जाती रहती हैं । ऐसी-ऐसी और भी अनेकानेक विशेषताएँ हैं, जो अपने ढंग की अनोखी कही या समझी जा सकती हैं ।

वयोवृद्ध हो जाने पर भी मिशन के सूत्र-संचालकों की चर्म-चक्षुओं से देखी जा सकने वाली कायाएँ, अब तक तो स्थूल शरीर में भी विद्यमान हैं और विश्व-मानव में प्राण-फूँकने वाले तंत्र का विकास एवं सुनियोजन भी कर रही हैं । उन्हें सहस्रशीर्ष, सहस्रकंठ, सहस्रबाहु, सहस्रपाद ही नहीं सहस्रप्राण के रूप में भी क्रियाशील अनुभव किया जा सकता है। अगले दिनों यह काय कलेवर अदृश्य हो जायेंगे; तो भी उनकी प्राण चेतना से ओत-प्रोत सूक्ष्म-शरीर यहाँ एक शाताब्दी तक बने रहने के लिए वचनबद्ध है । उनके द्वारा प्रसारित प्रेरणा प्रवाह, दिशा-बोध एवं शक्ति प्रवाह का लाभ अनवरत मिलता ही रहेगा ।

यहाँ से फूटने वाली सहस्र धाराएँ देश-देशान्तर में कार्यरत देखी जा सकती हैं । २४०० प्रज्ञा पीठों और २४००० प्रज्ञा केन्द्रों का समर्थन समुच्चय इस उद्गम के साथ जुड़ा हुआ है । युग संधि के उपलक्ष्य में चलने वाले महापुरश्चरण का संकल्प यहीं से उभरा है और उसके साथ लाखों प्रज्ञा पुत्र भागीदारी के रूप में जुड़ गये हैं । साधना की पूर्णाहुति तक उनकी संख्या एक करोड़ से अधिक जा पहुँचेगी । आशा की गयी है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तुत प्रतिकूलताओं को निरस्त करने और अनुकूलताओं को बलपूर्वक घसीट लाने में यह प्रक्रिया बहुत हद तक सफल होकर रहेगी ।

अपने समय में नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय, नव जीवन उभार सकने वालों को विनिर्मित प्रशिक्षित करने के लिए प्रख्यात रहे थे । उनके उत्पादन ने न केवल भारत, न केवल एशिया, वरन् समूचे संसार को बहुत हद तक पतन-पराभव से उबार कर देव संस्कृति के साथ कस कर बाँध देने में सफलता पायी थी । यह पुरातन काल की गौरव गाथा है, पर अब तो ऐसा कुछ नहीं दीख पड़ता । ईसाई मिशन अवश्य किसी हद तक उस शैली का अनुकरण कर रहे हैं । भारतीय संस्कृति के विस्तार क्षेत्र में वैसा ही कुछ आयोजन करते हुए, ताना-बाना बुनते हुए शान्ति कुञ्ज को देखा जा सकता है । साधनों की दृष्टि से अतीव साधारण दीख पड़ने पर भी, जो प्रयोग यहाँ चल रहे हैं और जिस प्रकार सफल हो रहे हैं, उन्हें अनुपम एवं अद्भुत ही कहा जा सकता है ।

एक महत्त्वपूर्ण संकल्प

युग संधि बेला के अगले वर्षों में यहाँ से क्या कुछ किया जाने वाला है, उसके सुविस्तृत निर्धारण की चर्चा समय से पूर्व करना तो अप्रासंगिक होगा; पर उन संकल्पों में से एक ही ऐसा है कि जिसकी रूपरेखा को सुनने वाले तक हतप्रभ होकर रह जाते हैं । न तो सुनने वाले के कान सहमत होते हैं और न सोच सकने वालों का चिन्तन सहायता करता है, कि क्या ऐसा भी इन विकट परिस्थितियों में बन पड़ना सम्भव हो सकता है ? फिर भी संयोजक सत्ता का कथन है कि जो आज असम्भव लगता है, वह कल सम्भव होकर रहेगा।

प्रस्तुत संकल्प है—एक लाख सृजन शिल्पियों का उत्पादन, प्रशिक्षण और उनका नवसृजन के कार्य-क्षेत्र में उतारा जाना । प्राचीन काल के सतयुगी वातावरण में, उत्कृष्ट आदर्शवादिता के पक्षधर वातावरण में साधु-ब्राह्मणों, वानप्रस्थों की सृजन वाहिनियाँ, राष्ट्र को, विश्व को जीवन्त और जाग्रत रखने की व्रत धारणा चरितार्थ करती रही होंगी । यह उन दिनों सम्भव भी रहा होगा, पर आज तो प्रवाह सर्वथा उल्टी दिशा में बह रहा है, जिसे वासना, तृष्णा, अहंता ने कस कर न जकड़ रखा हो; जो लोभ, मोह और अहंकार से ऊँचे उठकर आदर्शों के प्रति समर्पित होने की बात सोचते हों, ऐसे लोग जहाँ-तहाँ ढूँढ़ने से भी नगण्य संख्या में ही मिलेंगे । अन्यथा सर्व साधारण पर संकीर्ण स्वार्थपरता का ही भूत सवार है । पैसे के अतिरिक्त और कुछ किसी को सूझ ही नहीं पड़ता । यहाँ तक कि अध्यात्मतत्त्व ज्ञान के नगाड़े बजाने वाले भी स्वर्ग-मुक्ति, ऋद्धिसिद्धि, जैसी विचित्र स्वार्थ-परायणता की परिधि से आगे नहीं बढ़ पाते । मनोकामनाओं की पूर्ति वाले वरदान और देवी-देवताओं के प्रत्यक्ष दर्शन की कामनाएँ ही उन्हें अपने दायरे में घेरे-बटोरे रहती हैं । ऐसी दशा में सेवा-साधना, आत्मशोधन और लोककल्याण की बात पर ध्यान कौन दे ?

एक लाख सृजन शिल्पी इन्हीं दिनों भ्रान्त जन समुदाय में से निकाल सकना कैसे बन पड़े ? झुलसाने वाले ग्रीष्म आतप में, शान्ति की शीतल मेघमाला कहाँ से उमड़ेगी ? यही है वह असम्भव, जिसे सम्भव कर दिखाने की प्रतिज्ञा शान्ति-कुञ्ज ने ली है और उस दिवास्वप्न समझे जाने वाले संकल्प को सार्थक सिद्ध करने की घोषणा तक सर्व साधारण के कानों तक पहुँचायी गयी है । यह इसलिए करना पड़ा, कि सर्वत्र छाई हुई निराशा और भावी संकटों की आशंका से उद्विग्न लोक मानस को, नये सिरे से सोचने की प्रेरणा एवं नये प्रकाश के उदय होने की सान्त्वना मिले । निराशा, सक्षम और साधन सम्पन्न मनुष्यों को भी दीन-निर्बल जैसी निरीह स्थिति में धकेल देती है । आशा और उत्साह को यदि सार्थक स्तर पर उभारा जा सके, तो सीमित शक्ति और साधनों से भी बहुत कुछ ऐसा बन पड़ सकता है, जिसकी कल्पना से हुलसित-पुलकित हुआ जा सके ।

यह सब किस प्रकार बन पड़ेगा ? इसकी विस्तृत रूप-रेखा का वर्णन सुनने-समझने का भी समयानुसार अवसर मिलेगा । इस अवसर पर तो इतना ही समझ लेना चाहिए कि छोटे आकर-विस्तार वाले शान्ति-कुञ्ज से जो कुछ उभर रहा है, उसे विश्व-मानव के आगत सौभाग्य के उफान जैसा समझा जा सकता है । इसे अपने समय के समुद्र मंथन जैसा एक नियोजन भी कहा जा सकता है । टिटहरी द्वारा समुद्र से अंडे वापस लेकर हटने की प्रतिज्ञा पूरी हो सकती है, तो 'नया इन्सान बनाने, नया संसार बसाने' की लोकहितकारी उमंगों को क्यों असम्भव या उपहासास्पद समझा जाना चाहिए ?

सुयोग का लाभ उठायें

यहाँ इतना ही अनुरोध किया जा रहा है कि यदि ऐसे सशक्त उद्गम के साथ जुड़ने की बात मानी जा सके, तो उसकी परिणति सबके लिए एक प्रकार से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रेयस्कर ही हो सकती है । हिमालय से पिघलने वाले ग्लेशियरों से जो नदियाँ जुड़ी हुई होती हैं, वे किसी भी ऋतु में सूखती नहीं । उनकी जल धारा अविच्छिन्न रूप से प्रवाहमान बनी रहती हैं । विद्युत् उत्पादक-समर्थ संस्थानों जेनरेटरों से जुड़े रहने वाले ट्रांसफार्मरों का करेन्ट कभी चुकता नहीं । यह संयोग उन सभी छोटे-बड़े उपकरणों को गति देता रहता है, जो बिजली के सहारे चलते और अनेकानेक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन पूरे करते हैं ।

बादलों का बरसना इसलिए अनादिकाल से जारी है कि समुद्र से उठने वाली भाप को वे अपना आधार अवलम्बन बनाये हुए हैं । नहरें इसलिए सिंचाई के निमित्त उपलब्ध रहती हैं कि वे बड़ी नदियों से निकलती हैं । यदि यह आधार उथले और छोटे रहे होते, तो वे उपलब्धियाँ हस्तगत न हो पातीं, जो नदियों के, नहरों के, बिजली घरों के रूप में निरन्तर कार्य करती देखी जाती हैं ।

स्वावलम्बन और वैयक्तिक पुरुषार्थ की भरपूर सराहना करते हुए भी इस तथ्य को समझना ही होगा कि नीचे गिरने के लिए हर कोई स्वतंत्र और समर्थ है, किन्तु ऊँचाई की ओर प्रयाण करने के लिए किन्हीं अवलम्बनों की आवश्यकता होती है । आकाश में भारी ऊँचाई पर रहने पर भी उल्काएँ सरलतापूर्वक जमीन पर आ टपकती हैं, पर यदि कोई उपग्रह धरती से आकाश तक पहुँचाना हो, तो उसके लिए शक्तिशाली रॉकेटों की व्यवस्था बनाये बिना काम चलता नहीं। पैरों के बल उछलकर तो कुछ फुट ऊँचाई तक ही अपना पुरुषार्थ दिखाया जा सकता है, पर यदि ऊँची और लम्बी उड़ान भरनी है, तो वायुयान का टिकट खरीदना और उस पर सवार होना अनिवार्य रूप से आवयक हो जाता है। समुद्र की लम्बाई गहराई और लहरों की उथल-पुथल को देखते हुए उसे तैर कर पार करने की बात बनती नहीं । इसके लिए समुचित साधनों से सम्पन्न जलयान का आश्रय लेना पड़ता है । रेल या मोटर पर सवार होने वाले जितने कम समय में जितनी दूरी पार कर लेते हैं, उतना फासला तय करना, एकाकी पुरुषार्थ पर निर्भर पदयात्री के लिए सम्भव नहीं होता ।

नलों में पानी तभी तक चलता है, जब तक कि उनका सम्बन्ध जल सम्पदा से भरी-पुरी टंकी के साथ रहता है । बेल उतनी ही ऊँची चढ़ पाती है, जितने ऊँचे पेड़ से लिपट लेने का सुयोग उपलब्ध होता है; अन्यथा वह जमीन पर ही फैलती छितराती रहेगी । शरीर के अंग अवयवों में गतिशीलता तभी तक रहती है, जब तक कि उन्हें हृदय द्वारा, धमनियों द्वारा रक्त पहुँचाया जाता है । इस व्यवस्था के छिन्न-भिन्न हो जाने पर तो अच्छे-भले अंग-अवयव निष्क्रियनिर्जीव बन कर रह जाते हैं ।

शान्ति-कुञ्ज के प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत पिछले दिनों जो हो चुका है, इन दिनों जो हो रहा है और आगे जो होने जा रहा है, उसका विवेचन विश्लेषण करने पर किसी को भी यह असमंजस नहीं रहना चाहिए कि उसकी समर्थता संदिग्ध है । एकाकी योजनाएँ बनाने, अपनी ढपली-अपना राग अलापने, डेढ़ चावल की खिचड़ी पका कर भोजन-भंडार चलाने की योजना भी उत्साहवर्धक तो लग सकती है, पर यह नहीं कहा जा सकता कि वह सफलता के उच्च लक्ष्य तक पहुँच सकेगी या नहीं ? ढाई ईंट की मस्जिद खड़ी कर लेना प्रायः बालू में से तेल निकालने की तरह भारी श्रम करने पर भी सफल-सार्थक हो नहीं पाता ।

समर्थ सत्ता से साझेदारी

तिनके मिलने से मजबूत रस्सा बनता है । धागे मिलकर कपड़े के रूप में विनिर्मित होते हैं । यदि यह तिनके और धागे निजी महत्त्वाकांक्षा और निजी अहंकारिता के परिपोषण का उन्माद सँजोयें, अपना वर्चस्व अलग-अलग ही बनाये रहें, तो उन्हें अपना अस्तित्व तक बनाये रखना कठिन पड़ जाय । रीछ-वानरों को सेतु बनाने और सीता की खोज निकालने की सफलता इसलिए मिल सकी कि उनकी पीठ पर समर्थ सत्ता का हाथ था । एकाकी पुरुषार्थ पर निर्भर रह कर तो वे केवल पेड़ों पर उछल-कूद ही करते रह सकते थे । पेट भर लेना और जीवित बने रहना ही उनकी सफलता का चरम स्वरूप बनकर रह सकता था । सामूहिकता अपनाने और किसी समर्थ तंत्र के साथ जुड़ने पर ही उन्हें वह श्रेय मिल सका, जिसके कारण उनकी तब से लेकर अब तक समान रूप से प्रशंसा होती चली आ रही है ।

शांति-कुञ्ज की अपनी सत्ता और महत्ता, किसी दिव्यता से जुड़ी होने पर ही इस स्थिति में रह रही है कि उसके द्वारा पिछले दिनों कुछ करते-धरते बन पड़ा। इन दिनों जो रहा है, उसका एक धूलिकण भी परखने पर पता चलता है, कि इतना कुछ व्यक्ति विशेष के बल पर बन पड़ सकना सम्भव नहीं हो सकता । वर्तमान निर्धारणों को देखते हुए भी यही कहा जा सकता है कि यदि यह किसी व्यक्ति विशेष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का प्रयास है, तो उसे दुस्साहस से अधिक और कुछ नहीं माना जा सकता । पानी में बबूले कितनी ही महत्त्वाकांक्षाएँ लेकर उभरते, मचलते और इतराते हैं; पर कोई समर्थ पृष्ठभूमि पीछे न रहने के कारण, उनकी उछल-कूद कुछ ही समय में समाप्त हो जाती है । इन्द्र-धनुष जैसे विशालकाय दृश्य, आधार रहित होने के कारण अपनी असाधारण दीखने वाली छाप को कुछ ही मिनटों में गँवा बैठते देखे जाते हैं । निजी प्रयास को सब कुछ मान बैठने वाले, और असीम श्रेय को अपने सिर पर लाद लेने के लिए आकुल-व्याकुल क्षुद्र जन, कचरे में उगने वाले कुकुरमुत्तों की तरह उग तो पड़ते हैं, पर वे कुछ ही क्षणों में धराशायी हो जाते हैं । टिकते तो वे विशालकाय वृक्ष हैं, जिनकी जड़ों ने धरती में गहराई तक प्रवेश करके, निरन्तर खाद-पानी पाते रहने का सुयोग उपलब्ध कर लिया है ।

विभिन्न मौसमों में विभिन्न प्रकार की फसलें बोई और काटी जाती रहती हैं । इन दिनों तो उन कल्पवृक्षों का आरोपण किया जा रहा है, जो युग-युगान्तरों तक जीवित रहेंगें और उन 'प्रयोजनों को पूरा कर दिखायेंगे, जिनसे निराशा के स्थान पर प्रसन्नता का वातावरण बन सके । इन कल्पवृक्षों का उगाया और फलती-फूलती स्थिति तक पहुँचाया जा सकना, नन्दन वन जैसी असाधारण उर्वरता से सम्पन्न भूमि पर ही हो सकता है । अगले दिनों जिन महामानवों का समुदाय अवांछनीयताओं को निरस्त करने और सुखद सम्भावनाओं से भरी-पुरी योजनाओं को सम्पन्न करने के लिए कटिबद्ध हो रहा है, उनके पोषण और प्रशिक्षण के अनुरूप अवलम्बन भी चाहिए । जिन्हें ऐसी खोज करनी हो, उन्हें अपने लिए उपयुक्त आधार खोजते समय, एक बार शान्ति-कुञ्ज के साथ जुड़ने को भी ध्यान में रखना चाहिए ।

सामान्य जीवधारी पंच तत्वों के संयोग से जन्मते और जिस-तिस प्रकार दिन गुजारते हुए फिर उसी प्रपंच में विलीन हो जाते हैं; पर मनुष्य तो उनकी तुलना में कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा है । इसलिए उसकी विचारणा, आकांक्षा और क्रिया-पद्धति भी नर-पशुओं की अपेक्षा कुछ अधिक ही उत्कृष्ट होनी चाहिए; विशेषतया उन दिनों, जिनमें प्रामाणिक और प्रतिभावानों के चयन हेतु परीक्षा-प्रतिस्पर्धा सँजोई गई है । इस तैयारी के लिए असाधारण रीति-नीति अपनाने की आवश्यकता पड़ेगी । हर कसौटी पर खरा सिद्ध होने और भट्ठी के अंगारों के रूप में बहुत अधिक चमकने की आवश्यकता पड़ेगी । इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए ही तो शान्ति-कुञ्ज में आवश्यक आधार और उपकरण जुटाये गये हैं । उसे ऐसी प्रयोगशाला के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिसमें धूलि कणों से परमाणु ऊर्जा का उद्भव और वितरण सम्भव हो सके।

महत्त्वपूर्ण घटनाओं से बिछुड़ने की नहीं, जुड़ने की बात सोची जानी चाहिए । ऐसे प्रकरण में सम्भावित सौभाग्य वर्षा का स्मरण रखना चाहिए और उनका उत्साहपूर्वक चयन करना चाहिए । कचरा भी चक्रवात के साथ जुड़कर आकाश चूमने लगता है । जिस महाशक्ति ने शान्ति-कुञ्ज तंत्र को युग चेतना का उद्गम केन्द्र बनाया है, वही अपनी विद्युत् धारा उन तक भी पहुँचा कर रहेगी, जो उस शक्तिशाली ट्रान्सफार्मर के साथ जुड़ने में भाव-भरा उत्साह प्रदर्शित कर सकेंगे ।

●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग-संधि वेला में सृजनशिल्पियों के दायित्व

अग्नि परीक्षा काल में वरिष्ठों का कर्त्तव्य

व्यक्ति की आन्तरिक उत्कृष्टता ही बस बात की गारन्टी है कि वह स्वयं सुखी रहेगा और अपने सम्पर्क क्षेत्र को शान्ति एवं प्रगति से लाभान्वित करेगा । परिस्थितियाँ मन:स्थिति की प्रतिक्रिया भर हैं । मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है । इन सनातन तथ्यों की कोई भी अपने चिन्तन और चरित्र के अनुरूप उत्थान और पतन का अवसर प्रस्तुत करते हुए देख कर यथार्थता परख सकता है । वर्तमान की विभीषिकाओं को निरस्त करने और भविष्य की उज्जवल सम्भावनाओं से भरा-पूरा देखने का जो सपना सँजोया गया है उसके मूल में इसी प्रतिष्ठा को आधारभूत माना गया है कि जन-जन को उत्कृष्टता अपनाने के लिए सहमत किया जायेगा, फलत: शालीनता और सद्भावना का वातावरण बनेगा । इतना बन पड़ने पर सामान्य सुविधा-साधनों के सहारे भी शान्ति और प्रगति की परिस्थितियाँ विनिर्मित होती चली जायेंगी । नव सृजन का, युग परिवर्तन का, उज्जवल भविष्य का आधार खड़ा करने वाले तत्त्व इस तथ्य से पूर्णतया आश्वस्त हैं कि मनुष्य की अन्तरात्मा को जगाया जा सके तो वह सहज में ही शालीनता अंगीकार करेगी । इतनी बात बन सकी तो फिर सुख-शान्ति की समग्रता में कहीं कोई कमी न रहेगी ।

इन्हीं विश्वासों के सहारे युगान्तरीय चेतना प्रकट और प्रखर होती चल रही है । वातावरण की विषाक्तता में सन्देह नहीं तो भी मानव अन्तरात्मा इतनी समर्थ है कि घेरे का दबाव उसे मूर्छित भर कर सकता है आत्यन्तिक हनन करने में सफल नहीं हो सकता । भयानक ग्रीष्म में धरती घास सर्वत्र सूख जाती है तो भी उसकी जड़ों में अमृत्व विद्यमान रहता है । ज्योंही बादल बरसते हैं, देखते-देखते सूखी जड़ें उगती और धरती पर मखमली कालीन की तरह फैलती चली जाती हैं । पतनोन्मुखी गुरुत्वाकर्षण निश्चित रूप से प्रबल है । वह उत्थान की पतन में परिणित करने के लिए सतत संलग्न रहता है । फिर भी ऊर्ध्वगमन की प्रक्रिया निराश नहीं होती । अग्नि की लपटें ऊपर ही उठती हैं । गर्मी हर वस्तु को फुलाती और उठाती है । पृथ्वी के आकर्षण से अग्नि के विकर्षण ने पराभूत होने से इन्कार कर दिया है ।

प्रामाणिकता का परिचय दें, जीवन्त-जाग्रत बनें

इन शाश्वत सिद्धान्तों ने आज की विषम बेला में अपनी प्रामाणिकता का परिचय देने के लिए अग्नि परीक्षा में होकर गुजरना स्वीकार कर लिया है । प्रस्तुत विषाक्तता से जूझने के लिए सृजन शक्तियों ने समय की चुनौती स्वीकार की है और कहा है, ध्वंस नहीं सृजन जीवन्त है । असत्य नहीं, सत्य प्रबल है । नियन्ता का समर्थन पतन के नहीं उत्थान के साथ है । अन्धकार कितना ही सघन या विस्तृत क्यों न हो, उसे दीपक की एक छोटी-सी बाती ललकारती रहती है । फिर परिस्थितियों की विषमता देखकर सृजन के मुख पर मलीनता लाने का कोई कारण नहीं ।

विलासी, लिप्सा और आधिपत्य की अहंता ने मनुष्य को व्यामोह के बन्धन में बाँधा है । उसे वासना, तृष्णा के प्रपंच में जकड़ा और अपंग, असहायों की दयनीय स्थिति में ला पटका है । पतन का दाव चला गया, क्योंकि उसे अवरोध का सामना नहीं करना पड़ा । यदि आत्मा पर जागृतों जैसी तेजस्विता दृष्टिगोचर होती तो क्षुद्रता को ऐसा दुस्साहस करते न बन पड़ता कि वह महानता को पदच्युत करके स्वयं सिंहासनारूढ़ होती है । दुर्दैव का प्रकोप ही कहना चाहिए कि संसार भर को प्रकाश देने वाले सूर्य ने अन्धकार आधिपत्य स्वीकार कर लिया और लम्बा समय उनीदी तमिस्रा में पड़े-पड़े गँवा दिया । ग्रहण का कलंक देर तक सूर्य, चन्द्र को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपने चंगुल में ग्रसित किये नहीं रहता । प्रकाश की सत्ता है, अन्धकार की नहीं । प्रकाश का अभाव ही अन्धकार है । उदीयमान प्रकाश का सामना नहीं करना पड़े तभी तक उसकी सत्ता है । आलोक के उदित होने पर उसका पलायन देखते ही बनता है ।

उद्बोधन और आलोक न मिले तो व्यामोह ओर भटकाव की स्थिति देर तक बनी रह सकती है, पर प्रभात की जागरण वेला अपना शंखनाद करती रहे और तन्द्रा पर उसका कोई प्रभाव न पड़े ऐसा हो नहीं सकता । अरुणोदय के साथ अन्तरिक्ष से अवतरित होने वाली ऊर्जा जब वृक्ष वनस्पतियों से लेकर कीट-पतंगों और पशु-पक्षियों तक को जागरूकता एवं सक्रियता अपनाने के लिए उत्तेजित करती है तो कोई कारण नहीं कि मानवी अन्तःकरण रखने वालों पर उसका कोई असर नहीं पड़े । उनकी बात दूर है जो काया तो मनुष्य आकृति की पहने बैठे हैं, पर उसके भीतर निवास अभी भी पशु ही कर रहा है ।

नवजागरण की इस प्रभात वेला में इन दिनों सर्वत्र नये ढंग से सोचने और नया क्रम अपनाने की हलचल दृष्टिगोचर हो रही है । सघन तमिस्रा में गहरी निद्रा बनी रहे और प्राणी मृतवत् पड़ा रहे तो आश्चर्य की बात नहीं, किन्तु जब दिनमान की प्रखरता बहती ही चल रही हो और हलचलों में तूफानी गतिशीलता उछल रही हो तो फिर आलसी और प्रमादी भी लम्बी चादर तान कर सोए एवं निष्क्रिय पड़े नहीं रह सकते। स्वयं न जगें तो समय जगा देता है । कोई कुछ करना न चाहे तो भी परिस्थितियाँ कुछ करने कराने के लिए विवश करती हैं । इन दिनों ऐसा हो भी रहा है । जागरण का दौर शरीरगत सक्रियता में ही नहीं मनोगत विचर मन्थन में भी प्रकट और प्रखर हो रहा है । चिन्तन को नई दिशा मिली है। (पिछले दिनों पेट भरना ही प्रमुख रहा है, लोभ को प्रमुखता मिली है) और विलास एवं संचय को ही सौभाग्य का चिन्ह समझा जाता रहा है । पिछले दिनों लोभ की ही तरह मोह भी मनुष्य को निर्विवाद बन्धनों में बाँधने के लिये बेड़ी की भूमिका निभाता रहा है । दोनों अभिन्न मित्र जो हैं । लोभ को हथकड़ी बनने का अवसर मिल रहा है तो मोह भी सहचरत्व का आनन्द क्यों न ले । वह बेड़ी बनकर साथ क्यों न रहा हो । जब किसी को जकड़ना, पकड़ना ही ठहरा तो दोनों अभिन्न मित्र समान पराक्रम क्यों न करें ? समान लाभ क्यों न उठायें ? समान श्रेय क्यों न पायें ?

तमिस्रा के भव-बन्धन से बाहर निकलें

तमिस्रा भरी लम्बी काल रात्रि में निशाचरों की ही पाँचों उङ्गलियाँ घी में रही हैं । हिंस्र पशु-पक्षी आक्रामक बनते रहे हैं । उल्लू और चमगादड़ स्वच्छन्द विचरे हैं । चोर-चांडालों ने निर्द्वन्द होकर घातें लगाई हैं । इसमें साधनों का अपव्यय, अपहरण तो हुआ ही है । सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह रही कि तन्द्रा ने आलस्य और प्रमाद बनकर स्वभाव पर आधिपत्य कर लिया और मनुष्य को अपंग जैसा बनाकर रख दिया । अपंग का अर्थ बाधित भी होता है—बाधित अर्थात् बन्दी । बन्दी अर्थात् जकड़ा हुआ। यह जकड़न थोपी गई या स्वेच्छापूर्वक अपनाई गयी यह बात दूसरी है । लोभ की हथकड़ी पहने हुए व्यक्ति हाथों के अवरुद्ध हो जाने पर कुछ कर नहीं सकता, इसी प्रकार मोह की बेड़ियों में कस जाने के उपरान्त किसी के लिए कुछ दूर चल सकना भी शक्य नहीं रहता । श्रेय पथ पर वे लोग चल नहीं सकते जिन्हें मात्र अपने छोटे-से कुटुम्ब को ही इन्द्रासन सोंपे जाने की बात सूझती है । ऐसों की लोक-मंगल के लिए कुछ करने की इच्छा क्यों उठेगी ? जिन्हें लालच के लिए ही खपना-खटकना है वे क्यों परमार्थ को प्रश्रय देंगे ? उनके लिए संव्याप्त पीड़ा और पतन को हलके करने के लिए उपलब्धियों में से कुछ कारगर अंशदान कर सकना कठिन है । लम्बी तमिस्रा ने पिछड़ों को निष्क्रिय और प्रगतिशीलों को संकीर्ण स्वार्थ परायण बनाकर रख दिया । लिप्सा और लालसा की ललक बढ़ती ही गई । वासना और तृष्णा में मन ऐसा रमा कि यह सूझना तक रुक गया कि जीवन क्रम में इससे आगे की भी कोई मंजिल या जिम्मेदारी है । बड़प्पन और विलास की वारुणी जब मनःतन्त्र पर पूरी तरह हावी हो रही हो तो दीन-दुनिया की समस्यायें, आवश्यकतायें सूझे भी कैसे ? सूझें तो उनके समाधान का कोई उपचार कैसे बने ?

यह है—उस भूत का पर्यवेक्षण जो अभी आधा-अधूरा ही विगत हो पाया है । फिर भी इतना तो निश्चित है नव प्रभात की ऊर्जा ने झकझोरे बिना छोड़ा किसी को नहीं । जीवन्तों में से हरेक को यह विचार करना पड़ रहा है कि परिवर्तन की इस पुण्य बेला में क्या उसे भी कुछ करना पड़ेगा ? समय के साथ चलने के बिना क्या उसका भी काम नहीं चलेगा?

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मा की पुकार को कुचलें नहीं

यह अत:मन्थन उन्हें खासतौर से बेचैन कर रहा है । जिनमें मानवी आस्थायें अभी भी अपने जीवन्त होने का प्रमाण देतीं और कुछ सोचने-करने के लिए नोंचती-कचोटती रहती हैं । उन्हें सोचना पड़ रहा है कि परिवर्तन से भरी इस युग सन्धि में उस तरह नहीं रहा जा सकता जैसाकि पिछले दिनों चलता रहा है । इन दिनों न समय की मांग अनसुनी की जा सकती है और न ही आत्मा की पुकार को देर तक दबाया जा सकता है । विनाश से जूझने और विकास को सोचने के लिए जब जागरूकों की सेना कमर कस कर अग्रगामी हो रही हो—प्रयाण की शंख ध्वनि से दिगन्त गूँज रहा हो तो मुँह छिपाकर बैठे रहना भी तो सरल नहीं है । उसमें भी भीतर का रुदन और बाहर का उपहास बाधक बनता है । संकीर्ण स्वार्थपरता में आबद्ध बने रहने की स्थिति तब तक तो अखरती नहीं थी जब अन्यत्र भी वैसा ही दौर चल रहा था । पर जब जागृति ने हर जगह सक्रियता उत्पन्न की है और आदर्शों को जीवण्त करने के लिए कुछ कर गुजरने की ठान ठानी है तो मुँह छिपा कर बैठे रहना भी कठिन है । लोक भर्त्सना से तो किसी बहाने बचा भी जा सकता है, पर आत्म-प्रताड़ना से छुटकारा कैसे मिले ?

जागृत आत्मा कहे जाने में रुचि और रुझान के अनुरूप ही समुदाय एकत्रित होते हैं । प्रकृति की अनुरूपता ही वर्ग बनाती और घनिष्ठता के सूत्र जोड़ती है । पठन का व्यसन—साहित्य की खरीद बेच भर का ताना-बाना बुनता है और वह भी ऐसा होता है जो कच्चे धागे की तरह स्थायित्व पकड़ नहीं पाता । उससे अच्छी वस्तु दीखी कि पुरानी छूटी । लेखा-जोखा साक्षी है कि जो एक बार इस परिवार में प्रविष्ट हुआ वह सदा-सर्वदा के लिए इसी का परिजन होकर रह गया । अखण्ड-ज्योति को एक ऐसा सूत्र कहते हैं जिस में बहुमूल्य मणि-मुक्तकों की माला गुँथी हुई है। हम लोग जागृत जीवन्तों की तरह एक आदर्शवादी परिवार बनकर रह रहे हैं ।

यह मिलन पठन-पाठन की सामग्री जुटाने या खपाने के लिए नहीं वरन् उस महान उद्देश्य के लिए हुआ है जिसमें व्यक्ति का समाज का समान रूप से हित-साधन सन्निहित है । जिसमें आत्मा व परमात्मा को समान रूप से सन्तुष्ट होने का अवसर है । महानता का रास्ता ऐसा है जिस पर वाहन के सहारे नहीं अपने पैरों से ही चलना पड़ता है । जो उतना साहस सँजो लेते हैं उनके लिए मंजिल के हर विराम पर अपेक्षाकृत अधिकाधिक आनन्द की सामग्री मिलती जाती है । प्रगति के हर चरण पर पहले से अधिक प्रसन्नता की स्थिति उपलब्ध होती है ।

क्षुद्र नहीं, महान बनें

व्यष्टि को क्षुद्र और समष्टि की महत् कहते हैं । बिराट ही ब्रह्म है । संकीर्ण स्वार्थपरता की कीचड़ में सना हुआ व्यक्तिवाद ही भवबन्धन है । इसी में फँसा हुआ कुंभीपाक नरक में सड़ने का कष्ट उठाता है । कहते हैं कि नरकों में एक ऐसा भी है जिसमें घड़े में बन्द होकर रहने का कष्ट सहना पड़ता है । यह कुंभीपाक व्यथा और कुछ नहीं व्यक्तिवादी संकीर्णता में आबद्ध रहने की घुटन भर है । पेट और प्रजनन में लिप्त मनुष्य सोचता तो कुछ इसी प्रकार है कि वह दूसरों की तुलना में अधिक चतुर है । लेना सबसे देना किसी को कुछ नहीं कि नीति आकर्षक भी लगती है, चतुरता युक्त भी । किन्तु वास्तविकता कुछ दूसरी ही है । ऐसे मनुष्य अत्यधिक घाटे में रहते हैं । आत्म सन्तोष, लोक-सम्मान और दैवी अनुग्रह के तीनों ही महान् लाभों से उन्हें सर्वथा वंचित रहना पड़ता है फिर प्रगति भी सीमित क्षेत्र में ही सम्भव होती है । ऐसे लोग जो भी पाते हैं अपव्यय में गँवाते हैं । साथ ही जनसहयोग के अभाव में अपने बलबूते उतना कम जमा कर पाते हैं जिन पर कोई गये-गुजरे स्तर वाला ही सन्तोष कर सकता है । यह संग्रह जिन्हें मुफ्त में मिलता है उनका चिन्तन और चरित्र उठाता नहीं गिरता है । इस प्रकार यह हराम में मिला उत्तराधिकार उनके लिये भी अभिशाप ही सिद्ध होता है जिन्हें इच्छा या अनिच्छा से देना पड़ा ।

चतुर लोगों की इन दिनों भरमार है । बुद्धिमानों के दर्शन दुर्लभ हो गये हैं । बुद्धिमता का निर्धारण और निर्देशन एक है कि महानता का मार्ग अपनाया जाय । इसमें किसानों को बीज बोने, उद्योगों को कारखाना लगाने, विद्वान को अध्ययन करने के समय त्याग करना पड़ता है । लाभदायक प्रतिफल को देखते हुए यह आरम्भिक विनियोग किसी भी दृष्टि से घाटे का सौदा नहीं है । महानता का वृक्षारोपण कुछ ही समय में कल्पवृक्षों के नन्दन वन की तरह-फूलता-फलता है । तत्काल होने की आतुरता हो तो फिर हथेली पर सरसों जमाकर दिखाने वाली बाजीगरी के कुचक्र में फँसने और जंजालों में भटकने के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगता नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

महानता का अवलम्बन करके असंख्य व्यक्ति क्षुद्र परिस्थितियों में जन्मने-पलने पर भी अपनी विशिष्टता के आधार पर उच्च स्थिति पर पहुँचे और यशस्वी हुए हैं । इन उदाहरणों में एक ही निष्कर्ष निकलता है कि महानता उस उद्यान को लगाने की तरह है जो आरम्भ में परिश्रम और साधन चाहता है, किन्तु समयानुसार सुरभि और सम्पदा के उभयपक्षीय अनुदान उत्साहवर्धक मात्र में प्रदान करता है । वह महानता आखिर है क्या जिससे व्यक्तित्व विशिष्टता युक्त एवं वर्चस्व वैभव सम्पन्न बनता चला जाता है ? इसका उत्तर एक ही है समष्टि की साधना । लोक सेवा जनकल्याण इसे अपनाने का एक ही उपाय है, स्वार्थ को परमार्थ के निमित्त विसर्जित करना । इस दुस्साहस को जो जितनी मात्रा में क्रियान्वित कर पाता है वह उसी अनुपात में अपने को बुद्धिमान एवं भाग्यवान अनुभव करता है । परिणामों को धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सकने वाले अपने अनुभव एक स्वर से यही सुनाते रहते हैं कि समष्टि की सेवा-साधना से बढ़कर लाभदायक उद्योग इस संसार में और कोई हैं ही नहीं। इसे अपनाने पर स्वार्थ और परमार्थ की उभयपक्षीय पूर्ति सहज ही होती है ।

शेष जीवन का सदुपयोग युगधर्म के निर्वाह में हो

इस युगसन्धि की ऐतिहासिक बेलों में दूरदर्शिता और सदाशयता की संयुक्त माँग एक ही है कि इन दिनों संकीर्ण स्वार्थपरता पर अंकुश लगाया जाय और जो बच सके उसे नवसृजन के पुण्य प्रयोजन में भावनापूर्वक लगाया जाय । धन का प्रभाव हो सकता है किन्तु श्रम, समय एवं मनोयोग की किसी के पास भी कमी नहीं हो सकती है । रुचि होने पर भी निरर्थक कामों में भी अधिक व्यस्त समझे जाने वाले लोग भी ढेरों श्रम, समय व साधन लगाते रहते हैं । फिर इसमें तो निर्धनों को भी कठिनाई नहीं हो सकती। व्यस्तता का बहाना करते समय दान और तंगी की आड़ लेकर अंशदान न दे सकने का तर्क तो दिया जा सकता है पर औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता । न बहानेबाजी को सच्चाई बताने का प्रयास सफल हो सकता है तथ्य में 'अरुचि' भी काम कर रही होती है। जागृतों के उत्तरदायित्व और समय की मांग की संगति बिठाई जा सके तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि इन दिनों वैयक्तिक जंजालों को थोड़ा हल्का किया जा सकता है और उस बचत को उन परमार्थ प्रयोजनों में लगाया जा सकता है जो युगसन्धि के इस पर्व पर मानवी सभ्यता के विकास या विनाश में से एक का चुनाव करने के साथ सम्बद्ध हैं । लिप्सा लालसा में ही तो ८४ लाख योनियों में भटकते हुए लम्बा समय बीता है । अब यदि इस जीवन के बचे-खुचे समय का कहने लायक अंश युगधर्म के निर्वाह में लगा दिया जाय तो कोई बड़ा घाटा पड़ने वाला नहीं है । पेट प्रजनन की प्रक्रिया तो अगले दिनों हेय योनियों के कुचक्र में फँसे रहने पर भी भली प्रकार चलती रह सकती है ।

वरिष्ठ आगे बढ़ें, अपने दायित्व सँभालें

मनुष्यों में एक श्रेणी नर पशुओं की है । उन्हें इन्द्रिय विलास, शरीर सज्जा और अहंता का परिपोषण करने वाली सुविधा सम्पदा चाहिए । दीखने में तो उनकी संरचना मनुष्य जैसी लगती है, पर वस्तुतः होते हैं वे जड़ कलेवर । "चलते-फिरते पेड़-पौधे इन्हीं को कहा जाता है । इन्हें सड़न, शीलन और घुटन चाहिए । ज्ञान-बूझकर या अनजाने वे इसी को चाहते और इसी को खरीदते हैं । विलास, संचय और अहंकार की खाई पाटने में जीवन भर अथक श्रम करते हैं, किन्तु हाथ में छाले, कमर में दर्द और मन में असन्तोष के अतिरिक्त इन्हें मिले भी क्या ? कोल्हू के बैलों के भाग्य में जो लिखा है वही तो सामने रहेगा । मनुष्यों में से अधिकांश को इसी बिरादरी का समझा जाना चाहिए । अन्धी भेड़ों का अनुकरण करते हुए वे एक के पीछे एक चलते हुए गहरे गर्त में गिरते और जिस-तिस पर दोषारोपण करते हुए खीजते-कलपते दिन बिताते हैं ।

पीड़ा और पतन के गर्त में गिरी हुई या गिरने के लिए आतुर यह नर पामरों की मंडली निश्चय ही दया की पात्र है । इन्हें सान्त्वना मिलनी चाहिए और जहाँ तक सम्भव हो राहत के साधन भी जुटने चाहिए । मानवी करुणा का यह तकाजा है कि दुखिहारा भले ही अपने पतनोन्मुख दृष्किोण और गर्हित क्रिया-कलाप को अपनाने से विपत्ति के जाल में जा घुसा हो, फिर भी भ्रमित तो भ्रमित ही है । उसे दुष्ट या भ्रष्ट कहना व्यर्थ है । 'भटके हुए बालक' शब्द का प्रयोग करना ही पर्याप्त है । इसी में चिन्तन की शालीनता है और पीड़ित के प्रति ममता । वह सेवा और सहायता का पात्र है उसे वह मिलनी चाहिए । मिलती भी है । जब तक वरिष्ठों में अन्तरात्मा जीवित रहेगी तब तक यह क्रम चलता भी रहेगा ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुर्घटना और विपत्ति की घड़ियों में सेवा सहायता की पुकार होती है और वह जुटाई भी जाती है । पर यह तो आपत्तिकालीन समाधान हुआ । स्थायी समस्या का समाधान कहाँ हुआ ? दुर्घटना और विपत्ति की रोकथाम तो एक आवश्यकता है । शल्य क्रिया और सूचीवेध की विद्या ही सब कुछ नहीं है । आरोग्य रक्षा के लिए आदतें सुधारने और वातावरण बनाने की भी तो आवश्यकता है । माना कि आज की कराहें बड़ी मर्मभेदी हैं, माना कि उनका तात्कालिक उपचार होना चाहिए पर यह भूला नहीं जाना चाहिए कि कराहों की परिस्थिति उत्पन्न करने वाली विडम्बनाएँ भी जहाँ की तहाँ नहीं पड़ी रहने देनी चाहिए । परिवर्तन और सुधार उनका भी सोचना जाना चाहिए।

वरिष्ठ कौन ?

मनुष्यों का दूसरा वर्ग वरिष्ठों का है । वरिष्ठ वे जो अपनी समस्या का आप समाधान कर सकें साथ ही बचे हुए पराक्रम का उपयोग दूसरों को उबारने में कर सकें । महत्ता इन्हीं का है । नदी की प्रचण्ड धारा को चुनौती देने वाले माँझी न हों तो भयानक आपत्तिकाल सामने रहने पर भी लोग नदी के किनारे खड़े असहाय, अपंगों की तरह रोते कलपते रहेंगे । पुरुषार्थ उस माँझी का है जिसकी माँसपेशियाँ चप्पू को दोनों हाथों से पकड़ती हैं और नाव पर लदे हुओं को पार उतारने का विश्वास भरा अभयदान देती हैं । पार उतरने के लिए व्याकुल भीड़ की तुलना में एक माँझी वरिष्ठ है । भगवान किसी को सम्पन्नता भले ही न दे, पर यदि सच्ची अनुकम्पा बरसा सके तो उसे माँझी जैसी बलिष्ठता अवश्य प्रदान कर दे ।

रोगियों की कहीं कमी नहीं । आवश्यकता कुशल चिकित्सक की है । ज्योति गँवाकर दिन में रात्रि जैसा अँधेरा अनुभव करने वालों की कमी नहीं । सराहनीय वे हैं जिन्हें निष्णात चिकित्सक कहा जाता है । वे अस्पताल में प्रातःकाल घुसते हैं और संध्याकाल तक आपरेशन की मेज पर योगी की तरह समाधिस्थ होकर शल्यक्रम चलाते रहते हैं । शल्यगृह से वापिस निकलने पर खोई ज्योति फिर पा लेने वाले सराहना करें या उपेक्षा, इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं । तथ्य वरिष्ठता के सौभाग्य का है, जिसे वह मिला वह सन्तोष के साथ जियेगा और शान्तिपूर्वक मरेगा । भगवान किसी को धन कुबेर भले ही न बनायें, पर उनकी करुणा बरसती ही हो तो उसे चिकित्सक की पदवी मिले जिसने असंख्यों को अन्धतमिस्रा से उबारा और आलोक की दुनिया में हाथ पकड़कर ला बिठाया।

अभागों की दुनिया अलग है और सौभाग्यवानों की अलग । अभागे जिस-तिस प्रकार लालच को पोषते, अविवेकी प्रजनन में निरत रहकर कमर तोड़ने वाला बोझ लादते, व्यामोह में तथाकथित अपनों को कुसंस्कारी बनाते, अपव्ययी असंयमी रहकर, दुर्व्यसनों के शिकार बनते, अहंता के परिपोषण में आक्रमण करते और प्रत्याक्रमण सहते हुए समय बिताते हैं । यही है उनकी जीवन गाथा का सार संक्षेप । यह घिनौनी परिचर्या अपनाते तो असंख्यों हैं, पर उनमें से ऐसे कदाचित ही कोई हों जो पथ भ्रष्टता की कष्टदायक प्रतिक्रिया से बच सकें । रोते-कलपते, खीजते-खिजाते, डरते-डराते, छेड़ते-पीटते लोगों के ठट्ठ के ठट्ट हर गली चौराहे पर खड़े देखे जा सकते हैं । इन्हीं दुर्दशाग्रस्तों की भीड़ में जा घुसना समझदारी कहाँ है ? भगवान किसी को उच्चशिक्षा से वंचित भले ही रखे पर इतनी समझ तो दे कि हित-अनहित में अन्तर करना आये । भले ही शूर-वीर योद्धा बनने का श्रेय किसी को न मिले पर इतनी सूझ-बूझ तो रहे कि मनुष्य जीवन बहुमूल्य है और उसे सार्थक बनाने के लिए भीड़ के साथ न चलने और अपना रास्ता आप चुनने जितना विवेक तो चाहिए ही। भगवान उससे वंचित किसी को भी न करे ।

वरिष्ठों का प्रवाह वरिष्ठता की दिशा में ही होना चाहिए । उन्हें समझना चाहिए कि पीड़ितों, पतितों, दरिद्रों और दुखियारों की पंक्ति में आ खड़े होना, उनके लिए अशोभनीय है । 'जो खड़े होने' के तथ्य पर हर किसी का पूरा-पूरा ध्यान जाना चाहिए और अनुभव किया जाना चाहिए कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है । न किसी पर दोषारोपण की आवश्यकता है, न परिस्थितियों का रोना-रोने की । व्यक्ति के उत्थान-पतन की धुरी एक ही ध्रुव केन्द्र पर टिकी हुई है कि उसने अपने को किस ढाँचे में ढाला और किस दिशाधारा में बहाया । इस निर्धारण में किसी दूसरे की साझेदारी नहीं । कदम अपने उठते हैं जिस भी भले-बुरे रास्ते पर चला जाय उस पर साथी-सहयोगी तो मिलते ही रहते हैं । इस दुनिया में न भलाई की कमी है न बुराई की । पसन्दगी अपनी—हिम्मत अपनी—सहायता दुनिया की । इस तथ्य को जो समझते-स्वीकारते हैं, वस्तुतः वे ही यथार्थवादी हैं। दूसरे तो ऐसे ही हवा के झोंकों के साथ सूखे पत्ते की तरह जिस-तिस दिशा में लुढ़कते-उड़ते कहीं से चलकर कहीं जा पहुँचते हैं । ऐसे बेपेंदी के लोटों की कोई विवेचनकर्त्ता क्यों कुछ चर्चा करेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वरिष्ठजन दिग्भ्रन्त न हों

व्यक्तित्व, के उत्थान-पतन से सम्बन्धित कुछ शाश्वत तथ्यों की चर्चा यहाँ इसलिये करनी पड़ी है कि किसी महान प्रयोजन के लिए लम्बी यात्रा पर निकले उसे युगशिल्पी काफिले के सदस्यों में यदि भटकाव आ जाये तो कारण और निवारण का समाधान वे स्वयं खोज सकें । भटकने वाले भटकते ही रहते हैं उन्हें कोई क्या कहे ? बच्चे अनगढ़ उछल-कूद में निरत रहते हैं उनकी ओर कोई अधिक ध्यान कहाँ देता है ? पर जब बड़ी आयु वाले छोटे बच्चों जैसी हरकतें करने लगें तो देखने वाले हतप्रभ होकर रह जाते हैं और उन्माद की आशंका करते हुए चिन्ता में डूबते—अस्पताल तक दौड़ने की तैयारी करते हैं । अपना काफिला वरिष्ठों का है—विशिष्टों का और विशेषज्ञों का । उन्हें बचकानी बातें सोचते और नासमझों जैसी हरकतें करते देखा जायेगा तो स्वभावतः गहरी चिन्ता होगी । चिन्ता का कारण उनकी निजी अवमानना तक सीमित नहीं है, वरन् उसके साथ जुड़े हुए उन उत्तरदायित्वों का भी प्रश्न है जो इस आपत्तिकाल में जीवन-मरण बन कर मानवी अस्तित्व और भविष्य की गरदन पर नंगी तलवार की तरह लटके हुए हैं । वरिष्ठ गिरेंगे तो फिर बचेगा क्या ? सूरज डूबेगा तो सघन तमिस्रा के और कहीं कुछ रहेगा क्या ?

युग बदल रहा है । यह कहा और माना जाय तो उसके साथ इतना और जोड़ना होगा कि यह कार्य 'वरिष्ठों' की अपनी निजी दिशाधारा बदलने के साथ आरम्भ होगा । प्रतिभाएँ आगे बढ़ती हैं, तो ही अनुयायियों की कतार पीछे चलती है । पतन और उत्थान का इतिहास इस एक ही पटरी पर आगे बढ़ता रहा है । प्रतिभाओं को दूसरे शब्दों में अन्धड़ कहते हैं । उनका वेग जिस दिशा में जिस तेजी से बढ़ता है उसी अनुपात से तिनकों, पत्तों से लेकर-छप्परों और वृक्षों तक को उड़ते-लुढ़कते देखा गया है । आज की पतनोन्मुख परिस्थितियों और विभीषिकाओं का श्रेय या दोष समय के मूर्धन्यों को ही दिया जायगा । भूतकाल में भी यही होता रहा है और भविष्य में भी यही शाश्वतक्रम चलेगा । गिरता उठता तो जमाना है, पर उनके लिए वास्तविक पापपुण्य का बोझ उस समय की अग्रगामी प्रतिभाओं के सिर पर लदता है । उनका अग्रगमन असंख्यों में प्राण फूँकता है । वे गिरते हैं तो ओलों की तरह समूची फसल को सफाचट करके रख देते हैं । जो चुप बैठे रहते हैं वे न तो शान्ति प्रिय कहलाते हैं न निरपेक्ष न अनासक्त । आड़े वक्त में मुँह छिपाने के लिए शान्ति का, भजन का, ब्रह्मज्ञान का लबादा ओढ़ने वाले अपना मन भले ही समझालें, आपत्तिकाल की यातनाएँ उन्हें कभी क्षमा नहीं कर सकतीं । दुर्घटना, महामारी, अग्निकाण्ड, आक्रमण, उत्पीड़न से संत्रस्त हाहाकारी, वातावरण में जो एकांत साधना की बात सोचे उसे ब्रह्मज्ञानी कौन कहेगा ? निष्ठुर पाषाण से कम उन्हें दूसरी उपमा क्या दी जाय, यह सोचने के बाद ही कदाचित कोई दूसरा शब्द मिल सके ।

साधारण और असाधारण समय के अन्तर को समझा जाय

किसी को यदि काल ज्ञान की दूरदर्शिता मिली हो तो उसे यह समझने में तनिक भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि व्यक्तिगत भाग्योदय को तथा इतिहास-प्रवाह के अनुकूल होने की दृष्टि से यह समय ऐसा है जिसका लाभ उठाया जाना ही चाहिए । चूकेंगे, वे पछतायेंगे । समय मनुष्य की इच्छा या चेष्टा की प्रतीक्षा नहीं करता । वह आता है और बिजली की तरह कौंध कर चला जाता है । जो उसे पकड़ने का प्रयत्न करते हैं वे अपनी सूझ-बूझ को सराहते रहते हैं । दीर्घसूत्री प्रमादी सदा ही घाटे में रहते हैं, पर जिन्हें असाधारण समय को पहचानने तथा उसे पकड़ने, प्रयुक्त करने में भूल होती है वे अनन्त काल तक पछताते ही रहते हैं ।

ऐसे अलभ्य अवसर प्रायः युग सन्धि वेला में ही आते हैं और परिवर्तन का सूत्र संचालन करने वाले अवतार तन्त्र के साथ ही जुड़े रहते हैं । रामावतार के समय रीछ, बानरों ने—गीध, गिलहरियों ने—केवट, भीलनी ने तनिक से पुरुषार्थ के बदले जो ऐतिहासिक यशस्विता कमाई वह अवसर निकल जाने पर उससे कहीं अधिक त्याग करने वालों को भी उपलब्ध नहीं हो सका । कृष्णावतार में पाण्डवों से लेकर सुदामा तक को, कुब्जा से लेकर राधा तक को तनिक से सहयोग के बदले जो लाभ मिले वे अविस्मरणीय ही रहेंगे । गोवर्द्धन उठाते समय लाठी लेकर आ खड़े होने वाले ग्वाल-बालों का इतना बड़ा पुरुषार्थ नहीं था जिसके लिए यह घटना अनन्त काल तक चित्रित होती रह सके । गाँधी के साथियों में से कितने ही अविस्मरणीय रहेंगे । विनोबा से लेकर मीराबेन तक असंख्यों ऐसे हैं जिन्हें गाँधीजी से अलग करके देखा जाय तो वे उसकी तुलना में कहीं अधिक हल्के रह

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाते हैं जितने कि आँके गये । बुद्ध और उनके साथी सहचरों को पृथक्-पृथक् करके देखा जाय तो उनके निर्धारित मूल्यों में जमीन आसमान जितना अन्तर दिखाई देगा । वेश्यावृत्ति छोड़कर साध्वी हो जाने में भी है तो प्रशंसा की बात, पर यदि आम्रपाली और बुद्ध के संयोग से उसे पृथक् करके देखा जाय तो बात उतनी बड़ी नहीं रह जाती जितनी कि बन पड़ी ।

साधारण समय और विशेष समय में—साधारण व्यक्ति और विशेष व्यक्ति में एक विशिष्ट अन्तर होता है । साधारण की चाल धीमी होती है और विशिष्ट की तत्काल निर्णय करने से लेकर कदम उठाने तक की प्रक्रिया सम्पन्न करनी होती है । धीरे-धीरे सोचते विचारते—अनुकूल अवसर ढूँढ़ते—साथियों की सलाह मशविरा करने में ढेरों समय लग जाता है और जो उत्कृष्टता का पक्षधर उत्साह उठा था वह समय बीतते-बीतते ठण्डा ही नहीं समाप्त भी हो जाता है ।

असंख्यों की आदर्शवादी योजनायें इसी प्रकार मटियामेट हुई हैं । इसके विपरीत असाधारण व्यक्ति समय को पहचानने में अपनी तीखी सूझ-बूझ का परिचय देते हैं । बिजली की तरह चमकते और तलवार की तरह टूट पड़ते हैं, असमंजस उनके आड़े नहीं आता ।

असमंजस त्यागें और युग-आमंत्रण स्वीकार करें

युग सन्धि में भयावह वर्तमान को गलाने और उज्ज्वल भविष्य को ढालने की महान् योजना प्रज्ञा पुरुष ने अपने हाथों में ली है । वे उसे पूरा करने के लिए आवश्यक वातावरण बना रहे हैं और प्रेरणाएँ उभार रहे हैं । किन्तु निराकार होने के नाते इस पुण्य प्रयोजन का श्रेय एवं उत्तरदायित्व तो उन्हें भी शरीरधारी जागृत आत्माओं को ही सौंपना पड़ रहा है यही भूत में भी होता रहा है । हनुमान, अंगद नल-नील, जटायु जामवन्त निजी स्तर पर नगण्य-सी सामर्थ्य वाले थे, पर जब वे राम-काज के लिए कटिबद्ध हो गये तो उस संकल्प के साथ ही उनकी सामर्थ्य में उभार आया और जैसे थे उसकी तुलना में असंख्य गुनी सामर्थ्य से सम्पन्न हो गये । मिस्टर गाँधी का आरम्भिक जीवन तथा महात्मा गाँधी का देवोपम वर्चस् देखकर कोई भी इस निष्कर्ष पर पहुँच सकता है कि राम-काज में निरत होना जहाँ आरम्भिक असमंजसों से आच्छादित है वहाँ उसके अगले ही चरण इतने शानदार हैं जिनकी तुलना में आरम्भिक असमंजस एवं दुस्साहस के लिये किये गये कष्ट के सहन को नगण्य ठहराया जा सके । हर क्षेत्र के महामानवों में से हर एक का विश्लेषण करते चला जाय तो एक ही निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि वैयक्तिक योग्यता, सम्पन्नता एवं पारिवारिक स्तर की दृष्टि से गये-गुजरे होते हुए भी जब उन्होंने आदर्शवादी साहसिकता अपनाई तो प्रामाणिकता को प्रारम्भिक परीक्षा देने में अड़चन आती है उसे पार करते ही वे आसमान चूमने वाली सफलता प्राप्त करने लगे और दसों-दिशाओं से उन पर अजस्र सद्भाव-सहयोग बरसने लगा ।

इन दिनों ऐसे ही उदार चेताओं की अत्यधिक आवश्यकता है। महाकाल का युग निमन्त्रण उन्हीं के लिए उतरा है। युग सन्धि के इस पुण्य पर्व पर उन्हें आगे आना चाहिए । अन्तःप्रेरणा का अनुसरण करना चाहिए और मानवीय भविष्य का दो टूक फैसला होने की इस निर्णायक बेला में युग पुरुषों जैसा रोल अदा करना चाहिए । इस उदार साहसिकता को अपनाने में जो कृपण जैसे असमंजस में हैं उन्हें झाड़ू से बुहार कर कूड़े-कर्कट के ढ़ेर में ले जा पटकना चाहिए । युग धर्म के निर्वाह में समयदान, अंशदान की दुहरी आवश्यकतायें पूर्ण करनी होंगी । उन्हें ऋषि रक्त से भरे गये घड़े की तरह हमें भी पहल करनी होगी ताकि युग संस्कृति की सीता का अभिनव सृजन हो सके । त्याग बलिदान की पुण्य परम्परा जागृत आत्माओं को अपने ही जीवन क्रम से आरम्भ करनी होगी । दूसरों से याचना करने से पहले यही न्यायानुकूल है कि पहले अपनी ही पोटली खाली की जाये, भले ही वह सुदामा के बगल में दबे हुए थोड़े से चावल ही क्यों न हों ।

यह आपत्तिकाल है । इसमें आपत्ति धर्म का तात्पर्य है सामान्य सुख-सुविधाओं की बात ताक पर रख देना और वह करने में जुट जाना जिसके लिए मनुष्य की गरिमा भरी अन्तरात्मा पुकारती है। आज किसी जागृत आत्मा को यह सोचने का अवकाश नहीं होना चाहिए कि उसके वैभव कैसे बढ़े, कुटुम्ब कैसे फैले, आज न पदवी धारी बनने की आवश्यकता है और न बड़े आदमियों में गिने जाने की लिए चित्र-विचित्र उछल-कूद करने की । शान्ति का समय होता तो यह बाल क्रीड़ाएँ भी किसी न किसी प्रकार दर-गुजर की जातीं। ओछे, बचकाने लोग यदि इन उथली हरकतों में उलझे रहते तो भी कोई बात नहीं थी, पर वरिष्ठों पर हेय स्तर का अवसाद चढ़ दौड़े तो इसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनकी विशिष्टता पर लगा हुआ कलंक ग्रहण ही कहा जायगा।

प्रज्ञा परिवार को अन्य संगठनों, सभा-संस्थानों के समतुल्य नहीं मानना चाहिए । वह युग सृजन के निमित्त अग्रगामी मूर्धन्य लोगों का एक सुसंस्कारी परिकर-परिसर है। उसके सदस्यों को-प्रज्ञा परिजनों को-प्रस्तुत युग चुनौती स्वीकर करनी ही चाहिए। इस सन्दर्भ में किसी को भी परिस्थितियों की विषमता या अनुकूलता का बहाना नहीं गढ़ना चाहिए। व्यस्त से व्यस्त और दरिद्र से दरिद्र भी इस विषम बेला में इस प्रकार न सही तो उस प्रकार कोई न कोई ऐसी भूमिका निभा सकता है जिसे असंख्यों के लिए अनुकरणीय कहा जा सके। अमुक-अमुक उत्तरदायित्वों से निवृत्त होने के उपरान्त निश्चिन्त होने और संन्यास धारण करके लोकमंगल में लगने के स्वप्न संसार में किसी को भी नहीं देखना चाहिए। अगले साल हममें से अमुक जीवित रहेगा ही इसकी कोई गारन्टी नहीं । जो आज की परिस्थितियों में सम्भव है बात उतनी ही सोचनी और करनी चाहिए। भविष्य में दस लाख की लाटरी खुलने पर आधा धन सदावर्त में लुटाया जायगा यह शेख-चिल्ली का स्वप्न कोई और देखे, तो देखे पर प्रज्ञा परिवार के सदस्यों को ऐसे स्वप्न लोक में उड़ने की आवश्यकता नहीं। उन्हें केवल एक ही बात सोचनी चाहिए कि समय की जिस चुनौती ने जागृत आत्माओं को कान पकड़कर झकझोरा है उसके उत्तर में उन्हें दाँत निपोरने हैं या सीना तानना है।

काया और आत्मा को समान रूप से न्याय मिले

निश्चित रूप से मनुष्य की विभूतियाँ अत्यधिक हैं। आवश्यकता उससे कहीं कम हैं। इस तथ्य को सही रीति से समझा और तदनुरूप बजट बनाकर चला जा सके तो खर्च कम और संग्रहीत भण्डार तथा उपार्जन मिला देने पर अमीरों जैसी स्थिति बन जाती है। ऐसी अमीरी जिसके सहारे दैन्य-दारिद्रय और पतन पराभव का कोई कारण ही शेष न रहे। मानवी सत्ता यदि स्वाभाविक स्तर पर बनी रहे तो उसमें अपनी सही आवश्यकताओं को पूरा करने के उपयोग किया जा सके तो लोक मंगल के लिए इतना कुछ बन पड़ता है कि उसके बदले जीवन लक्ष्य की पूर्ति-विश्व कल्याण की भाव भरी भूमिका और ईश्वर को संतोष दे सकने वाली सेवा-साधना का त्रिविधि सम्पादन भली प्रकार संभव हो सके। जीवनचर्या को त्रिवेणी संगम की पुनीत धारा जो बन सका, उसे मूर्तिमान तीर्थराज कहना चाहिए। ऐसे ही नर-रत्न अपने को-अपने समय को और अपने पुरषार्थ को कृत-कृत्य करते, दूसरों के लिए अभिनन्दनीय, अनुकरणीय, पदचिन्ह छोड़ जाने की भूमिका सम्पन्न करते हैं। यह तथ्य छोटे से छोटे मनुष्य पर भी लागू होते हैं। भले ही वह हजारी किसान जैसा अशिक्षित और डेमण्या भील जैसा निर्धन ही क्यों न हो। उच्चस्तरीय भूमिकाएँ निभाने के लिए मात्र उदात्त दृष्टिकोण चाहिए। इतने भर से उन सभी क्षमताओं का परिस्थितियों का-सहयोगियों का उपयोगी सरंजाम जुट जाता है जिनकी कि महानता उपलब्ध करने के लिए आवश्यकता अनुभव की जाती है और न मिलने पर जिस-तिस पर दोषारोपण करने की मूर्खता भड़कती है।

मानवी गरिमा के साथ जीवन-सम्पदा को सुसज्जित करने का सचमुच ही मन हो तो उसका एक ही उपाय है कि उपलब्धियों के उपयोग की एक विभाजन रेखा बना ली जाय । शरीर के लिए कितना और आत्म के लिए कितना ? यह अनुपात निर्धारित हो सके तो दोनों पक्ष साथ-साथ बड़ी सुन्दरता के साथ सध सकते हैं। शरीर के लिए अन्न वस्त्र जैसे उपकरण उतनी मात्रा में पर्याप्त समझे जाने चाहिए जितने से औसत देशवासियों का काम चलता है। यह ब्राह्मण वृत्ति है। इसी को "सादा जीवन, उच्च विचार" का आदर्श कहते हैं। व्यसनी, विलासी, अपव्ययी लोगों की फरमाइशें आकाश चूमती हैं और उनकी पूर्ति कुबेर की सम्पदा मिलने पर भी पूरी हो सकती कठिन पड़ती हैं। तृष्णा की पूर्ति कभी कोई कर नहीं सका। आवश्यकता में कमी पड़ने जैसी असुविधा इस सृष्टि के किसी घटक के लिए नियन्ता ने रहने ही नहीं दी है।

परिवार को सीमित और स्वर्गोपम बनायें

परिवार का बोझ लगता तो बहुत भारी है पर वस्तुतः वह वैसा है नहीं। वह के सहकारी संस्था है जिसमें सभी को मिल जुलकर योगदान देना चाहिए और अपने हिस्से का उससे भी कम उपभोग माँगना चाहिए। सुसंस्कारी लोग जब भी मिलते हैं स्वर्गीय वातावरण की सृष्टि करते हैं नरक तो दुर्गुणी, दुर्मति लोगों के जमघट का दूसरा नाम है। परिवार के मूर्धन्य व्यक्ति यदि परिजनों को विलासी, अपव्ययी, आलसी, दुर्गुणी न बनने दें, उनमें सुसंस्कारिता, सुव्यवस्था, और सद्भावना की देव सम्पदा का बीजारोपण, परिपोषण, करते रहें तो कोई कारण नहीं कि स्वल्प साधनों में भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हँसता-हँसाता, खिलता-खिलाता जीवन न जिया जा सके। परिवार की संख्या बढ़ाने में, प्रजनन की घुड़-दौड़ लगाने में क्या बुद्धिमानी है? दाम्पत्य जीवन की सफलता में इस विडम्बना को जोड़ने की क्या जरूरत है कि बच्चे होने ही चाहिए। लड़कियाँ नहीं लड़के ही उपजने चाहिए। जब अभिभावकों का भाई-बहिनों, भतीजे-भान्जों का मित्र-पड़ोसियों का परिकर अभावों से बिलबिलाता और कठिनाइयों से रुदन करता चारों ओर बिखरा पड़ा हो तो उनकी सहायता करने की उपेक्षा करके बच्चों का आवश्यक खर्च बढ़ाने की आवश्यकता ही क्या है। पत्नी का स्वास्थ्य, पिता का अर्थ सन्तुलन, बच्चों का भविष्य परिवार के हितों में कटौती, देश को अव्यवस्था के गर्त में धकेलने के अतिरिक्त आज की परिस्थितियों में और कोई परिणति नहीं। इस दुर्भाग्य से इन दिनों थोड़ी सी सतर्कता बरतने पर आसानी से बचा जा सकता है। इतना ही नहीं, आध्यात्मिक भूमिका निभाने के लिए जिस भारविहीन स्थिति की आवश्यकता है उसका बहुत कुछ सुयोग इतनी सी सतर्कता अपनाने पर सहज ही बैठ सकता है। जो धन मनोयोग और श्रम समय नई सृष्टि को संभालने में लगता है उसे बचाकर यदि उच्च उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त किया जा सके तो आत्मिक प्रगति के मार्ग में जितनी कठिनाइयाँ गिनाई जाती हैं उनमें से आधी तो चुटकी बजाते दूर हो सकती हैं। लोक-सेवी नया प्रजनन बन्द कर सकें, जितना हो चुका उसी के निर्वाह की बात सोचें तो उतने भर से उन समस्याओं का आधा समाधान हो सकता है जो पर्वत की तरह भारी और विशालकाय दीखती हैं ।

जो यह सोचते हैं कि अमुक प्रकार से साधन जुट जायें, अमुक अनुकूलताएँ बन जाएँ, अमुक समस्याएँ सुलझ जाएँ तब कहीं परमार्थ पथ पर अग्रसर होने की तैयारी करेंगे। उन्हें इस असम्भव कल्पना का ताना-बाना बुनना छोड़ ही देना चाहिए। ऐसा इच्छित समय कभी किसी के सामने नहीं आया, जब समस्त समस्याओं का हल उसकी इच्छानुकूल हुआ हो। परिस्थितियों के साथ ताल मेल बिठाकर ही हर व्यक्ति को परमार्थ प्रयोजनों के लिए समय, श्रम, मनयोग और साधन जुटाने पड़े हैं। जिन्हें यह सच्चाई स्वीकर हो, उन्हीं को यथार्थ वादियों की तरह कुछ ठोस कदम उठाने और ठोस परिणाम पाने की आशा करनी चाहिए। उन्हीं का सोचना सार्थक है अन्यथा शेख चिल्लियों जैसी बिना पंख की उड़ान उड़ते रहने से व्यर्थ ही मस्तिष्क पर अनावश्यक भार बढ़ता है और बेकार सिर दर्द लदता है।

आत्मिक प्रगति का मर्म

अध्यात्मवाद की व्यावहारिकता यही है कि उसमें दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन का उभयपक्षीय प्रयास अन्तःकरण की गहराई में उतर कर करना पड़ता है। यह तथ्य हजार बार समझा और लाखबार समझाया जाना चाहिए कि पूजा अर्चना की (समूची प्रक्रिया मात्र इसी प्रयोजन के लिए आप्तजनों ने सृजी है ।) ईश्वर को न किसी की खुशामद चाहिए न रिश्वत। इन अनैतिक प्रयोजनों के सहारे उसे न्यायनिष्ठा छोड़ देने और कुपात्रता रखते हुए भी मनोकामना पूर्ण करने वाली ऋद्धि-सिद्धियाँ बरसाने के लिए दबाव डालना व्यर्थ है। ईश्वर यदि है और उसमें महानता की विशिष्टता भी है तो यह तथ्य भी गाँठ बाँध लेना चाहिए कि उसे निर्यात व्यवस्था तोड़कर तथाकथित भक्तजनों की मनमर्जी पर कठपुतली की तरह नाचने के लिए समहत नहीं किया जा सकता।

उपासना का तात्पर्य अपने आपको महानता के आदर्श के अधिकाधिक निकट लाना और उसके कण, आग और ईंधन की तरह तादात्म्य स्थापित कर लेना है। साधना का तात्पर्य है संचित, कुसंस्कारों और कषाय-कल्मषों की छाती पर चढ़ बैठना, उन्हें बेरहमी के साथ कुचल मसल कर रख देना। इन्द्रिय संयम, समय संयम, अर्थ संयम और विचार संयम की चतुर्विध तपश्चर्या के सहारे ही जीवन की वरिष्ठता उभरती है और उस आत्मबल का उदय होता है । जिसे संसार का सबसे बड़ा सामर्थ्यस्रोत कहा जाता है। आराधना वह है जिसमें 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की वसुधैव कुटुम्बकम्, की अनुभूति होती है। और दूसरों का दुःख बटाने के लिए मन हर घड़ी मचलता रहता है। भगवान को प्रसन्न अनुग्रहीत बनाने के यही तीन उपचार हैं । उपासना, साधना और आराधना का अवलम्बन करके ही कोई वास्तविक आत्मिक प्रगति कर सका है जिन्हें पूजापत्री के सहारे लम्बी चौड़ी सिद्धियाँ पाने या देवताओं को वशवर्ती करने की सनक चढ़ी रहती हो वे अपने पागलों की दुनिया अपने लिए सुरक्षित रखें किन्तु स्मरण यह भी रखें कि इस बाल मनोरंजन में सार कुछ नहीं आत्मिक प्रगति का वास्तविक मार्ग एक ही है समूची जीवन चर्या में उत्कृष्टता का समावेश, जिसने इतना समझ लिया उसने अध्यात्म का सारतत्त्व समझ लिया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आत्मिक प्रगति की दिशा में प्रयाण करने वाले पूजा और सेवा के दो कदम क्रमबद्ध रूप से उठाने पड़ते हैं। पूजा को प्रकारान्तर से मनोवैज्ञानिक व्यायाम सुसंस्कारिता परिशोधन एवं पात्रता का अभिवर्धन कह सकते हैं. कषाय-कल्मषों निराकरण आवश्यक है। उसके लिए आवश्यक शिक्षा, प्रेरणा, दिशाधारा एवं रीति-नीति सीखने सिखाने के लिए जप-तप का विशालकाय ढाँचा खड़ा किया गया है और निर्धारित क्रिया विधान अपनाने का अनुशासन बनाया गया है । यह आवश्यक भी है और महत्त्वपूर्ण भी। किन्तु स्मरण रखा जाना चाहिए कि यह प्रक्रिया समग्र नहीं, एकाकी है। अपने स्थान पर हर दृष्टि से उपयोगी होते हुए भी एकांगी एवं अपूर्ण है। उसकी पूरक है सेवा। धर्म अपनाये बिना परमार्थ प्रवृत्त हुए बिना मात्र कल्पना-जल्पना करते रहने से कठोर अन्तराल को कोमल परिष्कृत बनाया जाना संभव नहीं । इसलिए हर अध्यात्म प्रेमी को पूजा की तरह ही सेवा धर्म प्रवृत होने को भी इस मार्ग की अनिवार्य आवश्यकता मानकर चलना पड़ा है । बिना जानकारी किये जो रस पूर्वक परमार्थ प्रयोजनों में निरत होते हैं वे ही सच्चे अर्थों में संत हैं। पात्रता अपरिग्रही ब्राह्मणत्व अपनाने पर विकसित होती है और पूर्णता प्रदान करने वाली दैवी अनुकम्पा सन्त की परमार्थपरायणता अपनाने के अनुपात से उपलब्ध होती है। जिनकी साधना समग्र है, वे पक्षी की तरह अपने दोनों पंखों का प्रयोग करते हैं नाविक दोनों हाथों से डाँड़ खेता है। गाड़ी दो पहियों पर चलती है। ताली दो हाथों से बजती है। काल चक्र दिन-रात की गतिशीलता पर घूमता है। आत्मिक प्रगति की दिशा में चलने वाले सदा से पूजा और सेवा के दोनों ही उपक्रमों को समान महत्त्व देते रहे हैं। दोनों में से किसी को भी छोड़ा नहीं जा सकता। साथ ही यह भी निश्चित है कि किसी एक को अपनाने भर से लक्ष्य तक पहुँचने की लम्बी यात्रा पूरी नहीं हो सकती। एक टाँग वाले को कम से कम लकड़ी की टाँग तो चाहिए ही, अन्यथा बेचारे के लिए यात्रा करना तो दूर, देर तक खड़ा रहना भी कठिन हो जायेगा।

काया के साथ-साथ आत्मा का भी हितसाधन हो

जो इन तथ्यों को समझ सकें उन्हें व्यावहारिक जीवन में इस सच्चाई को भी समाविष्ट करना चाहिए कि काया और आत्मा की साझेदारी से बनने वाली जीवनचर्या का लाभ भी दोनों ही साझीदारों को मिलना चाहिए। हित दोनों का ही सधना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि शरीरगत वासना और मनोगत तृष्णा की पूर्ति करते हुए काया ही संचित और उपार्जित वैभव को पूरी तरह हड़पती निगलती रहे और आत्मा को व्यस्त, अभावग्रस्त रहने के झूठे बहानों से क्षुधा-तृष्णा से व्याकुल और दयनीय स्थिति में विकल विह्वल पड़ा रहने दिया जाय। होता यही है-वासना, तृष्णा और अहंता की पूर्ति स्वार्थ साधना ही इष्ट बनकर रह जाता है आत्मा की भूख बुझाने के लिए जिस परमार्थपरायणता की अनिवार्य आवश्यकता है, उसका प्रश्न आते ही मुँह मिचलाने, अँगूठा दिखाने, दुम दबाने और बहाने बाजी गढ़ने का सिलसिला चल पड़ता है। इस अनीति का अन्त होना ही चाहिए। यह चतुरता अन्ततः मूर्खता से भी मँहगी पड़ती है। इसलिए उचित यही है कि समय रहते न्यायनीति अपनाई जाय और काया की तरह आत्मा की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाय। यदि इस ईमानदारी को अपनाया जा सके तो समय और साधनों का उपयोग करते समय दोनों के लिए समान अवसर दिया जाना चाहिए। लाभांश का विभाजन दोनों के निमित्त होना चाहिए। जितना समय काया के निर्वाह और उसके सम्बन्धित परिजनों के परिपोषण में लगता है उतना ही आत्मकल्याण के परमार्थ प्रयजनों में भी लगे। आरम्भ में कठिन लगे और तृष्णा अपने लिए अधिक माँगे, तो भी इतना तो करना ही होगा कि वर्तमान परिस्थितियों में जितना संभव हो उतना समय और वैभव आत्मा के निमित्त भी निकाला जाय सर्वथा मुँह न मोड़ा जाय। यह आध्यात्मिक ईमानदारी है जिसके आधार पर काया और आत्मा को समान रूप देने का सिलसिला चलता है। इसके लिए परमार्थ-प्रयोजनों के लिए समयदान का साधन दान का अंशदान नियत निर्धारित किये बिना और कोई गति नहीं। अनीति की विभाजन प्रक्रिया यदि इसी प्रकार चलती रही तो समझना चाहिए कि पूजा पत्री की छुट-पुट प्रक्रिया मात्र बिडम्बना भर है। आत्म कल्याण के लिए न्याय नीति का अपनाया जाना भी आवश्यक है। अनीति युक्त विभाजन और अध्यात्म के नाम चलने वाला प्रपंच एक-दूसरे के पूरक नहीं हो सकते। दोनों प्रतिपक्षी एक-दूसरे की काट करते रहें, असंतुष्ट रुष्ट बने रहें तो समझना चाहिए कल्पना का ढकोसला इस क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता जुटाने और सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाने में सर्वथा विफल ही बना रहेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिवर्तन की महाबेला में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें

महत्त्वपूर्ण परिवर्तन, घटनाक्रम, क्रांतियाँ आनायास होती दिखाई पड़ती तो हैं, किन्तु गंभीरतापूर्वक तथ्यों का अवलोकन करने पर एक ही निष्कर्ष निकलता है कि इस परिवर्तन के पीछे न जाने कब से परिस्थितियाँ बन रही थीं एवं सम्भावनाओं का जल जंजाल अनायास फूट पड़ने के लिए ताने-बाने बुन रहा था । हाँ, स्थूल दृष्टिकोण से चर्म-चक्षुओं को ये सारे परिवर्तन चमत्कारिक ढंग से घटते हुए प्रतीत होते अवश्य हैं पर लगता नहीं कि यह उथल-पुथल लम्बे समय से निर्मित परिस्थितियों का प्रतिफल है । पता तब चलता है जब ये सारी घटनाएँ घट चुकती हैं, उस समय सिर्फ पछतावा ही हाथ लगता है और चिंतन का क्रम प्रारंम्भ हो जाता है कि काश ! हम भी दूरदर्शी विवेकशीलता अपनाये होते और संम्भावनाओं को देखते हुए अपने क्रिया-कलापों में परिवर्तन पहले से किये होते तो महत्त्वपूर्ण श्रेय-सौभाग्य से वंचित भी न होते और दुःखद संभावनाओं से भी बच निकलने का रास्ता मिल गया होता ।

महापुरुष, महामानव, देवमानव, अवतार, संत, सुधारक, शहीद उन परिस्थितियों को पहले से परख कर सुखद सम्भावनाओं को लाने के लिए प्रबल-पुरुषार्थ में जुट पड़ते हैं और विपरीत परिस्थितियों के प्रति सचेत हो जाते हैं । मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त एवं पृथ्वी के महत्त्वपूर्ण उथल-पुथल से लेकर ब्रह्माण्डीय विस्फोटों तक यही एक तथ्य उभर कर सामने आता है कि परिवर्तन लम्बे काल से चल रही प्रक्रिया का परिणाम है । किसी आकस्मिक प्रतिक्रिया की परिणति नहीं ।

माँ के गर्भ में प्रसव काल के समय उठने वाली पीड़ा एवं नवसृजन के परिवर्तनों को देखकर छोटे बच्चे एवं बुद्धि के लोग यही सोचते हैं कि कल तक तो माँ स्वस्थ थीं, आज अचानक क्या हो गया । यह परिवर्तन उन्हें अजीब सा लगता है और उनके लिए मात्र कौतुक-कोतूहल से भरा हुआ जान पड़ता है, किन्तु सम्बन्धित व्यक्ति एवं चिकित्सक जानते हैं कि यह परिवर्तन तो उस समग्र व सहज प्रक्रिया का ही एक अंग है, जिसकी संभावना नौ माह पूर्व बन चुकी थी और उस भ्रूण कलल का बीजारोपण हो चुका था जो चेतन बिन्दु को खींचकर ले आये ।

आधि-व्याधियों के बारे में चरक, सुश्रुत, धन्वन्तरि प्रभृति मनीषियों ने एक ही बात स्पष्ट की है कि जो बीमारियाँ अनायास होती दिखाई पड़ती हैं, जिसके दबाने के लिए ही एलोपैथिक चिकित्सक लाल, पीली गोलियाँ एवं कैप्स्यूल देते और बदले में रोगों को निकलते हुए देखते हैं । सामान्य जन इन रोगों के बारे में सोचते हैं कि यह गड़बड़ी तो कल ही हुई, किन्तु उपरोक्त शोधकर्ताओं ने बताया है कि स्थूल आकार धारण करने वाला रोगों का जखीरा लम्बे समय से चले आ रहे असंयम का ही दुष्परिणाम है, इसे ठीक करने के लिए चिकित्सा व्यवस्था से लेकर लंबे समय तक संयमशीलता अपनाने की भी सलाह उन्होंने दी और कहा है कि तभी रोगों से मुक्ति संभव है । मनुष्य इन्हीं रीति-नीति को अपनाकर अपने स्वास्थ्य को अक्षुण्ण रख भी सकता है ।

दाँत सड़ने की घटना अचानक एक दिन में ही प्रकाश में आती है, किन्तु इसके लिए चिकित्सकों ने लम्बे समय से चली आ रही चटोरेपन एवं शक्कर से बने पदार्थों का बाल्यावस्था से प्रयोग और इन्द्रिय लोलुपता अपनाकर जीवनीशक्ति का क्षरण ही मुख्य कारण बताया है । वर्षा, आँधी, चक्रवात, ज्वालामुखी, भूकंप जैसी अचानक घटने वाली घटनाओं के बारे में सम्बन्धित वैज्ञानिकों ने एक ही तथ्य स्पष्ट किया है कि घटनायें भले ही क्षणों में घट जाती हैं पर इसका अर्थ यह नहीं कि यह सब सामयिक परिस्थितियों का परिणाम है, बल्कि प्रकृति में यह क्रम बहुत पहले चल चुका होता है । वर्षा के पहले ग्रीष्म ऋतु में तपन का क्रम बन चुकता है, जिससे मानसून की हवायें प्यास बुझाने के लिए चल पड़ती हैं। और घनघोर वर्षा करती हैं । आँधी एवं चक्रवात के समय क्षण में ही तिनकों, पत्तों एवं धूल के कणों को आकाश में उड़ते हुए देखते हैं । इस तीव्र प्रकृतिगत असंतुलन के पीछे कारण उस क्षेत्र में कम दबाव का बन जाना होता है, जिसे पूरा करने के लिए सभी दिशाओं से तीव्र हवा के झोंके चलने लगते हैं । ज्वालामुखी एवं भूकम्प के लिए पृथ्वी के नीचे गैसों के बवंडर वर्षों उमड़ते घुमड़ते रहते हैं एवं चमत्कार दिखाने धरती को हिलाने और छेद कर बाहर निकलने के लिए आतुर रहते हैं । ये घटनाएँ कुछ ही क्षणों की होती हैं । इसमें करोड़ों रुपये की सम्पत्ति मिनटों में ही नष्ट हो जाती है पर ऐसी परिस्थितियाँ कई वर्षों से निर्मित हो रही होती हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिकों, विद्वानों, विद्यार्थियों, एवं मनीषियों के बारे में भी तथ्य ऐसा ही कुछ है । न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त की खोज, जेम्सवाट द्वारा स्टीम इंजन बनाया जाना, जगदीशचन्द्र बसु द्वारा पेड़-पौधों में जीवन होने का संकेत, ग्राह्मवेल द्वारा टेलिफोन का आविष्कार, फैराडे द्वारा बिजली शक्ति का उत्पादन, आर्कमिडिज द्वारा प्रतिपादित उत्प्लावन सिद्धांत, कोपरनिकस के पृथ्वी के घूमने एवं सूर्य के स्थिर रहने की बात , ये सभी महत्त्वपूर्ण खोजें एक दिन ही घटित हुई, किन्तु इन वैज्ञानिकों के जीवन को देखने पर स्पष्ट पता चलता है कि इसके लिए उन्हें जीवन भर तत्परता एवं तन्यमतापूर्वक एक दिशा में जुटे रहना पड़ा । तब ये महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हस्तगत हो पाई। गोताखोरों की तरह मणि, मुक्तक प्राप्त करने के लिए नितनिरंतर डुबकी लगाते रहे । किसी निश्चित दिन सफलता मिलने पर यह तो नहीं कह सकते कि यह उपलब्धि उन्हें एक दिन में मिली । वह तो उनके लम्बे समय से चलने वाले प्रबल पुरुषार्थ, अदम्य साहस एवं जीवट का प्रतिफल था ।

विद्यार्थी को अंकसूची एक दिन में मिल जाती है, किन्तु उसके लिए उसे एक वर्ष तक अपने समस्त लालसाओं की ओर ध्यान हटाकर एकाग्रतापूर्वक जुटे रहना पड़ता है । रामायण, महाभारत, उपनिषद्, जैसे आर्ष साहित्य एवं कैयट द्वारा लिखित भामती, चरक संहिता जैसे ग्रंथ प्रकाश में तो एक दिन में आये, लेकिन इसके लिए रचनाकारों को पहले से न जाने कितना परिश्रम करना पड़ा था । कार्लमार्क्स द्वारा 'दास केपिटल' उनके जीवन भर के अध्ययन का सार था । 'टाम काका की कुटिया' लिखने वाली हैरियट स्टो के मन मस्तिष्क में बाल्यावस्था से ही दास प्रथा को बन्द करने वाले क्रांतिकारी विचार उमड़ रहे थे । ये घटनाएँ बताती हैं कि परिवर्तन तो क्षण में दिखाई पड़ते हैं, किन्तु उसके पीछे मानवी पुरुषार्थ प्रकृतिगत व्यवस्था एवं सामाजिक परिस्थितियाँ न जाने कब से काम करती रहती हैं, तभी अचानक यह परिवर्तन एक दिन सम्भव हो पाता है जिसे आमतौर से चमत्कार की संज्ञा दे दी जाती है ।

इन दिनों संसार भर में घट रहे घटनाचक्र को भी ऐसा ही माना जाना चाहिए और समझना चाहिए कि जो कुछ वर्तमान में फलित हो रहा है, वह लम्बे समय से चलने वाली प्रक्रिया की परिणति है । ऐसे अवसर लाखों वर्षों में कदाचित् ही उपस्थित होते हैं, जब सम्पूर्ण विश्व का समग्र काया-कल्प होता दिखाई पड़े। इतिहास में जब-जब ऐसे मौके प्रस्तुत हुए हैं, तब-तब उनमें भगवान का प्रत्यक्ष हाथ होने का अभूतपूर्व दृश्य उपस्थित हुआ है और उनसे साझेदारी करने वालों को अनुदान-वरदान से निहाल होते देखा गया है । आज का समय भी वैसा ही अपूर्व है, जिसमें चहुँ ओर ईश्वरीय हस्तक्षेप हस्तामलकवत दिखाई पड़ रहा है। हम इसमें भागेदारी निभाकर वैसा ही श्रेय-सम्मान अर्जित कर सकते हैं, जैसा कभी हनुमान-अंगद, नल-नील ने किया था । कहीं ऐसा न हो कि यह स्वर्णिम अवसर हम चूक जायँ और जन्म भर पछताते रहें ।

भटकाव न आने दें, अवरोधों से विचलित न हों

भोजन, पकाने, परोसने, खाने में साधारण रीति से हाथ धो लेना भर पर्याप्त होता है किन्तु इन्जेक्शन की सुई का प्रयोग करते समय उसकी शुद्धि के लिए खौलते पानी का, कीटाणुनाशक रसायनों का प्रयोग करना पड़ता है । मिट्टी के खिलौने बनाने में भोंड़े साँचे भी काम दे जाते हैं । पर, घड़ी के पुर्जे ढालने के लिए साँचे अत्यधिक सही बनाये जाते हैं । लोक सेवी कार्यकर्ताओं में कुछ तो ऐसे होते हैं जो वस्तुओं का निर्माण, वितरण करते हैं, उनके स्तर में कमी हो तो साधनों का घटिया होना, महँगा पड़ना जैसी वे हानियाँ ही होती हैं जिन्हें आसानी से सहन या दरगुजर किया जा सके किन्तु भावनात्मक नव निर्माण का कार्य हाथ में लेने वालों का स्तर घटिया रहे तो काम बनता ही नहीं । सभी जानते हैं कि दूध में एक मक्खी पड़ जाने पर पीने वाले को लाभ के स्थान पर उलटी होने का नया संकट सहन करना पड़ता है । कप्तान की तनिक सी चूक का परिणाम समूची सेना के विनाश का ही नहीं, उस देश का भविष्य अंधकारमय बना देने का भी निमित्त कारण बनता है । जिन्हें नेतृत्व करना है । मार्ग दर्शक की भूमिका निभानी है उन्हें समान्य लोगों के स्तर का नहीं, वरन् कहीं अधिक ऊँचा होना चाहिए । जनसमुदाय का उद्बोधन करने वाले वक्ता ऊँचे मंच पर बैठते हैं । अन्यथा उनका वचन सुनना, भाव मुद्रा देखना, व्यक्तित्व परखना सम्भव न हो सकेगा । श्रोता को बराबर की पंक्ति में, उसी ऊँचाई पर बैठा हुआ वक्ता कितना अटपटा लगेगा इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है । ठीक यही बात उन मार्ग दर्शकों के सम्बन्ध में समझी जानी चाहिए जो अपने कौशल में प्रवीण नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानकारियों का आदान-प्रदान वाणी, लेखनी द्वारा हो सकता है । आँखों से देखकर, अभ्यास में निरत रहकर भी भौतिक ज्ञान का अर्जन किया जा सकता है किन्तु जहाँ उच्चस्तरीय प्रेरणाएँ उपलब्ध करने का प्रश्न है, वहाँ विशिष्ट व्यक्तियों को अपना अनुकरणीय उदाहरण ही प्रस्तुत करना पड़ता है । अन्यथा लोग प्रचलन के अभाव में श्रेय पथ को अवश्य ही मानते रहेंगे । हो यही रहा है । ऐसे व्यक्ति मिलते नहीं, जो अपना उदाहरण प्रस्तुत करके जन साधारण को यह विश्वास दिला सकें कि आदर्शवादिता का अपनाया जाना शक्य ही नहीं सरल, सुखद एवं हर दृष्टि से लाभदायक भी है । मानवी मनःसंस्थान की संरचना अनुकरण प्रिय है । आमतौर से गूँगों में मौलिक कमी बहरेपन की होती है । सुनकर ही शब्दज्ञान और उच्चारण का अभ्यास होता है । सुनने को ही न मिले तो फिर अनुकरण करते हुए बोलने की व्यवस्था कैसे बने ? संस्कृतियों की संरचना में एक समुदाय के लोगों का एक तौर-तरीके की जीवन-यापन पद्धति ही है। नई पीढ़ियाँ उसी का अनुकरण करती हैं । उसी के सही होने का विश्वास करती हैं । इतना ही नहीं दूसरे दृष्टिकोण एवं प्रचलन को अधई कहती और लड़ती भी पाई जाती हैं । अनुकरण प्रियता के कारण ही व्यक्ति और समाज में आज का ढाँचा खड़ा हुआ है । दुर्व्यसन, अनाचार और हेय रुझान का कारण और कुछ नहीं दूसरों की देखा-देखी अनेकानेकों का उस मार्ग पर चल पड़ना ही है । नशेबाजी, फैशन, आलस्य, प्रमाद जैसे अनेकों बुराइयाँ छूत रोगों की तरह फैली हैं । प्रचीन काल में जब श्रेष्ठता प्रचलन था तो एक का अनुगमन करके दूसरा भी वैसा बनता था ।

आज की सबसे बड़ी कमी

इस सन्दर्भ में आज की सबसे बड़ी कमी एक ही है कि आदर्श को व्यवहार में उतारने वालों के उदाहरण देखने को नहीं मिलते मात्र चर्चा भर होने से यह प्रयोजन पूरा नहीं होता । कथन—श्रवण तो परलोक और तिलस्म का भी खूब होता है । उसे लोग रुचि पूर्वक पढ़ते हैं किन्तु साथ ही यह भी समझते हैं कि सब बकवास है ठीक यही बात इन दिनों आदर्शों की व्यावहारिकता के सम्बन्ध में है । 'पर उपदेश कुशल' होने की विडम्बना तो अनेकों रचते हैं । वाणी और लेखनी के पराक्रम इस क्षेत्र में भी देखते ही बनते हैं । पर उन्हें भी समझा तिलस्म ही जाता है। उस आधार पर कोई अपनी जीवनचर्या ढालने की बात नहीं सोचता । ऐसी दशा में लोकमानस बदलने की, चरित्र में आदर्शवादिता उतारने की आवश्यकता कैसे पूरी हो ? अंधी आँख के तिल की तरह पुरातन इतिहास ही कुछ धीरज बँधाता है । उतने से ही कोई प्रकाश ले सके और दिशा खोजकर चल पड़े तो इसमें स्वाभाविकता नहीं, व्यक्ति विशेष की संचित सुसंस्कारिता अथवा अपवाद की तरह जब तब पाई जाने वाली साहसिकता ही कही जायेगी वेश्या अपने जीवन में सैकड़ों नये भड़ुए बना देती है और पुराने भड़ुओं का साहस बढ़ाती है । चोर उचक्के, व्यसनी, जुआरी भी अपनी बिरादरी निरन्तर बढ़ाते रहते हैं । इसका एक ही कारण है कि उनका चरित्र और चिन्तन एक होता है । दोनों के मिलन पर ही प्रभावोत्पादक शक्ति का उद्भव होता है । किन्तु आदर्शों के क्षेत्र में यही सबसे बड़ी कमी है । इस स्तर की बकवास करने वाले धर्मोपदेश बरसाती मेंढकों की तरह बढ़ाते अपनी टर्र-टर्र से आसमान गुँजाते ढेरों देखे जा सकते हैं किन्तु जो आदर्शों को व्यवहार में उतर कर दिखायें ऐसों की भारी कमी ही रही है । इसके अभाव में एक भयानक अवरोध सामने आ खड़ा होता है । उत्कृष्टता अपनाने के लिए साहस उत्पन्न करने वाले अग्रगामी न हों तो इंजन के अभाव में डिब्बे दौड़ने का सुयोग कैसे पायें ?

युगशिल्पियों को बहुत कुछ करना और कराना है । किन्तु स्मरण रहे, अपना निर्धारण, प्रयास एवं कार्य क्षेत्र व्यक्तियों को परिष्कृत करना है । इसी से देव समाज की संरचना संभव होगी । साँचे इसी क्षेत्र के तैयार करने होंगे ताकि उनके सहारे नये खिलौने, पुर्जे ढाला जा सकना संभव हो सके । यदि यह न बन पड़ा तो उस कथानक की पुनरावृत्ति होती रहेगी जिसमें चूहों की पंचायत ने बिल्ली के गले में घंटी बाँध देने का फैसला तो किया पर उस कार्य को करने के लिए कोई आगे न आया फलतः पंचायत विसर्जित हो गयी । युग-सृजन के लिए विचारों का निर्माण और उनका लेखनी, वाणी एवं प्रचार माध्यमों से विस्तार करने की आवश्यकता से कोई इन्कार नहीं करता, पर गाड़ी तब तक दल-दलों में फँसी पड़ी रहेगी जब तक कि आदर्श वादिता अपनाने वालों के उदाहरण सामने न आयेंगे । हनुमान ने आगे आकर रीछ-वानरों में अनुकरण का उत्साह उत्पन्न किया । बुद्ध और गाँधी ने प्रवचनों से नहीं अपने चरित्र को आगे रखकर अनुगामियों का पथ प्रशस्त किया होगा । महामानवों को अपनी जीवनचर्या उस प्रकार की विनिर्मित करनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ती है जिससे दूसरों को प्रभावित होने, प्रेरणा ग्रहण करने और अनुगमन का साहस उपलब्ध करने का पथ प्रशस्त हो ।

युगशिल्पियों के कंधों पर जो अति महत्त्वपूर्ण कार्य है उनमें से प्रमुखता देने योग्य यह है कि वे अपनी प्रचार प्रक्रिया का कारगर शस्त्र लोगों के सामने अपने साहस एवं विश्वास का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करे । दूसरों से जो कराना चाहते हैं वह स्वयं कर दिखायें । युगनिर्माण मिशन के सूत्र संचालक को सर्वप्रथम अपना उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ा है । इतने अनुयायियों और सहचरों के सहयोग उनकी लेखनी-वाणी ने जो कुछ किया है उससे हज़ार गुना कार्य उस चरित्र निष्ठा ने कर दिखाया है जो रोम-रोम में बसी हुई और पग-पग पर व्यवहृत देखी गई। युगशिल्पी जहाँ अनेकानेक कार्य करते हैं वहाँ इस प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति को भी सर्वप्रथम ध्यान में रखना है ।

कहा जा चुका है कि नवसृजन की युग पुकार को सुनने, अपनाने और उस दिशा में कुछ करने का यदि सचमुच ही मन हो तो अन्तर में बसे लोभ-मोह और अहंकार के चक्रव्यूह को भेदना पड़ेगा । इसके बिना चासनी में पर फँसाकर अदूरदर्शी मक्खी की तरह बेमौत मरने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं । कल्पना को व्यवहार में उतारना हो तो कुछ साहस और उसका सर्वप्रथम प्रयोग अभ्यास अपनी उस कुसंस्कारिता के विरोध में करना होगा जिसने लोभ, मोह और अहंकार के रूप में हाथ, पैर और कमर को कसने में हथकड़ी, बेड़ी और बंधन रज्जु की भूमिका निभाई है। इस सन्दर्भ में जो जितना साहस कर सकेंगे उनका मार्ग उतना ही प्रशस्त होता जायगा। फिर उन्हें न कठिनाइयाँ हैरान करेंगी और न समस्याओं का कारण आगे बढ़ने में असमंजस करना होगा ।

उच्चस्तरीय अन्तरंग और बहिरंग की अनिवार्यता

जो आगे बढ़ें उन्हें ध्यान रखना है कि प्रवाह से उलटा चलने का उनका प्रयास सर्वत्र आश्चर्य की तरह देखा जायेगा और कौतूहल भरी असंख्यों आँखें उन्हें भीतर और बाहर से देखने के लिए केन्द्रीभूत होने लगेंगी । किसके भीतर क्या है उसे कौन जाने ? अनुमान तो बहिरंग को देखकर ही लगता है । साइनबोर्ड देखकर ही व्यवसाय का पता चलता है । दुकान में घुसकर माल-असबाब कौन देखता है ? युगशिल्पियों का न केवल अन्तरंग उच्चस्तरीय होना चाहिए वरन् आच्छादन, कलेवर, व्यवहार में भी उच्चस्तर की सादगी, शालीनता रहनी चाहिए जिससे दर्शकों की निष्ठा में कमी न पड़े । बढ़ोत्तरी ही होती रहे । इस सन्दर्भ में कुछ सामान्य बातें नोट की जानी चाहिए जो महत्त्वहीन होने पर भी लोगों को अनुमान लगाने में निमित्त कारण बनती हैं । जैसे, केश विन्यास छैल-छबीले जैसा हो तो हर किसी को मनचला, शृंगारिक प्रकृति का समझने का भ्रम रहेगा । पोशाक लिवास में राजसीपन हो तो फिर यह विश्वास दिलाना कठिन हो जायेगा कि पहनने वाला सात्विक अकृति का हो सकता है । आहार में चटोरापन झलके तो फिर संयमशील होने का विश्वास नहीं दिलाया जा सकेगा । दिनचर्या में नियमितता और कार्यपद्धति में सुव्यवस्था जुड़ी न रहे तो जागरूकता और तत्परता के उन सद्गुणों का अभ्यस्त न माना जायेगा जो हर युग प्रहरी में अनिवार्यतः होने ही चाहिए । निरहंकारिता लोकसेवी का सबसे बड़ा गुण है यदि बात-बात पर तुनकने, आवेश में आने, कटुवचन बोलने, व्यंग्य-उपहास करने की आदत हो तो मूर्धन्य लोगों के लिए उपयुक्त शालीनता का अभाव हर किसी को अखरेगा। ऐसी दशा में उसकी प्रभावोत्पादक शक्ति में भारी कमी दृष्टिगोचर होगी । युगसृजेताओं को निरन्तर जनसम्पर्क में रहना पड़ता है । अपने देश की परम्परा के अनुसार वयस्क नर-नारियों को आँख भर देखना और हँसना-बोलना तक सन्देह उत्पन्न करता है । ऐसी दशा में उस सन्दर्भ में सतर्कता क्यों न बरती जाय ? ऐसा अवसर ही क्यों आने दिया जाय ? नर और नारी एकान्त वार्त्ता न करें, कानाफूसी न करें, पलक नीचे रखकर सीमित बात जरा ऊँचे स्वर में कर लिया करें तो फिर उस अनुपयुक्त चर्चा का आधार ही खड़ा न होगा जो सार्वजनिक क्षेत्र में नर-नारियों के घुलने-मिलने में तनिक-सी असावधानी बरतने पर अकारण ही फैलती और बात का बतंगड़, तिल का ताड़ बनती है ।

हिसाब-किताब के मामले में अपनी स्थिति शीशे की तरह स्पष्ट रखनी चाहिए । धातु न छूने की प्रतिज्ञा तो किसी से नहीं कराई जा रही, पर इतना अवश्य कहा जा रहा है कि सार्वजनिक धन की पाई-पाई का हिसाब इस प्रकार खुला हुआ रखें कि उसे कोई कभी भी देख सके और हेराफेरी किये जाने का इलजाम लगाने का साहस कोई भी न कर सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस सन्दर्भ में निरन्तर आत्मसमीक्षा करके स्वयं ही यह देखते ही रहना पड़ेगा कि जो दूसरों से कराया जाना है वह अपने आप से करना आरम्भ किया गया या नहीं । यह बात हजार बार स्मरण रखने की है कि हर युगशिल्पी एक साँचा है । उसके चिपकने वाले वैसे ही बनेंगे जैसा कि वह स्वयं है । इसलिए यह भूलना नहीं चाहिए कि अपनी आस्था, प्रामाणिकता, सात्विकता का स्तर ऐसा होना चाहिए जिससे सम्पर्क में आने वालों को आदर्शवादिता अपनाने की प्रेरणा मिले । असमंजस उत्पन्न करने वाली कुटेवों से तो हर हालत में बचना ही चाहिए भले ही वे तथ्यत: अधिक महत्त्वपूर्ण न भी हों । हजार आँखें जिस पर गड़ी रहें उसे श्रेष्ठता की हर कसौटी पर अपना आपा स्वयं ही कसते रहना चाहिए ताकि कहीं से अँगुली उठने की गुंजायश न रहे ।

अभ्यास की कमी ही जुझारूपन के अभाव का निमित्त है

प्रत्येक लोकसेवी के समक्ष समय-समय पर अलग परिस्थितियाँ आती रहती हैं । अपना आपा उनसे जूझ नहीं पाता उसका एक ही कारण हो सकता है कि स्वयं अपने जीवन में उसका अभ्यास कभी किया नहीं गया । परिस्थितियों का स्वरूप भिन्न हो सकता है और कमजोर मनोभूमि के व्यक्तियों को विचलित कर सेवा पथ से हटने के लिये वे बाध्य कर सकती हैं । उदाहरण के लिए व्याप्त दु:स्थितियों को देखकर हर विचारशील व्यक्ति के मन में यह आकांक्षा उठती है कि इन्हें बदला जाय । लोग सोचते हैं कि जन-जीवन में सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ें और लोगों को समझाया जाय कि वे इन दुष्प्रवृत्तियों को छोड़ें, परन्तु वह देखता है कि लोग अपनी प्रत्यक्ष हानी को देखकर भी इन्हें नहीं छोड़ रहे हैं तो वह सोचने लगता है कि मैं यदि इनसे कहूँगा तो ये मेरी क्या सुनेंगे, उल्टे मेरा मजाक उड़ायेंगे ।

यह सोचकर ही अधिकांश लोग सेवा की भावना होते हुए भी उसके लिए कदम नहीं उठाते उन्हें सोचना चाहिए कि प्रत्येक कार्य का अनुकूल-अपेक्षित परिणाम हो ही यह आवश्यक नहीं है । कार्य भी कोई इस उद्देश्य से नहीं किये जाते कि असफलता मिले, पर असफलता की सम्भावना से तो काम नहीं रोक दिया जाता है । विद्यार्थी जानता है कि हम फेल भी हो सकते हैं, व्यापारी के लिए भी घाटा होने की सम्भावना हर घड़ी मौजूद रहती है लेकिन इस कारण विद्यार्थी परीक्षा नहीं छोड़ देता और न ही व्यापारी अपने व्यवसाय से हाथ खींच लेता है । सफलता और असफलता दोनों ही सम्भावनायें प्रत्येक कार्य के साथ जुड़ी होती हैं इसे सब जानते हैं, पर असफलता के डर से कोई निष्क्रीय निश्चेष्ट नहीं हो जाता । यह तो हुई जन-सामान्य की बात, लोकसेवी का दृष्टिकोण तो जन-सामान्य से ऊँचा ही रहना चाहिए। उसे सफलता-असफलता की चिन्ता न करते हुए अपनी सेवा साधना चुपचाप जारी रखनी चाहिए । इस सम्बन्ध में भगवान बुद्ध और उनके शिष्य का प्रसंग बड़ा ही प्रेरणादायक है । भगवान बुद्ध ने अपने उस शिष्य से पूछा तुम धर्म प्रचार के लिए जा रहे हो, अगर लोगों ने तुम्हारी बातें नहीं सुनी तो ।

शिष्य ने कहा—'मैं उनका कृतज्ञ होऊँगा कि उन्होंने मुझे गाली तो नहीं दी ।' बुद्ध ने आगे पूछा—अगर वे तुम्हें गाली देने लगे तो ? तब शिष्य ने कहा—मैं फिर भी उनका कृतज्ञ होऊँगा कि उन्होंने मुझे मारा नहीं ।

बुद्ध शिष्य की निष्ठा की अन्त तक थाह लेना चाहते थे । उन्होंने फिर पूछा 'अगर वे तुम्हें मारने भी लगें तो ।' तब शिष्य ने कहा—'फिर भी हृदय से उनके प्रति कृतज्ञ होऊँगा कि उन्होंने मेरे प्राण नहीं लिए बुद्ध ने फिर भी पूछा—'यदि वे तुम्हें मार भी डालें तो ।'

तब शिष्य ने कहा—''फिर भी मेरा उपकार ही करेंगे कि मुझे इस दु:खमय संसार से उन्होंने त्राण दिला दिया ।'' इस स्तर की निष्ठा का विकास ही सेवा धर्म को अंगीकार करने में सफल बना सकता है। प्राचीन कांल से अब तक के इतिहास में जितने भी लोक सेवी हुए हैं उन्होंने निष्ठा को सान पर चढ़ाया और उसे चमकाया, प्रखर बनाया है। लोक सेवियों में निष्ठा का सर्वथा अभाव होता हो ऐसी बात भी नहीं है । निष्ठा न होती तो वे सेवा के क्षेत्र में आते ही क्यों? परन्तु प्रश्न निष्ठा का नहीं, प्रश्न है निष्ठा की प्रखरता का । कई परिस्थितियाँ ऐसी भी आती हैं जिनमें दुर्बल निष्ठा वाले व्यक्ति सेवा धर्म को कष्ट साध्य या दु:साहस समझ कर बीच में ही छोड़ देते हैं।

असफलता असन्तोष का कारण न बने

उदाहरण के लिए बहुत से लोग प्रारम्भिक असफलताओं के कारण ही सेवा धर्म से विमुख हो जाते हैं, जबकि यही असफलतायें यदि जीवन के अन्य क्षेत्रों में आयें तो उनकी कार्यविधि में कोई अन्तर नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आता न वे रुकते ही हैं । फिर सेवा में मिलने वाली असफलता से ही असन्तोष क्यों । यदि कार्य को ही अपना जीवन ध्येय बना लिया जाय और सफलता असफलता की चिन्ता न की जाय तो सेवा मार्ग पर निर्बाध बढ़ते रहा जा सकता है । सफलता प्रत्येक कार्य के दो पहलू हैं और उनमें से कोई-सा भी पहलू सामने पड़ सकता है महापुरुषों को अपने जीवन काल में शायद ही आशाजनक सफलता मिल सकी हो । महात्मा ईसा ने चालीस वर्ष तक धर्म का प्रचार किया और इस पूरे समय में उनके १२ शिष्य भी ऐसे बने कि उनमें से एक ने तो ईसा को पकड़वाने के लिए उन्हें गिरफ्तार कराने के लिए पैसे ले लिए तथा उन्हें पकड़वा दिया और उन्हें सूली हो गयी । बाकी शिष्यों ने भी अन्त समय में ईसा का साथ छोड़ दिया । यदि ईसा अपने जीवन काल में इस असफलताओं या नाम मात्र की सफलता को देखकर हतोत्साहित हो जाते तो ईसाई धर्म शायद ही आज संसार का प्रमुखधर्म हो पाता ।

किसी भी नये कार्य का विरोध होना स्वाभाविक है । कार्य की उपयोगिता परखने वालों का अपना भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण होता है । किसी को एक काम अच्छा लगता है तो किसी को वही बुरा । परन्तु जिन्हें अपने स्वार्थ पर चोट पहुँचती दीखती है वे विरोध, निन्दा, आलोचना तक उतर आते हैं । उस स्थिति में विरोधी के समाधान का एक ही उपाय है कि उन पर कोई ध्यान न दिया जाय । यदि ध्यान दिया जाने लगा तो हम अपने लक्ष्य से भटक जायेंगे। जैसे कुछ कार्यकर्ता किसी गाँव में कोई स्कूल चलाने के लिए पहुँचे, इस तरह की तैयारियाँ भी कर ली गयीं और स्कूल आरम्भ भी हो गया । निःस्वार्थ भाव से आरम्भ किये गये इस कार्य का प्रभाव गाँव वासियों पर होना स्वाभाविक ही है । लोक सेवियों के बढ़ते हुए प्रभाव से कुछ व्यक्ति ईर्ष्या अनुभव कर उनका विरोध करने लगे, लोगों से उनके बारे में तरह-तरह की बातें फैलायें या विरोध का कोई ढंग अपनायें । ऐसी दशा में यदि प्रतिशोध लेने का विचार किया जाने लगा तो स्वाभाविक ही पाठशाला चलने की ओर ध्यान कम होगा तथा उस कार्य में शक्ति भी कम लगने लगेगी । धीरे-धीरे सारा ध्यान, सारी शक्ति और सारा मनोयोग विरोधियों को परास्त करने में ही लग जायेगा और मूल उद्देश्य बहुत पीछे छूट जायेगा ।

महत्त्वाकांक्षा और सेवा एक-दूसरे के विरोधी

महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए उधेड़बुन में लगे रहने पर सेवा की बात मन-मस्तिष्क से हट जाती है तथा पद, अधिकार और वर्चस्व की बात रह जाती है। फलस्वरूप लोक सेवी अपने समर्थक ढूँढ़ता है, उनके गुट बनाता है, दलबन्दी करता है और तरह-तरह के षड़यन्त्र रचता है ताकि उसका वर्चस्व बना रहे या बन सके और इसके लिए वह उचित-अनुचित के विवेक को छोड़कर षड़यन्त्र व कुचक्र रचने में लग जाता है ।

यह सभी कृत्य खुले रूप में नहीं किये जाते । इनके लिए सिद्धान्तों की आड़ ली जाती है, नैतिकता की दुहाई दी जाती है । प्रतिपक्षी को नीचा दिखाने के लिए उसे अनैतिक और दोषी ठहरने का प्रयत्न किया जाता है ताकि अपना पक्ष नैतिक और उचित दिखे । छिद्रान्वेषण की यह दृष्टि इतना विकृत रूप धारण कर लेती है कि उसे दूसरों के राई बराबर दोष पहाड़ बराबर दिखने लगते हैं तथा अपने में कितने ही दोष भरे हों उनकी ओर कोई अँगुली उठाये यह भी सहन नहीं होता । निःसन्देह यह वृत्ति वैर-भाव और ईर्ष्या-द्वेष को जन्म देती है । फिर लोक सेवी अपने मार्ग से एकदम विरत हुए बिना भी नहीं रहता । उदाहरण के लिए लोक सेवियों में इतना वैर, वैमनस्य उत्पन्न हुआ कि वे अपने शत्रु को विनष्ट हुआ ही देखना चाहते हैं, एक लोक सेवी लोगों को करुणा, कष्ट पीड़ितों को उबारने की प्रेरणा देता है । लेकिन कभी प्रतिद्वन्द्वी के मकान में आग लग जाती है तो उसके हृदय में आग बुझाने के लिए सहायता करने के स्थान पर यही भाव उठता है कि मेरे इस प्रतिद्वन्द्वी का घर पूरी तरह ही जल जाय तो अच्छा, उसके परिवार की भी हानि हो तो अच्छा। इस दुर्भावना में लोक सेवी की सेवा-निष्ठा और उसके चरित्र की सद्भावना परक विशेषता कहाँ रह जाती है ?

सेवा क्षेत्र में योग्यता आड़े न आये

बहुत से लागों के मन में सेवा की उमंग उठती है, पर वे यह सोचकर चुप रह जाते हैं कि अभी हम योग्य नहीं । जब हम पूर्णतः योग्य और सक्षम हो जायेंगे तब सेवा करेंगे । स्मरण रखा जाना चाहिए कि आज तक संसार में पूर्णतः योग्य न कोई हुआ है और न होगा । क्योंकि जो पूर्ण होता है वह भवबन्धनों से मुक्त हो जाता है । उस पूर्ण पुरुष को इस संसार में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आने की आवश्यकता ही कहाँ रह जाती है । संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके व्यक्तित्व में कहीं न कहीं कोई न कोई त्रुटि अवश्य रहती है । उन त्रुटियों के सुधार का प्रयत्न करते हुए भी वे सेवा के पथ पर निरन्तर अग्रसर होते रहे हैं ।

यह सुविदित तथ्य है कि संसार में योग्यता, क्षमता, स्तर और परिस्थिति की दृष्टि से सभी समान नहीं, एक व्यक्ति की समता का दूसरा व्यक्तित्व भी नहीं खोजा जा सकता । योग्यता, क्षमता, स्तर और परिस्थिति की दृष्टि से न्यूनता अधिकता का अन्तर प्रत्येक व्यक्ति में रहता है । अत्यधिक योग्यता का व्यक्ति कम योग्य का शिक्षण कर सकता है, अधिक सक्षम व्यक्ति कम क्षमता वाले की क्षमता बढ़ाने में सहायता कर सकता है । व्यावहारिक जीवन में भी जहाँ दूसरों को शिक्षित करने और सहायता देने की बात आती है, यही नियम काम करता है । प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाला अध्यापक अनिवार्य रूप से उच्च शिक्षित कहाँ होता है । ग्यारहवीं कक्षा पास करने वाले छात्र प्राय: प्राथमिक कक्षा में अध्यापक बना दिये जाते हैं । पाँचवीं-छठी तक पढ़ी हुई माँ अपने बच्चों को अक्षर ज्ञान करा देती है । छोटे पहलवान अपने से छोटे पहलवान को पहलवानी का अभ्यास कराते हैं । यहाँ तक कि अगर कोई चोरी भी सिखाना चाहे, समझाना चाहे तो डाकू को मारकाट करने, हत्यायें और अपहरण करने की बुराइयाँ तथा दोष समझा सकता है क्योंकि वह स्वयं का उदाहरण दे सकता है । चोरी करने में वैसी बुराइयाँ न होने की बात कह सकता है । कहने का अर्थ यह है कि कम बुराई वाला व्यक्ति अधिक बुराइयों वाले व्यक्ति को शिक्षा दे सकता है ।

लोक सेवी यदि अपने आस-पास के वातावरण को देखे तो पता चल सकता है कि कहाँ किस स्तर की सेवा आवश्यक है और आवश्यकता को पूरा कर सकता है । सेवा से यहाँ इतना ही प्रयोजन है कि अपने से निम्न स्थिति के व्यक्तियों को ऊँचा उठाने-उनकी उन्नति के लिए, पतन को उत्थान में बदलने और पीड़ा का निवारण करने के लिए प्रयत्न करें ।

सेवा कार्य में सम्मान की आकांक्षा न पाले

जहाँ मान-सम्मान की भूख जागती है वहाँ सेवा मार्ग से भटकाव आरम्भ हो जाता है और लोक सेवी अपनी सेवा साधना से भी अधिक मान-सम्मान की चिन्ता करने लगता है । उसका सारा ध्यान प्रसिद्धि और प्रचार पर चला जाता है । अनेक संस्थायें जिनमें बहुत से पदाधिकारी होते हैं, चुनाव चक्कर और प्रोपेगैण्डा की राजनीति केन्द्र हो जाती है और उनका सेवा लक्ष्य समाप्त होता चला जाता है । अतएव जो लोक सेवा के प्रति निष्ठा रखते और उसे अपने जीवन धर्म में अंगीकार करते हैं, उन्हें चाहिए कि वे किसी सार्वजनिक संस्था में रहते हुए पद और अधिकार से बचें । उत्तरदायित्वों से विमुख होने की बात यहाँ नहीं कही जा रही है उत्तरदायी बनने के बाद स्वाभाविक ही अधिकार भी मिलेंगे, पर उन अधिकारों को न अपने व्यक्तिगत प्रचार का साधन बनाया जाय और न ही उनका प्रयोग किसी पर दबाव डालने या अपनी बात मनवाने के लिए किया जाय ।

जो वृत्ति आत्म प्रचार के लिए काम करती है उसी वृत्ति से प्रेरित होकर लोग ध्वंसात्मक रूप भी अपनाते हैं । इसका उद्देश्य भी लोगों पर अपना प्रभाव डालना तथा उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना है । बहुत से श्रमिक संगठनों में श्रमिक हितों के लिए लड़ने वाले मजदूर नेता अपना प्रभाव सिंह करने के लिए मजदूरों को तरह-तरह से भड़काते हैं और बिना कारण ही हड़तालें करवा देते हैं, कोई महत्त्वपूर्ण कारण हो जिसके लिए अधिकार सम्मत लड़ाई लड़ी जाय तो बात भी समझ में आती है पर ऐसा कोई कारण न होने पर भी ऊल-जलूल माँगों को लेकर हड़तालें करवा देना, फिर स्वयं पंच बनकर उनका फैसला करवाना या समझौते के लिए मध्यस्थ का काम करना किसी भी दृष्टि से सेवा स्तर का कार्य नहीं हो सकता । अपने वर्चस्व को बढ़ाने के लिए लोक सेवियों में निन्दात्मक या आलोचनापरक प्रवृत्तियाँ भी दिखाई देती हैं । निन्दा आलोचना की नीति को अपने प्रचार का माध्यम बनाने वाली अनेक सामाजिक संस्थायें भी खड़ी हुई हैं, जिनका मूल आधार ही दूसरे के प्रति भ्रम पैदा करने से कोई रचनात्मक उपलब्धि तो होती नहीं थोड़े-बहुत रचनात्मक कार्य जो चल रहे होते हैं उनके प्रति भी लोगों में वितृष्णा के भाव उत्पन्न होते हैं ।

दृष्टिकोण रचनात्मक रखा जाय

लोक सेवी को अपना दृष्टिकोण रचनात्मक रखना चाहिए । आत्म प्रचार के झमेले से दूर ऐसे रचात्मक कार्यक्रमों को ही हाथ में लिया जाय जिनमें लोगों का वास्तव में हित होता हो । समाज की उल्लेखनीय सेवा करने में अब तक वे ही लोग सफल हो सके हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जिन्होंने रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया तथा आत्म प्रचार और निन्दा-आलोचना से दूर रह कर सेवा करते रहे । इस तरह के अनेक उदाहरण हैं । हीरा लाल शास्त्री का वनस्थली विद्यालय इसी प्रकार आरम्भ हुआ । शास्त्री जी ने अपनी योजना न किसी अखबार में छपायी और न उसके लिए कहीं प्रचार करने गये । अपने पास उपलब्ध से ही उन्होंने विद्या-पीठ का कार्य छोटे रूप में शुरू किया और धीरे-धीरे जन-सहयोग भी मिलता गया । फलस्वरूप विद्यापीठ देश की प्रतिष्ठित संस्थाओं में से एक है । हाथरस के कन्या गुरुकुल की स्थापना भी इसी प्रकार हुई । स्वामी केशवानन्द अनपढ़ थे और चरवाहे का काम करते थे। उनमें सेवा बुद्धि जागी और शिक्षा के प्रसार को उन्होंने अपना जीवन ध्येय बना लिया । उन्हीं के रचनात्मक प्रयासों से साँगरिया विद्यापीठ उन्नत और समृद्ध रूप में खड़ा है । कुष्ठ रोगियों के उपचार और उनकी सेवा के लिए बाबा साहब आमटे ने पूना में कुष्ठ आश्रम खोला । साधारण व्यक्ति कोढ़ियों से दूर-दूर रहता है, उन्हें अपने पास भी नहीं आने देता । पर बाबा साहब आमटे ने आत्म प्रचार से दूर रहकर चुपचाप अपना सेवा कार्य आरम्भ किया और आज उनका कुष्ठ आश्रम देश में कुष्ठ रोगियों की सेवा का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है । झाँसी का लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर भी इसी प्रकार की रचनात्मक सेवा का उदाहरण है । झाँसी के पास जंगल में बहुत-सी खाली जमीन पड़ी हुई थी । अन्ना जी ने स्वास्थ्य संवर्धन के लिए वहाँ एक व्यायाम मन्दिर चलाने की बात सोची । इसका श्रीगणेश भी किया । बाद में कई अवरोध आये पर अन्ना जी उनका दृढ़तापूर्वक सामना करते रहे । उनके प्रयासों के फलस्वरूप लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर आज समृद्ध और साधन सम्पन्न व्यायामशालाओं में से एक है ।

यह तथ्य भली-भाँति हृदयंगम कर लेना चाहिए कि सेवा धर्म के निर्वाह में बाह्य परिस्थितियों की तुलना में स्वयं की वृत्तियों से अधिक संघर्ष करना पड़ता है शास्त्रकारों ने इसे ही अलंकारिक रूप से साधना-समर नाम दिया है, जो अपनी अन्तः दुष्प्रवृत्तियों से लड़ते हुए अन्तःकरण परिष्कृत करने में सफल होता है, वस्तुतः वही सच्चा पुरुषार्थी है । बाधा अवरोध तो किसी न किसी रूप में सदा बने रहेंगे । यदि अपनी प्रवृत्तियाँ एवं गतिविधियाँ श्रेष्ठ हैं तो बाहरी कठिनाइयाँ सेवा मार्ग में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं उत्पन्न कर सकती है ।

यदि उपरोक्त विवेचन को दृष्टिगत रखकर चला जाय तो कोई कारण नहीं कि व्यक्ति लोक सेवी की महत् भूमिका निभाता हुआ परमार्थ के साथ आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त न कर सके । मार्ग है तो कठिन पर यह भी जानना चाहिए कि बिना अवरोध पार किये, भटकावों का सामना किये परीक्षा की कसौटी पूरी नहीं होती । पतन निवारण एक बहुत बड़ा सेवा धर्म है । अपना उदाहरण प्रस्तुत करके लोक सेवी आदर्शों को व्यवहार में उतारने का प्रशिक्षण अन्यों को भी देते रह सकते व एक जीती-जागती, चलती-फिरती प्रयोगशाला का परिचय देते हैं। प्रज्ञा अभियान के युगशिल्पी इसी स्तर के बनें । इससे कम में वह शर्त पूरी नहीं होती जिसे पालन करने का वचन देकर वे मिशन से जुड़े हैं ।

फसल उगानी है तो बीज भी बोयें

अध्यात्म क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों, अनुदान, वरदानों को प्राप्त करने के सम्बन्ध में लूट खसोट की नीति छोड़कर वस्तु स्थिति समझनी चाहिए और यदि सचमुच कुछ प्राप्त करना हो तो उसकी पात्रता अर्जित करने और कीमत चुकाने के लिए तैयार होना चाहिए। "तप से शक्ति—शक्ति से सिद्धि" का सिद्धान्त हर अध्यात्म क्षेत्र में रुचि रखने वालों को सौ बार, हजार बार समझना, हृदयंगम करना और गाँठ बाँधना चाहिए। तप का अर्थ है उच्च उद्देश्यों के लिए कष्ट सहन । इसे शारीरिक उत्पीड़न न समझा जाय वरन् अपनी रुझानों, आदतों और गतिविधियों में घुसी हुई संकीर्णता विपन्नता को उदारता, व्यापकता में परिणित करने के निश्चय को व्यवहारिक रूप देने में जो कुसंस्कार बाधक होते हैं उनसे जूझना, समझा जाय । जूझने में कुछ तो अपनी भी हानि होती है, कुछ तो अपने को भी चोट लगती है । इसी को स्वीकारने, अपनाने में जो अड़चनें आती हैं उनका सामना करने का सिद्धान्त ही तपश्चर्या कहलाता है । आत्म प्रताड़ना के रूप में इन दिनों काया कष्टों को ही तप कहा जाने लगा है । इस मान्यता को अन्धविश्वास के अतिरिक्त और कुछ कहने समझने की आवश्यकता नहीं है ।

अध्यात्म क्षेत्र की पात्रता जो दैवी वरदानों को अपनी सामर्थ्य से बलात् खींच लाती, घसीट बुलाती है एक शब्द में सत्प्रयोजनों में बरती गई उदारता समझी जा सकती है । यों विलास, मोह और अहंकार की पूर्ति में तो असंख्यों को अशर्फियाँ लुटाते देखा जा सकता है । बदले की भावना से रिश्वत अथवा

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रलोभन देने का प्रचलन भी खूब है । चमचों, गुण्डों को जानबूझकर और ठगों के चित्र-विचित्र जाल-जंजालों में फंसकर अनजाने में बहुत कुछ लुटाया जाता रहता है, पर उसे कोई उदारता थोड़े ही कहा जा सकता है । जिसके पीछे उत्कृष्टता, आदर्शवादिता का परिपोषण करने वाली भावभीनी दूरदर्शिता न हो तो, उसे उदारता नहीं कहा जा सकता । अपव्ययी और उदारों की क्रिया एक जैसी दिखे भले ही पर उसमें वस्तुतः जमीन आसमान जैसा अन्तर है ।

समझा जाना चाहिए कि अध्यात्म क्षेत्र में आदि से अन्त तक उदार अनुदान वरदान बाँटने वाली सत्ताओं की कमी कभी नहीं रही और न रहेगी । लेने वालों की तुलना में वे देने के लिए कहीं अधिक व्याकुल रहती हैं पर दें किसे ? अनर्थ के लिए कुपात्रों की मनोकामना पूर्ण करने की आश दैवी शक्तियों से नहीं करनी चाहिए । यदि वे वस्तुतः महान और सम्पन्न शक्तिवान हैं तो उसी के साथ-साथ इतना और भी जोड़ लेना चाहिए कि उनमें पात्रता की परख में अत्यधिक तीक्ष्ण बुद्धि भी है । कोई अपनी बेटी को चाहे जिसके, इच्छुक के पल्ले नहीं बाँध देता वरन् यह बात गम्भीरतापूर्वक सोचता है कि जमाता बनाने के लिए कई कसौटियों पर कसने के उपरान्त कौन खरा सिद्ध होता है । ठीक यही बात वरदानों के सम्बन्ध में भी है । कोई देवता या तपस्वी मात्र दर्शन करने भर की कीमत पर किसी को निहाल कर दे या धूप, दीप, नैवेद्य, नमस्कार की कीमत पर अपनी अत्यन्त कष्ट सहकर एकत्रित की गई तप सम्पदा लुटाने की मूर्खता करते रहें। धूर्तों के, जालसाजों के शिकार बनते रहें। इस दुराशा को निराशा में परिणित कर लेना अधिक समझदारी का काम है । इसे अश्रद्धा भी समझा जा सकता है पर वस्तुतः है यथार्थवादिता । इसे अपनाया जा सके तो समय के अपव्यय और महत्त्वाकांक्षा, मनोकामना टूटने पर लदने वाली दुःखद प्रतिक्रिया से तो बचा जा सकता है ।

पूजा उपचारों को शृंगार और पात्रताअर्जन को स्वास्थ्य सम्पादन कहना चाहिए । भजन पूजन कम मात्रा में करने से भी काम चल सकता है । बड़ी-बड़ी उपलब्धि हस्तगत करनी हो तो पात्रता बढ़ाने वाले उदात्त दृष्टिकोण को विकसित करना चाहिए जो संकीर्णता से महानता की ओर घसीट ले चलने वाली व्यावहारिक उदारता को अधिकाधिक परिणाम में कार्यान्वित करना चाहिए । देवता हों या मनुष्य अपने वरदान बरसाने से पूर्व दृष्टिकोण की उत्कृष्टता और व्यवहारगत उदारता की गहराई की वजनदारी सौ बार नापते हैं । कुछ बहुमूल्य पाने वालों को उस कसौटी पर खरे सिद्ध होने के लिए पूर्व तैयारी में लग जाना चाहिए । इसी को स्वभाव का उदात्तीकरण कहते हैं। जो इस मार्ग पर जितना आगे बढ़ेगा वह दैवी अनुदानों में उसी अनुपात से लदता जायेगा । इस तथ्य और सत्य की साक्षी में समूची अध्यात्म परम्परा, घटनाओं और सफलताओं को प्रस्तुत किया जा सकता है । कृपण, संकीर्ण, लालची, मुफ्तखोरों के लिए वस्तुतः इस क्षेत्र का रास्ता पूरी तरह बन्द ही समझा जाना चाहिए ।

बोयें और काटें

सत्प्रयोजनों के लिए उदार अनुदान ही वह बीजारोपण है जिसके बदले में दैवी अनुग्रह की बहुमूल्य फसल काटी जा सकती है । जो बोने में कंजूसी करेगा वह धन-धान्य से कोठे कैसे भरेगा? जो सचाई समझ सके वे दो काम करें या तो विशुद्ध भौतिकवादियों की तरह उदारता को अस्वीकार करते हुए श्रम के बदले सफलता पाने की बात सोचें और देवताओं के सामने मनोकामना पूर्ति के लिए नाक रगड़ना, दाँत निपोरना बन्द करें । यह नीति अश्रद्धा एवं नास्तिकता प्रतीत होती है पर है यथार्थवादी । इसमें भ्रान्तियाँ भटकाव नहीं है । दूसरा रास्ता उन अध्यात्मवादियों, तत्वज्ञानियों का है जो बोने काटने पर विश्वास करते हैं और मूल्य देकर खरीदने की विश्व व्यवस्था पर विश्वास करते हैं । वस्तुतः ऐसे लोग ही अध्यात्म क्षेत्र में प्रवेश करके उच्चस्तरीय सफलताएँ पाते, वरदानों के अधिकारी बनते, निहाल बनते और कृत कृत्य होते हैं। अपनी उदारता ही हजार गुनी होकर उच्चस्तरीय विभूतियों के रूप में वापस लौटती हैं । साधक के अनुदान ही समयानुसार दैवी वरदान बनकर बरसते हैं ।

पात्रता की साधना करने के लिए ही अध्यात्म के हर प्रयोग के साथ अनुदानों की अनिवार्यता जोड़ी गई है । अनुष्ठान को ही लें उसके साथ यज्ञीय परमार्थ, ब्रह्मभोज, प्रसाद वितरण की अविच्छिन्नता है । जो केवल अक्षरों की रटन करके मालाओं की संख्या तो पूरी करते हैं पर उसके साथ वाले उदार अनुदान से मुँह मोड़ लेते हैं वे घुना बीज बोने वालों की तरह अभीष्ट प्रतिफल से वंचित ही रहते हैं । देव मंदिर में जाकर कुछ न कुछ पत्र पुष्प चढ़ाने की धर्म परम्परा है खाली हाथ जाने वाले खाली हाथ ही लौटते हैं । इसलिए दर्शन के साथ-साथ देवता के चरणों पर कुछ न कुछ चढ़ाने की भी अनिवार्यता है अन्यथा पुष्प के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बदले कृपणताजन्य पाप लगने के शास्त्र विधान को भी ध्यान में रखकर चलना होगा । दर्शन झाँकी में, झाँकते फिरना भी सब कुछ नहीं है कुछ कृपणता की गाँठ खोलना भी इसी के साथ समन्वित है । भारतीय तत्व दर्शन में, अध्यात्म उपचार में एक भी ऐसा प्रयोजन नहीं है जिसमें प्रयोजनों के निमित्त कुछ न कुछ त्याग करने, उदार अनुदान प्रस्तुत करने की अनिवार्यता जुड़ी न हो । यह उचित भी है और आवश्यक भी । मनुष्य सामाजिक प्राणी है । सत्प्रवृत्तियों से ही सामाजिक प्रगति सम्भव हुई है । इसी आधार पर मनुष्य के बीच मनुष्य से आगे बढ़ते-बढ़ते आज के सभ्य मनुष्य स्तर तक पहुँचने का अवसर मिला है । उस ऋण को चुकाया ही जाना चाहिए । सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के लिए उदार अंशदान, समयदान की प्रक्रिया को दैनिक जीवन में शरीर एवं परिवार पोषण की जिम्मेदारियों की तरह ही वहन करना चाहिए । विशेष आवश्यकता आ पड़ने पर तो निजी सुविधाओं में कटौती करके भी अनुकरणीय उदारता का परिचय देना चाहिए । वस्तुतः ऐसी रीति अपनाकर ही कोई सच्चे अर्थों में अध्यात्मवादी बनता है । पात्रता की प्रामाणिकता मात्र उदारता की कसौटी पर ही खरी उतरती है । संकीर्णता ही अगणित दुष्कृत्यों की जननी है । उदारता की मनोभूमि हो तो चिन्तन और चरित्र के क्षेत्र में उत्कृष्ट आदर्शवादिता ही बढ़ती चलेगी और वहाँ ले पहुँचेगी जहाँ देवता वरदान ही बरसाते, साधक के साथ पूरी तरह घुल भी जाते हैं ।

उदारता सत्प्रयोजनों के निमित्त हो

उदारता सत्कार्यों के लिए, सत्प्रयोजनों के लिए हो तो ही वह सार्थक समझी जायेगी । इन दिनों सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन की रचनात्मक प्रवृत्तियों में प्रज्ञा अभियान किस ईमानदारी, जिम्मेदारी और कर्मठता के साथ लगा हुआ है इसे हर कोई देख और जाँच सकता है । उसकी अगणित आवश्यकतायें हैं । कार्य-विस्तार को देखते हुए असीम साधन चाहिए । उसकी पूर्ति से उत्पन्न होने वाले सत्परिणामों का अनुमान लगाया जा सके तो प्रतीत होगा कि यह साधु और ब्राह्मण परम्परा का पुनर्जीवन है । ब्राह्मण स्थान बनाकर परिवार सहित रहते और लोकमानस के परिष्कार की स्थानीय गतिविधि चलाते थे । इसलिए उनके लिए निर्वाह की और साधु परिव्राजकों के लिए मार्ग व्यय की तथा रचनात्मक प्रवृत्तियों का शुभारम्भ, अभिवर्धन के साधन जुटाने वाले साधनों की आवश्यकता पड़ती है । निर्वाह के निमित्त दान दिया जाता है और सत्प्रवृत्ति संवर्धन के साधन जुटाने के लिए दक्षिणा । दान ब्राह्मणों को दिया जाता था और दक्षिणा साधुओं को । दाता हजार बार देखता और लाख बार खोजता था कि उसकी उदारता का सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के अतिरिक्त किसी और काम में नियोजन तो नहीं हो रही है क्योंकि सत्पात्र का दान जहाँ स्वर्ग ले जाता है वहाँ कुपात्रों की सहायता दानी को नरक में भी गिराती है क्योंकि उसी की सहायता से कुपात्रों द्वारा अपनाई गई दुष्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिला और वहाँ उस बढ़ते अनाचार में सहभागी बना।

हर अध्यात्म मार्ग में रुचि एवं श्रद्धा रखने वाले, उस क्षेत्र में अजस्त्र वरदान पाने के इच्छुकों में से प्रत्येक को सौ बार सोचना चाहिए । इस क्षेत्र की उपलब्धियाँ भी पात्रता के आधार पर खरीदनी ही होंगी और उसके लिए उदारता भरे अनुदान प्रस्तुत करने का सहास संजोना पड़ेगा । दर्शन, झाँकी की विडम्बना से किसी के पल्ले कुछ पड़ा भी नहीं है। कुछ पड़ने वाला भी नहीं है। हम उदार बनें । याचक नहीं दानी भी बने । मनोकामनाओं की पूर्ति में ही न उलझे रहें । समय की आवश्यकता और आपत्तिकालीन युग धर्म को समझें और इस विषय बेला में कुछ करने की बात सोचें । इसमें घाटा दीखता भर है वस्तुतः है लाभ ही लाभ । सभी महामानवों के इतिहास साक्षी हैं । यही रास्ता प्रज्ञा परिजनों के लिए भी खुला है । वे पगडण्डियाँ न ढूढ़ें । तिकड़में न भिड़ायें । राजमार्ग पर चलें । लक्ष्य तक पहुँचें और भौतिक एवं आत्मिक सिद्धि, सफलताओं के अधिपति बनें ।

सत्प्रयोजनों के लिए समयदान, श्रमदान भी अभीष्ट है । वास्तविक पुण्य इसी का है । इसका दूसरा उपाय यह है कि अपने श्रम, समय पैसे के रूप में परिवर्तित किया जाय और फिर उसे सत्प्रयोजनों में नियोजित करके उतना ही पुण्य कमाया जाय जितना कि स्वयं श्रम या समय देकर अर्जित किया जाता है । स्वयं करना या दूसरों का निर्वाह पारिश्रमिक साधन देकर वही काम उनसे करा लेना एक ही बात है । समय दान अंशदान एक तथ्य के दो पहलू एवं परस्पर पूरक हैं । समय दानियों को निर्वाह चाहिए । इसके अतिरिक्त प्रवृज्या का मार्ग व्यय एवं कार्यक्रमों के शुभारम्भ के आरम्भिक उपकरणों का सरंजाम जुटाना भी ऐसा कार्य है जिसके लिए साधनों के अभाव से गाड़ी रुक जाती है । ऐसे प्रयोजनों का महत्त्व मात्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूरदर्शी ही समझते हैं । सत्प्रवृत्ति का महत्त्व अदूरदर्शियों की दृष्टि में जमता नहीं है । उन्हें तो धर्मात्मा कहलाने का यश, लिप्सा और देवता को रिश्वत देकर मनोकामना पूरी कराने के अतिरिक्त तीसरी बात सूझती ही नहीं । ऐसे लोगों से युग सृजन जैसे मनुष्य का भाग्य भविष्य बदलने जैसे कार्यों के लिए किसी उदार सहयोग की आशा नहीं की जा सकती है । स्वार्थ से ऊँचे उठकर लोक-कल्याण की बात सोचने और उसके लिए उदार सहयोग करने की साहसिकता किन्हीं बिरलों में कभी-कभी देखने को मिल जाती है ।

अध्यात्म क्षेत्र की उपलब्धियाँ प्राप्त करने युग समस्याओं से निपटने, उज्ज्वल भविष्य के साधन जुटाने, आत्मा को सच्चे परमार्थ का संतोष देने के लिए आवश्यकता है अपनी पात्रता बढ़ाने और प्रामाणिकता सिद्ध करने की । इन महत्त्वपूर्ण लाभों को प्राप्त करने में समयदान, अंशदान के लिए युग देवता ने माँग की है तो उस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए । ऐसी साहसिकता जो भी अपना सकेंगे, लगने वाली पूँजी की तुलना में लाभ कहीं अधिक प्राप्त करेंगे ।

यह बेला असमंजस ग्रस्त रहने की है नहीं

महाभारत में दोनों सेनाओं के बीच खड़े अर्जुन का रथ देखने में शस्त्र सज्जा से भरा पूरा और हर दृष्टि से समर्थ सशक्त प्रतीत होता था, पर भीतर ही भीतर उसके असमंजस का अदृश्य दिग्भ्रम इतना अधिक संव्याप्त था कि सूत्र संचालक का माथा ही ठनकने लगा । गाण्डीवधारी महा पराक्रमी अर्जुन बाहर से महाप्राण दीखने पर भी भीतर ही भीतर दीन दयनीय और कृपण कायरों की तरह अवसाद ग्रस्त हो रहा था । कारण परिस्थितियों की प्रतिकूलता नहीं, मन:स्थिति में अदूरदर्शिता घुस पड़ने के कारण उत्पन्न हुई दिग्भ्रान्ति थी। जिसके भी दृष्टिकोण में संकीर्ण सीमाबद्धता एवं निजी इच्छा लिप्सा की निकृष्टता घुसती है उसे ऐसा ही दीन दयनीय बना देती है । जैसा कि उन घड़ियों में अर्जुन अपने को असमंजस में घिरा हुआ अनुभव कर रहा था ।

महाभारत का उद्देश्य भाइयों के झगड़े झंझट का निपटारा कराना नहीं सामन्तवादी बिखराव के कारण भारत के स्तर, भविष्य एवं आकार के निरन्तर चिन्ताजनक बनते जाने की जटिल समस्या का दूरगामी समाधान प्रस्तुत करना था । अतीत में भारत विस्तार और गौरव की दृष्टि से विशाल था । भविष्य में भी उसे उतना ही नहीं उससे भी बढ़ा चढ़ा होना चाहिए। इसी की आरम्भ में कटु किन्तु अन्त में मधुर प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने वाला दुस्साहस भरा महायुद्ध खड़ा किया गया था । उसकी सफलता के साथ दूरगामी सत्परिणामों की विशालकाय योजना और कल्पना काम कर रही थी । ऐसे आयोजन सदा उच्चस्तरीय होते हैं ।

क्षुद्रता के रहते दैवी अनुदान की उपलब्धि असम्भव है

मनुष्य चतुर तो है पर उस कौशल का उपयोग आम तौर से क्षुद्र प्रयोजनों के निमित्त बरती गई धूर्तता में ही होते देखा गया है । उसकी बुद्धि और क्षमता इसी कुचक्र में कोल्हू के बैल की तरह तिली के साथ-साथ अपने को भी पेरती-पीसती रहती है । यही है सामान्य जन-जीवन और लोक प्रवाह का दुर्दिनों में देखा जाने वाला दुर्भाग्यपूर्ण स्वरूप । जब कभी दूरगामी सत्परिणाम उत्पन्न करने के लिए आरम्भ में बीज की तरह गलने के लिए प्राणवानों का आह्वान आकाश से गूँजता दीखे तो समझना चाहिए कि पर्दे के पीछे सृष्टा की वह प्रतिज्ञा काम कर रही है जिसमें उसने असन्तुलन को सन्तुलन में बदलने के लिए समय-समय पर स्वयं बागडोर सँभालने का आश्वासन दिया था । महाभारत के पीछे उच्चस्तरीय उद्देश्यों द्वारा प्रस्तुत विभीषिकाओं की तमिस्त्रा हटाने और प्रखर आलोक से दिगदिगन्त को भर देने की प्रभातकाल जैसी योजना थी । पीछे वह परीक्षित के हाथों बहुत हद तक पूरी भी हुई और प्रगति प्रयास चाणक्य जैसों के हाथों में क्रमश: हस्तान्तरित होते चले आये । इसी महान प्रयोजन का अर्जुन को 'हीरो' बनाया जा रहा था । भगवान की मित्रता का उपहार न उससे कम होता है न अधिक । वे जिस पर सच्चे मन से अनुकम्पा बरसाते हैं उसे हरिश्चन्द्र, भागीरथ, दधीचि, प्रह्लाद, बुद्ध जैसे जाज्वल्यमान नक्षत्रों का श्रेय गौरव प्रदान करते हैं । रेशमी झूल ओढ़ने, दूध जलेबी खाने और मोटर में सैर करने तथा हरघड़ी नौकरों से खिदमत, खुशामद कराने वाला सेठ जी का कुत्ता अपने आपको भगवान समझता रहे इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं । भगवान की अनुकम्पा में इस प्रकार की विलासिता का कहीं कोई समावेश नहीं है। उसमें हाड़माँस के पुतले को देवोपम गौरव गरिमा प्रदान करने का ही एकमात्र उपहार अनुदान है । अर्जुन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी मित्रता का इससे बड़ा उपहार भगवान को और कुछ दे भी नहीं सकते थे कि उसे महाभारत का सूत्रधार कहने में इतिहास का गौरव अनुभव करें और पीढ़ियाँ अनन्त काल तक उसके चरणों पर श्रद्धा सुमन और पुलकित अन्तःकरण से निकलने वाले भावना अश्रु समर्पित करती रहें ।

अर्जुन वस्तु स्थिति को समझ नहीं रहा था । उसकी दूर दृष्टि कुण्ठित हो गई थी फलतः वह तात्कालिक एवं व्यक्तिगत लाभ को कसौटी मानकर अपने ढंग से यह सोचने लगा कि क्या करुँ क्या न करुँ ? यह खोटा दृष्टिकोण जिस किसी ने जब कभी अपनाया है तब उसे संकीर्ण स्वार्थपरता के ही गर्त में गिरना पड़ा है । ऐसे व्यक्ति मात्र सुविधा संचय की बात सोच सकते हैं । आदर्शों के परिपालन का प्रथम चरण परिशोधन और परिष्कार से आरम्भ होता है । इसे वरण करने में तात्कालिक घाटा उठाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं । संसार के सभी महामानवों को इस प्राथमिक परीक्षा में प्रवेश करने और उत्तीर्ण होने का श्रम पराक्रम करना पड़ा है । इससे बच निकलने की सस्ती तरकीब कोई है नहीं क्षुद्र अपने ढंग से सोच सकते हैं । वे विलास वैभव को यथावत जकड़े रहकर किसी मंत्र-तंत्र के सहारे गगन चुम्बी विभूतियों को झटकने की स्वर्ग मुक्ति की ऋद्धि, सिद्धि की बात सोचते रह सकते हैं । कल्पना जल्पनाओं पर कोई प्रतिबन्ध नहीं सोने के पंख लगाकर ब्रह्माण्ड के सात चक्कर लगाने का सपना तो जाले में जकड़ी मकड़ी भी देख सकती है पर जिन्हें यथार्थता से वास्ता पड़ा है वे जानते हैं कि महानता की विभूतियाँ उपलब्ध करने के लिए साधु ब्राह्मणों जैसा उदार अपरिग्रह अपनाना पड़ता है और प्रखरता खरीदने के लिए तपश्चर्या की आग में होकर गुजरना पड़ता है । अर्जुन पर ऐसा ही दिग्भ्रम उस घड़ी आ चढ़ा जैसा कि हेयस्तर के नर पामरों के सिर पर भूत बन कर अहिर्निशि छाया रहता है ।

आदमी की चतुरता बहाने बाजी गढ़ने में इतनी प्रवीण है कि उसकी तुलना में मूर्धन्य जादूगरों की बाजीगरी भी झक मारने लगे । असमर्थता व्यक्त करने के लिए अर्जुन एक के बाद एक बहाने प्रस्तुत करता जाता था । उनमें गुरुजनों की, स्वजनों की अवज्ञा न करने की और महिलाओं के वैधव्य से बचाने जैसे आदर्शवादी लगने वाले तर्क भी सम्मलित थे । पर वह मूल तथ्य को जान बूझकर या अनजाने उपेक्षित ही किये दे रहा था कि झंझट में न पड़ने की नीति व्यक्तिगत रूप से सरल सुगम होने पर भी सार्वभौम हित साधन की व्यक्तित्व को महानता से जाज्वल्य मान कर देने, दैवी अनुकम्पा का वाहन होकर कृत्य-कृत्य बनने की उच्चस्तरीय सम्भावनाएँ उस नीति को अपनाने पर किस बुरी तरह समाप्त हो जाती हैं। तात्कालिक लाभ सोचने वाले दूरगामी प्रतिफलों की उपेक्षा करने वाले आमतौर से ऐसे ही असमंजसों में उलझते और सौभाग्य से हाथ धोते देखे गये हैं जैसे कि बौद्धिक चक्रव्यूह में अर्जुन घुसता चला जा रहा था ।

पास की नहीं दूर की सोचें

गीता को जिन्होंने पढ़ा है वे जानते हैं कि उसमें भगवान का सर्वोपरि स्नेह सौजन्य बरसा है । वे अपने सच्चे भक्त को सच्चे मन से जो उपहार दे सकते हैं उसको ७०० श्लोकों वाली गीता में पढ़ा, सुना, समझा, और हृदयंगम किया जा सकता है । उस आध्यात्म काव्य में वाक् जंजाल और तर्क विस्तार तो सुविस्तृत और अद्भुत है किन्तु सार तत्व इतना ही है कि "पास की नहीं दूर की सोचें, लाभ की नहीं श्रेय को चुनें ।" इस मार्ग पर चलने वालों को सदा झंझट सहने और कष्ट उठाने पड़े हैं । इससे कम प्रसव पीड़ा सहे बिना किसी को भी महानता की देवनगरी में प्रवेश नहीं मिला । तर्क और तथ्य प्रस्तुत करते हुए भगवान ने अर्जुन का व्यामोह दूर कर दिया साथ ही वह असमंजस भी हवा में उड़ गया जो लगता पर्वत के समान भारी था किन्तु वस्तुतः था तिनके से भी हलका । भगवान भक्त का असमंजस हरते और दिव्य आलोक देते हैं । वही अर्जुन को भी मिल गया। पांचजन्य बजाते, घोड़ों की रास थामते, सारथी की भूमिका निभाते भगवान को दिव्य चक्षुओं से देखा तो उसकी भुजाएँ फड़कने लगीं । गाण्डीव बिजली की तरह उठा और तरकश से एक के बाद दूसरे तीर का निकलना, तूफान की तरह बरसना आरम्भ हो गया ।

यह प्राचीन प्रसंग इसलिए स्मरण दिलाया गया है कि युग के अर्जुनों के सामने असमंजस बन कर अड़ा हुआ व्यामोह सामयिक समस्याओं के ढेर पर ढेर इस तरह खड़े करता दीखता है कि झोली से गुब्बारे निकालने वाले बाजीगर को मानो उसने हरा देने की ठान डाली हो । आदर्शों के मार्ग पर चलने का सत्साहस जुटाने वाले को सर्वप्रथम तात्कालिक लाभों को न छोड़ने की एक ही अड़चन सामने आती है । इसी के पक्ष में चतुर वकील की तरह कल्पना कौशल अनेकानेक उलझनों कठिनाइयों के वास्तविक काल्पनिक चित्र प्रस्तुत करता चला जाता है । इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भवसागर से पार निकलना कठिन है । सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाने, सभी गुत्थियाँ सुलझ जाने, अपेक्षित अनुकूलताओं का मनोरथ पूरा हो जाने पर कुछ उच्चस्तरीय करने की बात बनेगी, ऐसा सोचने वालों को अभीष्ट अवसर की प्रतीक्षा लम्बी अवधि तक करनी पड़ेगी कम से कम इस जन्म में तो वैसा अवसर आने वाला है ही नहीं, यह भली-भाँति नोट करना और गाँठ बाँधना चाहिए । किसी का वास्ता भगवान से पड़े तो ही यह असमंजस छूटे, तो ही यह उमंग उठे कि वर्तमान परिस्थितियाँ कितनी ही जटिल और कठिन लगती हों उनके मध्य भी युग निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए बहुत कुछ कर गुजरना नितान्त सम्भव है । गुत्थियाँ अपने ढंग से सुलझें और आदर्शों का निर्वाह साथ-साथ चलता रहे ऐसा सुयोग बिठाने में हर किसी को विवेकवान, दूरदर्शिता , ऋतम्भरा प्रज्ञा सुनिश्चित रूप से सफल हो सकती है । गीता का तत्वदर्शन भगवान का आक्रोश भरा निर्देशन और अन्ततः अर्जुन का जागृत विवेक और प्रखर पौरुष्य उबल पड़ना चरितार्थ होकर रहा । आज के अर्जुनों का समाधान भी इसी आधार पर सम्भव है । अन्यथा असमंजस की दुहाई देते रहने की और अपने को असहाय असमर्थ कहते रहने की आत्म प्रवंचना से उन्हें रोक भी कौन सकता है ।

पाञ्चजन्य की प्रतिध्वनि सुनें और अनुसरण करें

ऐतिहासिक महाभारत में भारत देश को विशाल भारत के रूप में विकसित करने की योजना थी । आज का लक्ष्य एवं प्रसंग ऊँचा है । अब मनुष्य को महामानव, धरातल को स्वर्ग लोक बनाने की तैयारी है । पतन की दिशा में प्रवाहमान लोक मानस को मानवी गरिमा का गला घोंट डालने से कठोरतापूर्वक रोकना है । पतनोन्तुख प्रवाह को उलटना कितना कठिन होता है इसे उस प्रयोजन में संलग्न शक्तियाँ ही जानती हैं । सृजन किसे कहते हैं उसे हर कोई नहीं जानता, जिन्हें योगियों जैसा मनोयोग जुटाने, पराक्रमियों जैसे श्रम स्वेद बरसाने का अभ्यास है उन्हीं को सृजन का मूल्य समझने की भी जानकारी है। लोग तो विघटन, पतन और ध्वंस का ही ताना-बाना बुनते रहते हैं और माचिस की भूमिका निभाते फूलझड़ी चलाते अपनी आतंकवादी अहन्ता का ढिंढोरा पीटते हैं । ऐसे उद्दण्ड दुबुद्धियों की चर्चा यहाँ कौन करे ? बात उनकी चल रही है जो सृष्टा के युग सृजन में भागीदारी ग्रहण करने की बात सोचते हैं । आरम्भिक पूँजी विनियोग के बिना कृषि व्यापार आदि तक नहीं चलते । बीज गलाये बिना न खेत लहलहाते हैं न उद्यान फलते हैं । इस सनातन सत्य और शाश्वत तथ्य से बच निकलने का अब तक कोई शार्टकट किसी महामानव को मिला नहीं है । भविष्य में भी किसी को दो नावों पर एक साथ चढ़ने की, दो घोड़ों पर एक ही समय में सवारी गाँठने की बात कल्पना का परित्याग कर ही देना चाहिए । यह प्रौढ़ प्रखरों को शोभा नहीं देता ।

महासृजन की इस बेला में युग देवता के आह्वान का क्या उत्तर दिया जाय ? इस संदर्भ में अर्जुन के असमंजस और कृष्ण के उद्बोधन को स्मरण करने से समाधान मिल सकता है । बड़े प्रयोजनों के लिए बड़े आदमी ही आगे आते हैं । दलदल में फँसे हाथी को प्रौढ़ हाथियों का झुण्ड ही जंजीरों में जकड़ कर घसीटता और किनारे पर ला पटकता है । युग संकट दलदल में फँसे हाथी की तरह है उसे उबारने के लिए ऐसे लोग चाहिए जो समुद्र छलाँगने और पर्वत उड़ा ले जाने वाले पवन पुत्र के समान उमंगों से लबालब भरे हों । सामर्थ्य के स्रोत ऐसों के लिए ही देव केन्द्रों में सुरक्षित हैं । सभी जानते हैं कि नल नील की योग्यता शिक्षा समुद्र पर पुल बनाने वाले मूर्धन्य इन्जीनियरों जैसी नहीं थी । विभीषण अपने पुरुषार्थ से लंका का शासक नहीं बन सकता था । बिना महान सारथी के साधन हीन अर्जुन महाभारत जीतने के सरंजाम कैसे जुटा पाता ? जिन्होंने अध्यात्म का ककहरा पढ़ा है वे जानते हैं कि उच्च आदर्शों को अपनाने की उमंगें यदि गहरी, वास्तविक और साहस भरी हों तो फिर पग-पग पर आने वाली कठिनाइयों को बुहारते रहने की जिम्मेदारी अदृश्य सत्ता ने भूतकाल में भी उठाई है और भविष्य में भी उठाती रहेगी । श्रेयार्थी सदा इसी स्तर का दृष्टिकोण अपनाते रहे हैं। परिस्थितियों का समाधन होने की प्रतीक्षा न करके युग धर्म को जिस तिस प्रकार निभाने के लिए दुस्साहसियों की तरह छलाँग लगाते और पार होते रहे हैं । शहीदों का डूबना भी कृपणों के किनारे पर सुरक्षित बैठे रहने की तुलना में कहीं अधिक शानदार होता है ।

जागृत आत्माओं को युग निमंत्रण यही है । इन दिनों अनन्त अन्तरिक्ष में गूँजने वाले पाञ्चजन्य की प्रतिध्वनि जो सुन सकें सुनें । जो उसका अनुसरण कर सकें करें । श्रेय-सौभाग्य और अवसाद-पश्चात्ताप में से एक को चुनने के लिए हम में से हर कोई पूर्ण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वतन्त्र है । इस स्वतन्त्रता का उपयोग इन्हीं दिनों करना होगा । निर्णय को पीछे कभी के लिए सुरक्षित रखने और बाद में देखा जायेगा, कहकर टालमटोल करने का अवसर अब रह नहीं गया है । आज की कभी नहीं की, 'करो या मरो की'—स्थिति चुनौती स्वीकार करने या इन्कारने का स्पष्ट फैसला करने के लिए लगता है दरवाजा रोक कर हठ-पूर्वक अड़ गई है ।

आड़े समय की विषमता और जिम्मेदारी अनुभव करें

विनाशकारी दुर्बुद्धि जब-तब उभरती तो है, पर वह देर तक टिकती नहीं । पैदा किये गये अनर्थ के साथ-साथ वह स्वयं भी समाप्त हो जाती है । माचिस की एक तीली, चपेट में आने वाले घर-मुहल्ले को जला तो देती है; पर साथ ही साथ यह भी निश्चित है कि तीली बच स्वयं भी नहीं पाती । दूसरों को जलाने के लिए उत्पन्न हुई दुर्बुद्धि, उस उद्‌गम को भी समाप्त करके रहती है—जहाँ से कि वह उपजी थी । हवा में चक्रवात, तूफान, अंधड़ जब-तब आते हैं । यदि वह सदा बना ही रहे, तो फिर कहीं स्थिरता टिक ही न पाये ।

नियति का निर्धारण है कि उपद्रवी उन्माद देर तक टिकने न पायें । नदियों में पड़ने वाले भँवर होते तो बड़े भयंकर और सशक्त हैं, अपनी चपेट में आने वाली अच्छी खासी नावों तक को उलट देते हैं । इतने पर भी उनका अतिक्रमण देर तक नहीं टिकता । ओलों से खेत-खलिहान सभी का सफाया हो जाता है, पर वे भी तत्काल घुल जाते हैं। दंगे उभरते हैं; पर नियति क्रम के दबाव में कुछ ही समय में वे समाप्त भी होकर रहते हैं । चोट लगने से घाव तो बनते हैं; पर शरीर संरचना के साथ जुड़े हुए महत्त्वपूर्ण तत्त्व, उसे भरना भी तत्काल आरम्भ कर देते हैं और कुछ ही समय बाद वहाँ उसका स्मृति-निशान भर रह जाता है। विघटन विकृति है और सुगठन नियति ।

नियति उद्दण्डता को देर तक सहन नहीं कर सकती। उसने पिछले दिनों खोदी खाई पाटने और बेतुके टीलों को समतल करने की अपनी सन्तुलन व्यवस्था को, अगले ही दिनों इस धरती पर उतारने का निश्चय किया है । हानि का वर्तमान स्वरूप और संसार का प्रस्तुत वातावरण उसे रास नहीं आता है । फलतः अवांछनीयता को निरस्त करने और उसके स्थान पर ऐसा कुछ विनिर्मित करने का सरंजाम जुटाया है, जिसे सौम्य-सुन्दर एवं सभ्यता-सुसंस्कारिता का प्रतीक कहा जा सके । यही है इक्कीसवीं सदी की रूप-रेखा, जिसके साथ उज्ज्वल भविष्य की सुखद सत्भावना का समन्वय किया जा रहा है । यह गंगा अवतरण की पुरातन घटना के समतुल्य है, जिसने सूखे वीरानों को शस्य-श्यामला बना दिया था । इस सम्भावना को सतयुग की वापसी के नाम से भी प्रतिपादित किया गया है ।

मानवी पुरुषार्थ एवं दैवी अनुदान

सम्पन्नता, शिक्षा, बलिष्ठता, चतुरता जैसी विशेषताएँ, मनुष्य अपने बल-बूते अर्जित तो कर लेता है पर उनका सदुपयोग कदाचित् ही किसी से बन पड़ता है । दुरुपयोग किये जाने पर तो अमृत भी विष बन जाता है । अस्तु, देखा गया है कि तथाकथित विशिष्ट जन भी जाने-अनजाने, प्रयुक्त पुरुषार्थ द्वारा अपने और दूसरों के लिए संकट ही खड़े करते रहते हैं । विशेषताओं के सदुपयोग का क्रम न बिठा पाने के कारण व्यक्तित्वों के अभ्युदय में तो योगदान दे नहीं पाते, वरन् सम्पर्क क्षेत्र में पतन और पराभव का ही पथ-प्रशस्त करते हैं । ऐसा उपार्जन किस काम का, जो देखने भर के लिए चकाचौंध उत्पन्न करे; किन्तु परिणाम में अनेक विसंगतियाँ-विभीषिकाएँ साथ लेकर वापस लौटे ।

दैवी अनुग्रह, प्रखर प्रतिभा के रूप में वरदान बनकर बरसता है । अथवा यों कहना चाहिए कि प्रतिभा के धनी ही दैवी अनुकम्पा और सहायता के अधिकारी बनते हैं । वह बलिष्ठताओं, सम्पदाओं और विभूतियों में सर्वोपरि स्तर की होती है । शारीरिक ओजस्, मानसिक तेजस् और आत्मिक वर्चस् का उसमें त्रिविध समावेश होता है । जिनमें वह, जिस अनुपात में पाई जाती है; उनका स्तर उतना ही उच्चस्तरीय होता जाता है । संयम-साधना से जो शक्तियाँ संचित होती हैं, उनका उपयोग देवजनों जैसा ही बन पड़ता है । महामानव अपने में ऐसी क्षमताएँ नियोजित किये रहते हैं कि उन्हें प्रामाणिक, विश्वस्त और नेतृत्व कर सकने में समर्थ माना जाता है । फलतः वे स्वयं भी अपने प्रकाश से प्रकाशित होते और दूसरों को उपयुक्त मार्गदर्शन देने में समर्थ सिद्ध होते हैं । उन्हें न अनुयायियों की कमी रहती है और न सहयोगियों की ।

चंदन वृक्षों की तरह, प्रतिभावान व्यक्ति अपने परिकर में अपनी जैसी ही अन्य विभूतियाँ उत्पन्न कर लेते हैं । फलतः सृजन प्रयोजनों में काम आने वाली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभाओं का अभाव भी उन्हें नहीं अखरता और उन संकल्पों को चरितार्थ कर दिखाते हैं, जिनके सम्बन्ध में यही आम धारणा रहती है कि उन्हें कोई देव मानव ही सम्पन्न कर सकेंगे । स्वार्थरत मनुष्य तो मात्र क्षुद्रता, दुष्टता और भ्रष्टता का ही परिचय देता देखा गया है । जिनका चिन्तन, चरित्र, नियोजन, निर्धारण एवं पराक्रम उच्चस्तरीय बन पड़े, उन्हें नर रूप में नारायण की अनुकम्पा के श्रेयाधिकारी होने का मान दिया जाता है । देखा भी गया है कि देव मानवों का वर्ग ही उच्चस्तरीय प्रयोजनों को पूरा कर सकने का साहस जुटाता और उन्हें पूरा कर दिखाता है ।

युग परिवर्तन की इस अभूतपूर्व वेला में भगवान द्वारा नियोजित निर्धारणों को पूरा करने में मात्र प्रखर-प्रतिभाएँ ही समर्थ होंगी । उन्हीं के द्वारा ऐसे क्रिया-कलाप अगले दिनों सम्पन्न होंगे, जिन्हें साधारण जन परिस्थितियों को देखते हुए असम्भव जैसा मानते हैं । विश्व इतिहास साक्षी है कि प्रतिभाओं का चुम्बकत्व इतना प्रचंड होता है, कि वे अभीष्ट साधनों और सहयोगियों को न जाने कहाँ से खींच बुलाते हैं और उन कामों को सम्पन्न करते हैं, जो सर्व-साधारण को अद्‌भुत-आश्चर्यजनक और चमत्कार जैसा प्रतीत होते हैं ।

बड़े कार्यों के लिए सशक्त प्रयास

अगले दिनों बड़े काम सम्पन्न होने जा रहे हैं । बड़े प्रचलन आरम्भ होने हैं और सबसे बड़ी बात है कि समय की प्रवाह-धारा को उलट कर सीधा किया जाना है । यह नियोजन किसी सीमित क्षेत्र या वर्ग का नहीं, वरन् इतना विस्तृत है, कि उसके आँचल में समाये विश्व-समुदाय के करोड़ों मानवों और उनकी दिशा-धाराओं में प्रायः आमूल-चूल स्तर का परिवर्तन प्रस्तुत किया जा सके । यह सब दिव्य प्रतिभाओं के पराक्रम से ही सम्भव हो सकता है । उसका उपार्जन अभिवर्धन हर उदारचेता और संयमशील के लिए सम्भव है । समय की आवश्यकता को देखते हुए, प्राणवान सत्ताएँ अपने को इसी दिशा में विकसित करेंगी और उन कार्यों को सम्पन्न करके रहेंगी, जिन्हें आज की महती आवश्यकता के नाम से जाना और पुकारा जा रहा है ।

ऐसे अवसरों पर, युग परिवर्तनों के अवसर पर, दैवी सत्ता को अपनी महती भूमिका सम्पन्न करते हुए अपना दायित्व निभाते हुए अनादिकाल से देखा गया है । अवतार इसी प्रयोजन के लिए होते रहते हैं । वे प्रवाह-परिवर्तन के रूप में होते हैं और उसमें प्रतिभा सम्पन्नों की प्रत्यक्ष भूमिका काम करती है । अदृश्यसत्ता तो मात्र प्रेरणाएँ और उमंगें भर निरसृत करती हैं । क्रिया-प्रक्रिया तो मानव शरीर ही सम्पन्न कर पाते हैं । उनमें भावनाशील मनस्वी नर-नारी ही महती भूमिका सम्पन्न करते रहे हैं और अपने नेतृत्व में अनेकानेक वरिष्ठजनों को अपना सहयोगी बनाते रहे हैं । इस बार भी ऐसा ही कुछ होने जा रहा है । नियति ने अपना काम जोरों से करना अरम्भ कर दिया है । उसके कारण बन पड़ने वाली सुखद सम्भावनाओं का श्रेय लेने के लिए उत्साही जन अधिक तत्परतापूर्वक आगे आ रहे हैं । समर्थ-नैष्ठिक प्रतिभाएँ उन महत्त्वपूर्ण कार्यों के उत्तरदायित्व सँभालेंगी, जिन्हें मुक्त कंठ से सराहा और अनुकरणीय-अभिनन्दनीय ठहराया जा सके ।

इक्कीसवीं सदी के साथ जुड़े हुए उज्ज्वल भविष्य को लोकव्यवहार में अविच्छिन्न रूप से समाविष्ट करने के लिए भी, ऐसी ही प्रतिभाओं का वसंती उल्लास बिखर रहा है, जिसे एक शब्द में युग-पुरुषों के प्रकटीकरण की वेला कहा जा सके । गाँधी युग में भी चमत्कार कर दिखाने के लिए ऐसा ही नेतृत्व वरिष्ठजनों ने सर्वसाधारण को प्रदान किया था । बुद्धकाल के धर्मचक्र-प्रवर्त्तन में भी, ऐसे ही मनस्वियों का साहस भरा पराक्रम, देखते-देखते सुविस्तृत भूखण्ड पर छाया था । साम्यवाद, प्रजातन्त्र जैसी आश्चर्यजनक विधाओं को सिद्धान्त से आगे बढ़ाकर प्रचलन स्तर तक घसीट लाने में भी ऐसे ही मनस्वी अग्रिम पंक्ति में आ खड़े हुए थे । उनने तत्कालीन क्रांतियाँ सम्पन्न करने में अपना आश्चर्यजनक योगदान प्रस्तुत किया था । महान परिवर्तनों में प्रायः ऐसे ही महामानवों की भूमिकाएँ प्रमुख रहती रही हैं ।

अपने समय का युग परिवर्तन भी ऐसे ही वरिष्ठ प्रतिभाओं के बलबूते सम्पन्न होगा । नेतृत्व की क्षमता जिनमें होती है, उन्हें सहयोगी-साथियों की भी कमी नहीं रहती । अवसर की प्रतीक्षा करते देखकर किसी समय रीछ-वानर तक दाँत कटकटाते और मुठ्ठियाँ भींचते हुए दौड़ पड़े थे । युद्धकला की जानकारी और शस्त्र-संचालन की साधन-सामग्री उनके पास थी नहीं । फिर भी उत्साह तो उत्साह जो ठहरा । आदर्शों से अनुप्राणित भाव-संवेदनाएँ भी कुछ ऐसी ही होती हैं । उनके उभरने पर अशक्त समझे जाने वालों को भी सर्वसमर्थों की तरह पराक्रम प्रकट करते देखा गया है । समय की आवश्यकता ऐसी प्रतिभाओं को झकझोरने और नये सिरे से विनिर्मित, प्रशिक्षित,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परिपक्व करने में समूची सक्रियता समेट कर प्रयत्नरत रहती देखी जा सकती है ।

दैवी प्रेरणा किस प्रकार अवसर विशेष पर परिष्कृत प्रतिभाओं का समुच्चय एकत्र कर दिखाती है उसका एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है । सन् १९५८ में गायत्री तपोभूमि मथुरा के तत्त्वावधान में सहस्रकुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ था । उसमें प्राय: चार लाख धर्म-प्रेमी एकत्रित हुए थे । सभी को आगमी तीस वर्ष तक अपनाये रहने के लिए कुछ कार्यक्रम सौंपे गये थे । अग्नि की साक्षी में उन्होंने निर्धारित धर्म-प्रयोजनों की पूर्ति के लिए व्रत लिए और उन्हें पूरा करने के लिए सन् १९८८ तक, ३० वर्ष तक उन व्रत-संकल्पों की पूर्ति के लिए लगे रहे । वह पिछली पीढ़ी अब जराजीर्ण हो गयी । नयी पौध को उसका स्थान लेना है । अब से लेकर सन् २००० तक ऐसी ही प्रतिभाओं को खोजा और परिपक्व किया जा रहा है । उन्हें एक करोड़ की संख्या में तब तक प्रशिक्षित किया जा चुका होगा ।

युगसंधि पुरश्चरण की पूर्णाहुति में एक करोड़ साधकों को वैसे ही उद्देश्य से एकत्रित किया जायेगा जैसे कि सन् ५८ में तत्कालीन योजना कार्यान्वित करने के लिए किया गया था । सन् २००० की पूर्णाहुति में सम्मिलित होने वाले भावनाशीलों को फिर उसी तरह ऐसे दायित्व सौंपे जायेंगे, जो स्वयं तथा अपने उत्तराधिकारियों के माध्यम से आगामी शताब्दी में पूरे किये जाने हैं । सन् ५८ में लगा एक जोरदार धक्का अब तक मिशन की गाड़ी को धकेलता चला आया है। विश्वास किया गया है कि प्रस्तुत पूर्णाहुति में सम्मिलित हाने वाले, दूसरी बार पहले की अपेक्षा अधिक जोरदार धक्का लगायेंगे और उसका प्रभाव आगमी १०० वर्षों तक काम करता रहेगा । २१ वीं सदी पूरी होते-होते इतना कुछ बन पड़ेगा, जिसकी कल्पना एवं योजना सुनने वाले तक पुलकित एवं तरंगित हो चलें ।

कसौटी पर खरे उतरें

महाकाल का अनुग्रह किन पर उतरा ? किनका प्रसुप्त अन्त:करण समय की पुकार सुनते ही तनकर खड़ा हो गया ? युग देवता का वरदान किन पर बरसा ? ऐसे सौभाग्यशालियों को ढूँढना हो, तो उनकी जाँच परख का एक ही मापदंड हो सकता है कि किसने युग धर्म पहचाना और उसे अपनाने के लिए किस स्तर का त्याग-बलिदान, शौर्य-पराक्रम चरितार्थ करके दिखाया ? अर्द्धमृतकों से भरे जनसमुदाय में भी कभी-कभी कुछ ऐसे नररत्न निकल पड़ते हैं, जो सिर कट जाने पर भी मात्र रुण्ड के हाथों लगी तलवार का जौहर दिखाने से बाज नहीं आते ।

राणासांगा के अस्सी गहरे घाव लगे थे, फिर भी वह शरीर में रक्त की एक बूँद रहने तक संग्राम की कर्मभूमि में जूझते रहे थे । ऐसे लोग होते तो कम ही हैं; पर कोयले की खदानें हीरों से सर्वथा रिक्त नहीं होतीं । कीचड़ में कमल खिलता है । वीर प्रसविनी धरित्री सर्वथा बाँझ नहीं होती । उसका प्रजनन क्रम भी किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं चलता ही रहता है । ऐसे लोग आत्मबोध होते ही ऐसी स्थिति में पहुँच जाते हैं, कि महकाल का आमन्त्रण सुन सकें और उस हुँकरा की दिशा में शब्दभेदी वाण की तरह सन-सनाते हुए बढ़ चलें । ऐसा भूतकाल में भी होता रहा है और आज की आवश्यकता भी उन्हें कहीं न कहीं से पकड़ कर निर्णायक मोर्चे पर खड़ा होने के लिए बाधित करके रहेगी ।

युग-परिवर्तन के लिए जिस सबसे बड़े साधन की, माध्यम की आवश्यकता है, वह यही है कि मनस्वी प्रतिभाएँ क्षुद्रता की जकड़न को शिथिल करें और महानता के स्वर्ण-सिंहासन पर जा विराजें । जो दूसरों से कराया जाना अपेक्षित है, उसे स्वयं कर दिखाने के लिए साहस जुटायें और विशिष्टता की कसौटी पर अपने को खरा सिद्ध करके दिखायें ।

भगवान की अनुकम्पा यदि किसी पर सचमुच ही बरसे, तो उसका एक ही रूप दीख पड़ता है कि उसने भगवान का हाथ बँटाया । उसकी सृष्टि को अधिकाधिक सन्तुलित, समुन्नत, सुन्दर और सुसंस्कृत बनाने के लिए वह कर दिखाए, जिसकी कीमत पर न केवल स्रष्टा का अनुग्रह, वरन् सृष्टि में निवास करने वाले हर किसी का स्नेह, सौजन्य, सम्मान अनायास ही बरसते देखा जाता है ।

नेतृत्व अपने आप में गौरव की बात है । उसके लिए हर किसी को सहज लालसा रहती है; पर वैसा अवसर कदाचित् ही किन्हीं को मिलता है । यह अपने समय का सुयोग ही है, कि स्रष्टा की विधि-व्यवस्था को अपनी कृति बताने और जताने का श्रेय-सौभाग्य हस्तगत होने की सम्भावना बनी है । ऐसे अवसर को उपेक्षित-तिरस्कृत करने और गँवा बैठने वाले व्यक्ति में समझदारी का एक कण भी नहीं है, ऐसा मानना होगा । मात्र नासमझी ही नासमझी का दौर दौड़े, ऐसे कुयोग से बचा जा सके, तो ही ठीक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्व-वसुधा पर छाई हुई अनेकानेक समस्याओं के समाधान और संकटों के निराकरण का ठीक यही समय है । पौरुष और गौरव प्रकट करने के अवसर सदा नहीं आते । जो समय की गरिमा को पहचानते और ठीक समय पर ठीक कदम उठाने की समझारी का प्रदर्शन कर पाते हैं, उन्हीं को संतोष, उल्लास, आनंद और अभिनंदन का सुयोग मिलता है । जो चूक जाते हैं, उनके लिए पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रहता । खोई हुई अन्य वस्तुएँ तो किसी प्रकार फिर से पाई भी जा सकती हैं; पर सुयोग की वेला ऐसी होती है, जो गुम जाने पर फिर कभी किसी के हाथ नहीं लगती । ऐसी चूक का न परिमार्जन हो पाता है और न प्रायश्चित्त ही बन पड़ता है ।

युग संधि का वर्तमान समय ऐसा है, जैसा सृष्टि के अनादिकाल से लेकर अब तक कदाचित् ही आया और भविष्य में कदाचित् ही कभी आने की सम्भावना हो । इसका कारण यह है कि भूतकाल में समस्याएँ आती रही हैं और उनके समाधान भी निकलते रहे हैं; पर वे सभी सामयिक एवं क्षेत्रीय थे । उनसे सीमित लोग ही प्रभावित होते थे । पर अबकी बार ऐसी विपन्नताएँ सामने आई हैं, जो समूचे संसार का समस्त मानव समुदाय का भाग्य-परिवर्तन का प्रयोजन साथ लेकर आई हैं ।

यह विकास या विनाश की चिरस्थायी सम्भावनाएँ बन पड़ने का अभूतपूर्व समय है । यदि विनाश आया, तो ऐसा होगा कि इस सुन्दर धरित्री को धूलि बन कर अन्तरिक्ष में उड़ जाने की त्रासदी ही शेष रहेगी । साथ ही यह भी निश्चित है कि इस बार का परिष्कार अपना चिरस्थायी प्रभाव छोड़ेगा । बुद्धिमान समझे जाने वाले मनुष्य को यह पूरी तरह, भली प्रकार समझना होगा, कि यदि जीने और जीने देने की सम्भावना में अभिरुचि हो, तो वही अपनाना पड़ेगा, जिसे नये सिरे से सोचा और नये रूप में निर्धारित विनिर्मित किया जा रहा है ।

सुअवसर हाथ से जाने न पाये

यह एक सुनिश्चित सम्भावना इसलिए कही जा रही है कि दिव्य-द्रष्टा, मनीषीगण भी अनादिकाल से ऐसे परिवर्तन की बात कहते आए हैं । प्रस्तुत वेला जिसमें एक दशक ही नहीं, सदी ही नहीं, सहस्राब्दी बदलने जा रही है, सभी क्षेत्रों के चिन्तकों द्वारा विशिष्ट मानी गयी है । महाकवि सूरदास से लेकर चिकित्सक, भविष्य वक्ता नोस्ट्राडेमस तक तथा अतीन्द्रिय क्षमता सम्पन्न प्रो. हरार, जीन डीक्सन से लेकर महर्षि अरविन्द तक सभी यही सम्भावना व्यक्त करते रहे हैं कि यह युग परिवर्तन की वेला है, एक विशिष्ट अवसर है । इसे तो किसी भी स्थिति में नहीं चूकना चाहिए ।

भविष्य निर्माण की ऐसी महान सम्भावना में जिनसे कोई भागीदारी लेते न बन पड़े, जो ऐसी निर्णायक घड़ी में भी मूकदर्शक बने रहें, जिनसे तुच्छ को छोड़ते और महान को अपनाते न बन पड़े, उनके सम्बन्ध में यही कहा जायेगा कि उन्हें ऐसे समय में दुर्भाग्य ने आ घेरा, जब ऊँचा उठने आगे बढ़ने की पूरी-पूरी सम्भावना थी और जिसमें स्रष्टा की महती अनुकम्पा ही हस्तगत हो जाने की नियति सामने हाथ बाँधे खड़ी थी ।

इन दिनों किसे, कैसे, कहाँ, क्या करना चाहिए ? इन प्रश्नों का उत्तर एक उदाहरण से इस प्रकार समझा-समझाया जा सकता है कि सैनिकों के स्थान कार्य, आयुधों और मोर्चे परिस्थितियों की माँग के अनुसार बदलते रहते हैं; पर उनके लक्ष्य, दृष्टिकोण एवं कर्त्तव्य की स्थिति सदा एक-सी बनी रहती है । उनके लिए राष्ट्र की सुरक्षा सब कुछ रहती है और सुविधा, शरीर, परिवार भविष्य आदि सभी गौण हो जाते हैं । वे लक्ष्य पर अविचल रहते हैं और आवश्यकतानुसार प्राण से लेकर परिवार तक को दाँव पर लगा देते हैं ।

ठीक इसी प्रकार जिन्हें युग नेतृत्व के अनुरूप उच्चस्तरीय प्रतिभा से सम्पन्न होना है, उन्हें अन्य सब आकांक्षाओं और सुविधाओं की तुलना में नव सृजन के अनुरूप योग्यता-संवर्धन एवं कर्त्तव्यनिष्ठा को निरन्तर विकसित करते रहना चाहिए और व्यक्तित्व को इस स्तर का विनिर्मित करना चाहिए, कि कथनी और करनी में एकता रहने के कारण हर किसी पर अनुकरण की छाप पड़ सके । संसार को क्या बनना या बनाया जाना है, इसका प्रथम उदाहरण अपने आपको तदनुरूप विनिर्मित करते हुए प्रस्तुत करना चाहिए । साँचे के अनुरूप खिलौने या पुर्जे ढलते चले जाते हैं । हम जैसे भी कुछ बन सकेंगे, ठीक उसी के अनुरूप साथी या सहयोगी विनिर्मित करेंगे ।

समय की गुहार

त्रेता के अन्त में दो महान प्रयोजन सम्पन्न होने थे—एक अवांछनीयता-असुरता का उन्मूलन, दूसरा सतयुग की वापसी वाले उच्चस्तरीय वातावरण का राम-राज्य के रूप में स्थापन । उस महान प्रयोजन को, राम की आत्मसत्ता और लक्ष्मण आदि की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरुषार्थ-परायणता, मिल-जुलकर सम्पन्न करने में एकनिष्ठ भाव से संलग्न थी । दोनों प्रयोजनों का मध्यान्तर राम-रावण युद्ध के रूप में चल रहा था । इसी बीच एक भयानक दुर्घटना घटित हुई । लक्ष्मण को शक्तिबाण लगा, वे मरे तो नहीं पर मूर्छित होकर गिर पड़े ।

बात आत्मसत्ता और पुरुषार्थ परायणता के समन्वय से बनने वाली थी । लक्ष्मण की मूर्छा से उत्पन्न अर्धाङ्ग पक्षाघात जैसी स्थिति से तो उस अभीष्ट उद्देश्य में भारी व्यवधान उत्पन्न होने जा रहा था । राम सर्व-समर्थ होते हुए भी, लक्ष्मण के बिना अपने को असहाय अनुभव कर रहे थे । संकट ऐसा था, जिसे अनर्थ से कम नहीं माना जा रहा था । आवश्यकता यह गुहार मचा रही थी कि लक्ष्मण की मूर्छा किसी प्रकार दूर हो । इसके लिए संजीवनी बूटी का कहीं से भी, किसी प्रकार भी लाया जाना अनिवार्य हो गया था। उसे हिमालय जाकर लाये कौन ? प्रश्न बड़ा जटिल था ।

दिव्य वरदान की तरह हनुमान उभरे । उन्होंने असम्भव को सम्भव कर दिखाने का साहस किया । बीड़ा उठाया, चल पड़े और समय की माँग पूरी करने के लिए प्राण हथेली पर रख कर, जैसे भी बन पड़ा, संजीवनी बूटी लेकर समय पर वापस लौट आये । वह लक्ष्मण को दी गयी, मूर्छा जगी और संकट टल गया । दोनों भाई मिलकर वह करने में जुट पड़े, जिस के लिए उनका अवतरण हुआ था ।

यह बात हजारों वर्ष पुरानी है; पर उसका एक लघु उदाहरण इन दिनों भी सामने है । युगान्तरीय चेतना का दिव्य आलोक, दैवी आकांक्षा की पूर्ति में जुटा है । उस महान प्रयोजन की पूर्ति में प्रज्ञा पुत्रों की सामूहिक संगठित शक्ति निर्धारित क्रिया-कलापों में जुटी, जिसकी तत्परता को, लक्ष्मण की प्रतिभा कहा जा सकता है । दोनों की समन्वित शक्ति यदि ठीक तरह काम करने की स्थिति में रही होती, तो युग संधि के पिछले दो वर्षों में इतना कार्य सम्पन्न हो चुका होता, कि उसे देखते हुए इक्कीसवीं सदी के गंगावतरण में किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश न रह जाती ।

पर क्या किया जाय उस दुर्भाग्य का, जो लक्ष्मण रूपी परिजनों की संयुक्त शक्ति को—तत्परता को मूर्छना की स्थिति में ले पहुँचा । इसे उस मेघनाद रूपी विग्रह का माया जाल भी कह सकते हैं, जो आड़े समय में उदासीनता, उपेक्षा के रूप में आ खड़ा हुआ है । आपत्तिकाल की चुनौती सामने रहते हुए भी व्यामोह उभरे और जिस-तिस बहाने, समर्थों के कन्नी काटने जैसी विडम्बना चल पड़े तो उसे क्या कहा जाय ? इसे असुरता का आक्रमण भी कह सकते हैं और उज्ज्वल भविष्य के बीच आड़े आने वाला दुर्भाग्य भी । जो हो, लक्ष्मण की साँस तो चल रही है, पर इसका धनुष—बाण इन दिनों वह चमत्कार दिखा नहीं पा रहा है, जिसकी अपेक्षा युग—धर्म ने महाकाल ने की थी ।

वस्तुस्थिति ऐसी है नहीं, जिसके लिए किसी को भी, किसी कारण भी बहानेबाजी गढ़ कर अपनी भावनात्मक दुर्बलता पर पर्दा डालने की विडम्बना रचनी पड़े । मूर्छना इसी रूप में है । लक्ष्मण की विपन्नता, तपस्वी राम को कितनी खल रही है, इसे शब्दों में कैसे व्यक्त किया जाय ? समय को यह सब कितना खल रहा है, इसका आँकलन जीवन्तों की प्राण चेतना ही कर सकती है । लिप्साएँ और तृष्णाएँ तो केवल मूक दर्शक भर बने रहने का परामर्श दे सकती हैं ।

चुनौती जो सामने है

देखना इतना भर है कि इस आड़े समय में हनुमान की भूमिका कौन निभाये ? वह संजीवनी बूटी कहाँ से खोज लाये, जिससे प्रज्ञा पुत्रों की चेतना और तत्परता में नये सिरे से उभार आये । सबसे बड़ी आवश्यकता हनुमान स्तर की उस भाव चेतना की है, जो अभीष्ट पुरुषार्थ—की पूर्ति करके, बिगड़े काम को बनाने में संलग्न होकर, अपनी वरिष्ठता और यश-गाथा को चिरकाल तक चर्चा का विषय बनाये ।

एक बार अर्जुन पर भी ऐसा ही व्यामोह सवार हुआ था । वह कर्त्तव्य युद्ध में कटिबद्ध होने से कतरा रहा था । अपनी कायरता को छिपाने के लिए चित्र—विचित्र तर्क गढ़ रहा था । कृष्ण ने उसकी बहानेबाजी के मूल में छिपे हुए चोर को पकड़ा और कहा **"क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं, त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप"**—आन्तरिक दुर्बलता को छोड़कर, है समर्थ परंतप! कमर कस। साथ ही यह भी कहा **"अनार्यमजुष्टमस्वर्ग्यं अकीर्तिकरमर्जुन"** अर्थात् जो कुछ तू कर रहा है, और जैसा मानस बना रहा है, वह अनाड़ियों जैसा है, पतन के गर्त में धकेलने वाला, कलंक की कालिख पोतने वाला भी है । इस उद्‌बोधन ने अर्जुन की मूर्छना को झकझोर डाला और वह गाण्डीव उठाकर नये जोश से रथ पर जा बैठा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखना यह है कि वैसा परिवर्तन इन दिनों तथ्यतः जीवन में हो सकता है या नहीं ? हनुमान का पौरुष कहीं से हुँकार भरता है या नहीं ? समय की कसौटी, इन्हीं दिनों खरे-खोटे की परीक्षा करने के लिए हठपूर्वक आ खड़ी हुई है । इसे झुठलाया नहीं जा सकता । यहाँ यह नहीं कहा जा रहा है कि सभी निष्क्रिय-निर्जीव हो गए हैं । सक्रियता पर्याप्त मात्रा में अभी भी है । अभी तक उसी के बलबूते मिशन की सारी योजनाएँ कार्यान्वित होती चली आयी हैं । कार्य की व्यापकता को देखते हुए अब सक्रियता का अनुपात एवं स्तर बढ़ाने के लिए कहा जा रहा है । विशेषतः यह उद्‌बोधन हर उस व्यक्ति के लिए है, जो स्वयं को हनुमान व अर्जुन की भूमिका में लाना चाहे । जो पुराणों में नव जीवन संचार करने व नयों को ढूँढ़ निकालने की क्षमता विकसित कर सके ।

प्रज्ञा परिवार के दायित्व

यह समझा जाना चाहिए कि युग संधि के साथ अपने दायित्व जुड़े हुए हैं । इक्कीसवीं सदी रूपी गंगावतरण को उन भगीरथों की आवश्यकता है, जो सूखे पड़े विशाल क्षेत्र की प्यास बुझाने के लिए राजपाट का व्यामोह छोड़कर, तप साधना का मार्ग अपनाने का असाधारण साहस दिखा सकें ।

जिनका साहस उभरे, उन्हें करना इतना भर है कि अपनी पहुँच के प्रज्ञा पुत्रों को महाकाल की चुनौती से अवगत करायें और युग धर्म के परिपालन में वरिष्ठों को क्या करने के लिए बाधित होना पड़ता है, इसका स्वरूप समझाते हुए उन्हें नये सिरे से नई उमंगों का धनी बना सकने की स्थिति उत्पन्न करें । अपना परिवार इतना बड़ा, इतना समर्थ और इतना प्रबुद्ध है, कि उस परिवार के लोग ही नव सृजन में जुट सकें, तो असंख्य-अनेकों को अपने सहयोगी बनाने में निश्चित रूप से सफल हो सकते हैं । उतने भर से वह गति चक्र घूमने लगेगा, जो अपने देश के ९० करोड़ नागरिकों को ही नहीं, विशाल विश्व के बिखरे हुए ६०० करोड़ के जन-समुदाय को, नव युग के अनुरूप बनने, ढलने और बदलने के लिए उद्यत कर सकें । नया इन्सान बनाने, नया संसार बसाने की युग चेतना को समुचित सहयोग दे सकें । तब आज जो असम्भव प्रतीत होता है, वह कल सरल-सम्भव और व्यावहारिक प्रतीत होने लगेगा । एकता-समता को न केवल लोक मानस में जड़ जामाने योग्य सिद्ध करना, वरन् उसे व्यावहारिक कर दिखाना भी सम्भव हो सकता है ।

इन दिनों दैवी प्रवाह इसी दिशा में बह रहा है, उसके साथ जुड़कर रज-कण और तिनके पत्ते भी आकाश चूमने में समर्थ हो सकते हैं । तूफानों ने अपने-अपने समय में असाधारण उलट-पुलट प्रस्तुत किए हैं । नव सृजन की, औचित्य की प्राण प्रतिष्ठा के लिए आकुल-व्याकुल उच्चस्तरीय चेतना, अब तक के सभी महान परिवर्तनों की तुलना में अधिक शक्तिशाली होती जा रही है । अगले दिनों हम इन्हीं चर्म-चक्षुओं से ऐसी संरचना को सामने खड़ी देखेंगे, जिसमें सतयुगी प्रचलनों और परम्पराओं का ही बोलबाला होगा । क्या ऐसी महान संधिवेला में दूरदर्शियों को भागीदार नहीं होना चाहिए ? क्या ऐसे समय में भी कीट-पतंगों द्वारा अपनाई जाने वाली पेट-प्रजनन की ही रट लगाए रहना चाहिए ? क्या विडम्बना की, बहानेबाजी की आड़ लेकर इस सुयोग-सौभाग्य से, महान सम्भावनाओं से भरी-पूरी अपनी सत्ता को कूड़े-कचरे की तरह बिखर जाने देना चाहिए ?

इन दिनों जहाँ भी नव सृजन की उमंग उभरे, वहाँ अपने निर्वाह और परिवार की उचित व्यवस्था बनाए रहने के उपरान्त, जो ढेरों समय बच जाता है, उसे नव सृजन के क्रिया-कलापों में नियोजित करने के लिए, नया दृष्टिकोण अपनाना और नयी दिनचर्या बनाने के लिए दूरदर्शिता भरा सन्तुलन बिठाना चाहिए ।

न्यूनतम दो घण्टे का समय युग परिवर्तन के क्रिया-कलापों में लगाये रहना किसी के लिए भी कठिन नहीं पड़ना चाहिए । असंख्यों की परिस्थितियाँ ऐसी हैं, जो अधिक समय लगा सकने में सहज समर्थ हो सकते हैं । जिसके पास गुजारे के लिए पर्याप्त साधन पहले से ही मौजूद हैं, वे फिर इस बहुमूल्य अवसर पर बहुमूल्य आवश्यकताओं की उपेक्षा क्यों करें ? क्यों युग-धर्म की पुकार पर अँगूठा दिखायें, क्यों आलस्य प्रमाद जैसी अनावश्यक, उपहासास्पद विडम्बनाओं में उलझे रहकर ऐसे सुयोग-सुअवसर को गँवाए-जो कदाचित् हजारों-लाखों वर्ष बाद ही इस रूप में सामने आता है । बचे हुए इस समय को नव निर्माण में लोक चेतना के परिष्कार में उज्ज्वल भविष्य की संरचना में ही लगाया जाना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

साथियों की प्रतीक्षा में रुकें नहीं, "एकला चलो रे" मंत्र को अपनायें !

सैनिकों को अनुशासनबद्ध रहने और नियन्त्रण मानने के लिए विवश किया जाता है किन्तु सेनापति पर अनुशासन तो लागू होता है नियन्त्रण नहीं रहता । उसे परिस्थिति के अनुरूप अपने स्वतन्त्र विवेक के आधार पर आचरण करने की छूट रहती है । छोटे बच्चे क्लास में नियत समय पर पहुँचने के लिए बाध्य किए जाते हैं किन्तु परिपक्वता आने पर वे पत्राचार विद्यालय के माध्यम से घर बैठे भी ऊँची कक्षाओं की पढ़ाई पूरी करते रहते हैं। बच्चों को जेब खर्च के लिए गिने चुने पैसे मिलते हैं पर जब वे गृहपति बन जाते हैं तो फिर कमाई खर्चने एवं कहीं बाहर से कर्ज लेने के लिए भी अधिकृत हो जाते हैं । अनुभव हीन लोगों को समूह के साथ यात्रा करने के लिए कहा जाता है किन्तु साहसी विश्व यात्री अकेले ही विश्व यात्रा पर पैदल निकल पड़ते हैं, संघ बद्धता उपयुक्त और सुविधाजनक तो है पर अनिवार्य नहीं । परिपक्व मन: स्थिति में हर व्यक्ति अपनी नीति निर्धारित करने और अपने पैरों एकाकी चल पड़ने के लिए स्वतंत्रता माना जाता है। ऐसे ही लोगों को उद्‌बोधन करते हुए कविवर रबीन्द्र टैगोर कहा करते थे "एकला चलो रे"

प्रज्ञा अभियान की जागृत आत्माओं को युग सन्धि के वर्ष में परिपक्व स्तर का माना गया है और उन्हें एकाकी चल पड़ने एवं अपने बलबूते निर्धारित उत्तरदायित्व वहन करने के लिए कहा जा रहा है । गाँधी जी ने स्वतन्त्रता संग्राम आरम्भ में अनुशासनबद्ध क्रम से चलाया था । सभी जगह सत्याग्रहियों की छावनियाँ खुली थीं और सेनापति के निर्देशों को वे सभी अक्षरश: पालन करते थे । कुछ वर्ष बाद वह क्रम बदल गया । गाँधी जी ने दूसरे दौर में आन्दोलन को "व्यक्तिगत सत्याग्रह" के रूप में बदल दिया और हर वरिष्ठ सत्याग्राही को निर्देश दिया गया कि वह मूलभूत सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए अपनी स्थिति के अनुरूप स्वयं निर्णय करें और कदम बढ़ायें । लगभग वैसी ही स्थिति 'प्रज्ञा अभियान' की आयी है ।

विगत वसन्त पर्व से सभी प्रज्ञा परिजनों को एक नयी दिशा मिली है । युग सन्धि का तीसरा वर्ष आरम्भ होते ही जागृत आत्माओं को अदृश्य अन्तरिक्ष से एक नया उद्‌बोधन मिला है कि युग निमन्त्रण स्वीकार करने के लिये उन्हें एकाकी प्रयत्नरत होना पड़ेगा । रास्ता चलते-चलाते साथी सहयोगी मिल जायें तो ठीक अन्यथा उनकी प्रतीक्षा में एक पल भी विलम्ब नहीं करना है । एक कदम भी रुकना नहीं है ।

संगठन की महिमा महत्ता स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं । उसकी उपयोगिता आवश्यकता सदा से समझी जाती रही है । 'संघे शक्ति: कलौयुगे' का बीज मन्त्र भुलाया-झुठलाया नहीं जा सकता । ऋषि रक्त से घड़ा भरने पर सीता की उत्पत्ति होने और उनके माध्यम से व्यापक असुरता का संहार तथा रामराज्य की स्थापना का इतिहास भुलाया नहीं जा सकता । उस उपाख्यान में बहुत तथ्य हैं जिसमें देवताओं की संयुक्त शक्ति से दुर्गा का उद्‌भव हुआ और महादैत्यों का वध तथा देवताओं का परित्राण सम्भव हो सका । रीछ वानरों के संयुक्त प्रयास से सेतुबन्ध बँधना, ग्वाल बालों के सहयोग से गोवर्धन का उठना ऐसे तथ्य हैं जिनमें स्नेह-सहयोग के आधार पर कठिन कार्य सरल हो जाने की सचाई को कथा-गाथाओं के माध्यम से प्रकट किया गया है।

सृजन प्रयोजनों में आने वाली अड़चनें

बड़े कामों के लिए संयुक्त प्रयत्नों की महत्ता जानते हुए भी बात वहाँ आकर अड़ जाती है जब संगठन बनने में अड़चन प्रस्तुत हो रही हो । घटिया लोगों का जमघट यदि उल्टा वितण्डावाद और विग्रह खड़ा कर रहा हो तो क्या किया जाय ? असमंजस होने लगता है कि क्या कारण है कि जागृत आत्माएँ इस विषम वेला में युग धर्म निबाहने के लिए कुछ करने की इच्छुक होते हुए भी कई कारणों से कुछ कर नहीं पातीं । जन्म-जन्मान्तरों के कुसंस्कार पेट प्रजनन की संकीर्ण स्वार्थपरता से आगे बढ़ने की बात सोचते ही इतने झूठे सच्चे बहाने गढ़ लेते हैं जिन्हें देखकर उमगी हुई सद्‌भावना भी सहमकर डरती-काँपती किसी कोने में जा खड़ी होती है ।

इसके बाद स्वजन सम्बन्धियों की बारी आती है। उन्हें यह डर सताता है कि सेवा मार्ग में रुचि लेने पर अगले दिनों उस व्यक्ति के घर छोड़कर बाबा जी हो जाने का खतरा है । इस आशंका से वे फालतू समय में भी कुछ सेवा कार्य करते देखकर बावेला मचाते और सिर पर आसमान उठाते हैं । उनका विरोध विग्रह देखते बनता है । लगता है कुछ घर परिवार को जला देने जैसा कुकृत्य किया जा रहा हो । समयक्षेप तो जरा-सा ही होता है पर वे जानते हैं कि इतने भर से घर परिवार पर अनेकों तरह की विपत्तियों के बादल टूटे या टूटने वाले हैं । इन अपराधों से भी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हिम्मत टूटती है और आत्मा की कचोट तथा समय की पुकार को उपेक्षित करने जैसी मन:स्थिति बनती जाती है ।

मन और परिवार सम्बन्धी अड़चनों के अलावा मित्र, सम्बन्धी परामर्शदाता भी अपने दृष्टिकोण को ही लादते हैं और उनकी सलाह भी इस झंझट में न पड़ने, कमाने, उड़ाने, जोड़ने तक सीमित रहने की होती है । चक्रव्यूह के घेरों को कोई तोड़ भी ले तो उस नये परिवार में प्रवेश का द्वार खुलता है जिसे सेवा संगठन कहा जाता है । गायत्री परिवार, युगनिर्माण परिवार के नाम से प्राय: हर जगह छोटे-बड़े संगठन बने हुए हैं । अब तो प्रज्ञा संस्थान भी हजारों की संख्या में बन गये हैं । इन सभी में अनेकों व्यक्ति येन-केन प्रकारेण जुड़े रहते हैं । वे जब इकट्ठा होते हैं तो अपने अभ्यस्त दृष्टिकोण, स्वभाव एवं अभ्यास का ही परियच देते हैं।

मिशन के मूलभूत उद्देश्यों का प्राय: आधा अधूरा परिचय होने के कारण कुछ ऐसा तो सोच नहीं पाते जिससे युग परिवर्तन के प्रज्ञा परिजनों के कन्धों पर आये उत्तरदायित्वों का निर्वाह सम्भव हो सके । वे अपनी निजी रुचि और सनक को संगठन पर लादते हैं, पग-पग पर अहङ्कार का प्रदर्शन करते हैं । ऐसे में नवागन्तुकों के दिल टूट जाते हैं । वे सोचते हैं कि जिस समुदाय को देव परिवार मानकर उसमें प्रवेश करने—प्रकाश पाने की बात सोची गई थी वहाँ भी प्रकारान्तर से वही जञ्जाल है जो अपने मन, घर और परिवार में हतोत्साहित करने वाला असमञ्जस उत्पन्न कर रहा था । वे सोचते हैं इससे तो बिना संगठन घर बैठे सेवा करना अच्छा है । वह अपेक्षाकृत अच्छे लोगों के वातावरण में उत्कृष्ट कार्यों में प्रवेश पाने की हिम्मत लेकर आता है पर यदि वैसा कुछ न मिले तो अभ्यस्त ढर्रे में लुढ़कना ही ठीक समझकर वापस लौट जाता है ।

यदि अनुमान गलत नहीं है तो यह सोचा जा सकता है कि मिशन के उच्चस्तरीय उद्देश्यों से अत्यधिक प्रभावित लोगों में से कितनों को ही कुछ सक्रियता अपनाने का मन होता है पर वे उपरोक्त असमञ्जसों के कारण देर तक अपना उत्साह स्थिर नहीं रख पाते, उदास निराश होते अन्तत: ठण्डे ही पड़ जाते हैं । वातावरण की अनुपयुक्तता सम्बन्धी कठिनाई के साथ-साथ उनकी निजी अपरिपक्वता भी एक बहुत बड़ा कारण है, अन्यथा सिद्धान्त पर अड़ जाने वाला हर स्थिति में अपने स्थान पर खड़ा रहता है । समुद्रों के मध्य उच्छृंखल लहरों से निरन्तर टकराते रहने पर भी एकाकी खड़े हुए प्रकाश स्तम्भ अपना संकेत फेंकते रहते हैं तो कोई कारण नहीं कि रोगियों के बीच रह कर कोई डाक्टर अपना मनोबल और स्वास्थ्य अक्षुण्ण बनाये न रह सके ।

एकाकी चल पड़ने का साहस उभरे

जो भी हो समय की विषमता ने सृजन चेतना उभारने और हर स्तर के व्यक्ति को कुछ न कुछ काम करने के लिए आमन्त्रण भेजा है । अवरोधों के ठोस कारण हो सकते हैं पर दूसरी ओर समय की माँग भी तो चुनौती बनकर अड़ी है और 'हाँ' या 'न' कहलवा करके ही टलने का निश्चय करके पालथी मार कर जम गई है । जीवन की महत्ता और उसके श्रेष्ठतम सदुपयोग के शाश्वत प्रश्न को कुछ समय के लिए टाला भी जा सकता है । किन्तु उस पठानी तकाजे को क्या कहा जाय जो कहता है कि जागृत आत्माओं को युग धर्म की चुनौती स्वीकार करने व एकाकी चल पड़ने में अब या कभी नहीं में से एक निर्णय की घोषणा इन्हीं घड़ियों में करनी होगी ।

युग सन्धि की ऐतिहासिक परिवर्तन वेला का मुख्य पर्व इन्हीं घड़ियों में आ पड़ा है । उस मुहूर्त को इसलिए नहीं टाला जा सकता कि अमुक को अमुक प्रकार की कठिनाई इन दिनों है । अमुक को सब काम से निश्चिन्त होने तक प्रतीक्षा करनी है । कोई क्या सोचता है, क्या चाहता है, इसकी परवाह कालचक्र को कहाँ होती है । वह बादल की तरह कड़कता, बिजली की तरह चमकता और घटा की तरह घनघोर बरसकर जल जङ्गल एक करके चला जाता है । परिवर्तन प्रक्रिया को ऐसी ही सुनियोजित किन्तु मदमस्त हाथी की तरह उद्दण्डता ही समझा जा सकता है । इन दिनों जागृत-आत्माओं की पीठ पर उद्बोधनों पर उद्बोधनों के चाबुक इसीलिये जमाये जा रहे हैं कि अवसर को टालने के लिए वे वास्तविक, अवास्तविक बहानों की आड़ न लें । समय किसी की प्रतीक्षा करने वाला नहीं है अवसर चूकने वाले यों सदा ही पछताते हैं, पर यह अलभ्य अवसर ऐसा है जिससे मात्र जागृतात्माओं को ही पछताना पड़ेगा । अनगढ़, प्रसुप्त, अबोध, असमर्थ, अपङ्ग, असहाय तो करुणा के पात्र होने के कारण क्षम्य भी समझे जाते हैं, किन्तु समर्थ और प्रखर व्यक्ति जब आपत्ति काल आने पर भी मुँह छिपाते दुम दबाते हैं तो स्थिति दूसरी ही होती है । युग धर्म के निर्वाह में हर किसी को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाधित नहीं किया जा सकता किन्तु जागृत आत्माएँ तो एक प्रकार से अनिवार्य बाधित हैं ।

प्रज्ञा अभियान ने इसीलिए हर परिजन को कहा है कि वह इस विषम वेला में किसी भी कारण हाथ पर हाथ रखकर न बैठें, जहाँ संगठन सही है वहाँ उनका अङ्ग बनकर रहने में विशेष सुविधा तथा सफलता रहेगी पर जहाँ इस सन्दर्भ में कठिनाइयाँ हैं वहाँ पर जागृतात्मा को अपने पैरों खड़ा होना चाहिए । भीतर के महान को जगाना चाहिए और अपने विवेक के सहारे अपने पैरों आप चलने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए ।

ब्राह्मण—एक समग्र संस्था

प्रचीन काल में ब्राह्मण अपने आप में एक पूर्ण संस्था था । उसका अपना व्यक्तित्व, अन्तराल वर्चस् एवं अनुभव इतना समग्र होता था कि उसे संस्था के साथ सम्बद्ध रहने का या नियन्त्रण की अनिवार्यता में बाँधने की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती थी । लोग ब्राह्मण के हाथों निःसंकोच दान-दक्षिणा सौंपते थे। उसकी प्रामाणिकता इतनी असंदिग्ध, परखी हुई प्रखर होती थी कि उसमें अनैतिकता बरती जाने की आशंका तो दूर, कोई कल्पना तक नहीं करता था ।

फलतः ब्राह्मण के हाथ में पहुँचा धन एक अधिकृत बैंक सार्वजनिक ट्रस्ट के हाथ में पहुँचा हुआ माना जाता था । उसका ठीक वैसा ही उपयोग भी होता था । लोक मंगल के लिए समर्पित अपना निजी निर्वाह अपरिग्रह के आधार पर निर्धारित होने के कारण कहीं किसी को असमञ्जस की आवश्यकता भी नहीं पड़ती थी । ब्राह्मण को भुसुर, पृथ्वी के देवता कहा जाता था । वे अपने आप में एक सार्वजनिक संस्था थे । गान्धी जी ने इसी स्तर के लोगों को वरिष्ठ सत्याग्रही कहा था और व्यक्तिगत सत्याग्रह के सम्बन्ध में सभी सामयिक निर्णय अपनी विवेक बुद्धि से करने की छूट दी थी । बुद्ध के भिक्षु परिव्राजक साधना काल में ''संघारामों'' में नालन्दा तथा तक्षशिला जैसे प्रज्ञा विहारों में पढ़ते थे पर जब उन्हें कार्यक्षेत्रों में भेजा जाता था तो परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने वाली रीति-नीति अपनाने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाता था । इसे न तो स्वेच्छाचार कहा गया, न अनुशासनहीनता जैसा कोई दुष्परिणाम सामने आया । विग्रह तो मनुष्य की अपनी विकृतियाँ ही उत्पन्न करती हैं । उनके रहते बन्दीगृह के कठोर प्रतिबन्धों में भी भ्रष्टाचार पनपता रहता है । जहाँ शालीनता है वहाँ वनवासी भी निर्बन्ध रहकर कठोर मर्यादाओं को निबाहते हैं ।

प्रज्ञा अभियान के तीसरे वर्ष में वरिष्ठ जागृत आत्माओं को कहा गया है कि वे अपने आपको एक छोटा प्रज्ञा संस्थान मानें और यदि स्थानीय संगठन नहीं बन सका है अथवा उसमें खींच-तान चल रही है तो उस गुत्थी के सुलझने तक की प्रतीक्षा न करके महाकाल के आमन्त्रण को एकाकी ही स्वीकार करें और अपनी छोटी सामर्थ्य के अनुरूप बिना एक पल गँवाये उन रचनात्मक कार्यों में तुरन्त जुट पड़ें जिनसे समय की माँग पूरी होती है।

युगान्तरीय चेतना घर-घर पहुँचे

इन दिनों युगान्तरीय चेतना को घर-घर तक पहुँचाने का कार्य सर्वप्रधान, सर्वप्रथम एवं सर्वोपरि है । इसके लिए स्वाध्याय और सत्संग के दो उपाय अपनाने के लिए प्रत्येक परिजन को अपनी-अपनी स्थिति के अनुरूप करने के लिए आग्रह पूर्वक कहा ही नहीं, दबाया भी जा रहा है । पंच सूत्री योजना इसी प्रयोजन के लिये बनी है । उसमें स्वाध्याय और सत्संग की ही प्रधानता है । ज्ञानरथ, झोला पुस्तकालय, दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन, यह स्वाध्याय प्रक्रिया है । स्लाइड प्रोजेक्टर, जन्मदिवसोत्सव, टेप रिकार्डर इन्हें सत्संग उपक्रम कहा जा सकता है । पंच सूत्री योजना की यही दो प्रमुख दिशा धारायें हैं । उनका शुभारम्भ, श्रीगणेश करने के लिए एक केन्द्र तो होना ही चाहिए था । प्रज्ञा संस्थानों का निर्माण इसी उद्देश्य के लिए हुआ भी था ताकि देवालयों का परम्परागत श्रद्धा प्रवाह भी जीवन्त रहे और उनकी आत्मा 'धर्म धारण को प्रखर बनाने वाली जनजागृति' भी अविच्छिन्न रूप से जुड़ी रहे । जो प्रज्ञा संस्थान इस मूलभूत उद्देश्य को समझाते हैं, जन-सम्पर्क के लिए आवश्यक स्वाध्याय और सत्संग की रीति-नीति को व्यापक बनाते और जन-मानस को परिष्कृत करने के प्रयास में भागीदार हैं, उन्हीं को प्रज्ञा अभियान का अंग माना गया है । जहाँ ऐसा नहीं है वहाँ यह सोचना पड़ रहा है कि वे दुर्भाग्य की तरह कंधों पर लद गये हैं और इनकी सड़न अगले ही दिनों अन्तःकलह से लेकर श्रद्धाशोषण का दुहरा अनाचार उत्पन्न करेगी । प्रज्ञा संस्थानों का यह रुझान दुर्भाग्यपूर्ण है । इस शिथिलता, निष्क्रियता, नासमझी आदि कुछ भी नाम दिया जा सकता है, पर यह बड़े कष्ट की बात है कि जिस प्रयोजन के लिए जिस संकल्प के साथ इनका निर्माण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ था, उसकी ओर ध्यान ही नहीं जा रहा है । जिन्होंने साधारण मन्दिर और प्रज्ञा संस्थान के अंतर को नहीं समझा और उतावली में एक नया मन्दिर बना डाला उनकी भावुक उतावली अब कितनी कष्ट कारक भारभूत सिद्ध हो रही है, इसकी कभी कल्पना भी नहीं की गयी थी ।

वस्तुस्थिति परखें, गुरु मन्त्र अपनायें

वस्तुस्थिति सामने है । एक प्रयोग लड़खड़ाने लगने पर दूसरा हाथ में लिया ही न जाय, ऐसा नहीं हो सकता । इस वर्ष पूरा जोर देकर यह कहा जा रहा है कि लक्ष्य लोक मानस का परिष्कार है, देवालयों की संख्या वृद्धि नहीं । जन-जागरण हेतु जन-सम्पर्क आवश्यक है । इसी कारण व्यक्तिगत रूप से प्रज्ञा अभियान की कार्य पद्धति अपनाने के लिए वरिष्ठ प्रज्ञा परिजनों को आमन्त्रित उत्तेजित किया जा रहा है । वे बिना एक क्षण गँवाये संगठन संस्थान की ओर मुँह न ताककर एकाकी संकल्प और साहस के बलबूते युगान्तरीय चेतना को अग्रगामी बनाने हेतु बढ़ चलें—'एकला चलो रे' का गुरु मन्त्र नये सिरे से अपना कर एकलव्य की तरह पंचसूत्री योजना की क्रियान्वयन साधना में वे एकाकी ही लग जायें ।

प्रत्येक परिजन से यही कहा गया है कि वह इस विषम वेला में हाथ पर हाथ धर कर न बैठें । जहाँ संगठन सही हैं वहाँ इसका अंग बनकर, पर जहाँ इस कार्य में कठिनाइयाँ हैं, वहाँ हर जागृतात्मा को अपने पैरों खड़ा हो जाना चाहिए । अपने विवेक के सहारे अपने पैरों आप चलने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए । सूर्य अकेला घूमता है, चन्द्रमा अकेला चलता है, पृथ्वी अकेली दौड़ती है, जन्मते समय अकेले आते और मरण के समय अकेले जाते हैं तो कोई कारण नहीं कि युगान्तरीय चेतना में भागीदार बनने के लिए अपनी आत्मा और परमात्मा के सहचरत्व में ऐसे कदम एकाकी न उठा सकें जिससे आत्मकल्याण और लोक कल्याण के दोनों ही महान प्रयोजन पूरे होते हों ।

सृजन प्रयासों को विश्वव्यापी बनाने का आरम्भिक उपक्रम

सूर्योदय होता तो पूर्व से ही है, पर क्रमशः उसका आलोक बढ़ता और समस्त धरातल को आच्छादित करता चला जाता है । नव-सृजन का सूत्रपात भारत से हुआ है । प्राचीन काल में भी अवतारों का क्रिया-कलाप इसी भूमि से आरम्भ होता रहा है किन्तु उस शुभारम्भ का विस्तार भी निश्चित रूप से हुआ है और उसने प्रकारान्तर से धरातल पर बसी हुई समस्त मानव जाति को प्रभावित किया है । भगवान बुद्ध का क्रिया-कलाप तो उपलब्ध इतिहास द्वारा भी प्रमाणित है । वे भारत में जन्मे तो किन्तु उनके निर्माणों ने एशिया भूखण्ड को विशेष रूप से और धरती के अन्य महाद्वीपों को सामन्य रीति से परोक्ष रूप में प्रभावित परिवर्तित किया । इस बार भी यही होने जा रहा है । आलोक का क्रमशः विश्वव्यापी होना निश्चित है । उससे मानव जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित होगा ।

इसे संयोग ही कहना चाहिए कि शुभारम्भ का प्रथम पत्थर भारत में बसे हिन्दू समाज के क्षेत्र में रखा गया । आखिर वह कहीं तो रखा ही जाना था । विशालकाय योजनाओं का भी भूमि पूजन थोड़े स्थान में ही होता है । संयोगवश सूत्र संचालक हिन्दू समाज में उत्पन्न हुआ । उसके संस्कार एवं सम्पर्क के अनुरूप जो भी क्षेत्र सहज उपलब्ध था उसी की परिस्थितियों के अनुरूप श्रीगणेश चल पड़ा । लगता है भगवान की इच्छा भी कुछ ऐसी ही रही होगी । उसकी आदत भी सूर्य के पूर्व में उगने की तरह यही प्रतीत होता है कि युग परिवर्तनों के श्रीगणेश का श्रेय उनकी परम प्रिय क्रिड़ा स्थली देव-भूमि भारती को मिलता रहे । जो हो किसी को यह अनुमान नहीं लगाना चाहिए कि यह किसी क्षेत्र विशेष की समस्याओं से सम्बन्धित कोई साम्प्रदायिक या सामयिक आन्दोलन है । प्रज्ञा अभियान का कार्य क्षेत्र विश्व व्यापी है और घोंसले का पक्षी जैसे-जैसे अपने पंखों में शक्ति अर्जित करेगा, वैसे-वैसे घोंसले वाले पेड़ से आगे बढ़कर उन्मुक्त आकाश में विचर करने लगेगा और सीमा बन्धनों की परवाह न करते हुए समस्त अन्तरिक्ष के साथ घनिष्ठता स्थापित करेगा ।

ब्रह्माण्ड विज्ञानी सौर मण्डल के ग्रहों तक अन्तरिक्ष यान भेजने की योजनायें क्रमशः कार्यान्वित करते चले जा रहे हैं । पृथ्वी के इर्दगिर्द चक्कर काटने वाले राकेटों में सफलता मिलने के बाद अब सौर परिवार के अन्य सदस्यों की जेब टटोलने की तैयारी है । इसके लिए निश्चय किया गया है कि एक मध्यवर्ती अन्तरिक्ष प्लेटफार्म बनाया जाय । वहाँ से अन्य ग्रहों की उड़ानें भरी जायें और आवश्यक ईंधन वहीं से प्राप्त किया जाता रहे । धरती से एक अन्तरिक्ष शटल चला करे, वह उस प्लेट फार्म पर आवश्यक सामग्री पहुँचाने, वापस लाने का कार्य किया करे । यदि वस्तुतः सौर मण्डल के सदस्यों से सम्पर्क और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आदान-प्रदान करना है तो इससे कम में काम चलना भी नहीं है । अन्तरिक्ष में एक सुविधा सम्पन्न प्लेट फार्म रखना ही होगा और वहाँ तक उपयुक्त सामग्री भेजने वापस लाने वाली शटल का प्रबन्ध करना ही होगा । बड़े कामों के लिए तदनुरूप बड़े साधन जुटाने और बड़े साहस करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग भी तो नहीं है ।

उपरोक्त उदाहरण इसलिए दिया गया है कि धरातल पर बसे हुए समस्त देश-देशान्तरों तक युगान्तरीय चेतना का विस्तार होना ही है तो उसकी परिस्थितियों के अनुरूप कोई सुनिश्चित योजना भी बनानी ही होगी । इस सन्दर्भ में सोचा यह गया है कि संसार के नब्बे देशों में न्यूनाधिक संख्या में बसे हुए भारतीयों को मध्यान्तरीय प्लेटफार्म की तरह प्रयुक्त किया जाय । वहाँ पैर टिकने की जगह बनने पर उन क्षेत्रों में आलोक वितरण का कार्य पूरे उत्साह के साथ आरम्भ कर दिया जाय । भारत से प्रवासी भारतीयों तक अन्तरिक्ष शटल चले और आवश्यक सामग्री पहुँचाने तथा अभीष्ट जानकारी प्राप्त करने का सिलसिला उस माध्यम से चल पड़े ।

प्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक चेतना प्रखर बनायी जाय

प्रवासी भारतीयों को मातृ संस्कृति के साथ जुड़े रहने का ही नहीं, घनिष्ठता स्थापित किए रहने का भी अवसर मिलना चाहिए । संसार के विभिन्न भागों में प्रायः तीन करोड़ भारत मूल के लोग बसे हैं । उनकी नागरिकता एवं वफादारी जहाँ बसें, वहीं रहनी चाहिए किन्तु संस्कृति के अविच्छिन्न सूत्रों को टूटने नहीं दिया जाना चाहिए । मक्का, यरुसलम, कपिलवस्तु जब अन्तर्राष्ट्रीय धर्म संस्थान बने रह सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि भारत में अपनी देव संस्कृति के पुत्र उसके साथ घनिष्ठता न रखें । इन दिनों इस सन्दर्भ में हमारी उपेक्षा खेदजनक है । भारत से मात्र भिखारी ही प्रवासी भारतीयों में जाते हैं और आश्रम मन्दिर का बहाना गढ़कर उन भावनाशीलों को लूटते खसोटते रहते हैं, जबकि ईसाई मिशन अपने देशों से सहायता एकत्रित कर उसका उपयोग अपनी संस्कृति से अपरिचित क्षेत्रों तक में पहुँचाने में करते हैं । इतना हो तो प्रवासी भारतीयों की खोजखबर तो हमें लेनी ही चाहिए और उनकी क्रमशः घटती जा रही सांस्कृतिक चेतना को प्रखर बनाये रहने के लिए कुछ कारगर प्रयास तो करना ही चाहिए ।

प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत यह प्रयास समय रहते परिपूर्ण उत्साह के साहस योजनाबद्ध रूप से आरम्भ किया गया है और उसकी प्रयत्नशीलता का परिणाम बहुत ही सन्तोषजनक मात्रा में सामने आया है । इस दिशा में उपलब्ध हुई प्रगति को देखते हुए यह आशा बँधती है कि जिन देशों में वे लोग बसे हुए हैं उनमें देव संस्कृति के चेतना केन्द्र खड़े किये जा सकेंगे । वे पूजा अर्चा तक सीमित न रह कर ईसाई चर्चों की तरह अपने-अपने क्षेत्रों में देव संस्कृति का आलोक वितरण करने के लिए कटिबद्ध होंगे ।

प्रज्ञा अभियान की आरम्भिक कार्य पद्धति में अन्धकार युग की विकृतियों से तमसाछन्न लोकमानस को नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति के लिए सहमत-अग्रसर करना है। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण की कार्य पद्धति ऐसी है जिसे परिशोधन और परिष्कार की आरम्भिक आवश्यकताएँ पूर्ण कर सकने जितनी ही कहा जा सकता है । पूर्वार्ध का काम सिमटते ही उत्तरार्द्ध का काम चल पड़ेगा । लंका विजय के उपरान्त रामराज्य स्थापना का और भी बड़ा काम हाथ में लिया गया था । परशुराम का कुल्हाड़ा जितने समय जितने पराक्रम के साथ चला उससे कहीं अधिक लम्बी अवधि एवं तत्परता के साथ वृक्षारोपण का सृजनात्मक परिश्रम किया गया । वस्तुतः अधर्म का नाश उतना कठिन नहीं है जितना उसके उपरान्त का धर्म संस्थापन । युग सृजन का पूर्वार्द्ध अवांछनीयता उन्मूलन का है और उत्तरार्द्ध सत्प्रवृत्ति संवर्धन का ।

अपना लक्ष्य वसुधैव कुटुम्बकम्

लक्ष्य वसुधैव कुटुम्बकम् और आत्मवत् सर्वभूतेषु है । इसकी पूर्ति किसी क्षेत्र या वर्ग के लोगों तक सीमित रहकर नहीं की जा सकती । समस्त मनुष्य समुदाय को एक सूत्र में बाँधना और एक दिशा में चलना होगा । अन्यथा एक जगह फोड़ा उठ पड़ने पर सारी शरीर व्यवस्था ही गड़बड़ाती रहेगी । पिछड़े वर्ग प्रगतिशीलों को भी चैन से न बैठने देंगे । थोड़े से अपराधी समूचे नगर की शान्ति भंग कर के रख देते हैं । विज्ञान, वाहन, संचार और अर्थ तन्त्र का विश्व प्रभाव अब ऐसा हो गया है कि क्षेत्रीय या वर्गीय समस्याओं का समाधान करने से काम नहीं चलेगा । चेचक की फुंसियों पर कहाँ तक मरहम लगेगी । उसके लिए रक्त-शोधन ही स्थायी उपचार है । मच्छर मक्खियों को मारते फिरने की अपेक्षा गन्दगी हटाकर उस विषाक्तता की जड़ काटना ही उपयुक्त

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । नव-निर्माण का कार्य वर्तमान परिस्थितियों में तभी सफल हो सकता है जब उसकी परिधि विश्वव्यापी हो और समूची मनुष्य जाति को एक अंचल में समेटा, एक रस्सी से बाँधा जाय ।

नई दुनिया जब बसेगी तो उसका आधार एकात्मा होगा । बिखराव के सारे विग्रह समाप्त करने होंगे । अनेक देश अपने-अपने स्वार्थों के लिए टकराते न रहें इसके लिए समस्त देशों को छोटे-छोटे जिले मानकर एक ही समूचा विश्व राष्ट्र बनेगा । परस्पर के झगड़े एक ही विश्व न्यायालय निपटायेगा और एक ही विश्व सेना विद्रोहों को दबोचेगी । प्रबन्ध के लिए वे क्षेत्र-देश स्थानीय व्यवस्था के लिए थोड़ी-सी पुलिस भर रखेंगे । बार-बार विश्व युद्ध होने और आये दिन देशों के मध्य ठण्डे गरम संघर्ष खड़े रहने का एक मात्र उपाय विश्व राष्ट्र ही है । उसे कल नहीं तो परसों बनाना ही होगा । अन्यथा टकरावों से जर्जर होते-होते यह संसार बेमौत मरेगा ।

एक विश्व भाषा भी अनिवार्य है ताकि भाषा भेद के कारण ज्ञान विस्तार में पारस्परिक आदान-प्रदान में जो भारी बाधा खड़ी रहती है उसका अन्त हो सके। भारत में ही दस प्रधान भाषाएँ हैं । इनके भाषा-भाषी जब मिलते हैं तो गूँगे-बहरे की तरह अपने आपको अपंग असमर्थ अनुभव करते हैं । प्रेस साहित्य अलग—अलग रहने से इतनी असुविधा होती है कि विचारों का आदान-प्रदान और ज्ञान का विस्तार अति कठिन और अति जटिल होकर रह जाता है । विश्व-परिवार बनाना है तो विश्व भाषा भी बनेगी ही । तब ज्ञान और आदान-प्रदान की इतनी सुविधा, इतनी सरलता रहेगी कि अत्यन्त सस्ते में ज्ञान सम्पदा और सहयोग व्यवस्था गगनचुम्बी बनने लगे ।

मानव संस्कृति एक होकर रहेगी । विश्व धर्म, विश्व आचार, विश्व प्रचलन का स्वरूप एक होकर रहेगा तो विचार भिन्नता के कारण जो मनो मालिन्य पनपते, विग्रह खड़े होते हैं, उनकी कोई गुँजाइश ही न रहेगी विश्व दर्शन एक हो तो चिन्तन में व्यतिरेक विग्रह खड़े क्यों हों ? झगड़ने में लगने वाली शक्ति संयुक्त प्रयासों के एक दिशा में चलकर सर्वतोमुखी प्रगति के बढ़े-चढ़े साधन क्यों न जुटायें । नोट किया जाय कि विश्व राष्ट्र, विश्व भाषा और विश्व धर्म अगले दिनों बन कर ही रहेंगे । समस्त विग्रहों का उन्मूलन इसी आधार पर होगा ।

विश्व-व्यवस्था ऐसी बने

इस सन्दर्भ में चौथा चरण है विश्व व्यवस्था । समस्त सम्पदा विश्व राष्ट्र की रहे और उसके उपार्जन वितरण में सहकारी पद्धति काम करे तो न कोई निर्धन रहेगा, न धनवान । अर्थ विषमता उत्पन्न करने वाली वर्तमान पद्धति को उलटकर योग्यतानुसार श्रम और आवश्यकतानुसार उपभोग का क्रम बने तो इन दिनों जिन अपराधी प्रवृत्तियों ने आकाश को सिर पर उठा रखा है उनका कहीं अता-पता भी न रहेगा । स्वास्थ्य, शिक्षा, साहित्य, कला आदि के क्षेत्रों में विश्व मानव के हित को ध्यान में रख कर बनाई गई व्यवस्था में उन तत्वों का दर्शन दुर्लभ हो गया जो आज नशेबाजी, बेकारी, उद्धत ठाठ-बाट, व्यसन, व्यभिचार आदि अनेकों उन अनाचारों का अन्त हो जायेगा जिनके कारण आज जीना दुर्लभ हो रहा है । न्याय, कानून एक जैसे रहने से स्त्री, पुरुषों में से किसी को भी परावलम्बी होकर न रहना पड़ेगा । बच्चे अभिभावकों की स्थिति के कारण हेय अथवा वरिष्ठ स्तर में गुजारा न करेंगे वरन् विश्व के भावी निर्माताओं जैसी समान सुविधाएँ समूचे समाज से उपलब्ध करेंगे अगली विश्व व्यवस्था इसी आधार पर बननी है ।

शासकों के हाथ से अगले दिनों असली शक्ति जनता के हाथ में चली जायेगी । वही अपने भाग्य का निर्णय आप करेगी । आज तो उसका उपयोग चतुर लोग उल्टी पट्टी पढ़ाकर अथवा दबाव दमन से अपने पक्ष में कर लेते हैं । अगले दिनों वैसा न रहेगा । उसके लिए समस्त विश्व के जन-समुदाय के साथ सीधा सम्बन्ध बनाना पड़ेगा । इन पंक्तियों में उसी की चर्चा हो रही है कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्या किया जाय ? ऊपर की पंक्तियों में इसी पर प्रकाश डाला गया है और कहा गया है कि प्रज्ञा अभियान अगले दिनों विश्व सम्पर्क के क्षेत्र में अगले कदम उठाने के लिए प्रवासी भारतीयों के साथ सांस्कृतिक घनिष्ठता स्थापित करेगा। इसके दो लाभ हैं—एक यह कि देव संस्कृति के अनुयायियों में आस्था एवं घनिष्ठता बढ़ने का आध्यात्मिक लाभ तो स्पष्ट ही है साथ ही विश्व एकता की दिशा में उसमे आरम्भिक सहायता भी कम नहीं मिलेगी पैर टिकने की जगह मिल जाना भी अपरिचित क्षेत्रों में काम करने, सम्पर्क साधने की दृष्टि से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । यह आरम्भिक अवलम्बन है । कुछ समय उपरान्त इसकी आवश्कता न रहेगी । प्रथम पंचवर्षीय योजना पूरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होते-होते वह स्थिति आ जायेगी कि बिना किसी मध्यवर्ती के संसार के विज्ञजन सीधा सम्पर्क स्थापित करें और मिल-जुलकर उस चतुर्मुखी विश्व एकता के लिए प्रबल प्रयत्न करें जिस पर प्रस्तुत समस्याओं का आत्यन्तिक समाधान और चिरस्थायी उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण पूरी तरह निर्भर है ।

धर्म सम्प्रदायों की संयुक्त शक्ति का नव सृजन में नियोजन

जिस प्रकार विश्व व्यवस्था इन दिनों शासन तन्त्रों के हाथों में है, उसी प्रकार लोक मानस का एक बहुत बड़ा भाग धर्म सम्प्रदायों द्वारा प्रेरित-प्रभावित पाया जाता है । कहने को तो धर्म और अध्यात्म को विश्व मानव की सम्पदा माना जाता है और उनके मध्य एकता के एकात्मता के सूत्र ढूँढ़े जाते हैं, किन्तु यथार्थता यह है कि इस आधार पर ऐसी लक्ष्मण रेखाएँ खिंच गई हैं जो मनुष्य समाज को समुदायों के रूप में विभाजित करती हैं और अपने-अपने ढंग से स्नेह सौजन्य उत्पन्न करने के स्थान पर विधर्मी, विपक्षी प्रतिपादित करके उनके बीच जिस-तिस आधार पर विग्रह खड़े करती हैं । अनुयायियों की कट्टरता, अन्धश्रद्धा एवं घृणा करने से लेकर हजम करने या समाप्त करने जैसी प्रवृत्तियों को देखने से निष्पक्ष क्रियाशीलों को उनकी उपयोगिता में संदेह होने लगता है और सोचते हैं इनका अस्तित्व मानवी सुख शान्ति के हित में नहीं है ।

वस्तुतः धर्म नीति और मर्यादा का प्रतीक है । उसके सहारे उच्चस्तरीय आस्थाओं को अन्तराल में प्रतिष्ठित एवं परिपुष्ट करने का अवसर मिलता है । धर्म प्रचलनों का आज विकृत रूप कुछ भी क्यों न हो स्थापना के आरम्भिक दिनों उनके पीछे स्थिति में सुधार परिष्कार समाविष्ट करना ही लक्ष्य था । कुल मिलाकर धर्म धारणा मनुष्य को आस्थावान बनाती और कुछ आदर्शों को अपनाने के लिए कष्ट सहने एवं त्याग करने की प्रेरणा भरती है । धर्म तंत्र के विकृत हो जाने पर भी उस स्थिति से कहीं उत्तम है जिसमें आस्थाएँ रहेंगी ही नहीं । मनुष्य पशुवत आचरण करेंगे तब संचित सभ्यता और संस्कृति का कहीं पता भी न चलेगा और लोग भूत-पलीतों जैसा उच्छृंखल जीवन जीयेंगे । अराजकता की स्थिति कितनी भयानक होती है इसे इतिहास के पृष्ठों पर जहाँ-तहाँ पाये जाने वाले घटना क्रमों से जाना जा सकता है किन्तु अधार्मिकता की परिणति कैसी हो सकती है इसका उदाहरण ढूँढ़ने के लिए हमें वन-मानुष की आदिम कालीन मनःस्थिति एवं परिस्थिति का नये सिरे से अध्ययन करना होगा ।

धर्म-सम्प्रदाय युग धर्म समझें

धर्म सम्प्रदायों को आज की स्थिति में मनमानी करने के लिए खेत उजाड़ने, परस्पर लड़कर पेट फाड़ने, सींग तोड़ने वाले साँड़ों की तरह कुछ भी करते रहने के लिए स्वच्छन्द नहीं छोड़ा जा सकता । आक्रोश उन्हें नष्ट कर दे, इससे पूर्व ही उनकी क्षमता को ऐसी दिशा में मोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए कि वे अपनी आरम्भिक गरिमा भी बनाये रह सकें और मानवी प्रगति में आवश्यक योगदान भी दे सकें ।

इसका एक ही उपाय है—उनमें से प्रत्येक को यह अनुभव करने का अवसर मिलना चाहिए कि बदलती दुनिया में जब सर्वत्र सुधार क्रम चल रहा है और बुद्धि संगत प्रगतिशीलता अपनाने का प्रबन्ध बन रहा है तो धर्म सम्प्रदायों को भी क्यों न युग धर्म समझना चाहिए ? और क्यों न आगे बढ़कर अपनी गरिमा, उपयोगिता का प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए । इसी में उनकी दूरदर्शिता है ।

प्रज्ञा प्रयासों में परिवर्तन लक्ष्य है, ध्वंस नहीं । धर्म तन्त्र में घुसी हुई विकृतियों का निराकरण किया जा सके और सन्निहित श्रेष्ठताओं के बीजांकुरों को उभारा जा सके तो निश्चय ही वे प्राचीन काल की तरह आज की परिस्थितियों में भी अति महत्त्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न कर सकते हैं । मनुष्य की चेतन सत्ता श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा पर आधारित है । इनका उद्भव, परिपोषण तत्व दर्शन के साथ जुड़ी हुई आस्थाएँ ही कर सकती हैं । धर्म का क्षेत्र यही है । आज जितनी भी समस्याएँ हैं वे अभावों, प्रकृति प्रकोपों या अप्रत्याशित कारणों की उपज नहीं हैं । उन प्रसंगों का समाधान तो आधुनिक अर्थशास्त्र बुद्धि वैभव एवं विज्ञान के मिले जुले प्रयत्नों से बहुत निकाल लिया है । प्रमुख कारण एक ही है—आस्था संकट । इसके लिए न शासन की न बुद्धि की सामर्थ्य कारगर होती है । उसका निराकरण तो उस तत्व दर्शन के सहारे ही सम्भव होगा जो आकांक्षा विचारणा रीति, नीति और दिशाधारा को उत्कृष्टता की ओर उछाल सके । निश्चय ही इसके लिए धर्म तन्त्र का परिष्कृत स्वरूप उच्चस्तरीय भूमिका निभा सकता है और युग विभीषिकाओं के निराकरण में अन्य सभी उपायों की तुलना में अधिक समर्थ सिद्ध हो सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रश्न यह है कि इस दिशा में क्या किया जाय ? किस प्रकार किया जाय ? उत्तर में जो सुझाव दिये जा सकते हैं वे यह हैं कि—(१) सभी धर्म सम्प्रदाय एक दूसरे के साथ मिलना-जुलना और वे आधार ढूँढ़ना आरम्भ करें जिन पर सहयोग समर्थन की पृष्ठ भूमि खड़ी की जा सकती है । (२) एक दूसरे की निन्दा न करें वरन् सभी आत्म निरीक्षण करें और उन प्रतिपादनों प्रचलनों की उपेक्षा करना आरम्भ करें जो अब उपयोगी नहीं रहे या जो अकारण मनोमालिन्य या टकराव उत्पन्न करते हैं । (३)धर्म प्रेमी मात्र अपने ही सम्प्रदायों के प्रतिपादन सुनने पढ़ने तक सीमित न रहें वरन् अन्य धर्मों को भी पढ़ने-सुनने तथा समझने का प्रयत्न करें । (४) सभी धर्म मिलकर एक न्यूनतम कार्यक्रम बनायें जिसमें सर्वमान्य सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन की तथा सर्वविदित अवांछनीयताओं के उन्मूलन की सर्वसम्मत प्रतिपादनों को मिलजुलकर प्रचलित करने की व्यवस्था बनाई जाय । (५) ऐसा साहित्य सृजा जाय जिसमें विभिन्न धर्मों में सन्निहित उत्कृष्टता का संग्रह रहे और आधारभूत एकता समझने का जनसाधारण को अवसर मिले । (६) ऐसे धर्म बनें जहाँ सभी धर्मों का सृजनात्मक दृष्टिकोण रखकर अध्ययन करने की साधन सामग्री उपलब्ध हो । (७) समय-समय पर ऐसे आयोजन होते रहें जिसमें एक ही मंच से विभिन्न धर्मों के प्रवक्ता इस स्तर के विचार व्यक्त करते रहें जो विभिन्न सम्प्रदायों के बीच आधारभूत एकता का एक ही लक्ष्य तक पहुँचने की वास्तविकता को भली प्रकार सिद्ध कर सकें । (८) विभिन्न धर्मों के मूर्धन्य व्यक्ति मिलजुलकर ऐसे उपाय खोजें जिससे बढ़ती हुई नास्तिकता और अनैतिकता के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा खड़ा किया जा सके । (९) धर्म सम्प्रदायों के केन्द्र तथा पुरोहित जो दान-पुण्य प्राप्त करते हैं, उनका नियोजन कर्म-काण्डों में कम और लोक-कल्याण में अधिक हो । ऐसी सेवा साधना के बलबूते ही उमगती धर्म श्रद्धा को नवजीवन प्रदान किया जा सकेगा ।

प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत धर्म सम्प्रदायों के बीच सद्भाव सहयोग उत्पन्न करने एवं मिलजुलकर शालीन सदाशयता का वातावरण बनाने की दिशा में कुछ ठोस कदम उठाने के लिए प्रयास आरम्भ किए हैं । ऐसे साहित्य का सृजन पारस्परिक आदन-प्रदान के माध्यम तथा संयुक्त आयोजनों का एक सुनिश्चित कार्यक्रम बनाया है और आशा की है इस माध्यम से साम्प्रदायिक सद्भावना बनाने और संयुक्त प्रयासों से लोक-मंगल की उस दिशा में बढ़ चलने में उत्साहवर्धक सफलता मिलेगी जिसके लिए कि उनकी दूरदर्शी महामानवों ने स्थापना की थी । सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति में जब कि सभी विचारशील तत्व एकजुट होने जा रहे हैं, धर्मतन्त्र भी अपनी महान सामर्थ्य का उपयोग मानवी भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए क्यों न करेगा ? इस सम्दर्भ में भाव भरे और कारगर प्रयत्न करने के लिए प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत विशेष प्रयत्न आरम्भ किए जा रहे हैं ।

शुद्ध धर्म-तन्त्र का अस्त्र संधान

विश्व के नवनिर्माण का अभियान विभिन्न स्तरों पर चलेगा, हर सुसंस्कारी व्यक्ति एक इकाई के रूप में कार्य करेगा पर भारतवर्ष को एक विशाल सांस्कृतिक इकाई के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका भी इसमें निभानी होगी । सांस्कृतिक नेतृत्व भारतवर्ष करता आया है और अब भी उसे वह करना ही होगा उस स्थिति तक पहुँचने के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है और किया जावेगा भी । इस विशाल राष्ट्र को अपनी महान गौरव गरिमा के अनुरूप बनना ढलना ही होगा । यह छोटा-सा सामान्य कार्य नहीं और न ही इसका मूल्यांकन स्थूल दृष्टि से किया जा सकेगा । स्थूल-साधन और प्रयास उसके लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं, पर उनके अतिरिक्त भावनात्मक स्तर पर भी बहुत कुछ किया जाना आवश्यक है।

पिछले दिनों राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से सरकारी, गैर सरकारी क्षेत्रों में बहुत काम हुआ है । हमें उसका मूल्य कम नहीं आँकना चाहिए। हमारे नेताओं, शासकों ने अपनी बुद्धि के अनुसार कृषि, उद्योग, परिवहन, विद्युत, शिक्षा, चिकित्सा, उत्पादन, न्याय व्यवस्था आदि की दृष्टि से बहुत कुछ किया है। उनके प्रयत्नों की प्रशंसा की जानी चाहिए । हम उनका मूल्य घटा नहीं रहे हैं, वरन् कह यह रहे हैं कि भावनात्मक उत्सर्ग की आवश्यकता जब तक पूर्ण न की जायेगी तब तक इस भौतिक प्रगति का कोई वास्तविक लाभ न मिल सकेगा । मनुष्य वस्तुतः आत्मा है । उसकी शक्ति का स्रोत बाहर नहीं भीतर है । भीतरी दृष्टि से निष्प्राण व्यक्ति बाहरी दृष्टि से कितना ही सुसज्जित क्यों न हो इसकी सुन्दरता एवं उपयोगिता ही नहीं रहेगी, इसके विपरीत भीतर से सशक्त कोई प्राणवान स्वस्थ एवं चैतन्य व्यक्ति बाहर से फटे-टूटे परिधान धारण करने पर भी अपनी महत्ता अक्षुण्ण बनाये रहेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मा की तुलना में शरीर का मूल्य स्वल्प है । उसी प्रकार भावनात्मक सशक्तता की तुलना में भौतिक समृद्धि तुच्छ है। भौतिक उन्नति के बड़े से बड़े प्रयत्न तब तक नगण्य ही माने जाते रहेंगे जब तक कि उनकी अपेक्षा अनेक गुना प्रयास आन्तरिक विकास के लिये न किया जाय । आज हमारी यही सबसे बड़ी भूल है। इसी आवश्यकता का मूल्य कम आँककर हमने कोल्हू के बैल की तरह बहुत श्रम करने के उपरान्त भी कोई बड़ी मंजिल तय करने में सफलता नहीं पायी है। अब समय आ पहुँचा है कि यह भूल सुधारने के लिये हमें अविलम्ब कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

भावनात्मक परिवर्तन धर्म-तन्त्र द्वारा ही सम्भव है

यह एक स्पष्ट तथ्य है कि भावनात्मक परिवर्तन धर्म-तन्त्र के माध्यम से ही होना सम्भव है। भय और आतंक के बल पर अधिनायकवाद द्वारा लोगों को किसी मार्ग पर चलने के लिये विवश किया जा सकता है, पर इस प्रकार भी भावना बदलना सम्भव नहीं। उत्पीड़न के भय से लोगों के शरीर ही काम करने लगते हैं मन नहीं बदलता। भीतर छिपा हुआ चोर अवसर पाते ही उभर आता है और दाँव लगने पर अधिक जहरीला डंक मारता है। अच्छा तरीका यही है कि आदर्शवाद की उत्कृष्टता से श्रद्धा, धर्म और ईश्वर में सच्ची आस्था उत्पन्न कर जन-साधारण को कर्तव्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ, समाजनिष्ठ बनाया जाय। यह कार्य राजनैतिक लोगों का नहीं। उन्हें पग-पग पर कूटनीति अपनानी पड़ती है । फलस्वरूप लोग उन्हें प्रतिभावान तो मानते हैं पर आदर्शवान नहीं। राजनीति में गाँन्धी जैसे संत कोई विरले ही होते हैं, शेष तो दिन-रात हेर-पेर चलाने वाले होते हैं, इसलिये वे लोगों में न उत्साह उपन्न कर सकते हैं न आस्थायें विनिर्मित करने में सफल हो सकते हैं। यह कार्य धर्म क्षेत्र में कार्य करने वाले, उत्कृष्ट चरित्र एवं आस्थावान व्यक्ति ही अपने चरित्र एवं उदाहरण से जन-साधारण को भावनात्मक प्रगति के लिये प्रेरणा देकर कर सकते हैं। उन्हीं के उपदेशों का कुछ ठोस प्रभाव भी पड़ सकता है।

सामान्य मनुष्यों के कथन की अपेक्षा भगवान या शास्त्रों के द्वारा कहे हुए निर्देश लोगों को अधिक प्रभावित करते हैं, इसलिये सामान्य प्रवचनों की अपेक्षा शास्त्र कथा यदि ढंग से कही जा सके तो उसका अधिक प्रभाव पड़ता है। प्रचीन काल में महान तत्ववेत्ता ऋषियों ने मानव अन्तःकरण को उत्कृष्ट बनाने की आवश्यकता अनुभव की थी और उसके लिए जो सांगोपांग विधि-व्यवस्था मानव तत्वों की गहन शोधों के आधार पर बनाई उसे ही धर्म-तन्त्र घोषित किया गया। इसे आज की आडम्बरपूर्ण स्थिति में उपहासास्पद भले ही माना जाता हो पर वस्तुतः उसका मूल स्वरूप समग्र वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर विनिर्मित है। इसका अवलम्बन लेकर मनुष्य भीतरी दृष्टि से इतना समर्थ एवं सुविकसित हो सकता है कि बाह्य समृद्धि उसके पीछे-पीछे भागी फिरे।

आज की राष्ट्रीय विपन्न परिस्थितियों में हमें यही करना होगा, भावनात्मक उत्कृष्टता की अभिवृद्धि के लिये धर्म-तन्त्र का सहारा लेना होगा ताकि जन-मानस के गहन अन्तराल का कोमल स्पर्श करके उसके प्रसुप्त देवत्व को जागृत किया जा सके। इसी प्रकाश से हमारी अगणित कठिनाइयों की अँधियारी दूर हो सकेगी। मनुष्य भीतर से महान बनेगा तो बाहर से भी उसकी समृद्धि एवं शक्ति असीम होकर रहेगी।

समस्याएँ धर्म-तंत्र द्वारा ही सुलझेंगी

हम राजनीति के चकाचौंध को देखते हैं और उसी के आधार पर समस्याओं को हल करने की बात सोचते हैं । धर्म-तन्त्र की शक्ति और सम्भावना से हम एक प्रकार से अपरिचित जैसे हो चले हैं। बेशक राजनीति की तरह धर्मनीति में भारी विकृतियाँ और भ्रष्टतायें घुस पड़ी हैं, उन्हें सुधारना और बदलना पड़ेगा। शुद्ध स्वरूप में धर्म इतना सामर्थ्यवान है कि राजनीति की सामर्थ्य उसकी तुलना में नगण्य ही ठहरती है। शासन संचालन में लगभग लाखों कर्मचारी संलग्न हैं जबकि धर्म को आजीविका बनाकर गुजारा करने वालों की संख्या कहीं उसके दूने से भी अधिक है। जितना टैक्स सरकार वसूल करती है, उससे लगभग दूना धन धर्म कार्यों में खर्च होता है। तीर्थयात्रा, पर्वस्नान, कुम्भ जैसे धार्मिक मेले,. यज्ञ सम्मेलन, कथा-वार्ता, मन्दिर, मठ, साधुओं की जमातें, धर्मानुष्ठानों के अवसरों पर किये जाने वाले दान, पूजा, उपकरण, धर्म ग्रन्थ, प्रतिमायें आदि सब मिलाकर धर्म के नाम पर जनता प्रचुर मात्रा में खुशी-खुशी धन खर्च करती है। जप, आह्वान, संयम आदि के लिये लोग कष्ट भी सहते हैं धर्म प्रयोजनों के लिये मंदिर आदि की इतनी अधिक इमारतें बनी हुई हैं जो सरकारी इमारतों से किसी प्रकार कम नहीं। धर्म प्रयोजनों में जनता की श्रद्धा भी कम नहीं। समय आने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर वह उसके लिये बहुत कुछ त्याग करने को भी तैयार हो जाती है।

सच तो यह है कि हमने स्वाधीनता संग्राम भी धर्म के नाम पर लड़ा है। महात्मा गाँधी के नाम के साथ 'महात्मा' शब्द न होता तो सम्भवत: उन्हें इतना जन सहयोग न मिल सका होता। रामराज्य की स्थापना की उनकी घोषणा के आधार पर भारत की जनता मर-मिटने को तैयार हुई थी। सन् १९५७ का स्वतंत्रता संग्राम चर्बीयुक्त कारतूस मूँह में लगाने में धर्म भ्रष्टता अनुभव करने वाले सैनिकों द्वारा ही भड़का था। क्रान्तिकारियों ने गीता की पुस्तकें छाती से बाँधकर फाँसी के तख्ते पर चढ़ते हुए जनता की श्रद्धा अर्जित की थी।

बेशक, आज धर्म-तन्त्र बुरी दशा में विकृत बना लुंज-पुंज पड़ा है और अपनी उपयोगिता खो बैठा है। फिर भी यह सम्भावना पूरी तरह विद्यमान है कि यदि उसे सुव्यवस्थित बनाया जा सके और प्रबुद्ध व्यक्तियों द्वारा नव-निर्माण के प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जा सके तो इसका परिणाम आशाजनक सफलता ही होगा। इतिहास बताता है कि धर्म-तन्त्र सृष्टि के आदि से अब तक कितना शक्तिशाली रहा है । उसने सदा से राजतन्त्र पर नियन्त्रण करने की अपनी वरिष्ठता को कायम रखा है। समय बतायेगा कि उसी के द्वारा मानव जाति की आत्यन्तिक समस्याओं का समाधान होगा। राजनीति को कितनी ही प्रमुखता क्यों न मिली हो, उसकी महत्ता के अनुरूप-प्रतिष्ठा मिलने ही वाली है। कारण स्पष्ट है। मानव-जाति की भौतिक आवश्यकताएँ और समस्याएँ स्वल्प हैं। उन्हें बुद्धिमान मानव प्राणी आसानी से हल कर सकता है। जिस विभीषिका ने अगणित गुत्थियाँ उलझा रखी हैं वह भावनात्मक विकृति ही है. मनुष्य का आन्तरिक स्तर गिर जाने से उसने पशु एवं पिशाच वृत्ति अपना रखी है। इसी से पग-पग कलह और क्लेश के आडम्बर खड़े दिखाई पड़ते हैं। यदि भावनात्मक उत्कृष्टता संसार में बढ़ जाय तो आज हर मनुष्य देवताओं जैसा महान दिखाई दे और सर्वत्र स्वर्गीय सुख-शान्ति का वातावरण दृष्टिगोचर होने लगे। समस्त रोगों का निदान एक ही है। समस्त समस्याओं का हल यह एक ही है।

हमें जड़ तक पहुँचना होगा और उसी को सींचना होगा। रोग के अनुरूप चिकित्सा खोजनी होगी। जहाँ छेद है वहाँ बन्द करना होगा अन्यथा सुख-शान्ति के व प्रगति एवं समृद्धि के स्वप्न कभी भी साकार न हो सकेंगे। बालू के महल रोज बनते बिगड़ते रहेंगे मगर उनसे प्रयोजन कुछ भी सिद्ध न होगा । भारत के पुनरुत्थान में निश्चित रूप से धर्म को ही महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करनी पड़ेगी। क्योंकि जनसाधारण की प्रसुप्त आन्तरिक सत्प्रवृत्तियों को इसी आधार पर जगाया जा सकना सम्भव होगा। जितनी जल्दी इस तथ्य को हम हृदयंगम कर लें उतना ही उत्तम है।

राष्ट्र के अतीत गौरव के अनुरूप हमें पुन: अपने उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना ही होगा। प्रबुद्ध आत्माओं के सामने यह चुनौती प्रस्तुत हुई है कि वे अपनी तुच्छ तृष्णाओं तक सीमाबद्ध संकीर्ण जीवन बिता देने की अपेक्षा किसी तरह सन्तोष से गुजारा चलाते हुए अपनी बढ़ती शक्तियों का उपयोग अपने युग की विषम समस्याओं को सुलझाने के लिए करने को तत्पर हों। चारों ओर आग लगी हो और उसे बुझाने की अपेक्षा अपनी चैन की वंशी बजाने में जो संलग्न हों ऐसे प्रतिभावान की, सामर्थ्यवान की विकृत गतिविधियों पर विश्व मानव की घृणा ही बरसेगी। भावी पीढ़ियाँ उसे फटकारेंगी। कर्तव्य से विमुख रहने के कारण अन्तरात्मा उसे कोसती ही रहेगी।

हम सौभाग्य या दुर्भाग्य से अग्नि परीक्षा के युग में पैदा हुए हैं इसलिए सामान्य काल की अपेक्षा हमारे सामने उत्तरदायित्व भी अत्यधिक है। अतएव उपेक्षा करने का दण्ड भी अधिक है । संकटकाल के कर्तव्य और उत्तरदायित्व प्रतिबन्ध एवं दण्ड विधान भी विशेष होते हैं। आज वैसी ही स्थिति है। मानव जाति अपनी दुर्बुद्धि से ऐसे दल-दल में फँस गयी है जिसमें से बाहर निकलना उसके लिये कठिन हो रहा है। मर्मान्तक पीड़ा से उसे करुणक्रन्दन करना पड़ रहा है। परिस्थितियाँ उन सभी समर्थ व्यक्तियों को पुकारती हैं कि इस विश्व संकट की घड़ी में उन्हें कुछ साहस और त्याग का परिचय देना ही चाहिये। पतन को उत्थान में बदलने के लिये उन्हें कुछ करना ही चाहिये। हम चाहें तो थोड़ा-थोड़ा सहयोग देकर देश, धर्म, समाज एवं संस्कृति के पुनरुत्थान के लिये बहुत कुछ कर सकते हैं और नया संसार, सुन्दर संसार, उत्कृष्ट संसार बनाने के लिये एक चतुर शिल्पी की तरह अपनी सहृदयता कलाकारिता का परिचय दे सकते हैं। पेट भरने के लिये पशु की तरह जीवित रहना, इन परिस्थितियों में कैसे सम्भव हो सकता है? हमारे पाठकों में से शायद ही कोई इस तरह का अभिशाप जैसा जीवन जीना पसन्द करे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म का वास्तविक स्वरूप

धर्म का रूप आज पूजा, पाठ, तिलक, छाप, जटा, कमण्डल, स्नान, मन्दिर दर्शन या थोड़ा-सा दान-पुण्य कर देना मात्र मान लिया गया है। इतना कुछ कर लेने वाले अपने को धर्मात्मा समझने लगते हैं। हमें समझना और समझाना होगा कि यह धर्म का एक नगण्य अंश है। समग्र धर्म की धारणा आत्म-संयम, उज्ज्वल चरित्र, उदारता, ज्वलंत देश-भक्ति एवं लोक सेवा की तत्परता में ही सम्भव है। धर्मात्मा के लिये दयालु क्षमाशील बनना ही पर्याप्त नहीं वरन् उसके लिये सद्गुणी, शिष्ट, ईमानदार, कर्त्तव्य परायण, साहसी, विवेकशील, अनीति के विरुद्ध लोहा लेने का शौर्य एवं कठोर श्रम करने का उत्साह भी अनिवार्य अंग है। जब तक इन गुणों का विकास न हो तब तक कोई व्यक्ति सच्चे अर्थों में कदापि धर्मात्मा कहलाने का अधिकारी नहीं बन सकता।

हमें जनसाधारण को धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाना पड़ेगा और बताना पड़ेगा कि सुख-शान्ति का एकमात्र अवलम्बन धर्म ही है। जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा होती है और जो धर्म को मारता है-धर्म उसे भी मार ही डालता है। अधर्म के मार्ग पर न कोई अब तक फला-फूला है और न सुख-शान्ति से रहा है। आगे भी यही क्रम अन्तराल तक चलता रहने वाला है। यह आस्था जब तक जन-मानस में गहराई तक प्रवेश न करेगी तब तक मानव जाति की समस्याओं एवं कठिनाइयों का हल न हो सकेगा। हमें अच्छा मनुष्य बनना चाहिये। नेक मनुष्य बनना चाहिए और सशक्त मनुष्य बनना चाहिये। शक्ति, नेकी और व्यवस्था यह तीनों ही धर्म के गुण हैं। व्यक्ति का समग्र विकास ही धर्म का उद्देश्य है।

धर्म-तन्त्र को परिष्कृत और सशक्त बनाया जाय

धर्म-तन्त्र को सशक्त बनाना संसार की सबसे बड़ी सेवा है, ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। हमें इसी के लिये कटिबद्ध होना चाहिये। अपने समय और धन का एक अंश नियमित रूप से इस कार्य के लिये लगाना चाहिये। जो रोटी कमाने और बच्चे पैदा करने तक ही सीमित रह गये उन्होंने नर तन पाने का महत्त्व नहीं समझा तो यही कहना पड़ेगा कि ऐसे अभागे लोग अपनी दुर्बुद्धि पर हाथ मल-मल कर पश्चात्ताप करते हुए ही विदा होते होंगे। अच्छा हो हम समय रहते चेतें। अपने को धर्मपरायण बनाने और जन-मानस में धर्म-धारणा उत्पन्न करने के लिये ऐसा प्रयास करें जिससे अपनी आत्मा सन्तुष्ट हो और दूसरे लोग प्रकाश एवं प्रेरणा प्राप्त करके, कल्याण मार्ग पर अग्रसर हो सकें। ऐसी ही गतिविधि अपनाना हमारे लिये उचित है। इस युग के इस महान धर्म का, महाभारत का नेतृत्व करने के लिये मनस्वी धर्म सैनिकों की आज अत्यधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही है, इसकी पूर्ति के लिये कर्मठ विभूतिवान व्यक्तियों को साहसपूर्वक आगे बढ़कर आना चाहिये।

समय आ पहुँचा, जब जन-नेतृत्व का भार धर्म-तन्त्र के कन्धों पर लादा जायगा। धर्म क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति नव-निर्माण की वास्तविक भूमिका का सम्पादन करेंगे। मानव जाति को असीम पीड़ाओं से उन्मुक्त करने का श्रेय इसी मोर्चे पर लड़ने वालों को मिलेगा। इसलिये युग पुकारता है कि प्रत्येक प्रबुद्ध आत्मा आगे बढ़े। धर्म के वर्तमान स्वरूप को परिष्कृत करें। उस पर लदी हुई अनुपयोगिता की मलीनता को हटाकर स्वच्छता का वातावरण उत्पन्न करें। इसी शस्त्र से प्रस्तुत विभीशिकाओं का अन्त किया जाना सम्भव है, इसीलिए उसे चमकती धार वाला तीक्ष्ण भी रखना ही पड़ेगा। जंग लगे व भैंथरे हथियार अपना वास्तविक प्रयोजन हल कहाँ कर पाते हैं? धर्म-तन्त्र का आज जो स्वरूप है उससे किसी को कोई आशा नहीं हो सकती है, इसे तो बदलना, पलटना एवं सुधारना अनिवार्य ही होगा।

सुधरे हुए धर्म-तन्त्र का उपयोग सुधरे हुए अन्तःकरण वाले प्रबुद्ध व्यक्ति सुधरे हुए ढंग से करें तो उससे विश्व संकट के हल करने और धरती पर स्वर्ग-नर में नारायण का अवतरण करने का अभीष्ट उद्देश्य पूरा होकर ही रहेगा। सुधरी हुई परिस्थितियों की गंगा का अवतरण करने के लिये आज अनेकों भागीरथों की आवश्यकता है। यह आवश्यकता कौन पूरी करे, युग पुकार के अनुरूप क्या प्रत्युत्तर दिया जाय? यह हमें निर्णय करना ही होगा और उस निर्णय का आज ही उपयुक्त अवसर है।

समय की विषमता और जीवन्तों का उत्तरदायित्व

व्यक्ति की आन्तरिक उत्कृष्टता ही इस बात की गारण्टी है कि वह स्वयं सुखी रहेगा और अपने सम्पर्क क्षेत्र की शान्ति एवं प्रगति से लाभान्वित करेगा परिस्थितियाँ मनःस्थिति की प्रतिक्रिया भर हैं। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। इन सनातन तथ्यों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई भी अपने चिन्तन और चरित्र के अनुरूप उत्थान और पतन का अवसर प्रस्तुत करते हुए देखकर यथार्थता परख सकता है । वर्तमान की विभीषिकाओं को निरस्त करने और भविष्य को उज्ज्वल सम्भवनाओं से भरा-पूरा देखने का जो सपना सँजोया गया है उसके मूल में इसी प्रतिष्ठा को आधार भूत माना गया है कि जन-जन को उत्कृष्टता अपनाने के लिए सहमत किया जायेगा, फलतः शालीनता और सद्भावना का वातावरण बनेगा। इतना बन पड़ने पर सामान्य सुविधा साधनों के सहारे भी शान्ति और प्रगति की परिस्थितियाँ विनिर्मित होती चली जायेंगी। नव सृजन का, युग परिवर्तन का, उज्ज्वल भविष्य का आधार खड़ा करने वाले तत्व इस तथ्य से पूर्णतया आश्वस्त हैं कि मनुष्य की अन्तरात्मा को जगाया जा सके तो वह सहज ही शालीनता अंगीकार करेगी। इतनी बात बन सकी तो फिर सुख शान्ति की समग्रता में कहीं कोई कमी न रहेगी।

इन्हीं विश्वासों के सहारे युगान्तरीय चेतना प्रकट और प्रखर होती चल रही है। वातावरण की विषाक्तता में सन्देह नहीं, तो भी मानवी अन्तरात्मा इतनी समर्थ है कि घेरे का दबाव उसे मूर्छित भर कर सकता है आत्यन्तिक हनन करने में सफल नहीं हो सकता। भयानक ग्रीष्म में धरती की घास सर्वत्र सूख जाती है तो भी उसकी जड़ों में अमृत्व विद्यमान रहता है। ज्यों ही बादल बरसते हैं, देखते-देखते सूखी जड़ें उगती और धरती पर मखमली कालीन की तरह फैलती चली जाती हैं। पतनोन्मुखी गुरुत्वाकर्षण निश्चित रूप से प्रबल है वह उत्थान को पतन में परिणित करने के लिए सतत संलग्न रहता है। फिर भी ऊर्ध्व गमन की प्रक्रिया निराश नहीं होती। अग्नि की लपटें ऊपर ही उठती हैं। गर्मी हर वस्तु को फुलाती और उठाती है। पृथ्वी के आकर्षण से अग्नि के विकर्षण ने पराभूत होने से इनकार कर दिया है।

इन शाश्वत सिद्धान्तों ने आज की विषम वेला में अपनी प्रामाणिकता का परिचय देने के लिए अग्नि परीक्षा में होकर गुजरना स्वीकार कर लिया है। प्रस्तुत विषाक्तता से जूझने के लिए सृजन की शक्तियों ने समय की चुनौती स्वीकार की है और कहा है ध्वंस नहीं सृजन जीवन्त है । असत्य नहीं, सत्य प्रबल है। नियन्ता का समर्थन पतन के नहीं उत्थान के साथ है। अन्धकार कितना ही सघन या विस्तृत क्यों न हो उसे दीपक की एक छोटी सी बाती ललकारती रहती है। फिर परिस्थितियों की विषमता देखकर सृजन के मुख पर मलीनता आने का कोई कारण नहीं।

विलासी, लिप्सा और अधिपत्त्य की अहंता ने मनुष्य को व्यामोह के बन्धन में बाँधा है। उसे वासना, तृष्णा के प्रपंच में जकड़ा और अपंग, असहायों की दयनीय स्थिति में ला पटका है। पतन का दाव चल गया क्योंकि उसे अवरोध का सामना नहीं करना पड़ा। यदि आत्मा पर जागृतों जैसी तेजस्विता दृष्टिगोचर होती तो क्षुद्रता को ऐसा दुस्साहस करते न बन पड़ता कि वह महानता को पदच्युत करके स्वयं सिंहासनारूढ़ होती। दुर्दैव का प्रकोप ही कहना चाहिए कि संसार भर को प्रकाश देने वाले पूर्व ने अन्धकार का अधिपत्य स्वीकार कर लिया और लम्बा समय उनीदा तमिस्रा में पड़े-पड़े गँवा दिया। ग्रहण का कलङ्क देर तक सूर्य, चन्द्र को अपने चंगुल में ग्रसित किये नहीं रहता। प्रकाश की सत्ता है, अन्धकार की नहीं। प्रकाश का अभाव ही अन्धकार है। उदीयमान प्रकाश का सामना न करना पड़े तभी तक उसकी सत्ता है। आलोक के उदित होने पर उसका पलायन देखते ही बनता है।

उद्बोधन और आलोक न मिले तो व्यामोह और भटकाव की स्थिति देर तक भी बनी रह सकती है, पर प्रभात की जागरण वेला अपना शंखनाद करती रहे और तंद्रा पर उसका कोई प्रभाव न पड़े ऐसा हो नहीं सकता। अरुणोदय के साथ अन्तरिक्ष से अवतरित होने वाली ऊर्जा जब वृक्ष वनस्पतियों से लेकर कीट, पतंगों और पशु-पक्षियों तक को जागरूकता एवं सक्रियता अपनाने के लिए उत्तेजित करती है तो कोई कारण नहीं कि मानवी अन्तःकरण रखने वालों पर उसका कोई असर न पड़े। उनकी बात दूर है जो काया तो मनुष्य आकृति की पहने बैठे हैं, पर उसके भीतर निवास अभी भी पशु ही कर रहा है।

नव-जागरण की इस प्रभात वेला में इन दिनों सर्वत्र नये ढंग से सोचना और नया क्रम अपनाने की हलचल दृष्टिगोचर हो रही है। सघन तमिस्रा में गहरी निद्रा बनी रहे और प्राणी मृतवत् पड़ा रहे तो आश्चर्य की बात नहीं किन्तु जब दिनमान प्रखरता बढ़ती ही चल रही हो और हलचलों में तूफानी गतिशीलता उछल रही हो तो फिर आलसी और प्रमादी भी लम्बी चादर तान कर सोये एवं निष्क्रिय पड़े नहीं रह सकते। स्वयं न जगें तो समय जगा देता है। कोई कुछ करना न चाहे तो भी परिस्थितियाँ कुछ करने कराने के लिए विवश करती हैं। इन दिनों ऐसा ही हो भी रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जागरण का दौर शरीरगत सक्रियता में ही नहीं मनोगत विचार मंथन में भी प्रकट हो रहा है। चिन्तन को नई दिशा मिली है। पिछले दिनों पेट भरना ही प्रमुख रहा है। लोभ को प्रमुखता मिली है और विलास एवं संचय को ही सौभाग्य का चिन्ह समझा जाता रहा है। पिछले दिनों लोभ की ही तरह मोह भी मनुष्य को निर्विवाद बन्धनों में बाँधने के लिए वेदी की भूमिका निभाता रहा है। दोनों अभिन्न मित्र जो हैं। लोभ की हथकड़ी बनने का अवसर मिल रहा है तो मोह भी सहचरत्व का आनन्द क्यों न ले। वह बेड़ी बनकर साथ क्यों न रहा हो। जब किसी को जकड़ना, पकड़ना ही ठहरा तो दोनों अभिन्न मित्र समान पराक्रम क्यों न करें? समान लाभ क्यों न उठायें? समान श्रेय क्यों न पायें ?

तमिस्रा भरी लम्बी काल रात्रि में निशाचरों की ही पाँचों घी में रही हैं। हिंस्र पशु-पक्षी आक्रामक बनते रहे हैं। उल्लू और चमगादड़ स्वच्छन्द विचरे हैं । चोर चाण्डालों ने निर्द्वन्द्व होकर घातें लगाई हैं। इसमें साधनों का अपव्यय, अपहरण तो हुआ ही है। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह रही कि तन्द्रा ने आलस और प्रमाद बनकर स्वभाव पर आधिपत्य कर लिया और मनुष्य को अपंग जैसा बना कर रख दिया। अपंग का एक अर्थ बाधित भी होता है। बाधित अर्थ बन्दी। बन्दी अर्थात् जकड़ा हुआ। यह जकड़न थोपी गई या स्वेच्छापूर्वक अपनाई गई यह बात दूसरी है। लोभ की हथकड़ी पहने हुए व्यक्ति हाथों के अवरुद्ध हो जाने पर कुछ कर नहीं सकता, इसी प्रकार मोह की बेड़ियों में कस जाने के उपरान्त किसी के लिए कुछ दूर चल सकना भी शक्य नहीं रहता। श्रेय पथ पर वे लोग चल नहीं सकते जिन्हें मात्र अपने छोटे-से कुटुम्ब को ही इन्द्रासन सौंपे जाने की बात सूझती है। ऐसों को लोक-मंगल के लिए कुछ करने की इच्छा क्यों उठेगी? जिन्हें लालच के लिए ही खपना खटकता है वे क्यों परमार्थ को प्रश्रय देंगे ? उनके लिए संव्याप्त पीड़ा और पतन को हल्के करने के लिए उपलब्धियों में से कुछ कारगर अंशदान कर सकना कठिन है। लम्बी तमिस्रा ने पिछड़ों को निष्क्रिय और प्रगतिशीलों को संकीर्ण स्वार्थपरायण बनाकर रख दिया । लिप्सा और लालसा की ललक बढ़ती ही गई। वासना और तृष्णा में मन ऐसा रमा कि यह सूझना तक रुक गया कि जीवन क्रम में इससे आगे की भी कोई मंजिल या जिम्मेदारी है। बड़प्पन और विलास की वारुणी जब मन:तन्त्र पर पूरी तरह हावी हो रही हो तो दीन दुनिया को समस्याएँ आवश्यकताएँ सूझें भी कैसे ? सूझे तो उनके समाधान का कोई उपचार कैसे बने ?

यह है उस भूत का पर्यवेक्षण जो अभी आधा अधूरा ही विगत हो पाया है। फिर भी इतना तो निश्चित है कि नव प्रभात की ऊर्जा ने झकझोरे बिना छोड़ा किसी को नहीं। जीवन्तों में से हर एक को यह विचार करना पड़ रहा है कि परिवर्तन की इस पुण्य वेला में क्या उसे भी कुछ करना पड़ेगा? समय के साथ चलने के बिना क्या उसका भी काम नहीं चलेगा?

यह अन्त:मंथन उन्हें खासतौर से बेचैन कर रहा है जिनमें मानवी आस्थाएँ अभी भी अपने जीवन्त होने का प्रमाण देतीं और कुछ सोचने करने के लिए नोंचती, कचोटती रहती हैं। उन्हें सोचना पड़ रहा है कि परिवर्तन से भरी इस युग सन्धि में उस तरह नहीं रहा जा सकता जैसा कि पिछले दिनों चलता रहा है। इन दिनों न समय की माँग अनसुनी की जा सकती है और न आत्मा की पुकार को देर तक दबाया जा सकता है। विनाश से जूझने और विकास को सींचने के लिए जब जागरूकों की सेना कमर कस कर अग्रगामी हो रही हो-प्रयाण की शंखध्वनि से दिगंत गूँज रहा हो तो मुँह छिपा कर बैठे रहना भी तो सरल नहीं है। उसमें भी भीतर का रुदन और बाहर का उपहास बाधक बनता है। संकीर्ण स्वार्थपरता में आवद्ध बने रहने की स्थिति तब तक तो अखरती नहीं थी जब अन्यत्र भी वैसा ही दौर चल रहा था। पर जब जागृति ने हर जगह सक्रियता उत्पन्न की है और आदर्शों को जीवन्त करने के लिए कुछ कर गुजरने की ठान ठानी है तो मुँह छिपा कर बैठे रहना भी कठिन है। लोकभर्त्सना से तो किसी बहाने बचा भी जा सकता है, पर आत्म-प्रताड़ना से छुटकारा कैसे मिले ?

यह प्रकट रहस्य है कि अखण्ड-ज्योति के परिजनों में से अधिकांश ऐसे हैं जिन्हें जागृत आत्मा कहे जाने में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। रुचि और रुझान के अनुरूप ही समुदाय एकत्रित होते हैं। प्रकृति की अनुरूपता ही वर्ग बनाती और घनिष्ठता के सूत्र जोड़ती है। पत्रिका तो निमित्त मात्र है। पठन का व्यसन—साहित्य की खरीद बेच भर का ताना-बाना बुनता है और वह भी ऐसा होता है जो कच्चे धागे की तरह स्थापित पकड़ नहीं पाता। उससे अच्छी वस्तु दीखी कि पुरानी छूटी, पर ऐसा यहाँ कभी हुआ ही नहीं। लेखा-जोखा साक्षी है कि जो एक बार इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिवार में प्रवृष्ट हुआ वह सदा-सर्वदा के लिए उसी का परिजन होकर रह गया। अखण्ड ज्योति को एक ऐसा सूत्र कह सकते हैं जिसमें बहुमूल्य मणि-मुक्तकों की माला गुँथी हुई है। हम लोग जागृत जीवन्तों की तरह एक आदर्शवादी परिवार बन कर रह रहे हैं।

यह मिलन पठन-पाठन की सामग्री जुटाने या खपाने के लिए नहीं वरन् उस महान् उद्देश्य के लिए हुआ है जिसमें व्यक्ति और समाज का समान रूप से हित-साधन सन्निहित है जिसमें आत्मा और परमात्मा को समान रूप से सन्तुष्ट होने का अवसर है। महानता का रास्ता ऐसा है जिस पर वाहन के सहारे नहीं अपने पैरों से ही चलना पड़ता है। जो इतना साहस सँजो लेते हैं उनके लिए मंजिल के हर विराम पर अपेक्षाकृत अधिकाधिक आनन्द की सामग्री मिलती जाती है। प्रगति के हर चरण पर पहले से अधिक प्रसन्नता की स्थिति उपलब्ध होती है।

व्यष्टि को क्षुद्र और समष्टि को महत् कहते हैं। विराट् ही ब्रह्म है । संकीर्ण स्वार्थपरता की कीचड़ में सना हुआ व्यक्तिवाद ही भव-बन्धन है। इसी में फँसा हुआ कुम्भीपाक नरक में सड़ने का कष्ट उठाता है। कहते हैं कि नरकों में एक ऐसा भी है जिसमें घड़े में बन्द होकर रहने का कष्ट सहना पड़ता है। यह कुम्भीपाक व्यथा और कुछ नहीं व्यक्तिवादी संकीर्णता में आबद्ध रहने की घुटन भर है। पेट और प्रजनन में लिप्त मनुष्य सोचता तो कुछ इसी प्रकार है कि वह दूसरों की तुलना में अधिक चतुर है। लेना सबसे देना किसी को कुछ नहीं की नीति आकर्षक भी लगती है, चतुरता युक्त भी। किन्तु वास्तविकता कुछ दूसरी ही है। ऐसे मनुष्य अत्यधिक घाटे में रहते हैं। आत्म-सन्तोष लोक-सम्मान और दैवी अनुग्रह के तीनों ही महान् लाभों से उन्हें सर्वथा वंचित रहना पड़ता है, फिर प्रगति भी सीमित क्षेत्र में ही सम्भव होती है। ऐसे लोग जो पाते हैं अपव्यय में गँवाते हैं। साथ ही जन-सहयोग के अभाव में अपने बलबूते उतना कम जमा कर पाते हैं, जिन पर कोई गये गुजरे स्तर वाला ही सन्तोष कर सकता है। यह संग्रह जिन्हें मुफ्त में मिलता है उनका चिन्तन और चरित्र उठता नहीं गिरता है। इस प्रकार यह हराम में मिला उत्तराधिकार उनके लिए भी अभिशाप ही सिद्ध होता है जिन्हें इच्छा या अनिच्छा से देना पड़ा।

चतुर लोगों की इन दिनों भरमार है। बुद्धिमानों के दर्शन दुर्लभ हो गये हैं। बुद्धिमत्ता का निर्धारण और निर्देशन एक ही है कि महानता का मार्ग अपनाया जाय। इसमें किसानों को बीज बोने, उद्योगी को कारखाना लगाने, विद्वान को अध्ययन करने के समय त्याग करना पड़ता है। लाभदायक प्रतिफल को देखते हुए यह आरम्भिक विनियोग किसी भी दृष्टि से घाटे का सौदा नहीं है। महानता का वृक्षारोपण कुछ ही समय में कल्पवृक्षों के नन्दन वन की तरह फूलता-फलता है । तत्काल होने की आतुरता हो तो फिर हथेली पर सरसों जमाकर दिखाने वाली बाजीगरी के कुचक्र में फँसने और जंजालों में भटकने के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगता है।

महानता का अवलम्बन करके असंख्य व्यक्ति क्षुद्र परिस्थितियों में जन्मने-पलने पर भी अपनी विशिष्टता के आधार पर उच्च स्थिति पर पहुँचे और यशस्वी हुए हैं। इन उदाहरणों में एक ही निष्कर्ष निकलता है कि महानता उस उद्यान को लगाने की तरह है जो आरम्भ में परिश्रम और साधन चाहता है किन्तु समयानुसार सुरभि और सम्पदा के उभयपक्षीय अनुदान उत्साहवर्धक मात्रा में प्रदान करता है। यह महानता आखिर है क्या जिससे व्यक्तित्व विशिष्टता युक्त एवं वर्चस्व वैभव सम्पन्न बनता चला जाता है? इसका उत्तर एक ही है—समष्टि की साधना। लोकसेवा—जनकल्याण इसे अपनाने का एक ही उपाय है— स्वार्थ को परमार्थ के निमित्त विसर्जित करना। इस दुस्साहस को जो जितनी मात्रा में क्रियान्वित कर पाता है वह उसी अनुपात से अपने को बुद्धिमान एवं भाग्यवान अनुभव करता है। परिणामों की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सकने वाले अपने अनुभव एक स्वर से यही सुनाते रहे हैं कि समष्टि की सेवा साधना से बढ़ कर लाभदायक उद्योग इस संसार में और कोई है ही नहीं। इसे अपनाने पर स्वार्थ और परमार्थ की उभयपक्षीय पूर्ति सहज ही होती रहती है।

इस युग सन्धि की ऐतिहासिक वेला में दूरदर्शिता और सदाशयता की संयुक्त माँग एक ही है कि इन दिनों सङ्कीर्ण स्वार्थपरता पर अंकुश लगाया जाय और जो बच सके उसे नव सृजन के पुण्य प्रयोजन में भावनापूर्वक लगाया जाय। धन का अभाव हो सकता है किन्तु श्रम, समय एवं मनोयोग की किसी के पास भी कमी नहीं हो सकती है। रुचि होने पर भी निरर्थक कामों में भी अत्याधिक व्यस्त समझे जाने वाले लोग भी ढेरों श्रम, समय और साधन लगाते रहते हैं। फिर इसमें तो निर्धनों को भी कठिनाई नहीं हो सकती। व्यस्तता का बहाना करके समय दान और तंगी की आड़ लेकर अंशदान न दे सकने का तर्क तो दिया जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता है, पर औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। न बहाने बाजी को सचाई बताने का प्रयास सफल हो सकता है। तथ्य में 'अरुचि' भी काम कर रही होती है। जागृतों के उत्तरदायित्व और समय की माँग की संगति बिठाई जा सके तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि इन दिनों वैयक्तिक जंजालों को थोड़ा हल्का किया जा सकता है और उस बचत को उन परमार्थ प्रयोजनों में लगाया जा सकता है जो युग सन्धि के इस पर्व पर मानवी सभ्यता के विकास या विनाश में ये एक का चुनाव करने के साथ सम्बद्ध है। लिप्सा, लालसा में ही तो चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए लम्बा समय बीता है अब यदि इस जीवन के बचे-खुचे समय का कहने लायक अंश युग धर्म के निर्वाह में लगा दिया जाय तो कोई बड़ा घाटा पड़ने वाला नहीं है। पेट प्रजनन की प्रक्रिया तो अगले दिनों हेय योनियों के कुचक्र में फँसे रहने पर भी भली प्रकार चलती रह सकती है।

युग परिवर्तन के अनुरूप हम अपने को ढालें

अगले दिनों युग परिवर्तन की पुण्य वेला कितने तीव्र वेग से उगती चली आ रही है इसका अनुभव कोई भी सूक्ष्म बुद्धि वाला अपनी दूरदर्शी आँखों से सहज ही देख सकता है। पर्दे के पीछे महाकाल क्या-क्या सरंजाम जुटा रहा है, उसका उल्लेख करना समय से पूर्व की बात होगी, शायद लोग उस पर विश्वास भी न करें। पर जिन्हें हमारे ऊपर विश्वास हो उन्हें इतना तो नोट कर ही लेना चाहिये कि अगले दिनों घटनाक्रम इतनी तेजी के घूमेगा और उसकी प्रतिक्रिया इतनी अद्भुत होगी कि आज का वैयक्तिक जीवन-क्रम और समाज का स्वरूप आगले दिनों लड़खड़ा कर औंधे मुँह गिर पड़ेगा। उसके स्थान पर जो नई जीवन-पद्धति और विधि व्यवस्था सामने आयेगी वह आज के सड़ियल ढर्रे से कोई तालमेल न खायेगी। उसका स्वरूप कुछ अनोखा ही होगा, इतना अनोखा कि आज हम में से जो लोग मौजूद हैं वे अगले तीस वर्ष भी जीवित रह सके तो इतना परिवर्तन अनुभव करेंगे कि सब कुछ नया-नया अनोखा-अनोखा ही अनुभव होगा।

यह प्रक्रिया सहज ही आने वाली नहीं है, परिवर्तन प्रसव पीड़ा जैसी क्रिया देने वाली हलचल साथ लेकर आता है, वह आँधी तूफान की तरह-दावानल, भूकम्प, उल्कापात, जल प्रलय जैसे उफानों की तरह अद्भुत होता है। युग-परिवर्तन कोई सरल स्वप्न नहीं है जो कोमल शय्या पर पड़े-पड़े देखा जा सके। कोई देवता रातों रात चुप-चाप बदल कर रख जाय ऐसा भी नहीं होता। त्रेता के अन्त और द्वापर के आरम्भ में लङ्का काण्ड का विग्रह उत्पन्न हुआ था और द्वापर के अन्त तथा कलियुग के आरम्भ में महाभारत रचा गया था। अगले तीस वर्ष ऐसे ही युग परिवर्तन की संधि वेला के हैं जिसमें एक से एक बढ़कर रोमांचकारी घटना-क्रम घटित होंगे और महाकाल का दुघर्ष प्रत्यावर्तन प्रत्यक्ष परिलक्षित होगा। इस उलट-पुलट में होकर गुजरती हुई दुनिया अगले तीस वर्ष बाद कहाँ जा पहुँचेगी इसकी कल्पना कर सकना भी दुर्बल, रुढ़िग्रस्त और अपरिवर्तनवादी लोगों के लिए कठिन पड़ेगा पर जो होना है सो अमिट है, वह होकर ही रहेगा। युग पलटना और बदलना है। यह निश्चित तथ्य है कि आज की वैयक्तिक जीवन-पद्धति और समाज परिपाटी कुछ ही दिनों में इतनी अधिक बदल जायगी कि परिवर्तन से पूर्व और पश्चात् की तुलना करने वालों को स्तब्ध अवाक् रह जाना पड़ेगा।

जिस युग परिवर्तन अभियान का शुभारम्भ इन दिनों किया गया है वह बीज कुछ ही दिन में पत्र, पुष्प और फलों से लदा होगा। बरगद का वृक्ष बढ़ने में देर लगाता है पर जब वह प्रौढ़ हो जाता है तो अपनी दृढ़ता के कारण चिरकाल तक सुस्थिर बना रहता है। जड़ें गहरी जाने और ऊपर से जटाओं की जड़ें नीचे जमीन में उतरती चलने के कारण वट वृक्ष का विस्तार और आकार बढ़ता ही जाता है। तुरन्त उगने और हफ्तों में फूलने-फलने लगने वाले पौधे जीते भी कम हैं। विश्व के इतिहास के पृष्ठ बदलने में देर लगती स्वाभाविक है। इस दृष्टि से तीस वर्ष कुछ अधिक समय नहीं है। हम कितनी ही बार कह चुके हैं कि अगले तीस वर्ष प्रसव पीड़ा जैसे हैं। इसमें भारी उथल-पुथल होगी और ऐसे संघर्ष होंगे जिन्हें पौराणिक समुद्र-मंथन की तुलना दी जा सकती है। असुर रस्सी को अपनी ओर खींचते थे—देवता अपनी अपनी ओर। इस खींचतान की प्रतिक्रिया अन्ततः शुभ ही हुई। १४ रत्न निकले और उससे धरती से लेकर स्वर्ग तक की गरिमा असाधारण रूप से बढ़ गई। इसी प्रकार का प्रस्तुत युग मंथन भी है। इन दिनों के संघर्ष का लाभ उठाने के लिए असुरता अपनी घात लगावेगी और देवत्य भी अपने परिपोषण की दिशा में उसे खींचेगें। अन्तिम परिणाम के बारे में किसी को भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संदिग्ध नहीं रहना चाहिए। भगवान् ने कच्छप रूप धारण करके मंदिराचल को भूमि में धँस जाने से रोका था-भगवान शंकर ने विष पान किया था । सूर्य और विष्णु ने मिलकर राहुकेतु की दुरभि संधि को निष्फल किया था। ऐसे ही प्रकरण वर्तमान युग संघर्ष में प्रस्तुत होंगे। उतार-चढ़ाव की परिस्थितियाँ रंग बदलती रहेंगी पर चूंकि यह विशाल अभियान ईश्वरीय प्रेरणा और इच्छा के अनुरूप चल रहा है, उसमें स्फुरण और मार्ग दर्शन सूक्ष्म जगत के प्रकाश केन्द्र से आ रहा है-महाकाल उसका संचालन एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया के अनुरूप कर रहा है इसलिए इसके असफल होने का कोई कारण नहीं है। नहीं यह आशंका है कि उसकी प्रतिक्रिया असुरता की दृष्टि में उल्टी हो जायगी। दश अवतारों का प्रकरण जब उलटते हैं तो यही प्रतीत होता है कि जब देवत्व लड़खड़ाया है तो उसकी सहायता के लिये कोई अनौखा प्रकाश कहीं से उगा और उसने असम्भव को सम्भव के रूप में परिणित कर दिया। अगले दिनों भी कुछ ऐसे ही चमत्कार प्रस्तुत हों तो उसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं समझी जानी चाहिए।

वर्तमान तीस वर्षों में एक विकट संघर्ष की प्रसव पीड़ा सामने प्रस्तुत रहेगी सेनाओं का युद्ध उसमें गौण और विचारधाराओं का विचार-धाराओं का टकराना मुख्य होगा। अब किलों पर कब्जा करने वाली बात प्रमुख नहीं रहेगी। महत्त्वपूर्ण यह होगा कि जन-मानस पर कौन-सी विचारधारा आच्छादित होती है। प्राचीन काल में सैन्य संख्या और शस्त्र बल मुख्य था, राज्य परिवर्तन और जन नियंत्रण का फैसला इन्हीं दो आधारों पर होता था। अब परिस्थितियाँ बदल गईं । इन दिनों नई जन शक्ति का उदय हुआ है। लोक रुचि और लोक मान्यता ही अब प्रधान शक्ति बन गई है। आगे इस सामर्थ्य में और भी अधिक अभिवृद्धि होगी। जब राजतन्त्र, समाज व्यवस्था और व्यक्ति की रीति-नीति का निर्माण निर्धारण इस आधार पर होगा कि लोक मानस की प्रचण्ड धारा किस दिशा किस ओर प्रवाहित होती है। इसलिए भावी संघर्ष का-भावी महाभारत का स्वरूप प्रदेशों पर कब्जा करना नहीं-विचारधाराओं के दबाने और उभारने के रूप में परिलक्षित होगा। इस संघर्ष के प्रधान उपकण प्रचार साधन होंगे, जिसके पास जितना समर्थ प्रचार-तन्त्र होगा वह उतनी ही सबल समर्थता प्रकट करेगा। जर्मनी में हिटलर ने ऐसी ही एक झलक प्रस्तुत की थी उसने अपने देश के समस्त प्रचार तन्त्र को हस्तगत करके जन-मानस को इस चतुरता से ढाला और मोड़ा था कि जर्मन जाति विश्व के लिये एक सबसे बड़ी समस्या बन गई थी। यह प्रयोग भविष्य में और भी तीव्रगति से प्रचुर परिमाण से प्रस्तुत होंगे। युग की परिस्थिति को समझने वाले प्रचार साधनों को हथियाने और उनका उपयोग असुरता अथवा दिव्यता की अभिवृद्धि परिपुष्टि के लिए कर रहे हैं। सिनेमा, रेडियो, प्रेस, साहित्य, प्रवचन, प्रदर्शन आदि अगणित माध्यम इस सन्दर्भ में उदित हो चुके हैं और उससे अनेक गुने आगे होने वाले हैं। यही भावी महाभारत की चतुरंगिणी होगी। लोक मानस पर कब्जा करने के लिए इन्हीं अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया जाता है। इन साधनों से प्रभावित व्यक्ति अपने समीपवर्ती वातावरण के जन-समूह को प्रभावित करने के लिये व्यक्तिगत रूप से पुरुषार्थ और संघर्ष करेंगे वह समुद्र मंथन इतना व्यापक हो जायगा कि उसकी चपेट लपेट से प्रभावित हुए बिना संसार का एक भी व्यक्ति न रह सकेगा।

विश्व इतिहास पर गहराई से नजर डालने पर यह निष्कर्ष सहज ही निकल आता है कि अतीत में जब कभी भी भावनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया गतिशील हुई है तो उसका संचालन भारत भूमि से ही हुआ है। यहाँ की मिट्टी में अपनी कुछ विशेषता है जो अनादि काल से चली आई और अनन्तकाल तक चली जाती रहेगी । महामानवों का विचार पद्धतियों का—लोक मानस को प्रभावित करने का श्रेय सदा से इस भूमि को मिलता रहा है और आगे भी वैसा ही होगा । जिस विश्वव्यापी महान परिवर्तन की वेला इन दिनों सामने खड़ी है उसका उद्भव एवं संचालन भी इसी भूमि से होता है । सो हो भी रहा है । युग-निर्माण योजना का ज्ञान, यज्ञ, विचार क्रान्ति अभियान जिसके साथ बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक परिवर्तनों की सुसंबद्ध शृंखला जुड़ी हुई हैं—इसी भारत भूमि से गतिशील हो रहा है । कहना न होगा कि अगले दिनों यह बीज विशाल वट-वृक्ष का रूप धारण करेगा । इन दिनों की अपनी प्रचार प्रक्रिया जैसे ही समर्थ एवं परिपुष्ट होने लगेगी वैसे ही इसमें से रचनात्मक और संघर्षात्मक आन्दोलन और कार्यक्रमों का उद्भव होने लगेगा । अभी यह आरम्भ हिन्दू-धर्म और भारत भूमि से ही उगा तथा पनप रहा है, समय के साथ-साथ यह संसार के हर देश तथा हर धर्म तक व्यापक विस्तृत होता चला जायेगा । नवयुग का सूर्य भारत तक चमक कर न रह जायेगा । इसका उदय पूर्व में हो रहा है पर समयानुसार विश्व के हर कौने में इसकी प्रभा किरणें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फैलेंगी और वर्तमान अन्ध तमिस्रा का निराकरण करके ही रहेंगी ।

नवयुग का स्वरूप क्या होगा ? इसकी रूप रेखा हमें अभी से अपने मन मस्तिष्क में भली प्रकार जमा लेनी चाहिए मनुष्यों की आकृति आज जैसी तो रहेगी पर उनकी प्रवृति में अमूल-चूल परिवर्तन हो जायेगा । वस्तुओं के रूप और गुण यही रहेंगे पर उनका उपयोग उस आधार पर न होगा जिस पर इन दिनों किया जाता है । आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, प्रथा, परम्परा, कानून, शासन-पद्धति एवं धर्म धारणा का वर्तमान घटिया स्तर कूड़े-कवाड़ की तरह झाड़कर फेंक दिया जायगा और उसके स्थान पर एक अति उत्कृष्ट एवं आदर्श विवेक, न्याय एवं सच्चाई से भरी पूरी विधि-व्यवस्था का विकास होगा । मनुष्यों का सद्व्यवहार मनुष्यों तक ही सीमित न रहेगा वरन् कौटुम्बिकता एवं आत्मीयता की भावना प्राणिमात्र तक विस्तृत होगी और 'बसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धान्त तब पग-पग पर कार्यान्वित होता दिखाई पड़ेगा । ध्वंसात्मक प्रवृत्तियाँ जब सृजन के लिए प्रवृत्त और परिवर्तित की जावेंगी तब इस विश्व-वसुधा में पग-पग पर बिखरी हुई विभूतियाँ हारीतमा से परिपूर्ण पत्र-पुष्पों से लदे इस विश्व-उपवन को नन्दन वन में परिणत कर देंगी और इसी धरती पर स्वर्ग का अवतरण पग-पग पर परिलक्षित होगा ।

हम में से प्रत्येक प्रबुद्ध और विचारशील व्यक्ति को अपना मन मस्तिष्क इन भावी सम्भावनाओं के अनुकूल ढालने की तैयारी में अभी से लग जाना चाहिए ताकि समय आने पर वह उलट-पलट अखरे नहीं जो पहले से ही अनुकूल हो जायेंगे वे तूफानी प्रवाह के साथ वह चलने की सुविधा अनुभव करेंगे किन्तु जिन्होंने प्रतिरोधी एवं प्रतिगामी मान्यताओं में अपने को जकड़े रखा उन्हें भारी अड़चन, व्यथा, प्रतिकूलता और विपत्ति का अनुभव होगा । परिवर्तन का प्रवाह रुकने वाला नहीं है । ईश्वर का निर्देश और महाकाल का प्रत्यावर्तन रोक सकना तुच्छ मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है इसलिये बुद्धिमता इसी में है कि हम ऋतु परिवर्तन के साथ वस्त्र रहन-सहन आदि की तरह युग परिवर्तन के अवसर पर भी अपने चिन्तन, कर्तृत्व और अभ्यास को भी बदल डालें । सुविधा-सरलता इसी में रहेगी ।

बदलते युग के मुख्य परिवर्तन होने (१) धन पर समाज का स्वामित्व व्यक्तिगत सम्पदा का अन्त (२) जाति और लिंग के नाम पर वरती जाने वाली असमानता का अन्त और मनुष्य मात्र के समान नागरिक अधिकारों की प्रतिष्ठापना । (३) विश्व बन्धुत्व की मान्यता-प्रत्येक क्रिया-पद्धति में सहकारिता का कौटुम्बिकता की प्रवृत्तिका प्राधान्य विश्व राष्ट्र की स्थापना-समस्त संसार का एक शासन, एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा, एक आचार आदि एक्य सूत्रों का सार्वभौम प्रचलन । (४) व्यक्तिवाद का अन्त समूहवाद का उदय, अधिकार की उपेक्षा और कर्त्तव्य की निष्ठा तत्परता, उदारता और सज्जनता की मात्रानुसार मानवीय गरिमा का मूल्यांकन । यह चार आधार भावी युग निर्माण के मूलभूत आधार, तथ्य एवं आदर्श होंगे । इन्हीं सिद्धान्तों पर व्यक्ति के अधिकार एवं कर्त्तव्य निर्धारित किये जायेंगे । प्रथा परम्परा, कानून एवं आचरण इन्हीं सिद्धान्त पर खड़े किये जायेंगे । समाज का स्वरूप शासन का ढांचा इन्हीं प्रयोजनों की पूर्ति के लिए विनिर्मित होगा । नवयुग इन्हीं आधारों को मूर्तिमान करने के लिए द्रुतगति से दौड़ता चला आ रहा है । समय की गति को पहचानना ही काफी नहीं, उसके अनुरूप ढलना भी आवश्यक है सम्भव हो तो मानव में देवत्व का उदय कर सकने और धरती पर स्वर्ग का सृजन कर सकने में समर्थ इस दिव्य अवतरण का स्वागत सत्कार करने के लिए हमें अर्घ आरती लेकर आगे बढ़ चलने का भी साहस एकत्रित करना चाहिए ।

(१) अगले दिनों उत्पादन, वितरण, श्रम, पूंजी और सम्पदा पर व्यक्ति का नहीं, समाज का स्वामित्व रहेगा । व्यक्ति अपने शारीरिक मानसिक श्रम का उतना ही लाभ उठा सकेगा जितना समाज स्थिति के अनुरूप अनुपात आधार पर उचित एवं सम्भव है । शेष क्षमता का लाभ समाज को मिलेगा । जितना जो जिस प्रकार भी कमा सकता है वह उसका पूरा लाभ अपने लिए चाहे जिस काम में खर्च करे, आज की यह स्वेच्छाचारिता अगले दिनों न रहेगी । चूँकि राष्ट्र के हर व्यक्ति की यहाँ तक कि बाल, वृद्ध, अपंग आदि के निर्वाह स्वास्थ्य, संरक्षण, एवं प्रगति की जिम्मेदारी जब समाज उठावेगा, लोकोपयोगी उन सारे कार्यों में जो आजकल व्यक्तिगत उदारता 'दान-दक्षिणा' पर निर्भर हैं, जब समाज के कंधों पर अनिवार्य आवश्यकता की तरह चले जायेंगे तो निश्चिन्त रूप से शासन का खर्च बढ़ेगा । इसकी पूर्ति तभी सम्भव है जब व्यक्ति की योग्यता का पूरा लाभ समाज को मिले और निर्वाह के लिए उसे लगभग उतने ही साधन मिलें, जितने कि परिस्थिति के अनुरूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समानता के सिद्धान्त पर संभव हैं । आज जो विलासिता में—संग्रह में—ब्याज-भाड़ा उगाने में जो पूँजी फँसी हुई है, वह व्यक्तिगत अधिकार से निकल कर समाज को मिल जायगी तो निश्चय ही अधिक उपयोगी लोकमंगल के कार्यों में उसे लगाया जा सकेगा । सर्वसाधारण की सुविधा-सुरक्षा एवं प्रगति, धन के इसी प्रकार सामाजिक नियंत्रण से संभव है, आज व्यक्तिको चाहे जितना चाहे जिस तरीके से कमाने और खर्च करने की छूट है । इस उच्छृंखलता ने एक और अमीरों को विलासी बनाया है दूसरी ओर गरीब और बेकारों को धन के लिए तरह-तरह के अपराध करने के लिये उकसाया है । अगले दिनों जब हर किसी के लिए अनिवार्य रूप से श्रम करना आवश्यक हो जाय तो न कोई हरामखोर होगा न बेकार । न कोई विलासी होगा न अहंकारी । ईर्षा-द्वेष के कारण भी समाप्त हो जायेंगे और धन के लिये अपराध करने का भी कोई आधार न रहेगा । व्यापार व्यवसाय या तो सहकारिता के आधार पर होगें या सरकार करेगी । व्यक्तिगत स्वामित्व के नाम पर आवश्यक निर्वाह मात्र के साधन-उपलब्ध होंगे । ऐसी दशा में आज की तीन-चौथाई दुष्प्रवृत्ति जो धन के स्वेच्छाचारी हाथों में रहने के कारण पनपी है, स्वयं ही समाप्त हो जायेगी और जो अनाचार-भ्रष्टाचार चारों ओर फैला दीखता है उसके लिए कोई गुंजायश न रह जायगी ।

उपार्जन, पूंजी और श्रम का राष्ट्रीकरण होने ही जा रहा है । यह व्यवस्था सारे विश्व में बन कर रहेगी । इसे साम्यवाद, समाजवाद, अध्यात्मवाद, अपरिग्रह अनिवार्य दानशीलता आदि किसी भी नाम से पुकारा जाय, होना यही है । इसके बिना आज के व्यापक पाप-ताप और शोक-सन्ताप का और कोई हल नहीं । हमारे भावनात्मक, मानसिक, व्यावहारिक, पारिवारिक और सामाजिक ढांचे में अगणित विकृतियाँ धन के स्वेच्छाचारी उपार्जन और उपभोग ने उत्पन्न की हैं । इस तथ्य को कुछ ही दिनों में हर कोई समझ लेगा और स्वेच्छाचार वर्तमान अर्थव्यवस्था को बदलने के लिए पूरा उत्साह प्रकट करेगा । लोक-व्यवस्था इसी पद्धति से सम्भव है । सो युग की आवश्यकता की पूर्ति कर सकने वाली ऐसी ही अर्थ प्रणाली कुछ ही दिन में विश्वव्यापी हो जायगी । अच्छा हो हम अपनी विचार पद्धति और कार्य प्रणाली में अभी से परिवर्तन आरम्भ करे दें जिससे परिवर्तन की घड़ियाँ उत्पन्न कर हमें स्तब्ध रहने और दु:खी होने की स्थिति का सामना न करना पड़े ।

(२) जाति और लिंग के नाम पर बरती जाने वाली आज की असमानता अन्याय मूलक है । किसी वंश में जन्म लेने के कारण किसी को सम्मान या तिरस्कार मिले । उसे ऊँच या नीच कहा जाय, किसी को विशेष सुविधायें मिलें किसी के मानवीय अधिकार भी छिन जायें यह पद्धति अनीति और अन्याय पर ही खड़ी है । गोरे, काले का-ब्राह्मण] शूद्र का वर्तमान भेद-भाव हर दृष्टि से अनुचित है । सत्कर्मी के कारण किसी को सम्मान मिले और दुष्कर्मों से कोई तिरस्कृत किया जाय यह बात समझ में आती है पर तथा-कथित आधार रहित जाति-पाँति की कपोल कल्पना को पत्थर की लकीर मानते हुए किसी को ऊँच किसी को नीच माना जाय, इसी आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच विभेद की दीवारें खड़ी की जायें तो इसे हर दृष्टि से अनुचित कहा जायगा । इस अनौचित्य का अगले दिनों अन्त ही होकर रहेगा । मनुष्य मात्र को एक ही स्तर के नागरिक अधिकर प्राप्त होंगे । अन्य जाति को नहीं तब ज्ञान और कर्म ही किसी के मूल्यांकन का आधार बनेगा ।

स्त्री और पुरुषों के अधिकार प्राय: समान हो जायेंगे आज के समाज में पुरुष को स्त्री की तुलना में अनेक विशेषाधिकार मिले हुए हैं । पुरुष को अधिपति समझा जाता है और नारी को दासी । राजनैतिक पराधीनता की तरह ही यह गुलामी की प्रथा अवांछनीय है । पिछले दिनों पशुओं की तरह मनुष्य भी खरीदे बेचे जाते थे और कोई स्वामी कोई दास होता था । यह परिपाटी कानूनी तौर से समाप्त हो चुकी पर पारिवारिक जीवन में नारी को अनेक बन्धन प्रतिबन्धनों से जकड़े हुए अभी भी मौजूद हैं और उसे धर्म का—परम्पराओं का संस्कृति का जामा पहनाने की कुचेष्टा की जाती है । अगले दिनों इस दुष्टता का अन्त हो जाएगा और नर-नारी परस्पर मित्र होकर समान आचार और मर्यादाओं का पालन करते हुए दिखाई देंगे । नारी पर उतने ही वे ही बंधन रहेंगे जो नर को स्वीकार हो । दोनों के लिए कानून और परम्परायें समानता के आधार पर बनेंगी नारी को गर्भ धारण करना पड़ता है, शिशुपालन में उसी का अधिक अनुदान रहता है । ग्रहस्थ जीवन के इस असंतुलन को नारी के लिए विशेष सुविधाओं की व्यवस्था करके पूरा किया जाएगा । ग्रहस्थ बसाने के लिए कदम उठाने के साथ-साथ हर पुरुष को प्रतिबंध स्वीकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना पड़ेगा कि सन्तानोत्पत्र के कारण प्रस्तुत कठिनाइयों को वहन करने में नारी को जो विशेष क्षति उठानी पड़ती है उसकी पूर्ति उसे विशेष सुविधायें देकर पूरी करेगा । इस प्रकार आज जो विशेष लाभ नर को मिलते हैं वे अगले दिनों नारी के पक्ष में चले जायेंगे ।

अच्छा हो हम जाति-पाँति के आधार खड़ी विभेद की दीवारों को निरस्त करने का प्रयत्न करें । अच्छा यही है कि नारी पर बात-बात में प्रभुता जमाने और उसे पग-पग पर दबाने, सताने, डराने एवं तिरस्कृत करने की दुष्टता को समय रहते छोड़ दें । समानता के आदर्शों पर परस्पर एक-दूसरे के सच्चे मित्र बनकर रहें । कन्या और पुत्र का आज का अन्तर कल समाप्त ही होने वाला है इसलिए उचित यही है कि वैसी मान्यता अभी से मन में जमाना आरम्भ कर दें ।

(३) भाषा, सम्प्रदाय, प्रदेश रंग आदि के आधार पर जो खींच-तान सर्वत्र चल रही है और अपनापन एक वर्ग विशेष के प्रदेश के साथ जोड़ा जाता रहा है अगले दिनों मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली संकीर्णता भरी तुच्छता माना जायगा । समस्त विश्व एक राष्ट्र बनेगा । भौगोलिक सुविधाओं के आधार पर देशों का सीमा निर्धारण किया जायगा । कोई देश अलग न रहेगा । विश्व राष्ट्र के प्रान्त मात्र बन कर वे न निर्मित प्रति या प्रदेश रहा करेंगे । सेना केवल विश्व राष्ट्र की केन्द्रीय सरकार ही रखेगी । साहित्य या राजनीति में चर्चा का विषय बने रहने वाले अनेक वादों की तरह सम्प्रदायों की व्यक्तिगत रुचि एवं समझ का विषय मात्र माना जायगा । धर्म के आधार पर जातियाँ नहीं बनेंगी और मनुष्य, मनुष्य के बीच दीवार खड़ी करने की धृष्टता कोई मजहब न कर सकेगा । धर्म, ईश्वर एवं अध्यात्म की एक सार्वभौम परिभाषा एवं मान्यता होगी, जिसके पीछे कपोल कल्पनायें नहीं विवेकशीलता, सामाजिकता, सज्जनता एवं लोक मंगल के समस्त उच्च उत्कृष्ट आदर्श जुड़े होंगे । तब धर्म के नाम पर कोई महन्त मठाधीश लोक श्रद्धा एवं धन का शोषण न कर सकेगा । भाषा एक ही सारी दुनिया में रहेगी । क्योंकि पारस्परिक सम्बन्धों की अभिवृद्धि एवं ज्ञान के आदान-प्रदान से भाषा की एकता नितान्त आवश्यक है । लोगों की अपनी-अपनी भाषा, संस्कृति, अपनी-अपनी धरती, का मोह छोड़कर एक केन्द्र पर आना पड़ेगा । सीमित स्थानों के आधार पर खड़ी इन दिनों की यह सभी विभेद दीवारें अगले ही दिनों नष्ट हो जायेंगी लोग विशाल दृष्टिकोण से सोचेंगे और विश्वव्यापी एकता, एक रूपता, एक सत्ता एवं व्यवस्था की उपयोगिता को समझते हुए 'अपनी ढपली अपना राग' उक्ति जैसी आज की आपाधापी स्वतः ही छोड़ देंगे । एकता के लिए संकीर्णता छोड़नी ही पड़ेगी सो लोग खुशी-खुशी छोड़ेंगे भी । अच्छा हो हम अभी से इन विभेद की दीवारों को अनावश्यक समझना आरम्भ करें और उनको सींचने की अपेक्षा निर्मूल करने की बात सोचें । अन्ततः हमें वसुधैव कुटुम्बकम के, विश्व एकता के मार्ग को ही अपनाना पड़ेगा । वर्ग एवं क्षेत्र संघर्षों का अन्त इसी प्रकार होगा । होना यही है सो हमें अभी से मन्द अथवा तीव्र गति से उसी दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए ।

(४) व्यक्तिवादी स्वार्थपरता मनुष्य को विलासी, स्वार्थी, संकीर्ण बनाती हैं । लोग अपने ही धन की, यश की, सुविधा की बात सोचें और उसी के लिए जियें मरें तो उनकी गति विधियाँ समाज में अगणित विकृतियाँ उत्पन्न करेंगी । आदमी जितना स्वार्थी और संकीर्ण होता जाता है, समाज की उपेक्षा कर अपने सीमित लाभों में निरत रहता है उतना ही दूसरों के लिए अनुपयोगी एवं विघातक बनता चला जाता है । व्यक्ति की उपयोगिता एवं महत्ता इस बात में है वह समाज के—दूसरों के हित को प्रधानता दें और अपने लिए न्यूनतम पाकर सन्तुष्ट हो जायें । धर्म, अध्यात्म, पुण्य, दान, स्वर्ग, नरक, स्वाध्याय, सत्संङ्ग, पूजन, आदि का पूरा ढाँचा इसी प्रयोजन के लिए खड़ा किया गया है कि व्यक्ति संकीर्ण स्वार्थपरता छोड़कर विशाल दृष्टिकोण अपनाये और उदार आचरण की रीति-नीति अपनाये, चरित्रनिष्ठा का आधार यही हो सकता है । तुच्छता से महानता की ओर-लघुता से विभुता की ओर जब आत्मा अग्रसर होती है तभी वह परमात्मा बनती है । नर से नारायण—पुरुष से पुरुषोत्तम बनने का एक मात्र तरीका आत्म विस्तार ही है । सब में अपने को—अपने में सबको देखना यही तो तत्त्व ज्ञान है । लोभ, मोह के बन्धनों को काटकर विश्व मानव के प्रति अपनी-अपनी सम्पदा एवं विभूतियों का समर्पण करना इसी का नाम योग साधन है । स्वाध्याय और सत्संग यदि सच्चा हो तो उसका प्रशिक्षण इन्हीं मान्यताओं का प्रतिपादन हो सकता है । धर्मात्मा का ही दूसरा नाम सदाचारी एवं ईश्वर भक्त का ही दूसरा नाम समाज निष्ठ है । शब्दों का अन्तर भले ही रहे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथ्य एक ही है । लोभी, स्वार्थी, संकीर्ण और आपाधापी में निरत व्यक्ति भक्ति या धर्म का ढोंग भले ही बनाता रहे तथ्यतः वह उस उच्च स्थिति से सर्वथा प्रथक माना जायगा ।

व्यक्तिवादी स्वार्थपरता मनुष्य को बुरे से बुरे कुकर्म करने को प्रेरित करती है, ऐसा व्यक्ति विलासी, शोषक और संग्रही ही बन सकता है इसलिए साम्यवाद से इस दुष्प्रवृत्ति को बलपूर्वक कुचल देने और अनिवार्यतः समाज-निष्ठा बनने के लिए विवश किया जाता है । धर्म एवं अध्यात्म का तकाजा यह है कि इसी उदारवादी समूहवादी प्रक्रिया के अनुरूप अपनी विचारणा और गतिविधियों को बदलते हुए आत्म-सन्तोष, श्रद्धा, सम्मान, स्वर्ग आदि विभूतियों को उपलब्ध किया जाय । बात एक ही है, एक पक्ष अपनी दुष्टता को व्यक्तिवादी स्वार्थपरता को बलपूर्वक कुचल डालने के लिए कहता है । धर्म उसी प्रक्रिया को स्वेच्छापूर्वक आत्म-कल्याण और परमात्मा की प्रसन्नता के लिए करने की प्रेरणा देता है । एक में विवशता है दूसरे में उदारता । अन्तर स्तर का है तथ्य का ही है । साम्यवाद और अध्यात्मवाद दोनों ही व्यक्ति को स्वार्थपरता, संग्रह और विलासिता के बन्धन काट कर समाज निष्ठ बनने की प्रेरणा देते हैं । लोभ और मोह के—तृष्णा और वासना के—व्यक्तिवादी बन्धनों को काट डालना ही मुक्ति है, जिसे सबसे बड़ा जीवन लाभ माना गया है । स्वर्ग वस्तुतः स्नेह और सद्भाव भरे दृष्टिकोण का ही दूसरा नाम है । स्वर्ग सुख का अर्थ आन्तरिक सन्तोष और मुक्ति का अर्थ स्वार्थ के सहचर भव बन्धनों को काट कर सर्वात्मा—विश्वात्मा—परमात्मा अथवा समष्टि के अनुसार बनकर रहना है ।

अगले दिनों समस्त विश्व सच्चे अर्थों में धर्मात्मा एवं आस्तिक बनेगा और इसी धरती पर मनुष्य में देवत्व के उदय और समाज में स्वर्गीय वातावरण का आनन्द बिखरा हुआ परिलक्षित होगा । मनुष्य की विचारणा धन, यश बटोरने अहंकार और सुख-साधन बढ़ाने की—बेटे, पोतों के लिए अपार धन छोड़ जाने की नहीं रहेगी । हर व्यक्ति उदार दृष्टि से लोक मंगल को अपना जीवन लक्ष्य स्वीकार करेगा और अपनी योग्यता, क्षमता एवं विभूतियों को नियोजित करने में अपने अस्तित्व की सार्थकता अनुभव करेगा ।

अगला समय ऐसी ही उदार मान्यतायें जन मानस में भरने के लिये द्रुत गति से चला आ रहा है । तब स्वार्थी लोभी और मोहग्रस्त व्यक्ति, घृणित एवं दुष्ट समझे जायेंगे और उन्हें पग-पग पर तिरस्कृत, बहिस्कृत किया जायगा । आज तो सम्पत्तिवानों का सम्मान होता है कल समाज के लिए व्यक्तिगत सुविधाओं का उत्सर्ग करने वाले ही श्रद्धास्पद होंगे । ईश्वर भक्त और धर्मात्मा तब कोई ऋद्धि-सिद्धि बखानने के जाल-जंजाल सुनने वाला ढ़ोंगी नहीं कहला सकेगा । पूजा-पाठ से नहीं व्यक्ति, की गरिमा धर्माचरण तथा उसके आदर्शवादी सद्भाव सम्पन्न जीवन क्रम से ही नापी आँकी जायेंगी ।

यह एक तथ्य है कि व्यक्तिवादी स्वार्थपरता—समाज की प्रगति और सुरक्षा के लिए भयानक अभिशाप है । मनुष्य की इस मनोवृत्ति को बदलना ही पड़ेगा। अन्यथा सर्वत्र अपराध, अनाचार ही बढ़ते दिखाई देते रहेंगे ।

अच्छा हो हम अपने सोचने का ढंग और उपयोग, का तरीका समय रहते बदल लें । मौज-मज़ा करने की और औलाद के लिए बैठे-बैठे हराम की कमाई खाते रहने की जोड़ गाँठ न करें । इन निरर्थक गतिविधियों से जल्दी ही हाथ खींच लें ताकि अगले दिनों लानत और धिक्कार की धूलि अपने ऊपर उड़ने की स्थिति से बचे रह सकें । हमें अपना बहुमूल्य समय, श्रम, मन, मस्तिष्क, पौरुष, वर्चस्व एवं वैभव, लोक मंगल के लिये नियोजित करने की तैयारी करनी चाहिए, ताकि आत्म-सन्तोष एवं श्रद्धा सम्मान का आनन्द उपलब्ध करते हुए समय से पूर्व चेतने वाले बुद्धिमानों में अपनी गणना करा सकें ।

युग परिवर्तन अवश्यम्भावी है । आज के व्यक्ति की चिन्तन प्रणाली और जीवन नीति सर्वथा बदल जायेगी। समाज का ढाँचा भी यह न रहेगा जो आज है। उपरोक्त चार आदर्शों की आधार शिला पर नव निर्माण का भवन खड़ा किया जायगा । ईश्वर की इच्छा यही है सो उसके सारे सरंजाम क्रमशः अनायास ही जुटते चले जा रहे हैं । प्रतिरोधी तत्त्वों को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए महाकाल का ताण्डव नृत्य उग्र से उग्रतर होता चला जा रहा है । इस महान प्रक्रिया के सम्पन्न करने के अनेक प्राविधानों में हमारी भावी तपश्चर्या की एक कड़ी और भी जुड़ने जा रही है । वर्षा ऋतु में अनायास ही सूखी हुई घास उग पड़ती है और जमीन में दबे हुए बीज स्वयमेव अंकुरित होकर विश्व वसुधा की शोभा-सुषमा बढ़ाने लगते हैं । ठीक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार अगले दिनों अगणित प्रसुप्त आत्मायें एक दैवी आवेश में आयेंगी और नव निर्माण के लिए रचनात्मक एवं संघर्षात्मक ऐसी महान कार्य व्यक्तिगत और समूहगत रूप से सम्पन्न करेंगी, जिसका प्रभाव परिणाम देखकर हर किसी को स्तब्ध रह जाना पड़ेगा। युग-निर्माण आन्दोलन का कार्य या लेबिल इन पुण्य प्रयोजनों से सम्बद्ध भले ही न हो—वे स्वयं इस अभियान के कार्य क्षेत्र से प्रत्यक्षतः भले ही परिचित न हों, पर निश्चित रूप से उनकी प्रेरणा का स्रोत वही रहेगा जिसके प्रकाश से हम सब प्रस्तुतः अति महत्त्वपूर्ण क्रिया-कलाप सम्पन्न करने में संलग्न हैं ।

इतना तो करना ही होगा

सुरक्षा का सशस्त्र मोर्चा सेना सम्भालती है और प्रगति का दूसरा मोर्चा प्रबुद्ध लोक सेवकों को सँभालना पड़ता है । प्रगति ही सुरक्षा की सबसे बड़ी गारंटी है । यदि जनता का मनोबल जागृत है और वह अपनी त्रुटियों का समाधान करती हुई प्रगति की दिशा में अग्रसर हो रही है तो यह विश्वास किया जा सकता है कि इसकी सुरक्षा सुस्थिर रहेगी, प्रतिष्ठा पर कोई आँच न आने पावेगी और सुख शान्ति की परिस्थितियाँ बढेंगी । किन्तु यदि जनमानस का ढलाव पतनोन्मुख है, चरित्र मनोबल और प्रयत्न यदि शिथिल हो रहे हैं तो यही समझना चाहिये कि बाहर का शत्रु भले ही कोई न हो या कुछ बिगाड़ न सके या उसे शस्त्र बल से मार भगा दिया जाए पर भीतरी दुर्बलताएँ यदि बनी हुई हैं तो वे ही नाश का कारण बन जावेंगी ।

अशान्ति और विनाश का कारण

दुष्प्रवृत्तियाँ जहाँ कहीं भी रहती हैं वही अशांति और विनाश का वातावरण उत्पन्न हो जाता है । श्रीकृष्ण जी का विशाल यदुकुल परस्पर ईर्षा-द्वेष में ही लड़कट कर नष्ट हो गया था । मध्यकालीन सामन्तों और राजा रईसों की विलासिता ही उन्हें ले बैठी । आपसी फूट और सामाजिक कुरीतियों का दुष्परिणाम हम पिछले एक हजार वर्ष से बुरी तरह भुगतते आ रहे हैं । दूसरे को दोष देना व्यर्थ है वास्तविक दोष तो हमारी दुर्बुद्धि और दुर्बलता का ही है । इतिहास से यदि हम कुछ सीख सकते हैं तो इतना सीख ही लेना चाहिये कि संगठि, जागृत, सच्चरित्र और प्रगतिशील जनता ही अपनी और अपने समाज की सुख शान्ति को सुरक्षित रख सकती है । हमें इस तथ्य पर हजार बार विचार करना चाहिये और जन मानस का स्तर ऊँचा उठाने के लिए शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए । कंधे पर इस अखण्ड ज्योति परिवार के प्रत्येक सदस्य के संदर्भ में कुछ विशेष उत्तरदायित्व आया है । युग निर्माण योजना के अन्तर्गत हम सब इस प्रतिज्ञा में आबद्ध हैं कि जीवन का उपयोग केवल कमाने खाने तक ही सीमित न रखेंगे वरन् आत्म निर्माण और समाज-निर्माण की ओर भी समुचित ध्यान देंगे । यह भावना कागजी नहीं रहनी चाहिए । अपनी स्थिति, शक्ति और सामर्थ के अनुसार कुछ न कुछ प्रयत्न हर किसी के लिये संभव हो सकता है ।

युग और कर्त्तव्य की पुकार

अग्नि परीक्षा की इस महत्त्वपूर्ण वेला में भारत माता के सपूत अपने प्राण हथेली पर रखे सीमा रक्षा के लिये खड़े हैं । कितने ही अपने प्राण विसर्जित कर चुके, कितनी को ही करने हैं, कितने विकलांग और घायल पड़े हैं । यह राष्ट्र के प्रहरी हमें पूछते हैं कि "हम इतना कर रहें हैं, अपने हिस्से का कर्त्तव्य आप भी पूरा करते हैं या नहीं ?" नीची आँखें करके लज्जा से सिर झुका कर भीरुता और हीनता भी भाषा में नहीं, हमें उसका उत्तर प्रखर तेजस्विता के साथ देना चाहिये—"आप सैन्य मोर्चे पर लड़ रहे हैं, आवश्यकता होने पर हम भी वही होंगे । जब तक वह अवसर नहीं आता तब तक राष्ट्र को सबल बनाने के लिये, दूसरी रक्षा पंक्ति मजबूत बनाने के लिए घर झोंपड़ों में रहते हुए जो कुछ संभव है उसे हम भी कर रहे हैं ।" यही उत्तर हमारे लिये उपयुक्त हो सकता है।

राम वनवास गये थे तो भरत ने अपना रहन-सहन वैसा ही बना लिया था और तपसी की भाँति राज-काज चलाते थे । हमें घर रहते हुए युद्ध सैनिकों की तरह ही सोचना और करना चाहिए । देश को सशक्त बनाने के लिए कुछ न कुछ करते रहने के लिए हमें कटिबद्ध हो ही जाना चाहिए ।

एक कार्य जो हमें अब करना ही चाहिए यह है—रोजी-रोटी कमाने में चौबीसों घन्टे लगाने का विचार छोड़ देना चाहिए और सोचना चाहिए कि "जो केवल अपने लिए ही कमाता और आप ही खाता है वह शास्त्रों के अनुसार चोर है । हमें चोर नहीं बनना चाहिए ।" जो लोकहित की बात सोचने के लिए—उस दिशा में कुछ करने के लिए समय का सर्वथा अभाव बताता है उसे किन शब्दों में धिक्कारा जाय यह समझ में नहीं आता । हममें से कोई इतना स्वार्थी और कंजूस नहीं जो यह कहे कि राष्ट्रीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्माण के लिए—युग निर्माण के लिए—मेरे पास बिलकुल भी समय नहीं है ।

देश को सशक्त और प्रबुद्ध बनाने के लिए धन की नहीं—समय और मनोयोग की आवश्यकता है । भगवान ने २४ घन्टे का समय धन कमाने, और मौज-शौक करने और-संकीर्ण स्वार्थों में लगे रहने के लिए ही नहीं दिया है, उसमें से एक अंश परमार्थ कार्यों के लिए भी रहना चाहिए । अध्यात्मवाद की सुनिश्चित मान्यता यह है कि —"भजन की भाँति ही लोकहित के कार्यों में सेवा प्रवृत्तियों में समय लगाया जाना आवश्यक है ।" इसलिए परमार्थ कार्यों के लिए भजन के समान ही हमें श्रद्धान्वित होना चाहिए । उसके लिए हमारे दैनिक जीवन में कोई नियत स्थान होना ही चाहिए । समय-दान का कार्यक्रम हम उदारतापूर्वक चलाते रहें और इसे जीवन का एक आवश्यक धर्म-कर्त्तव्य मान कर कुछ न कुछ समय इसके लिए निर्धारित करलें । निर्माण कार्य श्रम, समय और मनोयोग लगाये बिना संभव नहीं होते । युग-निर्माण के लिए भी इन्हीं वस्तुओं की आवश्यकता है।

जन जागरण के लिए

राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए अनेक माध्यम, साधनों और उपकरणों की आवश्यकता है, उसके प्रकार और कार्यक्रम भी कितने ही हैं । पर वह सब कुछ जिस आधार पर निर्भर है वह है—भावना । भावना के अभाव में प्रगति की सारी प्रक्रियाएँ निर्जीव और प्रदर्शन मात्र बनी रहती हैं । हमें जन मानस में कर्त्तव्य पालन की, नीति, धर्म और सदाचार की, आस्तिकता और परमार्थ की प्रचंड भावनाएँ उत्पन्न करनी चाहिए । ज्ञान से कर्म और कर्म से समृद्धि की उपलब्धि होती है । जैसे विचार मन में उठेंगे शरीर से वैसे ही कर्म बन पड़ेंगे, और जैसे कर्म होंगे वैसा ही प्रतिफल सम्मुख उपस्थित होगा । इसलिए हमें ज्ञान का, भावना का, महत्त्व समझना चाहिए और उसके विकास का समुचित प्रयत्न करना चाहिए ।

ज्ञानदान को सबसे बड़ा दान माना गया है उसे ही ब्रह्मदान कहते हैं । ब्राह्मण को इसीलिए 'भूसुर' पृथ्वी का देवता मानते हैं कि उनके द्वारा जनसाधारण को सद्ज्ञान की प्राप्ति होती है । विचारों की शक्ति प्रचंड है । यदि उत्तम विचारों को मनः क्षेत्र में समुचित स्थान मिल जाय तो साधारण स्थिति का मनुष्य महापुरुष, ऋषि देवता ओर अवतार बन सकता है । संसार में जब कभी भले या बुरे परिवर्तन हुए हैं उनके मूल में विचार परिवर्तन की प्रक्रिया का ही प्रधान श्रेय रहा है। कार्ल मार्क्स की साम्यवादी विचार धारा ने आज लगभग आधी दुनिया को उस विचार धारा से प्रभावित कर दिया है । 'टाम काका की कुटिया' पुस्तक की लेखिका ने अमेरिका में दास-प्रथा के प्रश्न को लेकर गृहयुद्ध करा दिया और अन्त में उस घृणित प्रथा का अन्त ही होकर रहा । बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, गाँधी, दयानंद, की प्रखर विचार धाराओं का जब विस्तार हुआ तो उससे कितने लोग प्रभावित हुए ? विचार धाराएँ तूफान की तरह होती हैं, मनुष्य उनके प्रवाह में सूखे पत्तों की तरह इधर-उधर उड़ते रहते हैं। हमें मनुष्य को मनुष्य बनाने की विचार धारा को जन मानस में गहराई तक प्रवेश करने का कार्य अपने हाथ में लेकर युग परिवर्तन की महान प्रक्रिया को सफल बनाना चाहिए ।

नियमित समय दान

शिक्षा और विद्या की उन्नति के लिए हम में से प्रत्येक को कुछ न कुछ समय नियमित रूप से देना ही चाहिए । अपने परिवार के कितने ही सदस्य अशिक्षित और अल्प शिक्षित होते हैं । उनकी साक्षरता बढ़ाने के लिए एक घण्टा घरेलू प्रौढ़ पाठशाला चलाई जा सकती है । पड़ौस में कितने ही निरक्षर लोग रहते हैं उन्हें भी पढ़ने की प्रेरणा देकर अपनी प्रौढ़ पाठशाला में सम्मिलित किया जा सकता है । इस प्रकार एक वर्ष में यदि पाँच निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने की प्रतिज्ञा ली जा सके और यह उत्साह दूसरों में भी पैदा किया जा सके तो कुछ ही वर्षों में सारा देश साक्षर बन सकता है । जो कार्य सरकार करोड़ों रुपया खर्च करके भी नहीं कर सकती वह लोक सेवा की प्रवृत्ति को जागृत करके सहज ही पूरा हो सकता है ।

गरीबी की तरह ही अशिक्षा भी दुर्बलता की निशानी है । अशिक्षा और गरीबी में अशिक्षा अधिक भयानक है क्योंकि इसी के कारण गरीबी, बीमारी संकीर्णता आदि का जन्म होता है । यह कुछ भी मुश्किल काम नहीं कि हम अपनी पत्नी, बहिन, माता भाभी, चाची आदि को पढ़ाना शुरु करें, उन्हें साक्षर बनावे और इस पढ़ाई के साथ-साथ उन्हें जीवन विद्या के, युग परिवर्तन विचार धारा के आवश्यक तथ्यों से भी परिचित कराते चलें । केवल इच्छा शक्ति की ही प्रधान कठिनाई है । यदि इसे दूर किया जा सके तो एक छोटी घरेलू पाठशाला चला सकना हम में से किसी के लिए संभव हो सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार एक घरेलू पुस्तकालय, ज्ञान-मन्दिर भी आसानी से हर कोई चला सकता है । इसका आरम्भ अखण्डज्योति पत्रिका मात्र से भी हो सकता है । अपने घर का कोई भी साक्षर व्यक्ति ऐसा न बचे जो उसे आदि से अन्त तक न पढ़ता हो । इसी प्रकार पड़ोसी, मित्रों और समीपवर्ती, विचारशील व्यक्तियों को अपने अंक पढ़ा देने और वापिस लेने का क्रम बनाना चाहिए । इस बहाने उनके घरों पर आने जाने का कार्यक्रम बनाना चाहिए । इस बहाने सम्पर्क बढ़ाते हुए और प्रस्तुत अंक में छपे किन्हीं महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करते हुए सत्प्रवृत्तियों का, सद्भावनाओं का, प्रसार करना चाहिए ।

विचार-विस्तार के माध्यम

घरेलू प्रौढ़ पाठशाला और पुस्तकालय का कार्यक्रम अखण्डज्योति के प्रत्येक पाठक के लिए नितान्त सरल और सर्वथा संभव कार्य है । छुट्टी के दिन गोष्ठियाँ बुलाई जा सकती हैं । यदि लोग इकट्ठे न होते हों तो प्रति दिन एक-दो व्यक्तियों के घरों पर सद्विचार प्रसार के उद्देश्य से जाकर धर्म फेरी की जा सकती है । इस प्रकार अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों का एक छोटा विचार-परिवार बन सकता है । जैसे रानी मधुमक्खी छत्ता बनाती है और उस छत्ते में अनेकों अन्य मधु मक्खियाँ प्रश्रय पाती हैं उसी प्रकार 'अखण्डज्योति' का प्रत्येक सदस्य रानी मक्खी की तरह एक विचार-परिवार बनावे । उस परिवार मेंपाठशाला और पुस्तकालय में कम से कम दस सदस्य तो होने ही चाहिए । इस पद्धति को अपना कर हम लोग कुछ ही दिन में लाखों, करोड़ों व्यक्तियों का प्रशिक्षण आरम्भ कर सकते हैं और यह शिक्षा शृंखला यदि विधिवत् अग्रसर होती रहे तो साक्षरता और शिक्षा के साथ-साथ विचार परिवर्तन की, भावना जागरण की, युग निर्माण की समस्या सरलता पूर्वक हल हो सकती है ।

देशव्यापी अगणित बुराइयों, दुर्बलताओं और कुरीतियों का उन्मूलन करने के लिए, मनुष्य की सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने के लिए आगे चल कर हमें अनेकों विशाल कार्यक्रम बनाने पड़ेंगे और जहाँ आवश्यक होगा वहाँ संघर्ष की भूमिका में भी उतरना पड़ेगा । पर सबसे पहला कार्य यह है कि लोग इस परिवर्तन की आवश्यकता समझें और उसके लिए आवश्यक त्याग करेन को उद्यत हों । यह बौद्धिक पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए हमें आज ही प्रवृत्त हो जाना चाहिए । यह कार्य जितना सरल है उतना ही महत्त्वपूर्ण भी है । छोटे कार्य को आज आरम्भ करें, बड़े काम कल करने के लिए अपने आप ही सामने प्रस्तुत होंगे ।

हमारा योगदान स्वल्प न रहे

सुरक्षा और प्रगति के लिए हमें बहुत कुछ करना है । लोगों ने बहुत कुछ किया है और कर रहे हैं । हमें भी कुछ करने के लिए अग्रसर होना ही होगा । राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए हमारा योगदान कुछ भी नहीं रहा यह कहलाने का कलंक हम में से किसी को भी अपने सिर पर नहीं लेना चाहिए । सीमा का युद्ध मोर्चा जितना महत्त्वपूर्ण है उससे कम राष्ट्र की सफलता के प्रश्न को नहीं समझा जाना चाहिए । अखण्डज्योति परिवार इस दूसरे मोर्चे पर बलिदानी युद्ध सैनिकों की भाँति ही कटिबद्ध रहने की प्रतिज्ञा कर चुका है । आवश्यकता के समय रक्षा मन्त्री द्वारा सौंपे गये किसी भी कार्य के लिए कभी भी कहीं भी जाने की प्रतिज्ञा हम कर चुके हैं । ऐसे अवसर पर हमारे और भी अनेकों स्वजन हमारे साथ रहेंगे ऐसा विश्वास है । जब तक यह समय नहीं आता तब तक हमें दूसरे मोर्चे पर राष्ट्र के विनम्र प्रहरी की तरह काम करना होगा । जन-भावनाओं के जागरण का कार्य नैतिकता, मानवता, कर्त्तव्य परायणता और देश भक्ति की प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने का कार्य हम तन्मयता पूर्वक कर रहे हैं । इस कार्य में प्रत्येक परिजन से सहयोग की हमें आशा हैं । पाठशाला, पुस्तकालय, गोष्ठी, और धर्म फेरों के माध्यम से सद्ज्ञान का प्रसार कर सकना प्रत्येक पाठक के लिये संभव है । अखण्डज्योति को पढ़ाने और सुनाने का कार्यक्रम अपना कर भी इस दिशा में बहुत कुछ किया जा सकता है ।

नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक, क्रान्ति का कार्य सम्पन्न होने पर ही स्वतन्त्रता को सर्वांग पूर्ण झाँकी दृष्टिगोचर होगी । रामराज्य की, धर्मराज्य की स्थापना के लिए सरकारी प्रयत्नों में ही नहीं जन भावनाओं में भी परिवर्तन आवश्यक है । इस परिवर्तन के लिए ही अपना 'युग परिवर्तन आन्दोलन'—युग निर्माण कार्यक्रम चल रहा है । इस ज्ञानयज्ञ में हम सबको श्रमरूपी घृत और समय रूपी साकल्य समर्पित करना ही चाहिए ।

युग परिवर्तन की तैयारी के तीन चरण

कोठे में अन्न के भण्डार भर जाने की संभावना की सार्थकता जानने के लिये कुछ प्रयत्नों, घटनाओं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवाहों और साधनों को देखते हुए वस्तुस्थिति का अनुमान लगाया जाता है । किसान समुदाय यदि खेत जोतने में, खाद डालने में, सिंचाई का प्रबन्ध करने में जुटा हो तो लाभदायक उपलब्धियों का अन्दाजा लगाया जा सकता है । बीज बोये जाने और अंकुर उगने पर रखवाली की चौकसी चल पड़े, खरपतवारों को उखाड़ने से लेकर निराई-गुड़ाई का सिलसिला ठीक प्रकार चलता रहे तो समझना चाहिये कि अपवाद रूप में ही दुर्भाग्य बाधक सिद्ध हो सकता है अन्यथा धन-धान्य से कोठे भरने में कोई व्यवधान रह नहीं गया ।

विद्वान बनने के लिये लम्बा अध्ययन करना पड़ता है । पहलवान बनने के लिये मुद्दतों अखाड़े गोड़ने पड़ते हैं । इक्कीसवीं सदी की मणि-मुक्तकों वाली फसल उगाने के लिये बारह वर्ष की तपश्चर्या स्तर की तैयारी करनी पड़ेगी । राम वनवास के चौदह वर्षों में से बारह वर्ष तप साधना में और दो वर्ष युद्ध संदर्भ में लगे थे । पाण्डवों को वनवास के आरंभिक बारह वर्ष महान प्रयोजन की प्रारंभिक तैयारी में लगाने पड़े थे । युग संधि के बारह वर्ष इसी प्रकार के हैं । १९८१ से आरम्भ हुई सन् २००० में समाप्त होने वाली अवधि ऐसी है जिसमें प्रज्ञावान व्रतधारियों को लोभ, मोह और अहंकार की महत्त्वाकांक्षायें एक कोने में रखनी पड़ेंगी और औसत नागरिक स्तर का निर्वाह करते हुए परिवार को सुसंस्कृत, स्वावलम्बी बनाने भर की जिम्मेदारी निबाहते हुए अपने समय, श्रम, चिन्तन और साधनों का अधिकांश भाग उस बीजारोपण में लगाना पड़ेगा जो बारह वर्ष बाद फलता- फूलता दिखाई पड़े और इसी शताब्दी में ऐसा परिवर्तन कर दिखाये जिसे 'न भूतो न भविष्यति' की संज्ञा दी जा सके । पिछले सतयुग में अध्यात्म की ही वरिष्ठता थी । विज्ञान का उन दिनों इस स्तर का उभार और प्रचलन नहीं हुआ था । पर अब तो बुद्धिवाद, विज्ञान की प्रवीणता में कमी केवल एक ही है कि इसके साथ अध्यात्म का समावेश नहीं हो सका है । तीनों के मिल जाने पर तो जल, थल, आकाश के बने हुए समन्वय की तरह पूर्णिमा की स्थिति बन जायेगी । अगला सतयुग पिछले सभी सतयुगों की तुलना में अधिक समय, अधिक सम्पन्न और अधिक ज्ञान-विज्ञान से ओत-प्रोत होगा, आने वाले शेष दस वर्षों में इसी की तैयारी करनी होगी ।

दुष्कर्मों में तो तीन प्रकृति के व्यक्ति भी आगे बढ़कर अपने स्तर के उपद्रव खड़े कर लेते हैं । पतन और विग्रह का वातावरण बना लेते हैं । असंख्य कुसंस्कारों से अपने स्तर के सहयोगी भी सहज खोज निकालते हैं । तात्कालिक लाभ के प्रलोभनों में तो कोई भी फँस और फँसा सकता है । इस निमित्त क्रूर कर्म करने में भी संकोच नहीं होता । किन्तु सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिये, लोक कल्याण के लिये मात्र, जीवन्त दूरदर्शी विवेकवान ही तैयार होते हैं । अपना व्यक्तित्व इतना प्रखर और प्रमाणिक बनाते हैं कि उनका कथन सर्वसाधारण के गले उतर सके । कुकर्मों के लिये तो कोई भी साथी समर्थक खोज सकता है । लिप्सा और दुष्टता मिलकर कभी-कभी इतनी आक्रामक हो जाती है कि पहले चरण में ही कुछ खोट-खसोट सके । पर पीछे कुछ ही समय में कलई खुल जाती है । ढोल की पोल निकल जाती है और पानी का बबूला थोड़ी देर उछल-कूदकर समाप्त हो जाता है । चिरस्थाई कामों के लिये मजबूत नींव रखनी होती है । ताजमहल जितना जमीन से ऊपर उठा हुआ दीखता है उतना ही गहरा वह नींव में घुसा हुआ है । बरगद का पेड़ लम्बी अवधि में प्रौढ़ परिपक्व होता है ।

इक्कीसवीं सदी का फलता-फूलता कल्पवृक्ष उद्यान देखने के लिये मात्र प्रतीक्षा करनी ही काफी नहीं होगी, उसके लिये प्राण चेतना से भरे पूरे लोगों को आगे बढ़कर मार्ग दर्शन करना होगा । चुम्बक अपनी आकर्षण शक्ति से सजातीय लौह कणों को खींचकर समीप एकत्रित कर लेता है । खदानें बनने और बढ़ने के पीछे यही सिद्धान्त काम करता है । सेनायें इसी प्रकार एक जुट और प्रशिक्षित होती हैं । महान संस्थाओं के संगठन भी इसी आधार पर खड़े होते हैं । उनके मूल में ऐसे व्यक्ति रहे होते हैं जो अपनी प्रमाणिकता और सेवा भावना से लोक श्रद्धा अपने साथ समन्वित कर सके । हनुमान के आगे चलते ही रीछ वानरों का विशाल समुदाय उनके पीछे-पीछे प्राण हथेली पर रख कर चल पड़ा था । कृष्ण कन्हैया की प्रामाणिकता के कारण ग्वाल-बालों का एक बड़ा समुदाय प्रगाढ़ निष्ठा सहित साथ में जुट गया था । गोवर्धन उठाने में वही काम आये । दुर्योधन की असीम सेना थी । पाण्डव पाँच थे, पर उनके न्यायोचित पक्ष का समर्थन करने के लिये असंख्यों ने स्वेच्छा सहयोग देकर मोर्चा संभाला था । ईसा को अनुयायियों की कमी नहीं रही थी । बुद्ध के आवाहन पर लाखों भिक्षु-भिक्षुणी विश्व के कोने-कोने में धर्म-चक्र प्रवर्तन के लिये चल पड़े थे। गाँधी के सत्याग्रह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में सम्मिलित होने वालों की कमी नहीं रही । विनोबा का भूदान अपने समय में इतना सुविस्तृत हुआ कि उस उपक्रम को एक कीर्तिमान ही कहा जाने लगा था ।

इक्कीसवीं सदी में उज्जवल भविष्य की परिकल्पना को साकार करने के लिये अगले दस वर्षों में नव सृजन के निमित्त काम आने वालों को बहुत कुछ करने की आवश्यकता पड़ेगी । जीवन के इन दस वर्षों को एक प्रकार से विश्व कल्याण के लिये समर्पित-विसर्जित ही करना होगा । मन को डांवाडोल न करके एक चित्त से एक निष्ठ होकर यदि लक्ष्य के साथ तन्मय हो चला जाय तो निशाना ठीक तरह साधने में कोई अड़चन रह नहीं जाती । लक्ष्य के प्रति समर्पित लोगों ने ही संसार भर में बड़े-बड़े काम किये हैं । महामानवों की चिरस्मरणीय कृतियों के पीछे उनकी प्रगाढ़ निष्ठा ही काम करती रही । जो मात्र कौतुक कौतूहल के लिये बाल क्रीड़ा करते रहते हैं, वानरों की तरह डालियों पर उछलते मचलते रहते हैं उनसे कोई ऐसा काम नहीं बन पड़ता जिसे चिरस्मरणीय कहा जा सके और जिसका अनुकरण करने को अनेकों का मन मचलने लगे ।

युग संधि की इस वेला में कई अति महत्त्वपूर्ण कार्य करने हैं । इनमें एक है—विचार क्रान्ति के लिये योजना बद्ध रूप से व्यापक सुनियोजन । इन दिनों लोक चिन्तन में असाधारण रूप से विकृतियों की भरमार है। कुसंस्कारों का एक तो आकर्षण ही सहज स्वभाववश बहुलता के साथ पाया जाता है । इसके साथ-साथ तथाकथित ऐसे बुद्धिवाद को दावानल की तरह फूट पड़ने और फैल पड़ने का अवसर मिला है कि लोग अनीति का समर्थन ढीठता के साथ करने लगे हैं । डरने, झेंपने, सकुचाने के स्थान पर वे कुकर्म का समर्थन तर्कों का अम्बार लगाते हुए करते हैं । स्वल्प बुद्धि वालों का उससे सहज भ्रमित हो जाना स्वाभाविक है । मनुष्य का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि बहुत लोगों को अपने लिये अधिक से अधिक लाभ उठाते देखा जाता है । उसे अपनाने की सहज प्रवृत्ति अपना ली जाती है । बड़ों को जो करते देखा जाता है, उसकी नकल छोटे भी करते हुए गर्व अनुभव करते हैं । भ्रष्टाचार का इन दिनों सार्वजनिक प्रचलन है उससे ऊपर वालों की छूत नीचे वालों तक पहुँच गयी है । रामलीला देखने वाले बच्चे उस मेले से ही राक्षसों और बंदरों के मुखौटे खरीद लाते हैं और चाव से पहनकर कूदते छलांग लगाते रहते हैं । प्रचलन का प्रभाव असाधारण है । प्रथा परम्परायें इसी आधार पर पनपती हैं । कुरीतियों और मूढ़ मान्यताओं के भूत इसी प्रकार लोगों के सिरों पर सवार होते हैं । मनः स्थिति में भर चला प्रदूषण ही परिस्थितियों क्रिया-कलापों और घटना क्रमों को हेय स्तर के बनाता चला जा रहा है । इस प्रवाह को उलट कर शालीनता का, सज्जनता का, विवेकशीलता अपनाये जाने का निर्वाह बहुत कठिन काम है । इसको भागीरथ द्वारा गंगावतरण किये जाने वाले महान कार्य के समतुल्य ठहराया जा सकता है । दुष्प्रवृत्तियों को सत्प्रवृत्तियों में बदलने का प्रथम उपचार है ''विचार क्रान्ति'' । चिन्तन में इतना गहरा समावेश जो चरित्र में आदर्शवादिता के प्रति अगाध निष्ठा उत्पन्न कर सके । उलटे को उलट कर सीधा करना इसी को कहते हैं ।

चिन्तन के उपरान्त चरित्र का दूसरा चरण है । व्यवहार में, व्यक्तित्व में उत्कृष्ट आदर्शवादिता का समावेश बन पड़ने पर कृतियाँ स्वमेव ऐसी बन पड़ती हैं कि दरिद्रता ही नहीं, उसके साथ जुड़ी अनगढ़ता भी दूर हो सके । आलस्य और अव्यवस्था का ही दूसरा नाम पिछड़ापन है, इसी को अभाव, दरिद्रता एवं पिछड़ापन कहते हैं । गन्दगी इसी का चिन्ह है । आलस्य, प्रमाद और फूहड़पन के रूप में इसी को विकराल रूप धारण करते देखा जाता है । जहाँ सद्गुणों की, सत्प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठा न होगी । वहाँ विग्रह, रोग, शोक, उद्वेग जैसे अवांछनीय घटनाक्रम ही घटते देखे जायेंगे । जनमानस के परिष्कार के साथ-साथ सत्प्रवृत्तियों का सम्वर्धन् ऐसे प्रचलनों का बीजारोपण-अभिवर्धन है, जिनके उपलब्ध होने पर व्यक्ति सभ्य, सुसंस्कृत होने के साथ-साथ समृद्ध, सुसंस्कृत और समुन्नत भी समझा जाने लगे ।

विचार क्रान्ति-सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के दो प्रयासों के साथ-साथ तीसरा आधार परिवर्तन की इस संधि वेला में यह है कि विक्षुब्ध अनाचार के आक्रमण का धैर्य और साहस के साथ सामना कर सकने वाला पराक्रम उभरे हुए रूप में दृष्टिगोचर होने लगे ।

जिनके अहंकार को, पूर्वाग्रह को, स्वार्थ को हानि पहुँचती है, उनके द्वारा आक्रामक रुख अपनाया जाना और क्षति पहुँचाया जाना तीसरा चरण है-यह स्वाभाविक है । अंधेरा जब ब्रह्म मुहूर्त में अपने अस्तित्व पर संकट छाया देखता है तो उलटकर आक्रमण करता है । खून खराबी से दिशायें लाल हो जाती हैं । अरुणोदय इसी स्थिति का सूचक है । कुरीतियाँ जिनकी नस-नस में भरी हैं उन्हें समझाने में उनके अहंकार को चोट पहुँचती है । अपनी हेटी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखते हैं । अपने पक्ष का समर्थन तर्क के द्वारा नहीं कर पाते । उपाय एक ही रह जाता है कि प्रतिपक्षी पर, उसके संगठन पर आक्रमण करें । यह आक्रमण मारकाट के रूप में तो कदाचित ही होते हैं । वे व्यक्तिगत लांछन, आरोप लगाने पर उतर आते हैं और प्रयत्न करते हैं कि संग्रहीत श्रद्धा, अश्रद्धा में बदल जाय और सहयोगी विरोधी न भी बने तो भी कम से कम उपेक्षा तो दिखाने ही लगे ।

यह आशंका प्रायः संभावना और परिस्थिति बन कर सामने आती है । अपना उद्देश्य भले ही कितना ही उच्च और मंगलमय हो पर जिनके अहंकार पर स्वार्थ पर चोट पहुँचती है, उनका तिलमिलाना तो आक्रोश प्रकट किये बगैर रह ही नहीं सकता । यह एक ऐसी आशंका है जिसका सामना हर सुधारक को करना पड़ा है । मात्र सेवा सहायता भर की गतिविधियाँ चल रही हो तो यह भी हो सकता है कि लोग प्रशंसा न करें तो कम से कम उपेक्षा बरत कर दरगुजर ही करते रहें । पर जब सेवा, सुधार के साथ जुड़ी हुई हो तो वह जिन्हें पसन्द नहीं आती, जिन पर सुधरने का दबाव डालती है वे चुप नहीं बैठे रह सकते । विरोधी बने बिना रहेंगे नहीं । प्रहलाद, ईसा, सुकरात, बुद्ध, दयानन्द आदि को केवल इसी अपराध में सताया गया कि वे लोगों को सुधारने के लिये करते थे ।

प्रकृति के साथ मनुष्य की उद्दण्डता ने पिछले दिनों बुरे से बुरे किस्म का अनाचार करने में कमी नहीं रखी है । मर्यादाओं का बुरी तरह उल्लंघन किया गया है । फलतः उसका क्रुद्ध होना और प्रतिशोध पर उतरना स्वाभाविक है । इन दिनों प्रकृति प्रकोपों का दौर भी कम न रहेगा ।

प्रतिरोधों से जूझने की शक्ति अर्जित करना और अनौचित्य को निरस्त करने के लिये सामूहिक संघ शक्ति का उद्भव करना भी समय की महती मांग है ।

यही तीन चरण हैं और युग संधि वेला में इन्हें प्रत्येक व्रतधारी को तत्परता और तन्मयता के साथ अपनाना व बखूबी सम्पन्न करना चाहिये ।

अनौचित्य के विरुद्ध समर्थ नैतिक क्रांति की आवश्यकता

यह संसार पाँच तत्त्वों का बनाया हुआ है । पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश के समिश्रण से यह विविध विधि, सृष्टि निर्मित हुई । चेतन जगत को प्रतिध्वनित करने वाली पाँच तन्मात्राएँ हैं—गंध, रस-रूप, स्पर्श, शब्द क्रमशः इन्हीं पाँचों का प्रतिनिधित्व ज्ञानेन्द्रियाँ करती हैं । नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा, कान इन पाँचों की अनुभूतियों के आधार पर शरीर और मन का ढाँचा खड़ा हुआ है । पूजनीय देवताओं में पाँच प्रधान माने गये हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गौरी और गणेश । यह पृथ्वी पाँच महा द्वीपों में बँटी हुई है और समुद्रों का विभाजन भी पाँच भागों में हुआ है । यहाँ पाँच की संख्या में जुड़े हुए अनेक माध्यमों को इतना उत्कृष्ट कहा जा सकता है कि उनके लिये सृष्टि का प्राण संबोधन करना अनुचित न होगा । पंच परमेश्वर कहने का अर्थ यह है जहाँ पाँच श्रेष्ठ व्यक्ति उपस्थिति हों वहाँ परमेश्वर ही उपस्थित जाना जाय ।

व्यक्ति और समाज को सुव्यवस्थित और समुन्नत स्थिति में बनाये रहने के लिये पाँच शक्तियाँ ही प्रमुख हैं (१) शासन (२) धर्म (६) विद्या (४) कला (५) धन । इन्हीं के आधार पर कोई देश या समाज ऊँचा उठता है और समर्थ बनता है । व्यक्ति का स्तर उठाने में भी इन पाँचों की ही गरिमा सन्निहित हैं । इनका सदुपयोग जहाँ कहीं भी होगा वहाँ सुख-शान्ति का वातावरण उत्पन्न होगा और जहाँ कहीं उनका दुरुपयोग हो रहा होगा वहाँ पतन और विनाश की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही होंगी ।

स्वर्ग के देवता जो भी हो, सूक्ष्म जगत में जिनका भी प्राधान्य हो, प्रत्यक्ष जगत में पाँच देवता ही प्रत्यक्ष हैं और उनकी कृपा एवं तत्परता का परिणाम ही आनन्द और उल्लास के रूप में सम्पत्ति और प्रगति के रूप में दीख पड़ता है और उनका प्रकोप एवं रोष दशों दिशाओं में कुहराम उत्पन्न कर देता है और सर्वत्र नरक की सर्वभक्षी दावानल धधकने लगती है । इन पाँच देवताओं के नाम हैं (१) राज नेता (२) धर्माचार्य (३) बुद्धि जीवी (४) कलाकार और (५) धनवान । चूँकि पाँचों शक्तियों के अधिपति यही लोग हैं, इस लिए इन पाँचों वर्गों के प्रत्य रूपेण व्यक्ति और समाज का कर्ता, भर्ता, हर्ता कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगी यह जिस दिशा में चलते हैं, सब उसी दिशा में चलने लगते हैं । पवन के प्रवाह के साथ पत्ते और रेत के कण उड़ते चले जाते हैं जल का प्रवाह जिधर बहता है उसी दिशा में लहरों की गति होती है। इन पाँचों सत्ता धारियों की दिशा जिधर भी चल रही होगी साधारण जनता का समाज के क्रिया कलाप का चिन्तन और कर्त्तव्य उसी दिशा में चलता, बढ़ता देखा जायगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवताओं को सम्मान मिलता है क्योंकि उनके अनुग्रह पर सुख-शान्ति का आधार अवस्थित है । शक्ति की, शक्तिवान की पूजा का होना स्वाभाविक भी है । वैभव और विनाश शक्ति से सम्भव होता है इस लिये जहाँ कहीं शक्ति स्रोत होगा वहाँ जन साधारण को मस्तक झुकाना ही पड़ेगा । आज भी इन पाँच देवताओं को हर जगह सम्मान मिलते पूजा उपकरणों से अलंकृत देखते हैं । धन और यश इन पाँच वर्ग के लोगों को ही मिलता है । विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व वे ही करते हैं । जनता उनका वर्चस्व भी स्वीकार करती है । अपने समय निर्माता वस्तुतः—यह पाँच ही हैं । परिस्थितियों का श्रेय इन्हें ही दिया जाना चाहिए क्योंकि निर्माण की सर्वतोमुखी जिम्मेदारी इन्हीं की है। जब जब इन पाँच वर्गों ने अपना स्तर ऊँचा रखा है और क्रिया कलापों में अपने महान गौरव एवं उत्तरदायित्व को ठीक तरह संभाला है वहाँ स्वर्गीय वातावरण ही पैदा हुआ है ।

साथ ही एक और बात भी जुड़ी हुई है कि यदि इन सत्ता धीशों ने अपनी क्षमता का दुरुपयोग किया । दुष्टता और दुर्बुद्धि का परिचय दिया तो उसका दुष्परिणाम सारे समाज को भुगतना पड़ता है । शासन के सूत्रसंचालक यदि व्यक्तिगत स्वार्थ साधन पर उतर आयें, सत्ता को अपने हाथ से न जाने देने के लिये हर बुरा भला कदम उठाने को उत्पर हो जायें, पक्षपात वरते और अनीति का समर्थन करें तो समझना चाहिए कि सारा शासनतंत्र ही भ्रष्ट हो जायगा और सत्तातन्त्र के भ्रष्ट होने पर उनके प्रभाव और दबाव में रहने वाली जनता को भी इस भ्रष्टता की कीचड़ में धँसना पड़ेगा । राजनेता, जिन राज कर्मचारियों के माध्यम से स्वार्थ साधन करते हैं वे उस दुर्बलता को समझ जाते हैं । उनका जितना काम निकालते हैं अपना उससे सौगुना अधिक काम बनाते हैं । और जिन तरीकों से यह स्वार्थ साधन की प्रक्रिया चलती है उससे अधिकारी का जितना स्वार्थ सिद्ध होता है उससे सौगुनी क्षति जनता की होती है ।

मान लीजिए एक मिनिस्टर हजार रुपये प्राप्त करना चाहता है । वह अपने सम्पर्क में रहने वाले इंजीनियर से लेगा । इंजीनियर ठेकेदार से एक लाख वसूल करेगा और ठेकेदार इस लाभ को देने के लिये जितना खराब और घटिया काम करेंगे उससे जनता को एक करोड़ की क्षति उठानी पड़ेगी । घड़ी में चाबी एक मिनट में लग जाती है उसका कटाव चौबीस घंटे उस मशीन को चलाता रहता है । शासन के सूत्र संचालक नेताओं की दिशा जिधर भी उठती है, आँधी के साथ उड़ने वाले पत्तों की तरह परिस्थितियों का प्रवाह उधर ही दौड़ने लगता है ।

राजतंत्र भौतिक जगत पर शासन करता है और धर्म भावना के अन्तर्गत जगत पर धर्माचार्य जनता की आस्था, श्रद्धा, भावना, आकांक्षा, मान्यता एवं दिशा का निर्माण करते हैं । वे सही हो तो बुद्ध, गोविन्द, विवेकानन्द, गांधी आदि की तरह कोटि-कोटि मानवों की चिन्तन प्रक्रिया को उत्कृष्टता की दिशा में भेज सकते हैं, पर यदि वे भ्रष्ट हों तो वह अनाचार उत्पन्न करते हैं जो धर्म के क्षेत्र में फैले हुए अंधेर के रूप में हमारे समाने हैं । पाखण्ड प्रवंचना, प्रमाद, भ्रान्ति, संकीर्णता, परावलम्बन, अकर्मण्यता एवं मिथ्या, काल्पनिकता के जंजाल में जन मानस को, जनता को किस बुरी तरह उलझाया जा सकता है यह सम्मुख है यदि धर्माचार्यों का स्तर ऊँचा रहे और वे लोक मंगल के अनुरूप कार्य पद्धति अपना लें तो आज भी ऋषियों का यह देश पूर्व काल की तरह महामानवों ही का भण्डागार दीख पड़े ।

तीसरा वर्ग शिक्षकों का है । इसमें केवल अध्यापक ही नहीं आते वे लोग भी आते हैं जो लोगों के संमुख सोचने की सामग्री प्रस्तुत करते हैं । इन्हें बुद्धि-जीवी कहा जाना चाहिए । ज्ञान का विस्तार जिन लोगों के द्वारा होता है । जनसाधारण की समझ को जो प्रभावित करते हैं वे सभी लोग शिक्षक वर्ग में आते हैं । इतिहास भाषा भूगोल पढ़ा देना तो पढ़ाने वालों का काम है, यह अध्यापक वर्ग भी छात्रों के सम्पर्क में रहने के कारण उनके चिन्तन को परिष्कृत बना सकता है और शिक्षक की भूमिका भी सम्पादित कर सकता है । इसके अतिरिक्त साहित्यकार इस वर्ग में आते हैं । पत्रकार सम्पादक लेखक आदि इसी श्रेणी में आते हैं । उनकी रचनाएँ स्वान्तः सुखाय लिखी भले ही गई हों पर जब वे प्रकाशित होती हैं तो लोक मानस को प्रभावित करती हैं । किसी समय के साहित्य को देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस समाज में सर्वसाधारण की मानसिक स्थिति किस स्तर की रही होगी। व्यख्यानदाता, समाज सेवी, आन्दोलनकारी, रचनात्मक कार्यों में संलग्न संस्था संचालक एवं अन्य प्रकार के लोग सेवी वर्ग को भी बुद्धि जीवियों की ही श्रेणी में गिना जाना चाहिये । बुद्धि जीवी का अर्थ बुद्धि के द्वारा आजीविका कमाने वाले नहीं हो सकते—इस परिभाषा के अनुसार तो दलाल, वकील, क्लर्क, मुंशी से लेकर ठगी का धंधा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने वालों तक सभी लोग बुद्धि जीवी कहलायेंगे । बुद्धि को जीवन प्रेरणा देने वालों को बुद्धि जीवी कहा जाना चाहिए । इस वर्ग में ही वे सब लोग सम्मिलित किये जा सकते हैं जो किसी न किसी प्रकार जनसाधारण की भावना, विचार शीलता, चिन्तन प्रक्रिया एवं मनोदशा को प्रभावित करते हैं । पढ़ने सुनने और देखने की प्रभाव पूर्ण सामग्री प्रस्तुत करके यही वर्ग जनसाधारण के मस्तिष्क को गति देता है और उसी से प्रेरणा लेकर लोग अपनी कार्य पद्धति निर्धारित करते हैं । आज की पथभ्रष्टता एवं विकृतियों के लिये यह बुद्धि जीवी वर्ग भी जिम्मेदार है । यदि उनकी रचनाओं अभिव्यंजनाओं उपदेशों, प्रतिपादनों में जनमानस का स्तर ऊँचा उठाने वाली प्रखरता भरी रहती, उनके चरित्र और आदर्श ऊँचे होते तो कोई कारण नहीं जनता नीचे स्तर का चिन्तन करे और निष्कृष्ट कर्त्तत्व को निर्लज्ज होकर अपनाये ।

चौथा वर्ग कलाकारों का आता है । संगीत, गायन, वाद्य, अभिनय और चित्रकला, मूर्तिकला आदि इसी श्रेणी के क्रिया कलाप हैं । इस सबका समन्वय सिनेमा में हो गया है । इन दिनों लोक रंजन के पुराने माध्यम प्रायः समाप्त हो गये । कठपुतली, रीछ, वानर, नर, बाजीगर, सर्कस, नाटक, अभिनय आदि के मनोरंजन यदा कदा ही दीख पड़ते हैं और उनका भी स्तर तथा विस्तार दिन दिन घटता जा रहा है । इन दिनों एक प्रकार से राष्ट्रीय सर्वमान्यता सम्पन्न मनोरंजन एक ही रह गया है—सिनेमा ! कलाकारों को आश्रय अब इसी वृक्ष के नीचे मिलता है । जनता की कला और विनोद की रुचि भी यहीं पूरी होती है। चित्र कला मूर्तिकला आदि का तो अस्तित्व मात्र ही बाकी है । मूर्तियों में देवी-देवता और चित्रों में अर्धनग्न वेश्या जैसी भाव भंगिमा । वाली कामिनी और रमणी की फूहड़ तस्वीरें ही जहाँ तहाँ छपती बिकती देखी जाती हैं । नर और नारी की शालीनता और गरिमा को प्रस्तुत करने वाले चित्र तो समुद्र में बूँद जैसे जहाँ तहाँ दीख पड़ते हैं ।

आज कला का केन्द्र बिन्दु सिनेमा ही रह गया है। लोकरंजन के साथ लोक शिक्षण को मिलाकर बहुत ही महत्त्वपूर्ण ढंग से जन मानस का निर्धारण किया जा सकता है । इस दिशा में सिनेमा बहुत काम कर सकता था । प्रगति शील देशों में उसने भारी काम किया भी है । जर्मनी ने अपने देश वासियों को किसी समय फासिस्ट बनाने में सिनेमा से बड़ी सहायता ली थी । रूस, चीन आदि साम्यवादी देशों ने सिनेमा से प्रजा के मस्तिष्क को अपने आदर्शों के अनुकूल ढालने में एक महतत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रयुक्त किया है । अपने देश में जो शिक्षण सिनेमा से मिल रहा है उसे हम दुःख और निराशा की दृष्टि से ही देख सकते हैं । कलाकार भावनाओं को स्पर्श करता है । गायन, वाद्य, अभिनय की अपनी सामर्थ्य है, चित्र जनमानस का स्पर्श करते हैं कला की सामर्थ्य का यदि सदुपयोग किया जा सकता तो जन साधारण में निकृष्ट चिन्तन और घृणित कर्तृत्व के दृश्य कहीं देखने को न मिलते । संसार में उत्कृष्ट जीवन की हरियाली ही लहरा रही होती ।

पाँचवी शाक्ति धन की है । धनी लोग अपने वैभव, ठाट वाट और ऐश आराम का जो स्वरूप बनाते हैं, उनसे जन साधारण की लालसा भड़कती है और हर व्यक्ति वैसे ही उपयोग के लिये लालायित होता है । सीधे रास्ते धनी बनना तो कठिन है । जल्दी का रास्ता अनीति और बेईमानी का ही दीख पड़ता है सो धन से उपलब्ध ठाट वाट प्राप्त करने के लिये सर्वसाधारण का जी ललचाता है वह अपराधों का रास्ता अपना कर धनी बनने के लिये अग्रसर होता है।

धन उपार्जन बुरा नहीं सम्पत्ति बढ़ने से देश की समृद्धि बढ़ती है और लोगों को काम मिलता है पर उसका उच्छृंखल उपयोग बुरा है । घर का कमाऊ व्यक्ति उपार्जन तो बहुत करता है पर उसका लाभ सब लोग समान उठाते हैं और उपयोग मिल जुलकर समान रूप से करते हैं । कमाऊ व्यक्ति अधिक उपयोग करने लगे तो उसे पारिवारिक भावना के विरुद्ध एवं अनैतिक माना जायगा । अधिक उपार्जन करने वालों को भी अपना जीवन यापन का स्तर तथा खर्च उतना ही रखना चाहिए जैसा कि अपने देश वासियों का जन स्तर है । अधिक उपार्जन को सहयोगी श्रमिकों में तथा लोक कल्याण के कार्यों में दान रूप वापिस कर देना चाहिए। धन का यही उपयोग न्याचोचित है ।

बेटे-पोतों के लिये दौलत जमा करने और स्वयं उच्छृंखल विलासिता का ठाट बनाने का परिणाम सब प्रकार बुरा ही बुरा होता है । ईर्ष्या भड़कती है, लोग उस संग्रीहत धन के लिये ललचाते हैं । अपने में विलासिता व्यसन, अहंकार आदि की दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं । लोभ बढ़ते जाने से अनीति उपार्जन में उत्साह बढ़ता है, पास में होते हुए भी दूसरों की सहायता से हाथ सिकोड़ना पड़ता है, उदार हृदय वाले के लिये तो सम्पत्ति संग्रह करना कठिन ही हो जाता है, संग्रह को सुरक्षित रखने के लिये समाज की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकताओं की ओर से निष्ठुरता धारण करनी पड़ती है, बेटे पोतों को हराम की कमाई मिलने से वे आलसी, व्यसनी और अपव्ययी बन जाते हैं जो परिश्रम पूर्वक कमाया नहीं गया है उसे फिजूल खर्ची में उड़ाते हुए भी बेटे पोतों को दर्द नहीं आता, वे आपस में धन के वितरण पर लड़ते मरते भी देखे गये हैं । गिनाये जायँ तो ऐसे-ऐसे हजारों दुष्परिणाम धन के संग्रह करने एवं ठाट बाट बनाने वाले के हैं । एक के अमीर बनने में सौ को गरीब रहने की प्रत्यक्ष या परोक्ष विवशता उत्पन्न होती है । एक दीवार तभी ऊँची उठेगी जब उतनी ईंट मिट्टी उपलब्ध करने के लिये कहीं गड्ढा बनाना पड़ा होगा । अनेकों को निर्धन रखने की विवशता उत्पन्न करके ही एक की अमीरी रूपी दीवार खड़ी होती है ।

जिन्हें धन की शक्ति प्राप्त हो गई है उनके लिये उसके सदुपयोग का एक ही मार्ग है कि समाज के पिछड़े पन को दूर करने के लिये उसे मुक्त हस्त से देने के लिये तत्पर बने । आज जितना धन लोगों की तिजोरियों में बैंकों में, सोने-चाँदी में, जमीन-जायदादों और ठाट, वाटों में रुका पड़ा है यदि वह उस अनुदार निष्ठुरता को, लालच और लिप्सा के चंगुल में से निकाँल कर लोग मंगल की सत्प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करने एवं बढ़ाने में लगाया जा सके तो इतने रचनात्मक कार्यों का उद्भव हो सकता है जिससे जनसाधारण का आर्थिक और नैतिक अभाव पूरा कर सकना कुछ भी कठिन न रहे । इन दिनों घायल मानवता को बल देने वाले ऐसे अनेकों बौद्धिक प्रेरणा प्रदान करने वाले निर्माणों की जरूरत है जो पतन को उत्थान में परिणत कर सकें । प्रेरणाप्रद साहित्य, प्रेरणाप्रद फिल्में, भावपूर्ण ग्रामोफोन, रिकार्ड, गोरस व्यवसाय, जड़ी बूटियों का उत्पादन, फल-पुष्पों की पौध और बीज बेचने वाली नर्सरी, गृह उद्योगों के उपकरण आदि अनेकों वस्तुऐं ऐसी हैं जिनकी आज देश को भारी आवश्यकता है और उनके बिना हर्ज भी बहुत हो रहा है पर चूँकि कम लाभ के व्यवसाय में धनियों की रुचि नहीं इसलिये वे सभी उपयोगी कार्य एक प्रकार से रुके ही पड़े हैं । यदि धनपतियों में उदारता रही होती तो उन्होंने स्वल्प लाभ या बिना लाभ के अपनी पूँजी को सुरक्षित रहने मात्र के संतोष पर ऐसे अनेक कार्यों को संचालित किया होता जो देश के पिछड़ेपन को दूर करने में सहायक हो सकते थे ।

इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में पिछड़ेपन को दूर करने के लिये संलग्न होने वाले लोक सेवियों के निर्वाह व्यय के लिये पैसा देकर कार्य कर्त्ताओं की एक बड़ी सेना खड़ी की जा सकती थी और जो लोग परिवार का पोषण व्यवस्था न होने के कारण अपनी प्रतिभा सिकोड़े बैठे हैं उन्हें आगे बढ़कर जौहर दिखाने का अवसर मिल सकता था । विचार क्रान्ति नैतिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति का रथ साधनों के अभाव की कीचड़ में धँसा अवरुद्ध खड़ा है इसे अधिक सहायता देकर आगे बढ़ाया जा सकता था ।

समुद्र मंथन के समय उपलब्ध अमृत का लाभ उठाने के लिये देवताओं की पंक्ति में कुछ असुर देवताओं का वेष बनाकर सम्मिलित हो गये थे । यह अनर्थ भगवान ने देखा तो वे सोचने लगे अमृत का लाभ असुरों को मिला तो वे उस उपलब्ध अमरता का दुरुपयोग करेंगे और संसार में कुहराम मचा देंगे इसलिये उन्हें हटा देना ही उचित समझा और चक्रसुदर्शन से उन देव वेष में छिपे बैठे असुरों का सिर काटकर फैंक दिया । पौराणिक गाथा आज भी विभिन्न परिस्थितियों में क्या किया जाना चाहिए इसका ठीक सा पथ प्रदर्शन करती हैं । शक्तियों का पंचामृत देवताओं के पास रहना चाहिए क्योंकि वे ही उसका सदुपयोग कर सकते हैं । असुरों का काम दुरुपयोग करना ही है । उनके पास अमृत जैसी वस्तु पहुँच जायं तो भी वे उसका लाभ न स्वंय उठा सकेंगें और न किसी को चैन से रहने देंगे । उनके पास जाकर श्रेष्ठ वस्तु भी कलंकित हुए बिना न रहेगी, अस्तु उचित यही है कि यदि उनके पास नहीं गई है तो जाने न दी जाय और चली गई है तो छीन ली जाय । राहुकेतु को इसीलिये अमृत्त्व से वंचित किया गया था । यदि वह देव होता तो भगवान प्रसन्नता पूर्वक उसे वह लाभ उठाने ही न देते वरन, उसमें सहायता करते, कुपात्रों को तो वंचित किया जाना ही उचित है । सो उस छद्म वेषधारी असुर का सिर इसी आधार पर काटा गया था। आज की उसी प्रक्रिया की पुनरावृत्ति आवश्यक है। शक्तियाँ देवत्त्व हैं । वे तो हमारे जीवन, मरण की सहचारी है । शक्ति के बिना प्रगति नहीं, शान्ति नहीं, स्थिरता नहीं सो शक्तियों की निन्दा नहीं की जा सकती न उपेक्षा की जा सकती है और न दुरुपयोग सहन किया जा सकता है ।

आज असुरता के साम्राज ने संसार की प्राणदेव शक्तियों को भी अपने लोह पाश में कस लिया है । राहु द्वारा सूर्य, चन्द्र को ग्रस लेने पर अंधकार छा जाता है और घुटन पैदा हो जाती है । इन दिनों में देवत्त्व का दम घुट रहा है और अशक्त बना जन

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समाज त्राहि-त्राहि कर रहा है । इस स्थिति का अन्त होना ही चाहिए ।

शासन सत्ता उनके हाथ रहनी चाहिए जो उसका उपयोग विशुद्ध रूप से प्रजा पालन के लिए कर सके । अश्वघोष जनक आदि की तरह जो निस्पृह रह सके, नासिरुद्दीन की तरह जी टोपियाँ सीकर अपना पेट पाले और शासन का कार्य परमार्थ लोक सेवक की तरह साधन तपश्चर्या की तरह सम्पन्न करें । हमें चाणक्य जैसे शासन सूत्र संचालक चाहिए जो पैदल चलकर फूँस की कुटिया में निवास करने जाया करे और शासन व्यवस्था चलाने का कार्य किसी अनुष्ठान की तरह सम्पन्न किया करे । धर्माचार्या के पद पर वशिष्ठ, व्यास, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य, शुकदेव, कपिल, कणाद जैमिनी जैसे परखे हुए लोग ही आसीन होने चाहिए । बुद्धिजीवी वर्ग को शंकराचार्य, वादुरायण, चरक, पाणिनि, सूर, तुलसी, कबीर जैसों का अनुकरण करना चाहिए । कलाकार, नारद, और मीरा से प्रकाश ग्रहण कर सकते हैं । धनवानों को वाजिश्रवा, हरिश्चन्द्र, भामाशाह जैसे आदर्श प्रस्तुत करने के लिए आगे आना चाहिए ।

समय आ गया है कि देव और असुरों को अलग-अलग पंक्तियों में खड़ा किया जाय । शक्तियों को प्राप्त कर जो उनका सदुपयोग करते रहें उन देवताओं को जनता का भी पूरा सम्मान मिलना चाहिए और उनकी महानता को पग पग पर सराहा जाना चाहिए । साथ ही जिन्होंने इन्हें पाकर दुरुपयोग किया उन्हें उनकी संकीर्ण स्वार्थ परिता के लिये लज्जित किया जाना चाहिए ।

भ्रष्टता इसलिए फैलती रही कि देव शक्तियों का दुरुपयोग करने वाले भी सम्मानास्पद माने जाते रहे और उन्हें सहयोग समर्थन मिलता रहा । साधुता इसलिये मरती गयी कि उसे उपहास मिला और उपेक्षित माना गया । किसी ने उसे सराहा नहीं और न सहयोग दिया अब जब कि नया निर्माण करना ही है तो उन पुराने मुल्यांकनों को बदलना पड़ेगा जो इस दुरुपयोग को प्रोत्साहित करने का उत्तरदायी है । अनाचार को पदच्युत करने और सदाचार को पदासीन करने के लिये चाहे कोई प्रत्यक्ष शस्त्र साधन भले ही अपने पास न हो पर एक बड़ा अप्रत्यक्ष शस्त्र जनता के पास अभी भी है कि वह भले और बुरे का अन्तर करना सीखें देव और दानव को अलग-अलग पंक्तियों में खड़ा करें । देवताओं की हम प्रत्यक्ष सहायता न कर सकें तो भी उन्हें श्रद्धा, प्रशंसा, सम्मान, सहयोग, समर्थन तो प्रदान कर ही सकते हैं असुरों का दमन करना यदि अपने हाथ में न हो तो कम से कम उन्हें निरुत्साहित और लज्जित तो किया ही जा सकता है । सहयोग समर्थन और सम्मान से उन्हें वंचित किया ही जा सकता है । जनता जब भले और बुरे का, उदार और निष्ठुर का, स्वार्थी और सज्जन का अन्तर करने लगेगी और तदनुसार ही उस का मूल्यांकन करेगी तो उस अन्धेर के तिरोहित होने में देर न लगेगी जिसकी आड़ में निशाचर फल-फूल रहे हैं और देवी को निराश्रित होकर ठोकरें खाते हुए भटकना पड़ रहा है।

लोक मत की शक्ति अपार है । लोक मानस जब तक मूर्छित पड़ा है तब तक मृतक है उसे कोई भी पद दलित करता रह सकता है । पर जब वह सजग होकर उठ खड़ा होता है तो फिर उसका सामना कर सकने में संसार की कोई सत्ता समर्थ नहीं हो सकती । शस्त्रों से व्यक्ति मरते हैं पर लोक मत की जिस पर वास पड़ती है वह विडम्बना कितनी बड़ी क्यों न हो देखते-देखते जल बल कर नष्ट हो जाती है । लोक मत का सींचा हुआ सूखा वृक्ष भी हरा और भरा हुआ आधार भी जीवित हो जाता है । इस मर्म को समझते हुए हमें ऐसा प्रचंड लोक मत जाग्रत करना चाहिए जिसमें अनाचार को जीवित रह सकना असंभव हो जाय । उन शक्तियों को पाकर जिन्होंने उनका सदुपयोग किया उनकी प्रशंसा और प्रतिष्ठा के लिये चर्चा और अनुकरण के लिए एक सुव्यवस्थित अभियान चलाया जाना चाहिए । वैसे भारतीय संस्कृति में इन पाँच प्रयोजनों के लिये पाँच त्यौहार भी बहुत पहले से निर्धारित हैं (१) विजया दशमी आश्विन सुदी १० राज पर्व (२) दिवाली-कार्तिक वदी ३० धन पर्व (३) वसन्तपंचमी-माघ सुदी ५ बुद्धिपर्व (४) होली फाल्गुन पूर्णिमा कला पर्व (५) गायत्री जयन्ती-गंगा दशहरा— जेष्ठ सुदी १० धर्म पर्व । इन पाँच अवसरों पर ऐसे समारोह किये जा सकते हैं जिनमें इन शक्तियों से सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा उन्हें लोग मंगल के लिये परमार्थ प्रयोजनों के लिये किस प्रकार प्रयुक्त किया, इसके देशी विदेशी उदाहरणों की चर्चा की जानी चाहिए उनके चित्रों की प्रदर्शनी, प्रतिष्ठा-कार्यक्रमों के साथ उन प्रसंगों को गायनों, भाषणों, अभिनयों द्वारा जन साधारण के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए । साथ ही इन शक्तियों का संकीर्ण स्वार्थ परता के लिये दुरुपयोग करके किस प्रकार स्वयं पतित बने और उस लिप्सा ने जनता को कितनी हानि पहुँचाई इसकी भी विवेचना की जानी चाहिए । यों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह सदुपयोग दुरुपयोग की चर्चा प्रत्यक्ष तथा दिवंगत लोगों की हो पर उनका संकेत आज के लोगों पर भी ढाला जा सकता है । पौराणिक, ऐतिहासिक ही नहीं सामान्य स्तर के अप्रसिद्ध और गरीब लोगों की प्रतिष्ठा प्रशंसा को इन पर्वों में स्थान दिया जा सकता है जिसने स्वल्प शक्ति होने पर भी उदरता और परमार्थ वृत्ति का बढ़कर परिचय दिया हो । उपरोक्त पर्वों के अतिरिक्त कभी भी सुविधानुसार ऐसे आयोजन किये जा सकते हैं। जहाँ संभव हो वहाँ नाटक, अभिनय, प्रकाश चित्र, स्लाइड प्रोजेक्टर, संगीत कला आदि के माध्यम से भी ऐसी व्यवस्था की जा सकती है जिससे जनता के मन पर उपरोक्त पाँच शक्तियों के सदुपयोग दुरुपयोग करने वालों के लिये श्रद्धा और घृणा विकसित करने का दोनों को भले बुरों की दो अलग-अलग पंक्तियों में खड़ा करने का अवसर मिल सके ।

सही मूल्यांकन न कर सकने के भेड़िया घसाने ही लोक मत की शुद्धता को विकृत कर दिया है । यदि भले-बुरे और के बीच स्पष्टता और प्रखरता के साथ अन्तर किया जाता रहता, अवांछनीय आचरण करने वाले पग-पग पर तिरष्कृत और अपमानित होते, उनसे सीधे मुँह कोई बात न करता, न उनके साथ बैठता न उन्हें अपने पास बैठने देता सर्वत्र उन्हें असहयोग विरोध और घृणा का ही उमार दीखता तो उस लोमत के आगे उन्हें अपनी गति विधियाँ बदलने के लिये विवश होना ही पड़ता । नहं बदलते तो कम से कम दूसरे विचार शील लोग उनका अनुकरण करने की तो हिम्मत नहीं करते ।

आज तो यह होता है कि उपलब्ध शक्तियों को सार्वजनिक सुविधा के लिये मिली हुई अमानत न समझ कर जो उनके द्वारा स्वार्थ साधन दुरुपयोग में ही संलग्न हैं । वे समाज में लज्जित किये जाने के स्थान पर उलटा सम्मान पाते हैं । चापलूस और स्वार्थी लोग उनसे कुछ पाने या पाने की आशा होने से उनकी चापलूसी और प्रशंसा करते रहते हैं । किसी सभा संस्था को थोड़ी बहुत सहायता करके वे अखवारों में अपना नाम छपा लेते हैं, नाम के पत्थर जड़वा लेते हैं। अभिनन्दन और मान पात्र ले लेते हैं और सभापति संरक्षक आदि का पद प्राप्त कर लेते हैं । पैसों से जब सम्मान भी खरीदा जाने लगा तो फिर पैसा ही सब कुछ हो गया । किसी भी तरह कितना ही पैसा कमाया जाय और अनुचित की निन्दा होने की सम्भावना प्रतीत हो तो थोड़े से टुकड़े फैंककर उस निन्दा का मुँह बन्द कर दिया जाय, इतना ही नहीं प्रशंसा भी खरीद ली जाय । आज यही अन्धेर चल रहा है । लोकमत की दुर्बलता जब इतनी बढ़ जाय कि उसे भी मौत या भ्रमित कर सकना आसान हो जाय तब किसी समाज का ईश्वर ही रक्षक है ।

मनुष्य का मूल्यांकन हमें पुनः विवेक शीलता और न्याय निष्ठा के आधार पर कर सकने का साहसिक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए और लोक मत को बहकाया खरीदा न जा सके ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करनी चाहिए खरीदे हुए चापलूसों द्वारा किसी अवांछनीय व्यक्ति का सम्मानित होना एवं विरोध से बचे रहना सम्भव न हो सके ऐसे जागरूक प्रहरियों की एक सेना खड़ी की जानी चाहिए । चीन की तथाकथित बदनाम सांस्कृतिक क्रांति की नकल तो हमें नहीं करनी है पर कुछ न कुछ नैतिक क्रान्ति की रूप रेखा खड़ी जरूर करनी पड़ेगी । यदि कुछ भी न किया जा सका और प्रचलित अन्धेर ज्यों का त्यों चलता रहा तो नैतिक मार्ग पर चलने वाले और आदर्श अपना कर त्याग बलिदान के उदाहरण प्रस्तुत करने वालों का हौंसला टूट जायगा उन्होंने सांसारिक शानशौकत खोई और समर्थन सहयोग सम्मान से भी वंचित रहे । दुहरा घाटा उठा कर संमार्ग-गामियों का साहस टूट रहा है यदि उस दिशा में कुछ न किया जा सका तो उनकी हिम्मत और कमजोर होती चली जायगी फलतः किसी भी रास्ते शक्तियाँ उपार्जित करना और उनका कैसा ही भला-बुरा उपयोग करना आज की तरह आगे भी जारी रहेगा । सज्जनों के हाथ निराशा ही रह जायेगी ।

सज्जनता और उदारता को सम्मानित करने का आन्दोलन हमें पूरी शक्ति से चलाना चाहिए । ऐसी पत्र-पत्रिकाएँ निकालनी चाहिए जिनमें आदर्श उपस्थित करने वाली घटनाओं का प्रभावोत्पादक वर्णन हो । ऐसे गीत लिखे और गाये जाने चाहिए जिनमें शक्तियों को लोक मंगल के लिये प्रयुक्त किये जाने की प्रशंसात्मक चर्चा हो । यह भूलना नहीं चाहिए कि आगे प्रशंसा को ही रखा जाय पर उसके साथ निन्दा भी जुड़ी ही रहनी चाहिए जिन लोगों ने इन पाँच शक्तियों को मात्र स्वार्थों के लिये कैद रखा या उनसे जनता को हानि पहुँचाई उनकी निन्दा के लिये इसी सज्जन की प्रशंसा के नाम पर चलाये गये अभियान के साथ-साथ पूरी तरह समावेश होना चाहिए । सत्कार्यों के समर्थन के लिये ऐसे साहसी लोगों को मान पत्र देने, सार्वजनिक अभिनन्दन करने, जनता के प्रेम के प्रतीक कुछ उपहार देने, प्रशंसात्मक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्य करने वालों के चित्र और विवरण छाप कर बाँटने जैसे कार्य समय-समय पर किये जाने चाहिए । लोक-सेवियों के नाम पर उनकी स्मृति के वृक्ष लगाये जा सकते हैं या गली मुहल्लों, सड़कों, विद्यालयों आदि के नामकरण किये जा सकते हैं । यदि वे व्यक्ति स्वर्गीय हैं तो उनके चित्रों को भी सार्वजनिक स्थानों में स्थापित किया जा सकता है ।

लोक-मत जागृत करने के लिये अभी इस प्रकार का रचनात्मक आन्दोलन ही चलना चाहिए पर जब आन्दोलनों में परिपक्वता आ जाय तो स्वार्थी लोगों को लज्जित करने का अभियान भी चलाया जा सकता है । इसमें कुछ बैर विरोध होने की सम्भावना है सो उसके लिये भी आगे चलकर ऐसी मंडलियाँ स्थापित की जा सकती हैं जो बैर विरोध के कारण होने वाली हानि को सहने के लिये तैयार हों । मारपीट से लेकर उन्हें इलजामों में फँसाने और मान हानि के मुकदमे चलने तक की स्थिति इस स्थिति में पैदा हो सकती है जब कि आगे चलकर आन्दोलन अनुचित का विरोध करने और अवांछनीयता को नंगा करने की स्थिति में मजबूत होते-होते पहुँच जाय समयानुसार उस हानि को उठाने की क्षमता भी अपने में पैदा करने की आवश्यकता अनुभव होने लगे तब असहयोग बहिष्कार, सत्याग्रह, घिराव जैसे कदम भी बढ़ाये जा सकते हैं और उसके लिए एक स्वयं सेवक सेना खड़ी की जा सकती है ।

स्मरण रखा जाय—लोक मत की शक्ति कम नहीं है वह अभी प्रसुप्त मूर्छित और निष्क्रिय पड़ी हुई है और उसमें कुछ बनाने बिगाड़ने की शक्ति नहीं है । लोकमत को जागृत और समर्थ बना लिया जाय और उसमें परिपक्वता न्याय, निष्ठा, वास्तविकता एवं दूर दर्शिता के आधार पर मूल्यांकन करने की, उचित का समर्थन अनुचित का विरोध करने की-क्षमता उत्पन्न कर दी जाय तो निस्संदेह यह एक कारगर हथियार होगा और जो काम कानून द्वारा या दूसरे तरीकों से नहीं हो सका वह इस उपाय से सरल एवं सम्भव हो जायेगा ।

पाँचों देव शक्तियों का उपयोग उनके उपार्जनकर्त्ता न्यूनतम मात्रा में ही अपने लिये कर सकें । उनका अधिकतम अंश लोक मंगल के लिये प्रयुक्त हो ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए । शांति और सुव्यवस्था का यही तरीका है । अन्यथा दुरुपयोग का वर्तमान क्रम जो विद्रोह उत्पन्न करेगा उससे नकसलवाद से लेकर गुण्डावाद तक कुछ भी पनप सकता है और स्वार्थों से बेतरह चिपके हुए लोगों को इतनी हानि उठाने के लिये विवश होना पड़ सकता है जिससे उनके हाथ रुदन और पश्चाताप ही शेष रह जाय वैसी स्थिति न आने देने के लिये हमें लोकमत जागृत करके सत्ता सम्पन्नों को सदुपयोग के लिये प्रेरित करना चाहिए । यही जनता के हित में है और उन सत्ता सम्पन्नों के हित में भी ।

सृजन की रूपरेखा एवं विस्तारक्रम

मिल, कारखानों और सराकारी विभागों में कर्मचारियों की भर्ती आसानी से हो जाती है । आकर्षक वेतन के अतिरिक्त फण्ड, पेन्शन आदि की सुविधाएँ जुड़ी होती हैं, पर उन सेवा संस्थानों की गतिविधियाँ चलाने में अत्यन्त कठिनाई पड़ती है जो कार्यकर्ताओं के लिए अभीष्ट सुविधाएँ जुटा नहीं पातीं। सेवा प्रयोजनों की प्रगाढ़ अभिरुचि होते हुए भी निर्वाह चाहिए ही । जिनके पास स्थाई आजीविका का प्रबन्ध है वे तो कार्यकर्ताओं को जमा किये भी रहते हैं, पर जिनका सब कुछ आकाशी वृत्ति पर टिका हुआ है वे किस के बूते तो सेवाकर्मियों को जुटायें और जो सेवा क्षेत्र में प्रवेश करना चाहते हैं वे निश्चित आजीविका के अभाव में किस प्रकार कहीं देर तक टिक पायें । यह एक पेचीदा प्रश्न है, जिसकी उपेक्षा करने पर वह नहीं हो सकता है, जिस व्यापक विचार क्रान्ति के लिए सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन हेतु इन्हीं दिनों किया जाना आवश्यक है । इन दिनों संसार की जनसंख्या ५०० करोड़ के ऊपर है। वह सन् २००० तक १००० करोड़ हो जाने की सम्भावना है । यदि एक हजार के पीछे एक युग शिल्पी भी जोड़ा जाय तो एक करोड़ नव-निर्माण में निरत व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी । दूर की बात न सोची जाय, मात्र अपने देश की योजना भर बनाई जाय तो शताब्दी के अन्त तक जनगणना १०० करोड़ के आसपास होगी । इनके लिए भी तो उस अनुपात से भारी संख्या में युग सृजेताओं को अपना पूरा समय लगाते हुए निर्धारित कठिन कार्य में अहर्निशि निरत रहना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सेवा क्षेत्र में कार्यकर्ताओं की आवश्यकता सब से प्रमुख है । देवालय खड़े कर देना सुगम है, पर उनके साथ यदि महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम जुड़ें तो उनके लिए सुयोग्य कार्यकर्ता चाहिए । एक तो इस संकीर्ण स्वार्थपरता के वातावरण में सच्चे उदारचेता और चरित्रवान कार्यकर्ता मिलना ही दूभर हो रहा है । फिर यदि वे मिले तो जीवित रहने के लिए निर्वाह तो चाहिए ही । वह कहाँ से आयें ? आरम्भ में उभरा उत्साह कुछ समय बाद आवश्यकताओं के दबाव से या तो अपना मन बदल लेता है या छद्म का आश्रय लेकर ऐसे प्रपंच रचने लगता है जो लोक सेवियों की प्रामाणिकता पर ही प्रश्न चिन्ह लगा देता है । अपने देश की साधु, ब्राह्मण संस्था को इसी प्रकार डगमगाते गड़बड़ाते देखा जा सकता है ।

विदेशों के ईसाई समाज में यह विचारशीलता देखी जाती है कि वे व्यक्तिगत दान न तो देते हैं और न लेते हैं । अभीष्ट सेवाओं में निरत प्रामाणिक संस्थाओं को ही वे दान देते हैं । उन्हीं के माध्यम से कार्यकर्ताओं की नियुक्ति तथा दूसरी व्यवस्थाएँ की जाती हैं । इस प्रकार निश्चिन्तता पूर्वक योजनाएँ बनतीं और चलती हैं। संसार भर में फैले हुए गिरजों, पादरियों की व्यवस्था तथा कार्यक्रम निश्चिन्तता पूर्वक चलते रहते हैं, पर अपने देश में तो वैसा कुछ है नहीं। सम्पन्न धर्म संस्था तथा धनी मानी लोगों द्वारा स्थापित पुण्यार्थ न्यास भी किस प्रकार बहकी-बहकी गतिविधियां चलाते हैं इसे कुछेक उदाहरण देखकर भी समझा जा सकता है । इसे अपने जैसे धर्म-परायण देश का तो दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि सुयोग्य और प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को निश्चिन्ततापूर्वक सृजन सेवा में निरत रहने का कोई ठोस आधार नहीं बन पाया ।

काँग्रेस आन्दोलन के जमाने में कुछ ऐसे प्रबन्ध हुए थे । कुछ इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक सोचा गया था । गोखले द्वारा "सर्वेण्ट आफ इण्डिया सोसाइटी" स्थापित हुई थी । लाला लाजपत राय के प्रयास से "पीपुल्स आफ इण्डिया" का गठन हुआ था । वह उत्साह उसी जोश खरोश के दिनों तक सीमित रहा । बाद में तो आन्दोलन के साथ उस प्रयास में शिथिलता आ गई । कुछेक गिनी-चुनी संस्थाओं के अतिरिक्त प्रायः सभी को राज सहायता पर निर्भर रहना पड़ रहा है ।

वह समय भी अब नहीं रहा । जब साधु-ब्राह्मण स्तर के लीक सेवियों की परमार्थ, परायणता और प्रामाणिकता के कारण उत्पन्न होने वाली श्रद्धा से लोग अनुप्राणित होते थे और भिक्षाटन से, दान दक्षिणा से अथवा देवालयों में संचित होने वाले साधनों के आधार पर उन लोक सेवियों का निर्वाह चल जाया करता था । गरुकुल भी आभावग्रस्त नहीं रहते थे । सुदामा के गुरुकुल को कृष्ण द्वारा अपनी समस्त सम्पदा का हस्तान्तरित होना प्रसिद्ध है । बुद्ध संस्थानों को हर्ष-वर्धन, अशोक आदि ने अभावग्रस्त स्थिति में नहीं रहने दिया था, पर इन दिनों तो अन्धविश्वासों का ही बोल-बाला है । गुण पारखियों और सृजन सेवा को प्रमुखता देने वाला चिन्तन कहाँ है ? साहस करना तो बहुत आगे की बात है ।

इन विषम परिस्थितियों में शान्तिकुंज के संचालकों को युग निर्माण जैसी विशालकाय योजनाओं को कंधे पर लेने के साथ-साथ सब कुछ परिस्थितियों के अनुरूप सोचना पड़ा है और ऐसा तन्त्र बनाना पड़ा है जिसके सहारे सतयुग की वापसी जैसे सर्वांगपूर्ण और विश्वव्यापी क्रियाकलापों का गतिचक्र व्यावहारिक पृष्ठभूमि पर खड़ा किया जा सके ।

अखण्ड ज्योति और उसकी सहेली पत्रिकाओं के माध्यम से युग-साहित्य के प्रसारण से ऐसी भावनाओं को उभारा गया है जो मात्र अपने ही निर्वाह की बात सोचते रहने तक सीमित न रहकर समय के परिवर्तन हेतु अपना योगदान करने के लिए भी उत्साह दिखा सकें, साहस सँजो सकें .। इन लोगों में से जो अधिक भावनाशील हैं उन्हें एक महीने के और दस दिन वाले सत्रों में सम्मिलित किया जाता रहता है । जीवन साधना का पक्ष सत्रों का प्रमुख अंग रहता है । उसी में युग-सृजन के लिए कुछ करने की प्रेरणा को इस स्तर पर सम्मिलित रखा जाता है कि वह गले के नीचे उतर सके और व्यावहारिक जीवनचर्या में स्थान प्राप्त कर सके ।

शिक्षार्थियों में से कुछ लोग इस स्थिति में होते हैं कि अपने क्षेत्र में आत्म-परिष्कार और लोक निर्माण के बहुमुखी कार्यक्रमों का उत्तरदायित्व अपनी सामर्थ्य के अनुरूप कंधों पर उठा सकें और निरन्तर नियमित रूप से अपने-अपने क्षेत्र में अपने समय एवं साधनों का अंश नियमित रूप से लगाते रह सकें । ऐसे व्रतधारियों का संकल्प ही, आगे की गतिशीलता को अग्रगामी बनाने में धुरी जैसी भूमिका निभाने लगता है। कोई साथी न मिलने पर एकाकी सृजन सेवा में संलग्न रहने का व्रत लेता और निबाहता है ।

ऐसे व्रतधारी युगशिल्पी इस प्रयास में निष्ठापूर्वक लगे रहते हैं कि युग साहित्य के माध्यम से अपने निजी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचारों की अभिव्यक्ति से अपने जैसे चार व्यक्ति और भी अपने सम्पर्क क्षेत्र में से उभार सकें । जब एक से पाँच हो जाते हैं तो उनका एक नियमित प्रज्ञा मण्डल बन जाता है। साप्ताहिक सत्संग का वे लोग अनवरत क्रम चलाते हैं । बारी-बारी वे एक दूसरे के घर पर एकत्रित होकर घनिष्टता बढ़ाते और आत्मशोधन तथा नव-सृजन के सन्दर्भ में विचारों का आदान-प्रदान करते रहने का क्रम चलाते हैं ।

उत्साह का अगला चरण उठता है इन पाँचों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में से चार और ढूँढ़ना । उन्हें युग चेतना से अनुप्राणित करना । इस प्रकार एक से पाँच और पाँच से पच्चीस बनाते चलने की एक सेवाधर्मी इकाई बन जाती है । पच्चीस का संगठन पूर्ण माना गया है । इससे अधिक के बीच घनिष्टता रह सकना और पारस्परिक विचार-विनिमय के आधार पर कुछ ठोस प्रयास करते बन नहीं पड़ता । इसलिए एक सेवा घटक को पच्चीस तक सीमित रहना व्यवस्था बनाये रहने की दृष्टि से पर्याप्त समझा गया है । अधिक बढ़ते हों तो उनका एक पृथक प्रज्ञा-मण्डल बनने लगता है। मधु-मक्खियाँ एक सीमा तक ही एक छत्ते में रहती हैं। संख्या बढ़ने पर नये छत्ते बनने लगते हैं ।

यह उपक्रम सुनने में दिवास्वप्न जैसा लगता है । शेखचिल्ली की रंगीली कल्पना उड़ान जैसी भी, पर कुछ लोग होते हैं जिनका व्यक्तित्व ही असम्भव को सम्भव बनाने के लिए ही विनिर्मित हुआ लगता है । यह असम्भव दीखने वाली योजना प्रचण्ड प्रेरणा पीछे लगी रहने के कारण सम्भव होते हुए इन्हीं आँखों से प्रत्यक्ष देखी जा रही हैं । ऐसे संगठन हजारों की संख्या को पार करके लाखों की गणना में विकसित होने के लिए उन्मुख हो रहे हैं । यह संगठन क्या करें। इसके लिए आत्मनिर्माण, परिवारनिर्माण और समीपवर्ती क्षेत्र का सामाजिक निर्माण प्रमुख हैं । इसी को दूसरे शब्दों में विचारक्रान्ति नाम दिया गया है जिसके अन्तर्गत नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्षेत्रों में प्रगतिशीलता के अनेक पक्षों का समावेश हो जाता है । बीससूत्री रचनात्मक कार्यों में शक्ति भर योगदान देना भी इसी प्रक्रिया का एक अंश है। विवाह विकृतियों का उन्मूलन सुधारात्मक प्रयासों में प्रमुख है। नशेबाजी, आलस्य, प्रमाद, अस्वच्छता, जातिगत ऊँच-नीच, नारी का अवमूल्यन जैसी अवांछनीयताओं से लोहा लेना भी इन्हीं प्रयासों के अंग के रूप में सम्मिलित किया गया है ।

उपरोक्त स्तर के लोक सेवियों में से प्रत्येक को न्यूनतम दो घण्टे नित्य का समय देना होता है । इसका दूसरा विकल्प यह है कि सप्ताह में एक छुट्टी का दिन इसी प्रयोजन के निमित्त लगाते रहा जाय । इस प्रकार समयदान के छोटे-छोटे टुकड़े जुड़कर सम्मिलित रूप से इतने अधिक बन जाते हैं कि उन्हें हजारों कार्यकर्ताओं की स्थाई नियुक्ति के समतुल्य माना जा सके ।

कुछ ही समय में एक छोटी-सी टीम के सहारे इतनी सफलता मिली है कि और विश्वास किया जा सकता है कि प्रस्तुत निर्धारण कल्पना नहीं वरन् पूर्णरूपेण व्यावहारिक है । इसे आगे भी चलाया, बढ़ाया और उस स्तर तक पहुँचाया जा सकता है जिसमें अवैतनिक स्तर पर आश्चर्यजनक संख्या में कार्यकर्ताओं की उपलब्धि कही जा सके । आशा की जानी चाहिए कि इस आधार को दृढ़तापूर्वक अपनाये रहने पर देश की ही नहीं संसार भर की सृजन-शिल्पियों की महती आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है ।

दूसरा प्रश्न उठता है उपरोक्त प्रयोजनों में कदम कदम पर पड़ने वाली आर्थिक आवश्यकताओं का, साधन, उपकरण आदि का । सत्संग और स्वाध्याय जैसे सामयिक प्रयोजनों में भी इनकी आवश्यकता पड़ती है । फिर जब प्रौढ़ शिक्षा, गरीबी उन्मूलन, समाज सुधार जैसे कार्यों को बड़े रूप में करने पर लिया जायेगा तो हर जगह पैसे की आवश्यकता पड़े गी। इसकी पूर्ति करने के लिए सार्वजनिक चंदा, सरकारी अनुदान, धनी-मानियों की मनुहार यह तीन उपाय ही प्रयोग में लाये जाते हैं। पर इस तंत्र के चिन्तन ने इसकी पूर्ति भी अपने बलबूते करने का निश्चय किया है । पचास वर्ष के अनुभव ने यह बताया है कि योजनाओं की, कार्यकर्ताओं की प्रामाणिकता यदि असंदिग्ध हो तो सहयोगी अयाचित रूप में भी मिल सकता है । विनोबा ठीक ही कहते थे कि जो संस्था लोक श्रद्धा अर्जित करने और स्वेच्छा, सहयोग जुटाने में असफल रहे उसे बन्द हो जाना चाहिए । इस प्रतिपादन को प्रायः आधी शताब्दी से कसौटी पर कसा जाता और खरा पाया जाता रहा है ।

अपना निर्धारण यह है कि न्यूनतम दस पैसा नित्य हर उपार्जनकर्ता नव-सृजन के लिए अनुदान रूप में निकाले और उसे अपनी देख-रेख में अपने संगठन द्वारा अपने से खर्च किये जाने की व्यवस्था बनाये तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसके सदुपयोग की देखभाल रखना अपनी जिम्मेदारी समझे ।

दस पैसां प्रति व्यक्ति के हिसाब से २५ व्यक्तियों का ढाई रुपया होता है । अर्थात् महीने में ७५ रुपया । इतने से झोला पुस्तकालय का, लाउडस्पीकर का, स्लाइड प्रोजेक्टर का, बिजली बैटरी तथा सम्बन्धित पूजा-अर्चना का खर्च चल जाना चाहिए, चल भी जाता है । इस प्रकार मण्डल की आर्थिक आवश्यकता अपने ढंग से अपनी पटरी पर आसानी से गति अपनाये रहती है ।

जहाँ अधिक उत्साह है वहाँ लोगों ने अपने-अपने स्तर की प्रज्ञा पीठें विनिर्मित कर ली हैं । उनमें सेवाभावी कार्यकर्ताओं के निवास की भी व्यवस्था है । वे लोग या तो अपने घर परिवार से पेन्शनरूप में प्राप्त कर लेते हैं, या फिर व्रतधारी कार्यकर्ताओं के घरों से रखे गये मुट्ठीफण्ड जमा करने वाले घरों से मासिक संग्रह से उनकी पूर्ति हो जाती है । फण्ड की योजना प्राचीन काल की उस साधु परम्परा की पुनरावृत्ति है जिसमें हर घर से एक रोटी मांग कर लोक सेवी अपना निर्वाह चलाते थे । अब समय के अनुरूप यही सुविधा जनक समझा गया है कि गृहस्थ अपने यहाँ नव-सृजन की आवश्यकता पूरी करने हेतु धर्मघट रखें और उसे हर महीने संग्रह करके प्रज्ञापीठ पर स्थायी निवास करने वाले कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पूर्ति करते रहें । विवाह आदि हर्षोत्सवों पर कुछ दान-दक्षिणा देने की पुरातन धर्म परम्परा है उसे यदि प्रामाणिकता के आधार पर जीवन्त किया जा सके तो कितने ही स्थानीय एवं क्षेत्रीय सेवा कार्य उतने भर से अपनी आर्थिक आवश्यकता पूरी कर सकते हैं और बिना सरकारी अनुदान के, बिना चंदा संग्रह एवं धनीमानियों की मनुहार के भी काम चल सकता है ।

उत्साह शिथिल या समाप्त हो जाय तो बात दूसरी है, अन्यथा प्रेरणा, संगठन एवं योजना यथावत् चलती रहे तो इसी आधार पर व्यापक क्षेत्र में कार्यकर्ताओं की तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती रह सकती है और नव-सृजन का गति-चक्र भी अपनी पटरी पर अग्रगामी बन कर अनवरत रूप से चलता रह सकता है ।

एक से पाँच, पाँच से पच्चीस का क्रम यदि चक्र वृद्धि गति से बढ़ता रहे तो कुछ ही छलांग में देश भर की, विश्व भर की, सृजन शिल्पियों वाली आवश्यकता पूरी होती रह सकती है । कभी परम्परा थी कि परिवार पीछे एक व्यक्ति परमार्थ प्रयोजनों के लिए दिया जाय और उसका उत्तरदायित्व शेष परिवार निवाहे । राजपूत घरानों में एक समय एक व्यक्ति सेना में भर्ती होने के लिए दिया जाता था । ब्राह्मण परिवार एक ब्रह्मचारी संयासी समाज को देते थे । सिख धर्म के आरम्भिक दिनों में भी, घर पीछे एक व्यक्ति "सत् श्री अकाल" को समर्पित किया जाता था । उन दिनों वाली भावनाएँ यदि आज पुनर्जीवित की जा सकें तो वानप्रस्थ आश्रम को पुनर्जीवन मिल सकता है और आधी आयु परिवार के लिए लगाने के उपरान्त शेष आधी आयु नव-सृजन जैसे परमार्थ हेतु समर्पित की जा सकती है । यही प्रचलन इन दिनों भी उभारा जा सके तो उन सृजन शिल्पियों की आवश्यकता सहज ही पूरी हो सकती है, जिनके अभाव में विचार क्रान्ति के नव-निर्माण के असंख्यों कार्य रुके पड़े हैं ।

भारत की दिव्य चेतना के नव-जागरण के ही यह चिन्ह हैं कि समयदानी-अंशदानी कार्यकर्त्ता पुरातन देव परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए इस प्रकार उभर रहे हैं, मानों स्रष्टा ने उन्हें इस पुण्य प्रयोजन का भार वहन करने के लिए ही विशेष रूप से भेजा हो । इससे उज्ज्वल भविष्य की रूप रेखा साकार होती दीखती है ।

उदात्त अनुदानों के लिये युग चेतना का आह्वान

प्रत्येक जागृत आत्मा को यह अनुभव करना चाहिए कि यह परिवर्तन की परम पुनीत साध्य वेला है। आवंछनीयता की तमिस्रा अब तब में समाप्त होने जा रही है । उषा की अरुणिमा सम्मुख है । नवयुग का अरुणोदय होने में देर नहीं । उदीयमान आलोक प्रज्ञावतार है । इसके प्रकाश में हर किसी की आँखें वस्तुस्थिति को देख समझ सकने में समर्थ होंगी । अन्धकार में ही भ्रान्तियाँ और विकृतियाँ पनपती हैं । रात्रि में ही आलस्य छाया और अनौचित्य पनपता रहता है । निशाचरों की उसी स्थिति में बन आती है । प्रभात के उपरान्त कण-कण में चेतना उभरती है । सृजनात्मक हलचलों से प्रगति के चिन्ह हर दिशा में दृष्टिगोचर होते हैं । उदीयमान ऊर्जा कण-कण को नव जीवन प्रदान करती है । अन्धकार का प्रकाश में प्रत्यावर्तन सब कुछ उलट पलट कर रख देता है । परिस्थितियाँ सर्वथा भिन्न स्तर की बन जाती हैं । इन दिनों भी ऐसा ही कुछ होने जा रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युगान्तरीय चेतना ऐसे आधार खड़े कर रही है; जिससे भ्रान्तियों और विकृतियों को देर तक पैर टिकाये रहना सम्भव न हो सकेगा । उनका पलायन निश्चित है । हर व्यक्ति को सत्य और तथ्य जानने की जिज्ञासा है । अनौचित्य निहित स्वार्थों को ही प्रिय हो सकता है । जन-जन में उसके प्रति अश्रद्धा ही छाई रहती है । भले ही विवशता में कुछ भी सहन और वहन करना पड़ता हो । जागृति के युग में तथ्य उभरते हैं और लोक मानस को प्रभावित करते हैं । पानी और हवा के प्रवाह जब अपने साथ हलका भारी बहुत कुछ बहाते और उड़ाते रहते हैं तो कोई कारण नहीं कि युग प्रवाह में औचित्य का समर्थन करने वाले तत्व एक ही दिशा में न बहने लगें । जागृत आत्माओं की हर महत्त्वपूर्ण अवसर पर शानदार भूमिका रही है। प्रस्तुत युग संध्या में वे निष्क्रिय बने बैठे रहें, यह हो ही नहीं सकता । प्रत्येक देव मानव को इस पुनीत पर्व पर अपनी उपयुक्त भूमिका निभानी होगी । इसके लिए महाकाल की प्रेरणा उन्हें विवश करेगी । जो आनाकानी करेंगे वे आत्म-ताड़ना का दुसह दुःख सहेंगे ।

सन्ध्या काल को उपासना कृत्यों के लिए सुरक्षित रखा जाता है । अन्य समय अन्य कामों के लिए होते हैं पर प्रातःकाल तो आलस्य त्यागने, शौच शुद्धि में लगने एवं आत्म चिन्तन करने के लिए नियत रहता है। नव-जागरण की पुण्य-वेला ऐसे ही विशेष कर्तव्य और उत्तरदायित्वों के निर्वाह के परिपालन की प्रेरणा देती है । जागृत आत्माएँ तो उसके लिए एक प्रकार से महाकाल द्वारा बलात् प्रेरित की जाती हैं । इन दिनों भी ठीक वैसा ही हो रहा है । प्राणवानों को समय की माँग और पुकार को सुनने तथा तदनुकूल कार्यक्रम बनाने के लिए कटिबद्ध होते देखा जा रहा है ।

युग निर्माण परिवार के प्राणवान परिजनों को इन दिनों सृजन शिल्पी की भूमिका निभानी चाहिए । इसके लिए आवश्यक है कि भौतिक ललक लिप्साओं पर नियन्त्रण किया जाय । लोभ, मोह के बन्धन ढीले किये जायें । संकीर्ण स्वार्थपरता को हलका किया जाय । पेट और प्रजनन भर के लिए जीवन की सम्पदा का अपव्यय करते रहने की आदत को मोड़ा-मरोड़ा जाय। औसत भारतीय स्तर का निर्वाह पर्याप्त समझा जाय । महत्त्वाकांक्षाओं की दिशा बदली जाय । वासना, तृष्णा और अहंता के आवेश शिथिल किये जायें । युग धर्म के निर्वाह के लिए कुछ बचत इसी परिवर्तन से हो सकती है । परमार्थ तभी बन पड़ता है जब स्वार्थ पर अकुश लगाया जाय । ब्राह्मणत्व और देवत्व की गरिमा स्वीकार करने और उच्चस्तरीय आदर्शों को व्यवहार में उतारने के साहस जुटाने का यही अवसर है । उसे चूक नहीं जाना चाहिए । युग पर्व के विशेष उत्तरदायित्वों की अवमानना करने वाले जीवन्त प्राणवानों को चिरकाल तक पश्चात्ताप की आग में जलना पड़ता है । देव मानवों की विरादरी में रहकर कायरता के व्यंग्य, उपहास सहना जितना कठिन पड़ता है उतना उच्च प्रयोजन के लिए त्याग बलिदान का जोखिम उठाना नहीं ।

जिनकी अन्तरात्मा में ऐसी अन्तःप्रेरणा उठती हो वे उसे महाकाल प्रेरित युग चेतना का आह्वान उद्‌बोधन समझें और तथाकथित बुद्धिमानों और स्वजनों की उपेक्षा करके भी प्रज्ञावतार का अनुकरण करने के लिए चल पड़ें । इसमें इन्हें प्रथमतः ही प्रसव पीड़ा की तरह कुछ अड़चन पड़ेगी, पीछे तो सब कुछ शुभ और श्रेय ही दृष्टिगोचर होगा ।

ज्ञानयज्ञ के लिए समयदान यही है—प्रज्ञावतार की जागृत आत्माओं से याचना । उसे अनसुनी न किया जाय । प्रस्तुत क्रिया-कलाप पर नये सिरे से विचार किया जाय, उस पर तीखी दृष्टि डाली जाय और लिप्सा में निरत जीवन क्रम में साहसिक कटौती करके उस बचत को युग देवता के चरणों पर अर्पित किया जाय। सोने के लिए सात घण्टे, कमाने के लिए आठ घण्टे, अन्य कृत्यों के लिए पाँच घण्टे लगा देना, सांसारिक प्रयोजनों के लिए पाँच घन्टे लगा देना सांसारिक प्रयोजनों के लिए पर्याप्त होना चाहिए । इनमें २० घण्टे लगा देने के उपरान्त चार घण्टे की ऐसी विशुद्ध बचत हो सकती है जिसे व्यस्त और अभावग्रस्त व्यक्ति भी युग धर्म के निर्वाह के लिए प्रस्तुत कर सकता है । जो पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त हो चुके हैं—जिन पर कुटुम्बियों की जिम्मेदारियाँ सहज ही हलकी हैं जिनके पास संचित पूँजी के सहारे निर्वाह क्रम चलाते रहने के साधन हैं उन्हें तो इस सौभाग्य के सहारे परिपूर्ण समय दान करने की ही बात सोचनी चाहिए । वानप्रस्थों की, परिव्राजकों की, पुण्य परम्परा की अवधारणा है ही ऐसी सौभाग्य शालियों के लिए जो जिस भी परिस्थिति में हों समयदान की बात सोचें और उस अनुदान को नव-जागरण के पुण्य प्रयोजन में अर्पित करें ।

प्रतिभा, कुशलता, विशिष्टता से सम्पन्न कई विभूतिवान व्यक्ति इस स्थिति में होते हैं कि अनिवार्य प्रयोजनों में संलग्न रहने के साथ-साथ ही इतना कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर या करा सकते हैं कि उतने से भी बहुत कुछ बन पड़ना सम्भव हो सके । उच्च पदासीन, यशस्वी, धनी-मानी अपने प्रभाव का उपयोग करके भी समय की माँग पूरी करने में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा सकते हैं । विभूतिवानों का सहयोग भी, अनेकबार कर्मवीर समयदानियों जितना ही प्रभावोत्पादक सिद्ध हो सकता है ।

नव-सृजन के लिए साधनों की भी आवश्यकता रहेगी ही । भौतिक प्रयोजनों में तो अर्थ साधन ही प्रधान होते हैं किन्तु युग प्रवाह बदलने जैसे अध्यात्म अभियान के लिए भी अन्ततः साधन तो चाहिए ही । यों श्रम, समय, मनोयोग, भाव सम्वेदन जैसे तत्वों की ही युग परिवर्तन में प्रमुखता मानी जायगी । फिर भी अर्थ साधनों के बिना उन्हें भी कार्य रूप में परिणित कर सकना सम्भव नहीं हो सकेगा । वस्तुएँ तो इस निमित्त भी चाहिए ही । सामान्य निर्माण कार्यों के लिए साधन जुटाने पड़ते हैं फिर इस महानतम कार्य के लिए साधनों के बिना ही काम चलता रहे ऐसा सम्भव नहीं।

यह आवश्यकता भी जागृत आत्माओं को ही पूरी करनी होगी । वैयक्तिक कार्यों में कटौती करके ही युग धर्म के लिए समयदान की व्यवस्था बन सकती है । इसी प्रकार निजी खर्चों में कटौती करके ही युग की पुकार के निमित्त अर्थ साधन प्रस्तुत कर सकना सम्भव हो सकता है । उत्तराधिकारियों के लिए जो अनावश्यक धन सम्पदा छोड़ी जाती है, उस मोह ग्रस्तता पर अकुंश लगाने का तो हर दृष्टि से औचित्य है । निजी परिवार को ही सब कुछ मानते रहना और विश्व परिवार के लिए कुछ भी न करना, ऐसा व्यामोह है जो युग शिल्पियों के लिए अशोभनीय ही ठहरता है ।

युग निर्माण परिवार के हर सदस्य को आरम्भ से ही एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य ज्ञान यज्ञ के लिए देते रहने की प्रेरणा दी गई है । वह दिशा निर्धारण युग शिल्पियों के लिए आरम्भिक एवं अनिवार्य कर्तव्य बोध की तरह था । अब उसमें उदात्त अभिवृत्ति का समय आ गया है। समय और धन दोनों ही अनुदानों का स्तर तथा परिमाण बढ़ना चाहिए । जिसे अपने अन्तरंग में जितनी युग चेतन, हलचल मचाती दिखाई पड़े उन्हें उतने से ही भाव-भरे अनुदान प्रस्तुत करने की तैयारी करनी चाहिए ।

सतयुग की वापसी इस प्रकार सम्भव होगी

बीसवीं सदी का अन्त और इक्कीसवीं सदी का आरम्भ युग सन्धि का ऐसा अवसर है जिसे अभूतपूर्व कहा जा सकता है । शायद भविष्य में भी इसकी पुनरावृत्ति कभी न हो । विज्ञान ने सुविस्तृत संसार को किसी गली-मुहल्ले की तरह निकटवर्ती बना दिया है। व्यक्ति और समाज की समस्याएँ आपस में गुँथ गई हैं । साथ मरने साथ जीने जैसा माहौल बन गया है । इसलिए समस्याओं और समाधानों की खोज नई किन्तु व्यापक दृष्टि से करनी होगी । अपने मतलब से मतलब रखने का आदिम कालीन सोच अब चल न सकेगा ।

इन दिनों महाविनाश एवं महासृजन आमने-सामने खड़े हैं । इनमें से एक का चयन सामूहिक मानवी चेतना को ही करना पड़ेगा । उस चेतना को जिसका प्रतिनिधित्व जाग्रत और वरिष्ठ प्रतिभाएँ करती रही हैं । ऐसी प्रतिभाएँ जो प्रामाणिकता एवं सुप्रखरता से सुसम्पन्न हों उन्हीं को युग समन्वय का निर्णायक भी कहा जा सकता है ।

विस्फोटक गति से बढ़ती हुई जनसंख्या, खाद्य और खनिज पदार्थों में निरन्तर होती जा रही कमी, बढ़ता हुआ वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, आणविक विकिरण, वनों का अत्यधिक कटाव, धरती की उपजाऊ परतों का क्षरण और रासायनिक भरमार से उसकी उर्वरता का समापन, बढ़ते शहर-घटते गाँव, औद्योगीकरण के कारण बढ़ती बेरोजगारी, नशेबाजी, व्यभिचार जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ लोभ, मोह, विलास और प्रदर्शन से भरी पूरी संकीर्ण स्वार्थपरता, कुप्रचलनों के प्रति दुराग्रह जैसी अनेक समस्याएँ इन दिनों तूफानी गति से उठ रही हैं । उनकी बढ़ती तूफानी दिशा-धारा मानवी गरिमा को अपने प्रवाह में बहा ले जा सकती है और महाप्रलय के दृश्य उपस्थित कर सकती है । धरती का बढ़ता तापमान जल प्रलय, हिम प्रलय, प्रचण्ड तपन, भुखमरी, सूखा, महामारी जैसे स्तर के संकट उत्पन्न कर सकते हैं जिससे मानवी सत्ता और सभ्यता का अतापता भी न चले ।

एक ओर जहाँ यह सर्वभक्षी विभीषिकाएँ इस सुन्दर विश्व उद्यान को तहस-नहस करने पर तुली हुई हैं । वहीं आशा की उषाकाल जैसी एक क्षीण किरण नवोदय का, युग-परिवर्तन का संकेत भी दे रही है । ऐसी विषम परिस्थितियों में विनाश का दमन और विकास का अभ्युदय करने हेतु महाकाल की नियामक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चेतना अवतरित होती रही है और संकटों को टालती रही है, "यदा यदा हि धर्मस्य" वाली उक्ति में इस युग-युग में घटित होने वाली सम्भावना का अश्वासन भी है । सृष्टि अपनी इस अनुपम कलाकृति धरित्री, मानवी सत्ता और उसकी महत्ता का सर्वथा विनाश न होने देने का चमत्कारी सरंजाम भी जुटाती रही है । इस बार वैसा न हो, ऐसी निराशा किसी को भी नहीं अपनानी चाहिए । उज्ज्वल भविष्य का नाम ही इक्कीसवीं सदी से आरम्भ होने वाला सृजन पर्व है ।

महाकाल का अवतार जाग्रत आत्माओं की आदर्शवादी अन्तः चेतना में ही प्रकट और प्रखर होती है । व्यापक समाधान उसी तूफानी उभार के आधार पर सम्भव है । महान परिवर्तनों का श्रेय अग्रगामी लोगों को मिले यह स्वाभाविक है पर वस्तुतः अकेला चला भाड़ नहीं फोड़ता । सृजन की संयुक्त शक्ति ही युग परिवर्तन जैसे महान कार्य सम्पन्न करती है । अवतार की दार्शनिकता इसी केन्द्र में खोजी जा सकती है । देवताओं की संयुक्त शक्ति से दुर्गावतार हुआ था । ऋषियों के एक संचय से सीता का उद्भव और असुरता का दमन सम्भव हुआ था । राम के रीछ-वानर, कृष्ण के ग्वाल बाल, बुद्ध के भिक्षु, गाँधी के सत्याग्रही इसी प्रकार की भूमिकाएँ सम्पन्न करते हुए असम्भव को सम्भव बनाते रहे हैं । इस बार भी वही होने जा रहा है ।

विनाश के दमन और विकास से सृजन के इस आपत्तिकाल में महाकाल ने प्राणवान प्रतिभाओं को जाग्रत, आत्माओं को सहयोगी और सहभागी बनाने के लिए आमन्त्रण भेजा है । प्रमादी और कुसंस्काकारी इसे अनदेखी, अनसुनी करके उपेक्षा भी बरत सकते हैं पर जिनके भीतर आदर्शों की उत्कृष्टता, दूरदर्शी विवेकशीलता विद्यमान है वे समय चूककर सदा पछताते रहने की भूल नहीं कर सकते । महत्त्वपूर्ण अवसरों की अवमानना करने वाले ही अभागे कहलाते हैं । साहसिक तो सहज सम्भावना में भागीदार बनने के लिए पाण्डवों जैसी साहसिक सूझबूझ का परिचय देते हैं ।

यह प्रसव वेदना की घड़ी है । एक ओर असह्य वेदना, दूसरी ओर सुसंतति का लाभ प्राप्त करने का सुयोग रात्रि के अवसान पर तमिस्रा धीरे-धीरे धीमी हो जाती है । दूसरी ओर ब्रह्म मुहुर्त की अवचेतना ऊर्जा और आभा बन कर अरुणोदय की तैयारी में जुटती हैं । इस संधि पर कृपण कायर ही असमंजस अनुभव करते हैं । जिनकी उमंगें भरी नहीं हैं वे प्रातः काल में जग पड़ते हैं । रात्रि वाली रीतिनीति बदलते और प्रभात कालीन नये क्रिया-कलापों, नये उत्तरदायित्वों का वहन करते हैं ।

इन दिनों ऐसे मणिमुक्तकों की तलाश हो रही है जिनका सुगठित हार युग चेतना की महाशक्ति के गले में पहनाया जा सके । ऐसे सुसंस्कारियों की तलाश युग निमन्त्रण पहुँचा कर की जा रही है जो जीवित होंगे करवट बदलने में उठ खड़े होंगे और संकट काल में शौर्य प्रदर्शित करने वाले सेनापतियों की तरह अपने को विजयश्री वरण करने के अधिकारी के रूप में प्रस्तुत करेंगे । कृपण और कायर ही कर्तव्यों की पुकार सुनकर काँपते, घबराते और किसी कोतर में अपना मुँह छिपाने की विडम्बना रचते हैं । एक दिन मरते तो वे भी हैं पर खेद पश्चाताप की कलंक कालिमा सिर पर लादे हुए ।

महाविनाश की विभीषिकाएँ अपनी मौत मरेंगी । अरुणोदय अगले ही क्षणों जाज्वल्यमान दिवाकर की तरह उगेगा । यह सम्भावना सुनिश्चित है । देखना इतना भर है कि इस परिवर्तन काल में युग शिल्पी की भूमिका सम्पादन करने के लिए श्रेय कौन पाता है ? किसके कदम समय रहते श्रेय पथ पर आगे बढ़ते हैं ।

जाग्रत आत्माएँ इस अवसर पर अपना दायित्व सँभालें इसलिए उन्हें खदानों में छिपे मुक्तकों की तरह प्रयत्न पूर्वक खोजा जा रहा है । जगाया और बुलाया जा रहा है । इस ढूँढ़-खोज के लिए दीप-यज्ञों की पुनीति ज्वाला जलाई गई है । अंधकार में खोई हुई वस्तुओं को प्रकाश जलाकर ही खोजा उठाया जाता है । जन-जन को झकझोरने वाली श्रृंखला के सुविस्तृत और सुनिश्चित अभियान की तरह ही दीपयज्ञ अभियान को चलाया जा रहा है । धार्मिकता के भावनात्मक वातावरण में ऐसी ढूँढ़ खोज सहज ही बन भी पड़ती है । देव आरती में बच्चे तो पाई पैसा चढ़ाकर भी मन बहला लेते हैं पर प्रतिभाओं को तो छोटी नाली की तरह गंगा नर्मदा जैसी दिव्य धारा में अपने को समर्पित ही करना पड़ता है । हनुमान, अंगद, अर्जुन, भागीरथ, हरिश्चन्द्र, शिवा, भामाशाह, विनोबा, दयानन्द, विवेकानन्द जैसे महामना ऐसी ही साहस दिखाकर कृतकृत्य हुए थे । कृपण तो सड़ी कीचड़ में जन्मने वाले कृमि कीटकों की तरह उपजते और उसी नरक में मरकर अन्तर्ध्यान हो जाते हैं ।

दीप यज्ञों के प्रकाश में ज्योतिर्मय आत्माएँ उभरती झिलमिलाती दीख पड़ेंगी और अपनी उपयुक्त जगह ग्रहण करेंगी ऐसी आशा रखी गई है । महाकाल का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह शंखनाद निष्फल नहीं जा सकता । उसे सुनकर मूर्च्छितों, प्रसुप्तों में भी चेतना का संचार होगा । जो सर्वथा मर चुके हैं उनकी बात दूसरी है ।

सर्वप्रथम आगे आने वाले युग सृजेताओं को व्रतधारी प्रज्ञा पुत्र कहा जायगा वे उपासना, साधना, आराधना के आधार पर आत्म परिष्कार करेंगे । धार को पैनी करेंगे और इतनी अन्तः क्षमता अर्जित करेंगे जिसके आधार पर उनसे कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करते बन पड़ें ।

उपासना अर्थात् दिव्य सत्ता के लिए बैठना, उसके साथ गुँथ जाना, आग ईंधन की तरह, सूर्यार्घ के समय अर्पित किये गये जल की तरह । कर्मकाण्ड के रूप में गायत्री जैसी मन्त्र का अर्थ सहित ध्यान एवं जप और उदीयमान सूर्य का ध्यान किया जा सकता है । यह नियमित होना चाहिए । उपासना से आत्मबल बढ़ता है प्राण ऊर्जा का रोम-रोम में संचार होता है । इस कृत्य को दैनिक जीवन में किसी न किसी प्रकार गुँथा ही रखना चाहिए ।

साधना का पूरा नाम है जीवन साधना । जीवन को सुव्यवस्थित बनाना । जीवन सम्पदा को आत्म परिष्कार और लोक मंगल के पुण्य परमार्थ के साथ जोड़ कर, उसे सब प्रकार कृतकृत्य बनाना । इसके लिए आत्म निरीक्षण, आत्म सुधार, आत्म निर्माण और आत्म विकास जैसी चेष्टाएँ करनी पड़ती हैं । इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम, विचार संयम अपनाना होता है । सादा जीवन उच्च विचार का मन्त्र हृदयंगम किया जाय । औसत नागरिक स्तर का निर्वाह पाकर संतुष्ट रहा जाय । अपने परिवार के सदस्यों को स्वावलम्बी और सुसंस्कारी बनाना पर्याप्त माना जाय उनके लिए उत्तराधिकारों में बड़ी सम्पदा छोड़ मरने की ललक न संजोयी जाय । यही है प्रामाणिकता, प्रखरता और प्रतिभा अर्जित करने का राजमार्ग ।

आराधना का अर्थ है विराट ब्रह्म की-विशाल विश्व की - विश्व मानव की सेवा साधना में समुचित उत्साह और तत्परता रखना । इसी परमार्थ परायणता को ईश्वर की आराधना कहते हैं । यही वह पूजा है जिससे आत्म संतोष, लोक सम्मान एवं देवी अनुग्रह के दोनों लाभ प्राप्त होते हैं । स्वार्थ और परमार्थ की समन्वित सिद्धि होती है । लोक-परलोक दोनों बनते हैं।

कहना न होगा कि इन दिनों सबसे बड़ा परमार्थ लोक मानस का परिष्कार ही है । इस क्षेत्र में घुसी विकृतियों के कारण ही, दरिद्रता, रुग्णता, आपदा जैसी पिछड़ेपन की जन्मदात्री हीनाताएँ मनुष्य के सिर पर चढ़ती हैं । आज की समस्त समस्याएँ अर्थिक संकट के कारण ही उत्पन्न हुई हैं । उन सब का एक ही समाधान है जन-मानस का परिष्कार सत्प्रवृत्ति, संवर्धन । इन्हीं पुण्य प्रयोजनों को प्रमुखता देनी चाहिए।

शान्तिकुंज का प्रज्ञा-अभियान इसी युग धर्म की सुनिश्चित योजना के अन्तर्गत संगठित रूप से चल रहा है । उसी के अंग बन कर समर्पण को सार्थक बनाया जा सकता है । तिनके धागे अलग-अलग रहकर कुछ काम नहीं आते हैं । उनके एकजुट होने पर ही रस्से और कपड़े बनते हैं । बर्धी सीकें बँधकर बुहारी बनती है । बूँदों के समन्वय से जलधार बनती व बहती हैं । युग धर्म के निर्वाह में यही परमार्थ आराधना धन्य होती है कि नव-सृजन के विशालकाय सम्पादन में अपनी ही भागीदारी और अलग-अलग एक चावल की खिचड़ी-ढाई ईंट की मस्जिद न बना कर हीरक हार की तरह संयुक्त शक्ति का परिचय दिया जाय । युग सन्धि के इस आपत्ति काल में तो इसी रीति-नीति के अपनाये जाने की और भी अधिक आवश्यकता है।

इस सिद्धान्त को व्यवहार में परिणित करने की प्रारम्भिक प्रक्रिया यह है कि दैनिक जीवन में समयदान और अंशदान को नियमित रूप से इस प्रयोजन के लिए नियोजित रखा जाय । न्यूनतम दो घण्टे का समयदान और बीस पैसे का अंशदान तो उदारचेताओं को निकालते ही रहना चाहिए । इस समय व अंशदान को किस प्रयोजन के लिए कहाँ लगाया जाय, इसके लिए सुलभ और सरल उपाय यही है कि अपने सम्पर्क वाले प्रभाव क्षेत्र में युग चेतना का आलोक वितरण करने के लिए इसे नियोजित किया जाय । आजीविका उपार्जन और परिवार पालन के साथ-साथ और इतना तो बन पड़ ही रहता है । उनकी बात अलग है जो वानप्रस्थ, परिव्राजकों की तरह प्राचीन काल की साधु ब्राह्मण परम्परा का निर्वाह करें और घरेलू दायित्वों को दूसरे मजबूत कंधों पर छोड़कर स्वयं जन जीवन में आदर्शवादी प्राण चेतना भरने के लिए बरसते बादलों की तरह बहते पानी की तरह निकल पड़ें । ऐसा भाव जिनका है वे शान्तिकुंज से सम्पर्क साधें और अपनी मान्यता तथा परिस्थिति के अनुरूप अपने कार्यरत होने का मार्ग खोजें ।

समय दान और अंश दान की नियमितता का संकल्प लेने वाले ही ''व्रतधारी'' प्रज्ञापुत्र कहलायेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्रतधारी इसलिए कि वे अपने संकल्प को बार-बार तोड़ेंगे-छोड़ेंगे नहीं । पानी के बबूलों जैसे क्षणिक उत्साह दिखाकर उपहासास्पद न बनेंगे । ''प्रज्ञापुत्र'' इसलिए कि उनका एक ही लक्ष्य है—सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन ही अपना प्रधान लक्ष्य और कर्तव्य बनाना । आज की समस्त समस्याओं का हल भी यह एक ही है । यह विनाश का निराकरण और उज्ज्वल भविष्य के विकास प्रक्रिया का संवर्धन इसी आधार पर सम्भव हो सकता है । आपत्तिकालीन युगधर्म भी यही है । इसके लिए स्वाध्याय और सत्संग को प्रधान अस्त्रशास्त्र मान कर इन्हीं के आधार पर युग सृजन को सम्भव कर पाना सम्भव हो सकता है ।

सतयुग की वापसी इसी प्रकार संभव होगी । जिन दिनों मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण प्रत्यक्ष दीख पड़ता था उन दिनों चिन्तन, चरित्र और व्यवहार की उत्कृष्टता ही इस प्रकार की सुखद परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रही थीं । उनमें सभी चैन से रहें और रहने दे सकें । हँसती-हँसाती, खिलती-खिलाती, उठती-उठाती जिन्दगी इसी आधार पर बितायी जा सकती है । स्वयं पार उतरना और असंख्यों को अपनी नाव पर बिठाकर पार कराना इसी आधार पर सम्भव हो सकता है । कभी इस देव भूमि में सतयुग था तब समस्त संसार उसका लाभ उठाता था । अब फिर उस पुण्य प्रक्रिया का पुनर्जीवन सम्भव होने जा रहा है । इसी सुनिश्चित सम्भावना का नाम है-सतुयग की वापसी ।

अवरोधों से जूझने की सूझ-बूझ जगे

व्यक्ति और समाज के सम्मुख उपस्थित अगणित कठिनाइयों, अभावों और संकटों के समाधान किस प्रकार किए जायें ? इस सन्दर्भ में दो प्रकार के चिन्तन हैं । एक ऊपर से थोपने के दूसरे भीतर से उगाने के । दोनों में से पहला बे जड़ का है और दूसरे चिर-स्थायी ।

नाटक के पात्रों के ऊपर आवरण पहना कर इस प्रकार सजा दिया जाता है मानों वे जो कुछ दीखते हैं, वही हों । राजा, मंत्री, सेनापति, संत, सेठ आदि के अलग-अलग परिधान होते हैं । उनसे सजा देने पर वे वस्तुतः वेसे ही लगते हैं, जैसा कि सजाने वालों ने उन्हें दिखाने का प्रयत्न किया है । रामलीला में विभिन्न पात्रों के नकली मुखौटे चलते हैं । उन्हें चेहरे पर लगाने से देवता, अवतार, संत भक्त, दैत्य, दानव जैसे लगने लगते हैं । पर यदि मुखौटे उतार लिये जाये, परिधान हटा दिए जायें, तो सामान्य व्यक्ति जैसा असली रूप प्रकट हो जाता है तब उस कौतुक कौतूहल की भी समाप्ति हो जाती है ।

समाधान भी वास्तविक हो सकता है और अवास्तविक भी । अवास्तविक वे हैं जो बाहर से थोपे जाते हैं । वास्तविक वे हैं जो व्यक्तित्व में से उभरे और जीवन के साथ जुड़े हैं । कोई देश उधार के शस्त्र और सैनिक लेकर समर्थ नहीं हो सकता । भीतर से यदि देश पोला है तो बाहर की छत्र-छाया कितने समय तक टिकेगी कलई बहुत दिन नहीं चलती। बालू की दीवार अधिक देर नहीं खड़ी रहती। काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती । दूसरे के कंधों पर लदकर न तो लम्बी यात्रा की जा सकती है और न जिन्दगी कट सकती है । बल तो वही काम देता है जो अपनी छाती और भुजाओं से उभरा हो । समाधान भी ऐसे ही ढूँढ़े जाने चाहिए । किसी को भिक्षा देकर न तो सम्पन्न बनाया जा सकता है न स्वावलम्बी । मनुष्य अपनी ही कमाई से सम्मानपूर्वक जिन्दगी काट सकता है ।

दरिद्रता मिटाने के लिए मनुष्य का आलस्य प्रमाद छूटना चाहिए और उसमें तत्परता तन्मयता के साथ उपार्जन करने की ललक उत्पन्न की जानी चाहिए । इसके अभाव में दूसरों की दी हुई भिक्षा या सहायता से टिकाऊ हल नहीं निकल सकता । जो मेहनत से कमाता है, वह समझ से खर्च भी करता है । जिसे मुफ्त में सम्पदा हाथ लगी है, वह उसका न तो महत्त्व समझ सकेगा और न उसका सदुपयोग कर सकेगा । अपव्यय दुर्व्यसन उसकी पोटली जल्दी ही खाली कर देंगे । इसलिए अच्छा हो कि मनुष्य, स्वावलम्बी सुसंस्कारी बने और किसी की ओर सहायता पाने की दृष्टि से न तके ।

उपार्जन कला में प्रवीण मारवाड़ी, पंजाबी कहीं हाथ पसारते नहीं देखे गए । इसके विपरीत भिक्षुकों के समुदाय आये दिन जिस-तिस प्रकार जहाँ-तहाँ से भटकते रहने पर भी मन से हीन परिस्थिति से दीन बने रहते हैं । समाधान वही कारगर होते हैं जिनकी निजी जड़ें होती हैं । अमर बेल जिस पेड़ पर छाई होती है, उसे चूसने के उपरान्त स्वयं भी सूख जाती है ।

कानूनों के द्वारा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयत्न करना अच्छी बात है, पर वह ऊपर से थोपी होने के कारण सफल नहीं हो पा रहीं है । न तो बाल-विवाह बन्द होते दीख रहे हैं और न दहेज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की माँग बन्द हो रही है । रिश्वत और व्यभिचार दोनों के विरुद्ध कड़े कानून हैं, पर दोनों पक्ष अपनी पटरी निकाल लेते हैं और सहयोगपूर्वक वे कुकर्म यथावत् चलते रहते हैं । कानून अपना काम पूरा तब करे जब इन अनाचारों के विरुद्ध लोक मानस विनिर्मित हो और घृणा उभरे ।

जाति-पाँति के आधार पर ऊँच-नीच मानने का संविधान में विरोध है, पर ब्राह्मण ब्राह्मणों में कायस्थ कायस्थों में अछूत अछूतों में जो आपसी ऊँच नीच की मान्यता है-उसका क्या किया जाय ? सवर्ण और असवर्णों के बीच पाये जाने वाले भेद-भाव पर तो मुकदमा भी चल सकता है, पर एक ही जाति की उपजातियों में जो भेद-भाव है । एक जाति का अछूत दूसरे जाति के अछूत से रोटी-बेटी व्यवहार नहीं करना चाहता । उसका क्या उपाय किया जाय ? ऐसा ही भेद-भाव गरीब अमीर और शिक्षित अशिक्षित के बीच भी देखा जाता है । अपने घरों की महलाओं तक को लोग गई गुजरी ठहराते हैं, उनसे अपमानजनक व्यवहार करते हैं तो उसके लिए क्या किया जाय ?

कानून का भय दिखाना आवश्यक है । राष्ट्रीय मान्यता के रूप में संविधान में भी सभ्यता सूचक निर्धारणों का उल्लेख होना चाहिए सो है भी पर इतने से भी हमारा उत्तरदायित्व पूरा नहीं हो जाता । करना कुछ और भी पड़ेगा और वह है आस्थाओं को झकझोरना, विचारों की अवांछनीयता में आमूल-चूल परिवर्तन करना । औचित्य का पक्ष समर्थन करने वाली विवेक-बुद्धि को उभारना । न्याय के प्रति आस्थावान होना । यह मान्यता भीतर से जागेगी, तो वह जो जाति-पाँति तक, वेश-वंश तक सीमित न रहेगी, वरन् विषमता के हर पक्ष की काट छाँट करेगी ।

मनुष्य की अक्लमंदी में घुसी हुई धूर्तता का कोई अन्त नहीं । वह शासन की पकड़ से बच सकता है । कानून को अपने समर्थक के रूप में प्रस्तुत कर सकता है । प्रलोभन और दबाव से गवाहियाँ जुटा सकता है। सबूत इकट्ठे कर सकता है और राजदण्ड की पकड़ से सहज ही बच सकता है । इसी प्रकार समाज को बहकाना भी कुछ कठिन नहीं है । देशभक्त नेता और धर्मोपदेशक बनने में थोड़े से कलाकौशल की आवश्यकता है, जिसे किसी भी सहकर्मी के रंग ढंग देखकर उसकी अनुकृति अपनाई जा सकती है । थोड़ा सा दान पुण्य कर पूजा पाठ के कर्मकाण्डों को निबाहते रहने पर सम्पर्क क्षेत्र में अपने धर्मात्मा होने की ख्याति फैलाई जा सकती है और पर्दे के पीछे अनेक अनाचार इस प्रकार करते रहा जा सकता है, कि उनके सम्बन्ध में किसी को गंध भी न लगे । इसी चतुरता के बलबूते शोषितों के मुँह से जय-जयकार कराने के लिए मजबूरी उपस्थित की जा सकती है । इतने हथकण्डों को रोक पाना कठिन है । यही कारण है कि प्रत्येक अनाचार के सम्बन्ध में कानूनी प्रतिबन्ध होने, शास्त्रों द्वारा पाप घोषित किए जाने, उपदेशकों द्वारा दुष्कर्मों को हेय ठहराये जाने के धुआँधार प्रचार होते रहने पर भी लोग टस से मस नहीं होते, अपनी बेढंगी चाल में जरा भी परिवर्तन नहीं करते । चिकने घड़े की तरह अपने ऊपर उपदेशों के पानी की एक बूँद नहीं ठहरने देते ।

स्थिति यही बनी रही तो समझना चाहिए कि दुर्भाग्य का काल राहु पीछे ही पड़ा रहेगा और उन स्वर्णिम स्वप्नों के साकार होने का कभी अवसर न मिलेगा, जिसमें मनुष्य सतयुगी सुख-सुविधाओं से भरी पूरी जिन्दगी जी सकने की आशा अपेक्षा की जाती है । मात्र सम्पदा, शिक्षा, बलिष्ठता के बलबूते मनुष्य दूसरों को डरा-धमका कर, फुसलाकर अपना उल्लू सीधा तो कर सकता है, पर उसे औचित्य के प्रति आस्थावान होने के लिए प्रभावित, अनुप्राणित नहीं कर सकता ।

इस दिशा में गम्भीरता से सोचना होगा और ठोस प्रयास करना होगा, अन्यथा जिस सर्वनाशी कुचक्र में हम फँस गए हैं, उसमें से निकलना सहज ही सम्भव न होगा । जेल जाकर वहाँ रहने वाले वरिष्ठों से शिक्षा पाकर जो निकलता है वह अपराधों के क्षेत्र में ट्रेण्ड प्रवीण-पारंगत होता है । सामाजिक भर्त्सना सुनते रहने पर मनुष्य ढीठ हो जाता है और किसी की परवाह न करने की बात कहकर अपने आपको शूरवीर सिद्ध करता है । वेसा ही ढीठ मन बार-बार करने की चुनौती देता है और जो रोकथाम करते हैं, उन्हें मजा चखा देने की धमकी देता है । अनाचार इन्हीं कारणों से बढ़ रहा है । प्रतिरोध को प्रलोभन या धमकी के सहारे कुंठित कर देने पर उसे आधी सफलता मिल जाती है जिस पर अनाचरण के लिए छूट मिली अनुभव करता है । ना समझ पशुओं के बलिष्ठ होने पर भी उन्हें लाठी या लगाम लगाकर इच्छित मार्ग पर चलाया जा सकता है । पर मनुष्य के लिए क्या किया जाय जो अपनी चतुरता और ढीठता के बल पर आदर्शों का उपहास करतें हुए मनमानी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बरतता है। उसे साथी भी आसानी से मिल जाते हैं । मिल जुलकर अनाचार करने और लाभांश करने की विधा अब अनेक लोगों द्वारा सीख ली गई है । वे उसे निधड़क कार्यान्वित भी करते हैं । सज्जनों के बीच ऐसी घनिष्ठ सहायता कदाचित ही हो पाती है कि वे अनीति से जूझें और सत्प्रयोजनों के लिए एकजुट होकर काम करें, किन्तु उलटी दिशा में चलने वाले कुमार्गगामी, कुकर्मी अपने गिरोह और षड़यन्त्र आसानी से बना लेते हैं और समर्थ विरोध के अभाव में अपनी मनमानी व्यापक क्षेत्र में बढ़ चढ़ कर करते रहते हैं ।

पृथ्वी की आकर्षण शक्ति हर वस्तु को ऊपर से नीचे की ओर खींचती है । पानी ढलान की ओर बहता है । मनुष्य के भीतर बैठी हुई जन्म जन्मान्तरों की संचित दुष्प्रवृत्तियाँ भी उसे अनाचार की प्रेरणा देती रहती हैं । वह उसी प्रवाह में बहता और खाई खड्ड में गिरता भी रहता है । इस सरलता को तोड़कर, करना यह होगा कि मनुष्य आदर्शवादी उत्कृष्टता अपनाये, ऊँचा उठे और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करे जिनसे स्नेह सद्भाव भरे-राजमार्ग पर चलते हुए तुष्टि, तृप्ति एवं शान्ति का वातावरण बने ।

उलटे प्रवाह को उलट कर सीधा करने की प्रक्रिया

आकाश से बादल की तरह नव युग का ऐसा आगमन नहीं होने वाला है जिसे दैवी अनुग्रह से बिना पुण्य के ही सब कुछ घर बैठे उपलब्ध हो जायेगा । छप्पर फाड़ कर सम्पत्ति बरसने की आशा किसी को भी नहीं करनी चाहिए । इसके लिए सूझ-बूझ त्याग साहस और पराक्रम को उपयुक्त मात्रा में जुटाना होगा। गिराने और बिगाड़ने में थोड़ा समय लगता है, पर यदि उसे नये सिरों से बनाना हो तो कुशल कारीगरों की, उपयुक्त निर्माण सामग्री की, और निर्माण कृत्य के अनुभवी इंजीनियरों की आवश्यकता पड़ती है । जो इतना जुटा लेते हैं, उन्हीं को दैवी अनुग्रह से मिलने वाला श्रेय और जन साधारण द्वारा मिलने वाला यश सहयोग भी हस्तगत होता है ।

संसार बहुत बड़ा है । उसमें इन दिनों प्राय: ६०० करोड़ व्यक्ति रहते हैं इनमें से हर एक को उलटा सोचने और उलटा करने की अवांछनीयता से विरत करना है । नये सिरे से वह सिखाया और अभ्यास में उतारना है जिसे अगले दिनों अनिवार्य रूप से अपनाना पड़ेगा । परिवर्तन की वेला सदा जटिल होती है । इसे प्रसव वेदना के समतुल्य समझा जा सकता है । अण्डे के कलेवर को तोड़ कर जब बच्चा बाहर आता है तो फिर विचित्र खींचतान पड़ती है । मकान छोड़ने, बदली होने पर भी कई असुविधाओं का सामना करना पड़ता है । उसे सम्पन्न करने के लिए बढ़े, चढ़े कौशल एवम् साहस का परिचय देना पड़ता है ।

सतयुग ऋषि युग था । उन्हीं का पराक्रम और बाहुल्य ही धरती को स्वर्ग बनाये रखने और मनुष्य में देवत्व उभारने में सफल होता था, साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थ परिव्राजक जैसे समर्थ पुरोहित राष्ट्र को, विश्व को जाग्रत-जीवन्त बनाये रहने की जिम्मेदारी उठाते थे और विश्व व्यवस्थाएँ भी बनी रहती थीं जिसे 'स्वर्गादपि गरीयसी', कह कर संबोधित किया जाता था ।

आज पुरोहित वर्ग पुरातन स्तर के पाँचों वर्ग गड़बड़ा और लड़खड़ा गये हैं । उसमें से अधिकांश को स्वर्ग मुक्ति की बिना पर परिश्रम के सम्मान तथा दान दक्षिणा बटोरने की ललक बनी रहती है । निर्धारित दायित्वों को निबाहने वाले कदाचित ही कहीं दीख पड़ते हैं । विश्व परिवर्तन के आधार भूत कार्य लोक मानस के परिष्कार को इसी वर्ग के लोग कर सकते हैं अध्यवसाय समय और लोक मंगल के प्रति समर्पण की रीति-नीति अपनाकर वे भी ऐसा प्रखर व्यक्तित्व विनिर्मित कर पाते हैं कि लोक श्रद्धा के अधिकारी बनने के साथ-साथ अन्य अनेकों की गलाई ढलाई का कठिन कार्य सम्पन्न कर सकें ।

आवश्यकता इन दिनों इसी वर्ग की है । जनसंख्या में कहीं कोई कमी नहीं । अनेक प्रकार की योग्यताओं और चतुरता के धनी भी इस धरती पर भरे पड़े हैं । पर इस कोयले की खदान में बहूमूल्य हीरों को ढूँढ निकालना कठिन हो रहा है । हनुमान, अंगद, भरत, जामवन्त जैसों की मण्डली न बनती तो लंकाकाण्ड रामराज्य के सतयुग में कैसे बदलता, पाण्डव उभर कर आगे न होते तो महाभारत कैसे जीता जाता ? समय की पुकार युग सृजेताओं की है । पुरातन काल में वे उपरोक्त पाँच वर्ग के थे, पर अब तो अपनों को ही सिखधर्म के पाँच प्यारों की तरह अग्रिम पंक्ति में खड़ा करना पड़ेगा । इनका नया नाम "व्रतधारी प्रज्ञा पुत्र" दिया गया है ।

उदारता घर से आरम्भ की जाती है । दूसरों से त्याग और सृजन के निमित्त परक्रम अपनाने और साहस दिखने के लिए किस मुँह से कह जाय । अपना उदारण प्रस्तुत किये बिना दूसरों से 'पर उपदेश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुशल' कहकर कुछ वैसा नहीं कराया जा सकता जिसकी इन दिनों नितान्त आवश्यकता पड़ी रही है । यह कार्य घर से ही आरम्भ करना पड़ेगा । गुरु गोबिन्द सिंह ने अपने बच्चों को अग्रिम मोर्चे पर खड़ा किया था । कुन्ती और मदालसा ने अपने पुत्रों को आदर्श प्रस्तुत करने के लिए आगे धकेला था । बुद्ध और अशोक के बच्चे भी पितृ परम्परा निभाने के लिए बिना ननुनच किये पुण्य-परम्परा निभाने के लिए कटिबद्ध हुए थे ।

युग परिवर्तन का यह अभूतपूर्व स्तर का पुण्य पर्व है । ऐसा संधिकाल भविष्य में फिर कभी किसी को भूमिका प्रस्तुत कर सकने के लिए मिल सकेगा, इसकी आशा नहीं ही की जानी चाहिए । ऐसे भविष्य के शुभारम्भ के लिए किन्हें छाँटा जाय ? उपयुक्त यही लगा कि अपनों को ही अभिमन्यु की तरह चक्रव्यह भेदन के निमित्त भेजा जाय ।

सर्वविदित है कि अखण्ड ज्योति के पृष्ठों पर मात्र विचार प्रतिपादनों का ही उल्लेख नहीं रहता, वरन् उनमें ऐसी प्राणवान प्रेरणाएँ भी भरी रहती हैं कि पाठकों के मन-मस्तिष्क और अन्तराल को भी हिला कर रख दें । उपयुक्त मार्गदर्शन प्रदान करें और ऐसा साहस भी जिसके सहारे आदर्श निर्वाह का कठिन दिखने वाले मार्ग पर उल्लासपूर्वक चलते रहा जा सके। यही कारण है कि इस परिकर के वाचक प्रकारान्तर से युग सृजन के क्रियाकलाप में किसी न किसी प्रकार नियमित रूप से लम्बे समय से भाग लेते चले आ रहे हैं । इन सबके समय दान, अंशदान के समन्वय से नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति की दिशा में इतना अधिक कार्य बन पड़ा है जिसने बिना किसी प्रचार विज्ञापन के विश्व के कोने-कोने में अपने लिए श्रद्धा-विश्वास का प्रगाढ़ वातावरण बना लिया है । साथ ही यह आशा अपेक्षा दशों दिशाओं में उभरी है कि इक्कीसवीं सदी के सम्भावित महान परिवर्तन का श्रीगणेश इसी परिवार से होने जा रहा है। बात एक सीमा तक सही भी है । राजतन्त्र अर्थ तन्त्र स्वेच्छा सेवी तन्त्र, कला तन्त्र, साहित्य तन्त्र, प्रचार तन्त्र अपने-अपने ढंग से प्रगति प्रयोजनों के लिए काम कर रहे हैं । लांछन धर्म तन्त्र पर ही लगता रहा है कि उसे पास व्यक्तियों साधनों और सम्मानों की कमी न होने पर भी नव-सृजन की दिशा में ऐसा कुछ किया जा रहा है जिससे उज्ज्वल भविष्य की आशा अपेक्षा उभरे ।

अखण्ड ज्योति परिवार के परिजनों ने पिछले इक्यावन वर्षों में सृजन और सुधार की दिशा में जो कुछ किया है उसी तुलना में उन्हें अनेक गुना पुरुषार्थ प्रस्तुत करना है । युग संधि के शेष नौ वर्ष इसी तैयारी में जुट जाने की विशेष अवधि है । ऐसी अवधि को समय की पुकार और युगधर्म की गुहार कह सकते हैं।

यों करने को तो पुनरुत्थान के क्षेत्र में बहुत कुछ पड़ा है, पर प्रारम्भ तो थोड़े और छोटे से ही हो सकता है । भूमि पूजन एक छोटे स्थान में ही होता भले ही भवन निर्माण की परिधि कितनी ही विस्तृत क्यों न हो। छात्रों को आरम्भ में कुछ अक्षर ही पढ़ाये जाते हैं भले ही आगे चलकर वह स्नातकोत्तर परीक्षाएँ पास करता क्यों चला जाय ? नये बछड़ों के कंधों पर थोड़ा ही वजन रखा जाता है, भले ही उसे आगे चल कर कितनी ही लम्बी मंजिल पार क्यों न करनी पड़े । इक्कीसवीं सदी बहुमुखी परिवर्तन साथ लेकर आ रही है, उसमें अनेक स्तर की प्रतिभाओं के बहुदेशीय योगदान सम्मिलित होंगे । सामर्थ्य के धनी अपनी-अपनी विशेषताओं के अनुरूप महान परिवर्तन में महती भूमिका सम्पन्न करेंगे, पर अपने परिवार की योग्यता सीमित रहते हुए भी वे भावना की प्रबलता के अनुरूप कुछ कहने योग्य कदम उठायेंगे, ऐसे कदम जिनके अनुकरण की उत्कंठा अन्य असंख्यों को मिल सके । एक से पाँच-पाँच से पच्चीस बनते चलने का क्रम चक्रवृद्धि रीति से गुणन विद्या के अनुरूप साथी सहयोगियों का इतना विस्तार कर सकेगा जो समूचे मानव समुदाय को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करेगा ।

इस प्रकार क्रियाकलापों में संलग्न होने वाले अखण्ड ज्योति के परिजन ''व्रतधारी प्रज्ञापुत्र'' कहलायेंगे । इन्हें तैयार तो स्थानीय प्रज्ञा मण्डल ही करेंगे, पर उन्हें कुम्हार के अवे की तरह पकाया शांतिकुंज में जायगा । इससे वे युगशिल्पी नल-नील की, अंगद-अनुमान की भूमिका निभा सकने के लिए इस महाक्रान्ति के अंशधर बन सकेंगे जो इक्कीसवीं सदी से ''सतयुग की वापसी'' बनकर इस धरती पर प्रत्यक्ष प्रकट होने आ रही है जिसमें बहुत कुछ सुधरा और बदला दिखाई देगा । आशा की जानी चाहिए कि इक्कीसवीं सदी की महाक्रान्ति के लिए युगसंधि के शेष नौ वर्ष में ही व्रतधारी प्रज्ञापुत्रों-की सृजन शिल्पियों की संख्या लाखों को पारकर करोड़ों में जा पहुँचेगी और सृजन तथा सुधार का दुहरा मोर्चा सँभालने के लिए कटिबद्ध हो सकेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाग्रत जनशक्ति नव युग के सरंजाम खड़े करेगी

बहुमत की शक्ति चुनावों के समय वोट गणना के आधार पर देखी जा सकती है । किसी शासक समुदाय को पदच्युत करके दूसरे को सिंहासनारूढ़ कर दिखाना उसके बायें हाथ का खेल है । यही वह कामधेनु है जिसका चुल्लु भर दूध पीकर राजतन्त्र धर्मतन्त्र, अर्थतन्त्र, कलातन्त्र आदि को अपना निर्वाहक्रम चलाने का अवसर मिलता रहता है । इतना ही नहीं अनेकों विलास वैभव तथा कुरीतिपरक चित्र-विचित्र आडम्बर अपना पोषण प्राप्त करते हैं । प्राप्त करने के तरीकों से दबाव, अनुरोध, आग्रह, छद्म फुसलाना आदि कुछ भी क्यों न हो जो कुछ भव्यता इस संसार में दीख पड़ती है, वह आती इसी बहुमत से है । भले ही वह स्वयं गई गुजरी परिस्थितियों में पड़ा क्यों न दीख पड़ता हो ।

जाग्रत इसी को करना है । तनकर खडा होने और उपयोगी दिशा अपनाने के लिए सहमत इसी को करना है । यदि उसे अपनी शक्ति का भान हो सके तो जामवंत के उद्‌बोधन पर हनुमान ने जो पौरुष कर दिखाया था, कृष्ण की प्रेरणा से अर्जुन ने जो चमत्कार दिखाया था, वह जन साधारण कहे जाने वाले लोगों में से प्रत्येक के लिए सम्भव हो सकता है । परमाणुओं की संरचना में विशेष अन्तर नहीं होता । विभिन्न घटकों में अन्तर एक ही देखा जाता है कि उनका नियोजन किस प्रकार बन पड़ा ।

जनशक्ति के बिखराव को एक टोकरी में समेटना और उसके अवांछनीय प्रयोजनों को निर्धारित लक्ष्य पर नियोजित करना; यदि यह दो कार्य बन पड़ें, तो समझना चाहिए कि समग्र प्रगति की सम्भावना में कोई व्यवधान शेष नहीं रहा । जाग्रत और सुनियोजित सन्मार्ग पर गतिशील होने पर उसी के द्वारा वह सब कुछ सम्भव हो सकता है जिसके लिए संसार को बिलखते, तरसते देखा जाता है ।

तिनके-तिनके मिलकर रस्सा और धागे मिलकर कपड़ा बना सकते हैं तो संगठित जनशक्ति के फलस्वरूप यदि अदम्य, अकूत और अजस्र शक्ति उभरे तो इसमें किसी को कोई आश्चर्य नहीं मानना चाहिए । आज तो हम जाति विरादरियों में, धर्म संप्रदायों में, प्रांतों में, भाषाओं में विभाजित हैं । नरनारी के बीच दासी और मालिकी का रिश्ता उन्हें मिलकर संयुक्त शक्ति बन कर रहने नहीं दे रहा है । गरीबी-अमीरी का अन्तर आये दिन ईर्षा, द्वेष, कलह, विग्रह और अपराध-टकराव बन कर उभरता रहता है। फलतः जनशक्ति जो उपलब्ध है, वह छितराकर अस्तव्यस्त हो जाती है । जनशक्ति को उसके अन्तराल में विद्यमान क्षमता से परिचित और उसे यह तथ्य हृदयंग में कराया जाना चाहिए कि अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल देने पर उसकी कैसी अद्‌भुत परिणति हो सकती है ।

अवकाश नहीं कि कठिनाइयों से उबरने और समर्थता प्राप्त करने के लिए किन्हीं बाहरी अनुग्रहों, अनुदानों की अपेक्षा करते हुए निराश, निढाल होकर दीनहीनों की तरह किंकर्त्तव्य विमूढ़ बैठे रहा जाय । फूटे घड़े का छेद रोक देने पर भार से उसमें भरा गया पानी शीतलता बनाये रह सकता है और उसमें कितनों की ही प्यास बुझ सकती है ।

समय और श्रम मनुष्य का वास्तविक वैभव है । मनोयोग और उत्साह का समावेश हो जाने से उसमें और भी अधिक चार चाँद लग सकते हैं। यदि आलस्य और प्रमाद की रक्त चूसने वाली जोंकों से बचा जा सके तो तत्परता और तन्यमता के आधार पर प्रगतिशीलता के अनोखे वरदान किसी को भी हस्तगत हो सकते हैं । यूरोप के थोड़े से लोगों ने अफ्रीका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड जैसे महाद्वीपों की विशाल भूमि पर अधिकार जमा कर कुबेर जैसी सम्पदा और इंद्र जैसी शक्ति क्षमता अपने हाथों ही उपार्जित की । कोई भी व्यक्ति यदि आलस्य प्रमाद न बरते और उत्साह भरे पुरुषार्थ का दिशाबद्ध प्रयोग करे तो निश्चित रूप से वह प्रगतिशील साधन सम्पन्न बनने की स्थिति में पहुँच सकता है । इस तथ्य के अगणित उदाहरण हम अपने इर्दगिर्द ही प्रचुर मात्रा में बिखरे देख सकते हैं ।

इन दिनों उद्दण्ड आतंकवादी, अनाचारी अपने रौब से लोगों को दबाते और बाधित करते देखे जाते हैं । जाग्रत जनशक्ति में इस प्रकार की गुंजाइश कभी भी नहीं रहेगी । समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी के साथ मनुष्य की वरिष्ठता जुड़ेगी । सैनिक जैसा अनुशासन और संत जैसा समर्पण भाव हर किसी के व्यक्तित्व में उभरेगा और छलकेगा ये ही जाग्रत जन शक्ति के सही चिन्ह हैं । उसी के द्वारा नव-सृजन की सभी आवश्यकताएँ पूरी होकर रहेंगी । परोक्षसत्ता का यह सुनिश्चित आश्वासन है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग परविर्तन के लिए आत्म परिवर्तन की आवश्यकता

युग-निर्माण की योजना का श्रीगणेश हमें अपने आप से आरम्भ करना चाहिए । वर्तमान नारकीय परिस्थितियों को भावी सुख शान्तिमयी स्वर्गीय वातावरण में बदलने के लिए चिन्तन की दिशा बदलनी होगी । कहना न होगा कि मानवीय चिन्तन ही एकमात्र वह केन्द्र बिन्दु है जिसके आधार पर व्यक्ति की दिशा, प्रतिभा, क्रिया, स्थिति एवं प्रगति पूर्णतया निर्भर है । चिंतन की उत्कृष्टता निकृष्टता के आधार पर व्यक्ति देव और असुर बनता है । स्वर्ग और नरक का सृजन पूर्णतया मनुष्य के अपने हाथ में है । अपने भाग्य और भविष्य का निर्माण हर कोई स्वयं ही करता है । उत्थान एवं पतन की कुञ्जी चिन्तन की दिशा को ही माना गया है । हमें अपनी परिस्थितियाँ यदि उत्कृष्ट स्तर की अभीष्ट हों तो इसके लिए एक अनिवार्य शर्त यह है कि अपने चिन्तन की धारा निकृष्टता की दिशा में प्रवाहित होने से रोककर उसे उत्कृष्टता की ओर मोड़ दें । यह मोड़ ही हमारे स्तर, स्वरूप और परिस्थितियों को बदलने में समर्थ हो सकता है । चिन्तन निकृष्ट स्तर का हो और हम महानता वरण कर सकें यह सम्भव नहीं । संकीर्ण और स्वार्थी लोग अनीति से कुछ पैसे भले ही इकट्ठे करलें पर उन विभूतियों से सर्वथा वर्जित ही बने रहेंगे जो व्यक्तित्व को प्रखर और परिस्थितियों को सुख-शान्ति से भरी संतोषजनक बना सकती है ।

समाज व्यक्तियों के समूह का नाम है । व्यक्ति जैसे होंगे समाज वैसा बन जायगा । आज अपने समाज में अगणित प्रकार के विग्रह, संकट, अभाव, क्लेश और दुःखों का बाहुल्य दीखता है । पग-पग पर उलझनें उलझी पड़ी हैं । समस्याओं का अन्त नहीं। दुर्बलताएँ और विपत्तियाँ सावन की घटाओं की तरह घुमड़ती चली आ रही है । न सामाजिक कुरीतियों का अन्त होता है—न अनैतिकता की बाढ़ रुकती है । देश की राजनीति पिछले २२ वर्षों में जो जो करवटें ली हैं उसे जन-साधारण का मन निराश हो चुका है और लगता है थोथे वादे करने वाले नेता अपनी आपाधापी में इतने गहरे घुसे बैठें हैं कि उनके लिए लोक-मंगल के लिए सचमुच कुछ बड़ा काम कर सकना सम्भव नहीं है । इसी प्रकार धर्म क्षेत्र का नेतृत्व करने वाले जन-मानव में उत्कृष्टता उत्पन्न करने की बात सोचते भी नहीं उन्हें अपना सम्प्रदाय और सम्मान बढ़ाने तथा चेलों को अधिकाधिक मूँड़ने भर की चिन्ता है । साधु, ब्राह्मण लोगों की मनोदशा सुधार पाये इस पर अब सर्वथा अनास्था ही व्याप्त है । जो स्वयं धर्म को नहीं पहचानते वे भला दूसरों को धार्मिक कैसे बना सकेंगे ?

लोग जैसे होंगे वैसा ही समाज एवं राष्ट्र बनेगा । दीन दुर्बल स्तर की जनता कभी समर्थ और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकती । जनता में ऐसे ही हर क्षेत्र का नेतृत्व उदय होता है । धर्म, शासन, व्यवसाय, उद्योग, चिकित्सा, शिक्षा, शिल्प-कला आदि सभी क्षेत्रों का नेतृत्व जनता के ही आमदनी करते हैं । और जब जन-मानस का स्तर गिरा हुआ हो तो ऊँचे, अच्छे, समर्थ और सजीव व्यक्तित्व नेतृत्व के लिए कहाँ से आवेंगे ? जो राष्ट्र की धाराएँ सम्भालते और चलाते हैं वे यदि विकृत और दुर्बल मनोभूमि लिये हुए होंगे तो राष्ट्र किसी भी दिशा में प्रगति न कर सकेगा । हर ओर दुर्बलता और असफलता ही दृष्टि-गोचर होगी । २२ वर्ष इस जमाने बहुत लम्बी अवधि है । इतने समय में पिछड़े हुए परास्त देश पुनः अभिनव शक्ति लेकर उठ खड़े हुए हैं । रूस, चीन, जर्मनी, जापान, क्यूबा, इसरायल आदि देशों ने स्वल्प काल में ही अपना काया कल्प कर डाला एक हम हैं जो उलटे पीछे फिसलते चले जा रहे हैं । इस सामाजिक एवं राष्ट्रीय दुर्बलता के लिये एक ही तथ्य उत्तरदायी है और वह है—जन-मानस की चिन्तन धारा । विकृतियाँ यहीं से उद्भव होती हैं। व्यक्तित्व इसी निकृष्टता के कारण स्वार्थी और संकीर्ण बनते हैं । ओछे व्यक्तियों से भरा समाज विग्रहों, समस्याओं, दुर्बलताओं और अभावों का केन्द्र ही बना रहेगा ।

छुटपुट प्रयत्नों से काम चलने वाला नहीं है । चेचक की फुन्सियों पर अलग-अलग पट्टियाँ कौन, कहाँ तक, बाँधेगा ? दसों दिशाओं में संव्याप्त अगणित समस्याओं का समाधान कोई कहाँ तक करेगा ? गिरते हुए स्वास्थ्य को देखते हुए हर व्यक्ति के लिए एक डाक्टर और एक अस्पताल चाहिए । आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए हर घर में कुबेर का खजाना गढ़ा मिलना चाहिए । परिवारों का विग्रह शान्त करने के लिए घर-घर कल्प-वृक्ष उगाये जाने चाहिये । यह सब सम्भव नहीं । छुटपुट उपाय मनोरंजन के लिए अच्छे हैं । गत २२ वर्षों में हम तरह-तरह की योजनाएँ बनाकर-तरह-तरह के उत्पादन भी कर रहे हैं पर अस्वस्थता से लेकर निर्धनता तक और अपराधों से लेकर राष्ट्रीय समर्थता तक एक भी प्रयोजन पूरा न हो सका । जड़ की उपेक्षा कर पत्तों को सींचने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो फल मिलना चाहिए उतना ही मिला है, मिल रहा है ।

व्यक्ति और समाज की समग्र प्रगति के लिए चिन्तन की स्वस्थ दिशा एवं उत्कृष्ट दृष्टिकोण का होना अनिवार्य आवश्यक है । इसकी पूर्ति चाहे आज की जाय चाहे आज से हजार वर्ष बाद । प्रगति का प्रभात उसी दिन उदय होगा जिस दिन यह भली-भाँति अनुभव कर दिया जायगा कि दुर्दशा से छुटकारा पाने के लिए दुर्बुद्धि का परित्याग आवश्यक है । आज की स्थिति में सबसे बड़ा शौर्य, साहस, पराक्रम और पुरुषार्थ यह है कि हम पूरा मनोबल इकट्ठा करके अपनी और अपने से सम्बन्धित व्यक्तियों की विचार शैली में ऐसा प्रखर परिवर्तन प्रस्तुत करें जिसमें विवेक की ही प्रतिष्ठापना हो और अविवेकपूर्ण दुर्भावनाओं एवं दुष्प्रवृत्तियों को पैरों तले कुचल कर रख दिया जाय ।

आज मूढ़ता और दुष्टता से भरी पद्धतियाँ और प्रक्रियाएँ जन-मानस में पैर गढ़ा कर बैठी हैं । लगता है कि मानो वे ही उचित, आवश्यक एवं स्वाभाविक हों । लगता है वे ही मानव जाति की चिर परम्पराएँ हों । लगता है इन्हें बदला जाना परम्पराओं का अपमान और असौम्य आवरण है। मूढ़ता और दुष्टता के प्रति व्यामोह ने हमें असहाय और कायर बना दिया है । जिसे अनुचित अवांछनीय समझते हैं उसे बदलने सुधारने का साहस कर नहीं पाते । न तो सत्य को अपनाने का साहस है और न असत्य को त्यागने का । कुड़-कुड़ाते भर जरुर हैं कि हम अनुपयुक्त विचारण एवं परिस्थितियों से ग्रस्त है पर जब सुधार और बदलाव का प्रश्न आता है तो पैर थरथराने लगते हैं और जी काँपने लगता है । कायरता नस-नस में रमकर बैठ गई है । अपनी अवांछनीय मान्यताओं से जो नहीं लड़ सकता वह आक्रमणकारियों से क्या लड़ेगा ? जो अपनी विचारणा को नहीं सुधार सका वह परिस्थितियों को क्या सुधारेगा ? जो अन्तरंग में दरिद्र है वह बाह्य जीवन में सम्पन्न होने के सपने क्या कभी सार्थक कर सकेगा ?

हम देर से शौर्य और साहस का आह्वान कर रहे हैं क्योंकि वह अध्यात्म का-धर्म का, मनुष्य का सजीवता का प्रथम चिन्ह है । जिसमें साहस नहीं वह देखने में भले ही जीवित हो वस्तुतः मृतक है । डरपोक और कायर व्यक्ति पूजा-पाठ की कितनी ही विडम्बनाएँ करता रहे वस्तुतः उसे नास्तिक ही कहा जाएगा । भगवान सत्य के-, न्याय के, विवेक के, शौर्य के रूप में मनुष्य के अन्तः करण में अवतरित होता है। आस्तिकता के यही अविछन्न स्वरूप है ।

जो असत्य और अनौचित्य को इसलिये स्वीकार करता कि प्रतिरोध करने पर उसे झंझट में फँसना पड़ेगा वह वस्तुतः नास्तिक है । उसे ईश्वर पर विश्वास रहा होता तो अवांछनीय से लड़ने में सहायता करने वाले भगवान की, अर्जुन का रथ हाँकने वाले गीता नायक कृष्ण की, याद जरुर आती । मरने तक से वह न डरता और जो उचित है उसे करने और जो अनुचित है उसे अस्वीकार करने की तत्परता प्रकट करता । डरपोक कहीं असली नास्तिक और असली अधर्मी है । भीरुता ही समस्त पापों की जननी है । डरपोक ही दुष्ट हो सकता है । निर्भयता का जिसने वरण कर लिया उसके लिए शक्ति की उज्जवल धारायें दसों दिशाओं में प्रवाहित होती हुई उपस्थित रहेगी ।

युग परिवर्तन का शुभारम्भ अपनी मनोभूमि के परिवर्तन के साथ आरम्भ करना होगा । हम लोग नव-निर्माण के सन्देश वाहक एवं अग्रदूत हैं । परिवर्तन की प्रक्रिया हमें अपनी चिन्तन दिशा से अविवेक से विलग कर विवेक के आधार पर विनिर्मित करनी चाहिए । जो असत्य है, अवांछनीय है, अनुपयोगी है, उसे छोड़कर हम साहस दिखायें । अब बहादुर वे नहीं गिने जायेंगे जो तलवार चलाने में प्रवीण हैं और एक ही झटके में दूसरों का सिर काट सकते हैं । अब बहादुरी का मुकुट उनके सिर बाँधा जायगा जो अपनी दुर्बलताओं से लड़ सकें और अवांछनीयता को स्वीकार करने से इनकार कर सकें । शूरवीर वे कहलायेंगे जो सत्य के पथ पर एकाकी चल सकें । विरोध कितना ही बड़े परिमाण में, कितने ही प्रिय घनिष्ट लोगों का-क्यों न हो पर जो सत्य को सर्वोपरित समझकर हर दबाव के सामने झुकने से इनकार कर सकें । अंधी भेड़ों का कितना ही बड़ा झुण्ड गड्ढे में गिरने क्यों न जा रहा हो पर जो अपना रास्ता आप बना सके और एकाकी चल सके, वह सिंह शावक ही सराहनीय है । नव-निर्माण के अग्रदूतों की साहसकिता इसी स्तर की होनी चाहिए । उनका प्रथम चरण अपनी अवांछनीय मान्यताओं को बदल डालने और अपने क्रिया-कलाप में आवश्यक परिवर्तन करने के लिये एकबार पूरा मनोबल इकट्ठा कर लेना चाहिए और बिना दूसरों की—निन्दा स्तुति की—विरोध समर्थन की चिन्ता किये निर्दिष्ट मथ पर एकाकी चल देना चाहिए । ऐसे बड़े कदम जो उठा सकते हों उन्हीं से यह आशा की जायगी कि युग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिवर्तन के महान अभियान में वे वास्तविक योगदान दे सकेंगे ।

जानकारियाँ देने और ग्रहण करने भर की आवश्यकता वाणी और लेखनी द्वारा सम्पन्न की जा सकती हैं । तर्क और प्रमाण प्रस्तुत करके विचार बदले जा सक्ते हैं । पर अन्तरंग में जमी हुई आस्थाएँ तथा चिर अभ्यस्त गतिविधियों को बदलने के लिये समझाने-बुझाने से भी बड़ा आधार प्रस्तुत करना पड़ेगा और वह है—'अपना आदर्श एवं उदाहरण प्रस्तुत करना ।' अनुकरण की प्रेरणा इसी से उत्पन्न होती है । दूसरों को इस सीमा तक प्रभावित करना कि वे भी अवांछनीयता को छोड़ने का साहस दिखा सकें तभी सम्भव है जब वैसे ही साहसी लोगों के अनुकरणीय आदर्श सामने प्रस्तुत किये जा सकें । आज आदर्शवादिता की बढ़-चढ़कर बातें करने वाले—'पर उपदेश कुशल' बहुत है, पर जो अपना उदाहरण प्रस्तुत कर सकें, ऐसे निष्ठावान देखने को नहीं मिलते। यही कारण है कि उपदशों पर किया हुआ श्रम व्यर्थ सिद्ध होता चला जा रहा है और सुधार की अभीष्ट आवश्यकता पूरा हो सकने का सुयोग नहीं बन पा रहा है ।

इस अभाव की पूर्ति का हम लोग साहस कर सकें तो सुधार क्षेत्र में एक नये उपचार की परम्परा आरम्भ करेंगे, इन दिनों वाचलता ही नेतृत्व का आधार बनी हुई है । जिसने लच्छेदार बाते नाटकीय हाव-भाव के साथ स्टेज पर प्रस्तुत कर सकने की कला सीख ली है वही नेता पद का अधिकारी बन बैठा है । 'अभिनेताओं' को नेता का पद देने से भावनात्मक प्रशिक्षण की आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती । आज हर क्षेत्र में अभिनेता ही मूर्धन्य बने बैठे हैं और उन्हीं की वाचालता लोक-शिक्षण की अति उत्तरदायित्व पूर्ण व्यास पीठ पर कब्जा कर सकने में समर्थ हो गई है । इससे कुछ बना नहीं बिगड़ा ही है, कुछ पाया नहीं खोया ही है । ओछे व्यक्तित्व जिनके अपने जीवन में कोई प्रकाश नहीं-केवल बकझक के आधार पर दूसरों की जीवन दिशा नहीं मोड़ सकते । वे कौतुक कौतूहल भर करते रह सकते हैं । उनकी कलाकारिता पसन्द तो की जायगी पर उससे कोई प्रभावित न हो सकेगा।

व्यक्ति और समाज के नव-निर्माण के लिए जिस लोक शिक्षण की आवश्यकता है उसकी पूति उन महान व्यक्तित्व द्वारा ही सम्पन्न होगी जो अपनी कथनी और करनी की एकात्मकता का प्रमाण प्रस्तुत कर सकें । इसी स्तर के लोग सफल नेतृत्व कर सकने में समर्थ हुए हैं । अब सभा सम्मेलन बुलाने और शानदार समारोह करने की व्यर्थता प्रकाट हो चुकी है। इस दिशा में बहुत किया जा चुका है । धार्मिक और राजनैतिक समारोह हम रोज ही होते देखते हैं उनकी क्षणिक-सी हलचल दो-चार दिन दीखती है इसके बाद कठपुतली के तमाशों की तरह वह खेल समाप्त होकर विस्मृति के गर्त मे चला जाता है । कोई स्थिर प्रभाव उसका नहीं होता । यदि हो सका होता दो वक्ताओं के धुआँधार भाषण, अखबार में छपने वाले फड़कते लेख, रेडियो से उड़ने वाले लम्बे-चौड़े वक्तव्य अब तक जन-मानस को बदल सकने और व्यक्ति और समाज को ऊँचा उठाने का प्रयोजन कब का पूर्ण कर चुके होते ।

जो बात हजारों बार परखी जा चुकी उसे अब निरंतर नहीं परखते रहने चाहिये । पिसे को पीसने से क्या लाभ ? जन-मानस के परिवर्तन की महती आवश्यकता को यदि सचमुच पूरा किया जाना है तो उसका रास्ता एक ही है कि आदर्शों को जीवन में उतार सकने वाले साहसी लोगों का एक ऐसा दल प्रकट हो जो अपने आचरणों द्वारा यह सिद्ध करे कि आदर्शवादिता केवल एक-दूसरे को उपदेश करने भर की विडम्बना नहीं है वरन् उसे कार्य रूप से परिणत भी किया जा सकता है । इस प्रतिपादन का प्रमाण प्रस्तुत करने के लिये हमें अपने को ही आगे करना होगा । दूसरों के कन्धे पर बन्दूक रखकर गोली नहीं चलाई जा सकती । आदर्श कोई और प्रस्तुत करे और नेतृत्व हम करें अब यह बात नहीं बनेगी । हमें अपनी आस्था की प्रामाणिकता अपने आचरण द्वारा सिद्ध करनी होगी । आचरण ही सदा से प्रामाणिक रहा है, उसीसे लोगों को अनुकरण की प्रेरणा दी है । आगे भी वही प्रक्रिया कोई कारगर परिणाम प्रस्तुत कर सकेगी।

आज की विषम परिस्थितियों का मूलकारण खोजने पर हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि व्यक्ति को ओछे स्तर पर उतर आना, विचारणा में निष्कृष्टता और भावनाओं में संकीर्ण स्वार्थपरता का भर लेना ही वह कारण है जिससे अनेक प्रकार की दुष्प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं और दुर्घटनाएँ घट रहीं हैं । धन, बुद्धि, साधन एवम् पदार्थों की कमी इस दुनिया में नहीं है वे इतनी प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं कि यदि उनका सदुपयोग सम्भव हो तो सर्वत्र सुख-शान्ति के सुहावने संदर्भ प्रस्तुत रह सकते हैं । दारिद्रय, रोग, शोक, अपराध, क्लेश, कलह, दुर्भाव, विद्वेष एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विपत्ति विद्रूपों की अगणित समस्याएँ केवल मानवीय दुर्बुद्धि एवं दुर्बलता के कारण उत्पन्न हो रही हैं । जब तक यह स्थिति बनी रहेगी-विज्ञान की उपलब्धियाँ शिक्षा, सम्पदा, चिकित्सा, कानून आदि की कितनी ही बढ़ोत्तरी कर ली जाय, कोई कारगर परिणाम उत्पन्न न होगा । सच तो यह है दुर्बुद्धि ग्रस्त लोगों को जितने साधन उपलब्ध होते जायेंगे वे उतने ही अधिक दुष्कर्म करेंगे, उतने ही विलासी और दुष्ट बनेंगे । सर्प को जितना दूध मिलेगा उसका विष उसी अनुपात से बढ़ता चला जायगा । सम्पदाओं का अभिवर्धन उसी स्थिति में उपयोगी हो सकता है जबकि सद्भावना और सत्प्रवृति का--सज्जनता और सौजन्य का अभिवर्धन भी निरन्तर किया जता रहे । दुष्टता बनी रहे और सम्पत्ति बढ़े तो निश्चित रूप से विपत्तियाँ बढ़ने का क्रम वैसे ही बढ़ता चला जायगा जैसा कि चक्रवृद्धि गति से इन दिनों बढ़ता दीख रहा है ।

यह भुलाया नहीं जाना चाहिये व्यक्तिगत सुख-सम्पत्ति से उत्पन्न हुए लाभ का कोई उपयोग नहीं कर सकता है जब सामाजिक वातावरण नीति और सदाचार से भरा हो । यदि समाज में दुष्प्रवृतियाँ भरी पड़ी हैं तो पड़ोसी लोग किसी भले मनुष्य को उसकी श्रम संचित सम्पदा का लाभ भी न उठाने देंगे । ईर्ष्या और दुष्टता के आक्रमण भले मानुसों पर ही अधिक होते हैं और वे अकारण सताये जाते हैं । इसलिये किसी को यह मानकर सन्तुष्ट नहीं हो बैठना चाहिये कि हम स्वयं भले हैं तो अपनी भलमनसाहत का लाभ लेकर सुखी बने रहेंगे । अपनी सुरक्षा की दृष्टि से भी हमें समीपवर्ती वातावरण में सज्जनता का समावेश करना पड़ेगा । रोजाना छोटी तिजोरी में रहता है पर उसकी सुरक्षा के लिये केवल तिजोरी की देख-भाल करना काफी नहीं होता वरन् उस इमारत की नाकेबन्दी और पहरेदारी करनी पड़ती है । व्यक्तिगत भलमनसाहत से सुख-शान्ति प्राप्त होने की आशा उन्हीं को करनी चाहिये जो समीवर्ती वातावरण में सुरक्षात्मक सौजन्य उत्पन्न कर सकें । वातावरण को सुधारना वस्तुतः अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं को ही सुरक्षित रखना है । स्वार्थ एकाकी नहीं जा सकता उसके साथ परमार्थ की सुरक्षात्मक दीवार खड़ी करनी आवश्यक होती है समाज का चलना प्रचलन अच्छा बने तो ही हमारी व्यक्तिगत सुविधाएँ तथा परिस्थितियाँ सुख-शान्ति पूर्ण बन सकेंगी इसलिए विशुद्ध स्वार्थ की दृष्टि से सोचें तो भी हम में से हर एक को सामाजिक वातावरण के परिष्कार के लिए दत्त-चित्त और प्रयत्नशील होना चाहिए ।

लोक-मानस में जितनी दुर्बुद्धि और दुष्टता भरी होगी उतनी ही विपत्तियाँ उत्पन्न होंगी । आज हर क्षेत्र में घोर विक्षोभ छाया हुआ है । राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, परिवारिक, शारीरिक हर क्षेत्र में इतना विग्रह, संकट एवं गतिरोध उत्पन्न हो गया है कि सर्वत्र घोर अशांति से भरा निविड़ अंधकार घिरा दीखता है । आकाश पाताल के कुलावे मिलने पर भी एक समस्या जब तक सुलझ नहीं पाती तब तक दस नई उपज कर खड़ी हो जाती हैं । आजादी प्राप्त करने के गत २२ वर्षों में प्रगति के लिये विविध विधि प्रयत्न किये गये हैं पर परिणाम का लेखा-जोखा लेते हैं हम आगे बढ़ना तो दूर उलटे पीछे फिसले हैं । यह क्रम चलता ही रहेगा यदि हमने वस्तुस्थिति की ओर से शुतुरमुर्ग की तरह आँखें बन्द किये रखीं । इस तथ्य को भली प्रकार समझ लिया जाना चाहिए कि व्यक्ति की मनोभूमि में यदि उत्कृष्टता की फसल न बोई गई, उसमें निकृष्टता ही फलती फैलती रही तो प्रगति के सारे स्वप्न निराधार सिद्ध होते रहेंगे । इस तथ्य को भली प्रकार हृदयंगम कर लिया जाना चाहिए कि केवल सज्जनता का अभिवर्धन ही अगणित समस्याओं का एक मात्र समाधान है । सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने वाले समाज ही वलिष्ट एवं समर्थ होते हैं और सज्जनता से ही व्यक्तित्वों में प्रखरता उत्पन्न होती है । सम्पत्तियाँ और सफलताएँ समर्थता की अनुचरी है और समर्थता का सारा आधार उत्कृष्टता विचारणा एवं क्रिया पद्धति पर अवलम्बित है ।

यदि व्यक्ति और समाज की सुख-शान्ति के लिये हम वस्तुतः अभिलाषी हों तो मूलकारण पर ध्यान देने और वास्तविक संकट के निवारण के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए । जन-मानस की विचारणा का परिष्कार ही वह केन्द्र बिन्दु है जिस पर प्रगति और समृद्धि का आधार अवलम्बित है । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये प्रचार साधनो की अपनी सदुपयोगिता ही है सो उसके साधन जुटाने भी चाहिए पर इतने भर से काम न चलेगा । लोक-मानस को प्रभावित करने के लिये हमें ऐसे व्यक्तित्व उत्पन्न करने चाहिए जो दूसरों के सामने अपने अनुकरण की मिसाल उपस्थित करें । आदर्शवादिता का वातावरण आदर्शवादी ही उत्पन्न कर सकते हैं । यह शिक्षण तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि कुछ आदर्शवादी सर्व साधारण के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामने यह प्रत्यक्ष प्रमाण न उपस्थित करें कि उत्कृष्ट जीवन सरलता पूर्वक जिया जा सकता है। आज जन-मानस में यह भय और भ्रम गहराई तक घुस गया है कि आदर्शवादी जीवन में कष्ट और कठिनाइयाँ भरी पड़ी हैं । उत्कृष्ट विचारण केवल कहने सुनने भर का मनोरथ करने के लिये है उसे व्यावहारिक जीवन में कार्यान्वित नहीं किया जा सकता । प्राचीन काल के महापुरुषों के उदाहरण प्रस्तुत करना काफी नहीं । उत्साह तो प्रत्यक्ष से ही उत्पन्न होता है । जो सामने है उसी से अनुकरण की प्रेरणा उपज सकती है । सो इस अभाव एवं आवश्यकता की पूर्ति किसी न किसी को तो पूरी करनी ही होगी । इसके बिना विकृतियों और विपत्तियों के वर्तमान संकट से छुटकारा पाया न जा सकेगा ।

यह आवश्यकता हम लोगों को ही पूरी करनी होगी । दूसरे लोग इस मोर्चे से पीछे हट रहे हैं उन्हें नेतागीरी, यश, प्रशंसा, मान प्राप्त करने की ललक तो है पर अपने को आदर्शवाद की प्रतीक प्रतिमा के रूप में प्रस्तुत करने का साहस नहीं हो रहा है । लाभ उठाने के लिये हर कोई तैयार है । सुधारक बनने वाले भी धन का सही यश और मान तो चाहते ही हैं। यह प्राप्त करना ही हुआ । यश एवं मान भी धन की ही तरह एक सांसारिक आकर्षण है । बहुत लोग विपुल धन खर्च करके यश प्राप्त करते हैं । विवाह शादी, पार्टी, प्रीतिभोज, प्याऊ, अन्नक्षेत्र, धर्मशाला, मन्दिर आदि में जो धन खर्च किया जाता है उसमें अधिकतर यश की लालसा ही काम करती है । जसे बिना यश के लोक-सेवा करनी होगी वह जन-मानस को मुक्त बनाने वाले ज्ञान-यज्ञ सरीखे ऐसे काम करेगा जो आँख से न दिखाई पड़ने के कारण प्रशंसा तो नहीं देते पर लोक-मंगल की वास्तविक आधार शिला रखते हैं। यश चाहने वाला लोक रुचि के काम करेगा उसकी नकेल प्रशंसकों के हाथ होगी । वह ऐसा कोई काम न कर सकेगा जिसमें लोगों का विरोध सहना पड़े, निन्दा सुननी पड़े । सुधारक का मुख्य काम जन-मानस का परिष्कार करना है । प्रचलित विकृतियों रुढ़ियों एवं दुष्प्रवृत्तियों का प्रतिरोध करना है जो यह काम हाथ में लगा उसे स्वभावतः परम्परावादियों का विरोध सहना पड़ेगा । तिरस्कार और अपयश सुनना पड़ेगा । ऐसा करने का साहस वह नहीं कर सकता जिसने सार्वजनिक जीवन में यश और मान पाने के लिये प्रवेश किया है । यही कारण है कि आज के अगणित तथाकथित 'लोक-सेवी' अवांछनीय लोक मान्यताओं के ही अनुगामी बने हुए हैं । धार्मिक क्षेत्र के अधिकांश नेता-सन्त महन्त-जनता की रुढ़ियों, मूढ़तयों और अन्ध परम्पराओं का पोषण-उनकी अवांछनीयता को समझते हुए भी करते रहते हैं । राजनैतिक नेता अपना चुनाव जीतने के लिए वोटरों की अनुचित माँगें पूरी करने के लिए भी सिर झुकाये रहते हैं ।

इस स्थिति में पड़े हुए लोग जन-मानस के परिष्कार जैसी—लोक-मंगल की मूलभूत आवश्यकता पूर्ण कर सकने में समर्थ नहीं हो सकते । इस प्रयोजन की पूर्ति वे करेंगे जिनमें लोक-रंजन की अपेक्षा लोक-निर्माण के लिये आगे बढ़ने का-निन्दा अपयश और विरोध सहने का साहस हो । स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों ने बन्दूक की गोलियाँ खाई थीं । बौद्धिक पराधीनता के विरुद्ध छेड़े हुए अपने विचार क्रान्ति संग्राम में भाग लेने वाले सेनानियों को कम से कम गाली खाने को तो तैयार रहना ही होगा, जो गाली खाने से डरेगा वह अवांछनीयता के विरुद्ध आवाज कैसे उठा सकेगा ? अनौचित्य से लड़ कैसे सकेगा ? अविवेक और अनाचार का उन्मूलन कैसे कर सकेगा? इसलिए युग परिवर्तन के महान अभियान का नेतृत्व कर सकने की आवश्यक शर्त यह है कि इस क्षेत्र में कोई यश और मान पाने के लिये नहीं-विरोध निन्दा एवं तिरस्कार पाने की हिम्मत लेकर आगे आये। ऐसे साहसी और शूरवीर लोग दिखाई कहाँ पड़ते हैं ? यह कहानी प्रसिद्ध है कि बिल्ली से बचने के लिये चूहों ने उसके गले घण्टी बाँधने का फैसला किया था, पर जब यह कार्य करने की जिम्मेदारी उठाने का प्रश्न आया तो कोई चूहा उसके लिये तैयार न हुआ । हमारी भी यही दशा है । मूढ़ता से ग्रसित लोगों की हाँ में हाँ मिलाकर हम सस्ती वाहवाही लूटते रहना चाहते हैं । फिर नव-निर्माण का सुधारात्मक अभियान गतिशील बनाने में मिलने वाले विरोध और तिरस्कार को सहन करने के लिये आगे कौन आये ? इसके लिये प्रखर मनोबल और प्रचण्ड साहस की जरुरत पड़ती है। इसे एक दुर्भाग्य ही कहना चाहिये कि मूर्धन्य स्तर के लोग भी साहस विहीन लुज-पुज दिखाई दे रहे हैं और शौर्य पराक्रम के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से डरकर आगे बढ़ने की हिम्मत कर नहीं पा रहे हैं ।

आजकल धन से बड़प्पन जुड़ गया है । इसलिये हर व्यक्ति हर समय धन कमाने और जमा करने की प्रवृत्ति में लगा हुआ है । इसी प्रयोजन से सारा समय,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सारा बुद्धिबल, सारा श्रम, सारा मनोयोग लगता है । परिवार के लोग तथा—तथाकथित स्वजन सम्बन्धी भी इसी प्रवृत्ति को पसन्द और प्रोत्साहित करते हैं । आवश्यकताएँ पूरी होते रहने की व्यवस्था होने पर भी व्यक्ति अधिकाधिक धन पाने के लिये लालायित रहता है और उसी में प्रवृत्त रहता है । तथाकथित शुभ चिन्तक लोग इसी प्रवृत्ति को सराहते और समर्थन देते हैं । लगभग सभी लोगों का जीवन-क्रम इसी दिशा में चल रहा है । सफलता किसे कितनी मिल सकी यह बाद दूसरी है । अपना देश बहुत गरीब है, यहाँ उपार्जन के आधार बहुत सीमित हैं इसलिये निरन्तर जुते रहने पर भी किसी के लिये बहुत धनी बन सकना सम्भव नहीं । भाग्य के सिकन्दर, असाधारण चातुर्य के आधार पर ही इतना कर सकते हैं जिससे वे धनी कहला सकें । अगणित लोग इस लालसा में नीति अनीति का विचार किये बिना अनैतिक एवं अपराध स्तर के काम करते रहते हैं । फिर भी कोई विरला ही सम्पन्न बन पाता है। परिणाम जो भी हो पर हविस एक ही है जैसे भी बने अधिक धन कमाया और उड़ाया जाय । उपार्जित धन का सदुपयोग कर सकना भी लोगों को आता तो भी एक बात थी पर देखते हैं कि जो कमाया उसका अधिकांश विलासिता, व्यसन और अहंकार की पूर्ति में ही अपव्यय के रूप से उगाया गया और उससे सौभाग्य माना गया ।

इस अर्थ लोलुपता के निविड़ जाल-जंजाल में फँसे हुए जमाने में से लोक-निर्माण के लिये कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकने के लिये समय, श्रम और धन कैसे बचे ? कौन बचाये ? ऐसा कोई साहसी ही कर सकता है । पेट भरने और तन ढकने तक की आवश्यकता सहज ही पूरी हो सकती है । कितने ही ऐसे हैं जो अब तक की संचित सम्पदा के बलबूते पर गुजर आसानी से कर सकते हैं । कितने ही ऐसे हैं जो कुछ घन्टे श्रम करके पेट पालने की आवश्यकता पूरी कर सकते हैं । निर्धन लोग भी आठ घन्टे मजूरी करके गुजारा करते हैं । आठ घन्टे सोने, खाने आदि नित्य कर्म के लिये रखें तो आठ घन्टे उनके पास भी बचते हैं । मन यदि तृष्णा से विरत हो तो लोक मंगल के लिये हर किसी के पास ढेरों समय बच जाय । हर आदमी अपनी कमाई का एक छोटा अंश नव-निर्माण के लिये दे ही सकता है । मन में जितनी ललक धन उपार्जन की है उसकी शतांश भी यदि लोक-मंगल का महान कर्त्तव्य पूरा करने को जग पड़े तो हर परिस्थिति का व्यक्ति अपने ढंग से अपने क्षेत्र में बहुत कुछ कर सकता है और अनेक व्यक्तियों द्वारा किया हुआ थोड़ा-थोड़ा प्रयत्न भी कुल मिलाकर इतना अधिक हो सकता है कि उसका आश्चर्यजनक प्रतिफल प्रत्यक्ष देखा जा सके ।

यहाँ भी आवश्यकता साहस की ही पड़ती है । पहले अपने मन को फिर तथा कथित प्रियजनों को निर्वाह मात्र की उपलब्धि से सन्तुष्ट होने के लिये समझाया जा सके तो सामान्य स्तर का व्यक्ति भी अपना कुछ समय, श्रम और धन लोक-मंगल के लिये दे सकता है और अपने को आदर्शवादी व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण बना सकता है इच्छा रहते हुए भी कुछ कर नहीं पाते इसका एकमात्र कारण आन्तरिक दुर्बलताओं से जूझ पड़ने के साहस का अभाव ही है। यदि हम अपनी वासना और तृष्णा को हटाकर एक कोने पर रख दें और निर्वाह भर की व्यवस्था में सन्तोष मान लें तो प्रतीत होगा कि अपने पास जो संग्रहीत है उसे बेटे , पोतों को हराम का उपहार देकर उन्हें आलसी और व्यसनी बनाने की अपेक्षा लोक-मंगल के लिये देने की बात सोचने लगें तो उतने भर से सारी जिन्दगी आसानी से कट सकती है । और समय और धन का बहुत बड़ा भाग लोक-मंगल के लिये दिया जा सकता है । देने की आश्चर्य जनक स्थिति होने पर भी हम दीनदारिद्रों की तरह अधिक उपार्जन और उपयोग की रट लगाये रहे तो हम अपने व्यकितत्व को महापुरुषों की उस पंक्ति में कैसे बिठा सकेंगे जिनकी नव-निर्माण के लिये नितान्त आवश्यकता है ।

ईश्वर की सच्ची पूजा, आत्मा की सच्ची प्रगति, जीवन के स्वरूप को आदर्श एवं अनुकरणीय बनाने में सन्निहित है । स्वर्ग में मोक्षि, सिद्धि, शान्ति पाने के लिये जीवन को उत्कृष्ट बनाने की साधना को अपनाया जाना अनिवार्य है । इसके बिना किसी को आत्म-कल्याण का लाभ न तो मिला है न आगे मिलेगा । पूजा-पत्री की छुटपुट टंटघंट करके आत्मिक प्रगति एवं ईश्वर प्राप्ति के स्वप्न देखना बाल-क्रीड़ा जैसा उपहास स्मर है । ईश्वर इतना मूर्ख नहीं है जो जीवनयापन का घृणित स्तर अपनाये रहने पर भी पूजा-पत्री के तनिक से कौतुक मात्र से प्रसन्न हो जाय। आत्मबल प्राप्ति के लिये कथा, कीर्तन, दर्शन स्नान पर्याप्त नहीं । इसके लिए जीवन को आदर्श और अनुकरणीय बनाना ही एकमात्र उपाय है । हर धार्मिक, आध्यात्मिक एवं महान व्यक्ति को यही रीति-नीति अपनानी पड़ी है । इसके अतिरिक्त जीवन को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सफलता का आत्मिक उत्कर्ष का और कोई मार्ग न तो कभी था और न भविष्य में हो ही सकता है ।

आज सच्चे अध्यात्म को कल्पना लोक से उतार कर व्यावहारिक जीवन में उतारे जाने की नितांत आवश्यकता है । इसके बिना हम आत्मिक प्रगति न कर सकेंगे । अपना अनुकरणीय आदर्श उपस्थित न कर सकेंगे और यदि यह न किया जा सका तो समाज के नव-निर्माण का धरती पर स्वर्ग के अवतरण का प्रयोजन पूरा न हो सकेगा । आवश्यकता इस बात की है कि हम अपना समस्त साहस बटोर कर अपनी वासनाओं, तृष्णाओं, संकीर्णताओं, स्वार्थ परताओं से लड़ पड़ें । इन भव बन्धनों को काट डालें और जीवन को ऐसा प्रकाशवान बनायें जिसकी आभा से वर्तमान युग का सारा अन्धकार तिरोहित हो सके उज्जवल भविष्य की सम्भावनाएँ आलोकित हो उठें ।

प्रतीक्षा में न बैठें, स्वयं ही बढ़ चलें

सतयुग की वापसी इसी एक विधि व्यवस्था पर अवलंबित है कि लोक आस्था में यह विश्वास उभरे कि मनुष्य जीवन मात्र पेट और प्रजनन तक सीमित रहकर पशुओं की तरह श्वासों का भार ढोने के लिए नहीं है वरन् उसमें आत्म कल्याण और लोक निर्माण के आदर्शों की पूर्ति किसी न किसी रूप में की ही जाती रहनी चाहिये।

इसके लिए आवश्यक है कि भारतीय संस्कृति की रीढ़ कही जाने वाली वानप्रस्थ परम्परा को पुनर्जीवित किया जाय। लोग यह रीति-नीति अपनायें कि पूरा न सही आधा जीवन तो उस निमित्त लगाना चाहिए जिसके लिए मनुष्य जन्म की धरोहर स्रष्टा ने सौंपी है। यह उद्देश्य पूजा-पाठ भर से पूरा हो सकता है, इस भ्रम में किसी को भी नहीं रहना चाहिए। शारीरिक स्वच्छता के लिए जिस प्रकार स्नानादि नित्य कार्य आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक शुद्धि के लिए उपासना, साधना, आराधना की आवश्यकता है। इतने पर भी आत्म परिष्कार और लोक-मंगल में संलग्न रहने की आवश्यकता बनी ही रहती है। इसकी पूर्ति के लिए अधिकाधिक समय दान और अंशदान नियोजित करते रहना चाहिए। इस निर्धारण को कार्यान्वित करने का नाम वानप्रस्थ है उसी मनः स्थिति में ऐसा कुछ बन पड़ना संभव है जिसमें आत्म-संतोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह के विविध लाभों से लाभान्वित हो सकना बन पड़ा।

प्रचलन के अनुसार व्यक्ति संकीर्ण स्वार्थपरता के भव बंधनों में जकड़े हुए ही अपना आयुष्य बिता देता है। युग क्रांति ऐसी होनी चाहिए जिसमें हर विचारशील को परमार्थ का भी ध्यान रहे और उसके लिए समय एवं साधनों का एक बड़ा अंश उपयुक्त वातावरण बनाने में नियोजित रहे। यह प्रवाह चल पड़े तो समझना चाहिए कि उलटे को उलट कर सीधा कर दिया गया और उज्जवल भविष्य की संभावना का स्वरूप बन गया, सरंजाम जुट गया।

वानप्रस्थ-पुरोहित शब्द पुराने हैं इन दोनों के साथ पाखंड की मात्रा इतनी अधिक जुड़ गई है कि इस तत्त्व दर्शन का नया नाम देने की आवश्यकता पड़ी है "गुरु" शब्द कभी देवोपम स्तर का परिचायक था, पर अब वह धूर्तता के अर्थ में, व्यंगउपहास के साथ लिया जाता है। इसलिए पुराने शब्दों के स्थान पर "मार्ग दर्शक" शब्द का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार पुरोहित को अब व्रतधारी कहा जाय यही उचित जाना। प्रज्ञा परिवार के लिए अपने को "प्रज्ञापुत्र" कहते हैं। इसलिए यदि लंबा नामकरण अभीष्ट हो तो व्रतधारी प्रज्ञापुत्र भी कहा जा सकता है। संक्षेप करना हो तो "व्रतधारी" शब्द भी पर्याप्त है। परिव्राजक धर्म की व्याख्या भी इस शब्द में आ जाती है।

विश्व के हर कोने में युगदेवता ने अपना आह्वान गुंजाया है कि प्राणवान जीवंत भावनाशीलों में से जिन्हें भी विषमता का आभास हो वे समय की पुकार को सुनें, युग धर्म को समझें और नवसृजन के क्षेत्र में श्रद्धा और साहसपूर्वक उतरें जिन्हें इस दिशा में चल पड़ने की उमंग उठे, उन्हें न्यूनतम नौ दिन के और अधिकतम एक महीने के किसी सत्र में शांतिकुंज, हरिद्वार आने की तैयारी करनी चाहिए। यों अध्ययन और परामर्श से भी तत्त्वज्ञान का एक बड़ा अंश प्राप्त हो सकता है। चिंतन और मनन का अध्यावसाय भी दिशा निर्धारण कर सकता है। पर उपयुक्त वातावरण में अभीष्ट ऊर्जा उपलब्ध करने का महत्त्व भी कम नहीं है। इसलिए समय के अनुरूप अपनी गतिविधियों को उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर करने के लिए इन सत्रों में सम्मिलित होने के लिए कहा गया है। व्रतधारी को अपनी परिस्थिति के अनुरुप भावी कार्यक्रम बनाने में अधिक सुविधा रह सकती है। वैसे कुछ विचार विमर्श तो पत्र व्यवहार से भी संपन्न हो जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अच्छा होता आंशिक समयदान करने वाले वानप्रस्थों में से एक ऊँची श्रेणी परिव्राजकों की, जीवनदानियों की उभरती। उन्हें प्रचीनकाल के संन्यासियों का आधुनिक संस्करण कहा जा सकता है। कुछ तो आंशिक रूप से सेवा कार्य करते रहने पर भी बन पड़ता है, पर यदि पूरा मन, पूरा समय और पूरा जीवन ही लक्ष्य के लिए नियोजित किया जा सके तो उसे सोने में सुहागे की उपमा दी जा सकती है।

यह भ्रम मन में से निकाल ही देना चाहिए कि जो मात्र खुदगर्जी को ही सोचते, समझते और अपनाते हैं वे नफे में रहते हैं। मजे में रहते और मौज उड़ाते हैं । जो परमार्थ में समय और साधन लगाते हैं वे घाटे में रहते हैं। वास्तविकता इससे ठीक उलटी है। स्वार्थी भले ही कुछ संचय कर लेते और सुविधा-साधनों की दृष्टि से भारी पड़ते हों पर संकीर्णता के साथ और जो अनेक दुर्गुण जुड़े होते हैं उनके कारण व्यक्ति की आँखों में गया गुजरा ही सिद्ध होता रहता है। निष्ठुरता, अनुदारता को सघन बनाये रहने पर कोई आज तक व्यक्तित्व की दृष्टि से न तो ऊँचा उठ सका है, न आगे बढ़ सका। सड़ी-कीचड़ में उपजने और कुलबुलाते रहने वाले घिनौने कीड़ों से अधिक भारी वे बन ही नहीं पाते। अपने परायों की श्रद्धा-सहानुभूति से उन्हें वंचित ही रहना पड़ता है। ऐसे मनुष्य अपने आपको अकेला अनुभव करते रहते हैं। और सुनसान में रहने वाले भूत पलीतों जैसी जिंदगी जीते हैं। ऐसों के पास कुछ सविधा साधन रहते भी हों तो वे साथी-सहयोगियों के अभाव में, निरानंद एबं भार-भूत बनकर ही रहते हैं।

सुख बाँटने की वस्तु है और दुःख बँटा लेने की। इसी आधार पर आंतरिक उल्लास और अन्यान्यों का सद्भाव प्राप्त होता है। महानता इसी आधार पर उपलब्ध होती है। प्रगतिशील स्तर के श्रेष्ठ जन सहज ही अपने अंदर ऐसे गद्गुण विकसित कर लेते हैं, जिनके आधार पर वे जन-जन का सद्भाव अर्जित करते हैं । सराहना के पात्र बनते हैं लोकपरलोक सुधारते और महामानव की पंक्ति में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाते हैं। ऐसे लोग भूखे-नंगे भी नहीं रहते। खुशहाली के लिए जन सहयोग की अनिवार्य आवश्यकता पड़ती है। वह उन्हें अनायास ही प्राप्त होती रहती है। उदारता के बदले अन्यान्यों की उदारता भी मिल कर रहती है। प्रसन्नता और प्रफुल्लता इसी पर अवलंबित है।

पुरोहित वर्ग को इसीलिए समाज का मूर्द्धन्य माना जाता रहा है कि वे मात्र पदार्थ-जन्य सेवा ही नहीं करते वरन् पिछड़ों को ऊँचा उठा ने, आगे बढ़ाने वाली प्रेरणाएँ भी बरसाते हैं। आर्थिक सहायता तो कुछ समय ही किसी का काम चलाती हैं। कुपात्रों द्वारा दुरुपयोग बन पड़ने पर तो वह अनर्थकारी भी बन जाती है। ऐसी दशा में ग्रहीता ही नहीं दाता भी नरक जैसे अपयश का भाजन बनता है। किन्तु आदर्शवादी प्रेरणाएँ ऐसी हैं जिन्हें पाकर कोई भी भौतिक एवं आत्मिक क्षेत्र में निश्चित रूप से प्रगति ही करता है। इस अनुदान के बदले प्रतिदान न सही कृतज्ञता तो मिलती ही है। भले ही वह वाणी से व्यक्त न भी की गई हो। ऐसे उदारमना लोग ही देश, धर्म, समाज, संस्कृति की कुछ कहने योग्य सेवा कर पाते हैं। बदले में वे वह उच्चस्तरीय प्रतिफल प्राप्त कर लेते हैं। जिससे नर वानरों को वंचित ही रहना पड़ता है।

आधी आयु परमार्थ में लगाने की प्राचीन देव परम्परा का ही सत्परिणाम था कि सतयुगी वातावरण में जन्मे लोग देवमानव कहलाते रहे और इसी धरती को स्वर्गोपम बनाने की भूमिका निभाते रहे। उज्ज्वल भविष्य की संरचना होन की पुण्य बेला में ऐसे ही देवमानवों के प्रयासों की आवश्यकता पड़ेगी। उसकी पूर्ति के लिए जिनमें भी भाव संवेदना विद्यमान हो उन्हें उसी राजमार्ग पर चलने का साहस जुटाना चाहिए जिस पर कि अपने पूज्य पूर्वज चलते रहे हैं। उच्चस्तरीय लोक-सेवियों की कमी न रहने पर जन-जन की भौतिक और आत्मिक प्रगति प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगेगी। युग की इस माँग को पूरा करने के लिये हमें स्वयं ही सोचना और बिना साथियों की अग्रगामियों की प्रतीक्षा किये स्वयं ही बढ़ चलने का आदर्श उपस्थित करना चाहिए। व्रतधारी प्रज्ञापुत्रों द्वारा यही अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया भी जाता रहा है। आगे भी ऐसे अनेकानेक व्यक्ति नरपशु के पास से मुक्त हो इस कार्य में जुड़ेंगे-ऐसा विश्वास है ।

युग परिवर्तन के अनुरूप हम भी ढल.चलें

ऋतु परिवर्तन के साथ हम अपनी अच्छादन व्यवस्ता बदल लेते हैं। युग परिवर्तन का क्रम असाधारण हेर-फेर लेकर प्रस्तुत हो रहा है अच्छा हो हम समय रहते, भविष्य के अनुरुर ढलने का अभी से प्रयत्न करें और यदि सम्भव हो तो लंका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काण्ड में प्रस्तुत की गई रीछ, वानरों की भूमिका सम्पादन करके अपने को-अपने प्रस्तुत जीवन को धन्य बनाने का प्रयत्न करें।

अगले दिनों कोई व्यक्ति उत्तराधिकार में मिली हुई, अथवा ब्याज भाड़े की बिना परिश्रम वाली कमाई पर गुजर न कर सकेगा। सम्पत्ति पर सरकारी नियंन्त्रण होगा। हर व्यक्ति को कठोर श्रम करके ही अपने निर्वाह की व्यवस्था करनी पड़ेगी। इन सम्भावनाओं के बीच किसी का अमीर बनने का, सम्पदा का स्वामित्व संचय करने का, बेटे, पोतों के लिये दौलत जमा करके रख जाने का निरर्थक स्वप्न तोड़ ही देना चाहिये। जो जितना संग्रह करेगा उसे विवशतापूर्वक छोड़ते समय उतना ही अधिक कष्ट होगा। व्यक्तिगत सम्पदा के दिन लद गये संग्रहीत सम्पत्ति के बल पर अय्याशी से दिन गुजारने का समय भी चला गया। ऐसी स्थिति में जिनके पास बेटे, पोतों को छोड़ जाने लायक सम्पदा है उनके लिए बुद्धिमत्ता इसी में है कि उसे समय रहते समाज को लौटा दें। लौटाने में भी बुद्धिमत्ता का परिचय दें । अन्न, जल, वस्त्र, दवा, निवास आदि की भौतिक सुविधाऐं उत्पन्न करने वाल सदावत, प्याऊ, अस्पताल, धर्मशाला आदि से लोगों को शारीरिक लाभ ही मिल सकते हैं। फिर मुफ्त में कोई चीज़ किसी अपंग को या लोक सेवी को ही लेनी चाहिए। समर्थ व्यक्ति दूसरों के अनुदान का अकारण बिना मूल्य चुकाये लाभ उठायें तो यह भिक्षावृत्ति ही कही जायगी। भिक्षावृत्ति स्वीकार करना समर्थ व्यक्ति के लिये लज्जास्पद बात है। अपनी सुविधायें हर व्यक्ति को स्वयं ही मूल्य देकर जुटानी चाहिये। अपंगों के लिए धर्मशाला, प्याऊ आदि बनें तो बात समझ में आती है पर समर्थ व्यक्ति वैसा लाभ उठावें तो यह दानदाता के लिए अहंकार की पूर्ति का निमित्त भले ही बने समर्थ उपभोक्ता के लिए पतन और शर्म का निमित्त ही बनेगा ।

आमतौर से लोग विवेकपूर्वक नहीं, नामवरी और वाहवाही को ध्यान में रखते हुए दान करते हैं । इसी प्रकार ईश्वर को निवास, भोजन, सेवा, चाकरी उपलब्ध कराने वाले मंदिरों की बात भी विचारणीय है। प्राचीनकाल में मंदिर जन जागृति के केन्द्र रहते थे और वहाँ के निवासी लोक मंगल की असंख्य सत्प्रवृत्तियों का संचालन करते थे इसलिए उन देवालयों का निर्माण और उनमें लगाया गया धन सार्थक होता था । आज स्थिति दूसरी ही है । देवालय निहित स्वार्थ वाले महन्त मठाधीशों को विलासी सुविधायें जुटाने का माध्यम मात्र बने हुए हैं । भक्त लोग यह समझ कर मन्दिर बनवाते हैं कि ईश्वर एक व्यक्ति है, उसके ऊपर भोजन , वस्त्र, निवास आदि का अहसान करने से वह मरने के बाद ब्याज समेत अनेक गुनी सुविधायें हमें स्वर्ग में देगा । यह दृष्टिकोण बहुत ही ओछा है । ईश्वर व्यक्ति नहीं शक्ति है । उसे प्रसन्न करने के लिए लोक-मंगल के लिए-विश्व वसुधा को श्रेष्ठ समुन्नत बनाने के लिए बरती गई सद्भावना एवं उदारता ही प्रिय हो सकती है ।

दान की सार्थकता और निरर्थकता का मूल्यांकन करने वाला व्यक्ति जानता है कि संसार में समस्त दुःखों और समस्याओं का एक मात्र कारण मानवीय दुर्बुद्धि है । उसे हटाने के लिए जब विचारणा उपलब्ध कर सकने के साधन जुटाना ही सुख-शान्ति का एक मात्र आधार है । आज 'शिक्षा' की व्यवस्था तो है पर 'विद्या' का— उत्कृष्ट विचार पद्धति के निर्माण का कोई ठोस समर्थ तन्त्र नहीं बन पाया है । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए ज्ञान यज्ञ सरीखा कोई अभियान खड़ा करने और सींचने का प्रबन्ध नहीं है । समय की इस महती आवश्यकता को पूरी करने के लिये किया जाने वाला दान ही विवेक सम्मत कहा जा सकता है । इसी से समाज का हित होगा, सार्थकता के अनरूप दाता को उसी से आत्म-सन्तोष मिलेगा । जिनके पास गुजारे से अधिक धन है उन्हें वह भी प्रयोजन के लिए खर्च कर देना चाहिए । दान तो यों मन्दिरों-मठों में करोड़ों-अरबों का लोगों ने किया है पर भामाशाह की मात्र ३० लाख की उदारता इसलिए अजर-अमर हो गई कि उसने उस विवेक का भी परिचय दिया कि किस कार्य का कितना उपयोग है। राणाप्रताप के स्वाधीनता संग्राम की गरिमा जितनी बड़ी थी, उसी अनुपात से विवेकवान भामाशाह की वह छोटी सी राशि भी सराही गई। ज्ञान यज्ञ से बढ़कर इस युग में विश्व मानव की सेवा का दूसरा माध्यम नहीं, विचार क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति और सामाजिक क्रांति की सफलता पर ही विश्व कल्याण की आधार शिला रखी जानी है सो इस भूल को सींचकर ही हम विश्व मानव का भविष्य उज्जवल बना सकते हैं । धन जहाँ भी हो, पूँजि जहाँ भी संग्रहीत हो, उसे न तो विलासता के लिए जमा करके रखा जाना चाहिए और न बेटे-पोतों में बँटवारा करना चाहिए । बच्चों को स्वावलम्बी आत्मजीवी बनाने भर की जिम्मेदारी माता-पिता की है । उन्हें दौलत भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देकर मरा जाय और हराम की कमाई खाकर अपना लोक परलोक बिगाड़ने के लिए पतनोन्मुख किया जाय इसमें तनिक भी बुद्धिमानी की बात नहीं । गुजारे से बचे हुए पैसों की सार्थकता न तो संग्रह में है, न विलासता में, न सम्बधियों को गुलछर्रे उड़ाने के लिए छोड़ने में-उसका सही सदुपयोग लोक-मंगल के लिए समाज को वापिस कर देने में ही है । हर ईमानदार सम्पत्तिवान से समय का यही तकाजा है कि भलमानसाहत के साथ उस संग्रहति सम्पत्ति को चुपचाप नव-निर्माण जैसे महान कार्य के लिए वापिस करदे । रुपया धेली दान-दक्षिणा देकर दान का ढिंढोरा पीटने की आत्म प्रवंचना नहीं करनी चाहिए वरन् जितना उचित निर्वाह की मर्यादा से अधिक है उसे हिम्मत के साथ वापिस कर देना चाहिए । "हाथी की चोरी करें। करें सुई का दान । ऊँचे चढ़कर देखते, कितनी दूर विमान । वाली उक्ति का आचरण करके हमें उपहासास्पद नहीं बनना चाहिए। वरन् परिग्रह के पाप का प्रायश्चित करने के लिए मितव्ययता से गुजर करने भर की व्यवस्था बनाकर अपनी संचित पूँजी का शेष भाग युग परिवर्तन की महान प्रक्रिया सम्पन्न कर सकने वाले किसी कार्य में लगा देनी चाहिए ।

धन समाज का होने जा रहा है, उस पर व्यक्ति का स्वामित्व नहीं रहेगा । इस अवश्यम्भावी परिवर्तन को हमें खुली आँखों से देखना चाहिए और स्वेच्छा त्याग का सराहनीय साहस प्रस्तुत करके अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करना चाहिए । बलात् त्याग की विवशता उत्पन्न होने से पूर्व स्वेच्छा, त्याग की उदारता दिखाई जा सके तो उसे प्रशंसनीय दूरदर्शिता, सज्जनता, उदारता एवं दाता की महानता ही कहा जायगा । पूँजी को ज्ञान यज्ञ के लिए महाकाल ने आमन्त्रित किया है। जो देंगे वे बहुत पायेंगे पर जो कंजूसी करेंगे उन्हें सिर धुन-धुनकर—हाथ मलकर पछताना ही उपलब्ध रहेगा।

जिनकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है उन्हें भी प्रतीक रूप से समाज निर्माण में अपने आर्थिक योगदान का कुछ आदर्श प्रस्तुत करना ही चाहिए । जिस प्रकार अय्यासी और फिजूल खर्ची में अधिक से अधिक उड़ा डालने की कोई मर्यादा नहीं उसी प्रकार किफायत और सादगी बरतने पर न्यूनतम से निर्वाह कर सकने की भी कोई सीमा नहीं । साधु ब्राह्मणों का जीवन इतना मितव्ययी और स्वावलम्बी होता था कि आज के वनवासी भी उनसे आगे लगते हैं । सादगी, मितव्ययता और समाज के लिये अनुदान देने की भावना से अपने खर्च कम करके कुछ बचाने और उसे नव-निर्माण के लिए लगाने के लिये कोई व्यक्ति भावनापूर्वक कटिबद्ध हो जाय तो उसे गई गुजरी आर्थिक स्थिति में से भी कुछ बचाने का आधार मिल सकता है । अमीरों को लज्जित करने और आदर्श प्रस्तुत करने के लिए गरीबों को अपनी उदारता का परिचय देना चाहिए । ज्ञान-यज्ञ के लिये दस नया पैसा प्रति दिन निकालने का अपना न्यूनतम अनुदान इसी दृष्टि से परिजनों के लिए अनिवार्य किया गया है। एक दिन की आमदनी देने का भी कितने ही लोग साहस कर रहे हैं । युग-निर्माण के लिये कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को त्याग बलिदान का कोई आदर्श उपस्थित करना ही होगा, जो प्रथम चरण के रूप में अति सुलभ त्याग आर्थिक अनुदान की स्वल्प मात्रा से आरम्भ अभ्यस्त कराया गया है । चूँकि आज धन ही सर्वोपरि बना हुआ है सो उसे जिस प्रकार अपने निज के लिए आवश्यक माना जाता है वैसे ही उसे लोक मंगल के लिए आवश्यक समझने की प्रवृत्ति जागे, यह तथ्य हममें से प्रत्येक को अपने व्यावहारिक जीवन में चरितार्थ करना चाहिए । ज्ञान-यज्ञ के लिए आर्थिक अनुदान की जितनी अधिक व्यवस्था बन सकेगी, नव-निर्माण की पुण्य प्रक्रिया का प्रकाश उतनी ही तीव्रता और व्यापकता के साथ फैलने लगेगा । इस तथ्य को समझते हुए और अगले दिनों व्यक्तिगत धन स्वामित्व के सुनिश्चित अन्त को देखते हुए हमें अपने अर्थ साधनों का अधिकाधिक उपयोग नव-निर्माण की पुण्य प्रक्रिया सम्पन्न करने में ही नियोजित करना चाहिए ।

यहाँ यह बाताया गया है कि समय रहते हुए हम ऐसे आदर्श उपस्थित करने में लग जायें जिससे संग्रह की भूल का पश्चाताप न करना पड़े और विवशता में छीने जाने का दुःख सहन न करना पड़े । भावी परिवर्तन से जुड़ा हुआ दूसरा चरण है-जाति और लिंग भेद का अन्त । मनुष्य और मनुष्य के बीच खड़ी की गई यह अन्याय और अविवेक पूर्ण दीवारों देर तक खड़ी नहीं रह सकतीं । मनुष्य की एक जाति थी और वही रहेगी । जाति-बिरादरी के नाम पर ऊँच-नीच को मान्यता और विलगाव का जितना भी रुढ़िवादी ढाँचा खड़ा है वह अगले तूफान के एक ही झोंके में उजड़ा हुआ नजर आवेगा । न उसका कोई औचित्य है न आधार, हानि इसकी अपार है । सो महाकाल ऐसी अनीति मूलक मूर्खता को देर तक सहन नहीं कर सकता इसका उन्मूलन एवं उच्छेदन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होने ही वाला है । हमें अपने जीवन-क्रम से बिरादरी बाद को तिरस्कृत करने की ही चेष्टा करनी चाहिए । कच्ची-पक्की रोटी का भेद गायत्री यज्ञों के सामूहिक प्रीति-भोजों में एक प्रकार से हटा ही दिया गया है । कच्ची रोटी, खिचड़ी आदि की ही दावतें अपने आयोजनों में होती हैं । बिना जाति भेद के लाखों करोड़ों व्यक्ति उसमें सम्मिलित होते हैं । इसका व्यापक प्रभाव समाज पर पड़ा है और यह मान्यता प्राय: हट ही चुकी है कि किसी के हाथ का छुआ भोजन कोई खाले तो उसका धर्म भ्रष्ट हो जायगा।

रोटी के बाद बेटी का नम्बर आता है । इस सन्दर्भ में लोगों के मन में अभी बहुत कच्चाई है । सो धीमे कदम उठाने की दृष्टि से हम यह कहते रहे हैं कि प्रारम्भ में उप-जातियों के बंधन तो विवाह शादी करते समय तोड़ ही दिये जायें, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि प्रमुख जातियाँ उपजातियों के भेद तोड़ कर विशाल बिरादरी बनाने का कदम उठायें । किसी उपजाति के कायस्थ को अपने जाति की दूसरी उपजाति में विवाह करने में तनिक भी नहीं हिचकना चाहिये। हर बिरादरी में ऐसे ही कदम बढ़ायें जायें । इससे वर-कन्याओं के उपयुक्त जोड़े ढूँढ़ना सरल हो जायगा और दहेज जैसी घृणित प्रथा का आसानी से उन्मूलन हो सकेगा ।

जातीय सभा संस्थायें इस प्रयोजन के लिये बनाई जा सकती हैं कि उपजातियों का अन्त होकर एक बड़ी बिरादरी बन जाय । आज के जातीय संगठन अपने वर्ग का गौरव बताने, अपने को दूसरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने और अलगाव की भावना पैदा करने की ओर उन्मुख रह रहे हैं इसलिये उससे लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक है । इनकी प्रतिद्वन्दता में यदि प्रगतिशील ब्राह्मण सभा, प्रगति शील क्षत्रिय सभा प्रगति शील वैश्य सभा, प्रगति शील कायस्थ सभा आदि बन जायें तो इनसे विभेद की दीवारें गिरने का एक चरण पूरा हो सकता है । अन्तत: तो एक बिरादरी रहनी है 'इन्सानी बिरादरी' आज नहीं तो कल वसुधैव कुटुम्बकम् के लक्ष्य तक हमें पहुँचना ही होगा । दुबले बालक आरम्भ में धीरे-धीरे चलते हैं इस दृष्टि से आरम्भ में उपजाति रहित विशाल बिरादरी का प्रयोग भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है और लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में सहायक सिद्ध हो सकता है । वैसे जब भी अवसर आवे हमें जाति-पाँति की संकीर्णता का समर्थन नहीं विरोध ही करना चाहिए ।

नारी जाति के प्रति नर द्वारा थोपे गये अनुबन्धों में सामन्तवादी, तानाशाही दुष्प्रवृत्ति का नग्न नृत्य देखा जा सकता है । पर्दा प्रथा की क्या उपयोगिता है गाय, भैंस, भेड़, बकरी तक को मुँह पर नकाब नहीं लगाना पड़ता और वे चाहें जब अपनी वाणी खोल सकती हैं। नारी को इतनी भी स्वतन्त्रता प्राप्त न हो उसे मुँह पर 'कलंकी' की तरह पर्दा ढकना पड़े और किसी से बात करने के लिए मुँह खोलने की इजाजत नहीं तो इसे मनुष्यता का अपमान ही कहा जायगा । शिक्षा और स्वावलम्बन के क्षेत्र में नारी अपनी पददलित स्थिति के कारण बहुत पिछड़ गई । हर घड़ी अंकुश, नियन्त्रण और बन्धन में जकड़ी रहने के कारण उसका मनोबल क्षीण हो गया । बलात् प्रजनन थोपा जाने से वह स्वास्थ्य भी गँवा बैठी । जेल में रहने वाले कैदियों से भी बुरी दशा अपने समाज में नारी की है इस स्थिति को बदला न गया तो हमारी आधी जनसंख्या अपंगों की तरह निरुपयोगी और भारभूत ही बनी बैठी रहेगी। समय आ गया कि इस स्थिति का अन्त करने के लिये साहसिक कदम उठाये जायें ।

सुधार का आरम्भ हमें अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन से करना चाहिए । पत्नी, माता, पुत्री, बहिन सभी को उचित सम्मान और स्नेह मिलना चाहिए । उनसे सम्मान सूचक भाषा में ही बात की जाय । नर होने के कारण नारी से अपमान जनक व्यवहार करने का-अपशब्द गाली-गलौज या मार-पीट करने का अधिकार है यह भाव पूर्णतया हटा दिया जाना चाहिये । छोटेपन की नहीं सहयोगी साथी मित्र और सम्मानास्पद वर्ग की मान्यता अपने मन में रहे तो नारी का सोया आत्म-गौरव जागे और साथ ही वह उज्जवल भविष्य की आशा के सपने देखना और उनमें रंग भरना आरम्भ करे ।

नारी शिक्षा पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए । गृह कार्यों में व्यस्त और प्रौढ़ महिलाओं के लिए तीसरे पहर हर गली मुहल्ले, गाँव, नगले में प्रौढ़ पाठशालाओं की व्यवस्था होनी चाहिए। पुरुषों का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि घर की महिलाओं लड़कियों को पढ़ाने के लिये नित्य कुछ समय निकाले और घरेलू पाठशाला चलायें, इधर-उधर मटर-गश्ती करने फिरने की अपेक्षा सेवा मनोरंजन और समय के सदुपयोग का यह सर्वोत्तम तरीका है । इन पर घर से बाहर के कुछ काम और उत्तरदायित्व सौंपने चाहिए ताकि हीनता की भावना से मुक्त होकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वे लोक व्यवहार की अभ्यस्त हो सकें । कन्या पुत्र का भेद-भाव मन से हटा दिया जाय । दोनों को दाँई-बाँई आँख की तरह समान समझा जाय और दोनों के विकास के लिए समान रूप से व्यवस्था बनाई जाय । प्रजनन का भार नारी पर न्यूनतम ही पड़े यह उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने की दृष्टि से नितान्त आवश्यक है । दो बच्चे होने पर सन्तानोत्पादन पर पूर्ण विराम लगा देना चाहिए । अपने दरिद्र अशिक्षित और रुग्ण देश में बच्चों की हविस ऐसी बढ़ी-चढ़ी है कि सन्तान न होने पर दम्पत्ति दुःखी रहने लगते हैं और अपने को अभागा मानते हैं । जब कि तथ्य यह है कि आज की स्थिति में बच्चे पैदा करना एक प्रकार से धरती का भार बढ़ाना और देशद्रोह करने जैसा अपराध गिना जाना चाहिए सच तो यह है कि जिनके बच्चे नहीं हैं उनके भाग्य को भूरि-भूरि सराहा जाना चाहिए । वे लोग अपनी शिशु पालन से बची शक्ति को लोक मंगल के अधिक उपयोगी कार्यों में लगाकर धन्य बन सकते हैं और जो पैसा बच्चों के लिए खर्च करते उसे नव-निर्माण के उपयोगी कार्यों में लगा सकते हैं ।

विवाह करना जो नर-नारी आवश्यक समझें उन्हें ही करने देना चाहिए । जिन्हें दाम्पत्य-जीवन की भारी जिम्मेदारी उठाने में संकोच लगता हो उन्हें इसके लिए जरा भी दबाया नहीं जाना चाहिए । बाल-विवाह और अनमेल विवाहों को निरुत्साहित किया जाना चाहिए । दहेज की माँग नारी जाति का घृणित अपमान है । जहाँ ऐसी माँग पूरी किये बिना काम न चले वहाँ लड़कियों को साहस पूर्वक विवाह करने से इनकार कर देना चाहिए और कुमारी जीवन बिताना चाहिए । दहेज की लम्बी-चौड़ी मांग करने वाले निष्ठुर हृदय मांस विक्रेताओं के यहाँ लड़की देने की अपेक्षा उसे आजीवन कुमारी रहने देना बेहतर है । विधुरों को विधवाओं से विवाह करना चाहिये । सारे दिन उन्हें रोटी बनाने में ही लगाये रहने की अपेक्षा ऐसा प्रबन्ध किया जा सकता है कि कई परिवार मिल कर एक सम्मिलित भोजन व्यवस्था बनायें और बचे हुए समय को ऐसे प्रयोजनों में लगने दें जिससे नारी की प्रतिभा का अधिक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण उपयोग हो सके । नारी उत्कर्ष के हमें अगणित प्रयत्न करने चाहिए ताकि पिछले दिनों उस पर जो अत्याचार देता रहा है उसका प्रायश्चित हो सके और नारी की समय एवं प्रतिभा समुचित लाभ उसे स्वयं को तथा समाज और परिवार को मिल सके ।

युग परिवर्तन का तीसरा चरण विश्व एकता के रूप में होता है । एक राष्ट्र, एक धर्म, एक ईश्वर, एक तत्त्व दर्शन, एक संस्कृति, एक भाषा की समग्र एकता अपना कर ही विश्व बन्धुत्व की भावना को विकसित किया जा सकेगा । और समस्त विश्व को प्रेम तथा एकता के पारिवारिक स्नेह सूत्र में आबद्ध किया जा सकेगा । इसके लिये गुण ग्राही दृष्टिकोण विकसित करना होगा । अपना सो अच्छा का दुराग्रह छोड़कर जो अच्छा सो अपना का आदर्श अपनाना होगा । अपने पन का मोह जिन वस्तुओं या प्रथा मान्यताओं से जुड़ गया है उन्हीं को लाभान्वित करने का पक्ष-पात अनुचित है । सब लोग अपने-अपने सम्प्रदाय या भाषा को ही सर्वश्रेष्ठ कहते रहें और अपने पन का मोह छोड़ने के लिये कोई तैयार न हो तो एक रूपता कभी संभव ही न होगी और उसके बिना प्रगति रुकी ही पड़ी रहेगी । क्षेत्रीय भाषाओं की उन्नति और अपनी अलग लिपि बोली का अस्तित्व बनाये रखने का आग्रह विश्व भाषा के निर्माण में भारी बाधा उत्पन्न करता है । यही बात धर्म सम्प्रदाय आदि के ऊपर लागू होती है । हमें विश्व के समस्त दर्शनों और धर्मों का मंथन करके उनमें से जो सिद्धान्त आज की परिस्थितियों के अनुरूप अनुकूल प्रतीत होते हों उन्हें अपना लेना चाहिए, विश्व-धर्म इसी प्रकार बनेगा । अपने प्रान्त क्षेत्र या देश को लाभान्वित करने के लिये दूसरे प्रदेश वालों की खुशी-खुशी हानि पहुँचाई जाय देशभक्ति की इन दिनों यह परिभाषा चल रही है । उसे बदला जाना चाहिए और विश्व भक्ति की, विश्व राष्ट्र की, विश्व बन्धुत्व की पद्धति से सोचना आरम्भ करना चाहिए । पक्षपात नहीं न्याय और विवेक, उदारता और विशालता का दृष्टिकोण यदि अपनाया जाय और वैसी ही व्यापक विचार दिशा प्रसारित की जाय तो न केवल युद्धों का खतरा टलेगा वरन् मिल बाँट कर काम करने और मिल बाँटकर खाने की सहयोगात्मक प्रवृत्ति भी पनपेगी । आज जो खींचातानी आपाधापी मची हुई है यह वह बदल कर पारस्परिक सहयोग एवं सृजन में लग जाय तो निस्सन्देह इस धरती पर स्वर्ग अवतरित हो सकता है । यों यह कार्य राजनीति और राजनेताओं द्वारा आसानी से सम्पन्न कराया जा सकता है पर उन्हें इसकी सुमति नहीं मिलती क्योंकि अधिक लोगों को नेता बनने और उसका लाभ उठाने का अवसर प्रथकतावादी प्रवृत्तियाँ भड़काने से ही मिलता है । हमें ऐसे नेतृत्व का उदय और समर्थन करना चाहिए जो प्रथकतावाद को हटाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं एकता की प्रवृत्तियों को बढ़ाने की दिशा में चलने के लिये वचन-बद्ध हो । व्यक्ति और समाजिक जीवन में इस एकता प्रक्रिया को विकसित करने का अवसर मिले हमें उसके लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। कम से कम इतना तो करना ही चाहिए कि प्रथकतावादी विवादों को भड़कने न देने के लिए सहिष्णुता समन्वय और उपेक्षा तो आसानी से ही की जा सकती है । इसी बीच समन्वयवादी एक केन्द्र पर एकत्रित करने वाले विभिन्न विचारधारा वाले लोगों को एकत्रित करने वाले आयोजन करते रहने चाहिए। जिनमें भिन्नता के बीच एकता ढूँढ़ निकालने वाले विचार व्यक्त किये जायें । दूर रहने से प्रथकता की खाई चौड़ी होती है और मिलते-जुलते रहने से एक-दूसरे के निकट आते हैं हमारे प्रयास इस दिशा में चलते ही रहने चाहिए और यदि सम्भव हो तो इस प्रकार का एकता वादी साहित्य सृजन किया जाना चाहिये जिसकी कि इन दिनों भारी कमी और भारी आवश्यकता है ।

चौथा आधार व्यक्तिवाद को समूह वाद में परिवर्तित करने का है । धन की दृष्टि से ही आदमी स्वार्थी बना हो लोभ-मोह में ग्रस्त हुआ हो सो बात नहीं है । हर क्षेत्र में यहाँ तक कि धर्म अध्यात्म ईश्वर जैसे परमार्थ प्रयोजनों को भी व्यक्तिगत स्वार्थपरता की कीचड़ में घसीट लिया गया है । लघुता को संकीर्णता को, तुच्छता को-विराट् में समिति में विकसित करना ही आत्मा को परमात्मा बनना है विश्व मानव को परमात्मा का प्रत्यक्ष प्रतीक माना जा सकता है । उसकी सुख-सुविधा नहीं, अन्तः भूमिका विकसित करना यही सही ईश्वर पूजा है । यों भौतिक सुख-सुविधाओं की वृद्धि करना भी अच्छा ही है इससे भी जीवन यापन में सरलता पड़ती है । पर किसी की वास्तविक प्रगति, सन्तुष्टि एवं गरिमा उसकी अन्तः भूमिका के विकसित करने में ही है । यों ईश्वर को भोग प्रसाद खिला कर धूप-दीप चढ़ाकर भी उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने की बात लोग सोचते हैं पर यह एक तथ्य है कि अपने सत्कर्मों और सेवा अनुदानों से भरे उस आचरण को देखकर परमेश्वर जितना द्रवित होता है उतना धूप-दीप पा कर नहीं यही बात विश्व मानव के ऊपर लागू होती है । लोगों की भौतिक सुख-सुविधायें-अन्न, जल, वस्त्र, दवा, धन, आदि की मुफ्त व्यवस्था बना कर संसार की सेवा की जा सकती है उससे करोड़ गुनी सेवा उसके अन्तरंग-विचार स्तर एवं भाव प्रवाह का स्तर ऊँचा उठाकर की जा सकती है । ऊँचे भाव स्तर का व्यक्ति अपनी समस्यायें तो सहज ही हल कर लेता है उसे दूसरों की उलझने सुलझाने और अँधेरे में रोशनी उत्पन्न करने में भी देर नहीं लगती । सो हमें अपनी व्यक्तिवादी संकीर्णता को जब समष्टि की देवी पर बलि करना है तो यह ध्यान रखा जाय कि अपने सारे प्रयत्न लोक मानस का स्तर ऊँचा उठाने पर केन्द्रित रहें । इस स्तर का अनुदान ईश्वर-भक्ति का-आत्मा को परमात्मा में लय करने का सबसे श्रेष्ठ प्रकार माना जा सकता है ।

हमें अपनी और अपने परिवार की चिन्ता इतनी ही करनी चाहिए जितनी समस्त समाज की जाय । समस्त विश्व जब अपना परिवार मानना है तो चंद लोगों पर ही सारा ध्यान केन्द्रित कर लेना और उन्हीं के लिए मरना खपना किस प्रकार उचित हो सकता है। अच्छा गृहपति अपने सारे परिवार का समान रूप से ध्यान रखता है और समस्त परिजनों की सुविधा जुटाने का प्रयत्न करता है । हमें अपना ऐसा ही विशाल हृदय बनाना चाहिए और ऐसा ही विशाल दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए । इसी को आत्मिक विकास कहा जा सकता है । स्वर्ग निस्सन्देह उत्कृष्ट दृष्टिकोण का नाम है जिसे प्राप्त करने पर व्यक्ति के सोचने और करने का ढंग ऐसा आत्म-सन्तोष भरा एवं शान्तिदायक हो जाता हैकि उसे हर घड़ी नन्दन वन में निवास करने जैसा आनन्द मिलता है । युक्ति वस्तुतः अपनी स्वार्थपरता के साथ जुड़ी हुई दुष्प्रवृतियों के जंजाली परिवार से पिण्ड छुड़ा लेना मात्र है । लोभ-मोह और वासना तृष्णा के बंधन काट डालने पर व्यक्ति अपनी आत्मा के सन्तोष की कर्त्तव्य, न्याय, विवेक, एवं सत्य को ही सब कुछ मान लेता है। अज्ञान के अन्धकार में भटकने वाली दुनिया भला कहती है या बुरा इसकी ओर उसका तनिक भी ध्यान नहीं होता । इस स्थिति में मनुष्य ईश्वर की समीपता ब्रह्म निर्माण, आत्म-साक्षात्कार आदि तथा कथित आनन्द से कुछ अधिक ही शान्ति सन्तोष प्राप्त करता है कम नहीं । योग-साधना, पूजा, व्रत, अनुष्ठान, भक्ति आदि का आध्यात्मिक कलेवर जिस स्थिति तक मनोवैज्ञानिक प्रयोग प्रक्रिया द्वारा पहुँचाता है, उससे भी अधिक सरलता और उपयोगिता के साथ जन-मानस को परिष्कृत करने की ज्ञान-यज्ञ तथा भावनात्मक उत्कर्ष के सुयोग्य साधनों को अपना कर भी भली प्रकार प्राप्त कर सकते हैं ।

यह कल्पना बाल-भावना मात्र है कि ईश्वर एक व्यक्ति है और व्यक्ति को सामिग्री तथा प्रशंसा के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रलोभन से जिस प्रकार आकर्षित प्रभावित किया जा सकता है और उसे बहका कर अपना उल्लू सीधा किया जा सकता है वैसी ही चालाकी ईश्वर के साथ बरतने से भी काम चल सकता है । आज का सारा पूजा-पाठ इसी घुरी के इर्द-गिर्द घूम रहा है । कि ईश्वर एक व्यक्ति है और व्यक्ति की सारी दुर्बलताएँ उसमें मौजूद रहने से भक्ति-नाम की तथा कथित विडम्बना उससे काम निकालने में सफल हो सकती है। यह बाल मान्यता बहुत पुरानी हो गई और उसकी निरर्थकता को हर कसौटी पर परख लिया गया । अब उस भक्ति भावना का उदय किया जाना है जो भाव-शक्ति के रूप में विश्वव्यापी परमात्मा सत्ता को उत्कृष्ट कर्त्तव्य एवं श्रेष्ठ भावस्तर द्वारा ही प्रभावित एवं आकर्षित हो सकती है । व्यक्ति का समष्टि में समर्पण-यह साधु ब्राह्मण जीवन का स्वरूप अनादि काल से चला आया है । बीच की विडम्बना अवधि को उपेक्षित कर दिया जाना चाहिए और हर मन को भगवान् के मन्दिर तथा उत्कृष्ट आदर्श वादिता को देव प्रतिमा के रूप में प्रतिदिन किया जाना चाहिए । सद्ज्ञान के सद्भाव के सत्कर्म के पुष्पों से ही भगवान् का सच्चा शृंगार किया जा सकता है इस मान्यता के साथ हमें ज्ञान और कर्म से समन्वित भक्ति भावना की त्रिवेणी में स्नान करके सच्ची आत्मिक प्रगति और चिरस्थायी सुख-शान्ति का अनुभव करना चाहिए ।

अगला समय सच्चे धर्म, सच्चे अध्यात्म और सच्चे तप साधन का होगा इनमें पूजा-पाठ भले ही कम हो जाय पर व्यक्ति यह अनुभव करेगा कि हमारे मनः संस्थान तथा कर्म प्रक्रिया का प्रत्येक कण लोक मंगल के लिये समर्पित हो जायेगा । व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षायें समाप्त होंगी लोग स्वल्प साधनों में सादगी और सज्जनता का जीवनयापन कर लेने को पर्याप्त या सन्तोषजनक मान लेंगे उनकी महत्त्वाकांक्षाओं का सारा केन्द्र विश्व व्यापी सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन पर केन्द्रित हो जायगा । तब व्यक्ति अपने लिए नहीं समाज के लिये जीना पसन्द करेगा और उसी में सुख सन्तोष का अनुभव करेगा । इस प्रवृत्ति परिवर्तन का समस्त विश्व पर जो दिव्य प्रभाव पड़ेगा उसकी अनुभूति और कल्पना से वे लोग आनन्द विभोर ही होते रहेंगे जिन्होंने विश्व परिवर्तन का शुभारंभ करने के लिये सब से पहले अपने को उस स्तर का ढाला कि जिस ढाँचे में अनेक दूसरे लोग ढलते चले जायें ।

यह परिवर्तन की प्रक्रिया अनायास ही सामने आकर खड़ी नहीं हो जायगी । जादू की छड़ी घुमाकर कोई संत देवदूत या अवतार यह सब करके नहीं रख जायगा । इसके लिए कोटि-कोटि जनता को घोर प्रयत्न करना पड़ेगा और हर सजग आत्मा को प्रस्तुत विपन्नताओं से जूझने के लिए रीछ, वानरों की तरह दुस्साहसी बनना पड़ेगा । इस महा अभियान का नेतृत्व करने के लिये महाभागो की आज अत्यधिक आवश्यकता है जो ईश्वरीय इच्छा, युग की आवश्यकता और विश्वव्यापी सुख-शान्ति के लिये अपने क्षुद्र स्वार्थों का बलिदान करके नव-निर्माण की ऐतिहासिक भूमिका सम्पन्न करते हुए अपने को धन्य बना सके ।

युग परिवर्तन की घड़ी तेजी से निकट आती चली जा रही है । अगले ३० वर्ष प्रसव पीड़ा के हैं, अग्नि परीक्षा के हैं-इनमें सब से अधिक परीक्षा उन समर्थ आत्माओं की होगी जो संस्कार सम्पन्न समझी जाती हैं। उन्हें अपना जीवन-क्रम ऐसा ढालना होगा जिसको देखकर दूसरे भी वैसा ही अनुकरण कर सकें। चरित्र की शिक्षा वाणी से नहीं अपना आदर्श प्रस्तुत करके ही दी जा सकती है । सो जिनमें भी मानवीय गरिमा और दैवी महानता के जितने अंश विद्यमान हैं उन्हें उसी अनुपात से अपने दुस्साहस पूर्ण कर्त्तव्य को विश्व-मानव के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिये दृढ़ता पूर्वक अग्रसर होना चाहिए ।

चार आधार लेकर युग बदल रहा है। युग-निर्माण योजना से प्रभावित प्रत्येक परिजन को अपना मस्तिष्क एवं क्रिया-कलाप उसी दिशा में प्रखर बनाने के लिए दुस्साहस पूर्ण कदम उठाने को तत्पर होना चाहिये यही युग देवता की पुकार है और यही हमारा अनुरोध आग्रह है । ●●●

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोक-सेवा : आज का सबसे बड़ा पुण्य - परमार्थ

सेवा का अर्थ है-युग धर्म का निर्वाह

सेवा धर्म की पूर्ति की योजना बनाते समय, समय की अधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उदारता का उपयोग करने वाला क्रम बनाना पड़ता है। इस सन्दर्भ में कोई पत्थर की लकीर नहीं खींची जा सकती कि सदा यही करना पड़ेगा। इस स्तर के निर्धारण में समय की आवश्यकता को सर्वोपरि महत्त्व देते हुए भी नये-नये निर्णय करने और अभिनव कार्यक्रम बनाने होते हैं।

अग्निकाण्ड जैसी दुर्घटना घटित होने पर सारी शक्ति उस संकट में फँसे हुए लोगों की प्राण-रक्षा कर सकने वाले उपायों पर नियोजित करनी होती है, जबकि बाढ़ से जिनका माल असबाब खराब हो गया है, उनके लिए अन्न-वस्त्र जुटाने की दौड़-धूप करनी पड़ती है। महामारी ग्रस्तों के लिए चिकित्सा परिचर्या और अन्त्येष्टि के साधन जुटाना प्रमुख कार्य होता है, जबकि बस उलटने जैसा आकस्मिक संकट उपस्थित होने पर घायलों को तात्कालिक मरहम-पट्टी करके अविलम्ब अस्पताल पहुँचाने के साधन जुटाने होते हैं। साधनों और उपायों को देखते हुए इन सब में बहुत भिन्नता मालूम पड़ती है, फिर भी विपत्तिग्रस्तों की सहायता करने का लक्ष्य उपर्युक्त सभी परिस्थितियों में एक रहता है। समय की आवश्यकता को ध्यान में न रखा जाय और किसी एक ही ढर्रे की सेवा साधना मानने का अड़ियलपन दिखाया जाय तो उसे भावुकता मानते हुए मूढ़ता के दोष से मुक्त न किया जा सकेगा। विवेक की तो पग-पग पर आवश्यकता रहेगी ही और परिस्थिति भिन्नता को देखते हुए सेवा धर्म के साथ जुड़ी हुई परमार्थ परायणता को करुणा को भी समयानुकूल प्रयोग करने की बात मानने के लिए सहमत करना होगा।

कोई समय था जब हर साधु ब्राह्मण एक प्रामाणिक संस्था के रूप में अपना व्यक्तित्व उच्चस्तरीय रखने की दृष्टि से पूर्णतया विश्वासपात्र थे। उनके हाथ में दानदक्षिणा सौंप कर इस बात की ओर से निश्चिन्त रहा जा सकता था कि दी हुई श्रद्धाञ्जलि का वे समय की आवश्यकता देखते हुए श्रेष्ठतम उपयोग कर लेंगे। जब दुरुपयोग की आशंका ही नहीं तो पूछ-ताछ क्यों की जाय ? लेखाजोखा क्यों माँगा जाय ? उस समय अपनी समूची श्रद्धा सन्त ब्राह्मणों के हाथ में बिना संकोच सौंप देने का औचित्य था किन्तु अब वह प्रामाणिकता नहीं रही तो विचार करना होगा कि किस व्यक्ति के हाथों किस प्रयोजन के लिए, कितना कुछ सौंपा जाय और उसके सदुपयोग होने का प्रमाण प्राप्त करने के लिए किस जाँच-पड़ताल का अवलम्बन किया जाय। इसमें पुरातन और अर्वाचीन ब्राह्मण के मध्य जो अन्तर करना है उसमें अविश्वास जैसा कोई कारण नहीं, मात्र प्रामाणिकता का स्तर गिर जाने के कारण औचित्य को ध्यान में रखकर किया जाने वाला सामयिक उपाय उपचारभर है।

कुछ भी करने में उपयोगिता को ध्यान में रखा जाय

प्राचीन काल में परमार्थ प्रेमी साधु ब्राह्मण कहलाते थे और उनके सुविधा-साधन जुटाने में दान-पुण्य की प्रमुखता केंद्रीभूत थी। प्याऊ, सदावर्त धर्मशाला, वस्त्रदान आदि बनाने का उपक्रम इसीलिए चला कि धर्म-प्रचार के महान कार्य में सुविधा उत्पन्न हो। आज यदि वैसे धर्म प्रचारक, परिव्राजक नहीं रहे तो शादियों, व्यापारियों घुमक्कड़ों और मनचले लोगों को मुफ्त में ठहराने के लिए धर्मशाला बनाने की क्या उपयोगिता रह गई। सेवा साधकों की सुविधा के लिए अन्न क्षेत्र खुलें तो बात समझ में आती है, पर निठल्ले दुर्व्यसनी यदि विवेकहीन दान-शीलता के सहारे चल रहे सदावर्त ढर्रे का अनुचित लाभ उठायें तो दुर्व्यसन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़ाने में सहायता करने वाले दानदाता निश्चित रूप से नरक में ही गिरेंगे। भले ही उनने पुण्य अर्जन की मान्यता बना रखी हो या डुग्गी पिटवाई हो।

अस्पताल बनायें या पाठशाला खोलें इसका निर्णय करते समय स्थानीय आवश्यकता को ध्यान में रखना होगा। अपनी सनक में जो आये सो, जहाँ मर्जी हो सो बना देने में मूढ़ता ही प्रधान मानी जाएगी और उदारता का पुट रहने पर भी उपयोगिता की कसौटी पर कसने वालों द्वारा उसे सनक की ही संज्ञा दी जाएगी। एक समय उपदेशकों की महिमा मानी जाती है तो दूसरे समय सेना में भर्ती होने वाले को ही सम्मानित प्रोत्साहित किया जाता है। इसमें समय की आवश्यकता को ही प्रधान माना गया है।

रीछ-वानरों ने पुल बनाने में श्रम लगाया था, ग्वाल-बालों ने पर्वत उठाया था, हनुमान ने पर्वत उठाया था, अर्जुन ने गाण्डीव चलाया था, भगवान की भक्ति के यह तरीके परस्पर सर्वथा भिन्न हैं। पर इस भिन्नता में श्रद्धा का सामायिक प्रयोग देखा और उस भिन्नता में एकता का दर्शन किया जा सकता है। केवट ने नाव चलाकर, शबरी ने बेर खिलाकर, गिलहरी ने रेत उठाकर, जटायु ने जूझकर अपनी भक्ति का परिचय दिया था। सभी ने एक जैसा क्रम क्यों नहीं अपनाया यह कहने वालों को मूढ़मति कहा जाएगा और माना जाएगा कि वे समय की माँग की उपेक्षा करने वाले विवेकहीन प्रश्नकर्त्ता हैं।

समयानुरूप निर्धारणों को समझें और तदनुरूप क्रिया-कलाप अपनायें

पाणिनि ने व्याकरण रचा और पतञ्जलि ने योग। व्यास ने पुराण लिखे और चरक ने वनस्पति जगत को खोज मारा। नागार्जुन ने रसायन विद्या का अनुसंधान किया और चाणक्य ने राजनीति को लक्ष्य बनाया। विवेकानन्द के सुपुर्द एक प्रकार का काम किया गया और गुरु गोविन्द सिंह ने दूसरे प्रकार की कार्य-विधि अपनाई। बुद्ध के चीवरधारी, गाँधी के सत्याग्रही वेष, विन्यास भी भिन्न प्रकार का धारण किये रहे और कार्य विधि भी एक जैसी नहीं थी फिर युग परिवर्तन की दृष्टि से उनके योगदानों को समान रूप से सराहा जायेगा। परशुराम का कुल्हाड़ा और धन्वन्तरि का अमृत-घट आकृति और प्रकृति में भिन्न थे किन्तु लक्ष्य एक ही था। ऋषियों ने अपने-अपने समय की स्मृतियाँ रची हैं और उनके विधान-निर्धारणों में भारी अन्तर पाया जाता है। इसका कारण किसी का मूर्ख, किसी का विद्वान होना नहीं, पर उनकी समयानुसार निधारणों को विवेक दृष्टि ही प्रमुख रही। इस प्रयास में उसने किसी लक्ष्मण रेखा को आड़े नहीं आने दिया। पत्थर जड़ है और लकीर भी। इसलिए जड़ जगत में पत्थर पर लकीर खींचने और उसे चिरस्थायी बनाने की बात समझ में आती है पर चेतना जगत में सदा समय की आवश्यकता और उसके समाधान का नीति-नियम ही काम देता रहेगा। उसकी उपेक्षा करके जो पुरातन और शाश्वत को एक ही मानते रहेंगे वे तत्वदर्शन के क्षेत्र में हठी बालकों की तरह अपरिपक्व अदूरदर्शी ही माने जाते रहेंगे।

कोई समय पूर्ण शान्ति का रहा होगा, सभी सुखी सज्जन रहे होंगे, तब सेवा के लिए कोई क्षेत्र खाली न देखकर लोगों ने अपने लिए जप-तप पूजापाठ, ध्यान समाधि के अन्तःक्षेत्रीय अनुसंधानों की ओर ध्यान मोड़ा और महत्त्व दिया होगा। यह शान्ति काल की बातें हैं। शत्रु का आक्रमण होने पर सभी कारखाने अपने उत्पादनों में युद्ध सामग्री का निर्माण करने में जुट जाते हैं। युगधर्म इसी को कहते हैं जो समय की पुकार को समझते नहीं, किसी पुरातन परिपाटी की लकीर पीटने में लगे रहते हैं उनकी भावना को सराहते हुए भी अन्धश्रद्धा को अकल्याणकारी दुर्मति ही कहा जायेगा। आज का परमार्थ क्या हो सकता है। इन दिनों की सेवा साधना क्या होनी चाहिए ? समय ने युग तथा धर्म की व्याख्या क्या की है इसे आँख खोलकर देखा तथा कान खोल कर सुना जाना चाहिए। जो आदिम काल के निर्धारणों को ही सब कुछ मानकर चित्र-विचित्र योगाभ्यासों, कर्मकाण्डों तथा दान पुण्य के पुरातन प्रचलनों को मरे बच्चे को गले से बाँधे फिरने वाली मोहग्रस्त बन्दरी की तरह बाँधे फिरते हैं उनके बारे में यही कहा जा सकता है कि उनकी भावना और जड़ता एक दूसरे से बाजी मारने में तुली हुई है। इसी विचित्र बिडम्बना पर व्यंग्य करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है—"सबसे भले विमूढ़ जिन्हहिं न व्यापहि जगतगति"।

महान परिवर्तनों का समय

ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि अपना समय महानतम परिवर्तनों का है। इतनी व्यापक, इतनी जटिल, विपन्न और इतनी समस्याओं से उलझी हुई महान क्रान्ति इतिहास की लम्बी अवधि में कभी भी नहीं हुई । अवतारों के कार्यक्षेत्र सदा सीमित परिधि की स्थानीय समस्याओं को प्रायः शस्त्र बल से सुलझाते रहे हैं। इस बार आस्था संकट से जनजन के अन्तराल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तक घुसी हुई असुरता से जूझना है और उसके द्वारा बनाये हुए ४५० करोड़ बिलों में सृजे हुए विषधरों से निपटाना है। विनाश की विभीषिकाएँ इतनी व्यापक इससे पूर्व कभी भी नहीं घुमड़ीं जिसने मानवीय सत्ता और सभ्यता को एक साथ उदरस्थ करने का चक्रव्यूह बनाया हो। मरण और जीवन में से एक को इन्हीं दिनों चुना जाता है। ऐसी विपन्न वेला को अभूतपूर्व समस्याओं और विपत्तियों से भरी-पूरी ही कहा जा सकता है। इन दिनों प्रधान भूमिका जाग्रत आत्माओं की ही होगी। उन्हें व्यामोह से निकलकर गाण्डीव उठाने का गीता उद्‌बोधन-प्रस्तुत महाभारत के संदर्भ में सुनना होगा।

इन दिनों पेट-प्रजनन की रट न लगाई जाय। लोभ-मोह के बन्धनों को कुछ तो शिथिल किया ही जाय। औसत भारतीय के निर्वाह पर सन्तोष किया जाय। भविष्य में ब्याज भाड़े के बलबूते किसी का निर्वाह चलने वाला नहीं है। कोई धनाध्यक्ष बनकर विलासी गुलछर्रे उड़ाते रहने की सुविधा समेट कर जी नहीं सकेगा। इसलिए उत्तराधिकारियों की मुफ्तखोरी बढ़ाने के लिए अपनी हड्डियाँ कोल्हू में पेलते रहने की मूर्खता किसी को भी नहीं करनी चाहिए। पेट-पेट के ढंग से भरा जाना चाहिए। उसे कभी न भरने वाली खाई जितना चौड़ा न किया जाय।

अपनी गरिमा समझें और भूमिका निभायें

परिवार को ईश्वर के उद्यान की तरह कर्तव्य परायण माली की तरह सींचना पर्याप्त है परिजनों को आलसी, व्यसनी और अहंकारी बनाने के लिए अनावश्यक सुविधायों से लादते हुए दूसरों को देखकर अपना मन विचलित नहीं करना चाहिए। सीमित श्रम से सादगी स्तर का निर्वाह चल सकता है और परिवार का विस्तार एवं वैभव न बढ़ाकर उन्हें श्रमजीवी सुसंस्कारी बनाने का लक्ष्य रखा जाय तो यह दोनों ही समस्याएँ जो पर्वत जैसी कठिन और जटिल बनकर सामने खड़ी हैं-दृष्टिकोण बदलते ही जादू की छड़ी घुमाने की तरह अपना रंगरूप देखते-देखते बदल सकती हैं। दूरदर्शिता की माँग इतनी ही है जिनका विवेक जग सके, वे समय को पहचानने, अपनी गरिमा और भूमिका समझें और बाल-क्रीडाओं में उलझे रहकर समय न गँवायें, अपने वर्चस्व और वैभव को उस प्रकार नष्ट-भ्रष्ट न होने दें जैसा कि मूढ़मति करते रहते हैं। जाग्रतों और प्रसुप्तों में कुछ तो अन्तर होना ही चाहिए। वरिष्ठों और विशिष्टों की कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका इस आपत्तिकाल में भी न बन सकी तो इतना ही कहा जायेगा कि भावना के पंख कट गये और वह मात्र कल्पना के पिंजड़े में तड़फड़ाती हुई दम तोड़ गई। भावना यदि संकल्प और साहस को जन्म न दे सके तो उसे क्षण में रुलाने, क्षण में हँसाने और अगले चरण में उदासीन हो बैठने की कायर कृपणता ही कहा जायेगा। उसकी भावुकता और निष्ठावान भावना का अन्तर जो जानते हैं, वे अपनी गरिमा और भूमिका को निरन्तर समझते रहे, और यदि समझदारी साथ दे तो उस लम्बी छलांग लगाने वाले की तरह साहसिकता में बदल ही डालें। नफे नुकसान का बहीखाता फैलाने का यह समय नहीं है। इन दिनों तो शूरवीरों की तरह सिर हथेली पर रखकर मैदान से कूद पड़ने में ही किसी के वर्चस्व की सार्थकता है। समय बिना किसी की प्रतीक्षा किये चला जायेगा। उसे इस बात की परवाह नहीं कि कौन दूरदर्शिता का परिचय देता है, कौन व्यामोह के चक्र-व्यूह में फँसा रहता है। समय प्राणवानों को उपहारों से लाद जायेगा और कृपण सिर धुनते, हाथ मलते, रोते-कलपते रह जायेंगे। हमें किस वर्ग में सम्मिलित होना है इसका निर्णय करने में असमंजस नहीं अपनाया जाना चाहिए। अनावश्यक विलम्ब नहीं लगाना चाहिए।

प्रज्ञा युग के अवतरण की इस पुण्य वेला में महाकाल ने जाग्रत आत्माओं का समयदान माँगा है। श्रम सीकरों के बिना युग देवता का तर्पण हो नहीं सकेगा। युग देवता की एक ही पुकार है। समयदान-समयदान-समयदान। जो यह अनुदान दे सकें वे यह न पूछें कि इसे अमुक कार्य में लगाने की शर्त है। समय की आवश्यकताएँ इतने प्रकार की हैं उनकी पूर्ति में जहाँ, जिसकी जिस प्रकार आवश्यकता समझी जायेगी वहाँ उसे लगा दिया जायेगा। सैनिकों के लिए अनुशासन पालन ही पर्याप्त है। कब, क्या करना है इसका निर्णय वे स्वयं नहीं लेते कप्तान पर छोड़ देते हैं। युग सैनिकों को भी समर्पण की भावना लेकर आगे आना है। अपना वर्चस्व बढ़ाने वाले काम पाने की चोरबाजारी मन के किसी कोने में छिपी हो तो उसे कुचलकर ही महाकाल के चरणों में समर्पित होना चाहिए।

मोटे-तौर पर इतना ही कहा जा सकता है कि संवयाप्त अनास्था और अवांछनीयता के साथ पग-पग पर लड़ना है। इसके लिए जनसम्पर्क साधना होगा। घर-घर का दरवाजा खटखटाना होगा। जन-जन के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन-मन को छूना, सहलाना और विक्षिप्तता स्तर की भ्रम ग्रस्तता से परित्राण दिलाना है। अन्तःकरण उभरा तो फिर पीड़ा और पतन का कहीं कोई कारण शेष न रहेगा। सभी जाग्रत आत्माओं के लिए काम एक ही है, दिशा एक ही, रीति एक ही, नीति एक ही है। यह बात दूसरी है कि समय की कब कहाँ क्या माँग उठ पड़े और उसकी पूर्ति के लिए किसे किस मोर्चे पर जूझने के लिए जुटा दिया जाय इसका निर्णय हर कोई अपने मन से न करे, अन्यथा प्रयास न रहकर अराजकता में बदल जायेंगे और सृजन के स्थान पर विघटन के दुर्भाग्य भरे दृश्य दिखाई देंगे ।

जागृत आत्माओं को युग धर्म की चुनौती

संचित पशु प्रवृत्तियों, अभ्यस्त कुसंस्कारों और हेय प्रचलनों के प्रवाह में जीवन क्रम एक ऐसे ढर्रे पर घूमने लगता है, जिसकी कोल्हू के बैल से तुलना की जा सके। इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए एकान्त चिन्तन की कुसंस्कारों, का उन्मूलन करने वाले तप साधन की तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए योजनाबद्ध निर्धारण की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रक्रिया को प्रकारान्तर से 'महान परिवर्तन', 'कायाकल्प' आदि नामों से पुकारा जाता है। द्विजत्व भी इसी को कहा गया है। इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने के लिए शास्त्रकारों ने तीर्थों के प्राणवान वातावरण में कुछ समय निवास करने की आवश्यकता पर बहुत जोर दिया है। तथ्यतः तीर्थ-सेवन सेनीटोरियम में भर्ती होकर रुग्णता का उपचार और आरोग्य संवर्धन का दुहरा लाभ लेने जैसा निर्धारण है। शान्ति कुञ्ज की सत्र साधनाएँ अपने समय की सर्वोपरि तीर्थ साधना है।

साधना का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है अन्तःमन्थन और भविष्य निर्धारण। तीर्थ-सेवन की अवधि में यह प्रक्रिया परिपूर्ण भाव श्रद्धा के साथ चलनी चाहिए। अभ्यस्त ढर्रे में इतना हेर-फेर किया जाना चाहिए और सोचा जाना चाहिए कि जीवन नीति में मात्र स्वार्थ ही स्वार्थ सब कुछ न रहे वरन् परमार्थ को भी स्थान मिले। हर किसी को भगवान ने समय और विचार की दो शक्तियाँ समान रूप से प्रदान की है। इस दृष्टि से कोई भी निर्धन नहीं। धन अपने निजी पुरुषार्थ का प्रतिफल है। वह न्यूनाधिक हो सकता है फिर भी इतनी गुंजायश तो रहती है कि अपनी रोटी में से एक टुकड़ा ईश्वरीय प्रयोजनों के निमित्त, अंशदान के रूप में निकाला जा सके। इस प्रकार की सन्तुलित उदारता अपनाने में मात्र अनुदारिता एवं कृपणता ही बाधक होती है। अन्तःकरण को तनिक अधिक चौड़ा किया जा सके तो उसमें परमार्थ के भगवान को भी बिराजने की गुंजायश बिना किसी कठिनाई के निकल सकती है और कुछ न सही आधे से अधिक आलस्य-प्रमाद में जाने वाले समय का एक छोटा अंश उस प्रयोजन की पूर्ति में लग सकता है जिसके लिए सृष्टा ने अपनी समूची कला संजोयी और बड़ी आशा लेकर मनुष्य को जीवन सम्पदा की धरोहर सौंपी है।

इन दिनों आस्था संकट से जूझना ही आपत्ति कालीन युग धर्म है। विचारों की निकृष्टता ने ही लोक मानस को विकृत और प्रयास प्रवाह को पथ भ्रष्ट किया है। व्यक्ति और समाज के सम्मुख अनेकानेक संकट इसी कारण उपस्थित हैं और महाविनाश के बादल गरज रहे हैं। यों लोक मानस का परिष्कार सदा ही सर्वोच्च स्तर का पुण्य परमार्थ माना जाता रहा है और साधु ब्राह्मण वर्ग के महामानव अपनी क्षमता का अधिकतम भाग इसी एक प्रयोजन के लिए नियोजित रखते रहे हैं। पर आज तो उस आवश्यकता की पूर्ति को जीवन-मरण की समस्या माना जा सकता है। महाकाल ने अपेक्षा की है कि जाग्रत आत्माएं इन दिनों अपने लोभ-मोह पर अंकुश लगायें और जितना अधिक बन पड़े अपना श्रम, समय, मनोयोग ही नहीं साधनों का भी महत्त्वपूर्ण अंश लोक चिन्तन में आदर्श-वादिता का समावेश करने के लिए भावभरी श्रद्धाञ्जलि के रूप में प्रस्तुत करें।

व्यस्त जन भी समयदान करें

रोज कुआँ खोदने रोज पानी पीने वाले भी आठ घण्टा कमाने के लिए, सात घण्टा सोने के लिए, पाँच घण्टा अन्यान्य कार्यों के लिए लगाकर उपार्जन और परिवार का उत्तरदायित्व भली प्रकार निर्वाह कर सकते हैं। बीस घण्टा शरीर के लिए लगाने से यदि सन्तोष हो सके तो चार घण्टा युगान्तरीय चेतना का आलोक वितरण करने के लिए बिना किसी प्रकार के असमंजस में पड़े भली प्रकार निकालते रह सकते हैं यह बात व्यस्त, निर्धन समझे जाने वाले, परिवार निर्वाह के भारी उत्तरदायित्व वाले लोगों के लिए कही गई है जिनके पास जमीन, जायदाद, जेवर, नकदी आदि की कुछ जमा पूँजी है। जिनके घर में कई अन्य लोग कमाने योग्य हैं वे उस आधार पर गुजारे का ढर्रा चलाने की बात सोचें और अपना बहुमूल्य समय अलभ्य जीवन लोभ-मोह की कभी न पूरी हो सकने वाली खाई में ढकेलते रहने की अपेक्षा, उच्च

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोजन में लगायें जिससे आत्म-कल्याण, विश्व-कल्याण के स्थायी और युग परिवर्तन के सामयिक उद्देश्यों की एक साथ पूर्ति हो सकती है।

जिम्मेदारियों से लदे हुए व्यस्त लोगों के लिए परिव्राजक स्तर का समय दान करना चाहिए । वे अपने समय में से जितना अधिक निकाल सकें अपने समीपवर्ती क्षेत्र में भी उसे सेवा साधना के लिए नियोजित रखे रह सकते हैं। जिनके उपार्जन उत्तरदायित्व हल्के हैं ऐसे लोगों को वानप्रस्थ स्तर अपनाना चाहिए और अपने समय को युगान्तरीय चेतना का आलोक बिखेरने के लिए जहाँ तक पहुँच और परिचय हो वहाँ की धर्म प्रचार यात्रा पर प्रव्रज्या के लिए निकलना चाहिए। यों वानप्रस्थ आधी आयु के पश्चात् लेने की परम्परा है, प्राचीन काल में लोग सौ वर्ष तक जीते थे तब पचास वर्ष इसकी आयु निर्धारित थी, पर अब तो आयु घटकर सत्तर अस्सी से भी कम रह गई है। ऐसी दशा में पैंतीस-चालीस की आयु को भी पूर्वार्ध, उत्तरार्द्ध में बांटा जा सकता है। बात आयु की नहीं, जिम्मेदारियों से निवृत्त होने की है। इसके लिए कौन क्या योजना बनाता है, किस प्रकार का ताना बाना बुनता है। बात बहुत कुछ इसी पर निर्भर है। आकांक्षा हो तो परिवार का ढर्रा यथाक्रम चलते रहने के हजार रास्ते बन सकते हैं, पर यदि मन व्यामोह के कीचड़ में ही फँसे रहने का हो तो फिर हजार बहाने गढ़े जा सकते हैं। समस्याओं में से अधिकांश वास्तविक नहीं होतीं। वे गढ़ी जाती हैं। आदमी अपने ढंग से सोचता और चाहता है। परिस्थितियाँ इच्छित स्तर की बनें, तब वह अपने को हल्का अनुभव करे यह सोचना असंगत है। वस्तुतः मनःस्थिति को सुधारना-सम्हालना पड़ता है। उसे एक केन्द्र से हटाकर दूसरे के साथ जोड़ा जा सके तो प्रतीत होगा कि जिस प्रकार सोचा जाता रहा है वही एक-मात्र उपाय नहीं है, उसके अतिरिक्त भी ढेरों रास्ते हैं जिनके अनुसार आज की परिस्थितियों में भी थोड़ा-सा उलट-पुलट करने भर से वैसा उपाय निकल सकता है जिसमें काल्पनिक पर्वत को राई के समान हल्का किया जा सके और परमार्थ पथ पर चला जा सके। ऐसे प्रसंगों में शंकराचार्य, समर्थ रामदास, विवेकानन्द, ज्ञानेश्वर, कबीर, बुद्ध आदि का उदाहरण स्मरण किया जा सकता है, जिनको उनकी पारिवारिक व्यवस्था ने भी कोई चोट नहीं पहुँचाई। वे लोग भी सुखपूर्वक जिये और इन महामानवों को कृत-कृत्य होने का अवसर भी मिल गया।

जाग्रत आत्माओं का अग्रगमन

देव युग, प्रज्ञा युग आना है तो इसकी उदीयमान किरणें सर्वप्रथम जाग्रत आत्माओं का अन्तःकरण मथेंगी और अग्रगामियों को उन पंक्तियों में खड़ा करेंगी जिनके साहस एवं मार्गदर्शन का सामान्य जन अनुकरण करते हैं। उषा काल का माहौल बनते ही पक्षी चहचहाने, पशु विचरने, फूल खिलने, उलूक छिपने और सर्वसाधारण को बिस्तर समेटते देखा जाता है। कुक्कुट के बाँग लगते ही उनींदों को ध्यान आता है कि सबेरा हो गया है। जाग्रत आत्माओं के आदर्शों की दिशा में उठते कदम अनेकानेकों को अनुगमन का आमन्त्रण देते हैं और यदि प्रेरणा मन, वचन, कर्म से युक्त है तो उसमें वह शक्ति भी रहेगी कि असंख्यों को अनुकरण करने के लिए पदचिन्हों पर चलना पड़े। हनुमान आगे चले तो रीछ बानर भी पीछे न रहे। बुद्ध ने साहस किया तो परिव्राजकों की संख्या लाखों तक पहुंच गई। गाँधी ने कदम बढ़ाया तो सत्याग्रही आश्चर्यजनक संख्या में पीछे चलने लगे। धर्म सम्प्रदायों में भी यही होता रहा है। मनस्वी लोगों ने एकाकी अपनी योजना बनाई, बात कही और उसे पूरा करने में जुट गये। इतना जो कोई भी कर सकेगा उसे यह प्रमाण भी मिलेगा कि वह एकाकी चला तो, पर कुछ ही समय उपरान्त साथ सहयोगियों की, समर्थकों प्रशंसकों की कमी नहीं रही। शर्त एक ही है कि लक्ष्य ऊँचा, विश्वास अडिग और प्रयास में प्रखर पुरुषार्थ भरा रहना चाहिए। पुरातन काल में वानप्रस्थी, लोकसेवा का व्रत धारण करते थे तो समूचा समाज ही उनके चरणों पर नतमस्तक होता था और श्रद्धापूर्वक उनके मार्गदर्शन अनुशासन को अपनाकर कृत-कृत्य होता था।

संसार में कुछ समय पूर्व तक बुद्ध धर्म की एक मात्र सरकार कम्बोडिया में थी। वहाँ प्रचलन था कि हर प्रजाजन जीवन में एक वर्ष का वानप्रस्थ ले। बौद्ध बिहार में रहे। साधना और सेवा का कार्यक्रम अपनाये। उस योजना के अनुसार उस देश में उन दिनों हर स्तर के हजारों सुयोग्य लोकसेवी बिना वेतन के मिलते थे। वे देश में अनेकानेक आवश्यकताओं की पूर्ति में निरन्तर संलग्न रहते थे। अपनी उपासना को लोक साधना के तवे में पकाकर परिपक्व करते थे। इन उदारमना लोकसेवियों का आदेश जनता श्रद्धापूर्वक पालन करती थी फलतः वहाँ अपराधों की प्रवृत्ति ही समाप्त हो गयी थी। सभी लोग मिल-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जुल कर कमाते-खाते, हंसते-हंसाते और सज्जनोचित सादगी अपनाकर कठोर श्रम में लगे रहते थे। इस आधार पर उस देश की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति ऐसी सुदृढ़ और समुन्नत रही कि सर्वत्र उसे आदर्श माना और सराहा जाता था। प्राचीन काल की भारतीय वानप्रस्थ परम्परा का यह एक आधुनिक संस्करण था। समय ने उसे भी लड़खड़ा तो दिया है पर हर भावनाशील के सामने यह तथ्य प्रस्तुत है कि वे अनावश्यक व्यामोह में बंधना यदि थोड़े ढीले कर सकें और लोकमंगल की, युग की पुकार की ओर ध्यान दे सकें तो सर्वतोन्मुखी श्रेय साधन की पृष्ठभूमि बनते देर नहीं लगेगी। इसमें उनका स्वार्थ भी सधेगा और परिवार भी सुखी रहेगा। बात मात्र दूरदर्शिता अपनाने और संकीर्ण स्वार्थ-परता से जकड़े रहने भर की है। इसे विवेक, साहस, सौजन्य अपनाकर हल किया जा सके तो समझना चाहिए अपने पार होने, औरों को पार करने तथा महाकाल के साथी सहचर की भूमिका निभाते हुए कृत-कृत्य होने का सुयोग सौभाग्य आकाश से बरस पड़ा और जीवन धन्य हो गया।

प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत अनेकानेक कार्यक्रम सामने हैं। बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक क्रान्ति के अन्तर्गत व्यक्ति, परिवार और समाज निर्माण योजना के अन्तर्गत अनेकानेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये हैं। उनमें से अपनी योग्यता और रुचि का कार्य कोई भी चुन सकता है। स्वाध्याय, सत्सङ्ग और सङ्गठन की बौद्ध काल जैसी अनिवार्य आवश्यकताएँ अभी भी पूरी करने को पड़ी हैं और उनके लिए ज्ञान रथ, स्लाइड-प्रोजेक्टर, जन्म दिवसोत्सव, आदर्श वाक्य लेखन आदि ढेरों काम तत्काल हाथ में लिये जाने हैं ताकि सेवासाधना के माध्यम से जन सम्पर्क सधे और बदले में समर्थन, सहयोग बरसे। इतनी सफलता मिलते ही सहयोगी जन शक्ति के सहारे निरक्षरता, निर्धनता, पिछड़ापन, रुग्णता, अन्धपरम्परा, अवांछनीयता, अनैतिकता, उद्दण्डता जैसी अनेकों, दुष्प्रवृत्तियों से जूझ पड़ना, उखाड़ फेंकना सम्भव हो सकता है। साथ ही सहकारिता, स्वच्छता, सुव्यवस्था, सज्जनता, श्रम शीलता, दूरदर्शिता जैसी सत्प्रवृत्तियों का जीवन में समावेश करने के लिए साहित्य, कला, शिक्षा जैसे प्रशिक्षणपरक और उपयोगी उद्योगों के रूप में रचनात्मक और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के लिए संघर्षात्मक कदम उठाये जा सकते हैं। अधिक समय देने वाले वानप्रस्थों की तरह, कम समय देने वाले परिव्राजक भी अपनी छोटी-बड़ी श्रद्धाञ्जलियाँ प्रस्तुत कर सकते हैं । समयदानियों के निर्वाह, शिक्षण व मार्ग व्यय आदि में भी अगले दिनों ढेरों खर्च बढ़ने वाला है । समय के बदले या साथ-साथ अंशदान देकर भी नव सृजन के यज्ञ में उदारचेता अपनी-अपनी श्रद्धाञ्जलियाँ दे सकते हैं । किस परिस्थिति में कहाँ, किस प्रकार क्या कर सकते हैं ? इस सन्दर्भ में शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार से सम्पर्क साधा जा सकता है, इस परामर्श से कार्यक्षेत्र चुनने और दिशा धारा अपनाने, व्यावहारिक मार्गदर्शन मिलने से और भी अधिक सरलता पड़ेगी ।

प्रज्ञापुत्रों को इतना तो करना ही है

इन दिनों नये सृजन के लिए समयदान देना 'गोरस बेचन हरिमिलन' जैसा अति महत्त्वपूर्ण कार्य है जिसमें स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही सधते हैं । उद्यान रोपने वाला माली स्वयं भी अपने पुरुषार्थ को फलते-फूलते अपनी आँखों देखता है, दर्शकों की सराहना सुनता है और छाया, फूल-फलों से अनेकों को राहत पहुँचाता है । इसके अतिरिक्त अपनी भावी पीढ़ियों को गौरवान्वित रहने और अनवरत लाभ उठाने का अवसर भी प्रदान करता है । ठीक ऐसी ही दूरदर्शिता, इन दिनों युग संधि की बेला में महाकाल द्वारा भेजे गये आमन्त्रण को स्वीकार करने में है । इसमें स्वार्थ और परमार्थ का असाधारण समन्वय है; लोक और परलोक के उभयपक्षीय लाभों से लाभान्वित होना है।

इन दिनों किसी को भी व्यस्तता, अभावग्रस्तता जैसी सामान्य बातों को तिल से ताड़ नहीं बनने देना चाहिए । आपत्ति काल में अथवा सौभाग्य का सृजन करने वाले अवसरों पर लोग इस प्रकार न सही उस प्रकार, चालू क्रिया कलापों की व्यवस्था बना लेते हैं और जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, उसमें उपेक्षा बरतने जैसी चूक नहीं करते । मनुष्य जीवन में अनेकों प्रकार की प्रतिकूलतायें आती रहती हैं । उनके सम्बन्ध में भी तो कोई हल निकालकर काम चलाना पड़ता है । भावना होने और सूझ-बूझ से काम लेने पर कोई न कोई मार्ग ऐसा मिल ही जाता है, जिसमें निर्वाह भी चलता रहे और परमार्थ भी सधता रहे। संसार के महा मानवों ने इसी समझदारी को अपनाकर अपने उच्चस्तरीय कार्यक्रम बनाये हैं और उच्चकोटि की आदर्शवादिता अपनाकर अपने को धन्य बनाने और संसार के लिए उज्ज्वल भविष्य की संरचना करने में समर्थ, कृतकृत्य एवं धन्य हुए हैं । आज के भावनाशील दूरदर्शियों, प्राणवानों, जागरूकों को भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसी ही सोच उभारनी चाहिए और समयदान की साहसिकता अपनानी ही चाहिए । युगधर्म इससे कम में सधता नहीं है ।

अपनी विचारणा और गतिविधियों में आदर्शवादी परिवर्तन कर लेने पर व्यक्ति में इतनी प्रतिभा-प्रखरता उभरती है, कि उसके सहारे अति कठिन दिखने वाले कार्यों में भी हनुमान, अर्जुन जैसी भूमिकायें निवाही जा सकें । परिवार को सुसंस्कारी और स्वावलम्बी बनाने भर से कर्त्तव्य पालन हो जाता है । आवश्यक नहीं कि कुटुम्बियों के लिए विलासिता और सम्पन्नता के ऐसे साधन जुटाने में ही अपने को खपा दिया जाय, जिससे उनका निर्वाह बिना कुछ किए ही चलता रहे। इस प्रकार मुफ्त का माल खाने वाले के पल्ले दुर्व्यसन और दुर्गुण ही पड़ते हैं ।

लिप्सा और कुत्सा की हथकड़ी-बेड़ियों को थोड़ा ढीला किया जा सके, तो इतने भर से हर किसी को वह सुविधा मिल सकती है, जिसके आधार पर अपने को धन्य बनाने और संसार को सुरम्य-समुन्नत बनाने वाला श्रेय सौभाग्य मिल सके । भावनाओं में उत्कृष्टता का समावेश होते ही क्रिया-कलापों में सहज ही असाधारण परिवर्तन बन पड़ता है और साथ ही वह सुयोग-सौभाग्य सामने आ खड़ा होता है, जिसके आधार पर समय की पुकार सुनने, युग-धर्म अपनाने और अपने को धन्य बनाने के दैवी वरदान सिर पर बरसने लगे । इस विश्व का भाग्य बदल देने वाली युग परिवर्तन की इस क्रान्ति की भागीदारी लेने में, किसी भी जाग्रत आत्मा को आना-कानी नहीं करनी चाहिए। युगधर्म के निर्वाह में अपने हिस्से की भागीदारी पूरी करने में कायरता को आड़े नहीं आने देना चाहिए । तथाकथित शुभचिन्तकों के दबाव-व्यवधान की भी इसीलिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए, कि उनमें संकीर्ण स्वार्थपरता के अतिरिक्त और कुछ तथ्य होता ही नहीं।

समयदान किसलिए ?

समयदान किस प्रयोजन के लिए ? इसका उत्तर एक ही है कि प्रचलित दुर्बुद्धि को निरस्त करने और उसके स्थान पर संसार में सद्भावनाओं को अभिवर्धित करने के लिए । दूसरे शब्दों में, उसे जन मानस का परिष्कार कहा जा सकता है; विचार क्रान्ति अभियान भी यही है। और भी अधिक स्पष्ट करना हो तो इसी को सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन भी कह सकते हैं । यही अपने समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है । इन्हीं के पूरा न होने के कारण भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण उभरा है तथा ऐसा वातावरण बन गया है, जिसे दम घोंट देने वाला तथा हाथों को हाथ न सूझने देने वाला कुहासा ही कहा जा सकता है । इन दिनों हर क्षेत्र में इसी विभीषिका का बोलबाला है । समयदानियों को इसी प्रवाह परिवर्तन में अपने समय, श्रम, साहस और साधनों को नियोजित करना है । इसी तथ्य को मान्यता देते हुए अपना भावी कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिए । यह नहीं सोचना चाहिए कि अपनी सामर्थ्य स्वल्प है । हर चिनगारी में प्रकारान्तर से वे सभी सम्भावनायें विद्यमान रहती हैं, जो प्रचण्ड ज्वालमाल और दावानल में दिख पड़ती हैं । आत्म बल उभरे तो सामान्य स्तर का मनुष्य भी देवदूतों जैसा असामान्य बन सकता है । इसके प्रमाण में अब तक के असंख्य महामानवों की साक्षियाँ प्रस्तुत की जा सकती हैं । महान उद्देश्यों के लिए आगे बढ़ने वालों को अनुयायियों और सहयोगियों की कमी नहीं रहती । बुद्ध, गाँधी, विनोबा, शंकराचार्य, दयानन्द, विवेकानन्द आदि के महान् संकल्प असफल कहाँ हुए । उनको साथी सहयोगियों की कमी कहाँ पड़ी ? सत्य में हजार हाथियों के बराबर बल होता है, इस तथ्य पर हर आस्तिक को विश्वास करना ही चाहिए ।

नव सृजन का कार्य इतना अधिक सुविस्तृत है, जिसमें न्यूनतम योग्यता और क्षमता का व्यक्तित्व भी अपने उपयुक्त कार्य उपलब्ध कर सकता है । केवट, शबरी, गीध, गिलहरी की कथाएँ यही बताती हैं । रीछ, वानरों और ग्वाल-बालों ने भी सराहनीय श्रेय प्राप्त कर लिया था । अनपढ़ हजारी किसान ने हजार आम के उद्यान लगवाकर अपना नाम अमर कर लिया और अपने कार्यक्षेत्र को हजारीबाग नाम से प्रख्यात कर दिया । पिसनहारी विधवा द्वारा अपने श्रम से जो कुआँ ब्रजभूमि में बनवाया गया था, वह अभी भी किसी बड़े तीर्थ से कम भाव श्रद्धा का केन्द्र नहीं बना हुआ है ।

समय की सबसे बड़ी माँग विकृत चिन्तन और भ्रष्ट आचरण को उलटकर उसकी जगह मानवीय गरिमा के अनुरूप चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को पालने की है। यह कार्य अपने निजी जीवन से आरम्भ किया जा सकता है और अपने प्रभाव क्षेत्र में आने वाले लोगों को अनुरोध भरे आग्रह एवं तर्क और तथ्यों से भरे विचार विनिमय द्वारा, उस प्रक्रिया को अपनाने के लिए तैयार किया जा सकता है । यों संसार में पथभ्रष्ट लोगों का ही बाहुल्य है, पर तलाश करने पर ऐसे भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिल सकते हैं जिनमें श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा के बीजांकुर किसी न किसी मात्रा में विद्यमान हैं । उन्हें समेटा, संजोया, सिखाया और बदला जा सके, तो अमर-बेल की तरह शालीनता और सद्भावना भी सुविस्तृत होने में किसी से पीछे नहीं रह सकती है । इसके लिए स्थूल प्रयासों के साथ-साथ आध्यात्मिक पुरुषार्थ भी किए जाने आवश्यक हैं ।

अध्यात्म उपचार भी अनिवार्य हैं

भारत के मशहूर पत्रकार ब्लिट्ज के संपादक श्री करंजिया, हंगरी के एक प्रख्यात वैज्ञानिक-चिन्तक. मनीषी श्री आर्थर कौयस्लर से मिले । अणु शक्ति द्वारा संभावित विनाश पर चर्चा हुई । श्री कौयस्लर ने कहा, "भारत को इससे परेशान होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उसके पास गायत्री मन्त्र का ऐसा छत्र मौजूद है, जिसे तोड़कर कोई उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता । शास्त्रकारों ने भी गायत्री मन्त्र की आध्यात्मिक, दार्शनिक और भौतिक प्रयोजनों में काम आने वाली शक्ति का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है । अनुभवी साधक भी ऐसा ही कहते हैं ।

यज्ञ के परमार्थ प्रधान तत्वदर्शन और वातावरण के परिशोधन एवं परिष्कार की कितनी ही क्षमताएँ होने की सुविस्तृत विवेचना हुई है । गायत्री, भारत की देव संस्कृति की जननी और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता माना गया है।

उक्त दोनों दिव्य क्षमताओं से सम्पन्न गायत्री यज्ञ का अपना महत्त्व है । उसके बड़े आकार वाले आयोजनों का भी विधान है और संक्षिप्त रूप में उसी के एक छोटे, किन्तु सार तत्व से अभिभूत संस्करण—'दीप यज्ञ' की भी अपनी विशिष्ट पद्धति है।

सामयिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में दीप यज्ञ अतीव सस्ता भी है और सर्वसाधारण द्वारा अपनाये जाने योग्य सर्वसुलभ भी । इसे अनेकानेक कर्मकाण्डों के स्थान पर प्रयुक्त भी किया जा सकता है । धर्म तन्त्र से लोक शिक्षण की प्रक्रिया का माध्यम भी इसे बनाया जा सकता है । दीपक सद्ज्ञान का प्रतीक होने से गायत्री की प्रतिमा कहा जा सकता है । यज्ञ का पारमार्थिक प्रतीक-सुगन्धि वितरण, अगरबत्ती जलाकर भी कार्यान्वित किया जा सकता है ।

युग संधि के बारह वर्षों की अवधि में शान्ति कुञ्ज के तत्वावधान में, देश-विदेश में एक लाख दीप यज्ञों की योजना सम्पन्न की जा रही है । इनमें २४ करोड गायत्री मन्त्रों का सहपाठ भी सम्मिलित है। इसका सम्मिलित प्रभाव जहाँ युग अवतरण की प्रक्रिया में सहायक सिद्ध होगा, वहीं युग चेतना से जुड़ी हुई विचारधारा, जन-जन को हृदयंगम कराने का अवसर भी मिलेगा । यह आध्यात्मिक उपचार उन प्रयोजनों में अतीव सहायक सिद्ध होगा, जो ज्ञान-यज्ञ को विचार क्रान्ति के रूप में विश्वव्यापी बनाये जा रहे हैं ।

सुगम किन्तु प्रभावशाली सामयिक उपचार

इस प्रयोजन के लिए इन दिनों दीपयज्ञों की प्रक्रिया को व्यापक बनाया जा रहा है । इस ज्योति जागरण की प्रतीक पूजा में हर गाँव, नगर, गली, मुहल्ला आलोकित किया जा रहा है । इसे धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण का छोटा किन्तु अत्यन्त दूरगामी परिणाम उत्पन्न कर सकने वाला धर्मकृत्य भी कह सकते हैं । इस आयोजन के माध्यम से कहीं भी भावनाशीलों की एक बड़ी संख्या एकत्रित की जा सकती है और उन्हें गायत्री रूपी सद्भावना और यज्ञ रूपी सत्कर्मों की शृंखला के साथ संबद्ध किया जा सकता है । दीपयज्ञों को युग अवतरण के प्रभात पर्व की आरती उतारना भी कहा जा सकता है । उसकी व्याख्या विवेचना करते हुए ही उपस्थित व्यक्ति को समझाया जा सकता है कि हम सबको दीपक की तरह जलते रहने और अगरबत्ती की तरह सुगंध भरा वातावरण बनाने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए । अग्नि की साक्षी में ऐसे व्रत संकल्प ग्रहण करने चाहिए, जो उस क्षेत्र में विद्यमान अवांछनीयताओं को निरस्त कर प्रगतिशीलता की पक्षधर सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन कर सकें ।

इन दीपयज्ञों को प्रकारान्तर से संकल्प यज्ञ भी कहा जा सकता है, जिनके साथ एकता और समता के उच्चस्तरीय सिद्धान्तों का समावेश है । नर और नारी एक समान, जाति-वंश सब एक समान नया संसार बसायेंगे—एकता समता लायेंगे जैसे अनेक आदर्शों का समुचित समावेश है । धर्म तन्त्र को भी अगले दिनों राजतंत्र के समान ही समर्थ बनाया जाना है; ताकि शासन सम्पदा और सुरक्षा की अभिवृद्धि में कार्यरत रहे और धर्मतन्त्र आदर्शवादिता एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन की भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए अपनी महत्ता एवं उपयोगिता सिद्ध कर सके । क्षेत्रों में इन दिनों जो कमी रह रही है, उसे पूरी करने में दीपयज्ञों के माध्यम से विनिर्मित भाव भरा वातावरण अप्रत्याशित रूप से समर्थ हो सकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धार्मिकता और उसकी प्रतीक पूजा, इन दिनों मात्र पंडा-पुरोहितों के हाथ में केन्द्रित होकर रह रही है । दीपयज्ञों की प्रक्रिया समस्त कर्मकाण्डों का एकमात्र प्रतीक होने की मान्यता प्राप्त कर सकती है । यह विधा अत्यन्त सस्ती और सुगम होने के कारण हर किसी के लिए क्रियान्वित किये जाने योग्य बन सकती है । प्रतीकों के माध्यम से सद्भावनाओं को उभारना ही तो धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण का उद्देश्य रहा है । पिछले दिनों यक्षीय कर्मकाण्ड बहुत जटिल और खर्चीला तथा एक ही वर्ण विशेष के तत्वावधान में चल सकने वाला बन गया था । अब उसे इतना सर्वसुलभ बना दिया गया है कि धार्मिकता, आध्यात्मिकता और आस्तिकता के समस्त सिद्धान्तों को इस सरल माध्यम से अत्यन्त व्यापक सार्वजनिक प्रचलन में समाविष्ट हुआ देखा जा सके ।

सक्रिय परिजनों-प्रज्ञापुत्रों को इस सन्दर्भ में पाँच कार्यक्रम सौंपे जा रहे हैं । इन्हें मिशन के विस्तार और नव युग के अवतरण की पृष्ठभूमि बनाने के लिए पंच-तत्वों, पाँच-प्राणों, पंचाग्नि की तरह ही अतिमहत्त्वपूर्ण मानकर चलाना चाहिए । इनमें से प्रत्येक कार्यक्रम अपने आप में एक समग्र मोर्चे की तरह विविधताओं से, जिम्मेदारियों से भरा हुआ है । युग की आवश्यकता की पूर्ति अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा और सौभाग्य की प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए इस दिशा में पूरी तत्परता के साथ प्रवृत्त होना चाहिए ।

प्रथम कार्यक्रम

नव-सृजन के आरंभिक चरण में दीपयज्ञ आयोजनों द्वारा युगोन्तरीय चेतना का आलोक घर-घर में पहुँचाने का प्रयत्न किया जा रहा है; साथ ही उसके साथ जुड़े हुए सिद्धान्तों से सर्वसाधारण को उन्हीं की मनःस्थिति के अनुरूप अवगत कराने का प्रबल प्रयत्न किया जा रहा है । इस प्रक्रिया को व्यापक बनाने में गरीब-अमीर, शिक्षित-अशिक्षित, नर-नारी सभी का अपने-अपने ढंग का योगदान हो सकता है । अभी हमें इसी प्रक्रिया को प्राथमिकता देते हुए कदम आगे बढ़ाने चाहिए । उपस्थित लोगों में से प्रत्येक से उनकी स्थिति को ध्यान में रखते हुए, कुछ अवांछनीयता छोड़ने और कुछ आदर्शवादी विधेयक व्रत संकल्प लेने के लिए उद्यत किया जाना चाहिए । नशेबाजी, दहेज, आलस्य, अपव्यय मूढ़ मान्यताएँ, कुटेवों जैसी अनेक कुप्रथाएँ इन दिनों ऐसी हैं, जिन्हें हर हालत में निरस्त किया ही जाना चाहिए । समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी की मान्यताएँ उभारने के लिए इन दीपयज्ञों के अवसर पर प्रवचन उद्बोधन द्वारा प्रयत्न किये जाने चाहिए । सहगान कीर्तन का समन्वय भी अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में असाधारण रूप से सहायक होता है । इसलिए आयोजनों में उसकी भी अनिवार्यता बनाये रखी गई है ।

दीपयज्ञ की पूर्णाहुति होते-होते स्थानीय प्रतिभावानों में से कुछ का एक संगठन गठित कर दिया जाना चाहिए, जो आगे चलकर साप्ताहिक सत्संगों की शृंखला अनवरत रूप से चलाते रहें और नवसृजन की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने में बढ़-चढ़ कर भूमिका निभाते रहें ।

युग संधि की अवधि में महापुरश्चरण साधना में प्रत्येक प्रज्ञा परिजन को भागीदार बने रहने के लिए कहा गया है । इस प्रक्रिया में गायत्री मन्त्र का जप और सूर्य का ध्यान प्रमुख है । इसे नियमित रूप से चलते ही रहना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त प्रातःकाल उठते ही शान्ति कुञ्ज पहुँचने का ध्यान करना, वहाँ से सम्पर्क साधना, प्रेरणा प्राप्त करना और अभिनव प्रकाश लेकर वापस लौटने की मानसिक ध्यान प्रक्रिया को भी सँजोए रहना चाहिए । इस उपक्रम को भी सृजन शिल्पियों को आवश्यक नित्य नियम की तरह अपनाए रहना चाहिए।

द्वितीय कार्यक्रम

दूसरा कार्यक्रम है विचार क्रान्ति अभियान । नव-युग में जनसामान्य को अपनी विचारणा और कार्य पद्धति में क्या सुधार और क्या अभिवर्धन करना चाहिए ? इसकी सुनियोजित रूपरेखा युग-निर्माण योजना, मथुरा और शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार द्वारा अत्यन्त सस्ते और सारगर्भित मार्गदर्शन से परिपूर्ण बनाकर प्रकाशित की गई है। इसे अपने क्षेत्र के हर शिक्षित को बिना मूल्य पढ़ने देने और दुबारा जाकर वापस लेने की झोला पुस्तकालय प्रक्रिया हर प्रज्ञापुत्रों को अपनाने के लिए कहा गया है । नित्य दो घंटे का समय इसी प्रयोजन के लिए लगाया जाता रहे, तो उतने समय में प्रायः २० व्यक्तियों से इस निमित्त सम्पर्क साधा जा सकता है । सात दिनों के लिए सात क्षेत्र चुन लिए जायें तो १४० व्यक्तियों से सम्पर्क सध सकता है और युग साहित्य पढ़ाने तथा वापिस लेने का सिलसिला चल सकता है । जो लोग पढ़ने के लिए पुस्तकें लें, उन्हें इसके लिए भी सहमत किया जाय कि वे कम से कम पाँच शिक्षितों को उपलब्ध पुस्तक को पढ़ने के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए दिया करेंगे एवं अनपढ़ों को सुनाया करेंगे । इस प्रकार १४० × ५ = ७०० व्यक्ति एक प्रज्ञापुत्र के झोला पुस्तकालय से लाभान्वित होते रहेंगे और युग परिवर्तन के लिए जो बताया एवं कहा जा रहा है, उसकी प्रेरणा प्राप्त करते रहेंगे । इसी बात को यों भी समझा जा सकता है कि एक झोला पुस्तकालय संचालक, युग प्रशिक्षक की भूमिका निभायेगा और यह मानेगा कि ७०० छात्रों का नियमित अध्यापन करने वाला विद्यालय चला रहा है । यह इतना बड़ा कार्य है कि उसकी भाव परिणति की कल्पना करने भर से रोमांच हो आता है ।

इस युग विद्यालय को चलाने के लिए थोड़ी अर्थ व्यवस्था भी करनी पड़ेगी । यह कार्यभार भी समयदानियों के जिम्मे ही किया गया है कि वे न्यूनतम २० पैसा नित्य निकाला करें और उसे एक डिब्बे में जमा किया करें । यह राशि महीने भर में छै: रुपये जितनी हो जाती है । इसी पैसे से युग साहित्य और मिशन की पत्रिकायें इतनी आ सकती हैं जिनसे ७०० शिक्षार्थियों को बिना जेब से एक पैसा खर्च किये पाठ्य पुस्तकों का लाभ निरंतर मिलता रहे । दो घंटे के समयदान के अतिरिक्त २० पैसा नित्य का अंशदान निकालना भी सृजनशिल्पियों के जिम्मे किया गया है । विचार क्रांति का सिलसिला इतने भर से अग्रगामी होता रह सकता है ।

विचार क्रान्ति के अभियान के अन्तर्गत सद्विचारों तथा सुसंस्कारों की स्थापना का कार्य हर स्तर पर किया जाना है । जहाँ व्यवस्था बन सके, वहाँ बच्चों को स्कूल से छुट्टी पाने के उपरान्त बचने वाले खाली समय में 'बाल संस्कार शालाएँ' चलायी जायें जिनमें स्कूली पाठ्यक्रम को होमवर्क की तरह ही पूरा कराने के अतिरिक्त स्काउटिंग आदि ऐसे अन्य विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए, जो जीवन विकास के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है । स्वास्थ्य, शिष्टाचार आदि ऐसे ही विषय हैं । स्कूली पाठ्यक्रम तो स्कूलों में किसी प्रकार पूरे करा भी दिए जाते हैं, किन्तु इन अति महत्त्वपूर्ण विषयों का शिक्षण विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत ही किया जाना है ।

तृतीय कार्यक्रम

तीसरा कार्यक्रम है—महिला जागरण । आधी जनसंख्या को अबला, कामिनी, कैदी जैसी स्थिति से उबारकर उसे अगले दिनों इस योग्य बनाया जाना है कि वह एक समग्र मनुष्य स्तर की भूमिका निभा सके। शिक्षा, स्वावलम्बन और विवेकशीलता की दृष्टि से उसे समर्थ एवं सुयोग्य बनाया जाना है । इसके लिए अनेक प्रयास किये जाने हैं, जिनके आधार पर हर घर में गृह-लक्ष्मी का अवतरण सम्भव हो सके । घरेलू कामकाज सब लोग मिल-जुल कर करने लगें, तो जहाँ पूरे परिवार को सद्गुणों की शिक्षा मिलेगी, वहाँ महिलाएँ भी थोड़ा अवकाश पाकर अपना, अपने परिवार का और समाज का उत्कर्ष करने में कुछ ऐसा कर सकेंगी, जिसे चमत्कारी कहा जा सके । परिवारों को नर-रत्नों की खदान बनाने के लिए घर-परिवार को शालीनता के वातावरण से ओत-प्रोत होना चाहिए। इस प्रक्रिया को सुविकसित नारी ही कर सकती है । अगले दिनों महान आत्मायें नव सृजन में योग देने के लिए अवतरित होने वाली हैं । वे भी इन प्रगतिशील महिलाओं के आँचल से ही उपजेंगी । समर्थ नारी, समाज और शासन में अपना उचित स्थान प्राप्त करने के उपरान्त इतना कुछ कर सकेंगी, जिसके आधार पर हर क्षेत्र में अनेक गुनी प्रगति हुई देखी जा सके । इक्कीसवीं सदी 'मातृ शतक' के नाम से निर्धारित हो चुकी है । उसे प्रत्यक्ष देखने के लिए नारी जागरण की निर्धारित योजना को इन्हीं दिनों कार्यान्वित करने की आवश्यकता है । उसे शिक्षित, मुखर तथा प्रतिभावान बनाना है, ताकि शासन, समाज और नव निर्माण की अनेकानेक आवश्यकताओं को पूरा कर सके । इस प्रयोजन के लिए हमें सर्वप्रथम अपने घर की महिलाओं को अग्रिम पंक्ति में खड़ा करना चाहिए; ताकि अन्य अनेकों को सहयोग देने, अनुकरण करने के लिए अभीष्ट उत्साह एवं मार्गदर्शन मिल सके ।

महिलाओं के पास मध्याह्न में बारह से चार बजे के बीच प्राय: अवकाश रहता है । उसमें शिक्षा संवर्धन, कुटीर उद्योग, परिवार निर्माण, कुरीति निवारण, सर्वतोन्मुखी महिला विकास की रूपरेखा आदि विषय पढ़ाए जाने चाहिए । इन परिस्थितियों का प्रबंध सेवाभावी शिक्षित महिलाओं को सौंपा जाय । वे 'महिला प्रशिक्षण' की व्यवस्था अधिक अच्छी तरह बिठा सकती हैं।

अवांछनीयता का उन्मूलन भी

विचार क्रान्ति का एक पक्ष है वांछित विचारों-संस्कारों की स्थापना और दूसरा पक्ष है अवांछनीयता का निवारण । इसके लिए असहयोग, विरोध, संघर्ष जैसे सूत्रों का भी उपयोग करना पड़ सकता है । कुछ अवांछनीयताएँ, कुरीतियाँ, मूढ़ मान्यताएँ ऐसी हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिनके कारण सर्वसाधारण का असामान्य अहित होता है । इनके विरोध में वातावरण बनाना चाहिए । समझाने-बुझाने, दुष्परिणामों से अवगत कराने, असहयोग करने, दबाव डालने जैसे अनेक उपाय ऐसे हैं, जिनका आश्रय लेकर दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन का कार्य भी भली प्रकार होता रह सकता है ।

नशेबाजी का शिकार होने वालों को अपने शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन बिगड़ने, सामाजिक अपमान, आर्थिक अपव्यय, परिवार पर बुरा प्रभाव आदि की अनेकानेक हानियाँ उठानी पड़ती हैं । इनसे व्यक्ति और समाज को जो नुकसान उठाने पड़ते हैं, उन्हें ठीक प्रकार समझाया जा सके, तो अनेकों को इस कुटेव से छुड़ाया और अनेकों को समय रहते सावधान करके बचाया जा सकता है । उनके स्वास्थ्य, धन और चरित्र की रक्षा की जा सकती है ।

धूमधाम वाली शादियों में दहेज, जेवर और बारात, प्रीतिभोज जैसे इतने निरर्थक अपव्यय होते हैं कि इनमें दोनों ही पक्षों का कचूमर निकल जाता है । अर्थव्यवस्था चौपट होती है तथा गरीबी-बेईमानी के गर्त में गिरना पड़ता है । संबंधियों के बीच दरार पड़ती है और सुयोग्य जोड़े मिलने में भारी अड़चन उत्पन्न होती है । अस्तु, बिना खर्च की शादियों का ही प्रचलन होना चाहिए । शान्ति कुञ्ज में भी ऐसे आदर्श विवाह सम्पन्न होते रहते हैं । अच्छा हो सुयोग्य जोड़े आसानी से ढूँढ़ने के लिए उपजाति की सीमा में ही सीमित रहने की बालहठ छोड़ दी जाय और बड़ी जाति के अन्तर्गत मिली हुई छोटी-छोटी उपजातियों को तो इस संदर्भ में एक मान ही लिया जाय ।

लड़की वाले तो इस सुधार पर आसानी से सहमत हो जाते हैं, पर लड़के वाले ही प्रायः लोभवश नखरे दिखाते हैं । इसमें झूठी शान भी जोड़ते हैं । अस्तु मिशन के प्रभाव क्षेत्र में जितने भी लोग आते हों, कम से कम उनमें से प्रत्येक को ही तो प्रयत्न करना चाहिए कि लड़के पर तो दहेज और धूमधाम का आग्रह किसी भी हालत में न करेंगे । इस प्रकार मुख्य अड़चन दूर हो जाने पर सादगी के विवाहों का प्रचलन चल पड़ने में कोई कठिनाई न रहेगी । बारात में परिवार के दस-पाँच लोग ही जाया करें । लौटने पर यदि स्वजनों को स्वल्पाहार कराना आवश्यक जान पड़े तो उतना भर किया जा सकता है ।

भाषा क्षेत्र, प्रान्त, जाति आदि के नाम पर जो विलगाव अपने समाज में पनपा है, उसका भी अन्त होना चाहिए । लोकमानस में एकता और समता के बीज बोये जाने चाहिए, ताकि हम सब एक समर्थ राष्ट्र के नागरिक होने का गर्व कर सकें ।

मृतक-भोज, पर्दा-प्रथा, जाति-पाँति, ऊँच-नीच, बाल-विवाह, भिक्षा-व्यवसाय, भाग्यवाद, कुरीतियों की परम्परा जैसी अनेकों मूढ़मान्यताएँ हैं, जिनके बदले जाने की आवश्यकता है । इनको स्वयं तो मान्यता देनी ही नहीं चाहिए, अन्यान्यों को भी इन हठवादिताओं से निरत होने के लिए समझाया जाना चाहिए । जो कुरीतियों से चिपके हों, उन्हें समर्थन और सहयोग देने की भी भूल नहीं करनी चाहिए ।

जिनके जीवन में लोभ, व्यामोह, अहंकार, अपव्यय, आलस्य, कटु भाषण, अनुशासन का उल्लंघन जैसी अनेकों बुराइयाँ, दृष्टिकोण एवं आचरण में घुसी बैठी होती हैं, उन्हीं के कारण प्रगति का मार्ग रुका पड़ा रहता है । अस्तु, आत्म-परिष्कार के लिए अपने पूर्वाग्रहों से भी संघर्ष करने की आवश्यकता है। सारी सामर्थ्य स्वार्थ-साधन में ही खपा देना, लोक-मंगल के लिए समयदान और अंशदान प्रस्तुत करने के कर्त्तव्य पालन में बहानेबाजी करना भी ऐसी अदूरदर्शिता है जिसे हर कीमत पर हटाया जाना चाहिए । अपने आप में पूर्ण सामर्थ्य से लड़ते हुए,अर्जुन की तरह आन्तरिक महाभारत जीतने के लिए कमर कसनी चाहिए । सहयोग आवश्यक है । सेवा धर्म अपनाना भी ठीक है। क्षमा, दया आदि की उपयोगिता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता; पर साथ ही यह भी गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि अनीति और दुष्टता के साथ मिल-जुल कर संघर्षरत रहने का भी और कोई विकल्प नहीं है ।

चतुर्थ कार्यक्रम

चौथा कार्यक्रम है—तीर्थ यात्रा । यह सदा से धर्म प्रचार की पद यात्रा के रूप में ही सम्पन्न होती रही है। पुण्य फल उसी का है । वाहनों में द्रुतगति से दौड़ लगाना और दर्शन झाँकी तथा डुबकी लगाने की चिह्न पूजा करके लौट आना, मात्र लकीर पीटने जैसी आत्म प्रवंचना है । धर्म प्रचार के लिए परिभ्रमण करना, जनसम्पर्क साधना और आदर्शों की धर्म-धारणा को व्यापक बनाना, इसी में तीर्थ-यात्रा के पुण्यफल का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सच्चा समावेश है । अभी भी काँवर में गंगाजल लेकर पद यात्री इसी प्रयोजन के लिए निकलते हैं । किसी क्षेत्र विशेष की परिक्रमाएँ होती रहती हैं । 'चरैवेति' का सिद्धान्त इसी प्रयास के साथ जुड़ा हुआ है ।

दैनिक तीर्थ-यात्रा के लिए ज्ञान रथ घुमाने की बात सर्वोत्तम है । उसमें युग साहित्य, लाउड स्पीकर, टैपरिकार्डर जैसे उपकरण रहते हैं, जो रास्ते में मिलने वालों को युग संगीत एवं युग-धर्म के प्रेरणा भरे प्रवचन सुनाते चलते हैं । ज्ञान के प्रत्यक्ष देवता-युग साहित्य को देखने जानने का अवसर मिलता है । झोला पुस्तकालय की पढ़ाने देने और वापिस लेने की प्रकिया भी चलती रहती है । जो चाहते हैं वे कुछ खरीद भी लेते हैं । इस आधार पर नये विचारवानों से सम्पर्क सधता है और युग सृजन के लिए नया क्षेत्र मिलता है । ज्ञानरथ घुमाना एक तरह से चलती-फिरती प्रज्ञापीठ बना लेने जैसा पुण्य कार्य भी है। इसके निर्माण में इतनी ही पूँजी लगती है जिसे आसानी से मध्यम वृत्ति का व्यक्ति वहन कर सकता है । यह व्यवस्था अपने निकटवर्ती गाँव मुहल्लों में तो अति सरलता पूर्वक चल ही सकती है ।

कुछ और बड़ा क्षेत्र अपनी तीर्थयात्रा में सम्मिलित करना हो, तो इसके लिए साइकिल-यात्रा द्वारा निकटवर्ती ग्रामों को सीमाक्षेत्र बनाकर कार्यरत हुआ जा सकता है । एक और साथी मिल सके तो दो सहयात्रियों की तीर्थयात्रा और भी मनोरंजक एवं प्रभावशाली बन सकती है । जिन्हें हर रोज निकलने का अवकाश न हो, वे सप्ताह में एक दिन तो इसके लिए निर्धारित कर ही सकते हैं ।

यात्रा पथ में पड़ने वाली दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखते चलने की रीति नीति अपनानी चाहिए । गेरु या काले रंग में गोंद मिलाकर बाँस की कूची या बालों के ब्रुश से यह लिखने का क्रम सरलतापूर्वक चलता रह सकता है । दीवार लेखन के चार प्रमुख आदर्श वाक्य यह हैं —१. इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य । २. नर और नारी एक समान-जाति वंश सब एक समान । ३. हम बदलेंगे युग बदलेगा—हम सुधरेंगे युग सुधरेगा। ४. नया संसार बनायेंगे एकता, समता लायेंगे ।

कुछ दिन के अभ्यास से उपर्युक्त वाक्यों को सुन्दर लिपि में लिखने में सफलता मिल सकती है। इस तीर्थ यात्रा में अधिक साइकिल यात्री सम्मिलित हो सकें तो और भी अच्छा । उपर्युक्त चारों वाक्यों के 'स्टीकर' भी बने हुए हैं । उन्हें दरवाजों, दुकानों, दफ्तरों, कारखानों आदि में लगाया जा सकता है । इनका मूल्य किन्हीं उदार व्यक्तियों की सहायता से भी पूरा किया जा सकता है या फिर इन सस्ते स्टीकरों को बेचा भी जा सकता है । प्रयत्न यह होना चाहिए कि हर विचारशील के घर में यह स्टीकर लगे दिखाई दें। बाजारों में कोई दुकान खाली न रहे । मंदिर, धर्मशालाओं, पार्कों के गेटों पर भी इनको चिपकाया जाय । यदि यह उपक्रम अपनाया जाय, तो दर्शकों के मस्तिष्क में एक नयी हलचल उत्पन्न करनेवाला सिद्ध होता है ।

साइकिल यात्री जहाँ कहीं भी कुछ समय ठहरें, वहाँ बिगुल आदि बजाकर समीपवर्ती लोगों को एकत्रित कर लें और सहगान कीर्तन का माहौल खड़ा कर दें । हो सके तो निर्धारित कीर्तन में सन्निहित भावों की संक्षिप्त व्याख्या भी करते चलें । इससे कीर्तन और सत्संग प्रवचन के दोनों उद्देश्य पूरे हो सकते हैं । यह प्रक्रिया सबेरे घर से निकलने और रात तक लौट आने के क्रम में भी चलती रह सकती है । यदि सम्भव हो तो एक सप्ताह का भी कार्यक्रम बनाया जा सकता है । पूर्व सूचना भेज देने पर स्थानीय लोगों का सहयोग भी निर्धारित समय पर मिलता रह सकता है । लोग इकट्ठे भी मिल सकते हैं और ठहरने, खाने आदि का सहयोग भी प्रसन्नतापूर्वक कर सकते हैं ।

सस्ता प्रचार साहित्य भी इस प्रवास में बेचते या वितरित करते चलने की बात भी बन सकती है । विनिर्मित प्रज्ञापीठों को तो अपने पास इस प्रयोजन के लिए दो साइकिलों की निजी व्यवस्था भी रखनी चाहिए । प्रज्ञामंडलों के लिए भी इतना प्रबन्ध कर लेना कुछ कठिन नहीं है। दो साइकिलें अपनी हों तो समयदानियों के माध्यम से नियमित साइकिल यात्रायें चलती रह सकती हैं। उत्साह पैदा होते ही बड़ी संख्या में लोग अपनी साइकिलें लेकर इन यात्राओं में साथ चल पड़ते हैं ।

पञ्चम् कार्यक्रम

पाँचवाँ और अंतिम चरण है—शान्ति कुञ्ज के प्रशिक्षण सत्रों में सम्मिलित होते रहने का नियम बनाना । अपने सम्पर्क क्षेत्रों के शिक्षितों और समर्थों को भी इस शिक्षण प्रक्रिया से लाभान्वित होने के लिए प्रोत्साहित करते रहना । निवास, भोजन आदि का वहाँ समुचित प्रबन्ध है। शिक्षण में वे सभी पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं, जिनके आधार पर आत्म-परिष्कार, परिवार में सत्प्रवृत्ति संवर्धन और समाज का अभिनव निर्माण जैसी सभी सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति संभव हो सके । इन प्रयासों के आधार पर व्यक्तित्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का निखार और प्रतिभा परिवर्धन का असाधारण लाभ हर किसी को मिलता है।

इक्कीसवीं सदी में लोक व्यवस्था का कायाकल्प जैसा महान परिवर्तन होने जा रहा है। इस ईश्वरीय कार्य में सहयोग देने वाले संसार के महामानवों की तरह विशिष्टता, यशस्विता और गौरव गरिमा एवं आत्मसंतोष का असाधारण लाभ प्राप्त कर सकेंगे । इसलिए आपत्तिकाल की तरह निजी लाभों में कटौती करते हुए भी, इस गंगावतरण जैसी प्रक्रिया में भागीदार बनने के लिए हर प्राणवान को साहस जुटाना चाहिए। यह ऐतिहासिक अलभ्य अवसर निकल जाने पर करवट बदलने वाले आलसियों को अपनी अदूरदर्शिता के लिए पछताना ही शेष रह जायेगा।

महाकाल का आमंत्रण स्वीकार करने और युग धर्म के निर्वाह की उमंग आने पर किसे, किस प्रकार क्या करना चाहिए, इसका निर्धारण और प्रशिक्षण इन नौ दिवसीय सत्रों में कम समय होते हुए भी जितना सम्भव है, उतना मिल जाता है । हर व्यक्ति की अपनी मन:स्थिति और परिस्थिति होती है । योग्यता, क्षमता और अनुभव-अभ्यास में भी अन्तर पाया जाता है । इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए इन नौ दिवसीय सत्रों में वह सिखाया जा सकता है, जो उच्चस्तरीय स्वार्थ और परमार्थ को समन्वित कर सके और कम से कम अपने उज्ज्वल भविष्य के निर्धारण में आवश्यक आलोक प्राप्त कर सके । इस सत्र साधना को एक प्रकार से बैटरी चार्ज करा लेने जैसी प्रक्रिया समझा जा सकता है । इनमें सम्मिलित कराने के लिए अपने प्रभावक्षेत्र में से ढूँढ़-ढूँढ़ कर ऐसे मनस्वी-ओजस्वी नर-नारियों को तो भेजना ही चाहिए, जो नवयुग के निर्माण में कुछ कर सकने की योग्यता वाले व्यक्तित्व सम्पन्न हों ।

दीप यज्ञ आयोजन हर वर्ष, हर गाँव मुहल्ले में सन् २००० तक लगातार होते रहेंगे । इसके लिए मंच संभाल सकने वालों की हजारों की संख्या में आवश्यकता पड़ेगी । वे न केवल अपने यहाँ के वरन् समीपवर्ती अनेकानेक आयोजनों को भी उभारते संजोते, सम्भालते रहें । ऐसे कार्यकर्ता अब सभी प्रज्ञा केन्द्रों को अपने-अपने यहाँ उभारकर, स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए । शांति कुञ्ज की प्रचार गाड़ियाँ हर वर्ष होने वाले लाखों आयोजनों में न पहुँच सकेंगी । अपने-अपने क्षेत्र के प्रतिभाशाली नर-नारी ही उस प्रयोजन की पूर्ति कर लिया करेंगे । भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए अपने यहाँ से ऐसा नेतृत्व उभारना चाहिए जो शिक्षित, समर्थ भावनाशील एवं मिशन के कार्यक्रमों से पूर्ण परिचित हों । उन्हें शान्ति कुंज के एक माह वाले सत्रों में से किसी में भेजकर नये उत्तरदायित्व संभालने में सक्षम बना लेना चाहिए ।

सुयोग्य होने पर प्रशिक्षण में भाग लेने नर और नारी दोनों ही आ सकते हैं, पर उन्हें छोटे बच्चों तथा अशिक्षित, असमर्थों की मण्डली साथ लेकर नहीं आना चाहिए । इससे भीड़ को पर्यटक का मनोरंजन नहीं मिलता और शिक्षार्थियों का मानस तथा समय उस कार्य में नहीं लगता जिसके लिए उन्हें बुलाया गया था । एक महीने के सत्र में मात्र चुने हुए लोग ही बहुत सोच-विचार कर भेजने चाहिए; ताकि वे क्षेत्रीय आवश्यकता को पूरा करने का स्तर साथ लेकर वापस लौट सकें ।

इन दिनों प्राणवान प्रज्ञापुत्रों को जिन उत्तरदायित्वों के निर्वाह में कटिबद्ध होना है, उनकी चर्चा ऊपर की पंक्तियों में की जा चुकी है । पाँच चरणों में समूचे क्रिया कलापों का विभाजन किया गया है ।

(१) **दीपयज्ञ आयोजन द्वारा** गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले नवयुग का संदेश पहुँचाना और प्रगतिशील लोगों को प्रज्ञामंडल के अन्तर्गत गठित करके उनके माध्यम से साप्ताहिक सत्संगों का उपक्रम नियमित रूप से चलाना ।

(२) **विचार क्रान्ति अभियान**-युग चेतना के आलोक से जन-जन को अवगत एवं संबद्ध कराना । इस हेतु समयदान और अंशदान की उदार साहसिकता उभारना । नव निर्माण के अन्तर्गत आने वाले विचारों से जन-जन को, शिक्षितों और अशिक्षितों सभी को प्रभावित करना । इसी योजना के अन्तर्गत झोला पुस्तकालय, ज्ञान-रथ को चलाते रहने के लिए संकल्पपुर्वक कटिबद्ध होना ।

(३) **नारी जागरण**-आधी जनसंख्या को अपंग, अबला और क्रीतदासी की दयनीय दुर्दशा से उबार कर एक पूर्ण मनुष्य स्तर की समर्थता एवं विशेषता से सम्पन्न करना । इसके लिए अपने प्रभाव क्षेत्र की महिलाओं को आगे बढ़ाना और उनमें नारी शिक्षा, स्वावलम्बन जैसे कार्यों में रुचि उत्पन्न करना । व्यक्तित्व विकास, परिवार निर्माण एवं समाज सेवा के कार्यों में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकने के योग्य बनाना। इसे जनसंख्या के वरिष्ठ अर्धांग को नयी शक्ति के रूप में उभरने तथा विकसित होने का अवसर देना भी कहा जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(४) **तीर्थयात्रा**—जन सम्पर्क साधने और उस परिकर में मानवीय गरिमा के अनुरूप श्रद्धा उभारने का प्रबल प्रचलन करना । इस प्रयोजन के लिए ज्ञानरथ घुमाना-पदयात्रा या साइकिल यात्रा के रूप में प्रवास के लिए परिव्राजक रूप में निकालना । दीवारों पर आदर्श वाक्य लिखना, सहगान के माध्यम से नवसृजन के सिद्धान्तों को उपस्थित जनों के गले उतारना । विचारशीलों के घरों में आदर्श वाक्यों के स्टीकर चिपकाने-जैसे अनेक कार्यक्रम इस उद्देश्यपूर्ण तीर्थयात्रा के प्रमुख कार्यक्रम हैं ।

(५) शान्ति कुञ्ज में सदा चलते रहने वाले नौ दिवसीय एवं एक माह के सत्रों से युग सृजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकने की योग्यता प्राप्त करना। इस हेतु क्षेत्र के प्रतिभाशाली नर-नारियों को उत्साहित करके लाभान्वित कराना । सत्रों की स्वीकृति मिलने पर ही चलने की तैयारी करनी चाहिए। बिना स्वीकृति के किसी को भी नहीं आना चाहिए।

उपर्युक्त पंचसूत्री योजना को सफल बनाने के लिए हर प्राणवान प्रज्ञापुत्र को विशेष रूप से आमंत्रण और उत्साहित किया जा रहा है । प्रयत्न यह होना चाहिए कि इस जानकारी को सीमित न रखकर अपने प्रभाव क्षेत्र में आने वाले सभी विचारशीलों को अवगत कराया जाय और उसके साथ सम्पर्क जारी रखा जाय, जिसके प्रभाव से वे भी युगसृजन की भागीदारी में यथास्थिति सम्मिलित होने की मन:स्थिति तक पहुँच सकें ।

महान लक्ष्य—तीव्रतर गति

एक से पाँच, पाँच से पच्चीस, पच्चीस से छ: सौ पच्चीस जैसी पाँच कदम आगे बढ़ने की प्रक्रिया अपनाकर, अपने ही परिकर को भारत की ८० करोड़ जनता और संसार की प्राय: ६०० करोड़ जनसंख्या के सम्पर्क तक पहुँचाना । इस प्रकार समयानुसार विस्तार प्रक्रिया के द्वारा, उन सबके अन्त:करण अवचेतना की स्थिति से उबारना संभव होगा, ऐसी आशा अपेक्षा रखनी चाहिए । यह अभियान शान्ति कुञ्ज से आरम्भ भर हुआ है; पर उसका विस्तार तो देशव्यापी विश्वव्यापी होकर रहेगा । सभी को उसी प्रवाह के अनुरूप गतिविधियाँ गतिशील करने के लिए प्रबल प्रयास करना है । इसके लिए इतना और भी आवश्यक होगा कि प्रस्तुत अभियान को सभी भाषा भाषियों के क्षेत्र में प्रवेश करा सकने वाले साधन जुटाने की तैयारियाँ अभी से आरम्भ की जायें । उस संकल्प पूर्ति के लिए अपने क्षेत्र में अपनी ओर से जो कुछ कर सकना संभव हो उसे पूरी शक्ति से सम्पन्न करें ।

भाषायी विभाजनों में बँटी हुई दुनिया एक प्रकार से अधिकांशत: दो पाटों के भीतर बँटी हुई घिरी बैठी है। प्रस्तुत अभियान विश्वव्यापी है । उसे व्यापक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हर भाषायी क्षेत्र से प्रज्ञापुत्र निकलें और उस कठिनाई का समाधान करें जो मिशन को व्यापक बनाने में प्रमुख रूप से बाधक बन रही हैं ।

युग सृजन साहित्य प्रधानतया हिन्दी में ही छपा है। अन्य भाषाओं में उसके थोड़े से अनुवाद हुए हैं। समय की आवश्यकता है कि जो कुछ महत्त्वपूर्ण सृजा और लिखा गया है, उस समूची विचारधारा को हर भाषायी क्षेत्र में प्रवेश पाने का अवसर मिले। इसमें पूँजी, योग्यता और प्रतिभा तीनों की ही आवश्यकता पड़ेगी। इसे जुटाना भी उन्हीं का कर्त्तव्य है जो गाड़ी को धकेलकर यहाँ तक ले आये हैं। उन्हें ही अपने साथियों समेत जुटकर अभीष्ट लक्ष्य के उच्च शिखर तक पहुँचाना है।

विचार परिष्कार के लिए इन दिनों दृश्य और श्रव्य के रूप में युग चेतना को सुविस्तृत करने की भी महती आवश्यकता है । इसके लिए वीडियो और टेपरिकार्डर का माध्यम ऐसा है जिसे मध्यम वृत्ति के लोग भी चला सकते हैं । फिल्में यों आज की स्थिति में भाव प्रेरणा का सशक्त माध्यम हैं; पर उसके लिए आवश्यक पूँजी और प्रतिभा के आगे आने में देर लग सकती है । तब की प्रतीक्षा न करके हमें वीडियो और टेपरिकार्डर से प्रचार मंडलों का काम लेना चाहिए ।

संसार अनेक समस्याओं से घिरा है । ये समस्याएँ अपना समाधान चाहती हैं । नव सृजन की समानान्तर भावी आवश्यकताओं तथा उनकी पूर्ति के लिए आवश्यक मार्गदर्शनों की सामयिक व्यवस्था किये जाते रहना निरन्तर अभीष्ट रहेगा । इस प्रयोजन की पूर्ति का मध्य बिन्दु अभी हिन्दी भाषा में छपने वाली मासिक पत्रिका 'अखण्ड ज्योति' ही है, जो शान्ति कुञ्ज से लिखी जाती और मथुरा में छपती है । इसे पढ़ने और पढ़ाने वाले इतनी अधिक संख्या में होने चाहिए कि वे अपने-अपने सम्पर्क एवं प्रभाव क्षेत्र को प्रस्तुत निर्धारणों से निरन्तर अवगत कराते रह सकें। इसे प्रकाश की प्रेरणा उभारने वाले तंत्र की निरन्तर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निःसृत होने वाली वाणी कहा जा सकता है । इसके पाठक इतने होने चाहिए जिसका आकलन वर्तमान में कुछ लाख तक की सीमा में सीमित न रहे; वरन् वह करोड़ तक पहुँचे । संसार में अनेक पत्रिकायें इतनी संख्या में प्रकाशित भी हो रही हैं । 'अखण्ड ज्योति' के पाठक हिन्दी भाषी क्षेत्र में भी इक्कीसवीं सदी तक इक्कीस लाख तक जा पहुँचे तो उसे न तो अत्युक्ति मानना चाहिए और न असंभव कल्पना कहना चाहिए। आवश्यकता इतनी भर है कि वर्तमान पाठक यदि सचमुच उसे पसन्द करते हैं, तो हर साल नये चार ग्राहक बढ़ाकर, एक से पाँच बनाने की योजना में अपनी सक्रिय भागीदारी के अनुबंध का निर्वाह कर दिया करें ।

जहाँ दीपयज्ञों, झोला पुस्तकालयों आदि के माध्यम से युग चेतना का प्रवाह द्रुतगामी बनाया जा रहा है, वहाँ उसी की एक कड़ी यह भी होनी चाहिए कि अखण्ड ज्योति का हर सदस्य अपने नाम पहुँचने वाली पत्रिका को दस अन्यों को पढ़ाते रहा करे। इस प्रकार एक साल पढ़ाते रहने के बाद, उनमें से पाँच की श्रद्धा को इतनी विकसित कर लिया करे कि उसे स्वयं सदस्य बनने की आवश्यकता अनुभव होने लगे। मिशन की विचारधारा और कार्य-पद्धति का प्रधानतया इसी माध्यम से इतना विस्तार हो सका है । आगे भी इस माध्यम को और भी अधिक समर्थ बनाना, प्रभाव क्षेत्र बढ़ाना, समय की माँग को पूरा करना है ।

बड़े कार्यों के लिए बड़े साधन ही नहीं बड़े व्यक्तित्व भी चाहिए । बड़ी प्रतिभायें प्रायः बड़े सरंजाम जुटाती और बड़ी आवश्यकताओं को पूरी करने में समर्थ होती रही हैं । अपने समय की यों सर्वोपरि शक्ति शासन सत्ता की मानी जाती है, पर उस एक को ही सर्वांगपूर्ण, सर्व-समर्थ नहीं मान लेना चाहिए । कई अन्य वर्ग भी हैं जो जन मानस को आन्दोलित करने में समर्थता सिद्ध करते रहे हैं । इन प्रतिभा क्षेत्रों का सम्बन्ध युग सृजन मिशन के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ सके, इस चेष्टा से भी उदासीन नहीं रहना चाहिए ।

१. साहित्यकार, २. कलाकार, ३. सम्पत्तिवान, ४. मनीषी, ५.संगठनकर्ता एवं प्रवक्ता; यह पाँचों भी ऐसे वर्ग हैं जिन्हें अपने समय की प्रमुख शक्तियों में गिना जा सकता है । यों उपर्युक्त पाँचों प्रचंड धाराओं ने अपने-अपने क्षेत्र में आश्चर्यजनक सफलतायें पायी हैं, पर उन्हें समय की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता के साथ जोड़ा नहीं जा सका । अब इस निमित्त भी प्रयासों में शिथिलता नहीं रहने देनी चाहिए ? जिनकी पहुँच इन वर्गों में हो, उन्हें समय की आवश्यकता से अवगत कराना और सहयोग हेतु कुछ कदम बढ़ाने के लिए सहमत करना चाहिए।

शासकों के पास यों शक्ति की कमी नहीं, पर उसका नियोजन प्रायः सुरक्षा व्यवस्था और सम्पन्नता जैसे कुछ थोड़े ही संदर्भों तक सीमित होकर रह गया है । उसे अनुभव, अभ्यास और रुझान भी प्रायः इसी स्तर का उपलब्ध है। इसलिए युग परिवर्तन जैसी चेतनात्मक योजनाओं को सफल बनाने की प्रधानता या युग मनीषियों की ही जिम्मदारी है । यों सहयोग तो इस पुण्य प्रयोजन में किसी का भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है ।

पुरातन गरिमा का नवीन संस्करण

ध्यान रहे कि प्रज्ञा अभियान बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन का उत्तरार्द्ध है । उसे पूर्वार्द्ध से भी अधिक व्यापक, विस्तृत, सशक्त और प्रभावी बनकर रहना है। उस समय कुछ प्रतिभाशाली समर्थकों ने उस प्रेरणा-ऊर्जा को व्यापक बनाने के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया था । उसी का प्रभाव था कि भारतीय उपमहाद्वीप एवं सुदूर पूर्व सहित लगभग सारा एशिया उसके प्रभाव की लपेट में आ गया था । तक्षशिला, नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय तथा बौद्ध विहारों द्वारा ऐसे प्रतिभा सम्पन्न धर्म प्रचारक गढ़े गये, जिन्होंने संसार भर को शान्ति सद्भावना से अनुप्राणित कर दिया । शोधकर्ताओं का मत तो यह भी है कि महात्मा ईसा ने बौद्धधर्म से प्रभावित होकर, उन्हीं सूत्रों को यूरोप की स्थानीय भाषाओं में प्रचारित किया। बौद्ध संस्कृति के चिन्ह विश्व में अनेक स्थानों पर आज भी प्राप्त होते हैं ।

यह सब इसी लिए संभव हुआ कि धर्मचक्र प्रवर्तन के साथ जुड़ी हुई प्रतिभाएँ निरन्तर सुदूर क्षेत्रों में परिभ्रमण करती रहीं और अपने महान आन्दोलन की गहरी जड़ें सभी क्षेत्रों में जमाती रहीं ।

शांति कुञ्ज का प्रज्ञा अभियान भी उन्हीं चरण चिह्नों पर अपनी प्रव्रज्या आरम्भ कर रहा है । अब केन्द्रीय टोलियाँ प्रचार उपकरणों एवं साहित्य सहित दूरवर्ती प्रवास पर निकलेंगी और अब तक मिशन का प्रकाश जहाँ नहीं पहुँचा है, वहाँ अलख जगाने और आलोक वितरण में लगेंगे । योजना है कि देश का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई कोना इन परिव्राजकों का कार्यक्षेत्र बने बिना न रहने पाएगा । अगले चरण में संसार के हर क्षेत्र में नवयुग का संदेश पहुँचाने और उसके लिए उपयुक्त वातावरण बनाने हेतु प्रव्रज्या की जायेगी । युग परिवर्तन के लिए हरिद्वार और मथुरा में ही दो छोटे झरने प्रवाहित न होते रहेंगे, वरन् महान उद्‌गम की सहस्र धारायें प्रवाहित होंगी नदी, नाले के रूप में अपनी सत्ता एवं महत्ता का प्रदर्शन करेंगी । युग परिवर्तन तंत्र के वर्तमान संयोजक ने अपने अस्सी वर्ष के जीवन में जितनी ऊर्जा का निर्माण और वितरण किया है, विश्वास किया जाना चाहिए कि उसके अभिन्न अंग बन कर रह रहे पुत्री-पुत्र संधि का प्रस्तुत दस वर्षों में उससे कई गुना कार्य कर गुजरेंगे ।

जो इस कार्य के लिए उत्साहपूर्वक आगे बढ़ेंगे, उन्हें शान्तिकुंज के प्रशिक्षण के माध्यम से उपयुक्त योग्यता तथा नैष्ठिक सक्रियता के आधार पर शक्ति अनुदान प्राप्त होते रहेंगे । यह सब क्रम सहज रूप में चलते रहेंगे । चिंता तो केवल उनके लिए होनी चाहिए जो अपने अहंकार में ऐंठ जाते हैं । स्वयं सर्वशक्ति सम्पन्न और नेता होने की छाप छोड़ने के लिए लालायित हैं । ऐसे ही लोग महान लक्ष्यों का अहित करते हैं और अपनी क्षुद्रता के बोझ से स्वयं ही दब मरते हैं । परिजनों में कहीं कोई ऐसा केकड़ा छिपा न बैठा हो । इसी का देखभाल रखें और जो अनुपयुक्त है, उस अनाधिकारी को कोई उच्चस्तरीय जिम्मेदारी हाथ न लगने दें । नम्रता और निस्पृहता अपनाये बिना कोई भी व्यक्ति, दैवी प्रयोजनों के लिए पात्रता अर्जित नहीं कर सकता ।

नव निर्माण के लिए क्या करें ? कैसे करें ?

वर्तमान की अवांछनीयताओं से निपटने और भविष्य को उज्ज्वल बनाने के दोनों ही उद्देश्य विचार क्रान्ति अभियान से सफल होंगे । लाल मशाल ने इसी का प्रकाश फैलाने, वातावरण बनाने और भ्रान्तियों की लंका को जलाने में हनुमान की जलती पूँछ बनने का निश्चय किया है ।

अगले दिनों जनमानस में न्याय, विवेक, औचित्य एवं आदर्शों की समन्वित दूरदर्शिता जाग्रत करनी है । इसके लिए तीन प्रकार के क्रियाकलाप अपनाने की आवश्यकता पड़ेगी—(१) प्रचारात्मक (२) रचनात्मक तथा (३) सुधारात्मक । तीनों के समन्वित प्रयत्न से ही अभीष्ट उद्देश्यों की पूर्ति सम्भव हो सकेगी।

१. प्रचारात्मक

प्रचारात्मक उपाय वे होंगे जिनसे लोगों को विकृत भावनाओं से उत्पन्न होने वाले दुष्परिणामों को समझने का अवसर मिले । इन दिनों एक भ्रान्ति बहुत गहराई तक जनमानस में जड़ जमाकर बैठ गई है कि "व्यक्तिवादी स्वार्थपरता अपनाने में ही लाभ है । समूह हित की बात सोचने पर अपने को घाटा पड़ेगा। ऊँचे सिद्धान्त केवल कहने-सुनने भर के लिए हैं उन्हें जीवन क्रम में उतारना न तो व्यावहारिक है और न लाभदायक । व्यक्तिगत लाभ में निरत रहकर अधिक सुखी बना जा सकता है, समूह सुख की दिशा में बढ़ने से तो अपने आनन्द और वैभव में कमी पड़ने लगेगी।" बाहर से कोई कुछ भी कहता हो अन्तरङ्ग में यही आस्थायें जड़ जमाये बैठी रहती हैं । फलतः आदर्शवादी कल्पनायें तो कई व्यक्ति करते रहते हैं, वैसा कुछ कहते-सुनते भी रहते हैं, पर करने का साहस जुटा नहीं पाते । क्योंकि अन्तरंग की आस्थायें इस संदर्भ में अत्यन्त शिथिल होती हैं । स्वार्थ को ही जब आन्तरिक मान्यता मिली हुई है तो परमार्थ के लिए प्रवाह को उलट कर चलने वाला साहस कैसे उत्पन्न हो ? यही है वह कठिनाई जिसे मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक, दार्शनिक अथवा जो भी नाम दिया जाय, प्रगति के पथ की सबसे बड़ी बाधा बनकर बैठी है ।

युग प्रवाह बदलने जैसे परिवर्तनों के लिए ऐसे प्रखर लोक शिक्षण की आवश्यकता पड़ेगी जो आस्थाओं के मर्म स्थल तक पहुँच कर वहाँ अभीष्ट उथल-पुथल उत्पन्न कर सके । घिसी-पिटी सिद्धान्तवादी चर्चा को तोता रटन्त की तरह दुहराते रहना व्यर्थ है । तर्क और तथ्यों को आधार मान कर हमें युग चिन्तन इस स्तर का देना होगा जो आज की विकृत आस्थाओं को उखाड़कर फेंक सके और उसके स्थान पर उत्कृष्टता के लाभों को मान्यता दिला सके । यह कठिन ही नहीं सरल है । क्योंकि वास्तविकता यही है । यदि लोक शिक्षण की ऐसी पैनी व्यवस्था बन सके तो युग परिवर्तन का तीन चौथाई उद्देश्य पूरा हुआ समझा जा सकता है । इस प्रशिक्षण में न केवल बुद्धि को वरन् भाव संवेदनाओं को हिला देने की शक्ति भी होनी चाहिए । आस्थायें, भावनायें एवं आकांक्षायें तीनों सहोदर सहेलियाँ हैं । जो इन तीनों को प्रभावित कर सके-समझना चाहिए उसी प्रशिक्षण से व्यक्ति और समाज का परिवर्तन सम्भव हो सकेगा और उसी के प्रभाव से युग परिवर्तन का आधार खड़ा होगा । युग मनीषियों का कर्तव्य है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कि वे ऐसे लोक शिक्षण की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करें जो समय की विकृतियों से जूझते हुए लोक मानस को उत्कृष्टता की दिशा में घसीट ले चलने में पूरी तरह समर्थ हों ।

इस प्रस्तुतीकरण को, युग सन्देश को, घर-घर में जन-जन तक पहुँचाने की आवश्यकता होगी । विशालकाय प्रचार तन्त्र इसी के लिए खड़ा करना होगा । इस तन्त्र के तीन आधार हो सकते हैं : (१) साहित्य, (२) कला तथा (३) धर्म मंच । इन तीनों की ही अपनी-अपनी शक्ति और मर्यादा है । तीनों के संयुक्त प्रयास से ही युग प्रवाह को उलट सकने वाली युगान्तरीय चेतना का आविर्भाव होगा । तीनों को ही समन्वित रूप से साथ लेकर जन मानस को दिशा देने के लिए अग्रसर होने की आवश्यकता पड़ेगी ।

२. रचनात्मक

दूसरा उपाय है ऐसे रचनात्मक लोक सेवी प्रयासों का प्रचलन जिनमें सर्व साधारण को लगाने के लिए प्रोत्साहित करके सेवा धर्म में निरत होने का अभ्यास कराया जाय । पतनोन्मुख प्रवृत्तियाँ तो अनुरूप विचार देने मात्र से भड़क उठती हैं पर उत्कृष्टता की दिशा में कुसंस्कारी मन को घसीट ले जाना सरल नहीं है । ऐसे प्रसंगों में उसकी टालमटोल, उपेक्षा, बहानेबाजी देखते ही बनती है । पानी नीचे की ओर आसानी से बहने लगता है पर ऊँचे पर चढ़ाने के लिए शक्ति भी लगानी पड़ती है और बुद्धि भी । समर्थ प्रशिक्षण में सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही पक्ष जुड़े रहते हैं। प्रचारात्मक उपायों से जानकारी दी जा सकती है अधिक से अधिक सहमत होने तक की बात बनती है। पर मुख्य प्रश्न तो आदत बदलने का है । आदतें क्रिया से सबन्धित हैं। किसी कार्य को बार-बार करने का अभ्यास ही, उसे आदत रूप में बदलता है । स्वभाव का अंग बन जाने पर ही स्थिरता आती है अन्यथा आज का जमाया गया आदर्शवाद कल ऐसे ही हवा में उड़ सकता है । स्कूली पढ़ाई से लेकर संगीता कला, सेना परेड, जप ध्यान तक में अमुक क्रियाओं को दुहराते रहने, स्वभाव का अंग बनाने की आवश्यकता समझी जाती है । क्रिया, क्रिया से अभ्यास, अभ्यास से स्वभाव संस्कार यही है चेतना को प्रशिक्षित एवं प्रवीण करने की पद्धति । परिष्कृत लोक चेतना का स्वप्न साकार करने के लिए प्रचार तन्त्र तो खड़ा करना ही होगा , उसके बिना तो गाड़ी आगे बढ़ेगी ही नहीं, पर साथ ही इतना और समझ लेना चाहिए कि उसको अभ्यास में उतारने के लिए ऐसे प्रचलनों का-रचनात्मक कार्यों का-ढाँचा खड़ा करना पड़ेगा जिसमें लोगों को जुटाकर स्वभाव संस्कार बनाने का अभ्यास कराया जा सके। प्रवृत्ति को मोड़ने की बात इससे कम में बन नहीं सकेगी ।

युग परिवर्तन का वातावरण बनाने का एवं आधार खड़ा करने लिए अनेकों रचनात्मक कार्य हो सकते हैं और उन सब के अपने-अपने ढंग के सत्परिणाम हो सकते हैं । सीमा-बन्धन करते हुए हम पाँच रचनात्मक कार्यक्रम हाथ में लेकर चलते हैं। इनका व्यक्ति और समाज के नव निर्माण पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ने की बात हर किसी की समझ में आ सकने योग्य है। इनसे प्रगति की सामयिक भौतिक आवश्यकतायें भी पूरी होती हैं और साथ ही उन प्रयासों में प्रवृत्त लोगों के स्वभाव में सुसंस्कारी तत्वों के प्रवेश कराने का उद्देश्य भी सधता है । जो उनमें लगेंगे वे अपना व्यक्तित्व परिष्कृत करने एवं आत्म-सन्तोष पाने का लाभ लेंगे । दूसरे दर्शकों को भी इन हलचलों से अनायास ही दिशा बोध होगा । सोचने का अवसर मिलेगा और वैसा कुछ करने के लिए मन मचलेगा । इस प्रकार इन रचनात्मक प्रवृत्तियों को अपनाकर हम कई प्रकार के अति महत्त्वपूर्ण प्रयोजनों को पूरा कर सकते हैं ।

युग निर्माण योजना द्वारा प्रस्तुत रचनात्मक कार्यों में जिन पाँच को प्रमुखता और प्राथमिकता दी गई है वे हैं—(१) शिक्षा प्रसार, (२) कुटीर उद्योगों का विस्तार, (३) सहकारिता प्रचलन, (४) जीवन साधना तथा (५) हरीतिमा सम्वर्धन । पाँचों की अपनी उपयोगिता है । योग्यता, स्थिति एवं अभिरुचि के अनुरूप प्रायः हर स्तर का व्यक्ति अपने लिए इनमें से कोई न कोई चुन सकता है । इसमें उसे आत्म-परिष्कार और लोक निर्माण के उभयपक्षीय सत्प्रयोजनों को सम्पन्न करने का श्रेय लाभ मिलेगा ।

३. सुधारात्मक

अवांछनीयतायें व्यक्ति के स्वभाव और समाज के व्यवहार में गहराई तक घुसकर बैठ गई हैं । अभ्यास में उतरते-उतरते आदत बन गई है और स्वाभाविक ही नहीं प्रिय भी लगती है । अभ्यस्त होने के कारण एक प्रकार से मस्तिष्क के पक्ष समर्थन तक का उत्साह रहता है । जो प्रिय है उसका पक्षपात करने के लिए असंख्य प्रकार के ऐसे तर्क और कारण गढ़ लिये जाते हैं जिनमें न यथार्थता होती है और न औचित्य ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भ्रान्तियों की दृष्टि से अगणित गूढ़ मान्यताओं, अन्धविश्वासों ने मस्तिष्कों पर बेतरह कब्जा कर लिया है । अवांछनीयताओं में समाज विरोधी उच्छृंखलताओं की भरमार है । अवरोधों की श्रेणी में गिने जाने योग्य कार्य आये दिन होते रहते हैं । अनैतिकताओं में ही दुष्प्रवृत्तियाँ आती हैं जो व्यक्ति के निजी स्तर को अपनी और दूसरों की आंखों में गिराती हैं तथा पिछड़ी परिस्थितियों में खड़े रहने के लिए विवश करती हैं । वैयक्तिक अनैतिकताएँ-सामाजिक अवांछनीयताएं और इस अनगढ़पने की निशानी मूढ़ मान्यताऐं इन दिनों चरम सीमा तक जा पहुँची हैं । इनको उखाड़ना भी एक बहुत बड़ा काम है । कई बार विषैले फोड़े इस बुरी तरह प्रकट होते हैं कि उनकी शल्य क्रिया कराने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं रह जाता । कठिनाई हलकी होती है तो सौम्य उपायों से भी काम चल जाता है । रक्त की कमी उपयुक्त आहार-विहार से पूरी की जा सकती है। सामान्य रक्त विकार दवा-दारू से ठीक हो जाते हैं तो केन्सर-कारबंकल जैसे भयंकर विष-व्रण आपरेशन के बिना और किसी उपाय से काबू में नहीं आते । खोखली दाढ़ जब बेतरह दर्द करती है तो उसे उखाड़ने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं । मोतिया बिंद पकने पर आँखों में जो अंधता छा जाती है उसका निवारण भी डाक्टर के चाकू से ही सम्भव होता है । कुछ ऐसी विवशतायें होती हैं जिनमें कटु उपायों के अतिरिक्त सुधार की और कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती । इस स्थिति में सुधारात्मक संघर्षों की अनिवार्यता को ही शिरोधार्य करना पड़ता है । यों सामान्य स्थिति में हर कोई शान्ति चाहता है और यह स्थिरता एवं प्रगति की दृष्टि से आवश्यक भी है पर जब आक्रमणकारी तत्व जीवित रहना ही असंभव कर दें तो फिर उन्हें पीछे धकेलने के लिए संघर्ष जैसे कटु प्रसंगों को भी मान्यता देनी पड़ती है। भगवान के अवतार समय-समय पर सृष्टि का सन्तुलन बनाने आते रहे हैं । इनमें से प्रत्येक को धर्म की स्थापना का दूसरा पक्ष अधर्म का उन्मूलन भी अपने क्रियाकलाप में सम्मिलित रखना पड़ा है । सच तो यह है कि उनकी गतिविधियों में धर्मस्थापना से भी अधिक भाग अधर्म-उन्मूलन का रहा है । जिन दिनों दुष्टता और भ्रष्टता अपनी चरम सीमा का स्पर्श कर रही हों उन दिनों तो अनीति विरोधी तेजस्विता जगाने और अनीति से लड़ पड़ने के लिए उत्तेजना भी उत्पन्न करनी पड़ती है । आपात धर्म के रूप में वह कड़वी औषधि भी गले उतारनी पड़ती है । उद्दण्डता को धमकाये बिना वह काबू में भी नहीं आती ।

भ्रान्तियों के निराकरण के लिए एवं सदाशयता के अभिवर्धन में लोक शिक्षण के प्रचारात्मक आधार खड़े करने होंगे । सज्जनता की सत्प्रवृत्तियों को स्वभाव अभ्यास में लाने के लिए सामयिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रचनात्मक क्रिया कलापों का प्रचलन करना होगा । इससे पिछड़ेपन की अनैतिकता दूर होगी । अवांछनीयता का उन्मूलन संघर्ष के बिना हो नहीं सकता । दुष्टता तभी अपनी मनमानी से हाथ सकोड़ती है जब उसे खतरे का प्रत्याक्रमण प्रतिशोध का भय सामने खड़ा दिखाई देता है । लोक आक्रोश जब तक दुष्टता के विरुद्ध उभरेगा नहीं तब तक उसकी विनाशलीला रुक नहीं सकती । अस्तु, युग परिवर्तन के लिए हमारी कार्य पद्धति में प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक तीनों ही तत्वों को सम्मिलित करके चलना होगा । देखने भर को ही इन तीनों की प्रकृति भिन्न प्रतीत होती है पर वे तीनों एक दूसरे के पूरक हैं । इनके संयुक्त समन्वय से ही वह प्रखर लोक शक्ति उत्पन्न होती है जिसके सहारे युग परिवर्तन जैसे महान लक्ष्य की उपलब्धि सम्भव हो सके।

समयदान का सुनियोजन—आलोक वितरण के लिए भावभरा जनसम्पर्क

'आलोक वितरण के लिए भावभरा जन सम्पर्क' आज की सर्वोत्तम सेवा साधना है । फिर भी उसे अपनाने में कुछ विचित्र सा भय, असमंजस बना रहता है । उपयोगिता समझते और इच्छा रखते हुए भी जब कदम उठाने का समय आता है तो झिझक-संकोच का कुछ ऐसा भीतरी माहौल बन जाता है कि आगे बढ़ने, पीछे हटने की विचित्र स्थिति में उलझ जाता है। परीक्षा के दिन बच्चों की प्राय: ऐसी ही मन:स्थिति होती है । जिनने पूरी तैयारी कर ली है और अनुत्तीर्ण होने जैसी कोई कठिनाई नहीं है फिर भी परीक्षा भवन में प्रवेश करते और पर्चे पढ़ते समय दिल धड़कने लगता है । कई अच्छे खासे लड़के मात्र इसलिए फेल हो जाते हैं कि वे परीक्षा को किसी विपत्ति का प्रतिनिधि समझ बैठे और घबराहट में सन्तुलन खो बैठे। ऐसी मन:स्थिति में बच्चे याद किया हुआ भूल जाते हैं और कुछ का कुछ लिखते और अकारण ही फेल होने का दुर्भाग्य ओढ़ते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संकोचजन्य हीनता से बाहर निकलें

नयेपन की झिझक, जन सम्पर्क का अभ्यास, दूसरे प्रतिकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करें तो ? सफलता न मिले तो निकटवर्ती लोग विद्रोध उपहास करने लगें तो? ऐसे ही कुछ अनगढ़ प्रश्न आमतौर से लोक मंगल के लिए सदुद्देश्यपूर्ण जन सम्पर्क साधने की बात सोचते समय सामने आ खड़े होते हैं । यदि मन में संकीर्ण स्वार्थपरता घुसी रही तो फिर नई बात और भी इसी श्रृंखला से जुड़ जाती है— ''जिसमें प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिलता ऐसे जंजाल परमार्थ में उलझकर अपना समय श्रम क्यों गँवाया जाय ?'' यह चोर जहाँ होगा वहाँ बुद्धि और कल्पना की सहायता से अचेतन मन ऐसे अनेकानेक बहाने गढ़ लेगा, जो कम से कम अपने आपको वास्तविक ही लगें । जिनकी आड़ में कुछ न कर पा सकने की विवशता व्यक्त की जा सके । ऐसी चिन्ताओं और कठिनाइयों को तिल को ताड़ के बराबर बनाकर खड़ा कर लिया जाता है, जिन्हें विज्ञ व्यक्ति विशुद्ध बहानेबाजी ही कह सक्ते हैं।

संसार में आज तक एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसे चिन्ताओं, कठिनाइयों और समस्याओं से पूर्णतया छुटकारा मिल सका हो । जीवन है तो गुत्थियाँ भी रहेंगी ही जिसके सामने कोई समस्या न हो उसे या तो जड़ मृतक समझा जाएगा या परमहंस । सामान्य जन तो उलझनों को सुलझाते और कर्तव्य पथ पर अनवरत क्रम से चलते रहने की रीति-नीति अपनाते हैं । प्राणवान व्यक्तियों में से प्रत्येक को ऐसी ही परिस्थिति से होकर गुजरना पड़ा है । तथाकथित कठिनाइयों के कारण उन्होंने अपने प्रगति क्रम में कभी अवरोध नहीं पड़ने दिया । जो पूर्ण निश्चिन्तता और शान्ति-सुविधा मिलने पर किसी भौतिक अथवा आत्मिक योजना में तत्पर होने की बात सोचते हैं वे या तो नितान्त भोले भावुक हैं अथवा मूर्खता और धूर्तता के समन्वय के प्रतीक । महत्त्वपूर्ण काम कर पाने वाले व्यक्तियों में से सभी को दो पैरों से चलना पड़ा है और दो हाथों से करना पड़ा है । एक हाथ-कठिनाइयों से जूझना और दूसरा है अपने प्रयास क्रम को जारी रखना । इससे कम में न आगे बढ़ना सम्भव हो सकता है और न कुछ कर गुजरना । ऐसे उदाहरणों से इतिहास का पन्ना-पन्ना भरा पड़ा है कि मनस्वियों ने निर्धारित लक्ष्य की ओर चलते रहने में न कभी आनाकानी की है और न तथाकथित कठिनाइयों के बहाने, खाल बचाने की तरकीब ढूँढ़ी है । श्रद्धा सच्ची और निष्ठा पक्की हो तो फिर अन्य कामों की तरह परमार्थ साधना की-युग-धर्म के निर्वाह की आवश्यकता पूरी करने में न समय की कमी प्रतीत होगी और न समस्याओं एवं बाधाओं की चिन्ता । जिस कार्य को महत्त्वहीन निरर्थक समझा जाता है उसी के लिए फुरसत न मिलने की बात कही जाती है जिस कार्य को उपयोगी समझा जाता है । उसे हर कोई प्रमुखता देता है । यदि हमें समय की माँग की महत्ता गम्भीरतापूर्वक अनुभव होने लगे तो निश्चय ही उसे प्रधानता मिलेगी और अन्य सामान्य कार्यों में कटौती करके सर्वप्रथम उसी को हाथ में लिया जाएगा। अवरोधों की बात सोचने की अपेक्षा युग-शिल्पियों को अपने आन्तरिक असमंजस और भ्रम जंजाल से ही छुटकारा पाना होगा ।

सम्पर्क साधने में झिझक वहाँ पड़नी चाहिए जहाँ कुछ माँगना हो । भय वहाँ रहता है कि बात न मानी गई तो अपने को बुरा लगेगा, साथ ही जिससे माँगा गया है उसके साथ न मिलने पर खिंचाव उत्पन्न होगा। यह बात पैसा माँगने पर ही एक सीमा तक लागू होती है । यों अपना अनुदान आदर्श रखने पर धड़ल्ले से कहा जा सकता है कि कार्य की उपयोगिता देखते हुए हमने इतना किया है । अपना अनुपात अंशदान अग्रणी रखने वाले चन्दा माँगने में भी संकोच नहीं करते । उनका आत्मविश्वास झेंपने की स्थिति नहीं आने देता। झिझकते वे हैं जिनने अपना अंशदान न्यून रखा है वस्तुतः यही दुर्बलता दूसरों से सहयोग माँगते समय आन्तरिक भीरुता के रूप में आड़े आती है और संकोच जैसी लगती है । यह अवरोध न हो तो फिर आर्थिक सहयोग माँगने में भी वह झिझक न लगेगी जिससे कुछ करने का साहस नहीं पड़ता ।

जन सम्पर्क साधने में ऐसी कोई बात नहीं उलटा एहसान करने के लिए जाना है । माँगने वाला झिझक सकता है । देने वाला क्यों झिझके ? सेवा लेने में संकोच लग सकता है । पर देते समय तो स्वभावतः आन्तरिक उल्लास छाया रहता है और बार-बार जाने, मिलने, पूछने करने में आनन्द मिलता है । घर बैठे मुफ्त में नियमित रूप से अत्यन्त उच्चकोटि का आध्यात्मिक आधार पहुँचाने का कृत्य ऐसा है जिसकी तुलना किसी भी भौतिक सेवा सहायता से अधिक मानी जानी चाहिए ।

युग साहित्य जन-जन तक पहुँचे

आज उत्कृष्ट चिन्तन के सत्परिणामों से लोग अपरिचित हैं इसलिए उसके लिए प्रस्तुत किये गये सेवा साधनों की भी उपेक्षा अवज्ञा कर सकते हैं किन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि तथ्यों पर थोड़ी गम्भीरता के साथ विचार किया जा सके तो प्रतीत होगा कि बहुमूल्य भौतिक उपकरण प्रचुर मात्रा में देने से भी अधिक महत्व चिन्तन की दिशा धारा देने का है । कारण कि व्यक्ति की असंख्य समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान उच्चस्तरीय दृष्टिकोण अपनाने से ही होता है, इसी प्रकार प्रगति का वास्तविक आधार एक ही है—अपनी कार्यपद्धति में शालीनता और प्रगतिशीलता का सुनिश्चित समावेश। इसी आधार पर तुच्छता से उबरने और अभ्युदय के उच्चस्तर तक जा पहुँचने का अवसर मिलता है ।

यह सभी तत्व उस साहित्य में विद्यमान हैं जो प्रज्ञापुत्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है । इस पुण्य की गरिमा तत्काल भले ही प्रतीत न हो, भले ही अनखपूर्वक ग्रहण करने वाले उसका महत्त्व न समझें पर इससे क्या ? तथ्य तो अपने स्थान पर यथावत् ही रहेंगे । कुछ दिन के पर्यवेक्षण के उपरान्त यह जाना जा सकेगा कि जिनने नियमित रूप से युग साहित्य पढ़ा है उनके जीवनक्रम में कितना आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है । आदर्शवादी और आशावादी परिवर्तन हुआ है । व्यक्ति ही नहीं, उसके सम्बद्ध परिकर का ही नहीं वरन् प्रकारान्तर से समूचे समाज का हित साधन होता है ।

इस पुण्य को उपार्जित करने वाले को भले ही बाहरी प्रशंसा न मिले पर तथ्यान्वेषी अन्तःकरण तो अपनी पीठ आप ही थपथपाता और प्रसन्नता व्यक्त करता रहेगा । ऐसे ऊँचे उद्देश्य के लिए जन सम्पर्क साधने और अनख उपेक्षा को अभिरुचि में बदलने के लिए किए गये प्रयत्न इस स्तर के होंगे कि उसे अपनाने वालों को किसी प्रकार संकोच नहीं लगना चाहिए । समयदान का इस प्रकार के सम्पर्क साधन में उपयोग करना नित्य एक नई पुस्तक देने और पिछली वापिस लाने का सिलसिला ऐसा है जो आरम्भ में अनभ्यस्त होने के कारण भले ही कुछ चित्रविचित्र जैसा लगे किन्तु कुछ ही दिन में ढर्रा चल पड़ने पर देने वाले को इस प्रयास की सार्थकता विदित होने लगेगी और संकोच के स्थान पर सभी ओर से मित्रता, प्रसन्नता, कृतज्ञता जैसी उपलब्धियाँ उभरती दृष्टिगोचर होंगी।

परिव्रज्या परम्परा की उपेक्षा न की जाय

आस्था संकट के इस संव्याप्त दुर्भिक्ष में घर-घर पहुँचकर भावनात्मक दृष्टि से असमर्थों और दूरदर्शिता की दृष्टि से अपंगों की सहायता करने के लिए विज्ञजनों के लिए प्रत्येक के घर पहुँच कर जन-जन से सम्पर्क साधने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं । हर को हर प्राणी तक दौड़ कर स्वयं पहुँचने की रीति-नीति अपनानी पड़ती है । सूर्य की ऊर्जा भी इसी प्रकार विश्व के कण-कण को प्रभावित करने के लिए परिभ्रमण करती है । बादलों का गति चक्र इसी धुरी पर घूमता है । शरीरगत रक्त सम्पदा को भी ऐसी ही दौड़ धूप करते देखा जा सकता है । भावनाशील परमार्थ परायणों को भी इसके अतिरिक्त और कोई चारा नहीं । परिव्रज्या की सन्त परम्परा की सर्वथा उपेक्षा कर देने पर तो पूजा-पाठ से लेकर दान-पुण्य के बहुचर्चित पुण्य प्रयोजन भी एक प्रकार से निष्प्राण निरर्थक बनकर रह जाते हैं ।

दूसरों का वास्तविक हित साधान उन्हें सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देकर ही किया जा सकता है । दूसरों की सहायता के बलबूते किसी का कितने दिन, कितनी मात्रा में काम चल सकता है ? अपना उत्पादित रक्त ही जीवन धारण कर सकने में समर्थ होता है । बाहरी खून की पिचकारी लगा लेने पर दो-चार दिन का काम चल सकता है । इसके बाद वह स्वतः निरर्थक बन जाता है । इसी प्रकार आर्थिक दान-अनुदान से किसी संकटग्रस्त की इतनी भर सहायता की जा सकती है, जिससे उसका निर्वाह चल सके । चिरस्थाई प्रगति तो मनुष्य अपने बलबूते ही करता है । इसी के लिए पौरुष जगाना, दृष्टिकोण सुधारना, साहस उभारना और प्रयाण पथ पर धकेल देना-यही है उच्चस्तरीय पुण्य परमार्थ-जिसमें कुछ प्रत्यक्ष लेन-देन का घटना-क्रम घटित होता भले ही दृष्टिगोचर न हो, पर प्रतिक्रिया को देखते हुए मुक्त-कण्ठ से उसे सर्वोत्कृष्ट परमार्थ कहा जा सकता है ।

दूसरों के लिए मेंहदी पीसने पर अपने हाथ भी रच जाते हैं । दूसरों के लिए कपड़ों पर इत्र लगाने पर अपने हाथ अनायास ही सुगन्धित हो जाते हैं । परमार्थ परायण व्यक्ति यों प्रत्यक्षतः घाटा उठाते दीखते हैं, पर वास्तविकता इससे ठीक उल्टी है । छात्रों को पढ़ाते-पढ़ाते अध्यापक अपने विषय में निष्णात बनते हैं । अखाड़े में कुश्ती लड़ाते-लड़ाते 'उस्ताद' लोग अपने विषय के प्रवीण-पारङ्गत बनते हैं । सङ्गीत आदि कला-कौशलों को सिखाने वालों के सम्बन्ध में भी यही बात है। कर्ता की प्रवीणता प्राप्त होने की बात सर्वविदित है । दूसरों को सत्प्रयोजन की शिक्षा प्रेरणा देने वालों का श्रम, समय और चिन्तन उसी क्षेत्र की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बात सोचता-विचारता रहता है—फलतः उस रंग में रंगे बिना रह नहीं सकता ।

टिड्डा वर्षा के दिनों में हरे रंग का होता है और गर्मियों में वही पीला पड़ जाता है । इसका कारण यह है कि चारों ओर हरियाली बिखरी देखकर उसका अचेतन उसी में ओत-प्रोत होता और शरीर को हरा बना देता है । इसके विपरीत जब गर्मी के दिनों में घास सूख जाती है और भूरा तल चारों ओर नजर आता है तो स्थिति बदलती है और टिड्डे की काया भी पीली पड़ जाती है । ठीक इसी प्रकार मनुष्य जिस वातावरण में रहता है, जिस प्रकार के वार्तालाप एवं क्रिया कलाप में निरत रहता है—उसी रंग में वह स्वयं भी रँगता चला जाता है । सद्-विचारणा एवं सद्भावना के विस्तार वितरण में जिसे अपना समय, श्रम एवं मनोयोग नियोजित करना पड़ता है, वह स्वयं भी उस मनःस्थिति में डूबा रहने के कारण तदनुरूप परिस्थिति भी ढालता चलता है । इस प्रकार वह जिस स्तर का लाभ दूसरों को देता है उससे कहीं अधिक स्वयमेव उपलब्ध करता चलता है ।

लोक-सम्मान का आधार सेवा-साधना और पुण्य-परमार्थ

सेवा-साधना का पुण्य परलोक में तो मिलता ही होगा, इसी जन्म में उसके चमत्कारी प्रतिफल सामने आते हैं । सेवा-भावी की उदारता न केवल सेवा भाजनों की कृतज्ञता उपलब्ध करती है वरन् जो उस प्रवृत्ति को देखता सुनता है वह भी प्रभावित हुए बिना-प्रशंसक बने बिना नहीं रहता है । इसी को सच्चा सम्मान कहते हैं । यों कई व्यक्ति येन केन प्रकारेण अपना नाम रूप लोगों की दृष्टि में लाने के लिए आतुर रहते हैं और इज्जत पाने, वाहवाही लूटने के भोंड़े तरीके अपनाते रहते हैं । हर किसी का अन्तराल सम्मान पाने का इच्छुक रहता है । यश, ख्याति सभी को प्रिय लगते हैं । इसके लिए जिससे जो बनता है कुछ न कुछ औंधा-सीधा प्रयत्न करता ही रहता है । फैशन, जेवर, शृंगार, सज्जा, ठाट-बाट और अपव्यय भरे सरंजाम इसीलिए जमाये और प्रीतिभोज प्रदर्शन के खर्चीले कष्टसाध्य साधन जुटाये जाते हैं, पर यह बिरले ही समझते हैं कि चिरस्थायी और वास्तविक सम्मान भाव सेवा-साधना से ही उपलब्ध हो सकता है ।

महामानव इसलिए यशस्वी-सम्मानित हुए कि उनने सत्प्रयोजनों के लिए त्याग किये, कष्ट सहे और भावनापूर्वक सेवा-साधना में निरत रहे । सच्चा सम्मान पाने का यही एक तरीका है । स्मरण रखने योग्य तथ्य यह है कि जिसे सच्चा सम्मान मिलेगा उसे जन-सहयोग की भी कमी न रहेगी । जिसे जन सम्मान के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ जनसहयोग मिल सका वह उच्च सम्मान के साथ ही उच्चस्तरीय पद-गौरव का अधिकारी बना है । सभी महामानवों की जीवनगाथा इसी प्रकार की है । वे जीवन काल में भी सघन सम्मान पाने में सफल हुए और अपनी यश गाथा पीछे वालों के लिए उच्चस्तरीय प्रेरणा कर सकने की स्थिति में छोड़ गये ।

आरम्भ में सेवा-साधना कुछ घाटे जैसी बात लगती है, पर बीज जैसे ही अंकुरित होता और बढ़ता-पल्लवित होता है, वैसे-वैसे यह विश्वास बढ़ता जाता है कि जो खोया गया वह हजार गुना होकर मिलने वाला है । मक्का का एक दाना जिस पौधे को उगाता है, उस पर कई-कई भुट्टे लगते हैं और हर भुट्टे में हजारों-हजारों नये दाने जुड़े होते हैं । परमार्थ का बीज वपन ठीक ऐसा ही है । आरम्भ में उठाया गया घाटा कुछ ही समय में श्रेय सम्मान बनता है और जन सहयोग के रूप में फलता-फूलता है । आरम्भिक त्याग और अंतिम परिणति का तारतम्य बिठाया जाता है तो प्रतीत होता है कि सेवाधर्मी जो हानि उठाते हैं, उसकी तुलना में नियति द्वारा हजार गुनी भरपाई कुछ ही समय के उपरान्त कर दी जाती है ।

सेवा के साथ वह आत्म-संतोष जुड़ा हुआ है, जिसे मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि एवं सफलता कह सकते हैं । इसी को प्राप्त करने के लिए लोग वासना, तृष्णा एवं अर्हता की पूर्ति का सरंजाम जुटाते और खर्चीले आडम्बर खड़े करते हैं । इस तथ्य को कोई-कोई ही समझता है कि आत्म-गौरव, आत्म संतोष एवं आत्म-विकास के तीनों ही लाभ परमार्थ परायणता ही उपलब्ध करा सकती है । इसी राजमार्ग पर चलने से आत्म-कल्याण के लक्ष्य तक पहुँच सकना सम्भव होता है ।

इस माध्यम से उपार्जित की गई सुसंस्कारिता, एक संचित सुस्थिर पूँजी की तरह जन्म-जन्मान्तरों तक साथ जाती है । अगले जन्म में भी वह सत्प्रवृत्ति अपने लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त करती और प्रगतिक्रम को अनवरत बनाये रहकर पूर्णता के लक्ष्य तक जा पहुँचती है । वंश-परिवार के लिए इससे बढ़कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विरासत दूसरी नहीं हो सकती कि पीढ़ियाँ अपने पूर्वजों का स्मरण गर्व-गौरव के साथ करायें और एक उच्च परम्परा का उत्तराधिकारी बतायें । हनुमान के वंशज समझे जाने वाले बन्दरों को अभी भी भोग-प्रसाद का लाभ जब-तब मिलता रहता है । ब्राह्मणों का वंश और साधुओं का वेष अभी भी सम्मानित होता है । यों उनकी सेवा-साधना, परमार्थ-परायणता अब तिरोहित जैसी हो गई है, किन्तु उस लुप्तप्राय गरिमा की स्मृति भर से जन सम्मान उन्हें मिलता है । इतना ही नहीं वे इसी आधार पर अपना निर्वाह व्यवसाय भी चलाते रहते हैं । कहना न होगा कि परमार्थ में जहाँ उच्चस्तरीय लाभ है वहाँ उस पुण्य प्रयोजन में संलग्न रहकर उदारमना व्यक्ति भौतिक दृष्टि से भी घाटे में नहीं रहते । महामानवों की उपलब्धियाँ इसकी साक्षी पग-पग पर प्रस्तुत करती हैं ।

इतना तो व्यस्त परिजन भी कर सकते हैं

युग सन्धि का पावन पर्व ऐसा है जिसमें अभाव ग्रस्त और व्यस्त व्यक्ति को भी समस्याओं का समाधान करने की तरह ही प्रस्तुत आपत्ति काल को ध्यान में रखना चाहिए । युग धर्म के निर्वाह को भी उतना ही महत्त्व देना चाहिए जितना कि अपनी निजी कठिनाइयों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति को दिया जाता है ।

कई बार मन:स्थिति की दुर्बलता अथवा परिस्थिति की विषमता के कारण, इच्छा रहते हुए भी अन्य साथियों की तरह सृजन प्रयोजनों के लिए कुछ सक्रिय योगदान करते नहीं बन पड़ता । ऐसे लोगों का अनुपात प्रज्ञा परिवार की विशालता को देखते हुए स्वल्प ही है तो भी गणना की दृष्टि से वे आश्चर्यजनक संख्या में बच जाते हैं । ऐसे लोगों से भी युग देवता ने अपेक्षा की है कि वे मूक दर्शक न रहें, सर्वथा निष्क्रिय न रहें । भले ही न्यूनतम कार्यक्रम अपनायें किन्तु नवसृजन के अभियान में किसी न किसी प्रकार अपने को सम्मिलित अवश्य रखें ।

नव सृजन का प्रमुख कार्यक्रम है—सत्प्रवृत्ति संवर्धन । इस प्रयास को अन्यत्र कर सकना सम्भव न हो तो अपने आपको भी समाज का एक महत्त्वपूर्ण घटक मानते हुए आत्म-परिष्कार एवं आत्म-निर्माण के पुण्य प्रयोजनों को अपने ऊपर प्रयुक्त करना चाहिए। जितने अंश में अपने आपको समुन्नत सुसंस्कृत बनाया जा सके—समझा जाए कि उतने अंश में लोक सेवा बन पड़ी और नव सृजन में योगदान सम्भव हो गया । सेवा का अगला कदम अपना निजी परिवार हो सकता है । उसके सदस्यों को भी एक छोटा किन्तु महत्त्वपूर्ण समुदाय संगठन मानकर उसे हाथ में लिया जाता है । अपना आपा तो सदा साथ रहता है उसे अधिक प्रगतिशील बनाने का अवसर सदा ही हाथ में है । दिनचर्या का निर्वाह करते हुए यह प्रयास भी बिना किसी कठिनाई के साथ-साथ चलता रह सकता है । इसी प्रकार जिस परिवार के साथ प्राय: बारह-चौदह घण्टे बिताने पड़ते हैं उन लोगों के लिए सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर आदर्शवादी अभ्युदय का भी प्रयत्न कुछ जुड़ सकता है । इतना बन पड़ने में न समय सम्बन्धी कठिनाई पड़ेगी और न आर्थिक तंगी, व्यस्तता आदि में किसी प्रकार का व्यवधान पड़ेगा । अन्यमनस्कता छाई हो और उपेक्षा बरतना ही अभीष्ट हो तो बात दूसरी है ।

आत्म-निर्माण के चार चरण हैं—(१) साधना, (२) स्वाध्याय, (३) संयम तथा (४) सेवा । इन चारों के लिए सबकी अपेक्षा कुछ अधिक प्रयत्न करने की बात सोची जाए तो उसके लिए निश्चित रूप से न्यूनाधिक अवसर मिलने लगेगा ।

उपासना को नित्य कर्म का अङ्ग माना जाए । उसे भोजन या शयन के साथ जोड़ा जाए । समय भले ही एक माला गायत्री जप में लगने वाले पाँच मिनट जितना स्वल्प ही क्यों न हो पर नियम यह बनाया जाए कि उसे पूरा किये बिना भोजन न करेंगे अथवा सोयेंगे नहीं । इस निष्ठा का समावेश होने पर थोड़ी उपासना भी व्रतशीलता के आधार पर चमत्कार दिखाने लगती है । निष्ठा ही धनुष की उस प्रत्यंचा के समान है जिसके तनाव से भजन रूपी तीर सनसनाता हुआ लक्ष्यवेध में समर्थ होता है ।

प्रात:काल सोकर जागने और रात्रि को बिस्तर पर लेटने के बाद पाँच मिनट तक महाप्रज्ञा के प्रकाश पुँज का ध्यान किया जाए और मन ही मन गायत्री मन्त्र का जप किया जाए । प्रज्ञा का अधिष्ठाता सविता को माना गया है । सविता अर्थात् उदीयमान सूर्य । सविता की ध्यान धारणा में नमन करते हुए ऐसी भावना की जाए कि जीवन के रूप में प्रभातकालीन अरुणोदय जैसा अनुदान आत्मकल्याण एवं लोकमंगल के दो विशेष प्रयोजनों के लिए मिला है । रात्रि को सोते समय प्रात: काल की तरह ही पाँच मिनट गायत्री मन्त्र का मानसिक जप और अस्त होते हुए सूर्य का ध्यान किया जाए । अस्त अर्थात् मरण । सुरदुर्लभ मनुष्य जीवन थोड़े समय के लिए अमानत के रूप में मिला है । यह परीक्षा काल है । असफल रहने पर यह चिरकाल के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए छिने जायेगा और सफल रहने पर महामानव, ऋषि, अग्रदूत, देवात्मा जैसी पदोन्नति होगी । जीवनरूपी दिनमान का सही उपयोग मरण की रात्रि आने से पहले ही कर लेना बुद्धिमत्ता है ।

जप और ध्यान नियत समय पर, चिन्तन-मनन अवकाश के समय करने का निश्चय किया जाए तो समझना चाहिए कि वह पाँच-पाँच मिनट की तीन बार की गई उपासना त्रिकाल सन्ध्या का संक्षिप्त संस्करण बन गई और उतने भर से साधना का न्यूनतम कार्यक्रम चल पड़ा ।

आत्मिक प्रगति का दूसरा चरण है—स्वाध्याय । इन दिनों सत्संग का व्यावहारिक स्वरूप वही है । कुसंग से मनुष्य गिरता और सत्संग से उठता है । स्वाध्याय से अन्त:करण को प्रशिक्षित एवं परिष्कृत करने का अवसर मिलता है । उसे आत्मा का भोजन माना गया है और कहा गया है कि इसके बिना जीवात्मा दिन-दिन दीन दुर्बल होती चली जाती है । स्वाध्याय को भी उपासना के समतुल्य माना गया है और उसकी उपेक्षा न करने के लिए धर्मानुशासन बनाया गया है ।

प्रज्ञा परिजनों के लिए स्वाध्याय का सर्वोत्तम नवनीत युग साहित्य से मिल जाता है । अखण्ड ज्योति से ज्ञान पक्ष की, दार्शनिक प्रतिपादन की और युग निर्माण, प्रज्ञा अभियान पत्रिका से कर्म पक्ष की व्यावहारिक मार्गदर्शन की आवश्यकता पूरी होती है । दोनों को नियमित रूप से पढ़ने के लिए कभी भी आधा घण्टा समय निकाल लिया जाय तो समझना चाहिए कि स्वाध्याय का धर्म कृत्य चल पड़ा । इस पावन सामग्री को उत्कृष्टता के उद्यान का सर्वश्रेष्ठ मधु पराग माना जा सकता है । यह इतना प्राणवान है कि नियमित रूप से पढ़ने का क्रम बनाने वाला किसी प्राण-पोषण 'टॉनिक' का सेवन जैसा प्रत्यक्ष लाभ उठाता है ।

आत्म-परिष्कार का तीसरा चरण है—संयम । संयम अर्थात् अनुशासन, आत्म नियन्त्रण । इन्द्रिय संयम, समय संयम, विचार संयम और धन संयम के चार क्षेत्रों में होने वाली बर्बादी पर ध्यान दिया जा सके, अपव्यय रोका जा सके और उस बचत को सृजन प्रयोजन में लगाया जा सके तो प्रतीत होगा कि जीवन की बहुमूल्य सम्पदा इन चार छेदों में होकर अस्त-व्यस्त और नष्ट-भ्रष्ट होती चली जा रही थी । जीभ और जननेन्द्रिय का असंयम रुक सके तो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार होगा । दिनचर्या बनाकर समय के एक-एक क्षेत्र का सदुपयोग करने का दैनिक निर्धारण चल पड़े तो समझना चाहिए कि कार्य-शक्ति ठीक दूनी हो गई । विचारों की आवारागर्दी रोकी जा सके और उन्हें वर्तमान को अधिक समुन्नत बनाने में, आज की गुत्थी सुलझाने में, कार्यों को अधिक दिलचस्पी से करने में उपयोगी ज्ञान सम्पदा में लगाया जा सके तो समझना चाहिए । कालिदास की तरह मनीषा का नया वरदान मिलने की सम्भावना बन गई ।

साधना, स्वाध्याय, संयम की त्रिविध साधना से मनुष्य ने तेजस्वी, मनस्वी, ओजस्वी बनता है । प्रतिभा निखरती है और व्यक्तित्व उभरता है । यह नकद धर्म है। व्यस्त एवं व्यग्र भी अपने सामान्य क्रिया कलाप के बीच इनका बिना किसी कठिनाई के निर्वाह करते रह सकते हैं और युग धर्म के परिपालन का-नव सृजन अभियान का एक अंश पूरा करते रह सकते हैं । आत्म-निर्माण भी विश्व निर्माण का, युग निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है ।

चौथा चरण 'सेवा' का है । सेवा का तात्पर्य है—पिछड़ेपन की कष्टकारक स्थिति को दूर करने के लिए अपना अंशदान प्रस्तुत करना । सृजन शिल्पी इस प्रयोजन के लिए बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रान्ति के लिए बहुमुखी कार्यक्रम अपनाते और व्यापक क्षेत्र में जन सम्पर्क साधते हैं। न्यूनतम कार्यक्रम अपनाने वाले इसे अपने निजी परिवार को भी एक छोटा समाज मानकर उस क्षेत्र में भी सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए प्रयत्नरत रह सकते हैं । इसके लिए कोई अतिरिक्त समय नहीं निकालना पड़ेगा । अन्य कामकाज एवं आदान-प्रदान के साथ-साथ ही यह उपक्रम भी चलते रह सकते हैं। एक घण्टा अतिरिक्त समय विशेष रूप से इस प्रयोजन के लिए लग सके तो समझना चाहिए, उतने भर से उस क्षेत्र समुदाय में सुखद सम्भावनाओं के बीजारोपण का सिलसिला चल पड़ा ।

सेवा में अंशदान आवश्यक है । प्रज्ञा परिजनों का आवश्यक धर्म कर्त्तव्य यह ठहराया गया है कि वे एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य ज्ञानदान के लिए निकालें । यह क्रम अभी तक न चला हो तो तत्काल आरम्भ किया जाय और इस राशि से परिवार को स्वाध्याय का लाभ देने की नियमित सुव्यवस्था बनाई जाए । दस पैसे नित्य से तीन रुपये मासिक बनते हैं । इसका युग साहित्य खरीदा जाए । उससे घरेलू ज्ञान मन्दिर चलाया जाए । युग निर्माण मिशन द्वारा इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोजन के लिए अत्यन्त सस्ती और उच्चस्तरीय पुस्तकें छपती हैं । इन्हें घर का हर शिक्षित व्यक्ति पढ़े और अशिक्षित सुनें । तीनों पत्रिकाएँ इस राशि से अतिरिक्त मानी जायें । यह साहित्य जिस घर में नियमित रूप से पढ़ा या सुना जाता रहेगा, उसमें एक प्राणवान पुरोहित का धर्मोपदेश नित्य सुनने और उस प्रभाव से प्रभावित होने का अवसर मिलता रहेगा ।

परिवार निर्माण की सरल किन्तु अति प्रभावी योजना प्रज्ञा परिजनों को पहले से विदित है उसे फिर से पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में पढ़ा जा सकता है उसके दो अंग हैं । एक, घर में धार्मिक वातावरण बनाना दूसरा, पंचशीलों को परिजनों के स्वभाव में उतारना । धार्मिक वातावरण के अन्तर्गत सामूहिक आरती प्रार्थना, गायत्री माता के चित्र का नमन-वन्दन, चौके में भोजन की पाँच आहुतियों का बलि वैश्व, रात्रि को कथा, नियमित स्वाध्याय एवं बड़ों के चरण स्पर्श की परम्परा बनाई जाती है । पारिवारिक पंचशीलों के अन्तर्गत घर के हर सदस्य को श्रमशीलता, स्वच्छता, सुव्यवस्था, सहकारिता, सज्जनता जैसे सद्गुणों का अभ्यास कराया जाता है । यह कार्य मात्र उपदेश से पूरा नहीं होता । वरन् बड़ों को अपने साथ छोटों को लेकर समय-समय पर अथवा सप्ताह में एक बार व्यवस्था बनाने में संलग्न होना पड़ता है । घर में जो दुष्प्रवृत्तियाँ पनप रही हों उन्हें उगते ही उखाड़ना सरल पड़ता है । इसी प्रकार जिन सत्प्रवृत्तियों का प्रवेश अभी नहीं हुआ है उनके बीजारोपण का सिलसिला भी चल सकता है ।

हर व्यक्ति का समाज के अनेक लोगों से किसी न किसी कारणवश वास्ता पड़ता रहता है । दुकान पर ग्राहक आते हैं, कारखाने में दफ्तर के साथी रहते हैं, रेल तथा मोटर में यात्री मिलते हैं, बैंक तथा कारखाने आते जाते कइयों से बातचीत करनी पड़ती है । इसी स्वल्प सम्पर्क से युग निर्माण मिशन की संक्षिप्त चर्चा की जा सकती है और उनकी रुचि मोड़ी जा सकती है। स्वयं कुछ करते न बन पड़े तो जो करने योग्य हैं उन्हें उभारा जा सकता है, साहित्य को पढ़ाने या बेचने की बात भी निरर्थक का संकोच छोड़ देने पर सहज ही बनती रह सकती है । शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार पहुँचने और सत्रों से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए भी पड़ौसी परिचितों और सम्पर्क में आने वाले अपरिचितों को भी कहा जा सकता है । न्यूनतम कार्यक्रम अपनाने वाले प्रज्ञापरिजन यदि युग धर्म के अनुरूप कुछ करने की बात सोचें तो उन्हें उपर्युक्त गतिविधियाँ अपनाने तथा अधिक साहस जुटाकर अधिक काम करने का अवसर मिलेगा, ऐसा अवसर जिन्हें भी मिले वे अपने को उतने ही अंश में सौभाग्यशाली अनुभव करेंगे ।

सृजन शिल्पियों की नव-निर्माण में भाव भरी भूमिका

प्रज्ञा परिवार उत्कृष्टता में रुचि लेने वाले, विवेकवान, दूरदर्शिता को प्रश्रय देने वाले और आदर्शों के लिए सक्रियता अपनाने वाले ऐसे सृजनशिल्पियों का समुदाय है जिनकी प्रकृति को दैवी सम्पदा का पक्षधर कहा जा सकता है । महत्त्वपूर्ण समयों पर ऐसे ही परिकरों की खोजबीन की जाती है और उसमें से उपयोगी तत्व ढूँढ़ निकाले जाते हैं । धातुओं की खदानें, तेल के कुएँ कहीं-कहीं ही मिलते हैं, मोती समुद्र में सब जगह नहीं मिलते । उनके कुछ विशेष क्षेत्र होते हैं । जहाँ संभावना दीखती है, वहीं कुरेदबीन का क्रम अपनाया जाता है । सन्त अलख जगाने तो सर्वत्र जाते हैं, लेकिन द्वार उन्हीं का खटखटाते हैं, जहाँ से कुछ सहानुभूति-पूर्ण उत्तर की अपेक्षा हो ।

प्रज्ञायुग का अवतरण सन्निकट है । इस सन्धिकाल में भागीरथी पुरुषार्थ को अग्रगामी होने की आवश्यकता आ पड़ी है । प्रज्ञा परिवार की जाग्रत आत्माएँ अगले दिनों जो हल्की-भारी भूमिका निभाने जा रही हैं, उनका नव सृजन में जो प्रत्यक्ष-परोक्ष योगदान मिलने जा रहा है, उसकी गरिमा युग युगान्तरों तक भुलाई न जा सकेगी ।

सृजन शिल्पी के अनिवार्य कर्त्तव्य

युग निर्माण-प्रज्ञा अभियान मिशन को अगले दिनों विश्व की महती समस्याओं को सुलझाने के लिए व्यापक वातावरण बनाने-नव सृजन की प्रचण्ड चेतना उत्पन्न करने, रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रमों को जीवन्त आन्दोलनों का रूप देने, उसके लिए उपयुक्त जन सहयोग समेटने तथा आवश्यक साधन जुटाने के लिए अनेक क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम हाथ में लेने और आगे बढ़ाने पड़ेंगे । इन दिनों धर्म क्षेत्र की सृजनात्मक क्षमता को आरम्भिक सामर्थ्य के रूप में उभारा और समेटा जा रहा है । प्रज्ञा संस्थानों के माध्यम से वर्तमान में प्रखरता प्राप्त परिजनों का ध्यान सर्वप्रथम पंचसूत्री योजना पर केन्द्रित किया गया है । इसे पूरा करने के लिए सभी प्रज्ञा संस्थानों एवं प्रज्ञा पुत्रों को प्राण-पण से संलग्न होने के लिए अनुशासन पालन हेतु निर्देश दिये गये हैं । यह प्रथम चरण है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसे शक्ति संचय की प्रारम्भिक प्रक्रिया कहा जा सकता है। इसे कलम पकड़ने, वर्णमाला, गिनती सीखने जैसी प्राथमिक आवश्यकता घोषित किया गया है । जो इतने सरल प्रयोजनों को भी हाथ में न ले सकेंगे उनके कन्धों पर बड़े उत्तरदायित्त्व सौंपे जाने की व्यवस्था कैसे बनेगी ? ज्ञातव्य है कि पंचसूत्री योजना आलोक वितरण-जन सम्पर्क का प्रारम्भिक स्वरूप है जो हर सृजन शिल्पी के लिए अनिवार्य है । यह सभी को स्मरण भी है ।

(१) हर दिन घर-घर जाकर नित्य नियमित रूप से प्रज्ञा-साहित्य पढ़ाने तथा वापस लाने के लिए ज्ञान रथ की व्यवस्था, (२) स्लाइड प्रोजेक्टर्स के माध्यम से गली-मुहल्ले लोकरंजन मिला लोक शिक्षण, (३) आदर्श वाक्य लेखन, स्टीकर्स-पोस्टर आन्दोलन, (४) जन्म दिन मनाना तथा (५) प्रज्ञासंस्थान स्थापना के लिए तनिक से स्थान की व्यवस्था और नियुक्त कार्यकर्त्ताओं के निर्वाह का मुट्ठी फण्ड । कोई भी व्यक्ति अपनी लगन द्वारा इन्हें सरलता से भली प्रकार चलाकर नव सृजन में अपनी भूमिका निभा सकता है।

प्रज्ञा परिवार की तीन श्रेणियाँ

अगले दिनों मिशन को और भी महत्त्वपूर्ण कार्य करने हैं। अकेले, संगठनों के माध्यम से अथवा प्रज्ञा संस्थान रूपी जन जागृति केन्द्रों द्वारा साक्षरता संवर्धन, वृक्षरोपण, सृजन प्रयोजनों के लिए अंशदान, विवाहोन्माद जैसी कुरीतियों का उन्मूलन, भिक्षा-व्यवसाय का उच्छेदन, नशेबाजी पर कुठाराघात, पर्दाप्रथा और जाति-गत ऊँच-नीच की मान्यता की अन्त्येष्टि, आलस्य-प्रमाद को अपराधों के हेय वर्ग में सम्मिलित कराना, मुफ्तखोरी और हरामखोरी को चोरी-डकैती स्तर की भर्त्सना से लाद देना, प्रजनन के सीमाबन्धन कड़े करना जैसे अनेक कार्यों को जनसहयोग एवं शासन व्यवस्था के माध्यम से सम्पन्न कराने के लिए विशालकाय काम हाथ में लिये जाने और उन्हें पूरा कर दिखाने के लिए हर स्तर के साधन जुटाने हैं। संगीत साहित्य कला के तीनों क्षेत्र तत्परता के साथ नियोजित होने हैं ताकि लोक मानस को उलट देने जैसा कठिन कार्य सरल सम्भव हो सके। 'प्रज्ञा अभियान में इनकी चर्चा समय-समय पर की जाती रही है परन्तु समग्र रूप में मिशन के वर्त्तमान व भावी स्वरूप, विभिन्न स्तर के लोक सेवियों-परिजनों द्वारा विभिन्न प्रकार के उत्तरदायित्वों के निर्वाह पर विस्तृत विवेचन अभी तक प्रस्तुत पुस्तक में प्रज्ञा परिजन, प्रज्ञा पुत्र, प्रज्ञा पुंज रूपी तीन श्रेणियों में विभक्त प्रज्ञा परिवार के मात्र एक ही वर्ग प्रज्ञापुत्रों के लिए योजनाबद्ध कार्य पद्धति प्रस्तुत की जा रही है।

प्रज्ञा अभियान द्वारा जिस नवसृजन की योजना बनाई, चेतना जगाई, लाल मशाल उठाई और शपथ खाई गई है, उसका समूचा आधार इसी वर्ग पर निर्भर है। सृजन शिल्पियों की बिरादरी में इन्हें वरिष्ठ प्रज्ञा पुत्र नाम से जाना पहचाना जाता है। प्रज्ञा पुत्र जो युगधर्म को पहचानते, अग्रगामी की पंक्ति में खड़े होते और भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं की बेतरह कटौती करते हुए समय की पुकार पूरी करने के लिए बढ़े-चढ़े अनुदान प्रस्तुत करते हैं। इनका समयदान और अंशदान ही वह सम्पदा है, जिसे हुण्डी की तरह भुनाया और सतयुग खरीदा जाना है। इन दिनों इनकी एक ही महत्त्वाकांक्षा है—अंकिचन असहाय वानर होते हुए भी नल-नील जैसी संस्कृति की सीता को वापस लाने वाले सेतुबन्ध बनाने के लिए मूक साधकों की तरह अपने आपको खपा देना। इन्हें इन दिनों रात में सपने भी बढ़-चढ़ कर अंशदान प्रस्तुत करने के ही आते हैं। इनकी भुजाएँ फड़कती रहती हैं और जटायु-जामवन्त का-सा पौरुष परिस्थितियों के घिरे रहने पर भी महान परम्परा छोड़ जाने की ललक उफनती रहती है। संक्षेप में यही है प्रज्ञा पुत्र शब्द का अर्थ। उस वर्ग के लोगों की मनःस्थिति एवं कार्यपद्धति का चित्रण।

एक और वर्ग है प्रज्ञा परिजन। वे परिस्थितियों की विषमता और चिन्तन की उलझनों में उलझे हुए सोचते-चाहते तो बहुत हैं पर वैसा कुछ कर नहीं पाते जैसा कि साहस उभरने पर सहज ही इतना कर सकते थे जिसे देख सुनकर समर्थ और सम्पन्नों पर घड़ों पानी पड़ता और चुल्लू भर में डूब मरने को मन करता इतने पर भी इनकी भावनाएँ, मान्यताएँ आकांक्षाएं सामान्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक ऊँची उत्कृष्टता अपना चुकी हैं। वे कर्मरत, उदारमना सहयोगियों की गणना में तो नहीं आते पर उनकी भावनाओं को देखते हुए यह अपेक्षा अवश्य की जाती है कि आज न सही, कल, परसों वे महाकाल के चरणों पर समर्थन की सहानुभूति से आगे बढ़कर सहकार भरे अनुदानों की श्रद्धांजलि भी अवश्य प्रस्तुत करेंगे । इनका प्रत्यक्ष योगदान मिशन को अभी कम मिला है पर भविष्य के लिए उनसे भी युग देवता ने सुनहरे सपनों से सजी आशा संजोई है। प्रज्ञापुत्र और प्रज्ञा परिजन दोनों के मिलने से ही गंगा-यमुना का संगम बनता है और प्रज्ञा परिवार का नाम चलता है। आँधी आती है तो पत्ते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तिनके भी आकाश तक चढ़ दौड़ते हैं पर गरिमा तो चक्रवात की है। प्रज्ञा अभियान की प्रखरता प्रचंड होगी तो अग्रदूतों के दायें-बायें या पीछे चलने, रेंगने, दौड़ने वालों की भी कमी नहीं रहेगी।

अगले दिनों हर एक प्रज्ञा अभियान का भागीदार बनेगा

युग सृजन के लिए जाग्रत आत्माओं की भूमिका क्रमशः किस प्रकार बीज, अंकुर, पौध, फसल और अन्ततः धन-धान्य की सम्पदा बनेगी इसका विवरण अगले ही दिनों इतिहास के पृष्ठों पर हर किसी को पढ़ने के लिए चारणों द्वारा गाई गई विरुदावलियों के रूप में सुनने के लिए मिलने लगेगा। नवसृजन की योजना का आरम्भिक परिचय छोटे-बड़े प्रज्ञा संस्थानों के निर्माण से आरम्भ हुआ और पंचसूत्री को पूर्ण करने की सीमा तक आ पहुँची है। सन् १९८१ से २००० तक के बीस वर्षों वाली युग-सन्धि के प्रथम वर्ष में २४०० शक्तिपीठ बनकर खड़ी हो गई और पंचसूत्री योजना चल पड़ी। द्वितीय वर्ष में प्रज्ञा पुराण, सत्र संगमसत्र, जीवनदान, एकाकी प्रयास जैसे और पाँच प्रयास चल पड़े हैं। हर वर्ष पाँच कार्यक्रम जुड़ते जाने से २० वर्षों की सन्धि बेला में शतसूत्री योजना का पूर्व घोषित संकल्प पूरा हो जाएगा। प्रज्ञा अभियान का कार्यक्षेत्र बढ़ेगा और जिस प्रकार उदीयमान सूर्य के आलोक और धावमान पवन की हलचल से कोई भी सृष्टि घटक वंचित नहीं रहता उसी प्रकार मानवी या प्रजाति का कोई सदस्य प्रज्ञा-अभियान का छोटा-बड़ा भागीदार बने बिना न रहेगा

कठिनाई आरम्भिक दिनों की है उषाकाल पूर्व में ही दिखे, प्रभात किरणों का प्रथम दर्शन पर्वत शिखर पर ही उतरे, प्रभात का उद्घोष करने का श्रेय कुक्कुट को ही मिले यह संयोग की बात है। श्रेय सौभाग्य अग्रगामियों को मिले तो भी यह नहीं समझना चाहिए कि प्रथम पंक्ति में चलने वाले सैनिक ही मोर्चे पर लड़ेंगे और विजय वरण करेंगे । तथ्यतः सभी सैनिकों को समान रूप से जूझना पड़ता है। भले ही वे चौथी, छठी, दसवीं पंक्ति में होने के कारण कैमरे की पकड़ में न आते हों।

यहाँ इस सैनिक वर्ग के लिए ही एक योजनाबद्ध कार्यपद्धति का विवेचन किया गया है । दैनन्दिन, उपासना, नैष्ठिक साधना के माध्यम से महाकाल के प्रवाह से जुड़ने-युग धर्म निर्वाह हेतु समय निकालने आदर्श लोकसेवी जैसी चिन्तन व चरित्र विकसित करने तथा सूत्र संचालन के द्वारा दिये गये कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने हेतु यहाँ प्रत्यक्ष मार्गदर्शन है।

धर्मतन्त्र की गरिमा समझें और उसे परिष्कृत करें

कितने ही भावनाशील अपने देश, धर्म, समाज, संस्कृति की सेवा सच्चे मन से करना चाहते हैं। जिन्हें मनुष्य जीवन की गरिमा, स्वरूप, लक्ष्य और जिम्मेदारी का ज्ञान है वे सोचते हैं कि पेट और प्रजनन के उपरांत बची हुई क्षमता का उपयोग, उच्चस्तरीय उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए। पिछड़ों और पीड़ितों की सहायता करना मानवीय अन्तराल में जीवन करुणा का तकाजा है। इसी प्रकार दुष्प्रवृत्तियों के आतंक से उत्पन्न होने वाले दुष्परिणामों से जो परिचित हैं उनमें इन्हें निरस्त करने के लिए आक्रोश भी उत्पन्न होता है। यह आवश्यक भी है। परन्तु उतना ही आवश्यक है सर्वतोन्मुखी प्रगति का पथ प्रशस्त करने वाली सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण, परिपोषण, उन्हें सींचे-संजोये बिना सुख-शांति की स्थिरता एवं अभिवृद्धि का और कोई रास्ता नहीं। सेवा मानवीय अन्तरात्मा का धर्म है। उसे अपनाये बिना व्यक्तित्व की गरिमा जागती ही नहीं, सुसंस्कारिता उगती ही नहीं। गुण कर्म स्वभाव की उत्कृष्टता ही दैवी सम्पदा है। उससे सुसज्जित व्यक्ति ही महामानवों की पंक्ति में खड़े होते हैं। आत्म सन्तोष, लोक सम्मान और दैवी अनुगृह का त्रिविध वरदान बटोरते और जीवन की सार्थकता, सफलता का आनन्द लाभ करते हैं। यह समस्त उपलब्धियाँ उन्हीं के लिए सम्भव हैं जिन्होंने सेवा धर्म अपनाया। धर्म और अध्यात्म अपनाने का प्रतिफल एक ही है कि संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँचे उठकर पुण्य परमार्थ में निरत रहने का अधिकाधिक अवसर प्राप्त किया जाय।

सेवाभावी चयन के चौराहे पर दिग्भ्रान्त न बने रहें

जो उपर्युक्त निर्णय पर पहुँचते हैं उनके सामने प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि सेवा के अनेकानेक क्षेत्रों में किसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाय ? किसे प्राथमिकता दी जाय ? कौन-सा मार्ग अपनाया जाय? किस दिशा में पदार्पण किया जाय ? इस चिन्तन में कई क्षेत्र उभरकर सामने आते हैं। सोचा जाता है कि पैसे का महत्त्व सर्वोपरि है। गरीबी के कारण लोग बहुत दुःख पाते हैं। इसलिए ऐसे प्रत्यन किए जायें जिनसे सम्पदा बढ़े और सुविधाओं का लाभ मिले।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दूसरा उपाय यह सूझता है कि शिक्षा बढ़ाई जाय। लोग पढ़े लिखे होंगे तो सही सोचना भी सीखेंगे, सभ्य बनेंगे और उपार्जन भी अधिक करेंगे। तीसरा मार्ग चिकित्सा का सूझता है। बीमारों के कष्ट निवारण में पुण्य है। कराहतों की, रुग्ण, असमर्थों की व्यथा हर ली जाय तो इससे कितनों की ही दुआयें मिलेंगी। ऐसे-ऐसे और भी कई रास्ते हैं जिनमें सबसे उत्तेजक आकर्षक है राजनीति में प्रवेश। अब सारी विशेषतायें, सम्पदायें, सम्भावनायें, सत्ता में केन्द्रित होती जाती हैं। इसलिए क्यों न शासन सत्ता को हस्तगत किया जाय और उसके द्वारा देश का हित साधन किया जाय? इस प्रवेश में एक बड़ा लाभ यह है कि आदमी चमकता है। कोई डरता है, कोई ललचाता है, कई लोग कई प्रकार की आशा लगाते और प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग देने लगते हैं। सत्ता के पक्ष वाली राजनीति में अधिक लाभ है, विरोध में कम, तो भी दोनों क्षेत्रों में चमकने की गुंजाइश है। इसलिए स्वार्थ और परमार्थ का जैसा समन्वय राजनीति में दीखता है उतना और किसी में नहीं। वह अपेक्षाकृत सरल भी है। भाषण की कला आती हो और फुरसत रहती हो तो कोई भी नेतागीरी का धंधा आसानी से अपना सकता है।

चयन के इस चौराहे पर खड़े हुए सेवाभावी को थोड़ा अधिक गंभीरता अपनाने और समस्या की जड़ तक जाने की जरूरत है। सोचा यह जाना चाहिए कि आखिर इतनी प्रकार की समस्यायें, कठिनाइयाँ, विपत्तियाँ, विभीषिकायें मनुष्य के सामने ही क्यों आती हैं, जिनके लिए उसे दूसरों की सेवा, सहायता प्राप्त करनी पड़े। बुद्धिहीन और साधनहीन समझे जाने वाले सृष्टि के अन्य सभी प्राणी चैन की जिन्दगी जीते हैं, फिर मनुष्य पर ही ऐसा दुर्भाग्य क्यों टूटता है, जो अगणित साधन-सुविधा रहते हुए भी उसे रोग, शोक, संकट, विग्रह, दरिद्रता, आक्रमण, अनाचार का शिकार बनना पड़ता है। खोजने पर एक ही कारण हाथ लगता है कि चिन्तन क्षेत्र में निकृष्टता घुस पड़ना, दृष्टिकोण में विकृतियाँ, स्वभाव एवं चरित्र में दुष्प्रवृत्तियाँ भर जाना ही वह आधारभूत कारण है, जिसके कारण उपलब्ध साधनों का दुरुपयोग बन पड़ता है और स्वनिर्मित विफलताओं का घटाटोप बरसने लगता है। मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जननी है। 'मनुष्य अपने भाग्य का विधाता आप है' इस शाश्वत सत्य पर जितनी बार विचार किया जाय, उतनी ही अधिक उनकी यथार्थता प्रकट होती है। सभी मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त अनुदान प्राय: समान स्तर के मिले हैं। जो उनका सदुपयोग कर पाते हैं, वे प्रगति के उच्च शिखर पर जा पहुँचते हैं। जो उनका दुरुपयोग करते हैं वे अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारते और कुचक्र में फंसकर दुर्गति के गर्त में गिरते हैं।

तथ्य को समझा जा सके तो सेवा साधना का सर्वोपरि, सर्वाधिक महत्त्व का एक ही कारण और उपाय सामने आ खड़ा होगा कि मनुष्य के चिन्तन को सुधारा जाय, दृष्टिकोण को परिष्कृत किया जाय। इतना बन पड़े तो ही चरित्र निखरेगा और व्यक्तित्व उभरेगा। यह दिशाधारा मिल सके तो हर मनुष्य इस स्थिति में पहुँच सकता है कि असंख्यों को अपनी नाव में बिठाकर पार करे। किसी दूसरे की सहायता के लिए ताकने की तनिक भी आवश्यकता न पड़े। सफल महामानवों के इतिहास साक्षी हैं कि उनने अपने चिन्तन और चरित्र में उत्कृष्टता का समावेश करके, अपने हाथों अपना भाग्य बनाया।

तथ्य बोलते हैं कि मक्खी, मच्छर मारते रहने की अपेक्षा उनके उद्गम केन्द्र कीचड़ साफ करना अधिक दूरदर्शितापूर्ण है। फुंन्सियों पर मरहम लगाना भी ठीक है, पर उस व्यथा से छुटकारा पाने के लिए रक्त शोधक उपचार करने चाहिए। दृष्टिकोण में संयम, सहकार, स्नेह, सद्भाव, श्रम, साहस, जैसे सद्गुणों का महत्त्व समझने और अपने स्वभाव व्यवहार को सज्जनोचित बनाने की उपयोगिता समाविष्ट हो सके, तो समझना चाहिए कि आज गई गुजरी स्थिति होने पर भी, कल इन्हीं विशेषताओं के कारण उज्ज्वल भविष्य का सरंजाम जुटाना सुनिश्चित है। लानत तो दुर्गुणी पर ही बरसती है। कुसंस्कारी ही पग-पग पर ठोकरें खाते हैं। अप्रामाणिक लोग ही तिरस्कार के पात्र बनते और विरोध असहयोग का त्रास सहते हैं। मन समझाने के लिए तो इस दुर्गति का दोष भाग्य विधान, ग्रह दशा से लेकर किसी भी समीपवर्ती, दूरवर्ती पर मढ़ा और आत्म प्रवंचना से मन हल्का किया जा सकता है। पर तथ्य तो यथ्य ही रहेंगे। दुर्गति का प्रधान कारण दुर्गति ही है। संयोग, अपवाद तो कभी-कभी ही देखने को मिलते हैं।

सर्वोपरि सेवा-लोकमानस का परिष्कार

सेवा का केन्द्र क्या हो ? इसका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय, तो लोक मानस का परिष्कार ही एकमात्र वह उपाय सूझेगा, जिसमें एक ही उपचार से समस्त समस्याओं का हल हो सकता है। चिन्तन को सुधारने की प्रक्रिया अध्यात्म तत्व ज्ञान के नाम से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानी जाती है और आचरण में अनुशासन स्थापित करने वाली विधा धर्म कहलाती है। इस प्रयोजन को हाथ में लेने वाले कितने महान होते हैं कितना महत्त्वपूर्ण आधार खड़ा करते हैं इससे मनुष्य जाति अपरिचित नहीं है। ऋषि मनीषियों के, साधु ब्राह्मणों के चरणों पर भाव भरी श्रद्धांजलियाँ कृत्तज्ञतापूर्वक अर्पित होती रही हैं। आज उन महामानवों का समुदाय लुप्त हो चला है, तो भी उनके वंश और वेष का लवादा ओढ़कर लाखों व्यक्ति दक्षिणा बटोरते और श्रद्धा सम्मान से लाभान्वित होते देखे जा सकते हैं। यदि कोई सच्चे अर्थों में धर्मसेवी बन सके तो लोक कल्याण के साथ-साथ आत्म-कल्याण भी प्रचुर परिमाण में अर्जित करके रहेगा।

धर्म-धारणा का वास्तविक स्वरूप

शासन तन्त्र और धर्म तन्त्र की तुलना करने से प्रतीत होता है कि शासन का प्रभाव मात्र भौतिक क्षेत्र पर है, जबकि धर्म व्यक्तित्व के गहन क्षेत्र में प्रवेश करके, भाव श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा और आदर्श कर्मनिष्ठा को उभारकर मनुष्य में देवत्व का उदय करता है। भ्रष्टता तथा दुष्टता पर शासकीय नियंत्रण नगण्य जितना ही हो पाता है। राजनीति में श्रद्धा जगाने और संयमी उदार जीवन जीने की प्रेरणा देने वाला कोई नहीं है, जबकि धर्म इन्हीं दैवी सम्पदाओं से लबालब भरा है। आज धर्म के नाम पर जो चल रहा है उसकी भरपूर भर्त्सना करते हुए यह भी सोचना चाहिए कि धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है ? वस्तुतः वह चरित्र एवं चिन्तन में उत्कृष्टता भर देने और समाज को सत्परम्परा अपनाने के लिए बाध्य करने वाला एक प्रचण्ड अनुशासन है। ऐसा अनुशासन, जिसके सामने न अनीति ठहरती है, न उद्दण्ड आततायी उच्छृंखलता। शासन के बिना भी धर्म निभ सकता है, किन्तु धर्म कर्त्तव्य को छोड़ बैठने वाले जन समुदाय द्वारा अपनाई गई नैतिक अराजकता को काबू में रख सकना, कठोर से कठोर शासन तन्त्र के लिए भी संभव नहीं है। यह तुलना इसलिए की जा रही है कि राजनीति को धकापेल में घुसपैठ करने और पिछड़ने पर सदा उद्विग्न दिखने वाले, यदि सेवा धर्म के प्रति सच्चे हों और आत्म-श्लाघा के बिना काम चला सकते हों, तो उन्हें धर्म तन्त्र को प्रखर परिष्कृत करने के लिए अपनी सुरुचि मोड़नी चाहिए। यह क्षेत्र विश्व समस्याओं के समाधान में पूर्णतया समर्थ होते हुए भी, प्रतिभावानों से सर्वथा शून्य है। सर्वविदित है कि सुनसान पड़े खण्डहरों में चमगादड़ों और अवाबीलों के ही घोंसले बनते हैं, भले ही वे कभी राजदरबार वाले भव्य भवन ही क्यों न रहे हों। धर्म की वर्तमान दुर्दशा के प्रति आक्रोश व्यक्त करने के साथ-साथ सोचना यह भी होगा कि जब विचारशील प्रतिभाएँ इस उत्तरदायित्व से विमुख होती चली जायेंगी, तो फिर उस उपेक्षित क्षेत्र में किसी सत्प्रवृत्तियों के पलने की आशा भी कैसे की जाय ?

इस दुर्गतिग्रस्त समय में भी धर्म तन्त्र का कलेवर इतना भारी भरकम है, कि उसे सुधारने और प्रगति प्रयोजनों में लगाने का साहस कर सकें, तो प्रस्तुत सामर्थ्य के बलबूते भी, अनुपयुक्त को हटाने और उपयुक्त को गतिशील बनाने में जादुई छड़ी घुमाने की तरह चमत्कारी सफलता मिल सकती है।

इन दिनों जनगणना के आधार पर साठ लाख धर्म व्यवसायी हैं। मन्दिरों-मठों की सम्पदा अरबों-खरबों की है। इतनी जनशक्ति और धनशक्ति को निहित स्वार्थों के पेट में चले जाने से, ढकोसलों-आडम्बरों में खर्च होने से बचाया और सृजनात्मक प्रयोजनों में लगाया जा सके, तो इसका परिणाम उससे भी अनेक गुना अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकता है, जैसा कि सरकारी पंचवर्षीय योजनायें बनाने वाले आशा करते और अनुमान लगाते रहते हैं। प्रश्न एक ही है कि यह करे कौन ? जब विचारशीलों के सिर पर राजनीति का भूत ही सन्निपात ज्वर की तरह चढ़ बैठा हो, तो यह सोचे कौन कि धर्म तन्त्र का परिशोधन-पुनर्निर्माण करने की उसे सृजन प्रयोजनों में लगाने की आवश्यकता है।

दुर्गति के कारण

समाज की बर्बादी के अनेक छिद्र हैं। उनके रहते प्रगति के सभी आधार कट जाते हैं। शादियों में होने वाले खर्च का अनुमान लगाया जाय तो वह शिक्षा और चिकित्सा पर खर्च होने वाली संयुक्त राशि से भी अधिक भारी बैठती है। औसत परिवार की एक-तिहाई आमदनी विवाहों के, उससे आगे-पीछे के प्रचलनों में बर्बाद हो जाती है। इस तथ्य को समझा ही जाना चाहिए कि खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं। इस कुप्रथा के रहते अपना देश हजार वर्ष में भी गरीबी से छूट नहीं सकेगा, इसी प्रकार पर्दा प्रथा, जाति-पांति की ऊँच-नीच, भिक्षा व्यवसाय, मृतक भोज, बाल विवाह जैसी अगणित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुप्रथाएँ ऐसी हैं जो नशेबाजी और चोर जालसाजी से भी अधिक दुष्परिणाम उत्पन्न करती हैं।

नैतिक,, बौद्धिक और सामाजिक क्षेत्र की अनेकानेक कुप्रथाओं को उलटने और उनके स्थान पर सत्प्रवृत्तियों का, सत्परम्पराओं का प्रचलन करने के लिए एकमात्र हल, धर्मतन्त्र का प्रगतिशील प्रयोजनों के लिए उपयोग करना ही है। यह कार्य धर्म को गाली देते रहने से नहीं, उसके भीतर प्रवेश करके विवेकशील दूरदर्शिता का समावेश करने से होगा। अवांछनीयताओं के उन्मूलन का एक ही उपाय है कि उनके स्थान पर सत्प्रवृत्तियों को प्रतिष्ठित किया और समर्थ बनाया जाय। यह कार्य धर्मतन्त्र को अपने सेवा क्षेत्र का आधार बनाने से ही सम्भव हो सकता है। दीपक जलाने से ही अन्धकार दूर होता है। भावनाशील सेवाभावी यदि धर्मतन्त्र को बदनाम करने वाले अन्धकार को हटाना, उसकी सनातन गरिमा से मानवता को कृतकृत्य बनाना चाहते हों तो तो स्वयं इस क्षेत्र में प्रवेश करें और प्रतिगामिता को प्रगतिशीलता में बदलें।

इक्कीसवीं सदी की पुकार और गुहार

हेय परिवर्तन तो भोले-भाले एवं नासमझ लोगों को उकसाकर भी आरंभ किये जा सकते हैं, पर आदर्शवादी उत्थानपरक उत्कृष्टताओं को अपनाने के लिये सहमत करने में कई कठिनाइयाँ हैं । उनमें से प्रथम यह है कि परामर्शदाता की वाणी लेखनी ही सब कुछ कहकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं कर दे, वरन् अपना उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह हृदयंगम कराने में समर्थ हो कि श्रेष्ठता मात्र चर्चा भर का मनोरंजन नहीं है वरन् इसे व्यवहार में उतारा जाना भी संभव है । सर्वत्र छाये हुए इस भ्रम का निराकरण आवश्यक है कि आदर्शों को अपनाया जाना सरल और संभव भी है । साथ ही लाभदायक उल्लास भरा भी है। ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये उपदेशक का अपना निजी जीवन ही सर्वोपरि और विश्वस्त प्रमाण-पत्र हो सकता है ।

दूसरी कठिनाई इस संदर्भ में यह है कि जिन्हें सत्प्रयोजन के लिये प्रोत्साहित किया जाता है अनिवार्य है कि उनमें विचारशीलता के बीजांकुर पहले से ही विद्यमान हों । ऊसर भूमि पर बीज नहीं जमता । दुराग्रही, अहंकारी और कुसंस्कारी लोग मात्र अनौचित्य अपनाने में ही अपने दर्प का प्रदर्शन करते हैं और जो कर रहे हैं, उसे लाभदायक सिद्ध करने के लिये अपना और अन्य दुष्कर्मी साथियों का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं । कुसंस्कारिता जब स्वभाव का अंग बन जाती है तब उसे गहरी खाई से उबार कर पर्वत की चोटी तक उछाल सकना कठिन पड़ता है । इसलिये ग्रहीता को किसी सीमा तक समझदारी का पक्षधर होना चाहिये अन्यथा बालू के किले बनाने की तरह परिश्रम निरर्थक चला जाता है ।

प्राथमिक कक्षा में प्रवेश पाने के लिये पाँच वर्ष की आयु होना आवश्यक है । कॉलेज में प्रवेश पाने के लिये मैट्रिक स्तर की योग्यता का होना आवश्यक है । इसके बिना प्रवेश न देने का नियम इसलिये बना है कि पात्रता के अभाव में सुयोग्य प्रशिक्षक भी कुछ कहने लायक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता । इसलिये उपदेष्टा को जहाँ क्रियाकुशल होना चाहिये वहाँ गृहीता को भी विचारशील स्तर का होना चाहिये । उसे ऐसा तो होना ही चाहिये जिसे जिज्ञासु कहा जा सके जिस दुराग्रही अहंकार ने जकड़ न रखा हो । युग परिवर्तन के लिये जिस आदर्शवादी प्रक्रिया का आरंभ किये जाने की आवश्यकता है, उसको समझने और समझाने वाले पक्षों को उपयुक्त स्तर का होना चाहिये। इसीलिये मनोरंजक माहौल के लिये जिस प्रकार भारी भीड़ सहज ही जुट जाती है वैसी उच्चस्तरीय अभ्युदय की कक्षायें लगाने के लिये आशा नहीं की जानी चाहिये । विशेषतया कार्यारम्भ के लिये तो इस स्तर की पात्रता खोजी ही जानी चाहिये, जिस पर कि किया गया परिश्रम निरर्थक न चला जाय । यह द्विपक्षीय आवश्यकता जहाँ भी पूरी होती होगी वहाँ प्रयत्न निष्फल नहीं जायेंगे और प्रगति की उत्साहवर्धक संभावना प्रस्तुत होती रहेगी ।

नव सृजन का प्रथम चरण 'विचार क्रान्ति अभियान' है । जिसका अर्थ होता है—'जनमानस का परिष्कार ।' अर्थात् दूरदर्शी विवेकशीलता का उद्भव। इस प्रयास के लिये प्रचार कार्य में भारी भीड़ जुटाने के लिये उन लोगों की छोटी मण्डली जुटानी चाहिये जिनमें सदाशयता के बीजांकुर पहले से ही अपेक्षाकृत कुछ अधिक मात्रा में विद्यमान हों । बड़ी संख्या वाले संगठनों में व्यक्तिगत स्वार्थ और अहंकार वाले उद्धत जन इकट्ठे हो जाते हैं और वे कुछ रचनात्मक काम करने की अपेक्षा अपनी प्रमुखता जताने के लिये साथियों की टाँग खींचते हैं । इससे खिन्न होकर उनका मानस भी नवजात अंकुरों की तरह कुम्हला जाता है जबकि सही रीति से सींचे जाने पर कभी उनके अच्छे पौधे या वृक्ष बनने की आशा तथा संभावना थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्यक्रमों में प्रचलित मूढ़ मान्यताओं और अवांछनीयताओं को उलटने के लिये जनमानस तैयार करना यही एक सूत्री कार्यक्रम है । विचार ही क्रिया में बदलते हैं । मनःस्थिति ही परिस्थितियों का रूप धारण करती है । इसलिये आर्थिक क्षेत्र के संघर्षों को छोड़कर दुष्प्रवृत्ति के हर क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रतिगामी दलदल में फँसे हुए मानस को मानवीय गरिमा के अनुरूप रीति-नीति के लिये समर्थन देना और सहयोग करने के लिये उकसाना पड़ता है । इसलिये उपजाऊ भूमि के साथ प्राथमिक परिश्रम किया जाता है । माहौल बन जाने के बाद तो तेज हवा के प्रवाह में तिनके तथा पत्ते भी उड़ने लगते हैं, पर ऐसी आशा शुभारम्भ के क्षण में ही नहीं करनी चाहिये । चतुर कुम्हार को भी बर्तन बनाने के लिये चिकनी मिट्टी ही खोजनी पड़ती है । बालू-रेत हाथ लगने पर तो वह बेचारा भी कुछ कर नहीं पाता । तिलहन से ही तेल निकलता है । मिट्टी पीसते रहने पर तो तेली के बैल को और झक मारनी पड़ती है । इसलिये युग परिवर्तन के महान कार्य को सम्पन्न करने वालों को समग्र विचारक्रान्ति को वहन करने वाले उपदेष्टा और गृहीता दोनों ही जुटाने चाहिये । इतना बन पड़ा तो समझना चाहिये कि आरंभ बीज जितना छोटा होने पर भी उसका विस्तार कुछ ही समय में वट-वृक्ष की तरह सुविस्तृत होने में देर न लगी । असफलता तो तब मिलती है जब बीज घुना हो अथवा जमीन ऊसर स्तर की हो ।

जिनका मन समय की पुकार को सुनकर हुलसे, उन्हें कार्य अपने आपे से आरंभ करना चाहिये । अन्तरात्मा को उपदेष्टा और शरीर-मन को गृहीता बना लेना चाहिये । इस क्षेत्र पर अपना अधिकार भी है । आकांक्षा के अनुरूप शरीर और मन दोनों ही अपने कार्य आरंभ कर देते हैं । दिन भर, जीवन भर यही सिलसिला चलता रहता है । फिर कोई कारण नहीं कि पुराने सड़े-गले ढर्रे को बदलकर नव जीवन के अनुरूप रीति, नीति अपनाने में बेतुकी झिझक को छोड़कर और कोई बाधा उपस्थित हो । अपनी जीवन सम्पदा को इस प्रकार मोड़ना-मरोड़ना चाहिये कि शरीरचर्या के लिये आवश्यक निर्वाह जुटाने में सीमित समय लगे और शेष श्रम, कौशल एवं साधन का उपयोग युग धर्म के निर्वाह में होने लगे । युग की समस्यायें सुलझाने के लिये सबसे बड़ा उपकरण है, सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के लिये नियोजित किया जाने वाला भात-भरा समयदान । इसे अपने समय का वह इन्द्र वज्र कहा जा सकता है जिसने किसी समय वृत्तासुर जैसे दुर्दान्त दस्यु को धूलि में मिला दिया था और देवत्व को विजयी बनाकर उसे उपयुक्त श्रेय सिंहासन पर बिठाया था ।

संसार में अनेकानेक अवांछनीयतायें फैली हैं । उन्हें बदलने सुधारने के लिये बड़ी योजनायें बनाने और प्रचुर साधन जुटाने की आवश्यकता पड़ेगी, पर शुभारंभ का भूमिपूजन जहाँ किया जाना है, वह आधारशिला यह है कि जाग्रत आत्मायें अपनी जीवनचर्या के सम्बन्ध में देवोपम नीति निर्धारित करें । देखें कि लोभ, मोह की न पूरी हो सकने वाली खाई को पाटना ही वह एकमात्र कार्य है जिसमें अपनी समूची शक्ति सामर्थ्य को झोंकते रहा जाय ? और उस व्यस्तता की आड़ लेकर यह कहा जाय कि युग धर्म के अवलम्बन हेतु अपने पास समय ही नहीं निकलता। शरीरचर्या और परिवारपोषण के प्रति यदि मर्यादित-आवश्यकतायें ही जुटाना, यह लक्ष्य हो तो उतना सब कुछ घण्टों के परिश्रम से ही जुटता रह सकता है और आधे से अधिक उन लोगों का भी परमार्थ प्रयोजनों के लिये लग सकता है, जो रोज कुआँ खोदने और रोज पानी पीने की स्थिति में जकड़े हुए हैं । फिर जिनके पास कुछ जमा पूँजी है, जिनके घर में अन्य सदस्यों को कमाने के लिये प्रोत्साहित किये जाने की गुँज्जायश है, उनके सम्बन्ध में तो कहना ही क्या ? वे तो पूरा समय ही इस आड़े समय में आहत स्थिति में-कराहती हुई मानवता को राहत पहुँचाने के लिये बहुत कुछ कर सकते हैं । इतना कुछ जिसे देखकर अनुकरण के लिये असंख्यों का मन हुलसे और उत्पादित प्रभाव से प्रभावित अनेकों की टोली अनुकरण के लिये कदम से कदम मिलाती हुई उल्लासपूर्वक चल पड़े ।

औसत नागरिक स्तर का निर्वाह करने पर आर्थिक कठिनाई से लेकर व्यस्तता तक की अधिकांश समस्याओं का समाधान निकल आता है । प्रतीत होता है कि जिन कारणों को अब तक असमर्थता कहा जाता रहा है, वह लिप्सा लालसा की क्षुद्रता के अतिरिक्त और कुछ था ही नहीं । निर्वाह के साधन इतने सरल हैं कि उन्हें जुटाने में किसी को भी कहीं कोई कठिनाई अनुभव नहीं होनी चाहिये । न पूरी होने वाली तो मात्र तृष्णा है जो पेट प्रजनन के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है और वह अपनी तरह से मनुष्य को समझाती है कि कन्धे पर इतना बोझा लदा है जो खींचे नहीं खिंचता फिर युगधर्म का निर्वाह कैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बन पड़े ? फिर महाकाल की पुकार पर कुछ कदम बढ़ाने का अवसर कहाँ से मिले ? इसे बुद्धि भ्रम की विडम्बना और प्रवंचना के अतिरिक्त और क्या नाम दिया जाय ?

सर्वप्रमुख मोर्चा एक ही है और उसका समाधान पूरी तरह अपने पास है कि अपने लिये औसत निर्वाह स्वीकार करके परिचित क्षेत्र में अनेकों को इसके लिये तैयार किया जाय कि वे भी इसी राह पर चलें और इस आधार पर बचाई हुई क्षमता को उस हेतु लगायें, जिसमें अनेकानेक क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रस्तुत किये जाने हैं ।

किस युग शिल्पी को क्या, कब, कैसे, कहाँ, क्या करना है, यह निर्धारण व्यक्ति की योग्यता और स्थानीय आवश्यकता को देखते हुए सामान्य सूझबूझ के आधार पर किया जा सकता है । रेत में चावल मिल जाने पर उन्हें एक-एक करके बीनना पड़ता है और कचरे तथा अनाज को अलग करने का श्रम साध्य, समय साध्य, उलझन भरा काम करना पड़ता है। गुड़ और गोबर एक में मिल जाने पर भी ऐसी ही कठिनाई पैदा होती है । इन दिनों विचारों और क्रिया-कलापों में उचित-अनुचित का असाधारण गड्ड-मड्ड हो गया है । सूझ नहीं पड़ता कि प्रचलन में किन विचारों और किन कार्यों को मान्यता दी जाय और किसे निरस्त बहिस्कृत किया जाय । उचित और अनुचित के इस संशोधन का नाम ही विचार क्रान्ति है। जो कुछ कहा-सुना और किया जा रहा है, उस सब पर नये सिरे से कसौटी लगाये जाने की आवश्यकता है, जो विवेकयुक्त है उसका निर्धारण नये सिरे से किया जाना है क्योंकि प्रस्तुत अगणित समस्याओं का एकमात्र कारण उचित के स्थान पर अनुचित का आ विराजना ही है । उन्हें यथास्थान प्रतिष्ठित करने के लिये अस्त-व्यस्त को नये सिरे से यथास्थान जमाना पड़ेगा ।

इसके लिये व्यापक जन सम्पर्क की आवश्यकता पड़ेगी । अपने सम्पर्क क्षेत्र से लेकर परिचय और प्रभाव क्षेत्र में आने वाले व्यक्ति से घनिष्टता साधकर यह जानना पड़ेगा कि वह कितना सीधी राह पर चलता है और कितना भूल-भुलैया भरी उल्टी राह पर चलने में अपनी शक्तियों का नियोजन करता है । भूलों में जहाँ भी जितना भी सुधार संभव हो, उसके लिये तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उस बदलाव को लाया ही जाना चाहिये जो इन दिनों उल्टी दिशा में बह रहे प्रवाह को उलट कर सीधा कर सकें।

इक्कीसवीं सदी की सुखद संभावनाओं के निर्धारण निर्माण में यह प्रयोग अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि प्रचलित मान्यताओं, भावनाओं विचारणाओं और क्रिया-कलापों में एकमात्र औचित्य को ही स्थिर रहने दिया जाय और जो अनुचित है उसे साहसपूर्वक बुहार फेंका जाय ।

इस दुहरे प्रयोजन में संलग्न होने वाले व्यक्ति ही अपनी निज की प्रतिभा परिष्कृत कर सकते हैं । मनस्वी और तेजस्वी बन सकते हैं । साहस, पराक्रम और वर्चस्व के धनी हो सकते हैं । साथ ही उन आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर सकते हैं, जिन्हें समय की पुकार कहा जा सकता है । प्रतिभावान ही युग धर्म के निर्वाह में सफल हो सकते हैं इसलिये हर जाग्रत व्यक्ति को प्रतिभावान बनने के लिये, विचार क्रान्ति अभियान को अधिक प्रखर और सफल बनाने के लिये प्राण-पण से प्रयत्नशील होना ही पड़ेगा ।

युग परिवर्त्तन प्रक्रिया का उत्तरार्द्ध जो अभी भी क्रियान्वित होना है

पिछले पृष्ठों पर प्रज्ञा अभियान की उस रचनात्मक प्रक्रिया का उल्लेख हुआ है जिसमें भावनाशीलों को छोटे-छोटे सरल सुलभ सेवा कार्य अपनाकर अपने समर्थन को जीवन्त स्तर का सिद्ध करने का अवसर मिले । निःसन्देह वे आरम्भिक हैं । सीधे, सरल और स्वल्प श्रमसाध्य हैं । पर उन्हें प्राथमिकता इसलिए दी गई है कि जिनमें आदर्शवादी प्राण प्रतिभा होगी वे न केवल समर्थन करेंगे वरन् सहयोगी बनने के लिए आरम्भिक कदम बढ़ायें । यह युग मनीषा की प्राथमिक परीक्षा है ।

अब तक की कार्य पद्धतियों सृजनात्मक वातावरण बनाने की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है और उसमें युग परिवर्तन के बीजांकुर पूरी तरह विद्यमान हैं । गाँधी का चरखा और नमक अभियान कितना नगण्य लगता था पर उस शुभारम्भ की परिणति कहाँ से कहाँ पहुँची यह सभी ने प्रत्यक्ष देखा है । प्रज्ञा अभियान के प्रथम चरण के पूर्वार्द्ध में उन्हीं कार्यक्रमों का समावेश है जो सर्वसाधारण के लिए सरल सुगम हैं । चयन में इतनी-सी जाँच-पड़ताल भर से काम चल जाता है । प्रखरता उत्पन्न करने के लिए तो पीछे तेज भट्ठी में गलाई ढलाई होती है । पूर्वार्द्ध की सफलता उत्साहवर्द्धक है । उस प्रक्रिया से परिवर्तन का माहौल

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बना है, प्रवाह चला है और विश्वास बँधा है कि इस दिशा में चलते हुए कुछ ऐसा बन पड़ेगा जिसे महत्त्वपूर्ण, क्रान्तिकारी एवं ऐतिहासिक कहा जा सके।

बड़े कामों के लिए, बड़े कदम उठाने पड़ते हैं । बड़े साहस जुटाने होते हैं । बड़े साधन जुटाये जाते हैं। उपलब्ध युग मनीषा को उत्तरार्द्ध में इसी की तैयारी करनी चाहिए । यों इस संसार में एक से एक बड़े विभूतिवान भरे पड़े हैं । वे चाहें तो नव सृजन का विशालकाय तन्त्र देखते-देखते खड़ा कर सकते हैं, पर उन तक पहुँच कैसे हो ? वे इस मिशन से परिचित कैसे हों ? फिर उनकी अपनी योजनाओं की तुलना में युगान्तरीय चेतना की गरिमा को वरिष्ठ कैसे सिद्ध किया जाय ? अन्यत्र वैसा कुछ दृष्टिगोचर न होने पर भी एकाकी अग्रसर होने के लिए कैसे सहमत किया जाय ? यह अति कठिन प्रश्न है जिसके कारण नवयुग के शिलान्यास की दृष्टि से नितान्त आवश्यक-अनिवार्य कार्यों को अविलम्ब अग्रसर करने पर गाड़ी रुक जाती है । लम्बी अवधि के भावभरे प्रयत्नों से जिस देव परिवार का सृजन किया गया है उसी के परिजनों को लेकर अगले दिनों के भारी भरकम कार्यों को भी हाथ में लिया जायेगा । जब विभूतियाँ विश्वास करेंगी और बड़े प्रयत्नों के लिए बड़ा साहस करेंगी, अभी उस समय की दूरी कुछ अधिक लम्बी दीखती है। इसलिए जो हाथ में है—जो साथ है—उसी के सहारे अगले बढ़े कदमों का श्रीगणेश भी उसी प्रकार किया जाना है जिस प्रकार कि छोटे प्रयत्न का ताना-बाना छोटे सहयोग से बनते हुए—छोटों का बड़ा काम सर्वसाधारण के सामने प्रस्तुत कर सकने में सफल मनोरथ हुआ गया है ।

कहा जा चुका है कि विचारणा को प्रभावित करने में लेखनी, वाणी और दृश्य शक्ति की प्रमुखता मानी गई है । इनके लिए हमें लेखन प्रकाशन और विक्रय का ऐसा समर्थ तन्त्र खड़ा करना चाहिए जो व्यक्ति और समाज से सम्बन्धित सभी समस्याओं के निषेधात्मक और विधेयात्मक पक्षों से जन-जन को अवगत कराये और नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति की सर्वतोन्मुखी पृष्ठभूमि बनाये । इसका विस्तार सभी प्रमुख भाषाओं के क्षेत्र तक इस प्रकार होना चाहिए जैसा कि ईसाई मिशन और साम्यवाद के अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार ने किया है ।

वाणी को मुखर करने के लिए ऐसे वक्ता गायक बड़ी संख्या में प्रशिक्षित किये जाने हैं जो जन सम्पर्क साधें, घर-घर अलख जगायें, विचारगोष्ठियों में उस तथ्यों से जन-जन को अवगत करायें, जो भले चंगे, सुखी सम्पन्न मनुष्य को सामूहिक आत्महत्या की दिशा में घसीटे लिये जा रहे हैं। साथ ही यह भी बताना होगा कि किन उपायों के अवलम्बन से विनाश की विभीषिकाओं से बचा जा सकता है। किन प्रयोजनों में मानवीय प्रयत्न नियोजित करने पर उज्ज्वल भविष्य का सुनिश्चित सृजन हो सकता है। ऐसे आदर्शवादी प्रचारक—अनुभवी भी हों, सुयोग्य भी, सेवाभावी भी। इसके लिए वानप्रस्थ परम्परा पुनर्जाग्रत करनी होगी। अधेड़ों में लोभ, मोह से विरत होकर लोक-मंगल में संलग्न होने की भाव चेतना जगानी होगी। थोड़ा-थोड़ा समय देने वाले समयदानियों की दूसरी पंक्ति खड़ी होगी । एक वर्ष का सन्यास लेने और उस अवधि में मात्र सृजन प्रयोजन में संलग्न रहने की एक नई परम्परा चलानी होगी । ऐसे ही प्रयत्नों से युग मनीषा का प्रचारक परिव्राजक वर्ग उभरेगा । उसे कार्यक्षेत्र में उतरने—और स्थानीय परिस्थितियों को समझते हुए कार्यपद्धति अपनाने के लिए नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय खड़े करने होंगे । छोटे संघाराम और बौद्ध विहारों की अनुकृति भी हर व्यवसायी क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए विनिर्मित करनी होगी ।

कहना न होगा कि यह वाणी प्रधान प्रचार तन्त्र भी लेखनी वाले प्रकाशन तन्त्र की तरह खर्चीला है । कार्यकर्त्ताओं को भोजन, वस्त्र, मकान तो चाहिए ही। बाहर जाने पर मार्ग व्यय भी लगता है । प्रशिक्षण में पुस्तकों तथा संगीत उपकरणों की आवश्यकता पड़ेगी। इस प्रकार लेखन का न सही प्रकाशन के लिए कागज छपाई की पूँजी तो चाहिए ही । उपयुक्त दोनों ही कार्य साधनों की अपेक्षा रखते हैं । उनके लिए पैसा न मिले तो समझना चाहिए बिना पानी वाले तालाब की स्थिति रही । खिले कमलों वाले सुरम्य शीतल सरोवर का दृश्य देखना है, तैराकी से लेकर सिंचाई तक का लाभ उठाना है तो कागजी चित्र सरोवर से काम नहीं चलेगा । उसमें जलराशि भरते रहने वाले निर्झरों को भी उस सुखद सम्भावना में भागीदार बनने के लिए सहमत करना होगा ।

प्रचार प्रकाशन के समतुल्य ही कला का क्षेत्र है। उस पर इन दिनों फिल्म उद्योग का आधिपत्य है। पत्र-पत्रिकाओं के पाठकों से भी कहीं अधिक संख्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सिनेमा दर्शकों की रहती है । अभिनय, संगीतयुक्त कथानक अपने पीछे जो प्रभाव सँजोये रहते हैं उसका प्रभाव सीधे चिन्तन और चरित्र पर पड़ता है। प्रचलित प्रवाह को सिनेमा संस्कृति की देन कहें तो अतिशयोक्ति न होगी । उसने अपना जो प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जन-जन के मन-मन पर छोड़ा है उसकी तुलना और किसी माध्यम से नहीं की जा सकती । इस महाशक्ति को पतन पराभव से रोकने में यो उनके निर्माता और सरकारी सेन्सर भी सक्षम हो सकता है फिर भी यह आवश्यकता तो बनी ही रहेगी कि देश परिवर्तन की—अभिनव निर्माण की जिम्मेदारी कोई दूसरा उठाये । अन्धों को रास्ता दिखाने में कोई आँख वाला भी चाहिए ।

आवश्यकता यह अनुभव की जानी चाहिए कि पुरातन सतयुगी वातावरण को आज की स्थिति में अवतरित कर सकने वाले कथानकों की कम से कम एक फिल्म शृंखला तो चल ही पड़े । मार्गदर्शन और पथ-प्रशस्त होने पर दूसरे लोग भी उसका अनुकरण करेंगे । यह बड़ी पूँजी का उद्योग है । एक फिल्म बनाने से नहीं एक शृंखला चलने से काम बनेगा । इस शृंखला का शुभारम्भ करने के लिए अपने निजी साधन बनाने होंगे । इसमें न्यूनतम पचास लाख की पूँजी चाहिए । करोड़ों की लागत वाले मिल कारखाने खड़े कर देने वालों के लिए यह लाभदायक न सही, हानिरहित उद्योग में हाथ डालने का उत्साह उत्पन्न किया जाना चाहिए ।

मध्यवर्ती प्रज्ञा परिजन भी रामलीला, रासलीला स्तर की अभिनय मण्डलियाँ खड़ी कर सकते हैं एक्शन साँग, एकाकी नाटक, संगीत मण्डली आदि छोटे तन्त्र बड़ी संख्या में खड़े किये जा सकें तो भी उनका प्रभाव उन देहाती क्षेत्रों में उत्साहवर्धक होता है, जहाँ अभी सिनेमा का आधिपत्य नहीं हुआ है । सोलह मिलीमीटर के चलते-फिरते सिनेमा भी जेनरेटर की सहायता से उन क्षेत्रों में पहुँच सकते हैं और इस स्तर का एक मिनी सिनेमा उद्योग भी बड़ों के समानान्तर खड़ा हो सकता है । इसमें पूँजी भी कम लगेगी । इसे क्षेत्र में कठपुतली के तमाशेजादू के खेल जैसे कौशल भी उद्देश्यपूर्ण आधार अपनाकर लोक रंजन के साथ लोक मंगल का आधार खड़ा कर सकते हैं ।

कला के क्षेत्र में चित्र प्रकाशन का अपना विशिष्ट स्थान है । चित्र प्रदर्शनियों के इन दिनों कितने ही रूप प्रचलित हैं । उनमें से कुछ को नव सृजन का वातावरण बनाने में प्रयुक्त किया जा सकता है । छोटी चित्र पूजा तो आदर्शवाक्य, चित्र वाले प्रकाशन और चित्र प्रदर्शनी आयोजनों के रूप में चल भी रहा है । उपर्युक्त सभी प्रयत्नों को बड़े काम में—बड़ी पूँजी में—संगठित रूप में किये जाने की आवश्यकता है । कला को दुष्प्रयोजनों में प्रयुक्त करने के फलस्वरूप लोक प्रवाह में विषाक्तता का समावेश हुआ है । यदि उसे सदुद्देश्यों के लिए प्रयुक्त करने वाली कोई बड़ी योजना कार्यान्वित हो सके तो उसका प्रभाव निश्चित रूप से वातावरण में अमृत भर देने के रूप में दृश्यमान होगा।

कृत्यों में प्रगतिशील शिक्षा तन्त्र जन सहयोग से खड़ा किया जाना चाहिए । जीवन साधना के—लोक व्यवहार के असंख्य पथ ऐसे हैं जिनका अभाव शिक्षितों और अशिक्षितों में समान रूप से पाया जाता है । आदतें, विचारणाएँ, प्रथाएँ, गतिविधियाँ अवांछनीय स्तर की होने पर किस प्रकार सर्वनाश रचतीं और विवेकशील दूरदर्शिता युक्त होने पर किस प्रकार दैवी अनुकम्पा की तरह प्रगति और समृद्धि बरसाती हैं । यह विषय मात्र स्वाध्याय का ही नहीं है उसका विधिवत् पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण भी होना चाहिए । ऐसे पूरे या अधूरे समय के-फीस बिना फीस के विद्यालय जगह-जगह पर चलने चाहिए जिनमें आजीविका उपार्जन, स्वास्थ्य संरक्षण एवं व्यवहार कौशल की शिक्षा का समावेश है । प्रगतिशील देशों में सरकारी शिक्षा की परिधि सीमित और निजी प्रयासों से चलने वाली शिक्षण संस्थाएँ अपेक्षाकृत कहीं अधिक हैं । इससे वहाँ के नागरिकों को अपनी मर्जी के बिना अपनी अनुकूलता के समय में पढ़ने की सुविधा उपलब्ध होती रहती है । हमें सरकारी शिक्षा का स्वागत और सहयोग करते हुए भी उन प्रसंगों के पाठ्यक्रम बनाने और विद्यालय चलाने चाहिए जो योग्यता संवर्धन के साथ-साथ प्रतिभा निखारने, व्यक्तित्व उभारने और प्रगतिशील सुखी समुन्नत जीवनक्रम बनाने में कारगर सहायता दे सके । ऐसी लोक शिक्षा सरकारी शिक्षा के समान्तर चल सकती है और समग्र शिक्षण की पूरक बन सकती है ।

इन पंक्तियों में उन प्रयत्नों का उल्लेख नहीं किया गया है जिनसे पिछड़े, दुःखी वर्ग को राहत पहुँचाने, बेकारी गरीबी को दूर करने, अनीति से जूझने की दृष्टि से बहुत कुछ किया जाना बाकी है । इन पृष्ठों पर उनका उल्लेख न करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वे महत्त्वहीन या उपेक्षणीय हैं । उन्हें दूसरे अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री तथा शासन अधिकारी अपने ढंग से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने साधनों से सम्पन्न करें । यहाँ मात्र प्रज्ञा अभियान के उस पक्ष पर प्रकाश डाला गया है जो लोक मानस की दिशाधारा बदलने के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं । युग मनीषी अपने जिम्मे इस सीमित काम को संभाले और अगणित कार्यों को विभिन्न क्षेत्रों की अगणित प्रतिभाएँ अपने-अपने साधनों और अनुभवों के अनुसार करती रह सकती हैं। शासन सुधार की बात को यहाँ जान-बूझकर छोड़ दिया गया है कि जब उस क्षेत्र की सूझ-बूझ वाले ही धकापेल मचाये हुए हैं तो अछूते किन्तु अति महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व को युग मनीषी क्यों न अपने कन्धों पर उठाये ।

उपर्युक्त चारों तन्त्रों को छुटपुट रूप से अलग-अलग संगठनों के अन्तर्गत भी किया जा सकता है, पर प्रारम्भिक स्थिति में पूर्व अनुभव और दूर दृष्टि के अभाव में भटकाव की आशंका है । सभी जानते हैं कि जंक्शन पर खड़ी गाड़ियों में कोई निर्धारित पटरी के स्थान पर दूसरी पर चढ़ चले तो कुछ ही समय में यह भटकाव हजारों मील का अन्तर पड़ जाता है और शक्ति एवं समय का भारी अपव्यय पल्ले बँधता है । अच्छा हो उपर्युक्त चारों प्रयासों का प्रथम चरण शान्तिकुंज के तत्वावधान में हो । इस सुयोग से युग मनीषी को दिव्य प्रेरणाओं से सुसम्पन्न होने का अवसर मिलेगा । उनके उत्तरार्द्ध प्रयास, पूर्वार्द्ध प्रयासों की तुलना में असंख्य गुने सत्परिणाम प्रस्तुत कर सकने में समर्थ होंगे । ऐसे सत्परिणाम जिनके सहारे मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का सतयुग इन्हीं आँखों के आगे प्रभातकालीन अरुणोदय के रूप में सुखद सम्भावनाओं के साथ उदीयमान दृष्टिगोचर हो सके ।

युग सृजन की भागीदारी में किसी को घाटा नहीं

सीमित संकुचित स्वार्थ की परिणति अनर्थ में होती है और उदात्त परमार्थ परायणता से सच्चे अर्थों में स्वार्थ सिद्धि होती है । इस तथ्य को समझ सकना मूढ़मति के लिए कठिन है । किन्तु जहाँ भी दूरदर्शिता विद्यमान होगी वहाँ इस निष्कर्ष पर पहुँचने में तनिक भी कठिनाई न पड़नी चाहिए कि परमार्थ ही सच्चा स्वार्थ है । उसमें भौतिक और आत्मिक, लौकिक और परलौकिक दोनों ही प्रकार के सुखद प्रयोजन साथ-साथ सधते हैं । इसे विचारशीलता का अभाव ही कहना चाहिए कि लोग परमार्थ से विमुख रहते और संकीर्ण स्वार्थपरता की कीचड़ में कृमि कीटकों की तहर कुलबुलाते रहते हैं ।

अदूरदर्शिता के प्रमाणों से सारा वातावरण भरा पड़ा है । आटे की गोली के लिए गरदन काटने वाली मछली और दानों के लालच में प्राण गँवाने वाली चिड़िया का उदाहरण बनने वाले मनुष्यों की कहीं कोई कमी नहीं । बीन की मोहकता में मृग और सर्पों की तरह सुध-बुध भूल जाने वाले और बन्धन में बँधने वालों का अनुकरण करते हुए असंख्य मनुष्य भी देखे जा सकते हैं । कमल पुष्प के रूप पर भौंरा और दीपक की शोभा पर पतंगा इतना मुग्ध होता है कि उसे अगले ही क्षणों इस व्यामोह की परिणति पर सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता । चासनी पर बेहिसाब टूट पड़ने वाली मक्खी अपने पर और पैर फँसाकर किस प्रकार दम तोड़ती है इस दृश्य को देखकर उसकी मूर्खता का उपहास उड़ाने वाले तो अनेकों होते हैं, पर यह नहीं देख पाते कि वे स्वयं भी तो वैसा ही कुछ तो करते रहने में संलग्न नहीं हैं ।

इसे अदूरदर्शिता ही कहना चाहिए जिसके कारण स्वार्थ में लाभ और परमार्थ में हानि होने का बुद्धि भ्रम चढ़ दौड़ता है । कहते हैं कि कौरव एक बार पाण्डवों के घर गये तो वहाँ मरकत मणियों से बने भवन में जल को थल और थल को जल समझने का भ्रम हुआ था । उसी विभ्रम का उपहास उड़ाते हुए द्रौपदी मखौल में कह बैठी—अन्धों के अन्धे ही होते हैं । सर्वविदित है कि वह व्यंग्य ही महाभारत का निमित्त कारण बना और धन-जन की अपार हानि करने के उपरान्त ही समाप्त हुआ । प्रायः ऐसी ही उपहासास्पद मनःस्थिति उन सबकी होती है जो संकीर्ण स्वार्थपरता के दलदल में घुसते धँसते चले जाते हैं और उस प्रगति के पीछे जुड़ी हुई अवगति को देखने-समझने में असमर्थ रहते हैं ।

दूरदर्शिता साथ दे सकती होती तो हर व्यक्ति सौभाग्यशाली होता । तब उसे भटकावजन्य दुर्भाग्य के साथ हर घड़ी सिर न फोड़ना पड़ता । दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखते हुए किसान खेत में श्रम करते और फसल की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं । विद्यार्थी १४ वर्ष का तप करके स्नातक बनता और विद्वान होने का श्रेय गौरव एवं उपहार अर्जित करता है । पहलवान लम्बे समय तक कसरत, खुराक, मालिश, संयम आदि का झंझट उठाते रहने के उपरान्त बहुत समय बाद दंगल जीतता और गर्दन ऊँची उठाकर चलता है । व्यवसायी पूँजी लगाते हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कलाकार लम्बे समय तक अभ्यास करते हैं । योगियों को सतत् साधनारत देखा जाता है । वे तत्काल हाथों हाथ कोई लाभ अर्जित नहीं करते वरन् सच तो यह है कि हानि उठाते हैं । वह समय देर में आता है जिसमें वे बीज की तरह गलने के उपरान्त विशाल वृक्ष की तरह फलने का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

इन दिनों प्रज्ञा परिजनों को समय की कसौटी पर कसा जा रहा है और यह जांचा परखा जा रहा है कि वे नर पामरों की तरह अदूरदर्शिता के नागपाश में ही जकड़े रहेंगे या उन महामानवों की तरह श्रेयाधिकारी बनेंगे जिनने दूरदर्शिता अपनाई—आदर्श अपनाने के लिए कठिनाई उठाई और अन्ततः इतने अधिक लाभ में रहे जिनकी चर्चा करने मात्र से मुँह में पानी भर आता है ।

कभी हनुमान तथा अंगद को भी मूर्ख कहा गया होगा शबरी, केवट, विभीषण से लेकर रीछ वानरों तक द्वारा अपनाई गई नीति का उपहास उड़ाया गया होगा। क्योंकि उनके कदम उस मार्ग पर उठे, जिसमें तत्काल विलास वैभव हस्तगत नहीं होता था । दुनियादारी का प्रचलन यही है कि जिस भी प्रकार तुरन्त सम्पदा सफलता हस्तगत होती हो उसी में बुद्धिमानी मानी जाय और जो भी जितने ढीठ मन से यह सब कर गुजरे उसी को चतुर भाग्यवान कहा जाय । प्रचलन के अनुसार आदर्शवादी, दूरदर्शी मूर्ख कहे जाते हैं । क्योंकि वे बीज की तरह गलने और बरगद की तरह फलने की नीति अपनाते हैं और प्रलोभन के आकर्षण तथा भय दबाव में आने से इन्कार कर देते हैं। प्रत्यक्षतः यह घाटा लगता है । घाटा उठाने वाले को मूर्ख कहा ही जाना चाहिए । किन्तु वस्तुतः वैसा है नहीं । यदि ऐसा होता तो कोई भी सन्तानोत्पादन जैसे कष्टकारक और हानिकारक काम में हाथ डालता । परमार्थ में समय और शक्ति खर्च करने के लिए कोई भी सहमत तत्पर न होता । तब देश भक्ति, समाज सेवा, पुण्य परमार्थ का कहीं कोई अतापता भी न लगता । दया धर्म का पालन करने में, तप संयम जैसे कष्टसाध्य उपक्रम अपनाने में किसी की भी प्रवृत्ति न होती । त्याग बलिदान के प्रेरणाप्रद प्रसंग कहीं भी देखने सुनने को न मिलते । अच्छा ही हुआ कि सभी ने प्रत्यक्षवाद को तत्काल लाभ भर को महत्व देने वाली संकीर्ण स्वार्थपरता की सड़ी कीचड़ में मोद मनाने की चतुरता को नहीं अपनाया । कुछ ऐसे आदर्शवादियों की भी आवश्यकता थी जो घाटा उठाने और मूर्ख कहलाने में भी—मानवीय गरिमा को अक्षुण्ण रखने में गर्व गौरव अनुभव कर सकें ।

प्रज्ञा युग के इस प्रभात पर्व पर प्रज्ञावतार का—प्रज्ञा अभियान का अभिनव आलोक इन्हीं दिनों उदय हुआ है । इस अवसर पर देवालयों में बजने वाले शंख, घण्टों की तरह स्वयं मुखर होने और अनेकानेक प्रसुप्तों को जगाने में जिनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है उनकी इतिहासकार स्वर्णाक्षरों में चर्चा करेंगे । युग चेतना से अनुप्राणित कोटि-कोटि मस्तक उनके चरण चिन्हों पर चलते और शत्-शत् नमन वन्दन करते रहेंगे ।

प्रज्ञा पुरश्चरण में विश्व विभषिकाओं से जूझने और सव्याप्त विषाक्तता से निपटने की समुचित क्षमता है । युग परिवर्तन के लिए अभीष्ट ऊर्जा उत्पन्न कर सकने की समर्थता उसमें विद्यमान है । मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण के निमित्त जिस पृष्ठभूमि की आवश्यकता है वह उससे बनती है । ५९० करोड़ मनुष्यों की नियति को विनाश के गर्त में गिरने से बचाने और उत्कृष्ट को स्वर्ण शिखर तक पहुँचाने के लिए मात्र भौतिक पुरुषार्थ एवं सरंजाम ही पर्याप्त नहीं हो सकता । उसके लिए चेतना को प्रभावित करने वाली अध्यात्म ऊर्जा का उत्पादन भी विपुल परिमाण में करना होगा । कहना न होगा कि उसी आवश्यकता की पूर्ति में प्रज्ञा पुरश्चरण की महती भूमिका अगले दिनों परोक्ष न रहकर प्रत्यक्ष भी परिलक्षित होने लगेगी । यह पारमार्थिक चर्चा हुई । विश्व कल्याण का लोक मंगल का यह प्रसंग इतना तुच्छ नहीं है जिसके लिए लोभ मोह के भव बन्धनों को थोड़ा भी शिथिल न किया जा सके । समयदान अंशदान की थोड़ी श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करने में अपने को असमर्थ कहा जा सके ।

दूसरों के लिए मेंहदी पीसने वालों के हाथ अनायास ही लाल होते हैं । दूसरों पर इत्र लगाने वाले के कपड़े अनायास ही महकने लगते हैं । अन्यों के लिए भोजन वाला चूल्हा स्वयं भी गरम रहता है । परमार्थ में प्रकारान्तर से उच्चस्तरीय स्वार्थ साधन का समावेश है । बर्फ बनाने वाले स्वयं भी शीतलता का लाभ लेते हैं । सरकस में नौकरी करने वाले उस आकर्षक तमाशे को हर दिन मुफ्त में ही देखते रहते हैं । इतिहास साक्षी है कि परमार्थ परायणों को आरम्भ में जितना त्याग करना पड़ा है उसकी क्षति पूर्ति आगे चलकर ब्याज समेत होती रहती है । गांधी, बुद्ध, शंकराचार्य, विवेकानन्द आदि परमार्थ परायण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्ततः भौतिक दृष्टि से भी लाभ में रहे हैं । धन की तरह यश भी एक सम्पदा है । हजारी किसान ने धन न सही यश तो इतना कमा लिया जितना करोड़ों खर्च करके भी नहीं खरीदा जा सकता था । न हनुमान घाटे में रहे न अर्जुन । ऋषि परम्परा के महान व्यक्तियों को सफलता-असफलता की तात्विक दृष्टि से परखा जाय तो प्रतीत होगा कि उनने घाटा नहीं उठाया वरन् उच्चस्तरीय लाभ उठाया ।'यह समझ का अन्तर ही है जो एक को माया के भ्रम जंजाल में घुमाता भटकाता है तो दूसरे को श्रेय सौभाग्य के अनुपम उपहार देकर हर दृष्टि से कृतकृत्य कर देता है । प्रज्ञा परिजनों को—प्रज्ञा पुत्रों को ऐसी ही दूरदर्शिता अपनानी चाहिए और युग परिवर्तन के महान उत्तरदायित्वों की चुनौती जिम्मेदारी आगे बढ़कर स्वीकारनी चाहिए ।

गलाई ढलाई के अप्रिय और प्रिय प्रसंगों के साथ-साथ सुरक्षा प्रयत्नों में निरत लोग अन्यान्यों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित रहेंगे और श्रेय सम्पादन में सामान्य लोगों की तुलना में अधिक लाभान्वित रहेंगे । स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों ने 'हतोवा प्राप्यसि स्वर्गं, न जित्वा या मोक्षसे महीम्' का उभयपक्षीय लाभ उठाया । तिलक गाँधी जैसे अजर-अमर हो गये और नेहरू, पटेल जैसे बेताज के बादशाह कहलाये । घाटे में वे रहे जो उस आन्दोलन में सम्मिलित होने पर घाटा पड़ने का हिसाब लगाते रहे । आये दिन की मुसीबतों ने अछूता तो उन्हें भी नहीं छोड़ा । गृह कलह, स्वास्थ्य संकट, परिस्थिति प्रतिकूलता, भाग्यचक्र आदि के कारण कष्ट उन्हें भी कम नहीं उठाने पड़े । इन्द्र और कुबेर बनने के सपने साकार कर सकने में वे भी असफल रहे । ऐसी दशा में तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर प्रतीत होता है कि संकीर्ण स्वार्थपरायण भी वैसा लाभ उठा सकने में सफल नहीं होते जैसा कि आदर्शवादियों को ताने दिये जाते हैं ।

प्रज्ञा पुरश्चरण की भागीदारी में मात्र विश्व कल्याण ही हो और उसके प्रयोक्ता इस निमित्त किये गये प्रयास के पुण्य प्रतिफल से सर्वथा वंचित रहें सो बात भी नहीं है । उन्हें अपने अग्रगामी साहस का प्रतिफल व्यक्तिगत लाभ के रूप में न मिले सो बात भी नहीं है । जब दुष्कर्मों के दुष्परिणाम भुगतना निश्चित है तो कोई कारण नहीं सत्कर्मों की परिणति श्रेय सौभाग्य के रूप में न हो । विनाश विभीषिकाओं के माहौल में वे अपने परिकर के साथ अधिक सुरक्षित रहेंगे । अग्निकाण्ड में अनेकों जल भरते हैं किन्तु फायर ब्रिगेड वाले अपेक्षाकृत उस संकट में प्राण त्यागते कम ही सुने जाते हैं । पानी में डूबने वालों की संख्या हर वर्ष असंख्यों होती है पर नाव लेकर दूसरों को पार लगाने वाले मल्लाहों में से जल समाधि लेने वालों की संख्या नगण्य ही होती है । महामारी के प्रकोप में जिस अनुपात में सामान्य जन मरते हैं उनमें डाक्टरों की मृत्यु नहीं होती । सृष्टि का विधान है कि दूसरों का बचाव करने के लिए प्रयत्नशीलों की रक्षा स्वयं भगवान करते हैं । असंख्यों की शुभकामनाएँ तथा सद्भावनाएँ उनके ऊपर ढाल बनकर छाई रहती हैं और आड़े समय में चमत्कारी सहायता प्रस्तुत करती हैं । परमार्थ परायणों के जीवनक्रमों पर दृष्टिपात करने से नया प्रसंग यह भी उभरकर आता है कि उन्हें सांसारिक प्रतिकूलता भले ही रही हो पर दैवी सहायता के अप्रत्याशित अवसर अनायास ही आते रहे हैं ।

प्रज्ञावतार---प्रज्ञा अभियान—प्रज्ञा पुरश्चरण की भागीदारी किसी के लिए भी घाटे का सौदा सिद्ध नहीं हो सकती । इस प्रसंग में प्रस्तुत किया गया अनुदान अनेक गुने सत्परिणाम लेकर वापस लौटे ऐसी आशा—अपेक्षा करने में तनिक भी अतिवादिता नहीं है ।

हर लोकसेवी के लिये उपासना एक अनिवार्य उपक्रम

आत्मोत्कर्ष के लिए उस महाशक्ति के साथ घनिष्ठता बनाने की आवश्यकता है जिसमें अनन्त शक्तियों और विभूतियों के भण्डार भरे पड़े हैं । बिजलीघर के साथ घर के बल्ब पंखों का सम्बन्ध जोड़ने वाले तारों का फिटिंग सही होते वे ठीक तरह अपना काम कर पाते हैं । परमात्मा के साथ आत्मा का सम्बन्ध जितना निकटवर्ती एवं सुचारु होगा, उसी अनुपात से पारस्परिक आदान-प्रदान का सिलसिला चलेगा और उससे छोटे पक्ष को विशेष लाभ होगा । दो तालाबों के बीच नाली खोदकर उनका सम्बन्ध बना दिया जाए तो निचले तालाब का पानी दौड़ने लगेगा और देखते-देखते दोनों की ऊपरी सतह समान हो जायेगी, पेड़ से लिपटकर बेल कितनी ऊँची चढ़ जाती है इसे सभी जानते हैं । यदि उसे वैसा सुयोग न मिला होता अथवा वैसा साहस न किया होता तो वह अपनी पतली कमर के कारण मात्र जमीन पर फैल भले ही जाती पर ऊपर चढ़ नहीं सकती थी । पोले बाँस का निरर्थक समझा जाने वाला टुकड़ा जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वादक के हाथों के साथ तादात्म्य स्थापित करता है तो बाँसुरी वादन का ऐसा आनन्द आता है जिसे सुनकर सांप लहराने और हिरन मंत्र-मुग्ध होने लगते हैं । पतले कागज के टुकड़े से बनी पतंग आकाश को तभी चूमती है जब उसकी डोर का सिरा किसी उड़ाने वाले के हाथ में रहता है । यह सम्बन्ध शिथिल पड़ने या टूटने पर सारा खेल खतम हो जाता है और पतंग जमीन पर आ गिरती है । यह उदाहरण यह बताते हैं कि यदि आत्मा को परमात्मा के साथ सघनतापूर्वक जुड़ जाने का अवसर मिल सका तो उसकी स्थिति सामान्य नहीं रहती । तब उसे नर पामरों जैसा जीवन व्यतीत नहीं करना होता । वरन् ऐसे मानव देखते-देखते कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं । इतिहास-पुराण ऐसे देवमानवों की चर्चा से भरे पड़े हैं जिनने अपने अन्तराल को निकृष्टता से विरत करके ईश्वरीय महानता के साथ जोड़ा और देखते-देखते कुछ-से-कुछ बन गये ।

उपासना को आध्यात्मिक प्रगति का आवश्यक एवं अनिवार्य अंग माना गया है । उसके बिना वह सम्बन्ध जुड़ता ही नहीं, जिसके कारण छोटे-छोटे उपकरण बिजलीघरों के साथ तार जोड़ लेने पर अपनी महत्त्वपूर्ण हलचलें दिखा सकने में समर्थ होते हैं । घर में हीटर, कूलर, रेफ्रीजरेटर, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन आदि कितने ही सुविधाजनक उपकरण क्यों न लगे हों पर उनका महत्त्व भी है जब उनके तार बिजलीघर के साथ जुड़कर शक्ति भण्डार से अपने लिए उपयुक्त क्षमता प्राप्त करते रहने का सुयोग बिठा लेते हों । उपासना का तत्व ज्ञान यही है । उसका शब्दार्थ है—उप+आसन, अर्थात् अति निकट बैठना । परमात्मा और आत्मा को निकटतम लाने के लिए ही उपासना की जाती है । विशिष्ट शक्ति के आदान-प्रदान का सिलसिला इसी प्रकार चलता है।

उपासना के दो पक्ष हैं एक कर्मकाण्ड, दूसरा तादात्म्य । दोनों शरीर एवं प्राण की तरह अन्योन्याश्रित एवं परस्पर पूरक हैं । एक के बिना दूसरे को चमत्कार प्रदर्शित करने का अवसर ही नहीं मिलता । बिजली के दोनों तार जब मिलते हैं तभी करेन्ट चलता है । अलग-अलग रहें तो कुछ बात बनेगी ही नहीं । दोनों पहिये धुरी से जुड़े हों और समान रूप से गतिशील हों तभी गाड़ी आगे लुढ़कती है । लम्बी यात्राएं दोनों पैरों के सहारे ही संभव होती हैं, भले ही एक के कट जाने पर उसकी पूर्ति लकड़ी के पैर से ही क्यों न की जा रही हो । दोनों हाथ से ताली बजाने की उक्ति से सभी परिचित हैं । सन्तानोत्पादन में नर और नारी दोनों का संयोग चाहिए ।

ठीक इसी प्रकार उपासना का शस्त्र प्रतिपादित और आप्तजनों द्वारा अनुमोदित माहात्म्य तभी चरितार्थ होता है जब उसका कर्मकाण्ड वाला प्रत्यक्ष और तादात्म्य वाला परोक्ष पक्ष समान रूप से संयुक्त सक्रिय होते हैं । जप, ध्यान, प्राणायाम के उपासनात्मक कर्मकाण्डों का स्वरूप सभी को विदित है । जिन्हें उस जानकारी में कुछ कमी हो वे अपनी स्थिति के अनुभवी मार्गदर्शक से परामर्श अथवा प्रामाणिक ग्रन्थ का अवलोक करके उसका समाधान निर्धारण कर सकते हैं, बड़ी और महत्त्वपूर्ण बात 'तादात्म्य' है । उसे जीवन सत्ता में प्राण का स्थान मिला है । कर्मकाण्ड तो काय कलेवर की तरह उपकरण ही कहे जाते हैं । प्रहार तो तलवार ही करती है, वस्तुतः युद्ध मोर्चे को जिताने में वह लौह खण्ड उतना चमत्कार नहीं दिखाता जितना कि प्रत्यक्ष न दीख पड़ने वाला पराक्रम, साहस । ठीक इसी प्रकार उपासना के कर्मकाण्ड पक्ष का तलवार जैसा चमत्करी प्रतिफल देखना हो तो उसके पीछे 'तादात्म्य' का भाव समर्पण नियोजित किये बिना काम चलेगा हीं नहीं ।

उपासनात्मक कर्मकाण्डों में विधि-विधान का स्वरूप प्रज्ञा परिजनों में से सभी जानते हैं । स्थान, पूजा उपकरण, शरीर-वस्त्र आदि की शुद्धि के अतिरिक्त मन, बुद्धि और अन्तःकरण की शुद्धि तथा इन्द्रियों-अवयवों को पवित्र रहने की प्रेरणा देने के लिए आचमन-न्यास आदि किये जाते हैं । पवित्रता के प्रतीक जल और प्रखरता के प्रतिनिधि दीपक या किसी अनय विकल्प का अग्नि स्थापन किया जाता है । समझा जाना चाहिए कि आत्मिक प्रगति के लिए सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि सज्जनतापरक सद्गुणों की जितनी आवश्यकता है ठीक उतनी ही संयम, साहस, पराक्रम एवं संघर्ष के रूप में अपनाई जाने वाली तपश्चर्या का भी महत्त्व है । पवित्रता और प्रखरता का समन्वय ही पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचता है । मात्र संतसज्जन बने रहने और पौरुष को त्याग कर बैठने पर तो कायरों और दीन दुर्बलों जैसी दयनीय स्थिति बन जाती है । मध्यकाल की भक्तचर्या ऐसे ही अधूरेपन से ग्रसित रहने के कारण उपहासास्पद बनती चली गई है । कर्मकाण्डों के विधि-विधान तादात्म्य की चेतना उत्पन्न करने एवं प्रेरणा देने के लिए ही विनिर्मित हुए हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तादात्म्य अर्थात् भक्त और इष्ट की अन्तःस्थिति का समन्वय एकीकरण । दूसरे शब्दों में, ईश्वरीय अनुशासन के अनुरूप जीवनचर्या का निर्धारण । परब्रह्म तो अचिन्त्य है पर उपासना जिस परमात्मा की की जाती है वह आत्मा का ही परिष्कृत रूप है । वेदान्त दर्शन में उसे सोऽहम्-शिवोऽहम्-तत्वमसि-अयमात्मा ब्रह्म आदि शब्दों में अन्तःचेतना के उच्चस्तरीय विशिष्टताओं से भरे-पूरे उत्कृष्टताओं के समुच्चय को ही परमात्मा कहा गया है, उसके साथ मिलन का—तादात्म्य का स्वरूप तभी बनता है जब दोनों के मध्य एकता एकात्म स्थापित हो । इसके लिए साधक अपने आपको कठपुतली की स्थिति में रखता है और अपने अवयवों में बँधे को बाजीगर के हाथों सौंप देता है । दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर देने वाला खेल इस स्थापना के बिना बनता ही नहीं । आत्मा को परमात्मा की उच्चस्तरीय प्रेरणाएँ अपनाने और तदनुरूप जीवनचर्या बनाने पर ही उपासना का समग्र लाभ मिलता है ।

लकड़ी और अग्नि की समीपता का प्रतिफल प्रत्यक्ष है । गीली लकड़ी आग के पहुँचते-पहुँचते अपनी नमी गँवाती और उस ऊर्जा से अनुप्राणित होती चली जाती है । जब वह अति निकट पहुँचती है तो फिर आग और लकड़ी एक स्वरूप एक जैसे हो जाते हैं । साधक को भी भाव समर्पण करके ईश्वरीय अनुशासन के साथ अपने आपको एक रूप बनाना पड़ता है । चंदन के समीप वाली झाड़ियों का सुगन्धित हो जाना, स्वाँति बूँद के संयोग से सीप में मोती पैदा होना, पारस छूकर लोहे का स्वर्ण बनना, नाले का गंगा में मिलकर गंगा जल बनना, पानी का दूध में मिलकर उसी भाव बिकना, बूंद का समुद्र में मिलकर सुविस्तृत हो जाना, जैसे अगणित उदाहरण हैं जिनके आधार पर यह जाना जा सकता है कि भक्त और भगवान की एकता उपासना का स्तर क्या होना चाहिए । सृष्टि के आदि से अद्यावधि सच्चे भक्तों में से प्रत्येक को ईश्वर के शरणागत होना पड़ा है । आत्म समर्पण का साहस जुटाना पड़ा है । इसका व्यावहारिक स्वरूप है ईश्वरीय अनुशासन को उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तृत्व को अपनी विचारणा एवं कार्य पद्धिति से अनुप्राणित करना । जो इस तत्व दर्शन को जानते-मानते और व्यवहार में उतारते रहते हैं उन सच्चे ईश्वर भक्तों को सुनिश्चित रूप से वे लाभ मिले हैं जिन्हें उपासना की फल श्रुतियों के रूप में कहा जाता रहा है । पत्नी-पति को आत्म समर्पण करती है—अर्थात् उसकी मर्जी पर चलने के लिए अपनी मनोभूमि एवं क्रिया पद्धति को मोड़ती चली जाती है । इस आत्मसमर्पण के बदले ही वह पति के वंश, गोत्र, यश, वैभव की उतराधिकारिणी ही नहीं अर्धाङ्गिनी भी बन जाती है । समर्पणविहीन कर्मकाण्ड तो एक प्रकार का वेश्या व्यासाय या चिह्न पूजा जैसा निर्जीव ढकोसला ही माना जायेगा । भक्त भगवान के अनुरूप चला जाता है और अन्ततः नर-नारायण, पुरुष-पुरुषोतम, भक्त-भगवान की एकरूपता का स्वयं प्रमाण बनता है । देवात्माओं में परमात्मा स्तर की क्षमताएँ ही उत्पन्न हो जाती हैं । इन्हीं को ऋद्धि-सिद्धियाँ कहते हैं ।

प्रज्ञा परिजनों को मूर्धन्य भूमिका निभाने के लिए आत्म शक्ति की प्राण ऊर्जा का बड़ी मात्रा में संचय करना होगा । यह परमात्मा से ही उसे मिलेगी । अस्तु उसे उपासना के लिए सच्चे मन से साहस जुटाना और प्रयास करना चाहिए । जीवनचर्या में उसे निष्ठापूर्वक सुनिश्चित एवं मूर्धन्य स्थान देना चाहिए । कर्मकाण्ड के लिए जितना भी समय निकाला जाय, उसे नियमित और निश्चित होना चाहिए । व्यायाम, औषधि सेवन, अध्ययन आदि के लिए समय भी निर्धारित किये जाते हैं और उसकी मात्रा का सीमा बन्धन भी रखा जाता है । यदि इन प्रसंगों में मन की मौज बरती जाय, समय और मात्रा की उपेक्षा करके जैसा मन वैसा करने की स्वेच्छाचारिता अपनाई जाय तो पहलवान-विद्वान् बनने और निरोग होने की इच्छा पूरी हो ही नहीं सकेगी । हर महत्त्वपूर्ण कार्य में नियमितता को प्रमुखता दी जाती है । जो किया जाता है उसमें समूचे मनोयोग का नियोजन किया जाता है । उपासना के संदर्भ में भी वही किया जाना चाहिए । अस्तता बनी रहेगी तो अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति अति कठिन हो जायेगी ।

युग सन्धि की अवधि में सभी प्रज्ञा परिजनों को न्यूनतम तीन माला गायत्री जप प्रातः काल नित्य कर्म से निवृत्त होकर करने के लिए कहा गया है । जप के साथ प्रभातकालीन सूर्य का दर्शन और उस सविता देवता की स्वर्णिम किरणों का स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों में प्रकाश कराने का ध्यान भी करते चलना चाहिए । शरीर, स्थान और उपकरणों की स्वच्छता के अतिरिक्त, मन, बुद्धि, चित्त की स्वच्छता के अतिरिक्त, मन, बुद्धि, चित्त की स्वच्छता के लिए आचमन, प्राणायाम और न्यास कृत्य करने का विधान है । सामान्य प्राणायाम तो रेचक, कुम्भक, पूरक द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ही सम्पन्न हो जाता है, पर उसमें विशेषता लानी हो तो उसे प्राणाकर्षण स्तर का विकसित कर लेना चाहिए । इन पंक्तियों में उसे संक्षिप्त ही लिखा जा रहा है क्योंकि अधिकांश परिजन उसे पहले से ही जानते हैं । जो नहीं जानते उनके लिए थोड़ी-सी पंक्तियों के निर्देशन से काम नहीं चलेगा । उन्हें इसे समीपवर्ती किसी निष्णात से—'गायत्री महाविज्ञान'—से जानना होगा या शान्तिकुञ्ज से पत्र व्यवहार करके अपनी वर्तमान मनःस्थिति के अनुरूप साधनाक्रम का निर्धारण करना होगा । स्पष्ट है कि साधक के उत्तर और प्रवाह को ध्यान में रखते हुए साधनाक्रम भी चिकित्सा उपचार की तरह आवश्यकतानुसार समय-समय पर बदलने होते हैं । शान्तिकुञ्ज को गायत्री तीर्थ के रूप में इन्हीं दिनों इसी प्रयोजन के लिए परिणित किया गया है ताकि हर साधक की स्थिति एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उसके लिए विशेष निर्धारण किये जा सकें और जो बताया गया है उसका प्रारम्भिक अभ्यास प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में ही सही कर लेना सम्भव हो सके ।

सामान्यतया हर प्रज्ञा परिजन को युग सन्धि की वेला में अपनी उपासना को नैष्ठिक, नियमित एवं समग्र बना लेना चाहिए । तीन माला का गायत्री जप, गुरुवार को जिस स्तर का बन पड़े उपवास, ब्रह्मचर्य, महीने में एक बार अग्नि होम का न्यूनतम साधना क्रम तो चलाना ही चाहिए । इसके अतिरिक्त अपने भावना क्षेत्र को उत्कृष्टताओं के समुच्चय—परमात्मा के साथ तादात्म्य स्थापित करने का निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए । भावना विचारणा और क्रिया प्रक्रिया में जितनी अधिक उत्कृष्टता आदर्शवादिता का समावेश संभव हो सके, उसके लिए उपाय खोजने और प्रयत्न करने में सतत संलग्न रहना चाहिए । भजन कृत्य और तादात्म्य की उभयपक्षीय प्रक्रिया उपासना को समग्र बनाती है और अपना प्रत्यक्ष प्रतिफल हाथों हाथ प्रस्तुत करती है ।

जीवन को सार्थक बनाने का सही सुयोग

मानवीय मस्तिष्क जीवन भर अनेकानेक प्रकार के ताने-बाने बुनता रहता है । शरीर भी कुछ न कुछ उठा-पटक जैसी हलचलें करने में हर घड़ी लगा रहता है । उसके सामने बाह्य जगत की अगणित समस्याएँ अड़ी-खड़ी रहती हैं और उन्हीं को सुलझाने में, इच्छानुरूप हल निकालने में समूचा समय गुजर जाता है । इतने पर भी यह देखा जाता है कि कदाचित् ही मनोरथों में से किसी का यत्किंचित् अंश ही किसी के हाथ लगता है । अधिकांश तो खाली हाथ आते और खाली हाथ ही लौट जाते हैं । असन्तोष, विक्षोभ और उन्माद ही अपने-अपने रंग चढ़ाते और मजे चखाते रहते हैं । सुर दुर्लभ मनुष्य जीवन प्रायः इसी प्रकार भ्रमते-भ्रमाते गुजर जाता है और भगवान के दरबार में वापस लौटने पर अपराधी की तरह लज्जा से आँखें-सिर झुकाये पश्चात्ताप से जलते हुए ही जा खड़ा होना होता है ।

बड़ी भूल यह होती रहती है कि संसार भर का ज्ञान समेटने के लिए लालायित व्यक्ति, ज्ञानवान-विद्वान होने का दावा तो करता रहता है, पर ज्ञान इतना भी नहीं पाता कि वह स्वयं क्या है ? किस लिए आया है? क्या करना और कहाँ जाना है ? इस आत्म विस्मृति के कारण वह भुलावों में रहता, छलावों में उलझता, अभावों के लिए रुदन करता-कराता किसी प्रकार मौत के दिन पूरे करता है ।

स्वरूप समझें-लक्ष्य पहचानें

यदि अपने स्वरूप और लक्ष्य की जानकारी रही होती, तो जिन्दगी को दाँव पर लगाकर इस प्रकार न हारना पड़ता, जिस प्रकार आम लोग हारे जुआरी की तरह सब कुछ गँवाकर, भारी उद्विग्नता के बीच विकट दुर्भाग्य का अनुभव करते हैं । अपने को चतुर और समर्थ समझने वालों तक को जब ऐसी दुर्गति के बीच दिन गुजारने पड़ते हैं, तब उन वानरों के सम्बन्ध में क्या कहा जाय, जो पेट और प्रजनन के अतिरिक्त और कुछ सोच या कर ही नहीं पाते ? जिन्हें कोल्हू की तरह पिलते और पिलाते रहना ही भाग्य समझकर किसी प्रकार जीवित रहना पड़ता है। आत्मबोध के अभाव में, दिशाज्ञान से रहित उड़ने वाली पतंग की तरह, कुछ देर उचकने-मचकने के उपरान्त धराशायी होना और पानी के बबूले की तरह अपने अस्तित्व का अन्त करना पड़ता है ।

समझा जाना चाहिए कि मनुष्य जीवन, ईश्वर की विभूति-वैभव में सबसे ऊँचे दर्जे की अनुकम्पा-सम्पदा है । इस कलाकृति को उसने बड़े अरमानों के साथ सँजोया है । उसे सृष्टि का मुकुटमणि और अपना राजकुमार घोषित किया है । इसी के अनुरूप उसे ऐसा शरीर, ऐसा मानस और इतना वैभव प्रदान किया है कि वह उसके सहारे विश्व उद्यान को सँभालने-संजोने का पुण्य परमार्थ करने की अतिरिक्त उत्कृष्टता का परिचय देते हुए, देव मानवों जैसा जीवन जी सके । उदात्त दृष्टिकोण अपनाकर स्वयंम स्वर्गीय भाव संवेदनाओं का रसास्वादन करता रहे । पर इसे दुर्भाग्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही कहना चाहिए कि वह पथ भूले बनजारे की तरह कंटीली झाड़ियों में उलझता, पग-पग पर ठोकरें खाता किसी प्रकार समय गुजारता है । भूल-भुलैया में जिसे उलझना पड़ रहा है, उस मृग-तृष्णा में भटकते, थकते, खोजते ही दम तोड़ना पड़ता है । कई तो और भी निकृष्ट दुष्टता पर उतरते देखे गए है । उन्हें मरघट के प्रेत-पिशाचों की तरह जलने-जलाने, डरने-डराने वाली दुष्टता और भ्रष्टता को चरितार्थ करते देखा जाता है । जिस प्रयोजन के लिए देव-मानव स्तर का मनुष्य जीवन किसी महान सौभाग्य की तरह उपलब्ध हुआ था, उसकी ऐसी बर्बादी पर-ऐसा अनर्थ बन पड़ने पर, दाता और गृहीता दोनों को अपार कष्ट सहना पड़ता है ।

प्राप्त का दुरुपयोग न होने दें

खजांची, उच्च अधिकारी अपने अधिकार क्षेत्र में बहुत कुछ सँजोए रहते हैं; पर वह सारा वैभव, नियुक्तिकर्ता द्वारा निर्धारित किए प्रयोजनों के लिए ही होता है । यदि उनमें से कोई, हस्तगत वैभव को मनमर्जी से स्वार्थ प्रयोजन के लिए खर्च करने लगे, तो समझना चाहिए कि अब इसे भर्त्सना ही नहीं प्रताड़ना भी सहनी पड़ेगी । पदच्युत होकर अप्रामाणिक लोगों की तरह तिरस्कृत होते हुए भी भटकना पड़ेगा । इतनी छोटी बात भी जो अपने सम्बन्ध में न सोच सके और दुनिया भर की जानकारी बटोरने का घमण्ड करते हुए बुद्धिमान होने का अहंकार जताता रहे, तो उसे मूढ़मति के अतिरिक्त और क्या कहा जाएगा ?

जन्मा, कुछ दिन खेला-कूदा, किशोरावस्था आने पर कल्पना की रंगीली उड़ानें भरना, युवा होते-होते विवाह बंधनों में बंधना, जो बोझ लादा उसे वहन करते रहने के लिए दिन-रात कमाने के लिए खटते रहना, बढाए हुए परिवार की बढ़ती समस्याओं को जिस-तिस प्रकार किसी हद तक सुलझाना, ढलती आयु के साथ अशक्तता और रुग्णता का चढ़ दौड़ना, समर्थ सन्तानों द्वारा समस्त वैभव पर कब्जा जमा लेना, स्वयं को असहाय, अपमानित स्थिति में दिन गुजारने के लिए बाधित होना और रोते कलपते मौत द्वारा दबोच लिया जाना, क्या यही है आम लोगों की नियति ?

इस बीच सुखद सम्भावनाओं की आशा तो जब-तब बँधती रहती है, पर उसकी झलक-झाँकी तो क्षण भर के लिए सामने प्रकट, हस्तगत होने से पहले ही तिरोहित हो जाती है । तृष्णा अपनी जगह ज्यों की त्यों बनी रहती है । एक आकांक्षा पूरी होने से पहले ही दस और नयी उपज खड़ी होती हैं । इस प्रकार अभाव और असन्तोष की स्थिति ही बनी रहती है । बाहर के लोगों को सुखी और सम्पन्न दीखने वाला भी, भीतर कितना अशान्त और उद्विग्न है, इस वस्तुस्थिति को कोई क्या समझे ? अपने आस-पास की ही वास्तविकता से कोसों दूर, भ्रान्तियों में उलझे रहकर, अधिकांश लोगों से तो आत्म समीक्षा तक नहीं बन पड़ती ।

जिन्दगी का बोझ तो किसी प्रकार वहन कर लिया जाता है; पर उसके साथ अपने को, विशाल विश्व को और भारी अरमानों के साथ हमें निहाल करने वाले स्रष्टा को क्या मिला ? इस प्रकार विचार करने पर एक ही उत्तर प्रतिध्वनित होता है, कि जो सुयोग-सौभाग्य उपलब्ध हुआ था, वह जलने-भुनने पर उठने वाले काले धुएँ की तरह कुछ बना तो सही; पर अदृश्य अन्तरिक्ष में एक विस्मृत तथ्य बनकर न जाने कहाँ तिरोहित हो गया ?

बात बर्बादी तक ही होती, तो भी किसी प्रकार उसे सहा जा सकता था; पर पतन और पराभव की, अपयश-असन्तोष की बोझिल पाप-पिटारी भी सिर पर लदती है, और वही साथ जाती है । यह वस्तु स्थिति जब समझ में आती है, तभी अपने द्वारा ही अपना अनर्थ बन पड़ने पर, इस चौंकाने वाली बात का अनुभव होता है कि भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ सीधे ढंग से पूरी नहीं हो सकतीं । इस संसार में मात्र इतनी साधन-सामग्री है कि सभी लोग मिल-बाँटकर खा सकें और समता एवं एकता अनुभव करते हुए, हँसते-हँसाते जी सकें । किन्तु जिन पर बड़प्पन बटोरने की हविश चढ़ी है, जो इन्द्र से कम शक्तिवान और कुबेर से कम सम्पन्न नहीं रहना चाहते; उन अतिवादियों के लिए मात्र एक ही काम शेष रहता है—अनाचार के अवलम्बन का । दीवार ऊँची उठानी हो तो कहीं न कहीं से मिट्टी खोदनी पड़ेगी, गड्ढा बनेगा । अनेकों को अभाव के गर्त में धकेले बिना कोई सुसम्पन्न नहीं बन सकता । महत्त्वाकांक्षी तो सर्व साधारण की तुलना में बहुत बड़ा रहना चाहता है । इस तृष्णा की सुरसा को तृप्त तो कोई नहीं कर पाया, पर इस विभ्रम में अपना और दूसरों का अहित इतना अधिक कर लेता है, कि उस असीम ललक-लिप्सा को मात्र धिक्कारा ही जा सकता है । भले ही कुछ चाटुकार चापलूस उस अनर्थ संचय को सौभाग्य और पराक्रम कह कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बखानते रहें; भले ही कोई अपने को दूसरों से बढ़कर दिखाता अथवा स्वयं के गौरव का उपहासास्पद बखान करता रहे ।

यही है वह समूचा भ्रम-जंजाल, जिसमें उलझकर जीवन सम्पदा को फुलझड़ी जैसा कौतुक-कौतूहल मात्र बनकर रह जाना पड़ता हो । नशेबाजों जैसी अर्धविक्षिप्तता जब तक सिर पर चढ़ी रहती है, तब तक तो कुछ पता ही नहीं चलता कि अपने ही हाथों अपने ऊपर कितना अनर्थ लादा जा रहा है; पर जब आँख खुलती है, तब बहुत देर हो चुकी होती है। तब न तो पीछे लौटना बन पड़ता है और न सुधार करके नये सिरे से गिनती गिनते ही बन पड़ता है ।

मनुष्य जीवन की सम्पदा निरर्थक विडम्बनाओं में गँवा देने पर, भावी संभावनाएँ घोर संकट से भरी पूरी ही सामने आ खड़ी होती हैं । चौरासी लाख योनियों में फिर से कष्ट-साध्य परिभ्रमण, पापों के दण्डों से भरी पूरी लम्बे समय की नारकीय यातना, सताए बहकाए गए लोगों की अभिशाप भरी हाय, अपयश की लम्बे समय तक चलने वाली भर्त्सना, बस इतना भर शेष रह जाता है । जीवन की पूर्णाहुति हो जाने पर, पीछे के लिए क्या बुद्धिमानी, पुरुषार्थ-परायणता और सफलता इसी समूचे जाल-जंजाल को कहते हैं ? इतने पर भी मूर्खों को लज्जित होना तक आवश्यक प्रतीत नहीं होता और मरते-मरते भी मूँछें मड़ोरते और शेखी बघारते रहते हैं ।

विवेक का संबल लें

अच्छा होता यदि सघन अंधकार में भटकते हुए जीवन धर्म को कहीं से प्रकाश की एक किरण हस्तगत होने का सुयोग बनता और भ्रान्तियों की भयानकता से उबरने का सुयोग प्राप्त हो पाता । अपने सम्बन्ध में विचार करने और जो बचा है, उसका सही सदुपयोग करके कुछ तो बना लेने का परामर्श प्राप्त होता; पर वह भी कहाँ बन पाता है । कदाचित् कहीं से उपयोगी सुझाव उभरता है, तो उसे अनसुना कर दिया जाता है । प्रकाश की ओर से मुँह मोड़ लिया जाता है । इस दयनीय-दुर्मति और उसके साथ जुड़ी हुई दुर्गति का आँकलन करने वाला विवेक "हा-हन्त"—कहकर, पेट में घूँसा मारकर, मुँह को हाथों में छिपाकर किसी कोने में जा बैठता है । जहाँ लाभ को हानि और हानि को लाभ समझने की सनक ठंडे उन्माद की तरह सिर पर सवार हो रही हो, वहाँ कोई करे भी क्या ? कहे भी क्या ?

इस भौंडे संसार में ऊपर से नीचे गिराने का ही प्रचलन है, हर वस्तु ऊपर से नीचे गिरती है । आकाश में विचरने वाली उल्काएँ तक जमीन में आ गिरती हैं। ऊँचाई में उड़ने वाले बादल तक गुरुत्वाकर्षण से खिंचकर जमीन पर आ गिरते और धूल चाटते देखे जाते हैं । आदम-हव्वा तक ऊपर से नीचे कूद पड़े थे। हिमालय की बर्फ पिघल कर गहरे गड्ढों वाली नदी बनकर ही खारे समुद्र में जा मिलती है, जिसका पानी पशु-पक्षी तक नहीं पीते । यही है इस संसार का पतनोन्मुख प्रचलन, जिसका अनुसरण करके लोग अधोगामी चिन्तन और प्रयास अपनाते हैं । ऐसे ही लोग बड़ी संख्या में पाये और अपने इर्द-गिर्द मक्खी-मच्छरों की तरह विद्यमान दिखाई पड़ते हैं । इन बहुसंख्यकों का अनुकरण करके भला कोई अपना क्या हित साधन कर सकता है ? उनके प्रश्न भी ऐसे ही अधोगामी ही होते हैं । तथा, कथित स्वजन-सम्बन्धी भी ऐसे ही सुझाव देते और आग्रह करते देखे जाते हैं । उनका बुलावा अपने जैसी काक मंडली में आ बैठने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता । अपने संचित कुसंस्कार भी उसी कीचड़ में लौट चलने के लिए प्रेरित करते हैं, जिनमें मुद्दतों रहना पड़ा । दूसरे अधिकांश लोग भी अन्धी भेड़ों की तरह उसी दिशा में बढ़ते चले जा रहे हैं ।

सोचा अपने स्वयं में भी जाना चाहिए । अपने स्वयं के भूत, वर्तमान और भविष्य से भी ज्ञान उपलब्ध करना चाहिए । देखना अधोगामियों को ही नहीं चाहिए, वरन् वायु और अग्नि की तरह ऊपर की दिशा में ही बढ़ने वालों पर भी ध्यान देना चाहिए । नजर उठाकर उस ओर भी निहारना चाहिए, जिस दिशा-धारा को महामानवों ने अपनाया और उत्कृष्ट आदर्शवादिता पर चलते हुए पीछे वालों के लिए ऐसा मार्ग छोड़ा है, जिसका अनुकरण करने पर अपने को और साथी सहचरों को भी धन्य बनाया जा सके । समझदारी यदि साथ दे सके, तो पहुँचा इस निष्कर्ष पर जाना चाहिए कि पतन से विमुख होकर उत्थान का मार्ग अपनाना ही श्रेयस्कर है ।

नाविक अपने को, अपनी नाव को उसमें बैठे यात्रियों को खेकर इस पार से उस पार पहुँचाता है । क्या उस स्तर का मनोरथ अपने भीतर नहीं उठ सकता ? क्या नर-पामरों जैसी दुर्गन्ध भरी जिन्दगी जीने की अपेक्षा ऊपरी लोक में रहने वाले देवताओं की स्थिति में जा पहुँचने के लिए अपने को उल्लासित-तरंगित नहीं किया जा सकता ? क्या इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्तर की साहसिकता और दूरदर्शिता अपना सकना अपने लिए संभव नहीं हो सकता ?

यह सब भी अपने ही हाथ की बात है । जिसे अपने भाग्य का निर्माता माना गया है, वह उत्थान-पतन में से किसी को भी चुन सकता है । स्वर्ग या नरक में से किसी भी दिशा में चल पड़ने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है । परिस्थितियों को दोष देना व्यर्थ है । वे तो मनःस्थिति के अनुरूप ही ठहरती और बदलती रहती हैं । दूसरों का न सही अपना भविष्य निर्माण करने के सम्बन्ध में कोई बात अपनाना और किसी राह पर चल पड़ना, पूरी तरह अपनी आकांक्षा और निर्धारण पर अवलम्बित है ।

जो हाथ में है, उसे संभालें

जो बीत गया, वह यदि अनुपयुक्त रहा हो, तो भी इतनी गुंजाइश अभी भी है, कि शेष का सदुपयोग करके, बन पड़े अनर्थ का परिमार्जन किया जा सके । सूर, तुलसी, अम्बपाली, अंगुलिमाल, अजामिल, अशोक आदि आरम्भ से ही वैसे न थे, जैसे कि विवेक का उदय होने पर पीछे हो गये । नये सिरे से अपनायी गयी श्रेष्ठता इतनी समर्थ होती है कि उसके दबाव से पिछले दिनों बरती गयी अवांछनीयता को दबाया-दबोचा जा सके । जो खाई पिछले दिनों खोदी गयी थी, उसे भरने का प्रयत्न नये सिरे से चल पड़े, तो ऐसा समतल क्षेत्र विनिर्मित हो सकता है, जिस पर कुछ भी उगाया या खड़ा किया जा सके ।

ऊर्ध्वगमन का निश्चय बन पड़ने पर, देवता लम्बे हाथ पसारते और डूबते को उबारने में कोई कुछ भी कोर कसर नहीं रखते हैं । ऊर्ध्वगामियों को भगवान ने सदा सहारा दिया है और असमर्थता तथा असमंजस को समाप्त करने में पूरा-पूरा सहयोग दिया है । दिव्य जीवन जीने के लिए संकल्प उभारने, साहस करने और ऊँची छलाँग लगाने के लिए उद्धत समर्पित लोगों में से किसी को भी मझधार में डूबना नहीं पड़ा है । देवमानवों के उदाहरण इस तथ्य की साक्षी देने के लिए अभी भी इतिहास के पृष्ठों पर यत्र-तत्र वर्तमान हैं। ईसा, बुद्ध, गाँधी, विवेकानन्द, दयानन्द आदि की आरम्भिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि इनसे कोई बड़ी आशा की जाती । पर जब वे उत्कृष्टता अपनाने के लिए तरंगित को उठे, तो दिव्य सत्ता ने उनकी भरपूर सहायता की, कठिनाइयों को सरल बनाया, आवश्यक सुविधा-साधनों को जुटाया और उससे कहीं अधिक आगे पहुँचाया, जहाँ तक उनने पहुँचने की अभिलाषा रखी और योजना बनायी । भागीरथ का गंगावतरण, संकल्प आरम्भ में असंभव जैसा लगता था, पर दैवी सत्ता ने उसे सर्वथा सम्भव करके दिखा दिया, साथ ही उस दिव्य प्रवाह को भगीरथी नाम दिलाकर यह भी प्रसिद्ध कर दिया कि भगीरथ जनक और भागीरथी उनकी पुत्री भर थीं । कदाचित् आरम्भ में भगीरथ ने इस उपलब्धि की कल्पना तक न की होगी । ऐसे उच्च आदर्श के लिए समर्पित होने पर दधीचि, हरिश्चन्द्र जैसे कितने ही बड़भागी बन चुके हैं । हनुमान, अर्जुन ने जो श्रेय प्राप्त किया, उसकी पृष्ठभूमि तभी बनी, जब उनने अपने आप को उत्कृष्टता के चरणों में समर्पित कर दिया । ऋषियों-तपस्वियों की ऋद्धि-सिद्धियों के पीछे यही तथ्य काम करते और चमत्कार दिखाते पाए जाते हैं ।

ईश्वर को मनुहार करके या छुट-पुट उपहार देकर फुसलाया नहीं जा सकता । न उसे छुट-पुट कर्मकाण्डों के सहारे चंगुल में फँसाया जा सकता है । किन्हीं की बाकवाद भी उस सर्वज्ञ को किसी के उद्देश्य के सम्बन्ध में बहका नहीं सकती । व्यक्ति के चिन्तन और कर्म की दिशाधारा ही उसे प्रभावित करने और सहयोगी बनाने में सफल हो सकते हैं । महामनीषियों ने इसी लक्ष्य को समझा और समझाया है ।

वर्तमान सुयोग समझें

इन दिनों एक अद्‌भुत सुयोग-संयोग है, ईश्वर इस संसार की वर्तमान परिस्थितियों का काया-कल्प करना चाहता है । युग परिवर्तन की सुनिश्चित योजना उसने बना ली है । इक्कीसवीं सदी में उस नियोजन का अधिकांश भाग पूरा हो चुका होगा । यही समय है जब भगवान के सहचर होकर उसका हाथ बँटा सकते हैं, वह सौभाग्य प्राप्त कर सकते हैं जो कभी केवट, शबरी, गीध, गिलहरी ने भौतिक दृष्टि से असमर्थ होते हुए भी अपनी भावनाओं को क्रिया रूप में परिणत करके पाया था । उनमें से कोई घाटे में नहीं रहा । सुग्रीव और विभीषण भगवान के सहयोगी बनकर घाटे में नहीं रहे । सुदामा को अपनी बगल में दबी हुई चावल की पोटली तो सौंपनी पड़ी, पर बदले में उसने फूस-छप्पर वाली झोपड़ी को द्वारिका के रूप में परिवर्तित और सुसज्जित पाया । कल-परसों गुजरात वीरपुर के जलाराम बापा अक्षय अन्न भंडार की झोली पा चुके हैं । उनने अपना समूचा साधन और वैभव भगवत् प्रयोजन के लिए समर्पित जो किया था ।

यशोधरा के पुत्र राहुल और अशोक की पुत्री संघमित्रा ने तथागत के संकेतों पर अपने को निछावर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके वह श्रेय पाया, जिसे कदाचित् वे सामान्य जनों जैसा संकीर्ण स्वार्थपरक जीवन जीते हुए किसी प्रकार पा नहीं सकते थे । बुद्ध और गाँधी की सफलताओं के पीछे भी यही तथ्य काम करते हुए देखा जा सकता है । ईश्वरीय शक्ति तथा अनुकम्पा तो मनुष्य मात्र के लिए उपलब्ध रहती है । अर्जुन का रथ हाँकने वाला अभी भी खोजबीन में है कि कोई ऐसा और मिले, जिसका सारथी बनने का उसे सुयोग मिल सके । देवताओं के संयुक्त अनुदानों का संग्रह, महाकाली दुर्गा के रूप में प्रकट हुआ था, उसने महिषासुर जैसे दुर्दान्तों को धूल चटाने और देवताओं को अपने पद पर पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया था । उसी शक्ति को, सामयिक सुधार-परिवर्तन करने के लिए ऐसे देव मानवों की आवश्यकता पड़ रही है, जिन्हें समवेत करके पाण्डवों की तरह मोर्चे पर अड़ाया और महाभारत जीतने का श्रेय दिलाया जा सके । महाकाल की इस पुकार को सुनने, समझने और अपनाने में आज के दूरदर्शियों में से किसी को भी पीछे नहीं रहना चाहिए ।

सुर दुर्लभ मनुष्य जीवन को धन्य बनाने का सनातन राजमार्ग सभी के लिए सदा खुला रहा है; पर इस प्रकार की सफलता के लिए यह अधिक सरल और अधिक सुनिश्चित सुयोग आ उपस्थित हुआ है । भगवान की योजना में सहयोगी होकर शान्ति कुञ्ज की कार्यपद्धति अपने को धन्य बना रही है । किसी के साथ जुड़कर तिनकों का सम्मिलित रूप मजबूत रस्सों के रूप में विनिर्मित हो सके, ऐसी ही श्रेय साधना का, जीवन को धन्य बनाने का ठीक यही पर्व-मुहूर्त है । इसे चूका न जाय, तो ही ठीक होगा ।

या तो अभी-या फिर कभी नहीं

प्रज्ञा परिजनों की गहराई एवं ऊँचाई को इन दिनों इस आधार पर परखा जा रहा है कि वे आड़े समय में निजी व्यामोह पर कितना अंकुश लगा सके और युग धर्म के निर्वाह में कितना अनुदान प्रस्तुत कर सके । व्यस्तता और असमर्थता जैसी बहानेबाजी में कोई सार नहीं । मनुष्य जिस भी कार्य को महत्त्व दे वही प्रमुख हो जाता है और हजार काम छोड़कर उसे करने में लगता, साधन जुटाता एवं ताल-मेल बिठाता है । जो बात गले नहीं उतरती या बेगार लगती है उसे ही बेगार भुगतने की तरह किसी प्रकार टरकाया जाता है। व्यस्तता, चिन्ता, तंगी, अस्वस्थता, घर वालों की असहमति आदि का आश्रय लेकर लोग आदर्शवादी प्रयोजनों में अपनी असमर्थता व्यक्त करते तो हैं पर वह होती थोथी ही है । जहाँ आवश्यकता समझी जाएगी और आकांक्षा होगी वहाँ एक प्रकार न सही दूसरी प्रकार पटरी बैठने की स्थिति बन ही जाती है ।

इन दिनों समयदान प्रमुख है, अंशदान गौण । प्रतिभाएँ ही अपने श्रम, समय एवं मनोयोग को लगाकर महान कार्य सम्पन्न करती रही हैं । इस विषम वेला में भी यही होना है । प्रज्ञा परिवार की जाग्रत आत्माओं को समयदान के लिए अवसर खोजना ही होगा । अन्यथा वे अवसर निकल जाने पर बेतरह पछताते ही रहेंगे । अर्द्ध मृतकों की बात है वे मूर्छना या खुमारी का बहाना लेकर भी अपनी सफाई दे सकते हैं और दयनीय मनःस्थिति के कारण भर्त्सना से छुटकारा पा सकते हैं किन्तु जाग्रतों के लिए तो वह अवसर भी नहीं है । चोरी होने पर सबसे अधिक पूछताछ और खींचतान उसी की होती है जो पहरे पर नियुक्त है । प्रज्ञा परिजनों की स्थिति वस्तुतः युग प्रहरियों की ही है, जिसका स्तर एवं वेतन स्वल्प होने पर भी दायित्व अत्यधिक बड़ा है । सोये हुओं की सुरक्षा उसी को अकेले संभालनी पड़ती है ।

समयदान किस प्रयोजन के लिए ? उसका सैद्धान्तिक उत्तर तो सर्वविदित है मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग अवतरित करने के लिए । इसी को लोक मानस का परिष्कार एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन भी कह सकते हैं । इसी एक प्रयास पर समस्त समस्याओं का समाधान निर्भर है । इस निमित्त क्या किया जाना चाहिए ? इसके उत्तर में इतना एक वाक्य कह देना ही पर्याप्त होगा कि प्रज्ञा अभियान के दैवी निर्धारण में अपने अंशदान जोड़ देने भर से काम चल जायेगा । अलग-अलग योजना बनाने और अपने-अपने ढंग के कार्यक्रम खड़े करने से वह कार्य न हो सकेगा जो संयुक्त प्रयास से संभव है । यहाँ देवालयों की संयुक्त शक्ति से विनिर्मित असुर निकंदनी दुर्गा के अवतरण की पौराणिक कथा सहज ही स्मरण हो आती है । अपनी ढपली अपना राग गाते रहने से सहगान का आनन्द कहाँ मिलता है । ढाई ईंट की मस्जिद चुनने, डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाने वाले दिवास्वप्न कभी पूरे नहीं होते । महान कार्य सदा महान योजनाओं के अविच्छिन्न अङ्ग बनकर महा मानव सम्पन्न करते रहे हैं । बुद्ध और गाँधी के महान अभियान उनके अनुचरों ने एक झण्डे के नीचे एकत्रित होकर एक अनुशासन अपनाकर, एकतापूर्वक सम्पन्न किए । यदि व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं से प्रेरितों की भरमार रही होती अथवा कृपणता, संकीर्णता से वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुदाय घिरे होते तो कदाचित ही उस सफलता की बात सुनने को मिलती जिसकी गौरव गाथा सुनकर कलेजा ढाल बनता और हृदय पुलकित होता है ।

प्रज्ञा अभियान की विशेषता यह है कि उसके निर्धारणों, कार्यक्रमों में हर स्तर का व्यक्तित्व खप सकता है । हर किसी के लिए उसकी स्थिति एवं योग्यता के अनुरूप काम मौजूद है । शर्त एक ही है कोई सच्चे मन से कुछ करना चाहे । ऐसी ही मन बहलाने के लिए बाल कौतुक जैसे बेसिर पूँछ की पूछताछ शङ्का समाधान भर न करता फिरे ।

पिछले दिनों कितने ही लोगों ने विभिन्न अवसरों पर समयदान की प्रतिज्ञायें की थीं । कितनों ने ही वानप्रस्थ लिए थे । कितने ही प्रज्ञा पुत्र का व्रत लेकर गये थे । एक बार स्तर के अनुरूप संसदें बनी थीं और उनमें अनेकों ने अपने को सदस्य बनाया था । इन सबकी एक लम्बी सूची है । रजिस्टरों और फाइलों में लगी हैं । पता नहीं वह मस्खरी थी या उसमें कुछ गहराई सच्चाई भी थी । यदि सच्चाई थी तो उन व्रतशीलों को अपना संकल्प स्मरण करना चाहिए और इस आड़े समय में जबकि उसकी माँग हो रही है तब वचन की पूर्ति में आनाकानी नहीं करनी चाहिए । आदर्शों की चर्चा करते रहने में हर्ज नहीं; पर जब अन्तरात्मा उनके परिपालन का संकल्प करे, तो फिर उत्तरदायित्व यह भी हो जाता है कि वचन का परिपालन भी बने ।

ऐसे अवसरों पर रामायण की यह चौपाई गुनगुनाई जा सकती है, जिसमें कहा गया है—

रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्राण जाय पर वचन न जाई ।।

प्रज्ञा परिवार की परम्परा रघुकुल जैसी रहे तो ही उसकी शान है, अन्यथा वचन का महत्त्व न समझने वाले और कभी भी कुछ भी कह गुजरने वाले समय का तकाजा सामने आने पर ऐसे ही दाँत निपोरने और कंधे मटकाते, गये गुजरे स्तर का परिचय देते हैं । स्मरण रहे अध्यात्म और धर्म के क्षेत्र में श्रद्धा ही सर्वोपरि है । जहाँ निष्ठा न हो वहाँ समझना चाहिए कि कर्मकाण्डों की औंधी सीधी विडम्बना से भी कुछ प्रयोजन बनने वाला नहीं है ।

प्रज्ञा परिजनों में से जिनने भी कभी प्रकट-अप्रकट युग-सृजन में योगदान देने का उत्साह दिखाया हो, उन्हें समझना चाहिए कि उस सङ्कल्प को कर्यान्वित करने का ठीक यही समय है । इसे फिर सभी के लिए टाला नहीं जाना चाहिए । खेती सूख जाने पर वर्षा होने का फिर कोई मूल्य नहीं ।

अगणित कार्यक्रम सामने हैं जिन्हें अपने यहाँ रहकर भी किया जा सकता है । कुछ ऐसे हैं जिनके लिए घर छोड़ना आवश्यक है । जन जागरण की प्रव्रज्या के लिए तथा शान्ति कुञ्ज की स्थानीय गतिविधियों में योगदान करने के लिये तो घर छोड़कर बाहर निकलने से ही बात बनती है । इसके लिए परिवार निर्वाह की समस्या जिनके सामने हो वे उस संदर्भ में मिशन के सूत्र संचालकों से परामर्श कर सकते हैं । किन्तु घर रहकर समीपवर्ती क्षेत्रों में तो अपने अनुदान प्रस्तुत करते रहने में उतनी भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए ।

समयदान के साथ-साथ अंशदान का भी दूसरा पक्ष जुड़ा हुआ है । श्रम प्रमुख तो है पर पर्याप्त नहीं । उसे सार्थक करने के लिए साधन भी चाहिए । इसलिए अन्न-जल की तरह समयदान और साधनदान दोनों से मिलकर ही दो पहियों की गाड़ी चलती है । प्रज्ञा परिवार के सदस्यों से इन दोनों के ही निर्वाह के लिए अनुरोध आग्रह किया जाता रहा है । जो समय न दे सकें तो दूसरों का समय खरीदकर उस कार्य में लगाने के लिए यदि संभव हो तो अपने अंशदान की मात्रा बढ़ा सकते हैं । साधनों के अभाव में भी तो इन दिनों अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम रुके पड़े हैं ।

जिनके मन में पिछले दिनों युग सृजन के महा अभियान में भागीदारी लेने के लिए कभी संकल्प उठे थे या अब उठ रहे हैं, उन सभी से इन पंक्तियों का आग्रह है कि समय की मांग को समझें और जो बन पड़े उसे इन्हीं दिनों पूरा करने की बात सोचें । घर परिवार से निवृत्त निश्चिन्त फिर कभी कुछ करने का मनमोदक कोई न बनाये । सोचना इतना भर चाहिए कि आज की स्थिति में जो किया जा सकता है वह क्या और कितना है ? आज की गिलहरी के बालों जैसी धूलि भी बाद के करोड़ों टन भारी पर्वत की तुलना में अधिक सारगर्भित है ।

भावनाशील प्रज्ञा परिजन अपनी आज की मन:स्थिति और परिस्थिति का उल्लेख करते हुए अपने समयदान, अंशदान की शक्यता का उल्लेख करते हुए शान्ति कुञ्ज से परामर्श प्राप्त करें कि उन्हें कहाँ रहकर क्या कार्य करना है । विचार-विनिमय से हर कोई भावनाशील किसी उपयुक्त निर्णय पर पहुँच सकेगा । ऐसा उल्लेख एवं परामर्श इन्हीं दिनों आवश्यक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सृजन शिल्पी की आचार-संहिता

इमारतों का सृजन सीधा-सादा सा होता है । पुल, सड़कों, बाँधों का निर्माण निर्धारित नक्शे के आधार पर चलता रहता है । पर युगों के नव-सृजन ने अनेकानेक पेचीदगियाँ और कठिनाइयाँ आ उड़ेलीं हैं। कार्य का स्वरूप ही ऐसा है, जिसमें प्रवाह के उलटने के प्रयास, जूझने की विद्या ही प्रमुख बन जाती है । विचारक्रान्ति, युग-परिवर्तन, जनमानस का परिष्कार ऐसे संकल्प हैं, जिनकी पूर्ति में प्राय: उन सभी से टकराना पड़ता है; जो अब तक स्वजन, सम्बन्धी, हितैषी, निकटवर्ती एवं अपने प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत माने जाते थे । इसमें मार-काट न होने पर भी इसे भूतकाल में सम्पन्न हुए महाभारत के समतुल्य माना जा सकता है, भले ही उस टकराहट को दृश्य रूप में न देखा जा सकता हो ।

अभिमन्यु चक्रव्यूह में अकेला ही घिरा पड़ा था, सब दिशाएँ शत्रुओं से अवरुद्ध थीं । ऐसी दशा में भी अर्जुन पुत्र ने समय की महती आवश्यकता और न्याय-नीति को विजयी बनाने की ललक में वह सब कुछ किया, जो उसके बलबूते में था । इस सन्दर्भ में उसे प्राण गँवाने पड़े, पर विजय दुन्दुभि इतिहासकार अनन्त काल तक उसी के यशगान की बजाते रहेंगे । इसी स्तर का साहस उन्हें भी अर्जित करना पड़ेगा, जो अवांछनीयता, मूढ़-मान्यता, लोभ-लिप्सा, संकीर्ण-स्वार्थपरता और निकृष्टता के व्यामोह को चीर कर नव-सृजन का मार्ग बनाना चाहें ।

पहला मोर्चा-अपना आपा

तथ्यों का पर्यवेक्षण अपने आप से आरम्भ करें । जन्म-जन्मान्तरों के संचित पैशाचिक स्तर के कुसंस्कार, निकटवर्ती क्षेत्र में अधिकांश लोगों द्वारा अपनाये गये अनाचारियों के प्रभाव में आकर बहुत कठोर हो जाते हैं, उन्हें अपनाई गई हठवादिता से विरत करना, आदर्शवादी परामर्शों के आधार पर भी टेढ़ी खीर हो जाता है । जब अधिकांश लोग पैसा और वाह-वाही लूटने के अतिरिक्त और कोई तीसरी बात सोचते ही नहीं, तो हमें ही एकाकी दिशा-निर्धारण की बात सोचकर प्रस्तुत समुदाय के सामने क्यों उपहासास्पद बनना चाहिए ? यह प्रश्न पूछती है, वह तथाकथित समझदारी, जो आम लोगों पर पूरी तरह हावी है ।

आदर्शों की बात कहने-सुनने भर की बात समझी जाती है । कथा कहने, सुनने भर से स्वर्ग-मुक्ति मिल जाने वाली मान्यता ही सरल मालूम पड़ती है । कठोर कार्य के साथ सम्बन्ध जोड़ने से सभी घबराते और काँपते देखे जाते हैं । फिर अपना मार्ग एकाकी निश्चय के आधार पर किस प्रकार अपनाते बने ? 'एकला चलो रे' गीत गाने भर में तो उत्साहवर्धक प्रतीत होता है; पर उसे कर दिखाने में नानी याद आती है । अपने निज के कुसंस्कार ही लोभ, मोह और अहंकार के हथकड़ी-बेड़ी जैसे बन्धन बनकर कस जाते हैं । वे यथा-स्थिति में पड़े रहने के लिए ही बाधित करते हैं ।

इन बंधनों को तोड़ न भी सकें, तो उन्हें कम से कम शिथिल तो करना ही पड़ता है । अन्यथा न संकल्प उभरता है और न ऐसा प्रयास करते बन पड़ता है, जिसके सहारे नव-सृजन के संदर्भ में कुछ कहने लायक पराक्रम करते बन पड़े ? प्रथम कठिनाई यह कूपमण्डूक बनाये रहने वाली स्थिति ही है । उछल कर सुविस्तृत विश्व-वसुधा के साथ जुड़ जाने की योजना तक गले नहीं उतरती, फिर उस स्तर का पराक्रम करते किस प्रकार बन पड़े ? उदात्त जीवन जीने और ऊँचे लक्ष्य तक पहुँचने वाले मार्ग पर कदम बढ़ाने की बात कैसे बने ? जब समूचा समय और साधन अभ्यस्त विडम्बना में ही खप जाते हैं, तो वह कैसे करते बन पड़े, जिसके लिए महाकाल का आमन्त्रण हुंकारने और युगधर्म को अपनाने के लिए अन्तरात्मा में दबाव डालता है । जो अपने भीतरी असमञ्जस से निपट लेता है, अपनी राह आप बनाने के लिए कटिबद्ध हो जाता है, उसी के लिए यह सम्भव है कि "**क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं, त्यक्त्वोतिष्ठ परंतप**" वाले गीता-प्रवचन को जीवन में उतार सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरा मोर्चा-स्वजनों का

यह प्रथम मोर्चे पर जूझने की बात हुई । इससे बिल्कुल सटा हुआ ही दूसरा मोर्चा है, जिसे सम्बन्धियों-हितैषियों का परिकर कह सकते हैं । धर्म-धारणा और सेवा-साधना के लिए सब कुछ करने पर उतारू व्यक्ति, इन दिनों अपने तथाकथित स्वजनों को ही सर्वाधिक विरोधी पाता है । आज के वातावरण में हर किसी को सम्पन्नता और विलासिता की सुविधाएँ ही सब कुछ प्रतीत होती हैं । वे अपनी मान्यता के अनुरूप एक ही परामर्श दे सकते हैं कि परमार्थ की कष्ट-साध्य प्रक्रिया से व्यवहारतः कोसों दूर रहना ही लाभदायक है ।

उनकी बात, जो जिस हद तक स्वीकार कर लेता है, उसे उसी सीमा तक स्वार्थरत रहना पड़ता है । परमार्थ की दिशा में आगे बढ़ना उसके लिए उतना ही कठिन हो जाता है । कोई वास्तविक कारण न होते हुए तर्कों, तथ्यों और प्रमाणों का इतना बड़ा जखीरा सामने ला खड़ा किया जाता है कि पिछले दिनों की मित्रता को ध्यान में रखते हुए वह कथन-परामर्श की अभेद्य दीवार बनकर रह जाती है । स्वार्थ के पिंजड़े से बाहर एक कदम भी रखना उस स्थिति में सहन नहीं होता ।

इस दूसरे मोर्चे से निपट सकने का अंगुलि-निर्देश तुलसीदास के उस पत्र से ही मिलता है, जो उन्होंने मीरा को उनके पत्र के उत्तर में लिखा था उसमें कहा गया था कि :

जाके प्रिय न राम वैदेही ।
तजिये ताहि कोटि वैरीसम, यद्यपि परम सनेही ॥
पिता तज्यो प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज वनितन भये मुद मंगलकारी ।।

इस निर्देशन में मीरा ने अपना और समस्त समाज का भला देखा और सभी असमंजसों को निरस्त करते हुए, वे आदर्शवादी को नये सिरे से प्रतिष्ठापित करने के लिए निकल पड़ीं और बदली जैसी अमृत वर्षा करने में जीवन भर निरत रहीं ।

तीसरा मोर्चा-जनमानस का शोधन

तीसरा मोर्चा उस समुदाय के साथ बनता है, जिन्हें अचिन्त्य-चिन्तन से, अनुचित गति-विधियों से पीछे हटने का परामर्श दिया जाता है । वे भी इतने भले कहाँ होते हैं कि भ्रान्तियों के विपरीत जो श्रेयस्कर अनुरोध किया जा रहा है, उसे सहज स्वीकार कर लें। पूर्वाग्रहों से जकड़ी मान्यताएँ और आदतें, वह कुछ भी सुनना-स्वीकारना नहीं चाहतीं, जो अभ्यास में गहराई तक घुसकर बैठ गया है । परामर्श कितना ही तथ्यपूर्ण क्यों न हो, पर नशेबाज के गले वह शिक्षा कहाँ उतरती है कि इस आत्मघाती कुटेव से विरत होने में ही भलाई है । वह परामर्शदाता से तर्क से जीत सकने की सम्भावना देखते हुए कभी-कभी हाँ-हाँ भी कर देता है, पर वह आश्वासन बहकावा भर होता है । नशेबाजी छोड़ने का न उसका मन बनता है और न वैसा साहस उभरता है । ठीक ऐसी ही कठिनाई तब सामने आती है, जब पैर से सिर तक कीचड़ में धँसे हुए लोगों को अपनी स्थिति बदल लेने के लिए कहा जाता है । दुर्बुद्धि ऐसी पिशाचिनी है कि वह जिसे एक बार पकड़ लेती है, उसे आसानी से चंगुल में से छूटने नहीं देती ।

इतना होते हुए युग सृजेताओं के सामने इसके अलावा कोई चारा भी नहीं कि वे अचिन्त्य-चिंतन से लोगों को छुड़ाएँ और कुमार्ग पर चलने से लौटाने का प्रयास करें । यह कार्य प्रत्यक्षतः झंझट भरा है । तर्क, तथ्य, प्रमाण, उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने प्रतिवेदन का औचित्य तो अकाट्य सिद्ध किया जा सकता है; पर उस हठवादिता के लिए क्या किया जाय, जो आम आदमी पर विशेषतया अनपढ़ वर्ग पर पूरी तरह सवार रहती देखी जाती है । ऐसी दशा में उपदेष्टाओं का परामर्श भी अरण्य-रोदन बनकर रह जाता है । बहुतों को बहुत बातें समझाते रहने पर भी लोग आदर्शों की ओर मुड़ने को तैयार नहीं हैं । लाभ को हानि और हानि को लाभ समझने की दृष्टि, जो उनकी परिपक्व हो गई होती है।

सृजन शिल्पी के करने के लिए काम तो अनेकों सामने ही हैं, पर सबसे बड़ा कार्य एक ही होता है, प्रवाह को प्रतिबन्ध-प्रचलन को अमान्य कर सकने वाले लोकमानस का नव-सृजन करना । प्रतिकूलताओं को अनुकूल स्तर की बनाकर दिखाना। युग शिल्पियों को प्रधानतया इस एक ही प्रयत्न में आजीवन निरत रहना पड़ता है । भले ही प्रत्यक्ष क्रियाकलाप परिस्थिति के अनुरूप बदल जाते हों । जब करना यही है, उसका कोई विकल्प हो नहीं सकता, तो नये सिरे से नया निर्धारण करने और नये हथियार सँजोने के लिए कुछ समय वस्तुस्थिति को समझने और उसका उपयुक्त समाधान खोज निकालने की आवश्यकता पड़ेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बड़े काम हलके साधनों के सहारे सम्पन्न नहीं हो पाते । उनके लिए अधिक समर्थ साधन जुटाने होते हैं। बन्दूकों के दाँत खट्टे करने के लिए तोप के गोलों का प्रहार ही विकल्प रहता है । मजदूरों द्वारा न उठ सकने वाले भार को मजबूत क्रेनें उठाती हैं । जिन चट्टानों को हथौड़ों से नहीं तोड़ा जा सकता उन्हें डायनामाइट के कारतूसों से उड़ाना पड़ता है या हीरे के टुकड़े वाले औजारों से छेदना पड़ता है। बड़ी समस्याओं को बड़प्पन की अनेक विशेषताओं से सम्पन्न मस्तिष्क ही सुलझा पाते हैं ।

कार्य के अनुरूप व्यक्तित्व

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इन मोर्चों पर जूझने वालों को असाधारण प्रतिभा का धनी होना चाहिए । समय की विपन्नता को चुनौती देने वाले और उसके स्थान पर सुसम्पन्नता प्रतिष्ठापित करने के लिए जिनने निश्चय किया है, उनका व्यक्तित्व और कर्तव्य ऐसा मजबूत होना चाहिए, जो स्वयं तो डगमगाये नहीं, वरन् प्रतिकूलताओं से मल्लयुद्ध करते हुए पछाड़ सकने वाले बलवान पहलवान की भूमिका निभा सकें । किसी महान प्रयोजन में सफलता का श्रेय हर किसी को मिल नहीं पाता । इसलिए यदि वस्तुतः लक्ष्य साधना हो, तो अर्जुन एवं एकलव्य जैसी लक्ष्य के प्रति ऐसी एकाग्रता सँजोनी चाहिए, जिसमें कोई व्यवधान आड़े न आ सके ।

सृजन शिल्पी को अपना स्तर शब्दवेधी वाण जैसा बनाना चाहिए, जिसे निशाना बेधने के अतिरिक्त और कहीं भटकने जैसी कठिनाई का सामना करना ही न पड़े । मनस्वी ऐसे ही लोगों को कहते हैं । मनस्विता के सहारे वे इन्द्रवज्र और ब्रह्मास्त्र की तरह अभेद्य लक्ष्य-वेध सकने में समर्थ होते रहे हैं ।

मनस्वी के साथ अन्यान्य विभूतियाँ भी आ मिलती हैं । ओजस्वी और वर्चस्वी बनाने वाली सहायक शक्तियाँ उस तक स्वयंमेव खिंचकर चली आती हैं । नदी जितनी गहरी होती है, उसमें उतना ही अधिक पानी भरा पाया जाता है । इतना ही नहीं उस गहराई के अनुरूप ही दूर-दूर तक के नदी-नाले उसी दिशा में बहते-दौड़ते चले आते हैं और आत्म-विसर्जन करके सरिता का वैभव-विस्तार बढ़ाते रहने में अपनी-अपनी भूमिका सम्पन्न करते रहते हैं । यह लाभ उन्हें ही मिलता रहता है, जो सचमुच के मनस्वी, तेजस्वी, व्रतशील, संयमी और संकल्पवान हैं। इन विशेषताओं को अर्जित करने के लिए अपने चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को ऐसा बनाना पड़ता है, जिसके कण-कण में मनोहारी सुगन्ध उभरती रहती है। ऐसे वरिष्ठ व्यक्तित्व, वैचारिक प्रतिकूलता और परिस्थितियों की विकटता से भी निपटने में सफल हो जाते हैं ।

दृढ़ निश्चयी अपनी निज की मानसिकता में घुसी हुई कायरता, क्षुद्रता और लोभ-लिप्सा से निपट लेते हैं। कम से कम इतना तो कर ही लेते हैं कि बाहर वालों को अंगुली उठाने का इतना अवसर न मिले, ताकि अच्छाइयाँ और सेवा भावना प्रख्यात बुराइयों के भार से दब कर धूमिल और निरर्थक हो जायें । संसार में अनेकों दुर्गुणी पिछली भूलों का प्रायश्चित्त करके भावी जीवन में महामानव बन सके हैं । हर बुरा आदमी भी सुधार प्रक्रिया को अपना कर प्रामाणिक ही नहीं श्रद्धास्पद भी बन सकता है । अम्बपाली, अंगुलिमाल, अशोक जैसे असंख्यों के उदाहरण इस सम्भावना को समर्थन देने के लिए विद्यमान हैं ।

जो दूसरों से कहना और कराना है, उसे कार्यान्वित करने के लिए शुभारम्भ अपने आप से ही करना चाहिए और जो निश्चय किया है उस पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ रहना चाहिए । बेपेंदी के लोटे की तरह इधर से उधर लुढ़क कर अपने को उपहासास्पद नहीं बनाना चाहिए । संकल्पों को, निर्धारित निश्चयों को उस दिशा में तो पूरा किया ही जाना चाहिए, जब वे सुधार, संयम जैसे आदर्शवादी पक्ष के साथ जुड़े हुए हों । रामायण की यह चौपाई हर प्रामाणिक व्यक्ति को ध्यान में रखे ही रहना चाहिए जिसमें कहा गया है कि—**"प्राण जाहिं पर वचन न जाई"** । नित नई प्रतिज्ञाएँ करने और जोश ठण्डा होते ही गिरगिट की तरह कुछ से कुछ बन जाने वाले लोग अपनी हँसी कराते और अविश्वास का वातावरण बनाते हैं ।

स्वभाव की शालीनता

युग प्रवर्त्तकों, विचारक्रान्ति के सूत्रधारों का स्वभाव इतना शिष्ट, मृदुल और शालीनता-सम्पन्न होना चाहिए कि जिससे भी बात करनी पड़े, वह मिलने भर से पुलकित हो उठे । उस पर सज्जनता की छाप पड़े और यह मान्यता अनायास ही उभरे, कि व्यक्ति अपने में ऐसे तत्त्व समाविष्ट कर चुका है—जिसके आधार पर सहज सद्भाव की मनःस्थिति बनती है ।

इतनी स्थिति कर लेने के उपरान्त प्रतिकूलता को मोड़-मरोड़ देते हुए, अनुकूलता तक घुमा लाना कुछ कठिन नहीं रह जाता है । संकट तब खड़ा होता है, जब दोनों ही पक्ष ऐंठ-अकड़ में होते हैं, विचार-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विनिमय में ही अपनी बात पर अड़ कर प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेते हैं । ऐसी स्थिति कभी भी, कहीं भी बननी नहीं चाहिए । एक बार में बात बनती न दीख पड़े, तो झगड़कर प्रसंग को समाप्त कर देने की अपेक्षा यह गुंजाइश छोड़ दी जाय, कि भविष्य में समय मिलते ही नये सिरे से, नये दृष्टिकोण से उस पर चर्चा की जा सके । अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में मतभेदों को किसी हद तक दूर करने में ऐसे ही विचार-विनिमय काम देते हैं। इसके लिए जो प्रतिनिधि नियुक्त किये जाते हैं उनमें यह विशिष्टता परखी जाती है कि वह घोर मतभेद के बीच भी सरलता और तरलता की दृष्टि से लोचदार-चलकदार बने रहें और उलझनों को सुलझाने की दिशा में क्रमशः आगे सफल होते रहें । ऐसे ही कूटनीतिज्ञ प्रतिष्ठा पाते और महानीति के लिए अधिकारी समझे जाते हैं ।

नागरिकता, सामाजिकता, सभ्यता, शालीनता का समन्वय ही शिष्टाचार बन जाता है । उसके प्रदर्शन का व्यावहारिक स्वरूप तो क्षेत्रों और वर्गों की स्थानीय प्रचलित परम्पराओं के अनुरूप बनता है, पर उसके मोटे सिद्धान्त दो हैं—एक अपनी नम्रता और दूसरों की प्रतिष्ठा को समुचित रूप से बनाये रहना । उद्दण्डता का, असभ्यता का तनिक सा भी पुट, बनी बात बिगाड़ देता है । प्रतिपक्षियों को अनुकूल बनाना तो दूर, इस कारण अपने समर्थक समझे जाने वाले लोग तक सामान्य बात का बतंगड़ बना देते हैं । युगशिल्पियों को अधिकांश समय जन-सम्पर्क में ही बिताना पड़ता है और मान्यताओं के क्षेत्र में प्रायः अपनी भूमिका इतनी लचीली रखनी पड़ती है कि इच्छित परिवर्तन तो होता रहे, पर उसमें अभद्रता कहीं आड़े न आये । अभीष्ट सफलता का बहुत कुछ श्रेय इन्हीं छोटी-छोटी बातों पर निर्भर रहता है । कलावन्त इसका प्रदर्शन करने से चूकते नहीं ।

प्रामाणिकता अनिवार्य

युग शिल्पी को अपने व्यवहार में दो अन्य बातों का समावेश करना चाहिए, जो देखने में साधारण मालूम पड़ती हैं, पर ऊर्जा-प्रतिक्रिया असाधारण स्तर की होती है । उनमें से एक है—सार्वजनिक पैसे को अत्यन्त पवित्र धरोहर मानकर उसकी एक-एक पाई का इतनी सावधानी से प्रयोग करना कि जाँच करने वाले को इसमें कहीं खोट दिखाई न पड़े । साथ ही अपनी अन्तरात्मा और सर्वसाधारण को यह विश्वास बना रहे कि दान के पैसे में कहीं किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी नहीं हुई है । जिसके भी हाथ में वह धन रहा, उसने सन्तों जैसी निस्पृहता का परिचय दिया है—लोकसेवी द्वारा प्रामाणिकता की दृष्टि से इस प्रसंग में सतर्कता बरती ही जानी चाहिए ।

दूसरा प्रसंग है—नर और नारी के मध्यवर्ती सम्बन्धों का । सार्वजनिक क्षेत्र में नर और नारी मिल-जुलकर ही सामूहिक कार्यक्रमों और आयोजनों को सम्पन्न करते हैं । ऐसी दशा में इस आशंका की गुंजाइश रहती है कि कहीं अनैतिक चिन्तन और आचरण आड़े न आने लगा हो । भावनाओं की पवित्रता तो ऐसे प्रसंगों में अक्षुण्ण रहनी ही चाहिए, पर साथ ही यह भी नहीं भूलना चाहिए कि तरुण और तरुणियों की घनिष्ठता, निकटता और असाधारण सहकारिता भी साधारण जनों की आँखों में खटकती है । उतने भर से आशंकाओं का ऐसा बवण्डर बन पड़ता है, जो बदनामी के स्तर तक पहुँचा देता है । ऐसी दशा में न केवल सम्बन्धित व्यक्तियों को, वरन् उस लक्ष्य को भी भारी क्षति पहुँचती है, जिसके लिए एकत्रित हुआ गया था और मिल-जुलकर काम करने में कुछ अनुचित नहीं माना गया था ।

अपनी दृष्टि और क्रिया कुछ भी क्यों न रही हो, पर लोग तो लोग हैं । संसार में प्रचलित अनेकानेक विसंगतियों को देखते हुए अशुभ आशंका कहीं भी की जा सकती है । इस लोक मान्यता को ध्यान में रखते हुए, संस्थागत हिसाब-किताब में तथा नर-नारी की निकटता वाले अवसरों पर , इतनी अधिक सावधानी बरतनी चाहिए कि कुकल्पना के लिए कहीं कोई गुँजाइश ही शेष न रहे ।

यहाँ एक बात और हर समाज-सेवी को नोटकर लेनी चाहिए कि श्रेय पाने, हर प्रसंग में अपने को अग्रणी सिद्ध करने वाले लोग जन-साधारण की दृष्टि में ओछे-बचकाने समझे जाते हैं और लोकसेवी का बाना पहनने पर भी बहुत घटिया समझे जाते हैं । उनको सम्मान यदि धोखे से कभी मिल भी जाय, तो वह कागज के फूल की तरह थोड़े ही समय में अपना आकर्षण खो बैठते हैं । नेता बनने के लिए लालायित लोग नाम छपाने, चेहरा मटकाने और माइक पर छाये रहने की कोशिश करते हैं । बड़प्पन जताने के लिए व्याकुल लोग, कुछ हाथ में रहा हो, तो उसे भी गँवा बैठते हैं। इनके अनेकों प्रतिस्पर्धी, विरोधी और ईर्ष्यालु उपज पड़ते हैं । ऐसे विग्रहों का परिणाम उस संगठन या मंच को भी बदनाम करता है, जिस पर चलकर वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऊँचे बनना चाहते हैं। वे स्वयं बदनाम होते हैं और उस संगठन को ले डूबते हैं, जिसके कि वे नेता कहलाना चाहते थे ।

गाँधीजी की सादगी, सज्जनता और विनम्रता प्रसिद्ध थी । इसलिए वे काँग्रेस के कोई नियुक्त नेता पदाधिकारी न होते हुए भी उस समुदाय के लिए प्राण बने हुए थे । व्यक्तित्व उभारने का यही राजमार्ग है । नेतागीरी के लिए उछल-कूद करने वाले तो मात्र नट-नर्तक स्तर के अभिनेता बन कर रह जाते हैं । प्रामाणिकता के अभाव में कोई भी देर तक श्रद्धास्पद नहीं रह सकता और न उसकी नेतागीरी देर तक चलती है । सृजन शिल्पी इस तथ्य से भी भली प्रकार अवगत रहें, तो ही ठीक है ।

अध्यात्म क्षेत्र की वरिष्ठता विनम्रता पर निर्भर

युग शिल्पियों की समर्थता, वरिष्ठता, उनकी विद्या, बुद्धि, आयु, वंश आदि के आधार पर नहीं वरन् व्यक्तित्व की विशिष्टता के साथ अविच्छिन्न रूप से सम्बद्ध है । यह किस नियम अनुशासन पर निर्धारित है, इसके लिए एक आचार संहिता "युग शिल्पियों के सप्त महाव्रत" नाम से प्रस्तुत की जा चुकी है । जो उसे जितनी गम्भीरता से समझने का, जितनी तत्परता से अपनाने का प्रयत्न करेंगे, वे उसी अनुपात में युग पुरुष बनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे, मूर्धन्य महामानव कहलायेंगे और अपनी आत्मिक विभूतियों से असंख्यों को अनुप्राणित करेंगे, अपने ढाँचे में ढालेंगे ।

बड़ा, उसे बड़ा, सबसे बड़ा बनने की ललक इतनी मदान्ध हो जाती है कि न न्याय सूझता है, न औचित्य और न परिणाम, न मर्यादाओं का ध्यान रहता है और न नम्रता सधती है । बैल बनने की प्रतिस्पर्धा में एक मेढक अपने पेट में हवा भरता चला गया और अन्त में उदर कलेवर फट जाने पर बेमौत मरा । वह कहानी मनुष्यों पर भी लागू होती है । जितनी जल्दी बन पड़े, जितना अधिक बटोरना सम्भव हो उतना बिना प्रतीक्षा किए, बिना मूल्य चुकाये, किसी भी छल, छद्म से अपने लिए उपलब्ध कर लिया जाय । यही है सेवा मार्ग पर चलने वालों की दुर्गति बनाने वाली ललक, भावनात्मक अवगति । आश्चर्य होता है कि जब ख्याति की, पदवी की इतनी अधिक लिप्सा थी तो उसके लिए दूसरे सस्ते उपाय हथकण्डे हो सकते थे । सेवा का जटिल मार्ग क्यों चुना जाय ? यदि चुन ही लिया गया तो सेवा की अभिन्न सहचरी नम्रता को भी साथ लेकर चलना था । सेवा धर्म के साथ शालीनता का समन्वय रहना चाहिए । लोक सेवी को निस्पृह एवं विनम्र होना चाहिए । इसी में उसकी गरिमा और उज्जवल भविष्य की सम्भावना है । जो बड़प्पन लूटने, साथियों की तुलना में अधिक चमकने, उछलने का प्रयत्न करेंगे वे औंधे मुँह गिरेंगे और अपने दांत तोड़ लेंगे । साथी क्यों किसी का दर्प सहें, किसी के बड़े बनने पर अपनी हेठी क्यों स्वीकार करें ?

सुन्द, उपसुन्द की कथा प्रसिद्ध है । एक सुन्दरी पर आसक्त होकर दोनों आपस में लड़ पड़े और मरकर समाप्त हो गए । मुगलों ने कई पीढ़ियों तक बाप की, भाइयों की छाती पर चढकर गद्दी हथियाई। मध्यकालीन सामन्तों ने ऐसे कितने ही कुकृत्य किये जिनमें उत्तराधिकारी बालकों की हत्या करके स्वयं मात्र दरबारी होते हुए भी सिंहासनारूढ़ हो बैठे । संस्थाओं के विघटन में यह पद लोलुपता ही प्रधान कारण रही है । कल-परसों जनता पार्टी का विघटन होकर चुका है । उसमें व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा का, पदलिप्सा का नग्ननृत्य, साथ ही दुष्परिणाम हर किसी ने देखा है । कौरव, पाण्डव चक्रवर्ती युधिष्ठिर के अनुशान में न रहकर अपना स्वतन्त्र वर्चस्व चमकाने के लिए व्याकुल कौरवों ने वह अनीति अपनाई जो अन्ततः महाभारत के रूप में महाविनाश का कारण बनी । कृष्ण का यादव वंश कोई भूखा-नंगा नहीं था, लेकिन उसका हर सदस्य अपनी विशिष्टता सिद्ध करने और अन्यों को गिराने के लिए सामूहिक आत्मघात की स्थिति तक जा पहुँचे । यही सब देखकर व्यास जी ने अकाट्य सिद्धान्त के रूप में लिखा था:—

बहवः यत्र नेतारः बहवः मान काँक्षिणः ।
सर्वे महत्वमिच्छन्ति, स दल अवसीदति ।।

जहाँ बहुत लोग नेता बनें, जहाँ बहुतों की महत्त्वाकांक्षा, यश लिप्सा हो वह दल अन्ततः नष्ट होकर रहेगा ।

युग शिल्पियों को समय रहते इस खतरे से बचना चाहिए । हममें से एक भी लोकेष्णाग्रस्त बड़प्पन का महत्त्वाकांक्षी न बनने पाये । जो युग शिल्पी विश्व विनाश को रोकने चले हैं, यदि वे महत्त्वाकांक्षा अपनाकर साथियों को पीछे धकेलेंगे, अपना चेहरा चमकाने के लिए प्रतिद्वन्द्विता खड़ी करेंगे तो अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारेंगे और उस मिशन को बदनाम नष्ट, भ्रष्ट करके रहेंगे, जिसकी नाव पर वे चढ़े हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवान कृष्ण ने महाभारत के उपरान्त हुए राजसूय यज्ञ में आग्रहपूर्वक आगन्तुकों के पैर धोने का काम अपने जिम्मे लिया था और सज्जनोचित विनम्रता का परिचय दिया था । गाँधीजी काँग्रेस के पदाधिकारी नहीं रहे किन्तु फिर भी सबसे अधिक सेवा करने और मान पाने में समर्थ हुए । राम भरत में से दोनों ने राज तिलक की गेंद दूसरे की ओर लुढ़काने में कोर कसर न रहने दी । चाणक्य झोपड़ी में रहते थे ताकि राजमद उनके ऊपर न चढ़े और किसी साथी के मन में प्रधानमन्त्री का ठाट-बाट देखकर वैसी ही ललक न उठे । राजा जनक हल जोतते थे । बादशाह नासिरुद्दीन टोपी सीकर गुजारा करते थे । यह वे उदाहरण हैं जिनमें साथियों को अधिक विनम्र और संयमी बनने की प्रेरणा मिलती है । नहुष ने ऋषियों को पालकी में जोता और सर्प बनने का शाप ओढ़ने को विवश हुए। पेशवाओं के प्रधान न्यायाधीश राम शास्त्री की पत्नी जब राजमहल से बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण के उपहार लेकर वापस लौटी तो उन्होंने दरवाजा बंद कर लिया और कहा ब्राह्मणों की पत्नी को अपरिग्रही आदर्श का पालन करना होगा अन्यथा विनम्रता की सम्पदा हाथ से चली जायेगी और हम लोग द्रोणाचार्य की तरह नौकर बनेंगे और कुछ भी करने के लिए तैयार रहेंगे ।

युग शिल्पियों को राजकाजी लोगों की तरह, बड़प्पन, ठाठ–बाट, वैभव की न तो चाह करनी चाहिए और न उसके लिए अपने पुनीत क्षेत्र में हाथ पैर पीटकर ईर्ष्या-द्वेष का विष बोना चाहिए । जो जितना बड़ा हो वह उतना ही नम्र होकर रहे । अनुशासन पाले और योग्यता के अनुरूप वर्चस्व पाने का प्रयास न करे। मशन में योग्यता का नहीं उस सज्जनता का महत्त्व है जिसके साथ नम्रता, निरहंकारिता अविच्छिन रूप से जुड़ी हुई है । हम में से कोई अहंकार प्रदर्शित न करे । छोटा बनकर रहे और अनुशासन पालने में अपना गौरव समझे । इस रीति–नीति का परित्याग करने वाले मान के भूखे व्यक्ति सृजन शिल्पी न बनें।

सिख धर्म के छठें गुरु अर्जुनदेव संगत में जूठे बर्तन माँजने का काम करते थे । गुरु गद्दी के इच्छुकों में से सभी को अयोग्य ठहरा कर गुरु रामदास ने अपना उत्तराधिकारी अर्जुनदेव को इस आधार पर घोषित किया कि वे नम्रता, निस्पृहता और अनुशासन पालन में अग्रणी पाये गये । अध्यात्म क्षेत्र में वरिष्ठता, योग्यता के आधार पर नहीं आत्मिक सद्गुणों की अग्नि परीक्षा में जाँची जाती है । इस गुण शृंखला में निरहंकारिता को, विनयशीलता को अति महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । सरकारी क्षेत्रों में योग्यता के आधार पर पदोन्नति होती और नौकरी बढ़ती है । वही मापदण्ड यदि अध्यात्म क्षेत्र में भी अपनाया गया तो फिर भावनाओं का कहीं भी कोई महत्त्व न रहेगा । महत्त्वाकांक्षी लोग ही इस क्षेत्र पर भी अपना आधिपत्य जमाने के लिए योग्यता की दुहाई देने लगेंगे तब सदाशयता की कोई पूछ ही नहीं रहेगी । संन्यास लेते समय अपने अब तक के वंश, यश, पद, गौरव, इतिहास का विस्मरण करना होता है । गुरु आश्रम एवं सम्प्रदाय का एक विनम्र सदस्य बनकर रहना पड़ता है । सेवा धर्म भी एक प्रकार से हल्की संन्यास परम्परा है । उसमें भूतकाल में अर्जित योग्यताओं, वरिष्ठताओं को प्रायः पूरी तरह भुला कर मिशन की गरिमा के साथ जुड़े हुए एक स्वयं सेवी के हाथों में जितनी प्रतिष्ठा लगती है उसी से सन्तोष करना होता है। स्मरण रहे अधिक वरिष्ठ व्यक्ति अधिक विनम्र होते हैं । फलों से डालियाँ लद जाने पर आम का वृक्ष धरती की ओर झुकने लगता है । अकड़ते तो पतझड़ के डंठल ही हैं ।

गाँधी जी के साबरमती आश्रम में टट्टी साफ करने से लेकर छोटे-मोटे ऐसे सभी काम अपने हाथों करने पड़ते थे, जिन्हें करने में आमतौर से बड़े आदमी अपनी हेटी मानकर नौकरों से कराते हैं । विनोबा के पवनार आश्रम में सभी आश्रमवासी कुएँ से पानी खींचते और पहरेदारी करते थे । शान्तिकुञ्ज के हर कार्यकर्ता को सफाई और पहरेदारी का काम अपने हाथों करना पड़ता है । यहाँ कोई मेहतर नहीं । शौचालय, स्नानघर, नालियाँ सभी मिलजुल कर साफ करते हैं । नेतागीरी के लिए विग्रह करने वाले क्षेत्र दूसरे हो सकते हैं पर सेवा धर्म में इस प्रकार की लिप्सा का थोड़ा प्रदर्शन भी सह्य नहीं है । स्काउटिंग की जिन्होंने शिक्षा पाई है वे जानते हैं कि वहाँ अनुशासन का पालन ही वरिष्ठता का चिन्ह माना जाता है । पदवी पाने के लिए विग्रह करने वालों के लिए स्वयंसेवी संगठनों में कोई स्थान नहीं होता ।

गुरुद्वारों में श्रद्धालु सेवी हर आगन्तुकों के जूते पौंछते और यथास्थान रखते देखे जाते हैं । महिलाएँ अपनी चुनरी से सीढ़ियाँ साफ करती हैं । इजराइल के प्रधानमन्त्री गोल्डा मेयर सरकारी कर्मचारियों के दफ्तर में स्वयं पहुँचती और समाधान तथा मार्गदर्शन खड़े-खड़े चलते-फिरते ही करती चलती थीं । केरल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में जब निम्बूदरी भाई मुख्यमंत्री थे तब वे घर से दफ्तर तक साइकिल पर आते-जाते थे । यह नम्रता ही है जिसे सज्जनता का दूसरा नाम कहा जा सकता है । युग शिल्पियों की सेवा साधना में इसी आचार संहिता का परिपालन किया जाता है । नेतागीरी गाँठने वाले यहाँ पाते कुछ नहीं, अपनी प्रतिष्ठा का श्राद्ध तर्पण अपने हाथों ही करते चलते हैं ।

साधु ब्राह्मण परम्पराएँ अपरिग्रह, सादगी, मितव्ययिता, नम्रता को वरिष्ठता का प्रतीक चिन्ह माना गया है । विलासी, अहंकारी, उद्धत, कटुभाषी इस क्षेत्र में हेय माने जाते हैं । भिक्षाटन के लिए जाने, घर-घर से रोटी माँगकर खाने के पीछे अहंकार गलाने की वह साधना करनी पड़ती है जिसके बिना आध्यात्मिक उत्कृष्टता पनपती ही नहीं । जोंक जहाँ अपने पंजे गड़ा लेती है वहाँ से भरपेट रक्त पीकर ही छूटती है । छुड़ाने का एक ही उपाय है कि उस पर पिसा नमक छिड़क दिया जाय तो देखते-देखते गलने लगती है और छूटकर तत्क्षण एक कोने पर गिर पड़ती है । अहमन्यता एक प्रकार की जोंक है उससे पीछा छुड़ाने के लिए ऐसे छोटे काम अपने हाथों करने होते हैं जिन्हें आमतौर से छोटे लोगों द्वारा किए जाने योग्य समझा जाता है ।

युग शिल्पी एक महान मिशन के अंग अवयव हाने के कारण ही सम्मान पाते और उच्चस्तरीय व्यक्तित्व का श्रेय पाते हैं । उन्हें सार्वजनिक प्रयोजनों में ''मैं'' ''मैं'' शब्द का उपयोग न करके ''हम'' ''हम लोग'' कहना चाहिए । दोष दुर्गुणों की, मूल अपराधों की स्वीकृति में तो ''मैं'' शब्द का उपयोग हो सकता है किन्तु श्रेय तो सभी के सम्मिलित प्रयत्नों से बन पड़ा है इसलिए उसके किए जाने में सभी के मिले-जुले प्रयत्न का संकेत रहना चाहिए । साथियों को स्नेह, दुलार, सहयोग देने में हम अग्रणी रहें । सफलता की चर्चा में उनके श्रम सहयोग का उल्लेख करें । कर्त्तव्य पालन को सर्वोपरि मानें और अन्धकार के दावेदार न बनें । ऐसी निरहंकारिता का खाद पानी पाकर ही वे सप्त महाव्रत कल्पवृक्ष की तरह फलते, फूलते और सिद्ध सफलताओं से लादते हैं जिन्हें सेवा क्षेत्र में काम करने वालों के उपलब्ध होने वाले दिव्य वरदान कहा गया है ।

ऐसे बनें, जैसा दूसरों को बनाना है

इन दिनों सबसे बड़ी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता का कार्य एक ही है—युग सृजेताओं की अग्रिम पंक्ति में खड़े होना । पीछे खड़े रहने वाले, झंझट में न पड़ने की दृष्टि से तो अपने को सुरक्षित अनुभव करते हैं; पर वस्तुतः वे रहते अतिशय घाटे में हैं । उत्तरदायित्वों से मुँह छिपा लेने में हर सम्भावना को मूक दर्शक बने देखते रहने वालों की उदासी अपनाने में यह जोखिम भी है, कि उन्हें ऐसा कुछ हस्तगत नहीं हो पाता—जिस पर गौरव किया जा सके । आलसी-प्रमादी किसी प्रकार दिन तो गुजार लेते हैं पर गिने अर्द्धमृतकों में ही जाते हैं । मनुष्य जीवन की गरिमा और जिम्मेदारी ही जिसकी समझ में न आई, उसके लिए पेटप्रजनन भर में जिन्दगी के दिन रोते कलपते काट लेने के अतिरिक्त ऐसा कुछ हस्तगत हो नहीं पाता, जिससे सन्तोष, सम्मान पाने और सिर ऊँचा उठा कर प्रज्ञावानों, प्रगतिशील-वरिष्ठों की तरह चलने का अवसर मिल सके । पिछड़ेपन से ग्रसित लोग यह समझ ही नहीं पाते कि समुन्नत और सुसंस्कृत स्तर की रीति-निति अपनाने वाले कितनी प्रसन्नता, प्रशंसा और समाज, समुदाय पर अनुदानों की झड़ी लगा देने वाले कितनी उच्चस्तरीय अनुभूतियों के साथ असाधारण उपलब्धियाँ अनुभव करते हैं ।

जो ढर्रे से ऊँचे उठकर, वरिष्ठ स्तर की सूझबूझ उगा पाते हैं, उनके लिए यह जिम्मेदारी एक अनिवार्य आवश्यकता बनकर सामने आ खड़ी होती है कि कुछ बड़े कदम उठाने चाहिए । कुछ बड़े अनुदान, बड़े वरदान पाने की उमंग उभरनी चाहिए । ऐसे लोगों को क्रमबद्ध रूप से दोनों कदम आगे बढ़ाते हुए लक्ष्य के उच्च-शिखर पर जा पहुँचने की, यशस्वी पर्वतारोहण जैसी साहसिकता जुटानी पड़ती है । इस उपलब्धि के लिए आत्म परिष्कार और समाज सुधार के दोनों ही प्रयासों को साथ-साथ अपनाते हुए समग्र प्रगति की दिशा में चल पड़ना होता है ।

नेतृत्व का अपना आनन्द है । मार्गदर्शकों की यश-गाथा अनन्त काल तक चर्चा का विषय बनी रहती है और मरण के उपरान्त भी यश-शरीर को जीवन्त बनाये रहती है । सेवा-साधना का धर्मधारणा का उपक्रम अपनाना किन्हीं शूर साहसियों से ही बन पड़ता है; पर जो ऐसा आदर्श प्रस्तुत कर सकते हैं, वे कृतकृत्य भी हो जाते हैं अनुकरण करने वालों के लिए ऐसी परम्परा विनिर्मित करते हैं, जिसका अवलम्बन लेकर वे भी साधारण न रहकर असाधारण बन सकें । ऐसे अग्रगामियों को ही देवमानव या युगपुरुष की संज्ञा मिलती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अलभ्य अवसर का लाभ लें

इन दिनों युग परिवर्तन की प्रभात बेला में असंख्यों को असंख्य प्रकार की उपलब्धियों से लाभान्वित होने का अवसर मिलने की सम्भावना बन रही है । सबसे अधिक नफे में वे रहेंगे, जो इन दिनों युग-धर्म के निर्वाह में दत्त-चित्त रहेंगे । नव-सृजन के सन्दर्भ में कुछ बढ़-चढ़ कर काम करेंगे । जिनमें संवेदना, भाव-चेतना और दूरदर्शिता के तत्त्व किसी भी अनुपात में जीवन्त हैं, उन्हें संकीर्ण स्वार्थपरता में कटौती करके बचत को उस प्रयोजन में लगाना पड़ेगा, जिससे उज्ज्वल भविष्य की संरचना में कुछ महत्त्वपूर्ण योगदान बन पड़े । ऐसे लोगों के लिए प्रमुख कर्त्तव्य बनता है—लोक मानस का परिष्कार, दृष्टिकोण और क्रिया-कलापों में सतयुगी परम्परा का प्रतिष्ठापन ।

मोटे शब्दों में विचार क्रान्ति यही है, जिससे समूची मानवता को नये सिरे से, नये भाग्योदय का सौभाग्य उपलब्ध हो सके; आदिमकाल से चलती आ रही एक अस्त-व्यस्तता की दिशा-धारा को अभिनव सुनियोजन का अवसर मिल सके; जिसके कारण अब तक के इतिहास में एक नई शृंखला जुड़ सके । इस दृष्टि से, अपने समय के सर्वसाधारण को सामान्य स्तर की एवं प्रखर प्रतिभाओं को विशेष अनुपम उपलब्धियाँ हस्तगत करने का अवसर मिल सकेगा । भविष्य में जब कभी भी इस ऐतिहासिक मोड़ वाले समय की समीक्षा, विवेचना होगी, तो एक शब्द में यही कहा जाता रहेगा कि युग संधि की बेला में, अन्तरिक्ष से असीम चेतना और ऊर्जा बरसी थी । धन्य थे वे लोग, जो उस समय कार्यरत रह सके और दिशाओं के दरवाजों पर अड़े हुए किवाड़ खोलने की भूमिका निभा सके । नामकरण की दृष्टि से उनका परिचय सृजन-शिल्पियों के रूप में भी कहा और लिखा जाता रहेगा ।

'विचार क्रान्ति' अपने समय की सबसे बड़ी माँग है । जनमानस का परिष्कार किए बिना उसमें से कुछ भी सम्भव न हो सकेगा, जो भविष्य के सम्बन्ध में सोचा, चाहा और निर्धारित किया गया है । समस्त समस्याओं की जड़ एक ही केन्द्र-दुर्बुद्धि पर केन्द्रित है। दुर्गति के लिए वही पूरी तरह जिम्मेदार है । यदि मनुष्य को सही सोचने और सही करने भर की मानसिकता बनाने का अवसर मिल सके, तो समझना चाहिए कि प्रस्तुत अगणित समस्याओं, विभीषिकाओं और अवांछनीयताओं के घटाटोप से छुटकारा पाने का सहज सुयोग हस्तगत हो गया ।

यह सब अनायास ही घटित हो जाने वाला नहीं है । उसके लिए प्रमुख भूमिका सृजन-शिल्पियों की होगी, जिनके सम्मिलित प्रयास से समुद्र पर सेतु बाँधने, गोवर्धन उठाने, स्वतन्त्रता उपलब्ध करने और परिव्राजकों द्वारा समस्त संसार में धर्मचक्र-प्रवर्तन जैसे स्मरणीय अवसरों की नये सिरे से पुनरावृत्ति हुई समझी जा सके । अंधेरी रात्रि के अवसान और अरुणोदय के आगमन के बीच एक मध्यान्तर होता है, जिसे ब्राह्ममुहुर्त कहते हैं । युग शिल्पियों के प्रयास को उसी के समतुल्य माना जायेगा ।

प्रवचन नहीं—आचरण बनायें

जन-मानस का परिष्कार करने की महती आवश्यकता को पूरा करने में जिनका मन उपयुक्त भूमिका निबाहने के लिए हुलसित हो, उन्हें प्रयास का आरम्भ अपने आप से करना होगा । दूसरों से कुछ करने के लिए कहा जाय, तो यह आवश्यक नहीं कि वह परामर्श को मान ही ले और मार्गदर्शन के अनुरूप अपनी गतिविधियों को मोड़ ही ले; किन्तु उस अनुशासन का परिपालन अपने आप के लिए, हर मनस्वी के लिए तो सहज सम्भव हो सकता है । अपने ऊपर तो अपना अधिकार पूरी तरह है ही, फिर उसमें अवज्ञा का प्रश्न सामने आ ही नहीं सकेगा । अपने को सुधार लिया जाय, तो अन्यान्यों को उसका अनुकरण करने के लिए प्रस्तुत वातावरण ही दबाने-दबोचने में पूरी तरह समर्थ हो सकता है । साँचे में ढल कर ही खिलौने और पुर्जे बड़ी संख्या में ढलते-विनिर्मित होते चले जाते हैं । दूसरों को उपदेश देकर उन्हें इच्छित दिशा में चलाया जा सका होता तो अब तक न जाने कब की सारी दुनिया सुधर गयी होती ।

उपदेष्टाओं की कहाँ कमी है, हर प्रवचन मंच पर उन्हीं को छाया देखा जा सकता है । कभी सात ऋषि-तपस्वी और आठ वसु-मनीषी ही सतयुग को बुलाने और पकड़े रखने में पूरी तरह समर्थ रहे थे । अनुयायी तो उन्हें बड़ी संख्या में सहज ही मिलते रहे और बात बन गयी । आज तो जनगणना के अनुसार ६० लाख धर्मधारी अपनी आजीविका इसी व्यवसाय से प्राप्त करते हैं । इसके अतिरिक्त कथावाचकों, कीर्तनकारों, उपदेशकों और मार्गदर्शकों में अपने को सम्मिलित बताने वालों की संख्या प्रायः इतनी ही और हो सकती है । इस प्रकार अपने देश में ही तथाकथित मार्गदर्शक-प्रवक्ताओं की संख्या एक करोड़ से ऊपर निकल जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

धर्म, राजनीति, समाज, विभिन्न वर्गों के संगठनों पर छाये हुए, इतनी बड़ी संख्या वाले मार्गदर्शक प्रवक्ताओं द्वारा किसी भी क्षेत्र को, किसी भी मंच को सुनियोजित करने में सफलता क्यों नहीं मिल रही है ? इस अत्यन्त विकट किन्तु साथ ही अत्यन्त सरल प्रश्न का उत्तर एक ही है कि दूसरों से जो कराने की अपेक्षा की जाती है, उसमें अग्रणी कहलाने वाले प्राय: असफल ही रहते हैं । कथनी और करनी में अन्तर रहने पर उसका प्रभाव शून्य के बराबर रह जाता है । रंगमंच में आकर्षक वेश-भूषा बना कर अभिनेता न जाने क्या-क्या बकते-गाते रहते हैं; पर इन नारों की वास्तविकता जानने के कारण, मनोरंजन पाने के अतिरिक्त दर्शकों में से कोई ऐसा कुछ उपलब्ध नहीं करता, जिससे प्रभावित होकर आदर्शवादी रीति-नीति अपना सकना सम्भव हो सके । बुरी बात तो अपने संचित कुसंस्कार और अनाचारियों का समुदाय है, जो पतन-पराभव का कुयोग जुटा देता है ।

बात ऊँचा उठने और आगे बढ़ने की है । इस प्रयास में सफलता मात्र उन्हीं को मिलती है जो प्रतिपादनों को अन्यान्यों पर थोपने से पहले अपने आप को तदनुरूप बनाने में समर्थ हो सके हैं । निष्णात अध्यापक ही छात्रों का समुचित अध्यापन कर सकने में समर्थ होते हैं । जो स्वयं ही बे पढ़े हों, वे दूसरों को क्या पढ़ायें ? जो स्वयं ही संगीत-कला में प्रवीण नहीं, वह संगीत विद्यालय का अधिष्ठाता होने की घोषणा करे, तो उसे उपहासास्पद ही माना जायेगा।

उपदेशक की पात्रता

उपदेश इन दिनों प्राय: सर्वथा असफल इसी कारण हो रहे हैं कि उपदेशक जो दूसरों से कराना चाहते हैं, उसे निजी जीवन में समाविष्ट करके यह सिद्ध नहीं कर पाते कि जो कहा गया है, वह व्यावहारिक भी है । यदि उचित, व्यावहारिक और लाभप्रद रहा होता, तो उपदेशों के अनुरूप प्रवक्ता ने सर्वप्रथम उस विधा को अपनाकर अपने को लाभान्वित किया होता । इस संदेह-असमंजस का निराकरण न कर पाने पर ही उपदेशकों के द्वारा बार-बार दिये जाने वाले भाषण भी विडम्बना बनकर रह जाते हैं, श्रवण कर्त्ताओं के गले नहीं उतरते ।

ऐसे भाषण, परामर्शों से भावुकों को अवांछनीयता की दिशा में भड़काना, उत्तेजित करना तो सम्भव है; पर वह सम्भावना बनेगी ही नहीं कि उत्कृष्टता अपनाकर संयम बरतने और परामर्श व्यवहार में लाने के लिए किसी को अग्रणी किया जा सके । यही कारण है कि इन दिनों तथाकथित नेताओं को अभिनेताओं की संज्ञा देकर लोग कौतुक-कौतूहल जैसा मजा लेते हैं और इस कान सुनकर उस कान निकाल देते हैं, पल्ले झाड़ कर चल देते हैं । बाद में उस कौतुक का उपहास करते हुए, ऐसा मजमा जमाने की खूबी को बहुरूपिया स्तर की संज्ञा देते हुए निन्दा तक करते देखे जाते हैं । विशेषतया यह प्रक्रिया तब तेजी से उभरती देखी जाती है, जब आदर्शवादिता अपनाने के लिए, सिद्धान्तों को अपनाने के लिए लोगों से कहा जा रहा हो । लोग बहुधा वक्ताओं के परामर्श में से निजी स्वार्थ या वर्ग स्वार्थ के प्रतिपादन ही चुन लेते हैं और आदर्श निष्ठ अपनाने से सम्बन्धित बात पर ध्यान नहीं देते । हड़तालों और प्रदर्शनों के लिए, विग्रह-उपद्रव के लिए आक्रोश उत्पन्न करने एवं अड़ंगेबाजी में नेतागीरी अपना काम कर जाती है; पर जहाँ सृजन और उपयोगी सुधार परिवर्तन की बात कही जाय, वहाँ लोग ऊँघने या उठ कर चलने लगते हैं ।

इस विडम्बना में दोष जनमानस का नहीं, वरन् प्रवक्ताओं की अनाधिकार चेष्टा का है । वे दूसरों से वह कराना चाहते हैं, जिसे वे स्वयं तक कर सकने में समर्थ नहीं हो सके । अच्छाई तो कुछ समय छिपी भी रह सकती है; पर बुराई की विडम्बना में एक खूबी यह जुड़ी हुई है कि वह हींग की तीखी गंध की तरह अनायास ही दूर-दूर तक फैल जाती है । आचारनिष्ठ उपदेशक ही परिवर्तन लाने में सफल हो सकते हैं । अनाधिकारी धर्मोपदेशक खोटे सिक्के की तरह मात्र विक्षोभ और अविश्वास ही भड़काते हैं ।

यहाँ यह ऊहापोह इसलिए किया जा रहा है कि नव-सृजन के हर क्षेत्र में, हर प्रसंग में आदर्शवादिता का सम्पुट लगता है; लोगों को अपनाई गई दुष्प्रवृत्तियों को छोड़ने के लिए कहा जाता है; जो उचित-उत्कृष्ट हैं, उसे अपनाने के लिए अनुरोध-आग्रह किया जाता है । यह नीचे गिरे को ऊपर उठाने जैसा असाधारण प्रयत्न हुआ । इसे सम्पन्न करने के लिए ऊपर उठाने की ऐसी समर्थता संचित की जानी चाहिए, जैसी कि गिरे इंजन को फिर से सीधा खड़ा करने के लिए सशक्त क्रेनों के लिए आवश्यक होती है । कुएँ से पानी खींचने के लिए भी भुजाओं का बल तो चाहिए ही । अन्तरिक्ष में उपग्रह फेंकने वाले केन्द्रों में शक्तिशाली राकेट लगाने पड़ते हैं । ऊपर उठाने के लिए असाधारण समर्थता की, सक्रियता की

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता पड़ती है और लोगों को अनगढ़पन से विरत होने और उत्कृष्टता अपनाने के लिए सहमत करने के लिए, अनिवार्य रूप से ऐसी ही प्रतिभाएँ चाहिए, जो परीक्षा की कसौटी पर कसे जाने और आग में तपाये जाने के उपरान्त खरी उतरी हों ।

बुराई बढ़ाने में तो नशेबाजों के, व्यभिचारियों के, गुण्डागर्दी अपनाने वाले आवाराओं तक के गिरोह, अनेकों को प्रभावित करने और चंगुल में फँसा लेने में आये दिन सफल होते रहते हैं, पर उत्कृष्टता की दिशा में सहमत और प्रेरित कर सकना मात्र उन्हीं के लिए सम्भव होता है, जो लोक-शिक्षण के लिए, जो निर्धारण विनिर्मित किया गया है, उसका प्रयोग परीक्षण अपने ऊपर कर के दिखा चुके हों । जो ऐसा कर सके हैं, उनके परामर्श, उपदेशों और आह्वानों को शिरोधार्य करने वालों की भी कमी नहीं पड़ी है ।

इतिहास उक्त तथ्य को सदैव उजागर करता रहता है । बुद्ध, ईसा और गाँधी के उपदेशों का न तो उपहास हुआ और न उन्हें ऐसी शिकायत करनी पड़ी कि अनुगमन के लिए कोई तैयार न हुआ । जमाने को समाज को, लोक मानस को दोषी ठहराने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी । विनोबा का अनुरोध असंख्यों ने स्वीकारा और भूदान के लिए लाखों एकड़ भूमि प्रस्तुत कर दी । दयानन्द, विवेकानन्द, शंकराचार्य आदि को ऐसी निराशा का सामना नहीं करना पड़ा कि उनकी बात कोई सुनता, मानता ही नहीं । मध्यकालीन सन्तों के इतने अधिक अनुयायी समवेत हुए कि उनका अपना-अपना सम्प्रदाय ही बन गया । यदि उनके संस्थापक ओछे, खोटे और प्रवक्ता भर रहे होते, तो नियम-संयम के साथ बँधे हुए, किसी न किसी सीमा तक असुविधा उत्पन्न करने वाले उनके अनुबन्धों को कोई क्यों स्वीकार करता ? पुरातन काल में मुट्ठी भर ऋषिमनीषी अपने समय में धरती पर स्वर्ग उतारने और मनुष्य में देवत्व उभारने का असम्भव जैसा दीखने वाला कार्य सम्भव बनाने में किस आधार पर सफल हुए थे ?

सतयुग आसमान से नहीं टपका था; वरन् ऋषिमनीषियों के प्रचण्ड और प्रखर व्यक्तित्वों ने ही उसे उभारा और व्यापक बनाया था । अपने आत्मबल की असाधारण सामर्थ्य पर अटूट विश्वास होने पर ही वे मनुष्य समुदाय की उत्कृष्टता को अक्षुण्ण बनाये रहने की प्रतिज्ञा को देश-देशान्तरों में गुंजायमान करते रहते थे । उनकी प्रतिज्ञा थी **'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः'** हम पुरोहित राष्ट्र को जागृत और जीवन्त बनाये रहेंगे । राष्ट्र शब्द से उनका अभिप्राय किसी छोटे क्षेत्र विशेष से नहीं, वरन् विश्वराष्ट्र से था । इसे जीवित, जीवन्त, समर्थ और प्रखर बनाये रहने की जिम्मेदारी उठा सकना, उन्हीं के लिए सम्भव हो सकता था, जो अपने को इसके लिए आवश्यक आत्मशक्ति से सम्पन्न बना चुके थे ।

व्रतशील बनें और बनायें

इन दिनों भी उसी पुरातन प्रक्रिया का पुनरावर्तन होने जा रहा है । प्रतिभाओं को अचिन्त्य चिन्तन और कुकृत्य स्तर के आचरण से विरत करने वाली विचारक्रान्ति का समायोजक बनना है । लोगों को सत्य और तथ्य को स्वीकारने के लिए व्रतशील बनाया जाना है । अनुपयुक्त मान्यताओं, आदतों और क्रिया-कलापों के क्षेत्र में शालीनता का समावेश करने के लिए सहमत ही नहीं, व्रतशील भी बनाया जाना है । इसके लिए जो करना है, उसे विचारक्रान्ति समझा जा सकता है, पर उसके लिए धनुष-वाण जैसे साधन जुटाने भर से सब कुछ सम्भव नहीं हो जायेगा । इसके लिए प्रत्यंचा चढ़ाने वाले भुजदण्ड और योद्धाओं की भी आवश्यकता पड़ेगी । इसके लिए प्रचार माध्यम के साथ प्रचारकों की भी आवश्यकता पड़ेगी । वे न हों तो प्रचार में संलग्न व्यक्तियों, साधनों, उपकरणों के पीछे प्रचण्ड आत्म-शक्ति का नियोजन न बन पड़ने पर प्रदर्शन भरा ढकोसला ही खड़ा हो सकेगा । कोई ठोस प्रयोजन सम्पन्न न हो सकेगा ।

सृजन-शिल्पियों को निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति के लिए जन सम्पर्क वाले क्रिया-कलापों में प्रधान रूप से संलग्न रहना पड़ेगा । व्यक्तियों को बदलने में संदेश नहीं, सम्पर्क की क्षमता काम करती है । नारद जीवन भर सम्पर्करत रहे, वही उनकी भक्ति और साधना थी। सर्वोपरि महत्त्व का काम समझ कर भगवान ने उन्हें उसी प्रयोजन में निरन्तर निरत रहने के लिए आदेश दिया था ।

पारस छूकर लोहे का सोना बनने वाली उक्ति प्रसिद्ध है, पर उससे भी बढ़कर सत्य एवं तथ्य यह है कि प्रचण्ड आत्मशक्ति सम्पन्न व्यक्ति अनायास ही समुदाय और वातावरण को इतना अधिक प्रभावित करते हैं, कि उनके सांकेतिक क्रिया-कलाप भी गजब की परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकते हैं । इसका एक जीवित उदाहरण देखना हो तो शान्तिकुञ्ज के सूत्र-संचालक की क्षमता और उसकी व्यापक क्षेत्र में बिखरी पड़ी परिणति पर दृष्टिपात किया जा सकता है कि क्रिया-कलाप ही सब कुछ नहीं होते, उनके पीछे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

काम करने वाले व्यक्तित्त्व ही अदृश्य शक्ति के रूप में अभीष्ट प्रयोजनों की पूर्ति में गजब ढाते देखे जा सकते हैं ।

युग शिल्पियों को जन-जन से सम्पर्क साधने और उन्हें युग चेतना से अनुप्राणित करने की आवश्यकता पड़ेगी । जिन माध्यमों से इस प्रक्रिया को पूरी करेंगे, उसे मोटे-तौर पर वाणी और लेखनी के माध्यम से जनमानस को उभारने की विधि-व्यवस्था समझा जा सकता है; पर इसके पीछे उन व्यक्तित्त्वों का संलग्न रहना आवश्यक है, जो सम्पर्क में आने वाले लोगों में यह संदेह उत्पन्न न करें कि दूसरों को सिखाई जाने वाली बातों का प्रवक्ता ने पहले अपने निजी जीवन में समावेश क्यों नहीं किया ? वह जैसा दूसरों को बनाना चाहता है, उस स्तर का पहले स्वयं क्यों नहीं बना ?

पढ़ाने से पहले पढ़ना पड़ता है, जलाने से पहले जलना पड़ता है, बनाने से पहले बनना पड़ता है । इन शाश्वत सत्यों को हमें स्वीकार कर ही लेना चाहिए और युग-निर्माण प्रक्रिया को आत्म-निर्माण से आरम्भ करके दिखाना चाहिए । अपनी छवि उज्ज्वल होगी, तो सामने आने वाले हर दर्पण में उसी का प्रतिबिम्ब उभरा हुआ परिलक्षित होगा ।

हम स्वयं ऐसे बनें, जैसा दूसरों को बनाना चाहते हैं । हमारे क्रिया-कलाप अन्दर और बाहर से उसी स्तर के बनें जैसा कि हम दूसरों द्वारा क्रियान्वित किये जाने की अपेक्षा करते हैं ।

स्वयं बदलें-प्रवाह को उलटें

यह परिवर्तन का महान पर्व है। तमिस्रा के पलायन और दिनमान के ऊर्जा विस्तार का यह मध्यवर्ती प्रभात है। युग सन्धि के इन बीस वर्षों में मनुष्य जाति के भविष्य में असाधारण उलट-पुलट होने जा रही है। महाकाल की गलाने और ढालने वाली भट्ठी प्रचण्ड दावानल की तरह गगनचुम्बी होती जा रही है। वर्तमान प्रचलनों की अवांछनीयता अगले दिनों ठहर न सकेगी। उसके स्थान पर आदर्शवादी उत्कृष्टता को सिंहासनारूढ़ होने का अवसर मिलेगा।

इस प्रभात परिवर्तन का प्रथम दर्शन पर्वत शिखरों पर दृष्यमान किरणों की तरह होना चाहिए। इन दिनों कोई जागृत आत्मा मूक दर्शक बनकर न रहे। अग्रिम पंक्ति में खड़ा हो और महाकाल के अनुशासन को सर्वप्रथम धारण करके मूर्धन्यों, वरिष्ठों की तरह श्रेयाधिकारी बनें।

इन दिनों जिनके अन्तराल में स्रष्टा के युग परिवर्तन प्रयास के प्रति उत्साह जगता हो, भागीदार बनने के लिए उमंग उठती हो, उन्हें इस हलचल को दैवी प्रेरणा एवं आत्मा की पुकार की तरह महत्त्व देना चाहिए। सोचना चाहिए कि जब असंख्यों के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती तो उन्हीं को यह कसक क्यों कचोटती है? पूर्व जन्मों के संचित सुसंस्कार ही आदर्शवादी प्रयासों में अग्रिम भूमिका निभाने की प्रेरणा देते हैं। पिछले अभ्यास एवं अनुभव ही परमार्थ प्रयोजनों का उत्तरदायित्व कंधों पर उठाने का साहस प्रदान करते हैं। जागृत आत्माओं की इन उठती उमंगों के आधार पर अपनी वरिष्ठता अनुभव करनी चाहिए। दूसरों से भिन्न मानकर चलना चाहिए। उथले परामर्श स्वीकार करने के स्थान पर अपना स्थान असंख्यों को मार्गदर्शन कर सकने वाले मूर्धन्यों की पंक्ति में निर्धारित करना चाहिए। ऐसी दशा में उनके सोचने का स्तर एवं कार्य पद्धति का निर्धारण भी भिन्न रहेगा ही। उथले लोगों के उपहास, परामर्श, मतभेद, असहयोग, विरोध की परवाह न करते हुए मूर्धन्य एकाकी चलते हैं और सूर्य, चन्द्र की तरह अपने बलबूते पर अपना मार्ग चुनते हैं। वही मनःस्थिति जागृत आत्माओं की भी होनी चाहिए। महानता के श्रेयाधिकारी, देवदूतों के उत्तराधिकारी बनने का लाभ उन्हें ही मिलता है जो आदर्शवादियों की अग्रिम पंक्ति में खड़े होते हैं और बिना किसी के समर्थन, विरोध की परवाह किये आत्म-प्रेरणा के सहारे स्वयमेव अपनी दिशा धारा का निर्माण निर्धारण करते हैं।

दूसरों की अपेक्षा अपनी रीति-नीति में प्रमुख परिवर्तन यहाँ से आरम्भ होना चाहिए कि आकांक्षाएँ, अभिलाषाएँ, वैभव, बड़प्पन से हटाकर व्यक्तित्व को महान बनाने और जीवनक्रम को अनुकरणीय, अभिनन्दनीय स्तर तक ले जाने की योजना बनाएँ। दूसरों की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करने-सस्ती वाहवाही लूटने की बात छोड़ें और उस मार्ग को खोजें जिस पर अपनी महानता को जागृत, प्रकट, परिपुष्ट और चिरस्मरणीय बनाने का अवसर मिलता है। कुछ प्राप्त करना ही है तो ऐसा पायें जिसमें आत्म तृप्ति, लोकश्रद्धा और दैवी अनुकम्पा के अजस्र अनुदान प्राप्त हों। कुछ पराक्रम ही करना, कुछ वर्चस्व ही सिद्ध करना है तो, ऐसा सेतु बाँधें, कोई ऐसा जहाज बनायें जिसके सहारे असंख्यों को प्रचण्ड जलधारा का अवरोध पार करते दूसरे किनारे तक पहुँचाने का अवसर मिले। पुरुषार्थ करना है तो उच्चस्तरीय करें। वैभव उपार्जित करना ही हो तो ऐसा कमायें जो न केवल अपने वरन् दूसरों के भी काम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आये। शूरवीर वधिकों और कसाइयों को नहीं कहते, योद्धा वे हैं जो निर्बलों को अनीति से बचाने में अपनी छाती अड़ा सकें।

बड़प्पन न संचय में है न उपभोग में। ठाठ-बाट बनाने में नाटक वाले अधिक कुशल होते हैं। अभिनेता इस कला में प्रवीण होते हैं। खजांची आये दिन लाखों के वारे-न्यारे करते हैं। सर्प खजाने पर बैठे रहते हैं। लोगों का ध्यान आकर्षित करने में तो सड़क पर नंगे घूमने वाले पागल भी सफल हैं। इन बचकानी हरकतों को कोई विचारशील न अपनाये। सोचे कि बड़प्पन एक दृष्टिकोण है जिसमें सदा ऊँचा उठने, आगे बढ़ने, रास्ता बनाने, जो श्रेष्ठ है उसी को अपनाने की उमंग उठती और हिम्मत बँधती है। राजहंसों की रीति-नीति यही है। वे निजी जीवन में मोती चुगते हैं। नीरक्षीर विवेक को अपनाये रहते हैं और जब कुछ करने की योजना बनाते हैं तो समुद्र पार तक उड़ जाने या गायत्रीजी, ब्रह्माजी जैसे देवादि देवों की पीठ पर लदे रहने की विशिष्टता प्रकट करते हैं।

प्रज्ञापुत्रों का चिंतन और चरित्र ऐसा ही होना चाहिए। उनकी उमंगों में आकांक्षाओं में, गतिविधियों में, विभूतियों में, प्रशंसाओं में कुछ ऐसी विशेषता होनी चाहिए जिससे दूसरों को प्रेरणा मिले। दीपक की तरह प्रकाशवान रहने और वातावरण में अलोक भरे रहने का गौरव कम नहीं है। भले ही इसमें वंचित सम्पदा चुकती हो, भले ही जलन सहनी पड़ती हो। ओलों का अनुकरण न किया जाय जो बादलों पर घूमते हैं। सफेद ठण्डे भी दिखते हैं किन्तु गतिविधियों का लेखा जोखा लेने पर फसल को जलाने और अपने को गलाने में ही उनकी सम्पदा का अन्त दिखता है। ध्वंस तो माचिस भी कर सकती है। कांटा भी प्राणघातक हो सकता है। अपना पराक्रम बुहारी जैसा, सूपे जैसा, साबुन जैसा, कपास जैसा सृजनात्मक रहे तो क्या हर्ज है। घास जैसे उगें, हरीतिमा बिखेरें और दूसरों के काम आयें तो यह उपक्रम भी बुरा नहीं है।

उनकी नकल न करें जिनने अनीतिपूर्वक कमाया और दुर्व्यसनों में उड़ाया। बुद्धिमान कहलाना आवश्यक नहीं। चतुरता की दृष्टि से पक्षियों में कौवे को और जानवरों में चीते को प्रमुख गिना जाता है। ऐसे चतुरों और दुस्साहसियों की विरादरी जेलखानों में बनी रहती है। ओछों की नकल न करें। व्यक्तित्व की दृष्टि से बचकाने, लालची, उद्धत, उच्छृङ्खल लोग अपने मार्गदर्शक न बनें। आदर्शों की स्थापना करते समय श्रेष्ठ, सज्जनों को, उदार महामानवों को ही सामने रखें। पतितों की प्रशंसा करने, उन्हीं का अनुसरण करने की भूल न करें। सस्ती उपलब्धियाँ कमाने में प्राय: धूर्तता को ही सफलता मिलती है पर स्मरण रखा जाय कि वह उपार्जन बहुत महँगा पड़ता है। सम्पत्तिवान होने के कारण किसी को भी श्रेय न दें और न उनकी राह पर चलने की उतावली करें। इसमें जोखिम ही जोखिम है?

युग परिवर्तन का शुभारम्भ प्रज्ञा परिजनों के दृष्टिकोण निर्धारण एवं क्रिया में आलोक भरने के रूप में होना चाहिए। इन्जीनियर हो तो भवन बनें, डाक्टर हों तो अस्पताल चलें, अध्यापक हों तो बच्चे पढ़ें, सेनापति हों तो सिपाही जैसे लड़ें । अग्रगामी रास्ता दिखाते ही नहीं बनाते भी हैं। यदि वह सही दिशा में जाता होगा और सीधा होगा तो उस पर चलने वाली भीड़ की कमी न रहेगी। कठिन तो आरम्भ ही होती है। ढर्रे चल पड़े तो बड़े-बड़े उद्योगों को मुनीम, गुमास्ते भी चलाते रहते हैं। युग सृजन में प्रमुख भूमिका उनकी होगी जो आगे चलेंगे अर्थात् अपने व्यक्तित्व और प्रयास में ऐसी आदर्शवादिता भर देंगे जिसे देखकर उस अनुकरण का साहस जन-जन में उभरे। युग परिवर्तन का श्रीगणेश अपने निजी क्षेत्र में प्रज्ञा परिजनों को करना है। उन्हें इस प्रकार का साँचा बनना है जिससे सटने वाले ठीक उसी तरह के बनते चले जायें।

इस सन्दर्भ में प्रथम निर्धारण यह है कि लोक प्रवाह से तनिक भी प्रभावित न हुआ जाये। लोगों को अन्धी भेड़ों की मण्डली भर समझा जाय और यह मान कर चला जाय कि अपनी विशिष्ट सत्ता इनका मार्गदर्शन करने के लिए हुई है। पथ प्रदर्शक अपनी स्वतन्त्र सूझ-बूझ का परिचय देते हैं। उन्हें उथले परामर्श-दाताओं की उपेक्षा ही करनी पड़ती है। भटके लोग तो दूसरों को भटका ही सकते हैं।

मानकर चलना होगा कि नित्यकर्म, निर्वाह क्रम के सामान्य लोकव्यवहार को छोड़कर प्रज्ञा परिजनों को अपनी आकांक्षा, विचारणा, कार्यविधि, आदतें लगभग ऐसी बदलनी चाहिए जिसे व्यक्तित्व का कायाकल्प कहा जा सके। गीता में योगी के लक्षण बताते हुए कहा है, वे दिन में सोते और रात में जागते हैं अर्थात् सामान्य जनों से अपनी गतिविधियाँ भिन्न प्रकार की बनाते हैं।

लोगों के दृष्टिकोण, जीवनक्रम एवं प्रयास का शवच्छेद किया जाय तो उनमें से अधिकांश रावण,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुम्भकर्ण, मारीच, कंस, दुर्योधन, जरासंध, हिरण्यकश्यप, वृत्रासुर, भस्मासुर के भाई-भतीजे दिखाई पड़ेंगे। अन्तर इतना ही है कि योग्यता एवं समर्थता के अभाव में मनचीती कर नहीं पाते। रीति-नीति उनकी उसी स्तर की है। सूर्पनखा, ताड़का, त्रिजटा, सुरसा, पूतना, मन्थरा घर-घर में विराजमान हैं। अन्तर साधन और अवसर न मिल पाने जितना है। इन लोगों के बीच रहते हुए भी कमल पत्र की नीति बनानी चाहिए। सुदामा, केवट, हनुमान, भागीरथ जैसों का अनुकरण करने में घाटा नहीं सोचना चाहिए। कौशिल्या, सुमित्रा, उर्मिला, कुन्ती, मदालसा, मीरा, संघमित्रा का रास्ता अपनाने में कोई घाटा नहीं है। पिछला जीवन उथला रहा हो तो भी भविष्य का उज्ज्वल निर्धारण करने में कोई अड़चन नहीं। वाल्मीकि, अंगुलिमाल, विल्वमंगल, अजामिल जैसे बदल सकते हैं। आम्रपाली, वासवदत्ता की कथाएँ बताती हैं कि सामान्य स्तर से गई-गुजरी नारी भी आंतरिक परिवर्तन होने पर विश्व विभूति बन सकती है । आदर्शवादी परिवर्तन के लिए जीवन का हर क्षेत्र, संसार का हर कोना खुला पड़ा है।

सर्वप्रथम अपने समय और खर्च को कसना चाहिए। औचित्य की सीमा समझी जाय और उपभोग, संचय, व्यामोह, खुशामद की अभ्यस्त आदतों को उलट दिया जाय तो अगले ही दिन अभ्यस्त ढर्रा रवैया बदलने लगेगा। मनःस्थिति न परावलम्बियों जैसी रहेगी न दीन-दयनीयों जैसी। आत्मबोध उभरते ही प्रतीत होगा कि न केवल निर्वाह के साधन पर्याप्त हैं वरन् देन के लिये भी विपुल वैभव अपने पास विद्यमान है। धन न सही समय, श्रम, प्रभाव, प्रतिभा की दृष्टि से भगवान ने किसी को भी दरिद्र नहीं बनाया। इन्हें बर्बादी से बचाने के उपरान्त हर व्यक्ति इस स्थिति में होगा कि वह समाज और संस्कृति को बहुत कुछ दे सकेगा। असंख्यों को रास्ता बनाने में लाल मशाल हाथ में लिये आगे-आगे चल सकेगा।

लोग कुरीतियों के अभ्यस्त हैं। हम क्यों उनका अनुसरण करें। लोग अन्धाधुन्ध बच्चे जनते, उनके लिये कुबेर वैभव जुटाने की बात सोचते हैं। हम क्यों न अपने बालकों को श्रमजीवी एवं सृजन सहयोगी बनायें। शादियों में पैसे की होली फूँकने की जरूरत क्या है ? ठाठ-बाट का अमीरी का खर्चीला स्वांग क्यों करें ?

लोगों की आदतें बिगड़ गई हैं। वे चटोरेपन में लिप्त रहकर खोखले बनते जा रहे हैं। हमें वैसा करने की क्या पड़ी है? लोगों की अनीति उपार्जन और संचय अपव्यय में उसका समापन करने की आदत है, हम क्यों वैसा करें? लोग नशा पीते हैं। अभक्ष्य खाते हैं, दुर्व्यसनों में डूबे, कुकर्म करते रहकर जिंदगी के दिन काटते हैं क्या स्वजन सम्बन्धी होने के नाते इन्हीं का दबाव माना और इन्हीं का अनुसरण किया जाय? मूढ़ मान्यताओं में जकड़े, अनाचारों से अभ्यस्त, कुचक्री, षडयंत्ररत लोगों को न हमारा परामर्श दाता होना चाहिए न सूत्र-संचालक, न नेता। भले ही वे अपनी चतुरता के कारण बड़े लोगों में गिने जाने लगे हों। कोई ब्राह्मण वंश में जन्मा है या साधुवेष धारण करता है, अधिक पढ़ा है या पदाधिकारी बन गया है। इनमें से एक भी ऐसा कारण नहीं है जिससे इन्हें नीति निर्धारक माना जा सके। इस अज्ञान, अन्धकार, अनाचार और दुराग्रह के माहौल से हमें समुद्र में खड़े स्तम्भों की तरह एकाकी खड़े होना चाहिए। भीतर का ईमान, बाहर का भगवान यदि इन दो को मजबूती से पकड़ें और विवेक तथा औचित्य के दो पग बढ़ाते हुए लक्ष्य की ओर एकाकी आगे बढ़ें तो इसमें सच्चा शौर्य, पराक्रम है। भले ही लोग उपहास उड़ायें या असहयोगी, विरोधी रुख बनाये रहें।

युग परिवर्तन में जिस सतयुग के अवतरण का लक्ष्य है। उसे प्रज्ञा परिजन सर्वप्रथम आत्मसत्ता में अवतरित करें। एक जलता दीपक असंख्यों को जला देता है। इस तथ्य पर विश्वास करें। स्वयं बदलें-प्रवाह को पलटें और पराक्रमी युग प्रवर्तकों की अग्रिम पंक्ति में खड़े हों। यही है समय की माँग और आत्मा की पुकार जिसे कोई प्राणवान अनसुनी न करें।

"हम बदलेंगे युग बदलेगा"

सूत्र का शुभारम्भ

आदत पड़ जाने पर तो अप्रिय और अवांछनीय स्थिति भी सहज और सरल ही प्रतीत नहीं होती, प्रिय भी लगने लगती है। बलिष्ठ और बीमार का मध्यवर्ती अन्तर देखने पर यह प्रतीत होते देर नहीं लगती कि उपयुक्त एवं अनुपयुक्त के बीच कितना बड़ा फर्क होता है। अतीत के देव मानवों के स्तर और सतयुगी स्वर्गोपम वातावरण से आज के व्यक्ति और समाज की तुलना करने पर यह समझते देर नहीं लगती कि उत्थान के शिखर पर रहने वाले इस धरती के सिरमौर पतन के कितने गहरे गर्त में क्यों व कैसे आ गिरे।

आज शारीरिक रुग्णता, मानसिक उद्विग्नता, आर्थिक तंगी, पारिवारिक विपन्नता, सामाजिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवांछनीयता क्रमशः बढ़ती ही चली जा रही है, अभ्यस्तों को तो नशेबाजी की लानत और उठाई गीरी भी स्वाभाविक लगती है, कोढ़ी भी अपने समुदाय में दिन गुजारते रहते हैं पर सही और गलत का विश्लेषण करने पर प्रतीत होता है कि हम सब ऐसी स्थिति में रह रहे हैं जिसे मानवी गरिमा से गई गुजरी, सड़ी ही कहा जा सकता है।

उत्थान-पतन के विवेचनकर्ता बताते रहे हैं कि परिस्थिति और कुछ नहीं मनःस्थिति की परिणति मात्र है। चिन्तन चरित्र और व्यवहार के समन्वय से व्यक्तित्त्व बनता है। यही है जो शक्तिशाली चुम्बक की तरह अपनी सजातीय परिस्थितियों को खींचता, घसीटता और इर्द-गिर्द जमा करता रहता है। जो भीतर से जैसा है वह बाहर से भी उसी स्तर के वातावरण से घिरा रहता है। बीज के अनुरूप ही पेड़ का स्वरूप फलों का स्वाद आकार होता है। व्यक्तित्व को बीज और परिस्थितियों को उसकी परिणति कहा जाय तो उसमें तनिक भी अत्युक्ति न होगी।

समाज व्यक्तियों का समूह मात्र है। लोगों का स्तर जैसा भी भला-बुरा होता है समाज का प्रचलन, स्वरूप एवं माहौल वैसा ही बनकर रहता है। व्यक्ति को महत्ता देनी हो तो उसकी मनःस्थिति को ही श्रेय या दोष देना चाहिए। गुण, कर्म, स्वभाव का स्तर ही मनुष्य का वास्तविक वैभव है। उसी के अनुरूप मनुष्य उठते-गिरते और सुख-दुःख पाते रहते हैं। बहुमत जैसा होता है समाज का स्वरूप एवं ढाँचा भी तदनुरूप बनकर खड़ा हो जाता है। मानवी उत्थान-पतन के इस तत्व दर्शन को समझने के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि परिस्थितियों में सुधार परिवर्तन करना हो तो व्यक्ति के अन्तराल को कुरेदना चाहिए। मनुष्य के दृष्टिकोण, स्वभाव एवं चरित्र में उत्कृष्टता का समावेश हो सके तो ही यह सम्भव है कि शान्ति, प्रगति और प्रसन्नता का आनन्द लेते हुए हँसती-हँसाती, खिलती-खिलाती जिन्दगी जियी जा सके। सभ्य सज्जनों का समुदाय ही समुन्नत समाज कहा और स्वर्ग सतयुग कहकर सराहा जाता है।

यदि वर्तमान परिस्थिति अनुपयुक्त लगती हो और उसे सुधारने, बदलने का सचमुच ही मन हो तो सड़ी नाली की तली तक साफ करनी चाहिए। सड़ी कीचड़ भरी रहने पर दुर्गन्ध और विषकीटकों से निपटने के छुट-पुट उपायों से कोई स्थायी समाधान मिल नहीं सकेगा। समाजगत विभीषिकाओं और व्यक्तिगत व्यथाओं के नाम रूप कितने ही क्यों न हों, सबका आत्यन्तिक समाधान एक ही है कि दृष्टिकोण की दिशाधारा बदली जाय और अभ्यस्त ढर्रे की रीति-नीति में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया जाय। उलटे को उलट कर सीधा किया जा सकता है। एक शब्द में इसी को युग क्रान्ति कहा जा सकता है। इसे नियोजित किये बिना और कोई गति नहीं। जहाँ तक उतर चुके उसके उपरान्त अब महाविनाश का सामूहिक आत्म हत्या का ही अन्तिम पड़ाव है।

मानवी क्षमता इनदिनों अनुपयुक्त को अपनाने बढ़ाने में संलग्न है। होना यह चाहिए कि प्रवाह मुड़े और अदूरदर्शिता को निरस्त करके औचित्य को समर्थन मिले। मनुष्य शक्तियों का भण्डार है। दुर्भाग्य एक ही है कि उसे दुष्प्रवृत्तियों में नियोजित करके बर्बादी के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है । यह स्थिति उलटी जानी चाहिए। क्षमताओं को अपव्यय से बचाया और सृजन प्रयोजनों में लगाया जाना चाहिए। यहाँ एक आवश्यकता और भी है कि जो गन्दगी फैलाई जा चुकी है उसे हटाने के लिए भी तूफानी प्रयत्न किया जाय, अन्यथा मार्ग में बिखरे हुए काँटे प्रगति पथ के अवरोध ही बने रहेंगे।

"हम बदलेंगे युग बदलेगा" के उद्घोष में निदान और उपचार के दोनों ही पक्षों का समावेश है। परिस्थितियों को बदलने के लिए मनःस्थिति को, समाज को सुधारने के लिए व्यक्ति परिष्कार को अनिवार्य माना जाना चाहिए। हर व्यक्ति को इस तथ्य से अवगत सहमत करना चाहिए कि इन दिनों लोक मानस की दिशाधारा में समग्र परिवर्तन की आवश्यकता है। इसके बिना उज्ज्वल भविष्य की संरचना तो दूर, बढ़ती हुई विपत्तियों के त्रास से भी आत्म रक्षा सम्भव न हो सकेगी।

युग परिवर्तन या व्यक्ति परिवर्तन के लिए व्यक्तिगत दृष्टिकोण और समाजगत प्रवाह-प्रचलन को बदलने की बात कही जाती है। उसे समन्वित रूप से एक शब्द में कहा जाय तो प्रवृत्तियों का परिवर्तन भी कह सकते हैं। लोग आज जिस तरह सोचते, चाहते, मानते और करते हैं उसके उद्गम केन्द्र में ऐसे हेरफेर की आवश्यकता है जिससे सड़े-गले ढर्रे का परित्याग और शालीनता का अवलम्बन सम्भव हो सके। इसके लिए क्या करना होगा? उसे भी संक्षेप में कहा जा सकता है। इसके लिए तीन सिद्धान्त सूत्रों को समझने अपनाने भर से काम चल जायेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक यह कि निर्वाह में संयम सादगी का इतना समावेश किया जाय जिसे औसत नागरिक स्तर का और शरीर यात्रा के लिए अनिवार्य कहा जा सके। दूसरा यह कि सादगी अपनाने के उपरान्त जो क्षमता सम्पदा बचती है उसे सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के लिए, नव निर्माण के लिए समयदान, अंशदान के रूप में अधिकाधिक उदार उत्साह के साथ समर्पित किया जाय।

तीसरा यह कि अन्तरंग और बहिरंग दुष्प्रवृत्तियों को उखाड़ फेंकने के लिए साहसिक शौर्य पराक्रम के साथ संघर्ष किया जाय।

इन तीनों सत्प्रवृत्तियों को प्रचलित दुष्प्रवृतियों का स्थानापन्न बनाया जा सके तो समझना चाहिए कि निकृष्टता के दलदल से उबरने और उज्ज्वल भविष्य का नव-सृजन कर सकने वाला राजमार्ग हस्तगत हो गया। इतने भर हेरफेर से युग परिवर्तन का सुनिश्चित आधार बन सकता है और हम नरक से उबर कर स्वर्ग में अपने ही पुरुषार्थ से प्रवेश करने में सफल हो सकते हैं।

इन दिनों विलास, संग्रह और अहंता की ललक-लिप्सा हर किसी पर उन्मादी आवेश की तरह छाई हुई है। वासना, तृष्णा के अतिरिक्त और कुछ किसी को सूझता नहीं। संकीर्ण स्वार्थपरता और अहम्मन्यता के लिए कोई कुछ भी करने को तैयार है। लगता है मानो औचित्य और विवेक को तिलाञ्जली दे दी गई हो। यह ढर्रा जब तक चिन्तन और व्यवहार में इसी प्रकार घुसा रहेगा तब तक सर्वत्र हुई विपन्नता से छुटकारा पाना कठिन है। परिवर्तन अन्तरंग में हो सका तो बहिरंग परिस्थितियों के बदलने में संदेह की गुंजायश ही न रहेगी।

भटकाव से भ्रमित और कुत्साओं से ग्रसित व्यक्ति ऐसी ललक लिप्साओं में संलग्न रहता है जिन्हें दूरदर्शिता की कसौटी पर कसने से व्यर्थ, निरर्थक एवं अनर्थ की ही संज्ञा दी जा सकती है। पेट प्रजनन इतना कठिन नहीं है जिनकी उचित आवश्यकताएँ थोड़ा-सा समय श्रम लगा कर जुटाई न जा सकें। सामर्थ्यों और साधनों की बर्बादी तो मूर्खता एवं धूर्तता जैसे प्रयोजनों में ही नष्ट-भ्रष्ट होती रहती है। इसे जो जितनी बचा सकेगा उसे अपने पास सत्प्रयोजनों में लगा सकने योग्य भण्डार उतनी ही मात्रा में भरा-पूरा दृष्टिगोचर होने लगेगा। बर्बादी से बचने और प्रगति पथ पर चढ़ दौड़ने की सुविधा प्राप्त करने का एक ही उपाय है—'संयम'। 'सादा जीवन-उच्च विचार' का आदर्श अपनाने पर ही व्यक्तित्त्व के अभ्युदय का शुभारम्भ होता है।

इन्द्रिय संयम, समय अर्थ संयम और विचार संयम के चतुर्विध आत्मानुशासन को अध्यात्म की भाषा में तप साधना कहा गया है और साधना से सिद्धि का तत्त्वदर्शन समझाते हुए कहा गया है कि संयमी के पास ही श्रेय खरीदने के लिए पूँजी जुटती है। जिनकी तृष्णाएँ महत्त्वाकांक्षाएँ ही आकाश चूमती हैं, जो संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति में ही चित्तवृत्तियों को केन्द्रित किये हुए हैं उन्हें विलास-वैभव जुटाने की बात ही सोचते हुए जिन्दगी गुजारनी पड़ती है। परमार्थ की बात तो वे आत्म प्रवंचना एवं लोक विडम्बना के लिए करते रहते हैं। वस्तुतः उनसे उस सन्दर्भ में कोई कारगर कदम उठात नही बनं पड़ता। यही कारण है कि महानता और संयम साधना को पर्यायवाची पूरक माना जाता है। औसत नागरिक का स्तर अपनाना, महत्त्वाकांक्षाएँ उसी परिधि में सीमित कर लेना ऐसा निर्धारण है जिसे अपनाते ही हर स्तर और हर परिस्थिति का व्यक्ति महान प्रयोजनों के लिए नियोजित कर सकने योग्य शारीरिक, मानसिक ही नहीं आर्थिक अनुदान की भी बचत कर सकता है।

अगले दिनों नव-सृजन के लिए इतने अधिक प्रकार के इतनी अधिक संख्या में कार्यक्रम अपनाने पड़ेंगे जो वर्तमान कुप्रचलनों का स्थान ग्रहण कर सकें। वर्तमान प्रयोजनों में असीम श्रम और धन लगा हुआ है। नशा एवं माँस व्यवसाय, कुत्सित साहित्य, कामुकता भड़काने वाली फिल्म, जुआ, लाटरी जैसे कृत्यों में न जाने कितनी बुद्धि, मेहनत और दौलत लगाई गई है। इसे हटाना तभी सम्भव है जब समानान्तर सत्प्रवृत्तियों में उस उत्साह को नियोजित किया जा सके। इसके लिए पूँजी भी उतनी ही चाहिए और श्रम भी उतना ही । यह कहाँ से जुटे? स्पष्ट है कि इसकी पूँजी जागृत आत्माओं द्वारा की गई बचत-कटौती से ही बन पड़ेगी। शिक्षा, साहित्य, कला, स्वास्थ्य, कुटीर उद्योग, बालविकास जैसे कार्यों को इतने विशाल परिमाण में खड़ा करना होगा कि ५०० करोड़ मनुष्यों की इस दुनिया को पुराना छोड़ने के साथ ही नया अपनाने के लिए ढाँचा खड़ा और सरंजाम जुटा दीखे। स्पष्ट है कि इसके लिए समय, श्रम और धन की प्रचुर परिमाण में आवश्यकता पड़ेगी। उसे असमंजस की बेला में सर्वसाधारण से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपलब्ध न किया जा सकेगा। उसकी आरम्भिक पूर्ति युग चेतना के अग्रदूतों को ही करनी होगी, अनुकरण का प्रचलन तो बाद में बनेगा।

स्पष्ट है कि आजीविका का एक महत्त्वपूर्ण अनुपात अंशदान के रूप सृजन कृत्यों के लिए नियोजित करने की आवश्यकता पड़ेगी। इतना ही नहीं श्रम, समय भी इसके साथ ही देना पड़ेगा। अस्तु, न केवल आजीविका का एक अंश वरन् समय का श्रमदान भी इस निमित्त नियमित रूप से नियोजित करते रहने की आवश्यकता पड़ेगी। आरम्भ में महीने में एक दिन की आजीविका और हर दिन दो घण्टे का श्रम इस हेतु उन सभी को लगाना होगा जो प्रस्तुत विश्व संकट से उबरने की बात सोचते और इस निमित्त कुछ करने का साहस करते हैं।

योजनाएँ कैसी भी क्यों न हों—बुद्धिबल, श्रम तथा धन की माँग करती हैं। युग परिवर्तन अभियान भी इसका अपवाद नहीं है। ''जो कहे सो पानी को जाय'' वाली उक्ति के अनुसार प्रतिपादन कर्त्ताओं को कथनी को करनी में प्रयुक्त करके दिखाना पड़ता है। विशेषतया आदर्शवादी प्रचलनों के सम्बन्ध में तो इसके बिना काम ही नहीं चलता।

तीसरा चरण अवांछनीयता उन्मूलन का है। नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्तियाँ सम्पन्न करने के लिए प्रज्ञा-अभियान की लाल मशाल इसी निमित्त जलाई गई है। प्रश्न यह है, कि दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध व्यापक संघर्ष का श्रीगणेश कहाँ से किया जाय। गाँधी जी ने सुगम उपाय 'नमक सत्याग्रह' सोचा था और फिर सत्याग्रह आन्दोलन को 'करो या मरो' स्तर तक पहुँचाया था। उसी रणनीति का अनुसरण हमें भी संव्याप्त दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध अपनाना चाहिए।

इस तथ्य से सभी अवगत हैं कि खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं। धूमधाम, देन-दहेज की शादियों का वर्तमान प्रचलन देखने में हर्षोत्सव की साज-सज्जा जैसा भले ही प्रतीत होता हो, किन्तु वस्तुतः उसकी भयंकरता उतनी हलकी है नहीं। इस कारण नर और नारी के बीच भयंकर खाई खड़ी हुई है, कन्या और पुत्र का अन्तर बढ़ा है। कन्या-शिक्षा में कटौती हुई है, हत्याओं और आत्महत्याओं का सिलसिला चला है, सगे-सम्बन्धियों के बीच डकैती जैसी दुष्टता की जड़ जमी है, दाम्पत्य जीवन की उत्कृष्टता को भयानक चोट लगी है, देश की आर्थिक कमर टूटी है, समाज का ढाँचा बेतरह लड़खड़ाया है। और भी न जाने क्या-क्या अनर्थ इस कारण हुआ है। समय की माँग और दूरदर्शिता का संकेत यह है कि सर्वप्रथम धूमधाम और देन-दहेज की शादियों के विरुद्ध व्यापक मोर्चा खड़ा किया जाय, और प्रचण्ड संघर्ष छेड़ा जाय। इसमें कुछ एक मदोन्मत्तों को छोड़कर सर्व साधारण का सर्मथन पूरी तरह मिलने की सम्भावना है।

इस संदर्भ में प्रथम उपाय प्रतिज्ञा-पत्र अभियान के रूप में आरम्भ किया जाय। अभिभावक प्रतिज्ञा करें, हम अपने बालकों के विवाह में धूमधाम एवं देन-दहेज स्वीकर न करेंगे। विवाह योग्य लड़की-लड़के प्रतिज्ञा करें कि वे नितान्त सादगी और बिना मोल-भाव का विवाह ही करेंगे, भले ही वैसा सुयोग न बनने पर आजीवन कुँवारा ही क्यों न रहना पड़े। प्रभावशाली लोग अपने सम्पर्क-क्षेत्र में सादगी प्रधान विवाहों को प्रोत्साहन दें और खर्चीली शादियों का डट कर विरोध करें।

यहाँ सर्वसाधारण द्वारा अपनाया जाने योग्य सरल सत्याग्रह यह है कि खर्चीली शादियों में सम्मिलित होने से स्पष्ट इन्कार कर दें भले ही वे अपने सम्बन्धियों-कुटुम्बियों या मित्रों के ही यहाँ क्यों न हो रही हों। कुछ समय पूर्व यह असहयोग आन्दोलन प्रज्ञा अभियान के अन्तर्गत मृतक भोज न खाने के सम्बन्ध में चलाया गया और पूरी तरह सफल रहा और अब खर्चीले विवाहों को भी इसी असहयोग आन्दोलन का अगला चरण माना जाय और एक-एक करके प्रचलित अवांछनीयताओं के विरुद्ध असहयोग-प्रतिरोध संघर्ष कड़ा करते चला जाय।

''हम बदलेंगे युग बदलेगा'' का उद्घोष इन्हीं दिनों विज्ञ जनों को सच्चे मन से अपनाना और तत्काल चरितार्थ करना चाहिए। इसके तीन सिद्धान्त सूत्रों को बिना एक क्षण गँवाये अपनाया जाय।

(१) औसत नागरिक स्तर का निर्वाह-चतुर्विधि संयम अनुशासन, (२) समय दान अंश दान (३) दहेज की धूमधाम वाली शादियों का विरोध असहयोग। यह तीन आधार ऐसे हैं जिन्हें नवयुग के भव्य निर्माण में अनिवार्य रूप से अपनाया जाना चाहिए। इन आदर्शों को अपनाते हुए सृजन प्रयोगों को अधिकाधिक प्रखर विस्तृत करते चलना चाहिए। यही है सतयुग की वापसी का भागीरथी प्रयास, जिसकी सफलता पर मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण सुनिश्चित रूप से सम्भव हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग शिल्पियों के सप्त महाव्रत

युग शिल्पियों को आत्म-कल्याण और लोक मंगल का दुहरा उत्तरदायित्व सम्भावना है इसमें उन्हें अपना व्यक्तित्व अपेक्षाकृत अधिक पवित्र, प्रखर एवं व्यवस्थित बनाना है इसके लिए कुछ विशेष सद्गुणों को बढ़ाने के लिए अनवरत प्रयत्न करना चाहिए। जो समझना और बढ़ाना है वह इस प्रकार है:-

लक्ष्य और चिन्तन:—जीवन को ईश्वर प्रदत्त सर्वोपरि उपहार समझें और उसका उद्देश्य स्रष्टा के विश्व उद्यान को अधिकाधिक समुन्नत सुसंस्कृत बनाना मानें। इस प्रयास में आत्म कल्याण और विश्व कल्याण के दोनों उद्देश्य पूरे होते हैं।

बड़प्पन की महत्वाकांक्षाओं को घटाएँ। महानता प्राप्ति की उत्कण्ठा उभारें। वासना-तृष्णा के लोभ मोह के भव बन्धनों में न जकड़ें। सदुद्देश्यों के आकाश में सत्प्रवृत्तियों के पंख पसारें और जीवन मुक्तों की तरह परम लक्ष्य की उपलब्धि के लिए उड़ चलें। पीछे मुड़कर न देखें। वर्तमान को सँभालें, भविष्य की सोचें।

ज्ञान योगी की तरह सोचें कर्मयोगी की तरह पुरुषार्थ करें। भक्तियोगी की तरह सहृदयता उभारें और उसे पतन-पराभव के निराकरण में नियोजित रखें।

प्रात: उठते ही दिन का जन्म, सोते ही एक रात का मरण सोचें और अवसर के श्रेष्ठतम सदुपयोग का भाव भरा निर्धारण करें महाप्रज्ञा के अवतरण में सहकर्मी बनें। प्रज्ञा अभियान में सम्मिलित रहें। हर दिन गायत्री मन्त्र की न्यूनतम तीन माला का जप तथा सविता की ध्यान धारणा श्रद्धापूर्वक चलाएँ, उसमें व्यतिरेक न करें।

श्रमशीलता :—समय ही जीवन है। जिसने समय का जितना सदुपयोग किया वह उतना ही जिया, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए एक-एक क्षण को सुनियोजित विधि-व्यवस्था में श्रम निरत रखें। आलस्य प्रमाद को पक्के शत्रु समझें और उन्हें पास न फटकने दें। इस सम्बन्ध में अपनी अभ्यस्त आदत को स्वयं सुधारें। पैनी नजर से देखें कि काम उदास मन से, उपेक्षापूर्वक, मंदगति से तो नहीं हो रहा है? समुचित तत्परता और स्फूर्ति बरती गयी या नहीं? समय श्रम और परिपूर्ण मनोयोग से ही काम का स्वरूप निखरता और प्रयोजन पूर्ण होता है।

किसी काम को छोटा न मानें। हाथ में आते काम को ठीक समय पर, सही रीति से, समूची योग्यता लगाकर करने को प्रतिष्ठा का प्रश्न मानकर चलें। खाली समय होने पर दूसरों द्वारा बताये जाने की प्रतीक्षा न करके स्वयं अपने लिए काम की तलाश करें। निजी या समीपवर्ती क्षेत्र से अव्यवस्था हटाने के रूप में वह कहीं भी प्रचुर मात्रा में मिल सकता है। प्रगति का एक ही मापदण्ड है—किसने अपने कार्यों में कितना उत्साह दिखाया और उछलकर आगे आया।

सुव्यवस्था :—सौन्दर्य उपासक बनें। स्वच्छता, सादगी और सुरुचि का समावेश ही सौन्दर्य है। अपने शरीर, वस्त्र, बिस्तर, निवास एवं कार्य क्षेत्र पर इस सन्दर्भ में पैनी दृष्टि रखें कि कहीं गन्दगी, कुरूपता अस्त-व्यस्तता तो दिखाई नहीं पड़ रही है। जहाँ दीखे वहाँ फिर कभी के लिए टालने, की अपेक्षा तुरन्त सुधारने का प्रयत्न करें।

निजी कार्यक्षेत्र को सुन्दर, सुव्यवस्थित बनाने के अतिरिक्त साथियों को भी अपना मानें और उस परिकर को भी अधिक सुव्यवस्थित बनाने की बात सोचें। जो समझ में न आये उसे विनय एवं सद्भावना-पूर्वक करायें, भूल बताने, दोष लगाने, व्यंग्य-उपहास करने पर तो सेवा सहायता भी कटुता उत्पन्न करती है, यह ध्यान में रख कर ही साथियों की सुव्यवस्था में योगदान दें।

रात को जल्दी सोयें। प्रात: जल्दी उठें। डायरी लिखें। अपने समय, श्रम, चिन्तन, धन एवं प्रभाव की सम्पदा के अनुपयोग, दुरुपयोग एवं सदुपयोग का लेखा-जोखा रखें। अव्यवस्था ढूँढ़े और उसे साहस-पूर्वक सुधारें। अभ्यस्त ढर्रे की समीक्षा करें और उसमें अधिकाधिक प्रगतिशीलता का समावेश करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

ध्यान रखें। योजनाबद्ध काम करने, प्रसंगों के हर पहलू पर विचार करने, परिवर्तन सोचने, साधन जुटाने, सहयोग पाने की व्यवस्था बुद्धि ही स्तर उठाती, सम्मान दिलाती एवं सफल बनाती है।

शिष्टता :—दूसरों का सम्मान और अपना विनय वचन व्यवहार में समन्वित रखने को शिष्टता कहते हैं। उस सत्प्रवृत्ति को अपने स्वभाव का अंग बनायें, उच्छृंखलता न बरतें, उसे अपनी गिरावट और दूसरों की अवहेलना द्वारा दु:खद परिस्थितियाँ उत्पन्न करने वाली निकृष्टता समझें। यह दोष स्वभाव में घुस गया हो तो उसे कड़ी आत्म समीक्षा करके खोजें और निरस्त करने के लिए संकल्पपूर्वक प्रयत्न करें। अभ्यासवश जब भी ऐसे प्रसंग बन पड़े कान पकड़ने जैसी छोटी आत्मप्रताड़ना देकर प्रयश्चित करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलन और विदाई का शिष्टाचार न भूलें। चित्त प्रसन्न रखें और मन्द मुस्कान बनाये रखने की आदत डालें। न थकान प्रकट होने दें, न उदासी। कहें कम, सुनें अधिक। शेखी न बघारें। "मैं" के स्थान पर "हम लोग" शब्द का प्रयोग करें। चापलूसी न करें। पर सज्जनोचित सद्व्यवहार में कमी न पड़ने दें। आवेश, उत्तेजना, कर्कशता, खीझ, झल्लाहट से दूर रहें। जो कहना है, शान्त चित्त और शालीन शब्दावली में कहें। गाली गलौज तक न उतरें। रोष प्रकट करने, सुधारने, दबाने के ऐसे भी तरीके हैं जिनमें अपनी शालीनता न गँवानी पड़े। उतावली में किसी निष्कर्ष पर न पहुँचे। तथ्य समझने का प्रयत्न करें और पक्ष-विपक्ष की स्थिति को समझते हुए निर्णय पर पहुँचें।

नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करें । सामाजिक नीति-मर्यादा का ध्यान रखें। आलोचना से बचें व्यंग्य उपहास, निन्दा-चुगली के दुर्गुण न अपनायें। जहाँ सुधार की आवश्यकता है वहाँ आत्मीयता का समावेश रखते हुए हानि-लाभ के पक्ष रखें और अनुरोध युक्त सुझाव भर प्रस्तुत करें।

संयमशीलता :—अपनी श्रम, समय, चिन्तन, धन एवं प्रतिभा के रूप में उपलब्ध क्षमताओं का महत्त्व समझें और उनके सदुपयोग से प्रगति-पथ पर अग्रसर होने की बात सोचें। इन विभूतियों का एक कण भी बर्बाद न होनें दें। अपव्यय अपने ही उज्ज्वल भविष्य का विनाश है।

इन्द्रिय संयम बरतें। चटोरेपन से बचें और कामुक चिन्तन की हानियाँ समझें। दिनचर्या बनायें और कठोरतापूर्वक पालन करें। न श्रम से जी चुरायें न समय को प्रमाद में गवाँयें। स्वाध्याय की आदत डालें। आत्म निर्माण की योजना बनाने के चिन्तन-मनन में मन को लगायें। कुविचार आते ही उनके प्रतिपक्षी सुविचारों की सेना उनसे लड़ने के लिए खड़ी करदें। नित्य हिसाब रखें किन्तु सत्प्रयोजनों में कृपणता भी न बरतें। संग्रही न बनें पर आमदनी से खर्च कम रखें, कुछ बचत करें, उधार लेने की आदत न डालें। अपने प्रभाव का ऐसा उपयोग करें जिससे सम्पर्क क्षेत्र की दुष्प्रवृत्तियाँ घटें और सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण और परिपोषण उभरे। सादा जीवन उच्च विचार को हर समय ध्यान में रखें। विलासिता की मूर्खता और ठाट-बाट की क्षुद्रता से इसलिए बचें कि उनसे अपना व्यक्तित्व गिरता है और अनुकरण करने वालों का पतन होता है।

अभ्यस्त कुसंस्कारों को खोजें और उन्हें संकल्प-पूर्वक बुहार कर फेंकें। इस सम्बन्ध में कठोरता बरतने, मन मारने और प्रतिकूलता सहने को ही तप कहते हैं। तप संयम से मनुष्य सच्चे अर्थों में शक्तिशाली बनता है।

उदार आत्मीयता :—आत्म निर्माण की दृष्टि से अन्तर्मुखी तो बनें पर एकाकीपन का अभिशाप न अपनायें। हिलमिल कर रहें। मिल-जुलकर काम करें। और बाँट-बाँट कर खायें। अपने को समाज का एक घटक भर मानें और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें। अन्यों की अपेक्षा अपनों के प्रति आपाधापी की संकीर्ण स्वार्थपरता न अपनायें। चिन्तन और व्यवहार में पारिवारिकता के सिद्धान्तों का अधिकाधिक समावेश करें।

सामूहिकता के साथ जुड़ी हुई शक्ति और प्रगति को गम्भीरतापूर्वक समझें और बिलगाव की अपेक्षा सम्मिलित सहयोग की व्यवस्था बनायें। पारस्परिक सहयोग का आदान-प्रदान जितना भी बन पड़े, करते रहें। किन्तु वह होना सदुद्देश्य के लिए ही चाहिए। कुचक्र रचने और षड्यंत्र करने वाले संगठन सहयोग न अपनायें।

आत्मीयता का क्षेत्र व्यापक करें । कुछ लोगों को ही अपना मानने और उन्हीं की फरमाइशें पूरी करने, उपहार लादते रहने के व्यामोह दलदल में न फसें । अपनी सामर्थ्य को सत्प्रवृत्ति संवर्धन में लगायें । देश, धर्म और समाज संस्कृति को प्यार करें । आत्मीयता को व्यापक बनायें । सबको अपना और अपने को सबका समझें । इस आत्मविस्तार का व्यावहारिक स्वरूप लोक मंगल की सेवा साधना से भी निखरता है। उदारता बरतें और बदले में आत्म-सन्तोष, लोक सम्मान तथा दैवी अनुग्रह की विभूतियाँ कमाएँ ।

प्रगल्भता :—दूरदर्शी विवेकशीलता अपनाएँ और उसी आधार पर नीति निर्धारित करें । प्रचलित ढर्रे में से उतना ही स्वीकार करें जो उचित हो । लोक मंगल का ध्यान रखें किन्तु लोकमत पर ध्यान न दें । जन समूह का प्रचलित प्रवाह अवांछनीयता की ओर है उसके साथ न बहें । हर प्रसंग पर न्याय नीति अपनायें और कौन क्या कहता है उसकी उपेक्षा कर सकने का साहस जुटायें । एक आँख प्यार की, दूसरी सुधार की रखें । औचित्य को समर्थन दें, साथ ही अनौचित्य से असहमत रहें और उसे सहयोग न दें। सम्भव हो तो विरोध भी करें और संघर्ष भी । यह नीति अपनों के साथ भी बरती जाय और दूसरों के साथ भी । मित्र या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वजन होने पर भी अवांछनीयताओं में सहयोगी न बनें।

इन दिनों सामाजिक प्रचलनों में अनैतिकता मूढ़ मान्यता और अवांछनीयता की भरमार है । उल्टे को उल्टा करके सीधा करने की नीति अपनानी चाहिए । इसके लिए नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक क्रान्ति आवश्यक अनुभव करें और उसे पूरा करने में कुछ उठा न रखें । आत्म सुधार में तपस्वी, परिवार निर्माण में मनस्वी और समाज परिवर्तन में तेजस्वी की भूमिका निबाहें । अनीति के वातावरण में मूक दर्शक बन कर न रहें । शौर्य, साहस के धनी बनें और अनीति, उन्मूलन तथा उत्कृष्टता अभिवर्धन में प्रखर पराक्रम का परिचय दें ।

जन-सम्पर्क के अनुशासन

प्रज्ञा परिजनों में से जिन्हें भी लोक-सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करना है उन सभी को कुछ मर्यादाओं का ध्यान रखना होगा । सेवा-कार्य जितना महत्त्वपूर्ण है उससे भी अधिक लोक सेवी के व्यक्तित्व की प्रखरता का मूल्य है । मिशन को लोकप्रिय बनाने में दूसरों को प्रभावित, परिवर्तित करने, सुधारने, उभारने में प्रयासों का जितना प्रभाव होता है, उससे कहीं अधिक सफलता लोक सेवी के चिन्तन, चरित्र, स्वभाव पर आधारित व्यक्तित्त्व का पड़ता है । इस प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति प्रज्ञा अभियान के हर सदस्य-युग शिल्पी को पूरी करनी चाहिए ।

इस सन्दर्भ में मोटी मर्यादाएँ यह हैं :—(१) चटोरेपन की आदत छोड़ें । किसी के घर जाकर अपनी स्वाद लिप्सा को प्रकट न होने दें । (२) महिलाओं से एकान्त वार्ता न करें । जब उनसे कुछ कहना हो तो आँखें नीची रख कर वार्ता करें । (३) दिमाग शीशे की तरह साफ रखें । जहँ से जो पैसा प्राप्त हो उसकी रसीद भिजवायें । खर्च का हिसाब प्रमाण सहित नोट करायें । (४) वार्ता तथा व्यवहार में अपनी नम्रता तथा दूसरों के सम्मान का समुचित ध्यान रखें । (५) वेश विन्यास में ब्राह्मणोचित सादगी रखें । विशेषतया केश सज्जा तथा अन्य प्रकार की शृंगारिकता से बचें ।

इसके अतिरिक्त भी सज्जनता, शालीनता, शिष्टाचार से सम्बन्धित अन्यान्य नियम मर्यादाओं का जितना अधिक पालन किया जा सके उतना ही व्यक्तित्त्व निखरेगा और उस आधार पर सेवा-कार्यों का अधिक ठोस परिणाम निकलेगा ।

युग शिल्पी अहमन्यता के विषपान से बचे रहें

समुद्र मंथन में चौदह रत्न निकले पर उनमें सर्वप्रथम दो निकले—एक हलाहल विष, तदुपरान्त मद्य। हलाहल देखने में अत्यंत आकर्षक, नील वर्ण था। मद्य होठों तक पहुँचते-पहुँचते उन्मुक्त, विक्षिप्त कर देने वाला । फिर भी उसकी ललक ऐसी थी कि जिसको एक बार स्वाद लग जाता है फिर छूटने का नाम ही नहीं लेता । इस प्रथम उपलब्धि को पाने के लिए देव-दानव दोनों ही आतुर थे । पर प्रजापति ने दोनों को ही यह समझाने का प्रयत्न किया कि यह देखने और चखने में आकर्षक लगते हुए भी अन्ततः विनाश उत्पन्न करने वाला है । शिवजी ने हलाहल तो अपने कंठ में धारण कर लिया, पर मद्य के लिए आतुर दैत्यों ने हठपूर्वक उसे गटक लिया । फलतः उनकी सामर्थ्य उद्धत प्रयोजनों में लगी और पतन पराभव का कारण बनी ।

लोक-सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले के सम्बन्ध में जन-साधारण की श्रद्धा उमड़ती है । परमार्थ की साहसिकता अपनाने वाले पर सम्मान बरसता है । उसकी प्रशंसा होती है । प्रशंसा भी एक सम्पदा है । सम्पदाओं की उपयोगिता तो है पर उनके पीछे एक ऐसा आवेश भी रहता है जो हजम न हो सके तो लाभ के स्थान पर विनाश ही उत्पन्न करता है। धन हजम न हो तो दुर्व्यसन उत्पन्न करेगा । बुद्धि हजम न हो तो कुचक्र षड्यंत्र रचेगी । बल हजम न हो तो उद्दण्डता के रूप में प्रकट होगा । हजम न होने पर अमृत भी विष बन जाता है । यश हजम न हो तो ऐसा अहंकार बनता है जिसकी तुष्टि के लिए लोक सेवी को अपना चिन्तन, चरित्र, व्यक्तित्त्व एवं भविष्य को हेय स्तर का बनाकर उतना पतित बनना पड़ता है जितना कि सेवा से सर्वथा दूर रहने वाले सामान्य श्रमिक भी नहीं गिरते । लोक-सेवियों में से अधिकांश को अपने व्यक्तित्त्व और सेवा क्षेत्र में ऐसे विग्रह उत्पन्न करते देखा जाता है जिसे दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना ही कहा जा सकता है और सोचना पड़ता है कि यदि यश हजम कर सकने में असमर्थ लोग लोक-सेवा के क्षेत्र में न आया करें तो वे अपनी और समाज की अधिक सेवा कर सकते हैं ।

मनुष्य को पतन पराभव के गर्त में गिरा देने वाली तीन दुष्प्रवृत्तियाँ हैं—वासना, तृष्णा और अहंता। 'शिश्नोदर परायणं नर पशु वासना', तृष्णा के लोभ में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जकड़े रहकर किसी प्रकार कोल्हू के बैल की तरह नियति चक्र में परिभ्रमण करते हुए दिन गुजार लेते हैं। पर अहंता को चैन कहाँ ? वह सारी प्रशंसा, सारा बड़प्पन, सारे अधिकार अपने ही हाथ में रखना चाहती है । दूसरे की साझेदारी उसे सहन नहीं । इसी विडम्बना ने सर्वाधिक विग्रह उत्पन्न किए हैं । लगता तो यह है कि लालच के कारण अपराध होते हैं, पर वास्तविकता यह है कि अहंता ही जहाँ-तहाँ टकराती और प्रतिशोध से लेकर आक्रमण, अपहरण, उत्पीड़न के विविध अनाचार उत्पन्न करती है । अन्यान्य के अवरोध तो कहने भर की बात है, वह तो जहाँ-तहाँ, जब-तब ही दृष्टिगोचर होते हैं । वास्तविकता यह है कि सामन्तवादी अनाचारों के कारण यही, अहंता ही उद्धत बनी और टकराई है । अनाचारों का विश्व इतिहास पढ़ने से प्रतीत होता है कि अभाव या अन्याय के विरुद्ध नहीं अधिकांश विग्रह और युद्ध मूर्धन्य लोगों ने अहंता की परितृप्ति के लिए खड़े किए हैं । कंस, रावण, हिरण्यकश्यप, वृत्तासुर, सहस्रबाहु, जरासन्ध जैसे पौराणिक और सिकन्दर, नेपोलियन, चंगेज खाँ, आल्हा, ऊदल जैसे बर्बर लोगों ने जो रक्तपात किए उनके पीछे उनकी दर्प तुष्टि के अतिरिक्त और कोई कारण था नहीं ।

यह चर्चा इन पंक्तियों में इसलिए की जा रही है कि युग शिल्पियों के द्वारा आरम्भिक उत्साह में जो कार्य अपनाया जा रहा है उसमें लोग मंगल का परमार्थ प्रयोजन दृष्टव्य होने के कारण श्रेय, सम्मान एवं यश तो स्वभावतः मिलना ही है । यह पचे नहीं और उद्धत हो चले तो पागल हाथी की तरह अपना, साथियों का तथा उस संगठन का विनाश करेगा जिसके नीचे बैठकर अपनी स्थिति बनाई है । हाथी पागल होता है तो अपनों पर ही टूटता है । इसी प्रकार लोकेषणा जब पागल होती है तो सर्वप्रथम वह साथियों को मूर्ख, छोटा, अनुपयुक्त, दुष्ट सिद्ध करने का प्रयत्न करती है ताकि तुलनात्मक दृष्टि से वह अपनी विशिष्टता सिद्ध कर सके । समान साथियों में मिल जुल कर रहने में महत्त्वाकांक्षी का अपना वर्चस्व कहाँ उभरता है । इसलिए उसे साथी पेड़-पादपों का सफाया करना पड़ता है ताकि समूचे खेत में एक अखण्ड ही कल्प वृक्ष होने की शेखी बघार सकें ।

दृष्टि पसार कर अपने चारों ओर लोकेषणा का नग्न नृत्य देखा जा सकता हैं । राजनैतिक पार्टियों में होते रहने वाले अन्तर्कलह सिद्धान्तों की दुहाई भले ही देते रहें पर वस्तुतः वे व्यक्तियों की महत्त्वाकांक्षा के निमित्त ही होते हैं । कल-परसों जनता पार्टी का बिखराव हो चुका है । कितनी ही उपयोगी संस्थाएँ पद लोलुपों ने परस्पर टकराकर अपने ही हाथों शिथिल या समाप्त कर दीं । कौरव पाण्डवों से लेकर यादव कुल के लड़ खप कर समाप्त हो जाने के पीछे लालच, छोटा और दर्प को बड़ा कारण पाया जायेगा। धर्म सम्प्रदायों के जो बड़े खण्ड होते चले गये हैं उनके प्रचलनकर्ताओं में सुधारक कम और श्रेय लोलुप अधिक रहे हैं । चुनावों के समय या बाद में जो विग्रह दृष्टिगोचर होते हैं, प्रतिशोध के नाम पर जो अनर्थ होते हैं उसमें औचित्य कम और दर्प को नंगा नाच करते देखा जा सकता है । सास-बहू की लड़ाई में यही विडम्बना उछलती दृष्टिगोचर होती है । पतियों का पत्नियों को आतंकित करने में यही तथ्य प्रमुख होता है।

बात इस संदर्भ में चल रही है कि युग शिल्पियों को सप्त महाव्रतों को अपनाने के लिए इसलिए निर्देशन किया गया है कि उनका व्यक्तित्त्व उभरे और उस आधार पर आत्मबल बढ़ाते हुए अधिक उच्चस्तरीय सेवा साधना कर सकने में समर्थ हो सकें । यदि उनका पालन किया गया और लोकेषणा से उत्पन्न विष का नियमित रूप से निष्कासन न किया गया तो वही दुर्गति होगी जो भोजन न करने तथा मल विसर्जन में उपेक्षा बरतने पर प्राण संकट के रूप में उत्पन्न होती है। लोक-सेवी को जनता सम्मान देती है, वह वस्तुतः उस सेवा धर्म की पुण्य परम्परा का, सूत्र संचालक तंत्र का सम्मान है । सत्प्रयोजनों के लिए लोक श्रद्धा बनी रहे मात्र इसी एक प्रयोजन के लिए सम्मान के प्रकटीकरण की प्रथा चली है । गलती यह होती है कि सेवाभावी उसे अपनी व्यक्तिगत योग्यता का प्रतिफल मानते हैं । अहंकार में डूब जाते हैं और फिर उसे अपना अधिकार समझने लगते हैं । जहाँ उसमें कमी होती है वहाँ अप्रसन्न होते हैं । अधिक पाने के लिए आतुर रहते हैं । बँटवारा होने के कारण साथियों को हटाने या गिराने का प्रयत्न करते हैं । ऐसे ही हथकण्डे अधिक मात्रा में सम्मान पाने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं । इस आपाधापी में कौन कितना सफल हुआ यह तो ईश्वर ही जाने पर यह आँख पसार कर सर्वत्र देखा जा सकता है कि यश लोलुपता, पद लोलुपता, अहमन्यता किसी से छिपाये नहीं छिपती। उभर कर ऊपर आती है और बदले में घृणा, तिरस्कार पनपने लगता है । अनौचित्य के प्रति तिरस्कार का यह भाव सर्वप्रथम साथियों से आरम्भ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है । चर्चा आगे बढ़ती है और यश लोलुप के विरुद्ध असंतोष, तिरस्कार का विस्तार क्रमशः अधिक बड़े क्षेत्र में होता चला जाता है । यह है वह प्रतिक्रिया जिसके कारण यश लोलुप तिरस्कार के भाजन बनते और जिस श्रेय सम्मान के, अपनी सेवा साधना के कारण अधिकारी थे उससे भी वंचित होते चले जाते हैं ।

बड़प्पन हर क्षेत्र में महँगा पड़ता है । धन, विद्या, सौन्दर्य, पद आदि के क्षेत्रों में जो अपने को बड़ा सिद्ध करना चाहते हैं उन्हें तरह-तरह के आडम्बर खड़े करके यह प्रकट करना होता है कि उनके पास यह विशेषताएँ हैं । लोग उसे देखें, समझें और सराहें । फैशन, ठाट-बाट जैसे खर्चीले सरंजाम इसी विज्ञापन बाजी के लिए किए जाते हैं ताकि देखने वालों की आँखें उन पर जाएँ । यही अनाचरण यश लोलुपों को भी अपनाना पड़ता है । वे किसी न किसी बहाने अपनी शक्ल बार-बार लोगों को दिखाना चाहते हैं, इसके लिए उन्हें अनेकों ऐसे उद्धत आडम्बर रचने पड़ते हैं जिसमें उनकी प्रमुखता सिद्ध होती हो । स्टेज पर उठने-बैठने का औचित्य या आमन्त्रण न होने पर भी वहाँ जा धमकते हैं ऐसी जगह अकारण खड़े होते हैं जहाँ लोग उनकी शक्ल देखें और किसी महत्त्वपूर्ण ड्यूटी पर जमे हुए प्रतीत हों । अपना नाम, फोटो छपाने के लिए आतुर रहना, किसी कार्य में दान दिया हो तो उसकी चर्चा स्वयं करने, दूसरों से कराने का रास्ता खोजना, दान राशि के पत्थर जड़वाना जैसी बचकानी हरकतें करने वाले प्रयत्न तो यशस्वी बनने का करते हैं पर उनकी क्षुद्रता अनायास ही प्रकट होती जाती है । फलतः वे उलटे घृणा तिरस्कार के पात्र बनते हैं । यश के साथ परोक्ष रूप से धन लूटने की भी सम्भावना जुड़ी रहती है । कितने ही इसका लाभ उठाते भी हैं, किन्तु स्पष्ट है कि ऐसे हथकण्डे अपनाने वाले आन्तरिक दृष्टि से पतित होते चले जाते हैं । फलतः वे सेवा के क्षेत्र में अन्यत्र की अपेक्षा और अधिक घाटे में रहते हैं । तिरस्कृत, उपेक्षित, बहिष्कृत की स्थिति में पहुँचे हुए अनेक तथा कथित नेता ऐसे पाये जा सकते हैं जो येन केन प्रकारेण सम्मानजनक स्थान तक जा पहुँचने, जा बैठने में तो सफल हो जाते हैं, पर सम्पर्क क्षेत्र में सघन श्रद्धा से क्रमशः अधिकाधिक वंचित होते चले जाते हैं ।

यह अहंता के परिपोषण का प्रतिफल है जिसे लोक-सेवी अनजाने ही अपनाने लगते हैं । स्मरण रखा जाय यह घुड़दौड़ में अत्यंत महँगी, घाटे की और मूर्खतापूर्ण है । सड़क पर नंगा नाच नाचकर भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है, पर इससे कुछ बनता नहीं । जिस प्रकार बड़प्पन पाने के लिए उद्धत प्रदर्शन करने वाले नट, विदूषक समझे जाते हैं उसी प्रकार यश लिप्सा भी व्यंग्य उपहास, तिरस्कार का कारण बनती है । सामने कोई कहे भले ही नहीं पर इस तथ्य को थोड़ा-सा पर्यवेक्षण करने पर सरलतापूर्वक चरितार्थ होते देखा जा सकता है कि प्रमुखता सिद्ध करने के लिए चित्र-विचित्र स्थान बनाने वाले नाटक में मुखौटे, परिधान पहनकर कभी राजा कभी ऋषि बनने वालों की तरह अपनी अवास्तविकता का ढिंढोरा स्वयं ही पीटते फिरते हैं । उसमें उन्हें श्रम, समय, धन और चातुर्य का निरर्थक अपव्यय करना पड़ता है । मूर्ख या चमचे इर्द-गिर्द इकट्ठे करके उनके बीच रंगे सियार द्वारा वनराज बनने का ढकोसला भर खड़ा किया जा सकता है, पर उससे मिलता क्या है ? परोक्ष व्यंग्य, उपहास अपने साथ जो गहरी अवज्ञा छिपाये रहते हैं ? उससे लोक-सेवक विदूषक स्तर का बनकर रह जाता है । इस दुर्गति जन्य दुर्मति का यदि पूर्वाभास रहे तो लोक-सेवा क्षेत्र में प्रवेश करने वाले आरम्भ से ही सजग रहें और खिलवाड़ रचने की अपेक्षा सतर्क रहने का कार्य चुनें। विज्ञापन बाजी से बचकर नम्रताजन्य, स्नेह सौजन्य अपनाने वाले वस्तुतः अधिक श्रेयाधिकारी बनते हैं । यश, लिप्सा भी छाया की भाँति है । उसके पीछे दौड़ने वाले असहफल रहते और खीझ, पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ पाते नहीं । इनकी अपेक्षा वे कहीं नफे में रहते हैं जो श्रेय दूसरों को बांटते हैं स्वयं पीछे रहते हैं । विनम्र स्वयं सेवक की तरह जिन्हें अपनी श्रम साधना, परमार्थ परायणता के आधार पर मिलने वाले आत्म संतोष को ही पर्याप्त मानने की विवेक दृष्टि रहती है, वे अनचाहा यश पाते हैं । उन्हें वह गहरा स्नेह, सद्भाव, प्राप्त होता है जिसके साथ साथियों, परिचितों का विश्वास और सहयोग प्रचुर मात्रा में जुड़ा रहता है । दूरदर्शिता इसी में है कि लोकसेवी सच्चे मन से यश, पद, लोलुपता, अहंता छोड़ें । विनम्रता अपनायें । दूसरों को आगे रखें । स्वयं पीछे रहें । अपना बखान स्थगित करें । अपना चेहरा चमकायें नहीं वरन् उस तरह रहें जैसे कि सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धान्त में आस्था रखने वाले अपने दृष्टिकोण, चरित्र व्यवहार में अधिकाधिक शालीनता भरते और महानता के उच्च पद पर अपनी विशेषता के कारण जा पहुँचते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोकसेवी की प्रामाणिकता व्यक्तित्व के स्तर पर अवलम्बित

जीवनयापन और जीवन की रीति-नीति को आदर्शों के अनुरूप ढालने के लिए—लोकसेवी की गरिमा को सुरक्षित और स्थिर रखने के लिए अपने गुण, कर्म, स्वभाव के परिष्कार की आवश्यकता पड़ती है । इस सम्बन्ध में कोई समग्र रूप रेखा निश्चित नहीं की जा सकती, परन्तु कुछ मोटी बातों को समझ लिया जाय और उन्हें अभ्यास में शामिल कर लिया जाय तो लोकसेवी का व्यक्तित्त्व अपने आदर्शों के अनुरूप ढलने लगता है । लोकसेवी का व्यक्तित्त्व ही इतना उत्कृष्ट और जीवन्त होना चाहिए कि जो भी उसके सम्पर्क में आये वह उससे प्रभावित हुए बिना न रहे ।

सेवा परक क्रिया-कलापों का अभीष्ट प्रभाव इसी कारण नहीं मिलता कि प्राय: प्रभावित करने वाले उन गुणों का अभाव रहता है जिनकी तुलना पारस से की जाती है और उनके संस्पर्श से ही क्षुद्र व्यक्ति नर से नारायण, पशु से मानव और निम्न स्तर से उच्च श्रेणी का व्यक्ति बनने लगता है । अपने विचार अच्छे ढंग से प्रतिपादित कर लच्छेदार वक्तव्यों द्वारा लोगों को कुछ देर के लिए चमत्कृत तो किया जा सकता है, परन्तु उसका स्थाई प्रभाव नहीं पड़ता । स्थायी प्रभाव के लिए तो व्यक्ति को स्वयं अपने भीतर चरित्र बल भी उत्पन्न करना पड़ता है । एक प्रसिद्ध विचारक का कथन है—"विचारों में तो सभी आदर्शवादी होते हैं । योग्य-अयोग्य का ज्ञान या पुण्य-पाप की अनुभूति तो मूर्ख और पापी को भी होती है । किन्तु व्यावहारिक जीवन में हम उसे भूल जाते हैं । धर्म को जानते हुए भी उसमें प्रवृत्त नहीं होते और अधर्म को जानते हुए भी उससे निवृत्त नहीं होते । दुर्योधन ने यही बात भगवान कृष्ण से तब कही थी जब वे शान्तिदूत बन कर गये थे । अर्थात् धर्म-अधर्म का विवेक सभी को रहता है, सभी उन बातों को जानते हैं । लोकसेवी भी यदि उन्हीं बातों की कोरी चर्चा करते हुए घूमें तो कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध नहीं होता । इसलिए लोकसेवी को अपने व्यक्तित्त्व के माध्यम से सर्वसाधारण की स्थिति को शिक्षित करना चाहिए ।

सेवा और व्यक्तिगत जीवन को अलग-अलग कर देखने वालों को समझना चाहिए कि लोकसेवा उनकी साधना है, व्यवसाय नहीं । सेवा को व्यवसाय के रूप में अपनाने वालों की बात और है । कर्मचारी, नौकर, अधिकारी वर्ग भी जनसेवक की गणना में आते हैं; पर जनसेवा के प्रति न उनमें टीस होती है और न लगन । जिन्होंने सेवा को ही अपना पाथेय चुना है उन लोकसेवी कार्यकर्ताओं को तो सेवा का स्तर साधना की तरह ही रखना चाहिए ।

अपना व्यक्तिगत जीवन यदि निकृष्ट रहा तो सेवा साधना के प्रयासों का कोई प्रभाव नहीं होगा । स्वामी रामतीर्थ का यह वचन "लोकसेवियों को याद रखना चाहिए कि सामाजिक कार्यकर्त्ता की वाणी ही नहीं उसका पूरा व्यक्तित्त्व ही बोलता है और वाणी की अपेक्षा उसका व्यक्तित्त्व सुना जाता है ।" वाणी और कर्म जब मिल जाते हैं तो व्यक्तित्त्व प्रखर बन जाता है। लोकसेवी ही नहीं अन्य प्रकृति के व्यक्तियों का भी तभी प्रभाव होता है जबकि उनके विचार और कर्म एक हों । एक वेश्या किसी साधारण व्यक्ति को आकर्षित करती है तो उसमें वेश्या की वाणी ही सफल नहीं होती उसके कर्म भी उसी स्तर के होते हैं। मानसिक वासना मनुष्य मन की कमजोरी है, इसलिए वह व्यभिचार की ओर आकर्षित होता है । लेकिन शराबी में भी प्रभावित करने की यही क्षमता रहती है। वह भी अपने विचार और कर्म के द्वारा अपने साथियों को प्रभावित करता है तथा इन्हें भी मद्यमान का व्यसन डाल देता है ।

लोकसेवी के विचार और उसके क्रिया-कलापों में समानता हो तो उसका व्यक्तित्त्व भी इतना प्रभावशाली बन सकता है कि वह अपने सेवा क्षेत्र में अभीष्ट परिणाम प्राप्त कर सके । आरम्भ में अपने आचरण और विचारों को पूर्णत: एकात्म कर लेना—एक दम चरित्र को आदर्श बना लेना भी आसान नहीं है; पर इसका यह अर्थ नहीं है कि इसके बहाने विचार और अनाचार में साम्य स्थापित करने की बात नजर अन्दाज की जाती रहे । इनमें स्तर का अन्तर हो सकता है लेकिन दिशा भिन्न नहीं होनी चाहिए । उदाहरण के लिए लोकसेवी खर्चीले और दान-दहेज वाले विवाहों का विरोध करता है । लोगों को अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च न करने की प्रेरणा देता है । उसके घर में कभी विवाह हो रहा हो और परिवार काफी बड़ा हो तो थोड़ी धूमधाम तो रहेगी; पर इसके लिए खूब ठाट-बाट और शान शौकत का प्रदर्शन किया जाय यह सर्वथा अनुचित है । कोई कार्यकर्ता दूसरों को सादगी से रहने और मितव्ययी जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देता है तथा स्वयं अपने जीवन स्तर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को तथाकथित रूप से उच्च बनाये रहता है तो इसका कोई प्रभाव नहीं होगा ।

इसीलिए प्राचीन काल से अब तक लोकसेवियों की यह परम्परा रही है कि आवश्यकताएँ कम से कम रखी जायें । आवश्यकताओं का विस्तार किया जाय तो उनका अन्त नहीं है । सुविधाएँ कितनी ही बढ़ाई जायें, कोई भी सुविधा अनावश्यक नहीं जँचती । रहने के लिए जैसे साधारण से मकान में गुजारा हो सकता है पर सुविधा की दृष्टि से सोचें तो उसमें तमाम सुविधाएँ आवश्यक प्रतीत होंगी । गर्मी के कारण जी को बड़ी बेचैनी होती है, कूलर चाहिए, एयरकण्डीशन कमरे चाहिए । कूलर के द्वारा गर्मी से तो बचा जा सकता है पर एयर कण्डीशन व्यवस्था नहीं होगी तो सर्दियों में क्या करेंगे ? ऐसा इन्तजाम चाहिए जिससे सर्दियों में भी गरम रहा जा सकता हो । जो भी सुविधाएँ होती हैं आवश्यकताओं का अप्रतिबन्धित रूप से औचित्य ढूँढ़ा जाय तो सभी जरूरी लगेंगी । लोकसेवी को इस सम्बन्ध में औसत और न्यूनतम का दृष्टिकोण अपनाना चाहिए । उन्हें कम करते चला जायें तो हम देखेंगे कि हमारी आवश्यकताएँ कितनी कम हैं । एक सामान्य व्यक्ति को खाने के लिए पौष्टिक आहार, पहनने के लिए वस्त्र और रहने के लिए मकान उपलब्ध हो, साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य का प्रबन्ध हो तो समझना चाहिए कि इतने साधन हमारे लिए पर्याप्त हैं ।

वेशभूषा के बाद मुख्य रूप से आती है लोकसेवी की आहार व्यवस्था । सेवा साधना में प्रवृत्त कार्यकर्त्ताओं को अपनी आहार व्यवस्था सादगीपूर्ण और औसत स्तर की ही रखनी चाहिए । इससे एक तो स्वास्थ्य की सुरक्षा हो जाती है, दूसरे लोगों पर उसका प्रभाव भी पड़ता है । भोजन के सम्बन्ध में कुछ व्रत भी लिये जा सकते हैं । घर में रहते हुए तो सादा भोजन सभी करते हैं, पर लोकसेवी बाहर जनसम्पर्क या सेवा कार्यों के लिए निकलता है तो लोग सम्मान और श्रद्धा के वशीभूत होकर कई तरह की स्वादिष्ट वस्तुओं की व्यवस्था करते हैं । उनकी सद्भावना को उपेक्षित न करते हुए भी इस बात का ध्यान रखा जाय कि हमारा चटोरापन न बढ़ जाय । इसके लिए लोगों को पहले से बता दिया जाय कि हम लोग सादा भोजन ही करेंगे, इसके लिए कोई विशेष व्यवस्था न की जाय तो अच्छा रहता है । आतिथ्य करने वाला व्यक्ति तो अतिथि की व्यवस्था अतिथि की तरह करता है । इसलिए विशेष व्यवस्था भी की जाती है लेकिन अतिथि स्वयं जब सामान्य व्यवस्था का आग्रह करता है तो उससे पूरे परिवार में अतिथि के प्रति आत्मीयता और पारिवारिकता की भावना उद्भूत हो जाती है ।

स्वाद लिप्सा से बचाव तो अपने आप में ही एक सद्गुण है, जिसकी गणना संयम साधना में होती है । इसके लिए एक नियम बना कर चला जाय । जैसे रोटी के साथ एक लगावन साग ही खायेंगे या एक ही दाल खायेंगे । थाली में भोज्य पदार्थों की संख्या दो या तीन से अधिक नहीं होने देंगे । बाहर क्षेत्रों में सेवा कार्य करने निकलने पर लोग श्रद्धा और स्नेह के वशीभूत होकर कुछ न कुछ चीजें बनाकर खिलाने के लिए आते हैं । यहाँ यह धर्म संकट भी उत्पन्न होता है कि यदि उन्हें लेने से एकदम इन्कार कर दिया जाय तो उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचती है और ले लिया जाय तो अपना व्रत टूटता है । मर्यादा भंग होती है । ऐसी स्थिति में लायी गयी वस्तुओं का नाम मात्र अंश लिया जा सकता है । वे जिस स्नेह भाव से आतिथ्य रूप में आहर प्रस्तुत किया गया था, उसकी सराहना की जानी चाहिए ।

खानपान की तरह ही लोकसेवी को और दूसरी बातों में भी इतना सतर्क रहना चाहिए कि उन्हें असुविधा हो रही है ऐसा किसी को आभास ही न हो, अपनी आदतों को इतना लचीला बना लिया जाय कि हर परिस्थिति में, हर स्थान पर किसी प्रकार की असुविधा न लगे । जैसे बहुत से व्यक्तियों को रात में सोने से पूर्व या दिन में किसी खास समय दूध पीने की आदत है । इस अभ्यास विशेष को बाहर रहते हुए स्थगित कर दिया जाय तो ही ठीक है ।

दिनचर्या में स्वावलम्बन, नियमितता और अनुशासन भी लोकसेवी की एक मर्यादा है । स्वावलम्बन, नियमितता और अनुशासन मनुष्य के व्यक्तित्त्व को सँवारता तथा उसे उज्ज्वल बनाता है । स्वावलम्बन का अर्थ है अपने काम अपने हाथ से ही किये जायें । घर में हों अथवा बाहर इन गुणों को अपने स्वभाव में सम्मिलित करना कोई कठिन नहीं है। परिवार में रहते हुए भी जहाँ एक तो सके अपने काम अपने हाथ से ही किये जाने चाहिए । अपने हाथ से कपड़े धोने, स्वयं हजामत बनाने और दूसरे जरूरी काम भी स्वयं ही करने जैसे काम स्थूल दृष्टि से किसी के लिए भले ही महत्त्व न रखते हों, पर इससे व्यक्तित्त्व में स्वावलम्बन की जो सद्वृत्ति आती है वह व्यक्तित्त्व को प्रखर बनाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाहर सेवा के लिए निकलते समय लोकसेवियों को चाहिए कि वे अभीष्ट कार्य स्वयं सम्पन्न करने के लिए आगे बढ़ें । आमतौर पर होता यह है कि लोकसेवी स्वयं कोई कार्य करने की अपेक्षा स्वयं सेवकों को उसके लिए निर्देश देते हैं और उनसे यह अपेक्षा करते हैं जैसा वे चाहते हैं वैसा ही कार्य वे कर लेंगे । जैसे श्रमदान या स्वच्छता संवर्धन का कार्य करना है । इसके लिए कार्यकर्त्ता गाँव में गये और वहाँ के निवासियों को सफाई का महत्त्व तथा श्रमदान की आवश्यकता समझाने लगे । केवल समझाने पर ही कोई तैयार हो जायेगा यह तो अपेक्षा नहीं की जा सकती । ठोस परिणाम के लिए श्रमदान से गन्दगी निवारण का कार्यक्रम भी बनाना पड़ेगा । उसका व्यावहारिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने पर कुछ उत्साही लोग तैयार हो सकते हैं । उन्हें साथ लेकर सफाई के लिए निकल पड़ें और स्वयं उसमें भाग नहीं लिया तो लोगों पर उसका जरा भी प्रभाव न होगा । लोग समझेंगे कि हमारे ऊपर हुक्म चलाया जा रहा है और उससे कार्य के प्रति महत्त्व बोध भी कम होगा तथा लोकसेवी के प्रति श्रद्धा भी घटेगी । ऐसे समय पर उचित यही रहता है कि लोकसेवी स्वयं पहले उस काम में जुट जायें और लोगों को सहयोग देने लगें । स्मरण रखना चाहिए कि लोकसेवी अपने आप को विशिष्ट व्यक्ति कदापि व्यक्त न करें । जन साधारण से उसका व्यक्तित्त्व का स्तर ऊँचा है अवश्य पर उसे स्वयं अपनी ओर से विज्ञापन नहीं करना चाहिए ।

लोकसेवी को निरहंकारी, स्वावलम्बी होने के साथ-साथ निर्लोभी भी होना चाहिए । यह लोभ ही है जिसके वशीभूत होकर अनेकों व्यक्ति सार्वजनिक सम्पत्ति का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं । लोकसेवी को ऐसे सार्वजनिक कार्यों का नेतृत्व भी करना पड़ सकता है, जिनमें कि आर्थिक साधन जुटाये जाते हैं और लोकसेवी को उनका उत्तरदायित्व सँभालना पड़ता है । ऐसी स्थिति में लोकसेवी को अपनी प्रामाणिकता रखना चाहिए । प्रामाणिकता साबित करने भर से काम नहीं चल सकता । सिद्ध तो झूठा भी किया जा सकता है । लोकसेवी का अपनी ईमानदारी और प्रामाणिकता के प्रति सघन निष्ठा रखनी चाहिए । लोगों को उस सम्बन्ध में कोई सन्देह न रहे इसके लिए धन के हिसाब-किताब से लेकर उपयुक्त कार्यों में खर्च करने तक सभी बातें सार्वजनिक रूप से प्रकाशित की जायें । यदि किसी बड़ी संख्या के लिए कार्य किया जा रहा है तो उसके प्रति उत्तरदायी रहने का कर्त्तव्य निबाहा जाय । वहाँ व्यक्तिगत रूप से भी कुछ दिया जाय जैसे मार्ग व्यय आदि के लिए तो उसे भी संस्था को दिया गया समझें और उसके एक-एक पैसे का हिसाब दें ।

धन सम्बन्धी प्रामाणिकता के बाद चरित्र सम्बन्धी प्रामाणिकता को भी समान महत्त्व दिया जाय । लोगों की निगाह इस सम्बन्ध में बड़ी बारीक होती है और वे चारित्रिक मर्यादाओं को धनसम्बन्धी मर्यादाओं से भी अधिक महत्त्व देते हैं । इसलिए लोकसेवी यदि पुरुष है तो स्त्रियों के प्रति और स्त्री है तो पुरुषों के प्रति अपनी दृष्टि को पवित्र रखें । पुरुषों के साथ व्यवहार में मर्यादा का अधिक ध्यान रखना चाहिए । पुरुष कार्यकर्ता स्त्रियों के साथ एकान्त में तो चर्चा नहीं ही करें, सबके सामने भी उनसे अनावश्यक बातें न कहें । जो कार्य पुरुष ही कर सकते हैं, उनके लिए महिलाओं से न कहा जाय । महिलाओं को उनके निर्धारित कार्य करने दिये जायें और पुरुष अपने नियत काम करें । इसमें व्यतिक्रम न आने देना चाहिए। साथ ही स्त्रियों से बार-बार सम्पर्क को भी टालना चाहिए। जरूरी बातें एक ही बार में समझा देनी चाहिए । बार-बार उनसे सम्पर्क करने में लोगों की दृष्टि जाती है और कोई बुरी भावना न होते हुए भी लोग टीका टिप्पणी करने लगते हैं ।

आज की स्थिति में सेवा कार्यों तथा उसमें प्रवृत्त होने वाले सेवावृत्ति लोगों की भारी आवश्यकता अनुभव होती है । यदि उसकी पूर्ति की जा सके तो निश्चित रूप से समाज में सुखद परिस्थितियाँ पैदा करना जरा भी कठिन न रहेगा । किन्तु यह होगा तभी, जब लोग सेवा धर्म का महत्त्व समझें । उसके अनुरूप अपने दृष्टिकोण, व्यक्तित्त्व एवं व्यवहार को ढालें तथा साहसपूर्वक उल्लसित होकर उस मार्ग पर चल पड़ें । सेवा के महत्त्व के साथ-साथ उसके लिए आवश्यक मनोभूमि एवं व्यक्तित्त्व बनाने का क्रम चल पड़ेगा तो इस मार्ग पर सफलताओं के ढेर लगते चलेंगे तथा सर्वसाधारण में भी उस दिशा में चलने का उत्साह जगेगा।

युग शिल्पियों से यही अपेक्षा की जाती है कि सेवा का महत्त्व समझ कर जो भी व्यक्ति आगे आवें, वे ऐसा व्यक्तित्त्व बनाने में सक्षम हों कि उनका भी गौरव बढ़े तथा समाज का भी हित साधन हो । इन सूत्रों को जीवन में उतारने वाले कभी भी मार्ग से भटकेंगे नहीं वे युगनेतृत्व का यश-गौरव प्राप्त करके रहेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तित्व सम्पन्न युग-शिल्पी ही नवनिर्माण करेंगे

यों मनुष्य जीवन भी अन्य प्राणियों की तुलना में अत्यधिक सुख-सम्पदाओं एवं वैभव विशेषताओं से भरा हुआ है पर जिनके पास अतिरिक्त रूप से विभूतियाँ विद्यमान हैं उन्हें और भी अधिक ईश्वर का कृपापात्र अपने को समझना चाहिए और यह अनुभव करना चाहिए कि उन्हें यह अतिरिक्त अमानत किसी अतिरिक्त कार्य के लिए ही मिली हुई है ।

सृष्टि का भार विस्तार बहुत बड़ा है । इसका संतुलन बनाये रखना और नियन्ता की गौरव गरिमा के अनुरूप उसका स्वरूप बनाये रखना एक बहुत बड़ी बात है । इसी प्रयोजन में सहायक बनने—सहायता पहुँचाने हेतु ईश्वर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कलाकृति के रूप में मनुष्य को सृजा है । अन्यथा उसके लिए सभी प्राणी समान प्रिय होने के कारण समान रूप से अनुदान पाने के भी अधिकारी थे । मनुष्य को जो कुछ अधिक अतिरिक्त मिला है उसका प्रयोजन उसकी वैयक्तिक सुख-सुविधाओं का अभिवर्धन नहीं वरन् यह है कि वह इन अतिरिक्त साधनों के आधार पर उसका हाथ बटाने में सृष्टि संतुलन के सुखद पक्ष को भारी बनाये रहने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सके । विवेकवान मानव प्राणी को मात्र शरीर-यात्रा के ताने-बाने बुनने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए । लोभ मोह के जाल जंजाल में जकड़ा नहीं रहना चाहिए वरन् उन तथ्यों की ओर भी ध्यान देना चाहिए जो अतिरिक्तरूप में मिले हुए मानव जीवन की विशेषताओं के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं । जीवन के स्वरूप, प्रयोजन लक्ष्य और उपयोग का चिन्तन न किया जाय, उसे उपेक्षा के गर्त में डाले रहा जाय तो इस प्रमाद का परिणाम आज न सही अगले दिनों अनन्त पश्चाताप के रूप में ही भुगतना पड़ सकता है ।

ईश्वरीय अनुग्रह उन विभूतियों के रूप में है जो अतिरिक्त रूप में हमें मिली हैं । समस्त जीवधारी पेट की भूख और प्रजनन की ललक से पीड़ित होकर तदनुरूप व्यवस्था जुटाने में अपने-अपने ढंग की हल-चलें करते रहते हैं और उसी कुचक्र में उलझे हुए जन्म से लेकर मरण पर्यन्त जीवन की लाश ढोते हैं । उतना ही स्तर यदि मनुष्य का भी रहे तो समझना चाहिए कि वह तात्विक विश्लेषण की दृष्टि से 'नर पशु' की संज्ञा में ही है । इससे आगे बढ़ने और ऊँचा उठने का सौभाग्य उसे मिला ही नहीं । इस स्तर के व्यक्ति कितने ही सुख-सुविधा सम्पन्न क्यों न हों उन्हें इस दृष्टि से दुर्भाग्य ग्रसित ही कहा जायेगा कि बहुमूल्य मानव जीवन के सदुपयोग की आत्म चेतना से वंचित रहकर केवल किसी प्रकार साँसें पूरी कर रहे हैं ।

हर विवेकवान व्यक्ति को यह तथ्य अधिकाधिक गम्भीरतापूर्वक हृदयंगम करना चाहिए और उस पर हजार बार विचार करना चाहिए कि निर्वाह के अतिरिक्त उसे जो कुछ उच्चस्तरीय अनुदान मिले हैं वे मौज मजा करने के लिए नहीं—बेटे, पोतों को गुलछर्रे उड़ाने के लिए दौलत जमा करने के लिए नहीं वरन्—ईश्वरीय प्रयोजनों की पूर्ति के लिए हैं । कोई अमीर कोई गरीब—कोई अज्ञ कोई विज्ञ-बनकर रहे और इस दुनिया में विषमता विशृंखलता फैले यह अव्यवस्था ईश्वर को अभीष्ट नहीं, वह अपने सभी मानव पुत्रों को लगभग एक ही स्तर का निर्वाह करते हुए समता को अपनाकर चलते हुए देखना चाहता है। दूसरों की तुलना में अधिक विलासी और संग्रही होकर जीना स्पष्टतः जीवनोद्देश्य से विपरीत मार्ग पर चलना है । इस मनोवृत्ति के व्यक्ति पूजा-पाठ की विडम्बना रचकर भी ईश्वरीय अनुग्रह का एक कण प्राप्त कर सकेंगे इसमें सन्देह ही समझना चाहिए ।

आत्मबोध के अतिरिक्त ईश्वरीय अनुग्रह का प्रमाण दूसरा हो ही नहीं सकता । आत्मबोध के साथ यह व्याकुलता जुड़ी हुई है कि अतिरिक्त उपलब्धियों को उस प्रयोजन के लिए नियोजित किया जाय, जिनके लिए यह अतिरिक्त अनुदान दिया गया है । इस प्रकार की आन्तरिक पुकार को स्पष्टतः ईश्वर की वाणी समझा जाना चाहिए और जिसमें यह आत्मा की पुकार जितनी तीव्र हो उसे अपने को उतना ही बड़ा ईश्वर का प्रियपात्र अनुभव करना चाहिए । जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए जो जितना अधिक पुरुषार्थ कर सके—साहस दिखा सके उसे उतना ही बड़ा अध्यात्मवादी—ईश्वर परायण मानना चाहिए हमें नकलीपन से ऊँचा उठना ही होगा और सच्ची ईश्वर भक्ति का मार्ग अपनाकर वह सच्चा ईश्वरीय अनुग्रह प्राप्त करना होगा जो मरने के बाद स्वर्ग मुक्ति मिलने के आश्वासनों में नहीं उलझाता वरन् देवोपम महानता के पथ पर तत्काल अग्रसर करता है । साथ ही आत्म सन्तोष एवं आत्मोल्लास के वरदान से तत्काल सुसम्पन्न करता है ।

विभूतिवानों को अपने अतिरिक्त सौभाग्य पर सन्तोष और गर्व अनुभव करना चाहिए उन्हें दूसरों की अपेक्षा अधिक उच्च पद और अधिक भारी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तरदायित्व सौंपा गया है, सेना में सिपाही बहुत होते हैं पर नायक, कप्तान, जनरल आदि के पद तो चुने और छटे हुए व्यक्तियों को ही दिये जाते हैं । जिन्हें पेट और परिवार पालने से अधिक आगे बढ़ने की उत्कण्ठा एवं योग्यता प्राप्त है उन्हें मुक्त कण्ठ से ईश्वर का विशिष्ठ कृपापात्र एवं प्रतिनिधि समझा जाना चाहिए । इस कृपा को सार्थक बनाने के लिए उस स्तर के व्यक्तियों को लोभ और मोह का अन्धकार चीरते हुए आगे बढ़ना चाहिए और अवरोधों को कुचलते हुए साहसपूर्वक उस मार्ग पर चलना चाहिए जिस पर कि सच्चे भगवद् भक्त अनादि काल से चलते रहे हैं ।

विभूतिवानों की गणना में भावनाशील प्रतिभाशाली, विद्या-बुद्धि सम्पन्न, कलाकार, लोक नायक, विज्ञानी, राजनेता, धनीमानी, प्रभृति वर्ग के लोगों को गिना जाता है । जिन्हें अपने में इन विभूतियों को जितना अंश दृष्टिगोचर हो उन्हें अपने को ईश्वर का उतना ही विश्वास पात्र और उच्च पद पर नियुक्त प्रिय पुत्र मानना चाहिए और प्रयत्न करना चाहिए कि वह इस धरोहर का श्रेष्ठतम उपयोग करने के प्रयत्न में कुछ कोर कसर न छोड़ें ।

सबसे बड़ा और सबसे प्रथम विभूतिवान व्यक्ति वह है जिसके अन्तःकरण में उत्कृष्ट जीवन जीने और आदर्शवादी गतिविधियाँ अपनाने के लिए निरन्तर उत्साह उमड़ता है । ऐसा साहस उत्पन्न होता रहता है जो लोभ, मोह के भवबन्धनों के रोके रुक ही न सके। व्यक्तिगत वासना, तृष्णा के जाल-जञ्जाल में आमतौर से नर पशुओं की क्षमताएँ गलती जलती रहती हैं । आमतौर से लोग परिवार वालों की मनोकामनाएँ पूरी करते रहने में जुटे खपे रहते हैं । इस चक्रव्यूह को वेध सकना उन्हीं के लिए सम्भव है जिनके भीतर आत्मबोध का आलोक प्रस्फुटित होने लगा । भावनाशील व्यक्ति ही ऐसा साहसपूर्ण निर्णय करते हैं कि निर्वाह मात्र के साधनों में सन्तोष करें और परिवार को उतना ही सम्पन्न बनाने तक अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मानेंगे जितने में कि अपने समाज के औसत नागरिक को जीवन-यापन करना पड़ता है । भावनाशीलता को दिव्यविभूति की सार्थकता के लिए इस प्रकार का साहसिक निर्णय नितान्त आवश्यक है अन्यथा परमार्थ के लम्बे चौड़े सपने मात्र कल्पना ही बनकर रह जायेंगे ।

अध्यात्मवादी, धर्म परायण, त्यागी, तपस्वी, परमार्थी, सन्त सुधारक, ब्रह्मपरायण, महामानव स्तर के देव पुरुष वही हो सकते हैं जिन्हें भावना की विभूति भगवान ने दी हो । कृपण और संकीर्ण लोगों को इस प्रकार का सौभाग्य मिल ही नहीं सकता। स्वार्थपरता का पिशाच उन्हें कुछ करने ही नहीं देता। यदि उसकी पकड़ से एक कदम आगे बढ़ा भी दिया जाय तो वह दूसरे बाड़े में और अधिक मजबूत रस्सों से पकड़ कर जकड़ देता है । सांसारिक लोभ मोह से ऊँचा उठकर त्याग परमार्थ की बात सोचने वाले लोग भी प्रायः एक कदम ही चलने के बाद फिर औंधे मुँह गिर पड़ते हैं । स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि, चमत्कार, पूजा प्रतिष्ठा जैसे व्यक्तिगत लोभ लाभ ही फिर नये रूप में मार्ग को घेरकर खड़े हो जाते हैं । स्वार्थी मनुष्य इस लोक की सम्पदा के बदले परलोक की सम्पदा चाहने लगता है । यह विशुद्ध रूप से सट्टेबाजी है । छुट-पुट दान-पुण्य करने वाले स्वर्ग में आलीशान भवन और अजस्र वैभव पाने के लिए दाँव लगाते हैं । स्वार्थ पूर्ति के बिना चैन नहीं, संसार के पैसे का लोभ घटा तो स्वर्ग के ऐश्वर्य का लालच सिर पर सवार हो गया। कोल्हू के बैल की दिशा भर बदली घेरा ज्यों का त्यों ही रहा—चक्कर जैसे का तैसा ही लगता रहा ।

भावनाओं को यदि उत्कर्ष की दिशा में बढ़ चलने का अवसर मिले तो उसके लिए एक दिशा है वह है, अपने चिन्तन में उत्कृष्टता और व्यवहार में आदर्शवादिता का सघन समावेश करने की । चिन्तन की उत्कृष्टता की निरन्तर प्रेरणा यह रहती है कि उसका व्यक्तित्त्व आदर्श, उज्ज्वल और अनुकरणीय हो। ऐसा व्यक्ति संयम, सदाचार, कर्त्तव्य का पूरा-पूरा ध्यान रखता है और पुरुषार्थ को प्रखर बनाकर मानवी क्षमता के सदुपयोग से सम्भव हो सकने वाली प्रगति को सर्वसाधारण के सम्मुख प्रमाण रूप में प्रस्तुत करता है । उत्कृष्ट चिन्तन हर घड़ी इसी प्रयास में लगा रहता है कि किस प्रकार गुण, कर्म, स्वभाव का स्तर श्रेष्ठतम बनाया जाय, पुरुषार्थ को किस प्रकार प्रखर और व्यवस्थित किया जाये । आत्म निर्माण में प्रचण्ड तत्परता को देखकर ही यह प्रमाण प्राप्त होता है कि चिन्तन की उत्कृष्टता का कितना अंश घुल-मिल सका है । भावना का अदृश्य पक्ष यही है ।

भावनात्मक उत्कर्ष का दृश्य है आदर्शवादी क्रिया-कलाप । लोक-मंङ्गल, जन-कल्याण, समाजोत्थान, सेवा-साधना एवं परमार्थ प्रयोजन की गतिविधियों में इस दृश्य को गतिशील रहता देखा जा सकता है । भावनाशील व्यक्ति स्वार्थ भरी संकीर्णता की सड़न में कृमिकीटकों की तरह संतुष्ट रह ही नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सकता । उसे उन्मुक्त आकाश में उड़ने वाले पक्षी की तरह अपना क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत दीखता है । विश्व मानव की समस्याएँ अपनी ही होती हैं । विश्व कल्याण में उसे अपना निज का स्वार्थ दिखाई पड़ता है । अस्तु निजी महत्वाकांक्षाओं की ओर से उसे मुँह मोड़ना पड़ता है। पुत्रेषणा, वित्तेषणा की त्रिविधि स्वार्थपरताएँ उसे दुर्बुद्धिजन्य दुर्गन्ध मात्र प्रतीत होती हैं।

ऐसा व्यक्ति बड़प्पन को ठुकरा कर महानता का वरण करता है । शरीर गत लिप्साएँ और परिवार गत लालसाओं पर विवेक युक्त नियन्त्रण रखता है और देखता है कि उसका जीवन इतने छोटे क्षेत्र में ही सड़ गल नहीं जाता है—व्यापक क्षेत्र में भी उसके कुछ कर्त्तव्य हैं और वे तभी पूरे हो सकते हैं, जब शरीर और परिवार को ही चरम लक्ष्य मान बैठने की क्षुद्रता से ऊपर उठ कर रहा जाय । ऐसे व्यक्ति घोर व्यस्तता के बीच परमार्थ प्रयोजनों के लिए पर्याप्त समय पाते हैं लोक मङ्गल के कामों से उन्हें फुरसत न रहने का बहाना नहीं बनाना पड़ता । इसी प्रकार अभाव ग्रस्त स्थिति में भी वे अपनी रोटी का एक टुकड़ा विश्व की कुरूपता को सुन्दरता में परिणित करने के लिए खुशी-खुशी समर्पित करते रहते हैं । उन्हें दरिद्रता के कलेवर में अपनी कृपणता छिपाने की आत्म वंचना नहीं करनी पड़ती ।

यों भावनाओं के असंतुलित उभार कभी-कभी ज्वारभाटे की तरह साधारण-सी सामयिक परिस्थितियों को लेकर भी आवेश ग्रस्त हो जाते हैं । कभी करुणा और दयालुता का इतना उभार आता है कि जो कुछ पास में है इसी घटना या स्थिति पर निछावर कर दें । उफान ठण्डा होते ही उस ओर से विमुख हो जाने और उपेक्षा बरतने में भी देर नहीं लगती । जरा सी बात इतनी चुभ जाती है कि आँसू रोक नहीं सकते । जरा सी हानि इतनी असह्य होती है कि सब कुछ सदा के लिए अन्धकारमय प्रतीत होता है । कभी कोई सफलता मिल जाय तो कल्पनाएँ आकाश के तारे चूमने लगती हैं । किसी के प्रति आकर्षण हो जाय तो वही सर्वगुण सम्पन्न देवता दिखाई पड़े और जरा सी खटक जाय तो फिर उसका स्थान राक्षस पिशाच से कम प्रतीत न हो। 'मूड' ही उनका प्रेरणा केन्द्र होता है । भावुकता की अत्यधिक प्रबलता वाले व्यक्तियों का भक्ति के बिना गुजारा नहीं । भक्तिभाव की एक लहर आ जाय तो नाचने कूदने लगे और ऐसे तन्मय दिखाई पड़े मानो समाधि में चले गये । वह बुखार उतरते ही आचरण ऐसा गिर जाय मानो अध्यात्म तो दूर साधारण सौजन्य से भी इनका कोई रिश्ता नहीं ।

ऐसी चित्र-विचित्र प्रकृति के आवेशों और उभारों के पालने में झूलने वाले कल्पना जीवी व्यक्तियों की इस संसार में कमी नहीं । मोटे तौर से इसी वर्ग के लोगों को भावनाशील माना जाता है और इन्हीं अस्त-व्यस्त मनोदशा वाले अर्धविक्षिप्तों को भावुक कहा जाता है पर तथ्य यह नहीं है । भावनाशील व्यक्ति में विवेकशीलता और दूरदर्शिता की मात्रा अपेक्षाकृत कम नहीं अधिक ही होती है । वह लोभ और मोह के वासना और तृष्णा के चारों जाल-जंजालों के बन्धनों को तोड़ने का साहस दिखा सकता है और औचित्य को अपनाने में अन्तरंग और बहिरङ्ग क्षेत्र में उपस्थित होते रहने वाले अवरोध का साहसपूर्वक निराकरण कर सकता है ।

चिन्तन में उत्कृष्टता और आचरण में आदर्शवादिता का प्रगाढ़ समावेश कर सकने में समर्थ मनस्विता और तेजस्विता की आवश्यकता पड़ती है । उसे अपनाने का जो शौर्य साहस प्रदर्शित कर सके उसे भावनाशील कहा जायेगा । दूसरे शब्दों में सदुद्देश्य के लिए दुस्साहसपूर्ण संकल्प करने वाले एवं उनके परिपालन में बड़े से बड़ा त्याग बलिदान करने के सुदृढ़ निश्चय को भावशीलता कह सकते हैं । सद्भाव सम्पन्न व्यक्ति उच्चस्तर पर सोचते हैं और उच्च आचरण पर तत्परतापूर्वक कटिबद्ध अड़े-खड़े रहते हैं। यदि ऐसा न होता तो भावना के खदान में से ही नर रत्न महामानव उपलब्ध होने का तथ्य कैसे मूर्तिमान रहता ? ऐतिहासिक महापुरुषों में से प्रत्येक अनिवार्य रूप से भावनाशील रहा है । उसके अन्तःकरण में उच्चस्तरीय आकांक्षा कोलाहल करती रहती है । क्रमशः वे इतनी प्रखर हो जाती है कि उन्हें तृप्त किये बिना चैन ही नहीं पड़ता । आत्मा की पुकार, अन्तःवेंदना ईश्वर की वाणी इसी को कहते हैं । उसी आत्म प्रेरणा के प्रकाश में मनस्वी लोग साहसिक कदम उठाते हैं । प्रस्तुत अवरोधों की उपेक्षा करते हैं और क्रमशः प्रस्तुत लक्ष्य के पथ पर बढ़ते चले जाते हैं और वह क्रमिक मात्रा उस व्यक्ति को ऐतिहासिक महामानव के पद पर प्रतिष्ठित कर देती है विभिन्न कार्य क्षेत्रों में विभिन्न देशों और कालों में उत्पन्न हुए महामानवों के बाह्य क्रिया-कलाप भले ही भिन्न रहे हों पर उनका आन्तरिक विकास इस एक ही स्तर का रहा है । भावना की पूँजी के अतिरिक्त महानता और किसी प्रकार खरीदी ही नहीं जा सकती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युग परिवर्तन के महान प्रयोजन की पूर्ति के लिए जिस पूँजी की सबसे प्रथम सबसे अधिक मात्रा में आवश्यकता है वह 'भावना' ही है । इसका जागरण, अभिवर्धन किये बिना और किसी प्रकार युगधर्म की माँग को पूरा नहीं किया जा सकता ।

प्रज्ञा परिजन इन त्रिविध बेड़ियों से बाहर निकलें

स्कूली पढ़ाई, कारीगरी, तिजारत, दलाली, बाजीगरी आदि व्यवहार कौशल से सम्बन्धित बातें भी उन विषयों के निष्णांत व्यक्ति ही ठीक प्रकार सिखा पाते हैं, फिर आदर्शवादी दृष्टिकोण, चिन्तन, चरित्र एवं प्रचलन परिवर्तन करने जैसे कठिन काम दूसरों से करा लेने के लिए और भी भारी भरकम आदमी चाहिए । यह काम उथले बचकाने लोगों का नहीं है । वे घुसपैठ करेंगे तो काम बिगाड़ेंगे, अश्रद्धा उत्पन्न करेंगे और असलियत खुलने पर लात खाते, औंधे मुँह गिरते-पड़ते उलटे पैरों भागेंगे । ऐसी विदूषकों जैसी विडम्बना रचने की अपेक्षा उस क्षेत्र में न घुसना ही ठीक है । समर्थक और सहयोगी बनकर भी काम चलता है । मार्गदर्शक बनना हो तो नेतृत्व का कौशल नहीं चरित्र चाहिए । प्राचीनकाल में लोक-मानस के परिष्कार का महान कार्य जो लोग हाथ में लेते थे वे कार्यक्षेत्र में प्रवेश करने से पूर्व ब्राह्मणों जैसे संयमशीलता और साधु जैसी उदार आत्मीयता का अभ्यास करते थे । इस परीक्षा में वे जितनी ऊँची कक्षा उत्तीर्ण करते थे उसी अनुपात से उनकी सेवा साधना सफल होती थी । यदि सच्चे मन से उच्चस्तरीय दृष्टिकोण लेकर सेवाधर्म अपनाया जाय तो उसका परिणाम लोकमंगल से भी अधिक आत्मोत्कर्ष के रूप में उपलब्ध होता है । इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रज्ञा परिजनों को युग शिल्पी की भूमिका निभाने के लिए अग्रसर होते समय इस बात को गिरह बाँधकर रखना है कि उन्हें स्तर की, व्यक्तित्व की दृष्टि से सामान्य लोगों की तुलना में कहीं ऊँचा उठकर रहना है ।

इसके लिए क्या करना होगा ? इस सम्बन्ध में प्रत्यक्ष कर्त्तव्य उतना नहीं है जितना कि दृष्टिकोण में परिवर्तन करने का प्रबल अभ्यास अपनाना । सर्वविदित है कि लोभ-मोह के भवबन्धन आदर्शवादिता के, आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने वाले के लिए हथकड़ी-बेड़ी जैसे अवरोध उत्पन्न करते हैं । लालची, संग्रहा, विलासी व्यक्ति को लोभ लिप्सा इस कदर जकड़े रहती है कि उसे परमार्थ में कोई रस ही नहीं आता । अपनी तराजू पर अपने बाँटों से तोलने पर उसे स्वार्थ वजनदार प्रतीत होता है और परमार्थ हलका । इसलिए लालच में राई-रत्ती कमी पड़ते ही वह परमार्थ से हाथ खींच लेता है और कुछ आडम्बर करता भी है तो उतना ही जिससे कम खर्च में लोकसेवी पुण्यात्मा की अधिक ख्याति खरीदी जा सके। इसमें भी वे तौलते रहते हैं कि कितना गँवाया और कितना कमाया ।

सार्वजनिक जीवन में ऐसे लोगों का घुस पड़ना एक प्रकार से अभिशाप ही सिद्ध होता है । वे जितना जनहित करते हैं उसकी तुलना में हजार गुना अनर्थ करके रख देते हैं । इसलिए उत्कृष्टता के क्षेत्र में प्रवेश करने वालों के लिए मनीषियों ने वित्तेषणा (लोभ), पुत्रेषणा (मोह) और लोकेषणा (अहंकार-बड़प्पन) की त्रिविध एषणाओं का परित्याग करने के उपरान्त ही श्रेय मार्ग पर पैर बढ़ाने की सलाह दी है । लोकसेवी में नम्रता, निरहंकारिता उत्पन्न करने के लिए प्राचीन काल में दरवाजे-दरवाजे भिक्षा माँगने के लिए जाना पड़ता था । यों घर बैठे भी भोजन मिलने का प्रबन्ध ऐसे लोगों के लिए कठिन नहीं है । पर, अहंकार गलाने को तो कोई न कोई चाहिए ही । इसके बिना साधु कैसा ? ब्राह्मण कैसा ? लोकसेवी कैसा ?

सिक्ख गुरुओं में रामदास की बड़ी ख्याति है । उन्हें आश्रम के बर्तन साफ करने का काम सौंपा गया और बिना किसी प्रकार की बेइज्जती अनुभव किए बड़े चाव से करते रहे । जबकि उनके अन्य साथी बड़प्पन के पद पाने के लिए मिन्नतें करते, तिकड़म भिड़ाते और झंझट खड़े करते देखे गये । उनके गुरु ने उत्तराधिकारी का चुनाव करते समय आध्यात्मिकता की वास्तविक गुण सम्पदा निरहंकारिता रामदास में पाई और उन्हीं को मूर्धन्य स्थान पर बिठा दिया ।

गाँधीजी के आश्रम में निवासियों को टट्टी साफ करने, झाड़ू लगाने जैसे छोटे समझे जाने वाले कार्य परिपूर्ण श्रद्धा और तत्परता के साथ करने पड़ते थे । प्रज्ञा मिशन की परम्परा भी यही है । प्रत्येक आश्रमवासी को श्रमदान अनिवार्यतः करना पड़ता है और उसमें नाली साफ करने, झाड़ू लगाने, कूड़ा ढोने जैसे कार्य ही करने होते हैं ।

कई व्यक्ति सोचते हैं—हम संस्था से निर्वाह लेकर काम क्यों करें ? अपना खाने के नाम पर निर्वाह लेने वालों से श्रेष्ठ क्यों न बनें ? कुछ लोग इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण काम ही नहीं करते । इस असमंजस के पीछे कोई सिद्धान्त काम नहीं करता, मात्र अहंकार ही उछलता है । हजार रुपये मासिक का काम करके यदि कोई सौ रुपया लेता है तो उसका नौ सौ रुपये का अनुदान ही हुआ । शान्तिकुञ्ज परम्परा में हर आश्रमवासी को अन्य सभी की तरह निर्वाह आश्रम से ही लेना पड़ता है । उसकी निजी आमदनी या पेन्शन है तो वह उसे आश्रम में दान देते रहने के लिए कहा जाता है । लोकसेवी यदि जनता से ब्राह्मणोचित निर्वाह लेता है तो वह वेतन भोगी कर्मचारी नहीं हो जाता वरन् श्रद्धासिक्त निर्वाह दक्षिणा के रूप में प्राप्त करते हुए गौरवान्वित होता है । सच्चे सेवक के लिए ऐसी विनम्रता आवश्यक है । अन्यथा वह मुफ्त काम करने का अहंकार जताता रहेगा । संन्यास लेते समय अपने पिता का, वंश का, स्थान का, पूर्व व्यवसाय का पता न पाकर गुरु परम्परा भर की चर्चा करनी होती है ताकि पिछले दिनों के बड़प्पन का उल्लेख करना और दर्प दिखाना सम्भव ही न रहे ।

सामान्य जीवन में लालच के वशीभूत होकर लोग न जाने क्या—क्या अपराधी कृत्य करते हैं । मोहग्रस्त अपनी क्षमताओं को एक सँकरी नाली में बहाते हुए गूलर के भुन्गों का उदाहरण बनते हैं । अहंकार आमतौर पर छद्म रचने, उच्छृंखलता बरतने और दुष्टता पर उतारू होने के लिए विवश करता है । असामान्य समझे जाने वाले अध्यात्मवादी भी विलासी, पक्षपाती, अहंकारी दिखाई दें तो समझना चाहिए कि सेवा का आडम्बर ओढ़ने पर भी उनका अन्तरा कषाय—कल्मषों से भरा रहने के कारण कुछ न कुछ ऐसे कृत्य करता रहेगा जिससे श्रेय—साधक की, उसके अपनाये गये परमार्थ प्रयोजन की गरिमा गिरती ही है, बढ़ती नहीं ।

युग शिल्पियों का नव-सृजन में कदम तब बढ़े जब वे लोभ—मोह की हथकड़ी—बेड़ी के निविड भवबंधनों से छुटकारा पायें । इतने पर भी यह आवश्यकता बनी ही रहेगी कि वे अपने साथियों में सबसे छोटे बनकर रहें । हल्के से हलका काम मिलने पर बड़प्पन पर आँच आने जैसा अनुभव न करें । श्रेय प्रप्ति का अवसर आने पर उसे दूसरों के उदार सहयोग और श्रम बताकर औरों को प्रशंसा पाने दें । पारस्परिक व्यवहार का स्तर ऐसा रखें जिससे अपनी विनयशील और दूसरों को सम्मान देने की भावना का प्रमाण परिचय मिलता रहे । अहंकारी आमतौर से गुण्डागर्दी मचाते हैं । जबकि निरहंकारी में सज्जनता, शालीनता, सद्भावना, सादगी, सात्विकता जैसे सद्गुण अनायास ही बढ़ते चले जाते हैं । कहना न होगा कि यह विभूतियाँ ही किसी के बड़ा आदमी, महामानव होने की वास्तविक चिन्ह हैं ।

बड़ों का व्यापक दृष्टिकोण होता है और विशाल हृदय । वे अपनी छोटी कठिनाइयों और सुविधा की बात नहीं सोचते रहते वरन् समस्त समाज के हित साधन की व्यापक समस्याओं के समाधान की बात सोचते हैं । अपने को विशाल विश्व परिवार का एक विनम्र घटक मानते हैं और विराट् को सुखी समुन्नत बनाने के लिए क्षुद्रता को महानता में विसर्जित कर देते हैं । अपने मिशन के हर युग शिल्पी को ऐसा ही होना चाहिए ।

अपने अंग अवयवों से !

यह मनोभाव हमारी तीन अँगुलियाँ मिलकर लिख रही हैं । पर किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि जो योजना बन रही है और कार्यान्वित हो रही है, उसे प्रस्तुत कलम कागज या अँगुलियाँ ही पूरा करेंगी। करने की जिम्मेदारी आप लोगों की, हमारे नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं की है ।

इस विशालकाय योजना में प्रेरणा ऊपर वाले ने दी है । कोई दिव्य सत्ता बता या लिखा रही है । मस्तिष्क और हृदय का हर कण—कण, जर्रा—जर्रा उसे लिख रहा है । लिख ही नहीं रहा है वरन् उसे पूरा कराने का ताना—बाना भी बुन रहा है । योजना की पूर्ति में न जाने कितनों का—कितने प्रकार का मनोयोग और श्रम, समय, साधन आदि का कितना भाग होगा । मात्र लिखने वाली अँगुलियाँ न रहें या कागज कलम चुक जायें तो भी कार्य रुकेगा नहीं । क्योंकि रक्त का प्रत्येक कण और मस्तिष्क का प्रत्येक अणु उसके पीछे काम कर रहा है । इतना ही नहीं, वह दैवी सत्ता भी सतत सक्रिय है जो आँखों से न तो देखी जा सकती है और न दिखाई जा सकती है ।

योजना बड़ी है । उतनी ही बड़ी जितना कि बड़ा उसका नाम है.....''युग परिवर्तन'' । इसके लिए अनेक वरिष्ठों का महान योगदान लगना है । उसका श्रेय संयोगवश किसी को भी क्यों न मिले ।

प्रस्तुत योजना को कई बार पढ़ें । इस दृष्टि से कि उसमें सबसे बड़ा योगदान उन्हीं का होगा जो इन दिनों हमारे कलेवर के अंग अवयव बनकर रह रहे हैं। आप सबकी समन्वित शक्ति का नाम ही वह व्यक्ति है जो इन पंक्तियों को लिख रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्य कैसे पूरा होगा ? इतने साधन कहाँ से आयेंगे ? इसकी चिन्ता आप न करें । जिसने करने के लिए कहा है, वही उसके साधन भी जुटायेगा । आप तो सिर्फ एक बात सोचें कि अधिकाधिक श्रम व समर्पण करने में एक दूसरे में कौन अग्रणी रहा ?

साधन, योग्यता, शिक्षा आदि की दृष्टि से हनुमान उस समुदाय में अकिंचन थे । उनका भूतकाल भगोड़े सुग्रीव की नौकरी करने में बीता था, पर जब महती शक्ति के साथ सच्चे मन और पूर्ण समर्पण के साथ लग गये तो लंका दहन, समुद्र छलांगने और पर्वत उखाड़ने का, राम—लक्ष्मण को कंधे पर बिठाये फिरने का श्रेय उन्हें ही मिला । आप लोगों में से प्रत्येक से एक ही आशा और अपेक्षा है कि कोई भी परिजन हनुमान से कम स्तर का न हो । अपने कर्त्तव्य में कोई भी अभिन्न सहचर पीछे न रहे ।

काम क्या करना पड़ेगा ? यह निर्देशन और परामर्श आप लोगों को समय—समय पर मिलता रहेगा। वह तो समय की बात है । काम बदलते भी रहेंगे और बनते—बिगड़ते भी रहेंगे । आप लोग तो सिर्फ एक बात स्मरण रखें कि जिस समर्पण भाव को लेकर घर से चले थे, पहले लेकर आये थे, उसमें दिनों दिन बढ़ोत्तरी होती रहे । कहीं राई रत्ती भी कमी न पड़ने पाए ।

कार्य की विशालता को समझें । लक्ष्य तक निशाना न पहुँचे तो भी वह उस स्थान तक अवश्य पहुँचेगा जिसे अद्‌भुत, अनुपम, असाधारण और ऐतिहासिक कहा जा सके । इसके लिए बड़े साधन चाहिए, सो ठीक है । उसका भार दिव्य सत्ता पर छोड़ें। आप तो इतना ही करें कि आपके श्रम, समय, गुण—कर्म, स्वभाव में कहीं भी कोई त्रुटि न रहे । विश्राम की बात सोचें, अहर्निशि एक ही बात मन में रहे कि हम इस प्रस्तुतीकरण में पूर्णरूपेण खपकर कितना योदान दे सकते हैं ? कितना आगे रह सकते हैं? कितना भार उठा सकते हैं ? स्वयं को अधिकाधिक विनम्र, दूसरों को बड़ा मानें । स्वयंसेवक बनने में गौरव अनुभव करें । इसी में आपका बड़प्पन है ।

अपनी थकान और सुविधा की बात न सोचें । जो कर गुजरें, उसका अहंकार न करें । वरन् इतना ही सोचें कि हमारा चिंतन, मनोयोग एवं श्रम कितनी अधिक ऊँची भूमिका निभा सका ? कितनी बड़ी छलाँग लगा सका ? यही आपकी अग्नि परीक्षा है । इसी में आपका गौरव और सर्मपण की सार्थकता है । अपने साथियों की श्रद्धा व क्षमता घटने न दें । उसे दिन दूनी रात चौगुनी करते रहें ।

स्मरण रखें कि मिशन का काम अगले दिनों बहुत बढ़ेगा । अब से कई गुना । इसके लिए आपकी तत्परता ऐसी होनी चाहिए, जिसे ऊँचे से ऊँचे दर्जे की कहा जा सके । आपका अन्तराल जिसका लेखा जोखा लेते हुए अपने को कृत—कृत्य अनुभव करें । हम फूले न समाएँ और प्रेरक सत्ता आपको इतना घनिष्ठ बनाये जितना कि राम पंचायत में छठे हनुमान भी घुस पड़े थे ।

कथन का सारांश इतना ही है, आप नित्य अपनी अन्तरात्मा से पूछें कि जो हम कर सकते थे, उसमें कहीं राई-रत्ती त्रुटि तो नहीं रही ? आलस्य प्रमाद को कहीं चुपके से आपके क्रिया-कलापों में घुस पड़ने का अवसर तो नहीं मिल गया ? अनुशासन में व्यतिरेक तो नहीं हुआ ? अपने कृत्यों को दूसरे से अधिक समझने की अहंता कहीं छद्‌म रूप में आप पर सवार तो नहीं हो गयी ?

यह विराट योजना पूरी होकर रहेगी । देखना इतना भर है कि इस अग्निपरीक्षा की बेला में आपका शरीर, मन और व्यवहार कहीं गड़बड़ाया तो नहीं । ऊँचे काम सदा ऊँचे व्यक्तित्व करते हैं । कोई लम्बाई से ऊँचा नहीं होता । श्रम, मनोयोग, त्याग और निरहंकारिता ही किसी को ऊँचा बनाती है । अगला कार्यक्रम ऊँचा है । आपकी ऊँचाई उससे कम न पड़ने पाये, यह एक ही आशा, अपेक्षा और विश्वास आप लोगों पर रखकर कदम बढ़ रहे हैं । आप में से कोई इस विषम बेला में पिछड़ने न पाये, जिसके लिए बाद में पश्चात्ताप करना पड़े ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे--

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete Collection of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org